प्रकाशिका—
श्री हर्षपुष्पामृत जैन ग्रन्थमाला
लाखाबावल-शांतिपुरी (सौराष्ट्र) गुजरात

卐卐卐

वीर सं० २५०४]. विक्रम सं० २०३४ [सन् १९७८

आ आगमना अधिकारी योगवाही गुरुकुलवासी
सुविहित मुनिवरो छे ।

मूल्य रु. ७५—००

卐卐卐

मुद्रक—
छगनलाल जैन के प्रबन्ध से
गौतम आर्ट प्रिन्टर्स
ब्यावर (राज०)

संपादकीय निवेदन

निष्कारणबंधु विश्ववत्सल चरमशासनपति श्रमण भगवान महावीरदेवे भव्यजीवोना हितने माटे स्थापेल शासन आजे विद्यमान छे अने विषमकालमां पण भव्य जीवोने माटे सर्वज्ञ परमात्मानु ए शासन परम आलंबन रूप छे । तीर्थंकरदेवोनी अविद्यमानतामां तेओश्रीनी वाणी शासनना प्राण स्वरूप होय छे । श्री तीर्थंकरदेवोए अर्थथी प्ररूपेल अने गणधरदेवोए सूत्रथी गूंथेल ए जिनवाणी हितकांक्षी पुन्यात्माओ माटे अमृत तुल्य छे ।

विद्यमान आगम श्रुतज्ञानमां मुख्यतया ४५ आगम गणाय छे । ते उपरांत पण ८४ आगमनी गणतरीने हिसावे बीजुं पण केटलुंक आगम रूपी श्रुतज्ञान विद्यमान छे । आगम सूत्रो उपर नियुक्तिओ, भाष्यो, चूर्णिओ अने टीकाओ रचायेल छे । अने एथी सूत्र सहित आगमनी ए पंचांगी जैन शासनमां मान्य छे । तेना आधारे वर्तमान ज्ञानाचार, दर्शनाचार, चारित्राचार, तपाचार अने वीर्याचार रूप व्यवहार प्रवर्ते छे अने सम्यग्दर्शन सम्यग्ज्ञान अने सम्यक्चारित्र रूप मुक्ति-मार्ग प्रवर्तमान छे ।

पंचांगीनो वाचना, पृच्छना, परावर्तना, अनुप्रेक्षा अने धर्मकथा रूप पंचलक्षण स्वाध्याय जेटलो जोरदार तेटली श्री संघमां सम्यग्ज्ञानना शुद्धि जोरदार, तेनाथी ज्ञानाचार उज्वल, उज्वल ज्ञानाचारथी दर्शनाचार उज्वल, उज्वल दर्शनाचारथी चारित्राचार उज्वल, उज्वल चारित्राचारथी तपाचार उज्वल अने ए चारे उज्वल आचारथी वीर्याचार उज्वल । वीर्याचारनी उज्वलताथी जैनशासन उज्वल । ए उज्वल जैन शासन सदा जयवंत वर्ते छे ।

आम शासननो आधार कहो के पायो कहो, मूल कहो के प्राण कहो, ए श्री जिनवाणी छे अने ते जिनवाणी ४५ मूल आगम सहित पंचांगी स्वरूप छे । पंचांगीने अनुसरता प्रकरण ग्रन्थो यावत् स्तवन सज्झाय के नाना निबंध के वाक्य स्वरूप छे । उपशम विवेक संवर ए त्रिपदी स्वरूप जिनवाणीथी घोर-पापी चिलातीपुत्र पतनना मार्गथी नीकली प्रगतिमार्गना मुसाफीर बनी गया हता ।

४५ मूल आगमना अधिकारी योगवाही गुरुकुलवासी सुविहित मुनिवरो छे । साध्वीजी महाराजो श्रीआवश्यक सूत्र आदि मूल सूत्रोना तेमज श्रीआचारांग सूत्रना योगवहन करवा

पूर्वक अधिकारी छे। श्रावक श्राविकाओ उपधान वहन करवा पूर्वक श्री आवश्यक सूत्रना उपरांत दशवैकालिकसूत्रना षड्जीव-निकाय-नामना चोथा अध्ययन पर्यंतना श्रुतना अधिकारी छे। आम आगमश्रुतना अधिकारी मुनवरो योगवहन करवा पूर्वक योग्यता मुजव अध्ययन आदि करीने पोताना ज्ञान दर्शन चारित्रने निर्मल बनावे छे। अने योग्यता मुजव धर्मकथा द्वारा जिणवाणीनु' पान करावी साधु-साध्वी श्रावक-श्राविका रूप चारे प्रकारना संघने तेमज मार्गाभिमुख जीवोने मुक्तिमार्ग प्रदान करे छे।

४५ आगमसूत्रो ६ विभागोमां वहेंचायेल छे। (१) अंगसूत्रो–११ (२) उपांगसूत्रो–१२ (३) पयन्नासूत्रो–१० (४) छेदसूत्रो–६ (५) मूल सूत्रो–४ (६) चूलिकासूत्रो–२। आ सूत्रोनु' स्वाध्याय आदि अध्ययन वधे ते माटे उपयोगी बने ते रीते ४५ मूल सूत्रो श्वेताम्बर मूर्तिपूजक श्रीसंघमां सलंग मुद्रित नथी अने जेथी आगम सूत्रोना स्वाध्याय आदिनी अनुकूलता थाय ते माटे शक्य प्रयत्ने सशोधन करीने प्रगट करवानी योजना विचारवामा आवी छे, ते योजना मुजव ४५ आगमसूत्रोनु' १४ विभागोमां संपादन थशे।

पहेलो, बीजो, त्रीजो, चोथो, पांचमो, छट्ठो, आठमो, अग्यारमो, बारमो, तेरमो, चौदमो विभाग प्रगट थया पछी आ सातमो विभाग संपादित थयेल छे। आ विभागमां श्री जम्बूद्वीप प्रज्ञप्तिसूत्र श्री चन्द्रप्रज्ञप्ति सूत्र सूर्यप्रज्ञप्ति सूत्र तथा पांच उपाङ्गस्वरूप श्री निरयावलिका सूत्र ए आठ उपांग आपेलां छे।

आ सूत्रोना संपादनमां बाबु श्रीधनपतसिंहजी रायबहादुर प्रकाशित सूत्रो तथा पूज्य आगमोद्धारक आचार्यदेव श्री सागरानन्दसूरीश्वरजी महाराज सशोधित श्री आगममञ्जूषा तथा शेठ श्रीदेवचन्द्र लालभाई प्रकाशित पू० उ० श्री शान्तिचन्द्रजी गणी विरचित श्रीजम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति सटीक, जामनगर श्री वीशा श्रीमाली तपगच्छ संघ तथा आर्य श्री जम्बूस्वामी जैन ज्ञान भण्डार डभोइनी सटीक श्रीचन्द्रप्रज्ञप्तिनी प्रतो, स्थानकवासी जैन शास्त्रोद्धार समिति प्रकाशित चन्द्रप्रज्ञप्ति पुस्तक तथा श्रीआगमोदयसमिति प्रकाशित पू० आ० श्रीमलयगिरिजी महाराज विरचित श्री सूर्यप्रज्ञप्ति टीका तथा श्री आगमोदयसमिति श्री वीर समाज तथा श्री जैनधर्म प्रसारक सभा प्रकाशित पू० श्री चन्द्रसूरीश्वर विरचित श्री निरयावलिका सूत्र सटीक आदि प्राप्त प्रकाशनो नो उपयोग कर्यो छे। ते ग्रन्थो ना कर्ता संपादक अने प्रकाशक प्रत्ये कृतज्ञता प्रगट करूं छुं।

टीकाओ आदिमां रहेला पाठांतरो मेलवीने मूलपाठ जोडे कौंशमां आपेला छे।

श्री श्रमण संघमां आगमो कंठस्थ करवामां, स्वाध्याय करवामां, विस्तृत टीकाओना वांचन पछी मूलसूत्रोनुं पुनरावर्तन करवामां, आ मूल सूत्रोना संयुक्त संपादन थी घणी अनुकूलता रहेशे अने एथी उत्साही मुनि भगवंतो होंशे होंशे सूत्रो कंठस्थ करीने आगम श्रुतने धारण करवा माटे पण समर्थ बनी शकशे। २, ५, के १०, २० सूत्र कंठस्थ करनारा घणा मुनिवरो तैयार थशे अने पुरतो प्रयत्न थाय तो लगभग एक लाख श्लोक प्रमाण मूल सूत्रो कंठस्थ करी धारी राखनारा अनेक गणो मुनिवरोमां थइ शकशे। 'ज्ञानधनाः साधवः' 'शास्त्रचक्षुषः साधवः' ए विधान मुजब श्रमण संघना प्राण समान आ आगम सूत्रोनुं श्री श्रमण भगवंतो द्वारा विशेष परिशीलन थतां श्रीसंघने माटे श्री शासन ने माटे घणी उज्वलता फेलाशे अने ए आशयथी स्वपरना श्रेयकारी आगम सूत्रोनां संशोधन संपादनमां अविरत उत्साह प्रवर्तमान छे।

प्रकाशननी सगवडता माटे श्री गौतम आर्ट प्रिन्टर्स (ब्यावर) ना व्यवस्थापक श्री छगनलालभाईए जे खंत अने उत्साह बताव्या छे तेने कारणे आ प्रकाशनो समयसर प्रकाशित थइ रह्यां छे।

चरम तीर्थपति श्रमण भगवान महावीर देवे प्रकाशेल जिनवाणीनो प्रभाव पांचमा आराना छेडा सुधी रहेशे। ए ज्वलंत जिनवाणीनो प्रकाश आपणा आत्माने योग्यता अने अधिकार मुजब अजवालनारो बने अने जिनवाणीनी आ उपासनाभक्तिमां भावना पूर्वक रस लइ रह्यो छु ते भावोल्लास टकी रहे अने सौ श्रुत आराधनामां उजमाल बनीए एज मारा अंतरनी शुभ अभिलाषा छे।

वीर सं० २५०४ वि० सं० २०३४
महा सुद ६ सोमवार
ता० १३-२ ७८
मु० अलाउ (ता. धंधुका)
(गुजरात)

हालारदेशोद्धारक
कविरत्न पूज्य आचार्यदेव
श्रीमद्विजयअमृतसूरीश्वरजी महाराजानो
चरणसेवक
पं० जिनेन्द्रविजय गणी

卐卐

प्रकाशकीय निवेदन

अमारी ग्रन्थमाला तरफथी आ श्रीआगमसुधासिन्धु सातमो विभाग मूल प्रगट करता आनंद अनुभवीए छीए। हालमां ४५ आगम मूल अने केटलांक आगम टीका सहित प्रकट करवानु' काम शरू करतां आ ग्रन्थ नागरी लिपिमां मोटा टाइपमां प्रगट करेल छे। आ प्रकाशन पूर्वे श्री आगम-सुधा-सिन्धुना पहेलो, बीजो, त्रीजो, चोथो, पांचमो, छट्ठो, आठमो, अग्यारमो, बारमो, तेरमो, चौदमो विभाग प्रगट थई गया छे। हवे मात्र आ श्रेणीमां ९-१० वे विभाग तथा श्री आचाराङ्ग सूत्र टीका बाकी रहे छे।

आ ग्रन्थनु' संशोधन संपादन हालारदेशोद्धारक कविरत्न स्व० पू० आचार्यदेव श्रीमद्विजयअमृतसूरीश्वरजी महाराजना शिष्यरत्न पू० पंन्यासश्री जिनेन्द्रविजयजी गणिवरे घणी खंतथी करेल छे।

कागल छपाई आदिना भाव वधवाने कारणे तेमज मर्यादित नकलो छपाती होवाथी खर्च धार्या करतां वधु आवे छे। मोटा टाइपमां मुद्रित करतां पेज पण वधारे थाय छे। परंतु टकवानी अने अभ्यासनी दृष्टिए अनुकूलता रहेशे।

आगम सूत्रोना अधिकारी योगवाही गुरुकुलवासी सुविहित मुनिओ छे। ए शास्त्रविधि मुजब पूज्य श्रमणसंघमां आगम वांचनादिमां अनुकूलता थाय ते रूपे आ श्रुतभक्ति करतां अमे आनंद अनुभविए छीए।

आ विभागमां श्री जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति आदि आठ उपाङ्ग प्रगट थई रह्यां छे। सटीक आगमोमां श्रीमदुपासकदशा सूत्र श्रीमदन्तकृद्दशा, श्रीमदनुत्तरोपपातिकदशा तैयार थइ गयां छे। श्री आचाराङ्गसूत्र श्रीशीलाङ्काचार्यश्रीजीनी टीका छपाय छे। मुद्रण माटे श्री गौतम आर्ट प्रिन्टर्सना व्यवस्थापकोए सारी खंत राखी छे तो तेमनो आभार मानीए छीए।

वीर सं० २५०४ वि. सं० २०३४
पोष कृष्ण ११

लि:–
महेता मगनलाल चत्रभुज
शाह कानजी हीरजी मोदी

४५ आगम संशोधन प्रकाशन अंगे

कृतज्ञता अने अनुमोदन

श्री महावीर परमात्माना शासननी विद्यमानताथी भव्यजीवो सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्र रूप मुक्ति मार्ग पामी शके छे, तेमां पण सम्यग्दर्शननी स्थिरता अने सम्यग्चारित्रनी उज्वलतानु कारण सम्यग्ज्ञान छे, ए सम्यग्ज्ञाननी साधना ए आत्मानी निर्मलतानुं मुख्य कारण छे।

४५ आगम आदि सम्यग्ज्ञाननी साधना आजे प्राप्त थाय छे ते परम सौभाग्य छे, अधिकार मुजब तेनी साधनामां उजमाल बनवुं ते दरेक कल्याणकामी आत्मानी फरज छे।

४५ आगम आदि श्रुतसाहित्यनुं संशोधन अने संपादननुं कार्य वि० सं० २०२७ मां शरु कर्युं अने अत्यारे सं० २०३४ मां कार्य सारी रीते आगल वध्युं छे, ७८ हजार श्लोक मूल अने ४-५ हजार श्लोकनुं टीकाओनुं कार्य अत्यार सुधी संपादित थई प्रगट थई गयेल छे।

आ महान कार्यनो आरम्भ राजकोट जयराज प्लोट अने प्रह्लाद प्लोटना चातुर्मासमां सं० २०२७ मां कर्यो हतो अने त्यार बाद सं० २०२९ नुं मलाड वेस्ट शेठ देवकरण मुलजीभाई जैन वाडीमां चातुर्मास कर्युं त्यारथी वेगथी काम चाल्युं हतुं जे आ सं० २०३४ मां लगभग पूर्ण थशे।

जिन आगम ए जैन धर्मना प्राण छे अने ए जिन वचनथी आत्मकल्याण नो मार्ग चाले छे, एथी जिनवचन जिन आज्ञा ए आराधक माटे प्राण स्वरूप छे, जिन वचन प्रत्येना अविहड आत्मीयभावने धारण करनारा परम उपकारी पूज्यपाद गुरुदेव आचार्य भगवंत श्रीमद्विजयअमृतसूरीश्वरजी महाराजाना अनन्य उपकार वात्सल्य अने ग्रहण आसेवन शिक्षणना प्रतापे आ आगम संशोधन संपादन कार्यनो प्रारम्भ कार्यनी स्थिरता अने कार्यनी पूर्णाहूति थवा आवी छे, तेओश्री करुणालुनी कृपा ज आ कार्यमां कारण छे, एमांथी मने बल प्राप्त थयुं छे।

गुरुदेवना विरह बाद जेओश्रीए सदा आत्मीय भावे शिष्य तुल्य मानीने, जिन वचननी स्पष्टता जिन वचननी वफादारी अने श्री जिन वचननी आराधना

प्रभावना अने रक्षा माटे सदाने माटे जेओश्री ए कृपा वरसावी छे एवा परम-शासन प्रभावक जिनवचनना अजोड उपदेशक पूज्यपाद आचार्यदेवेश श्रीमद्-विजयरामचन्द्रसूरीश्वरजी महाराजाना वात्सल्य मार्गदर्शन अने प्रेरणा आ आगम संपादनना कार्यमां अनन्य बल बन्या छे अने एथी आ संपादनमां जे सफलता प्राप्त थई छे तेमां बधो उपकार तारक उपकारी शासनप्राण पूज्यपाद आचार्य-भगवंत श्रीजीनो छे, ए माटे तेओनो जेटलो आभार मानुं तेटलो ओछो छे।

वली आ आगम संपादनना कार्यमां मार्गदर्शन प्रेरणा अने उत्साह आपवा माटे स्वर्गस्थ पूज्यपाद पर्यायस्थविर आचार्य भगवन्त श्रीमद्विजयमेरुसूरी-श्वरजी महाराजा तथा परम शान्तमूर्ति गुरुदेवसेवारस निमग्न पूज्यपाद आचार्य-देव श्रीमद्विजयमहोदयसूरीश्वरजी महाराज तथा पूज्यपाद प्रवचन प्रभावक आचार्यदेव श्रीमद्विजयरविचन्द्रसूरीश्वरजी महाराजने जरा पण भूली शकुं तेम नथी।

तेओश्री आ कार्यमां सदा उत्साहप्रेरक मार्गदर्शक बनता हता, तपस्वी मुनिराज श्री नरवाहनविजयजी महाराज विचारविनिमयमां सहायक बनता हता।

आगम सुधासिन्धुना आ कार्यमां एक या बीजा प्रकारे उत्साह वधारनार पूज्य आचार्य भगवन्तो, वयोवृद्ध पू० आचार्यदेव श्रीमद्विजयप्रतापसूरीश्वरजी महाराज, पूज्यपाद आचार्यदेव श्रीमद्विजयरामसूरीश्वरजी महाराज (डहेलाना उपाश्रय वाला), पूज्यपाद आचार्यदेव श्रीमद्विजयकनकचन्द्रसूरीश्वरजी महाराज, पूज्यपाद आचायदेव श्रीमद्विजयसुदर्शनसूरीश्वरजी महाराज, पूज्यपाद आचार्यदेव श्रीमद्विजयभद्रङ्करसूरीश्वरजी म० तथा तेओश्रीना शिष्यरत्न पं० श्री पुण्य-विजयजी म०, पू० आ० श्रीमद्विजयभुवनचन्द्रसूरीश्वरजी महाराज, पू० आ० श्री-विजयसोमचन्द्रसूरीश्वरजी महाराज तथा पू० पाद पंन्यासजी महाराज श्री भद्रंकर-विजयजी गणिवर, पू० मुनिराज श्री जयंतविजयजी म० (त्रिस्तुतिक), पू० मुनिराज श्री जयध्वजविजयजी महाराज, पू० मुनिराज श्री जितेन्द्रविजयजी म० तथा पू० मुनिराज श्री गुणरत्नविजयजी महाराज, पू० मुनिराज श्री रत्नभूषण-विजयजी महाराज मुनिराज श्रीमहाबलविजयजी महाराज मुनिराज श्री भद्रशील विजयजी महाराज आदि प्रत्ये कृतज्ञता प्रगट करूं छुं। मारा विनेय वैयावच्ची मुनिराज श्री योगीन्द्रविजयजी म० तरफथी आवा विशाल कार्यना संपादनमा एकाग्रपणे उद्यमशील रहेवानी खुब अनुकूलता रही छे तेनी अनुमोदना करूं छुं।

संपादनमां जरूरी हस्त प्रतो आदि माटे, शेठ आणन्दजी कल्याणजी पेढी-लींबडी, गोडीजी जैन मन्दिर भण्डार मुम्बइ, श्री शांतिनाथ तालपत्रीय भंडार खम्भात, श्री आर्य जम्बूस्वामी मुक्ताबाई जैन ज्ञानभंडार डभोइ, श्रीहर्षपुष्पामृत जैन ज्ञानभंडार लाखाबावल, श्री जैनानन्द पुस्तकालय वडोदरा, श्री लालभाई दलपतभाई विद्यालय अहमदाबाद, श्री वीशा श्रीमाली तपगच्छ ज्ञाति-जामनगर, शेठ आणन्दजी कल्याणजी पेढी-सुरेन्द्रनगर, आ भंडारो तथा बीजा पण अनेक भंडारो तथा संस्थाओए जरूर मुजब प्रतो आदि आपी ते माटे तेमना सहकारनी अनुमोदना करुं छुं।

आगमना आ विशाल कार्यनी व्यवस्था माटे नीचेना भाविकोए उद्यम सेव्यो छे. महेता मगनलाल चत्रभुज जामनगर, शा. कानजी हीरजी जामनगर, शाह रीखवचन्द फुलचन्द मुम्बइ, शाह जेसंगलाल चोथालाल मेपाणी मुम्बइ, शाह प्रेमचन्द भारमल दोढिया-माटुंगा मुम्बइ, शाह प्रेमचन्द मेघजी गुढका-परेल मुम्बई, शाह मनसुखलाल जीवराज तथा तेमना चिरंजीवी हेमेन्द्रकुमार मनसुखलाल राजकोट, स्व० शाह पोपटलाल परशोतमभाई मुम्बई, शाह वेलजी हीरजी गुढका सात रस्ता मुम्बई, शाह वालजी गणशीभाई मलाड मुम्बई, शाह जयंतिलाल त्रिभोवनदास संघवी अमदावाद, शाह हरखचन्द गोवींदजी मारु भीवंडी, शाह नवीनचन्द्र बाबुलाल जामनगर, शाह झवेरीलाल-हरशीभाई छेडा मलाड मुम्बई, शाह मुलजी डायाभाई वरली मुम्बई तथा शांतिभवन जैन उपाश्रय जामनगरनुं ट्रस्टी मंडल विगेरे तरफथी जे व्यवस्था करवामां सहयोग मल्यो छे तेमनी श्रुत तथा गुरुभक्तिनी अनुमोदना करुं छुं।

मुद्रण व्यवस्था माटे पिंडवाडा श्री ज्ञानोदय प्रिन्टिंग प्रेसना ट्रस्टी श्री समरथमलजी भाई तथा श्री लालचन्द छगनमलजी भाई तथा मेनेजर श्री फतेह-चन्द भाईए सहकार आप्यो छे अने ब्यावर-गौतम आर्ट प्रिन्टर्सना व्यवस्थापक श्री छगनलालजी तथा शांताक्रुझ-साईनाथ प्रेस वाला श्री तिवारी तरफथी जे सहकार प्राप्त थयो छे तेनी नोंध लउं छुं।

उपरांत ग्राहक बनी प्रेरणा आपी जे जे संघो तथा धर्मप्रेमी भाविकोए ते नामी अनामी सर्वे भाविकोना आ महान कार्यमां सहकार आपवाना शुभ आशयनी अनुमोदना करुं छुं ।

आगम संशोधन-संपादननुं आ कार्य महान छे अने शक्ति संयोग साधन समय परिमित होवाने कारणे तेमज छद्मस्थ सुलभ त्रुटि सहज होवाथी आ कार्यमां जे जे त्रुटिओ रहेली होय ते ते क्षतिओ पूज्यपाद आचार्यदेवो आदि सुधारवा कृपा करे अने मने पुणः सूचित करे जेथी क्षतिनो ख्याल आवे सुधारी शकाय अने भविष्यमां पण ते सूचन उपयोगी बने ।

अन्ते आ कार्यमां जे सारुं थयुं छे ते श्री महावीर परमात्मा तेमना शासन अने शासन सेवी पूज्य आचार्य भगवन्तोना प्रभावे थयुं छे, अने जे क्षति रही छे ते मारी छे अने क्षतिओ माटे अन्तःकरण पूर्वक क्षमा याचुं छुं अने श्री जिनेन्द्र शासनना प्राण एवा आ आगमोनी भक्तिनो लाभ सदा मले हृदयमां एज भावना राखी विरमुं छुं ।

जैन उपाश्रय
भाडला
(राजकोट) सौराष्ट्र
सं० २०३४ फागण सुद १०
रविवार ता० १९ ३-७८

तपोमूर्ति पू० आ० श्रीविजयकर्पूरसूरिश्वरजी म.
ना पट्टधर हालारदेशोद्धारक कविरत्न
पू० आ० श्री विजयअमृतसूरीश्वरजी म० नो
चरणकिंकर
पं० जिनेन्द्रविजय गणी



-: अनुक्रमणिका :-

—:०:—

श्रीमत्पूर्वधरस्थविरव्यस्थापित

卐 श्री जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति सूत्र 卐

श्रीगणधर देव प्रणीत

卐 श्रीचन्द्रप्रज्ञप्ति सूत्र 卐

१: प्रथम मण्डल प्राभृत

२ : द्वितीय प्राभृत

१० : दशमप्राभृत

—:०:—

卐 श्री सूर्यप्रज्ञप्ति सूत्र 卐

१ : प्रथम प्राभृत

२ : द्वितीय प्राभृत

— .o: —

卐 श्री निरयावलिका सूत्र 卐

---

* शुद्धिपत्रक *

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१	८	उत्तरपुच्छिमे	उत्तरपुरच्छिमे
३	१२	०थूमियाए, जाव	०थुभियाए, जाव
३	१६	पण्णत्तं	पण्णत्ते
४	४	दाहिणविच्छण्णे	दाहिणविच्छिण्णे
८	१४	दाहिणड्ढभरहकूडे	दाहिणड्ढभरहकूडे
६	१४	ञया	ञया
६	२२	स्सहे० चिट्टइ	स्सेह० चिट्ठइ
२५	१२	खेभंकरे	खेमंकरे
२५	१६	सणुआ	मणुआ
२६	३	होस्था	होत्था
२६	२१	संट्ठि	सट्ठिं
३१	५	समाणिअ०	सामाणिअ
३२	६	करेंति	करेति
३२	१५	३	२
३७	८	तट्टतेआ	नट्टतेआ
४१	२१	०जोअणविच्छण्णा	जोअणविच्छिण्णा
४२	२	चासरंत०	चाउरंत०
४२	४	कलवासंतरेण	कालवासंतरेण
४२	१६	तरुण रस्सि	तरुण रविरस्सि
४२	१६	उभयजोगी	उभयजोणी
४३	६	जोणामेवा	जेणामेव
४४	१३	सुसंवडे	सुसंवुडे
४६	६	दसवद्धवण्णस्स	दसद्धवण्णस्स
४६	१०	पमाणं	पणामं
४७	१२	समुत्तजालभिरामे	समुत्तजालाभिरामे
४८	६	पच्चप्पिणंति	पच्चप्पिणति
४८	१३	जम्मुक-	उम्मुक-
४८	२१	-पवरवाहणा	पवरवाहण
४६	२२	०मज्झा	०मज्झो
५१	२४	त्ता	त्ता
५२	१७	ते	से
५३	६	तो तो	ततो
५३	२०	सघटं	सघंट
५३	२२	वरवइवद्धतुवं	वरवइरवद्धतुंबं
५४	५	मदामेह	महामेह
५४	७	दूरूढे १।	दूरूढे ॥ सू० ४८॥
५५	३	दाहिणल्लेणं	दाहिणिल्लेणं
५५	३	जंबुद्दीवे	जंबुद्दीवे दीवे
५५	१४	चारतचक्कवट्टी	चाउरंतचक्कवट्टी
५६	३	पुरत्थिाभिमुहे	पुरत्थिमाभिमुहे
५७	११	खिक्खुडाण	णिक्खुडाण
५६	५	अण्ह-	अणह-
५६	११	ब्वलभि०	उवलभि०
६२	२	पत्तंग	पत्तं
६३	१	दर	दरी
६६	१३	गोणावइ	सेणावइ
६८	८	खिप्पामेवा	खिप्पामेव
६८	२४	सुहकयच्छाइं	सुहकयच्छायं

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
७०	३	चउरेत०	चाउरंत०	२०४	२०-२३	अभिअ	अभिअ
७०	१६	समणा	समाणा	२०५	१७	१६८	सूत्र १६८
७२	४	वयाणाणि	वयणाणि	२११	२	श्रुतस्थविर	गणधर देव
७४	१३	पद्ममालगे	पद्ममालगे	२१२	१२	नक्खत्तविचए	नक्खत्तविजए
७८	२१	पिच्छणो	पिच्छिणो	२१३	८	विक्खममाणे	निक्खममाणे
८०	६	घण्णाहिं	घण्णाहिं	२१६	१	प्राभृतप्राभतम्	प्राभृतप्राभृतम्
८१	१२	मुइगत्थएहिं	मुइंगमत्थएहिं	२२४	४	प्रथमप्राभते	प्रथमप्राभृते
८६	१२	विरहइ	विहरइ	२२७	२२	एगट्ठिमागे	एगट्ठिभागे
९०	१२	०थुमिआ	थुभिआ	२२९	१५	वाहल्लेणं	बाहल्लेणं
९३	१६	भिसमाण	भिसमाणा	२३०	४	सुरिए	सूरिए
९४	३	पुणसंडेण	वणसडेण	२३५	१	मामेव	तमेव
९६	२	लुरदेवीकूडे	सुरादेवीकूडे	२५३	२२	अणतर पुक्खड०	अणंतर पुरक्खड०
१०६	८	विभयमाणि	विभयमाणी	२५८	२३	अभिणिसट्ठाताहिं	अभिणिसट्ठताहिं
११६	१२	०विक्खमेण	०विक्खभेणं	२६५	१६	ट्ठित्ता	ट्ठित्ता
१२७	१४	पासायमडेंसगस्स	पासायवडेंसगस्स	२७०	१३	धणिट्ठा संठिए	धणिट्ठा
१२८	१५	चिट्टइ	चिट्ठइ	२७१	१६	अहिएति	आहिएति
१४४	१	हेरणवयस्स	हेरण्णवयस्स	२७२	११	छाया	छायाए
१४८	१५	रुअवगत्थवाओ	रुअगवत्थव्वाओ	२७५	२१	तिहाओ	तिहीओ
१४८	१६	अगायभाणीओ	आगायमाणीओ	२७८	१३	मोग लायणगोत्ते	मोगल्लायणगोत्ते
१५१	३	चिट्टंति	चिट्ठंति	२७९	२२	आतिसियभो	आतिसियाओ
१५१	१६	कारोमणे	कारेमाणे	२८२	१६	प्रातभृप्राभृतम्	प्राभृतप्राभृतम्
१५८	११	पिट्ठाओ	पिट्ठओ	२९२	३	सा	ता
१५९	२	पण्ण	पण्णा	२९५	१६	पढम्स	पढमस्स
१६१	१७	तावत्तीसएहिं	तायत्तीसएहिं	३०२	२०	सत्तट्ठहिा	सत्तट्ठिहा
१६५	८	अणिभिसाए० देहमाणे	अणिमिसाए० पेहमाणे	३०५	२	अट्ठयं चासीते	अट्ठ पंचासीते
१६६	४	णरिकंता	णारिकंता	३१६	११-१४	परिहति	परिवहति
१७१	८	पण्णत्ता	पण्णत्ते	३१८	१	माणवसु	माणवएसु
१८०	४	अज्जइ	कज्जइ	३१९	२१	चंदमसूरिया	चंदिमसूरिया
१८१	१	मणुसुत्तरस्स	माणुसुत्तरस्स	३२२	१६	बुद्धतेणं गिणिहत्ता मुयइ २,	बुद्धंतेणं
१८३	१	पणण्ते	पण्णत्ते	३२६	४	दूमियघट्ठमट्ठे	दूमियघट्ठमट्ठे
१८५	६	एधभेगे	एगमेगे	३२८	१	कायंबघे	कायवघे
१८७	६	सव्वभंतरामंडलं	सव्वब्भंतरमंडलं	३२८	६	अणुपुव्वीए	आणुपुव्वीए
१९२	२०	आभिई	अभिइ	३४०	१३	एवा०	एव०
२०२	१०	हेट्ठिल्लाणो	हेट्ठिल्लाओ	३४१	१७	उतिट्ठइ	उत्तिट्ठइ

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
३४६	१८	अणुयविसिइ	अणुयविसइ
		अणुपविसत्ता	अणुपविसित्ता
३५४	२४	चरित	चरति
३५६	१६	एवा०	एव०
३५८	४	कह	ता कहं
३६४	११	तहेंव	तहेव
३६६	६	दाणि०	दाहिण०
३८३	१०	सवणे	संठाणे
३८४	२४	चउवीसंगुला-	चउवीसंगुल-
३८५	२३	अट्ठ(सत्त)पणरस	पण्णरस(अट्ठ, सत्त)
३९२	६	रवेतीहिं	रेवतीहिं
३९८	२	पुव्वफग्गुणी	पुव्वाफग्गुणी
३९९	२३	बावट्ठिं	बावट्ठिं
४०५	१५	जसि	जंसि
४०५	१६	तासिएणं	तारिसएणं
४०८	१७	अणंतरपुक्खडे	अणंतरपुरक्खडे
४१५	६	एतसि	एतेसि
४२४	२२	एमाहसु	एवमाहसु
४२७	३	सव्ववरिल्लं	सव्वुवरिल्लं
४३२	१७	लवणोदधणो	लवणोदधिणो
४३४	४	वद्दे	वट्टे
४४८	६	सुकण्हे	सुकण्हे
४४९	६	जावप्पवरं	जाणप्पवरं
४४९	१८	वंदति	वंदति २
४५४	१०	विखेति	विरवेति
४५७	२०	असए	ऊसए
४५९	२३	(असीतरणे)	(असीतरेण)
४६५	१८	सेयण-	सेयणग
४६७	१	-सोहनाय०	सीहनाय०
४७१	६	जवुद्दीवे	जंबुद्दीवं
४७२	५	अहुणोवन्ने	अहुणोववन्ने
४७५	५	आतवेमाणस्स	आतावेमाणस्स
४७६	६	महारया	महाराया
४७७	२०	सत्तिवन्नो	सत्तिवन्ने
४७९	२	०समयंत्ति	०समयंसि
४८१	१४	संचाडए	संघाडए
४८१	२३	०प्पभितोणं	०प्पभितीणं
४८५	२०	भीत्ताइं	भत्ताइं
४८६	२२	रयणकरंगतो	रयणकरंडगतो
४८७	२१	०मुगंध०	०सुगंध०
४८८	१०	विहरत्तए,	विहरित्तए.
		तमिच्छाण	तमिच्छामि
४९२	१	०चूलका०	०चूलिका०

—:o:—

श्री श्वे. मूर्तिपूजक जैन संघो जोग विनंति

४५ आगम मूल–पुस्तक श्रेणी योजना अंगे

※ निवेदन ※

जणाववा आनंद थाय छे के परम करुणानिधि चरम तीर्थपति श्रमण भगवान महावीरदेवे भव्य जीवोना श्रेयना हेतु रूप तीर्थनी स्थापना करी अने गणधर देवोने त्रिपदीनुं प्रदान कर्युं. लब्धिनिधान श्री गणधर देवोओ द्वादशांगीनी रचना करी. जेमनी पाट परंपरा विद्यमान छे ते श्रीमत्सुधर्मस्वामीजीनी द्वादशांगी प्रवर्तमान रही अने वर्तमानमा अग्यार अंग आदि अग प्रविष्ट अने बार उपांग दश पयन्ना, छ छेद. ४ मूल अने २ चूलिका सूत्रो एम अग बाह्य श्रुतज्ञान आदि विद्यमान छे ते सूत्रो उपर पूर्वाचार्य महापुरूषो विरचित निर्युक्ति, भाष्य, चूर्णि, टीका, अवचूरि विगेरे आगमानुसारी श्रुत विद्यमान छे.

आ कल्याणकारी श्रुतना आधारे 'श्री महावीर परमात्मानुं शासन प्रवर्तमान छे. पूज्य आचार्य भगवतो आदि मुनिराजो आदि योगवहन, गुरुकुलवास, गुरुआज्ञा आदि योग्यता मुजब अे श्रुतना अधिकारी छे. अने अेथी अे शास्त्रीय मर्यादामा रहेता पूज्योने आ श्रुतज्ञानना स्वाध्याय आदिनी अनुकुलता रहे ते हेतुथी श्रुत भक्तिरूपे ४५ आगमो मूल तेमज केटलाक सूत्रोनी टीका आदि मुद्रित करवानुं नक्की कर्यु छे तेनुं संशोधन अने संपादन हालार देशोद्धारक पूज्य आचार्यदेव श्रीमद् विजय-अमृतसूरीश्वरजी महाराजना शिष्य पूज्य पंन्यास श्री जिनेन्द्रविजयजी गणिवर अथाग परिश्रम पूर्वक करी रह्या छे।

आ सूत्रो श्री संघना भंडारोमां तेमज पू० गुरुदेवोने अर्पण करवा प्रसारित करवानो अमे निर्णय कर्यो छे। तेनी-मर्यादित नकलो प्रकाशित थाय छे अने जे श्री संघो के श्रुतभक्ति रूपे श्रावकोअे आ प्रतिओ मेलववी होय तेमणे पोतानी नकल नी यादी लखावी देवा विनति छे।

सूत्रोनी नकलो मर्यादित प्रकाशित थाय छे वली बुकसेलरोने ते वेंचवा आपवानो नथी अेटले पाछलथी प्रतिओ प्राप्त थवी मुश्केल पडशे। जेथी भंडारोने सुव्यवस्थित अने समृद्ध बनाववा श्री संघोअे पोताना सेट तरतमां लखावी देवा, पूज्य गुरुदेवो के संघोने अर्पण करवा या श्री शासननी मिल्कत रूपे सुरक्षित राखी, पूज्य गुरुदेवोने स्वाध्याय आदि माटे अर्पण करवा सुश्रावको पण आ सेट खरीदी शकशे।-तेओ आ सेट वांची के वेंची शकशे नहीं। आ आगमो श्वे० मू० पू० जैनो माटे ज अपाय छे।

४५ आगमो अने ४ सूत्रोनी टीकाओ आदि कार्य हाथ उपर धरायुं छे।

चौद विभागमा ४५ आगम प्रगट थाय छे. मात्र नवमो दसमो भाग तथा श्री आचारांग सूत्र टीकानुं काम चालु छे ते सिवाय बधा आगम तैयार थई गया छे।

---

४५ आगम सेट मूल्य रू० ७००)

सेट मंगावनारे पोताने मोकलवानां ग्रन्थो रेल्वे के ट्रान्सपोर्ट द्वारा प्राप्त थाय तेवुं सरनामुं जणाववुं ।

आ आगम श्रेणी अंगे नाम नोंधाववा तथा रकम मोकलवाना सरनामाः—

(१) महेता मगनलाल चत्रभुज
शाक मारकेट सामे निशाल फली,
जामनगर, (सौराष्ट्र)

(२) शा. मनसुखलाल जीवराज भाडलावाला
शराफ बाजार; राजकोट (सौराष्ट्र)

(३) संघवी जयंतिलाल त्रिभोवनदास
महावीर स्टोर्स २६८१ फुवारा बाजार
गांधी रोड़, अहमदावाद

(४) शा. वेलजी हीरजी गुढका
५२ वी एम. आझाद रोड, रंगवाला चाल,
मुंबई-४०००११

(५) शा. रीखवचन्द फुलचन्द
सी.पी. टेन्क पहेलो पारसीवाडो
ओल्ड हीरा बील्डिंग १ले माले
सी. पी रोड, मुंबई-४

(६) नवीनचंद्र बाबुलाल शाह
डेली फली लालबाग सामे, जामनगर

आ आगम श्रेणी उपरांत अप्रकट तथा अप्राप्य ग्रन्थोनुं विशाल पाया उपर प्रकाशन करवानी पण अमारी धारणा छे।

श्रुतज्ञाननी आ भक्तिना कार्यमां सौनो साथ मलशे तो अमे वहेलासर सफल थशुं अेथी आ अंगे योग्य सहकारनी अपेक्षा राखी श्रुतज्ञान भक्तिना कार्यमां साथ आपवा नम्र विनति छे।

दरेक मोटा संघो एक एक सेट पोतानां भंडारमां वसावे तेथी आपने आ विज्ञप्ति मोकली छे।

वहेलासर आपनो निर्णय जणावशो।

ता० १०-१०-७८
जामनगर



लि०
महेता मगनलाल चत्रभुज
शाह कानजी हीरजी

॥ श्री महावीरजिनेन्द्राय नमः ॥
॥ श्रीमणिवुद्धयाणंदहर्षकपूरामृतसूरिगुरुभ्यो नमः ॥

४५ आगम मूल-पुस्तक श्रेणी योजना

श्री आगम-सुधा-सिन्धुः

संपादकः—तपोमूर्ति पूज्य आचार्यदेवश्री विजयकपूरसूरीश्वरजी म. ना पट्टधर हालारदेशोद्धारक
पूज्य आचार्यदेव श्रीमद्विजयअमृतसूरीश्वरजी म. ना शिष्यरत्न

पू. पं. श्री जिनेन्द्रविजयजी गणिवर

अग्यार अंग सूत्रो

प्रथमो विभागः

नं०	नाम		श्लोक
१	श्री आचारांग	सूत्र	२५५४
२	,, सूत्रकृताङ्ग	,,	२१००
३	,, ठाणांग	,,	३७००
४	,, समवायांग	,,	१६६०

द्वितीय-तृतीय विभाग

५	श्री भगवती	सूत्र	१५७५२

चतुर्थो विभाग

६	श्री ज्ञाता	सूत्र	५४६४
७	,, उपासकदशा	,,	८१२
८	,, अंतकृद्दशा	,,	७९०
९	,, अनुत्तरोपपातिक	,,	१९२
१०	,, प्रश्नव्याकरण	,,	१२५०
११	,, विपाक	,,	१२१६

बार उपांग सूत्रो

पञ्चमो विभाग

नं०	नाम		श्लोक
१	श्री उववाइ	सूत्र	११६७
२	,, राजप्रश्नीय	,,	२१२०
३	,, जीवाभिगम	,,	४७००

षष्ठो विभाग

४	,, पन्नवणा	सूत्र	७७८७

सप्तमो विभाग

५	श्री जंबूद्वीप प्रज्ञप्ति	सूत्र	४४५४
६	,, चन्द्र प्रज्ञप्ति	,,	२२००
७	,, सूर्य प्रज्ञप्ति	,,	२२९६
८	,, कलिका	सूत्र	
९	,, कल्पावतंसिका	,,	
१०	,, पुष्पिका	,,	११०९
११	,, पुष्पचूलिका	,,	
१२	,, वह्निदशा	,,	

१० पयन्ना सूत्रो

अष्टमो विभाग

नं०	नाम		श्लोक
१	श्री चउशरण	सूत्र	८०
२	,, आउरपच्चक्खाण	,,	१००
३	,, महापच्चक्खाण	,,	१७६
४	,, भक्त परिज्ञा	,,	२१५
५	,, तदुलवैयालीय	,,	१३८
६	,, संस्तारक	,,	१५५
७	,, गच्छाचार	,,	१७५
८	,, गणिविज्जा	,,	१०५
९	,, देवेन्द्र स्तव	,,	३७५
१०	,, मरणसमाधि	,,	८७५
१	,, चन्द्र वेध्यक	,,	१७४
२	,, वीरस्तव	,,	४३

६ छेद सूत्रो

नवमो विभागः

नं०	नाम		श्लोक
१	श्री निशीथ	सूत्र	८२१
२	,, बृहत्कल्प	,,	४३७
	,, पचकल्पभाष्य	,,	३१३५
३	,, व्यवहार	,	३७३
४	,, दशाश्रुत	,,	२१०६
५	,, जीतकल्प	,,	१०५

दशमो विभागः

६	,, महा निशीथ	सूत्र	४५४८

एकादशमो विभागः

श्री कल्पसूत्र (प्रताकार ३६ पोइन्ट टाइप) १२१५

४ मूल सूत्रो

द्वादशमो विभागः

१	श्री आवश्यक	सूत्र (नियुक्ति भाष्य सह)	२५००
२	,, ओघनियुक्ति	,, (भाष्य सह)	१३५५

त्रयोदशमो विभागः

३	श्री दशवैकालिक	सूत्र	७००
	,, पिंडनियुक्ति	,,	८३५
४	,, उत्तराध्ययन	,,	२०००

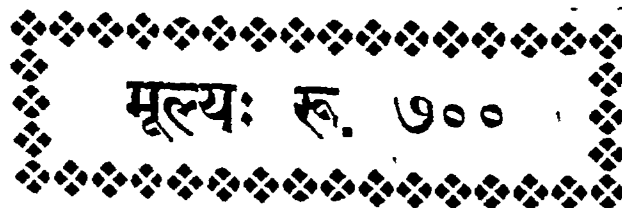
२ चूलिका सूत्रो

चतुर्दशमो विभागः

१	श्री नंदी सूत्र	७००
२	श्री अनुयोगद्वार सूत्र	१८९९

सटीक आगमो आदि

नं०	नाम		मूल श्लोक	टीकाकार	टीका श्लोक
१	श्री आचारांग	सूत्र	२५५४	श्री शीलांकाचार्यजी म०	१२०००
२	श्री उपासकदशांग	,,	८१२	श्री अभयदेवसूरिजी म०	८००
३	श्री अणकृद्दशांग	,,	८९९	,,	४००
४	,, अनुत्तरोपपातिक	,,	१८२	,,	१००
५	नवस्मरणानि गौतमस्वामिरासश्च				



❀ श्री आगम सुधा सिन्धु ❀

४५ आगम मूल प्रकाशन श्रेणी

आगम श्रेणीना ग्राहक थनार

भाग्यशालीओनो शुभ नामावली

नं०	नाम	गाम
१-२	श्री हालारी वीशा ओसवाल तपगच्छ जैन उपाश्रय ट्रस्ट	जामनगर
३	शेठ धर्मदास शांतिदासनी पेढी, सावरकुण्डला	
४-५	तपगच्छ अमर जैनशाला	खंभात
६	शेठ मोतीशा लालबाग जैन चेरिटिझ	बम्बई
७	श्री श्वे० मू० जैन संघ	झरीया
८-९	श्री श्वे० मू० जैन संघ	मुलुंड
१०	शाह चत्रभुज जीवराज	,,
११	शाह मूलचन्द माणेकचन्द	बम्बई
१२	शाह केशवलाल मोतीलाल	,,
१३	शाह रमणिकलाल लक्ष्मीचन्द	,,
१४	श्री आराधना भवन पौषधशाला	दादर
१५	श्री श्वे० मू० जैन संघ	हलवद
१६	एक भाविक श्री हर्ष पुष्पामृत जैन ज्ञान भण्डार	लाखावावल
१७	शाह मानचन्द दीपचन्द	बम्बई
१८	श्री जयसुखलालभाई	माटुंगा
१९	श्री आत्मकमललब्धि लक्ष्मणसूरि जैन ज्ञान मन्दिर	बेंगलोर
२०	श्री शांतिभवन जैन उपाश्रय	जामनगर
२१	श्री जैन श्वे. मू. तपगच्छ संघ ट्रस्ट, राजकोट	
२२	श्री जैन श्वे० नाकोडा पार्श्वनाथ तीर्थ पेढी	नाकोडा
२३	श्री खरतरगच्छ संघ ट्रस्ट	भुज
२४	श्री गुजराती तपगच्छ जैन संघ	कलकत्ता
२५	श्री श्वे० मू० श्राविका संघ	पांचोरा
२६	पू० आ० श्री विजयभुवनचन्द्रसूरि ज्ञान मन्दिर	पाटण
२७	शाह नेमचन्दभाई परबतभाई	पार्ला
२८	श्री महावीर नगर जैन सोसाइटी संघ, कांदीवली	
२९-३०	श्री शाह खाते पू० मुनि श्री जितेन्द्र-विजयजी म० नी प्रेरणा थी	......
३१	शाह चम्पालाल मंगलचन्द लुंकड,	बेंगलोर
३२	श्री जैन श्वे० मू० संघ शाहुपुरी	कोल्हापुर
३३	श्री शाह खाते पू० मुनि श्री कुलभूषण विजयजी म० नी प्रेरणा थी	बम्बई
३४	,, तपगच्छ जैन संघ	शांताक्रुझ
३५-३६	,, श्रीपालनगर जैन देरासर ट्रस्ट,	वालकेश्वर
३७	,, लब्धिभुवन जैन साहित्य सदन पू० आ० श्री विजयभद्रकरसूरीश्वरजी म० ना उपदेश थी	छाणी
३८	,, जैन जागृति केन्द्र	कोल्हापुर

नं०	नाम	गाम
३९	श्री श्वे० मू० जैन संघ	नवा-डीसा
४०	झवेरी कनुभाई लालभाई	मुंबई
४१	श्री श्वे० मू० जैन संघ	पादरली
४२	,, आदिनाथ जैन टेम्पल ट्रस्ट	बेंगलोर
४३	,, चंद्रप्रभस्वामी जैन नया मन्दिर पेढी	मद्रास
४४	,, श्वे० मू० तपगच्छ जैन संघ	वापी
४५	,, वासुपूज्यस्वामी जैन देरासर पेढी,	माटुंगा
४६	श्री शाह खाते पू० आ० श्री विजय-रामसूरीश्वरजी म० (डहेलाना उपाश्रयवाला नी प्रेरणा थी	
४७	,, जैन श्वे० पारसनाथ पेढी	बेल्लारी
४८	,, विजयदानसूरीश्वरजी जैन ज्ञानमन्दिर	अमदावाद
४९	,, श्वे० मू० जैन संघ	मनफरा
५०	,, विजयभुवनसूरीश्वर जैन ज्ञानमन्दिर	अमदावाद
५१	,, श्वे० मू० जैन सघ पू० मु० श्री अमरगुप्तविजयजी म. ना उपदेशथी	मुरबाड
५२	,, गजराजभाई पू० मु० श्री नरवाहन-विजयजी म० ना उपदेश थी	बेंगलोर
५३	,, श्वे० मू० जैन संघ	नवागाम(हालार)
५४	,, आदिनाथ सोसायटी जैन टेम्पल ट्रस्ट	पूना-९
५५	,, शांतिनगर जैन श्वे० मू० सघ	इन्दोर
५६	,, वासुपूज्यस्वामी जैन मन्दिर ट्रस्ट पू० आ० श्री विजयप्रेमसूरीश्वर जैन ग्रन्थालय	पूना-केम्प
५७	,, विजय सुदर्शनसूरी जैन ज्ञानभण्डार पू आ. श्री विजयसुदर्शनसूरीश्वरजी म. ना उपदेश थी	देवाली
५८	,, जैन श्वे० मू० संघ	यरवडा
५९	,, पार्श्वनाथ जैन श्वे० मन्दिर ट्रस्ट	पूना-२
६०	,, शाह कुंवरजी मणसी	अधेरीपूर्व
६१-६२	,, श्वे० मू० जैन संघ	नाशिक
६३	,, श्वे० मू० जैन संघ	बारडोली-२

नं०	नाम	गाम
६४	,, शाह मोरारजी नानजीभाई	मुलुंड
६५	शाह छगनलाल उत्तमचन्द हींगवाला तेमना सुपुत्र श्री नरेन्द्रकुमारना धर्मपत्नी श्री मंजुलाबेनना श्रेयार्थे	राजकोट
६६	श्री श्वे० मू० जैन संघ पू० मु० श्री-कल्पतरुविजयजी म. ना उपदेश थी	वणी
६७	,, श्वे० मू० तपगच्छ जैन संघ	घाटकोपर
६८	शाह चुन्नीलाल वीरचन्द	नवाडीसा
६९	शाह सांकलचन्द सुरचन्दजी	भींवडी
७०	शाह चुन्नीलाल शेषमलजी	भींवडी
७१	शाह मोहनलाल अमीचन्दजी अमीचन्दजी तथा वगसुबाईनी अट्ठाई निमित्ते चि० मोहनलाल बाबुलाल गुलाबचन्द कांतिलाल जवाहरलाल अशोककुमार गोत्र सोलंकी बालवाडावाला	भीवंडी
७२	श्री सुपार्श्वनाथ जैन देरासर पेढी	,,
७३	शा. रविलाल मालसीनी कुं०	भीवंडी
७४	शा. पारसमल छोगाजी, पारसमल करणराज रमेशकुमार दिनेशकुमार ललितकुमार धीरजकुमार बालवाडावाला	,,
७५	सदाजी टेक्सटाइल्स, शा. फूलचन्द हीमाजी शरतवालाना श्रेयार्थे	,,
७६	शा. मिश्रीमल वरधीचन्दजी	,,
७७	धिंगड सिल्क फेब्रीक्स ह० शा पोकरचन्द ताराजी टीमरेचा सिवानावाला	,,
७८	श्री श्वे० मू० जैन संघ पू० पं० श्री-भद्रंकरविजयजी गणिवर ना उपदेश थी	लुणावा
७९	शा. कांतिलाल मणिलाल खंभातवाला मातुश्री जसकोरबेनना श्रेयार्थे	भीवडी
८०	श्री नवलभाई मोनजीभाई	,,
८१	,, भवानीपुर श्वे० मू० जैन संघ	कलकत्ता
८२	,, शांतिनाथजी जैन सघ पू० आ० श्री प्रतापसूरीश्वरजी म० नी प्रेरणाथी देवचन्द्र नगर	मलाड ट्रस्ट

नं०	नाम	गांव
८३	शाह जयंतीलाल जेठालालभाई	भीवंडी
८४	,, वेलजी हीरजी गुढका पू० सा० श्री महेन्द्रप्रभा श्रीजी म. ना उपदेश थी	सात रस्ता–मुंबई
८५	,, देवजी देवशी	,,
८६	,, अमृतलाल जीवराज	,,
८७	,, नथुभाई नरशीभाई वोरा	नाईरोबी
८८	,, मुलचन्द पुंजाभाई हरिया	मोम्बासा
८९	,, वीरपार धरमशी चन्द्रीया	लाखाबावल
९०	,, रतिलाल पुंजाभाई ,,	,,
९१	श्री विजयलब्धिसूरीश्वरजी जैन ज्ञानमन्दिर	दादर
९२	शाह धरमचन्द रूपचन्दभाई	मुंबई
९३	शाह डुंगरसी पोपटभाई पोताना तथा तेमना धर्मपत्नी श्री बालीबेनना श्रेयार्थे ह० शाह खेतसी पोपटभाई	मुंबई
९४	शाह मुलजी डायाभाई वरली	मुंबई
९५	,, फूलचन्द मेरग नल बाजार	,,
९६	,, मेघजी डायाभाई प्रभादेवी	,,
९७	,, शामजी लखमशी	मजगाम
९८	शाह मगनलाल लक्ष्मण मारु	थाणा
९९	,, शामजी नरसीभाई गुलाबचंद शामजीभाईना श्रेयार्थे, सायन	मुंबई
१००	शाह हीराभाई हधाभाई परिवार	जामनगर
१०१	,, सोमचन्द भीमशी	घाटकोपर
१०२	,, प्रेमचन्द भीमसी कानजी	मजगाम
१०३	,, रामजी नरशी मुंगणीवाला	बम्बई
१०४	,, रणमल नरशी ,,	वडाला
१०५	,, पोपटलाल केशवजी ह० लीलाबेन पू० सा० श्री महेन्द्रप्रभा श्रीजी म. ना उपदेश थी	दादर
१०६	श्रीमती पानीबेन प्रेमचन्द देवराज	माहिम
१०७	शाह साकलचन्द हरकचन्द	जामनगर
१०८	श्री मोहनलालजी जैन उपाश्रय	सुरत
१०९	शाह रमेशचन्द कालीदासभाई तेमना धर्मपत्नी अ. सौ. कलावती बेनना मासक्षमण निमित्ते	राजकोट
११०	श्री श्वे० मू० अचलगच्छ संघ पू० मु० श्री कलाप्रभसागरजी म० ना उपदेश थी	मुंबई
१११	श्री झालावाड श्वे० मू० जैन संघ ट्रस्ट	सुरेन्द्रनगर
११२	शाह प्रभुदास वीरपाल	,,
११३	,, वाडीलाल फुलचन्द तथा तेमना धर्मपत्नी श्री शांताबेन ह० श्री महेन्द्रकुमार तथा श्री कीर्तिकुमार वाडीलाल शाह	वढवाण शहेर
११४	,, जयतिलाल डायाभाई श्री लक्ष्मीबेनना आत्मा श्रेयार्थे पू० सा० श्री चरणश्रीजी म. ना सदुपदेश थी	अमदावाद
११५	श्री संवेगी जैन उपाश्रय	वढवाण शहेर
११६	भंडारी एन्ड कं० ह० पुखराजजी	भीवंडी
११७	शाह केशवलाल माणेकचन्द कापडीया ना श्रेयार्थे	खंभात
११८	श्री प्रभाबेन केशवलाल माणेकचन्द ना श्रेयार्थे ह० तेमना सुपुत्रो रमणलाल तथा मुक्तिकुमार	,,
११९	श्री शांतिसोमचन्द्रसूरीश्वर जैन ज्ञानमन्दिर पू० आ० श्री विजयसोमचन्द्रसूरीश्वरजी म. ना उपदेश थी	अमदावाद
१२०	शेठ कल्याणचन्द सौभागचन्द पेढी	पिंडवाडा
१२१	श्री तपागच्छ जैन संघ	ध्रांगध्रा
१२२	शाह वनेचन्द वखतचन्द महेता	घाटकोपर
१२३-१२४	श्री माटुंगा किंग्सर्कल श्राविकाओ तरफथी सं० २०३३ संवत्सरी प्रतिक्रमण सूत्रनी बोलीनी उपजमांथी	
१२५	श्री श्वे० मू० जैन संघ	माटुंगा वीवी

नं०	नाम	गांव
१२६	शेठ आणन्दजी कल्याणजी पेढी	लींबडी
१२७	अमृतलाल मगनलाल वालोडीया पू० प० श्री भद्रानन्दविजयजी गणिवर ना उपदेश थी	सुरत–२
१२८	शाह प्राणलाल छगनलाल	मलाड
१२९	श्री श्वे० मू० जैन संघ पू० मु० श्री जयध्वजविजयजी म० ना उपदेशथी	धंधुका
१३०	शाह प्राणलाल देवशीभाई तेमना मातुश्री कुंकुवेनना श्रेय र्थे	माटुंगा
१३१	शाह खाते पू० सा० श्री निरजनाश्रीजी म० सा० ना उपदेश थी	मुंबई
१३२	शाह पोपटलाल राजाभाई गुढका ह० पद्मावेन	लाखाबावल
१३३	शाह मेघजी राजाभाई गुढका ह० कंकुवेन	"
१३४	श्री मणिभद्र वीर जैन पेढी पू० मु० श्री आनन्दघनविजयजी म० सा० ना उपदेश थी	आगलोट
१३५-३९	शाह जीवराज हंसराज तथा श्री माणेकवेन ते शाह जीवराज हंसराजना धर्मपत्नी	भाडला
१४०	शाह मोतीचन्द प्रेमचन्द ह० वालुभाई	राजकोट
१४१	शाह प्रभाशङ्कर सुन्दरजी चि० नगीनदासभाईना धर्मपत्नी श्री सुशीलावेनना वर्षीतप तथा उपधान निमित्ते तथा चि० नरेन्द्रकुमार (मु० श्री नयवर्धन वि० म०) पुत्री उषाकुमारी (सा० श्री उदयपूर्णा श्रीजी) तथा सकुटुम्बनी नवाणुं यात्रा तथा चि० अनंतकुमारना उपधान निमित्ते	राजकोट
१४२	शाह चीमनभाई पट्टणी ह० सीतावेन	"
१४३	शाह शिवलाल सुंदरभाई	"
१४४	शाह मिनुभाई ध्रुव	"
१४५	शाह भारमल जीवराज तथा श्रीमती जीवीवेन भारमल तथा श्री मोंघीवेन तथा श्री रतियातवेन जेठालाल तथा श्री गंगावेन भगवानजीना श्रेयार्थे ह० शाह जेठालाल तथा हेमराज तथा रायशी तथा मुलचन्द भारमल	लाखाबावल
१४६	शाह इन्दुलाल माधवजी, तेमना धर्मपत्नी श्री जसवंतीवेनना वरसीतप निमित्ते	राजकोट
१४७	वसा सौभाग्यचन्द तलकचन्द तेमना पिताश्री तलकचन्द सीराजभाई ना श्रेयार्थे	राजकोट
१४८	वसा सौभाग्यचन्द तलकचन्द तेमना मातुश्री गलाबवेन नेमचन्दना श्रेयार्थे	राजकोट
१४९	वसा सौभाग्यचन्द तलकचन्द तरफथी पोताना तथा तेमना धर्मपत्नी श्री व्रजकुंवरवेनना आत्म कल्याणार्थे ह० तेमना सुपुत्रो श्री हसमुखलाल तथा कांतिलाल	राजकोट
१५०	श्री श्वे० मू० जैन संघ	थानगढ
१५१	शाह भारमल मुराभाई दोढीया ह० वीरचन्दभाई	चगा
१५२	श्री लक्ष्मीवेन प्रेमचन्द खीमचन्द चंदरीया पू० सा० श्री स्वयंप्रभाश्रीजी म० ना उपदेश थी	जामनगर
१५३	पारेख खीमजी धरमशी परिवार	जामनगर
१५४	शाह देवशी आणन्द	"
१५५	शाह पानाचन्द हरगण गलैया ह० वेलजीभाई	लाखाबावल
१५६	शाह मेघजी वीरपाल सपरिवार	जामनगर
१५७	शाह मेरग राजपाल ह० वीरावेन पू० सा० श्री महेन्द्रप्रभाश्रीजी म० ना १५ वर्षना वर्षीतप निमित्ते पू० सा० श्री सुरेन्द्रप्रभाश्रीजी म० ना उपदेशथी	नवागाम

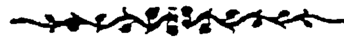
नं०	नाम	गाम
१५८	शाह लालजी भोजाभाई ना श्रेयार्थे ह० रायचन्दभाई तथा देवशीभाई तथा कपूरचन्द लालजीभाई	मुंबई
१५९	शाह कांतिलाल माणेकचन्द तेमना धर्मपत्नी श्री कलावतीबेननां वरसीतप निमित्ते	जामनगर
१६०	शाह नेमचन्द वाघजी गुढका तथा श्रीमती पुष्पाबेन नेमचन्द गुढका तरफथी तेमना पिताश्री शाह वाघजी सुराभाई तथा मातुश्री कुंवरबेन तथा भाई तेजपाल तथा गोसर वाघजी गुढक ना श्रेयार्थे	लाखाबावल
१६१	शाह जीवराज करमशी करणीया तथा श्रीमती संतोकबेन जीवराज तरघरी देवलिया हाल मोम्बासा तरफ थी तेमना स्व सु. दिनेशकुमार जीवराज करणीयाना श्रेयार्थे ह० श्री दिनेशकुमारना बेन श्रीमती पुष्पाबेन नेमचंद गुढका	लाखावावल
१६२	शाह धरमशी रामजी गोसराणीना श्रेयार्थे श्री मणिबेन धरमशी ह० तेमना सुपुत्रो भगवानजी तथा जयतिलाल तथा नेमचंद रामजी	लाखाबावल
१६३	शाह लाधाभाई पुंजा नागड़ा तथा श्री केशवजी लाधाभाई (बाबुभाई)ना श्रेयार्थे श्री डाहीबेन लाधाभाई ह० तेमना सुपुत्रो वेलजी तथा रायचद तथा झवेरचंद लाधाभाई नागडा	लाखावावल
१६४	श्री श्वे० मू० जैन सघ पू० आ० श्री विजयविबुधप्रभसूरीश्वरजी म० ना उपदेश थी	निपाणी
१६५	महेता प्रतापराय माणेकचन्द तेमना धर्मपत्नी श्री कसुंबाबेनना वरसीतप निमित्ते	जमनगर
१६६	श्री गोडीजी पार्श्वनाथ संस्थान	बालापुर
१६७	शाह देवचन्द खीमचन्द गुढका तथा श्रीमती सोनाबेन देवचन्द गुढका	जामनगर
१६८	शाह राजेन्द्रकुमार नेमचंदनी कु० ह० शाह रामजी परबतभाई गुढका	जामनगर
१६९	शाह देवचन्द रामजीनी कु० ह० शाह रामजी परबतभाई गुढका	मुंबई
१७०	शेठ श्री अमृतलाल भाणजीभाई शापरीया तथा शेठ श्री माणेकलाल चुनीलाल शाह	मुंबई
१७१	शाह रायशी पेथराज नानी राफुदडवाला तरफ थी श्रीमती जयवंतीबेन रायशीना वरसीतप मासक्षण, आदि तपो निमित्ते	जामनगर.
१७२	श्रीमती देवकुवरबेन सोमचन्द रायशी तेमना मासक्षमण उपधान, वरसीतप आदि विविध तप निमित्ते	जामनगर
१७३	शाह जेठालाल पदमशी चदरीया तरफ थी श्रीमोतीबेन जेठालालना उपधान तप निमित्ते ह० रमणिकलाल जेठालालभाई	जामनगर
१७४	श्री वीणाबेन माइचन्दभाई	मुंबई
१७५	श्री विजयअमृतसूरीश्वर जैन लाइब्रेरी	बोरीवली
१७६	शाह करमशी खीमजी चेलावाला तेमना पिता श्री खीमजी भीमजी तथा मातुश्री रूपाबेनन श्रेयार्थे	जामनगर
१७७	डॉ० मणिलाल जेचंदभाई शेठ	वढवाण शहेर
१७८	शाह मेपाभाई नथुभाई चेलावाला तेमना चि० श्री चन्दुलालना सुपुत्र सुनीलकुमार तथा सुनीलकुमार ना मातुश्री स्व० श्री कांताबेनना श्रेयार्थे	जामनगर
१७९	शाह साकरचन्द हरखचन्दभाई	जामनगर
१८०	श्री जैन श्वे० ऋषभदेव मन्दिर ट्रस्ट	बार्शी

नं०	नाम	गाम
१८१-२०५	श्री हालारी वीसा ओसवाल तपगच्छ उपाश्रय अने धर्मस्थानक ट्रस्ट	जामनगर
२०६-२२०	श्री नाइरोबी सानक्षेत्र	भंडोल
२२१	श्री जमनाबेन देवशीभाई राइमल सावला नाघेडीवाला तरफ थी श्री देवशीभाई तथा तेमना चि० केशवजीभाई ना उपधान तप निमित्ते	जामनगर
२२२	श्री डाहीबेन घेलजी नरशी दोढिया नाघेडीवाला तरफ थी तेमना चि० हंसराजभाई तथा हंसराजभाई ना धर्मपत्नी श्री कस्तूरबेनना उपधान तप निमित्ते	जामनगर
२२३	श्री श्वे० मू० जैन संघ	पडाणा
२२४	शाह खेतशीभाई वेरशी हरिया तेमना सुपुत्री श्री रंजनबेनना मासक्षमण निमित्ते पू० सा० श्री इन्द्रप्रभाश्रीजी म० ना उपदेश थी	रासंगपुर
२२५	शाह नोंघाभाई पेथराज सपरिवार	जामनगर
२२६	शाह नरशीभाई पानाचन्द तेमना धर्मपत्नी श्रीमती मणिबेनना उपधान, वरसीतप, ज्ञानपंचमी, एकादशी नवपद ओली, वर्धमान तप(८२-ओली), पोषदशमी, वीसस्थानक, अक्षयनिधि, समवसरण तप, २४ जिनना एकासणा विगेरे विविध तप निमित्ते	जामनगर
२२७	शाह जीवाभाई मोतीलाल	खंभात
२२८	शाह अमृतलाल भीमजी तेमना पिताश्री भीमजी खेंगार तथा मातुश्री नमीबेनना श्रेयार्थे ह० श्री अश्विनकुमार तथा ललितकुमार अमृतलाल शाह	वालंभा
२२९	श्री अमृतलाल नरशी शाह लाखाबावलवाला तेमना स्व० धर्मपत्नी श्री लक्ष्मीबेनना श्रेयार्थे	जामनगर
२३०	श्री श्वे० मू० जैन संघ	आगवरी
२३१	श्री श्वे० मू० जैन संघ पू० मु० श्री जितेन्द्रविजयजी म० तथा पू० मु० श्री वीररत्नविजयजी म० ना उपदेश थी	गढशिवाणा
२३२	पिताश्री पुंजाभाई कारा मालदे वसईवाला तथा मातुश्री गौरीबेनना श्रेयार्थे ह० तेमना सुपुत्रो झवेरचन्द तथा लखमशी तथा देवचन्द तथा प्रेमचन्द पुंजाभाई मालदे	मुंबई
	पू० प० श्री जिनप्रभविजयजी म० ना उपदेश थी नीचे मुजब पांच सेट	
२३३	शाह धनजीभाई वमाजीभाई	उमेदाबाद
२३४	श्री श्वे० मू० जैन संघ	कोशेलाव
२३५	,,	मांडवला
२३६	,,	वरलूट
२३७	,,	उमेदाबाद
२३८	श्री बी० एन भणशाली	जोधपुर
२३९	श्री श्वे० मू० संघ पू० मु० श्री नरचन्द्रविजयजी म. ना उपदेश थी	मणिनगर अहमदाबाद
२४०	श्री नवरंगपुरा श्वे० मू० जैन संघ पू० आ० श्री विजयजयंतशेखरसूरीश्वरजी म. ना उपदेश थी	अमदावाद
२४१	शेठ आणंदजी मंगलजी पेढी पू. प. श्री स्थूलभद्रविजयजी गणिवर ना उपदेश थी	इडर
२४२	श्री जैन श्वे० मू० तपगच्छ संघ पू० मु० श्री मतिविजयजी म. तथा पू० मु० श्री लाभविजयजी म. ना उपदेश थी	मोरवी
२४३	श्री श्वे० मू० जैन संघ पू० मु० श्री पद्मसेनविजयजी म ना उपदेश थी	पाडीव
२४४	शाह करमशी मूलजीभाई तेमना भाई शाह फूलचन्द मूलजीभाई ना श्रेयार्थे ह० श्री जश्मीनकुमार जयेन्द्रभाई	जामनगर
२४५	श्री गुणवंतीबेन जयसुखलाल शाह	दादर

॥ अर्हम् ॥

श्रीमत्पूर्वधरस्थविरव्यवस्थापितं ।

॥ श्रीमज्जम्बूद्वीपप्रज्ञप्त्युपाङ्गम् ॥



॥ अथ प्रथमो वक्षस्कारः ॥

ॐ नमः ॥ णमो अरिहंताणं । ते णं कालेणं ते णं समए णं मिहिला णामं णयरी होत्था, रिद्धत्थिमियसमिद्धा वरणओ, तीसे णं मिहिलाए णयरीए बहिया उत्तरपुच्छिमे दिसिभाए एत्थ णं माणिभद्दे णामं चेइए होत्था, वरणओ १ । जियसत्तु राया, धारिणी देवी, वरणओ २ । ते णं काले णं ते णं समए णं सामी समोसढो, परिसा णिग्गया, धम्मो कहिओ, परिसा पडिगया ३ ॥ सू० १ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी इंदभूई णामं अणगारे गोअमगोत्तेणं सत्तुस्सेहे समचउरंससंठाणे जाव तिखुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेइ वंदइ णमंसइ वंदित्ता णमंसित्ता जाव एवं वयासी ॥ सू० २ ॥ कहि णं भंते ! जंबुद्दीवे ? केमहालए णं भंते ! जंबुद्दीवे ? किंसंठिए णं भंते ! जंबुद्दीवे ? किमायारभाव-पडोयारे णं भंते ! जंबुद्दीवे परणत्ते ?, गोयमा ! अयरणं जंबुद्दीवे २ सव्वदीवसमुद्दाणं सव्वब्भंतराए १ सव्वखुड्डाए २ वट्टे तेल्लापूयसंठाणसंठिए वट्टे रहचक्कवाल-संठाणसंठिए वट्टे पुक्खरकरिणया-संठाणसंठिए वट्टे पडिपुरणचंद-संठाणसंठिए ४ एगं जोयणसयसहस्सं आयामविक्खंभेणं तिरिण जोयणसयसहस्साइं सोलस सहस्साइं दोरिण

य सत्तावीसे जोयणसए तिण्णि य कोसे अट्ठावीसं च धणुसयं तेरस अंगुलाइं अद्धंगुलं च किंचिविसेसाहियं परिक्खेवेणं पण्णत्ते ॥ सू० ३ ॥ से णं एगाए वइरामईए जगईए सव्वओ समंता संपरिक्खित्ते १। सा णं जगई अट्ठ जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं मूले बारस जोअणाइं विक्खंभेणं मज्झे अट्ठ जोयणाइं विक्खंभेणं उवरिं चत्तारि जोअणाइं विक्खंभेणं मूले विच्छिन्ना मज्झे संक्खित्ता उवरिं (प्पिं) तणुया गोपुच्छसंठाणसंठिया सव्ववइरामई अच्छा सण्हा लण्हा घट्ठा मट्ठा णीरया णिम्मला णिप्पंका णिक्कंकडच्छाया सप्पभा समिरीया सउज्जोया पासादीया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा, सा णं जगई एगेणं महंतगवक्ख (जाल) कडएणं सव्वओ समंता संपरिक्खित्ता २। से णं गवक्खकडए अद्धजोअणं उड्ढं उच्चत्तेणं पंच धणुसयाइं विक्खंभेणं सव्वरयणामए अच्छे जाव पडिरूवे ३। तीसे णं जगईए उप्पिं बहुमज्झदेसभाए एत्थ णं महई एगा पउमवरवेइया पण्णत्ता, अद्धजोयणं उड्ढं उच्चत्तेणं पंच धणुसयाइं विक्खंभेणं जगईसमिया परिक्खेवेणं सव्वरयणामई अच्छा जाव पडिरूवा ४। तीसे णं पउमवरवेइयाए अयंमेयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते, तंजहा—वइरामया णेमा एवं जहा जीवाभिगमे जाव अट्ठो जाव धुवा णियया सासया जाव णिच्चा ५ ॥ सूत्रं ४ ॥ तीसे णं जगईए उप्पिं बाहिं पउमवरवेइयाए एत्थ णं महं एगे वणसंडे पण्णत्ते, देसूणाइं दो जोअणाइं विक्खंभेणं जगईसमए परिक्खेवेणं वणसंडवण्णओ णेयव्वो ॥ सूत्रं ५ ॥ तस्स णं वणसंडस्स अंतो बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते से जहाणामए आलिंगपुक्खरेइ वा जाव णाणाविहपंचवण्णेहिं मणीहिं तणेहिं उवसोभिए, तंजहा—किण्हेहिं एवं वण्णो गंधो रसो फासो सद्दो पुक्खरिणीओ पव्वयगा घरगा मंडवगा पुढविसिलावट्टया णेयव्वा १। तत्थ णं बहवे वाणमंतरा देवा य देवीओ य आसयंति सयंति चिट्ठंति णिसीअंति तुअट्टंति रमंति ललंति कीलंति मोहंति, पुरापोराणाणं सुपरक्कंताणं सुभाणं

कल्लाणाणं कडाणं कम्माणं कल्लाणफलवित्तिविसेसं पच्चणुभवमाणा विहरंति २ । तीसे णं जगईए उप्पिं अंतो पउमवरवेइआए एत्थ णं एगे महं वणसंडे पण्णत्ते, देसूणाइं दो जोअणाइं विक्खंभेणं वेदियासमएणा परिक्खेवेणं किराहे जाव तणविहूणे णेअव्वो ३ ॥ सूत्रं ६ ॥ जंबूद्दीवस्स णं भंते ! दीवस्स कइ दारा पण्णत्ता, गोयमा ! चत्तारि दारा पन्नत्ता, तंजहा—विजए १ वेजयंते २ जयंते ३ अपराजिए ४, एवं चत्तारिवि दारा सरायहाणिया भाणियव्वा ॥ सूत्रं ७ ॥ कहि णं भंते ! जंबुद्दीवस्स दीवस्स विजए णामं दारे पण्णत्ते ?, गोयमा ! जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमेणं पणयालीसं जोयणसहस्साइं वीइवइत्ता जंबुद्दीवदीवपुरत्थिमपेरंते लवणसमुद्द-पुरत्थिमद्धस्स पच्चत्थिमेणं सीआए महाणईए उप्पिं एत्थ णं जंबुद्दीवस्स विजए णामं दारे पण्णत्ते अट्ठ जोयणाइं उद्धं उच्चत्तेणं चत्तारि जोयणाइं विक्खंभेणं तावइयं चेव पवेसेणं, सेए वरकणगथूमियाए, जाव दारस्स वण्णओ जाव रायहाणी ॥ सूत्रं ८ ॥ जंबुद्दीवस्स णं भंते ! दीवस्स दारस्स य दारस्स य केवइए अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ?, गोयमा ! अउणा-सीइं जोअणसहस्साइं बावण्णं च जोअणाइं देसूणं च अद्धजोअणं दारस्स य २ अबाहाए अंतरे पण्णत्तं,—अउणासीइ सहस्सा बावण्णं चेव जोअणा हुंति । ऊणं च अद्धजोअण दारंतर जंबुद्दीवस्स ॥ १ ॥ सूत्रं ९ ॥ कहि णं भंते ! जंबुद्दीवे दीवे भरहे णामं वासे पण्णत्ते ?, गोयमा ! चुल्लहिम-वंतस्स वासहरपव्वयस्स दाहिणेणं दाहिणलवणसमुद्दस्स उत्तरेणं पुरत्थिम-लवणसमुद्दस्स पच्चत्थिमेणं पच्चत्थिमलवणसमुद्दस्स पुरत्थिमेणं १ । एत्थ णं जंबुद्दीवे दीवे भरहे णामं वासे पण्णत्ते, खाणुबहुले कंटकबहुले विसम-बहुले दुग्गबहुले पव्वयबहुले पवायबहुले उज्झरबहुले णिज्झरबहुले खड्डा-बहुले दरिबहुले णईबहुले दहबहुले रुक्खबहुले गुच्छबहुले गुम्मबहुले लया-बहुले वल्लीबहुले अडवीबहुले सावयबहुले तणबहुले तक्करबहुले डिम्बबहुले

डमरबहुले दुब्भिक्खबहुले दुक्कालबहुले पासंडबहुले किवणबहुले वणीमगबहुले ईतिबहुले मारिबहुले कुवुट्ठिबहुले अणावुट्ठिबहुले रायबहुले रोगबहुले संकिलेसबहुले अभिक्खणं अभिक्खणं संखोहबहुले पाईणपडीणायए उदीणदाहिणविच्छिण्णे उत्तरओ पलिअंकसंठाणसंठिए दाहिणओ धणुपिट्ठसंठिए तिधा लवणसमुद्दं पुट्ठे गंगासिंधूहिं महाणईहिं वेअड्ढेण य पव्वएण छब्भागपविभत्ते जंबुद्दीवदीवणउयसयभागे पंचछव्वीसे जोअणसए छच्च एगूणवीसइभाए जोअणस्स विक्खंभेणं २। भरहस्स णं वासस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थ णं वेअड्ढे णामं पव्वए पण्णत्ते, जे णं भरहं वासं दुहा विभयमाणे २ चिट्ठई, तंजहा–दाहिणड्ढभरहं च उत्तरड्ढभरहं च॥सूत्रं १०॥ कहि णं भंते! जंबुद्दीवे दीवे दाहिणद्धे भरहे णामं वासे पण्णत्ते?, गोयमा! वेयद्धस्स पव्वयस्स दाहिणेणं दाहिणलवणसमुद्दस्स उत्तरेणं पुरत्थिमलवणसमुद्दस्स पच्चत्थिमेणं पच्चत्थिमलवणसमुद्दस्स पुरत्थिमेणं एत्थ णं जंबुद्दीवे दीवे दाहिणद्धभरहे णामं वासे पण्णत्ते पाईणपडीणायए उदीणदाहिणविच्छिण्णे अद्धचंदसंठाणसंठिए तिहा लवणसमुद्दं पुट्ठे १। गंगासिंधूहि महाणईहिं तिभागपविभत्ते दोण्णि अट्ठतीसे जोअणसए तिण्णि अ एगूणवीसइभागे जोयणस्स विक्खंभेणं २। तस्स जीवा उत्तरेणं पाईणपडीणायया दुहा लवणसमुद्दं पुट्ठा पुरत्थिमिल्लाए कोडीए पुरत्थिमिल्लं लवणसमुद्दं पुट्ठा पच्चत्थिमिल्लाए कोडीए पच्चत्थिमिल्लं लवणसमुद्दं पुट्ठा णव जोयणसहस्साइं सत्त य अडयाले जोयणसए दुवालस य एगूणवीसइभाए जोयणस्स आयामेणं तीसे धणुपुट्ठे दाहिणेणं णव जोयणसहस्साइं सत्तछावट्ठे जोयणसए इक्कं च एगूणवीसइभागे जोयणस्स किंचिविसेसाहिअं परिक्खेवेणं पण्णत्ते ३। दाहिणद्धभरहस्स णं भंते! वासस्स केरिसए आयारभावपडोयारे पण्णत्ते?, गोयमा! बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते, से जहा णामए आलिंगपुक्खरेइ वा जाव णाणाविह-

पंचवरणेहिं मणीहि तणेहिं उवसोभिए, तंजहा—कित्तिमेहिं चेव अकित्ति-मेहिं चेव ४। दाहिणद्धभरहे णं भंते! वासे मणुयाणं केरिसए आयार-भावपडोयारे पण्णत्ते?, गोयमा! ते णं मणुआ बहुसंघयणा बहुसंठाणा बहुउच्चत्तपज्जवा बहुआउपज्जवा बहूइं वासाइं आउं पालेंति, पालित्ता अप्पेगइया णिरयगामी अप्पेगइया तिरियगामी अप्पेगइया मणुयगामी अप्पेगइया देवगामी अप्पेगइया सिज्झंति बुज्झंति मुच्चंति परिणिव्वायंति सव्वदुक्खाणमंतं करेंति ५ ॥ सूत्रं ११ ॥ कहि णं भंते! जंबुद्दीवे २ भरहे वासे वेयद्धे णामं पव्वए पण्णत्ते?, गोयमा! उत्तरद्धभरहवासस्स दाहिणेणं दाहिणद्धभरहवासस्स उत्तरेणं पुरत्थिमलवण-समुद्दस्स पच्चत्थिमेणं पच्चत्थिमलवणसमुद्दस्स पुरत्थिमेणं एत्थ णं जंबुद्दीवे २ भरहे वासे वेअद्धे णामं पव्वए पण्णत्ते १। पाईणपडीणायए उदीण-दाहिणविच्छिण्णे दुहा लवणसमुद्दं पुट्ठे पुरत्थिमिल्लाए कोडीए पुरत्थिमिल्लं लवणसमुद्दं पुट्ठे पच्चत्थिमिल्लाए कोडीए पच्चत्थिमिल्लं लवणसमुद्दं पुट्ठे २। पणवीसं जोयणाइं उद्धं उच्चत्तेणं छस्सकोसाइं जोअणाइं उव्वेहेणं पण्णासं जोअणाइं विक्खंभेणं ५०, ३। तस्स बाहा पुरत्थिमपच्चत्थिमेणं चत्तारि अट्ठासीए जोयणसए सोलस य एगूणवीसइभागे जोअणस्स अद्धभागं च आयामेणं पण्णत्ता ४। तस्स जीवा उत्तरेणं पाईणपडीणायया दुहा लवणसमुद्दं पुट्ठा पुरत्थिमिल्लाए कोडीए पुरत्थिमिल्लं लवणसमुद्दं पुट्ठा पच्चत्थिमिल्लाए कोडीए पच्चत्थिमिल्लं लवणसमुद्दं पुट्ठा दस जोअण-सहस्साइं सत्त य वीसे जोअणसए दुवालस य एगूणवीसइभागे जोअणस्स आयामेणं तीसे धणुपट्ठे दाहिणेणं दस जोअणसहस्साइं सत्त य तेआले जोअणसए पण्णरस य एगूणवीसइभागे जोयणस्स परिक्खेवेणं रुअगसंठाणसंठिए सव्वरययामए अच्छे सण्हे लट्ठे घट्ठे मट्ठे णीरए णिम्मले णिप्पंके णिक्कंकडच्छाए सप्पभे समिरीए पासाईए

दरसणिज्जे अभिरूवे पडिरूवे ५ । उभओ पासिं दोहिं पउमवरवेइयाहिं दोहि अ वणसंडेहिं सव्वओ समंता संपरिक्खित्ते, ताओ णं पउमवरवेइयाओ अद्धजोयणं उद्धं उच्चत्तेणं पंचधणुसयाइं विक्खंभेणं पव्वयसमियाओ आयामेणं वण्णओ भाणियव्वो ६ । ते णं वणसंडा देसूणाइं दो जोअणाइं विक्खंभेणं पउमवरवेइयासमगा आयामेणं किण्हा किण्होभासा जाव वण्णओ ७ । वेयद्धस्स णं पव्वयस्स पुरच्छिमपच्चच्छिमेणं दो गुहाओ पण्णत्ताओ, उत्तरदाहिणाययाओ पाईणपडीण-विच्छिण्णाओ पण्णासं जोअणाइं आयामेणं दुवालस जोअणाइं विक्खंभेणं अट्ठ जोयणाइं उद्धं उच्चत्तेणं वइरामय-कवाडोहाडिआओ, जमलजुअल-कवाडघण-दुप्पवेसाओ णिच्चंधयार-तिमिस्साओ ववगयगह-चंद-सूर-णक्खत्त-जोइसपहाओ जाव पडिरूवाओ, तंजहा-तमिसगुहा चेव खंडप्पवायगुहा चेव ८ । तत्थ णं दो देवा महिद्धीया महज्जुईआ महाबला महायसा महासुक्खा महाणुभागा पलिओवमट्ठिईया परिवसंति, तंजहा-कयमालए चेव णट्टमालए चेव ९ । तेसि णं वणसंडाणं बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ वेअद्धस्स पव्वयस्स उभओ पासिं दस दस जोअणाइं उद्धं उप्पइत्ता एत्थ णं दुवे विज्जाहरसेढीओ पण्णत्ताओ पाईणपडीणाययाओ उदीणदाहिणविच्छिण्णाओ दस दस जोअणाइं विक्खंभेणं पव्वयसमियाओ आयामेणं उभओ पासिं दोहिं पउमवरवेइयाहिं दोहि वणसंडेहिं संपरिक्खित्ताओ १० । ताओ णं पउमवरवेइयाओ अद्धजोअणं उद्धं उच्चत्तेणं पंच धणुसयाइं विक्खंभेणं पव्वयसमियाओ आयामेणं वण्णओ णेयव्वो, वणसंडावि पउमवरवेइया-समगा आयामेणं वण्णओ ११ । विज्जाहरसेढीणं भंते ! भूमीणं केरिसए आयारभावपडोयारे पण्णत्ते ?, गोयमा ! बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते, से जहा णाम ए आलिंगपुक्खरेइ वा जाव णाणाविहपंचवण्णेहिं मणीहि तणेहिं उवसोभिए, तंजहा-कित्तिमेहिं चेव अकित्तिमेहिं चेव १२ ।

तत्थ णं दाहिणिल्लाए विज्जाहरसेढीए गगणवल्लभपामोक्खा पण्णासं विज्जाहरणगरावासा पण्णत्ता, उत्तरिल्लाए विज्जाहरसेढीए रहनेउरचक्कवाल-पामोक्खा सट्ठिं विज्जाहरणगरावासा पण्णत्ता १३ । एवामेव सपुव्वावरेणं दाहिणिल्लाए उत्तरिल्लाए विज्जाहरसेढीए एगं दसुत्तरं विज्जाहरणगरावाससयं भवतीतिमक्खायं, ते विज्जाहरणगरा रिद्धत्थिमियसमिद्धा पमुइयजणजाण-वया जाव पडिरूवा, तेसु णं विज्जाहरणगरेसु विज्जाहररायाणो परिवसंति महयाहिमवत-मलय-मंदर-महिंदसारा रायवण्णओ भाणिअव्वो १४ । विज्जा-हरसेढीणं भंते ! मणुआणं केरिसए आयारभावपडोयारे पण्णत्ते ?, गोयमा ! ते णं मणुआ बहुसंघयणा बहुसंठाणा बहुउच्चत्तपज्जवा बहुआउपज्जवा जाव सव्वदुक्खाणमंतं करेंति १५ । तासि णं विज्जाहरसेढीणं बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ वेअद्धस्स पव्वयस्स उभओ पासिं दस दस जोअणाइं उद्धं उप्पइत्ता एत्थं णं दुवे आभिओगसेढीओ पण्णत्ताओ पाईणपडीणाययाओ उदीणदाहिणविच्छिण्णाओ दस दस जोअणाइं विक्खंभेणं पव्वयसमियाओ आयामेणं उभओ पासिं दोहिं पउमवरवेइयाहिं दोहि अ वणसंडेहिं संपरि-क्खित्ताओ वण्णओ दोण्हवि पव्वयसमियाओ आयामेणं १६ । अभि-ओगसेढीणं भंते ! केरिसए आयारभावपडोयारे पण्णत्ते ?, गोयमा ! बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते जाव तणेहिं उवसोभिए वण्णाइं जाव तणाणं सद्दोत्ति १७ । तासि णं अभिओगसेढीणं तत्थ तत्थ देसे तहिं तहिं जाव वाणमंतरा देवा य देवीओ अ आसयंति सयंति जाव फलवित्तिविसेसं पच्चणुभवमाणा विहरंति १८ । तासु णं आभिओगसेढीसु सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो सोम-जम-वरुण--वेसमणकाइआणं आभिओगाणं देवाणं बहवे भवणा पण्णत्ता १९ । ते णं भवणा बाहिं वट्टा अंतो चउरंसा वण्णओ जाव अच्छरघणसंघविकिण्णा जाव पडिरूवा, तत्थ णं सक्कस्स देविंदस्स

देवरएणो सोम-जम-वरुण-वेसमणकाइआ बहवे आभिओगा देवा महिड्ढीआ महज्जुईआ जाव महासुक्खा पलिओवमट्ठिइया परिवसंति २० । तासि णं आभिओगसेढीणं बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ वेयड्ढस्स पव्वयस्स उभओ पासिं पंच २ जोयणाइं उद्धं उप्पइत्ता, एत्थ णं वेयद्धस्स पव्वयस्स सिहरतले पएणत्ते पाईणपडियायए उदीण-दाहिणविच्छिएणे दस जोअणाइं विक्खंभेणं पव्वयसमगे आयामेणं, से णं इक्काए पउमवरवेइयाए एक्केणं वणसंडेणं सव्वओ समंता संपरिक्खित्ते, पमाणं वएणगो दोएहंपि २१ । वेयड्ढस्स णं भंते ! पव्वयस्स सिहरतलस्स केरिसए आगारभावपडोआरे पएणत्ते ?, गोयमा ! बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पएणत्ते से जहा णाम ए आलिंगपुक्खरेइ वा जाव णाणाविहपंचवएणेहिं मणीहिं उवसोभिए जाव वावीओ पुक्खरिणीओ जाव वाणमंतरा देवा य देवीओ अ आसयंति जाव भुंजमाणा विहरंति २२ । जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे भारहे वासे वेअड्ढपव्वए कइ कूडा पएणत्ता ?, गोयमा ! णव कूडा पएणत्ता, तंजहा—सिद्धाययणकूडे १ दाहिणड्ढभरहकूडे २ खंडप्पवायगुहाकूडे ३ माणिभद्दकुडे ४ वेअड्ढकूडे ५ पुएणभद्दकूडे ६ तिमिसगुहाकूडे ७ उत्तरड्ढभरहकूडे ८ वेसमणकूडे ९, २३ ॥ सूत्रं १२ ॥

कहि णं भंते ! जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे वेअद्धपव्वए सिद्धायतणकूडे णामं कूडे पएणत्ते ?, गोयमा ! पुरच्छिमलवणसमुद्दस्स पच्चच्छिमेणं दाहिणद्धभरहकूडस्स पुरच्छिमेणं एत्थ णं जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे वेअद्धे पव्वए सिद्धायतणकूडे णामं कूडे पएणत्ते १ । छ सक्कोसाइं जोअणाइं उद्धं उच्चत्तेणं मूले छ सक्कोसाइं जोअणाइं विक्खंभेणं मज्झे देसूणाइं पंच जोअणाइं विक्खंभेणं उवरिं साइरेगाइं तिरिण जोअणाइं विक्खंभेणं मूले देसूणाइं बावीसं जोअणाइं परिक्खेवेणं मज्झे देसूणाइं पएणरस जोअणाइं परिक्खेवेणं उवरिं साइरेगाइं णव जोअणाइं परिक्खेवेणं, मूले

विच्छिराणो मज्झे संखित्ते उप्पिं तणुए गोपुच्छसंठाणसंठिए, सव्वरयणामए अच्छे सण्हे जाव पडिरूवे २। से णं एगाए पउमवरवेइयाए एगेण य वणसंडेणं सव्वओ समंता संपरिक्खित्ते, पमाणं वण्णओ दोण्हंपि, सिद्धायतणकूडस्स णं उप्पिं बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते, से जहाणामए आलिंगपुक्खरेइ वा जाव वाणमंतरा देवा य जाव विहरंति ३। तस्स णं बहुसमरमणिज्जस्स भूमिभागस्स बहुमज्झदेसभागे एत्थ णं महं एगे सिद्धाययणे पण्णत्ते कोसं आयामेणं अद्धकोसं विक्खंभेणं देसूणं कोसं उद्धं उच्चत्तेणं अणेगखंभसयसन्निविट्ठे खंभुग्गय-सुकय-वइरवेइआ-तोरणवर-रइअ-सालभंजिअ-सुसिलिट्ठ-विसिट्ठ-लट्ठ-संठिअ-पसत्थ-वेरुलिअविमलखंभे णाणा-मणिरयण-खचिअ-उज्जल-बहुसम-सुविभत्तभूमिभागे ईहामिग-उसभ-तुरग-णर-मगर-विहग-वालग-किन्नर-रुरु-सरभ-चमर-कुंजर-वणलय जाव पउमलयभत्ति-चित्ते कंचणमणिरयणथूभियाए णाणाविहपंचवण्णेहि वण्णओ घंटापडाग-परिमंडिअग्गसिहरे धवले मरीइकवयं विणिम्मुअंते लाउल्लोइअमहिए जाव झया ४। तस्स णं सिद्धायतणस्स तिदिसिं तओ दारा पण्णत्ता, ते णं दारा पंच धणुसयाइं उद्धं उच्चत्तेणं अद्धाइज्जाइं धणुसयाइं विक्खंभेणं तावइयं चेव पवेसेणं सेआवर-कणगथूभिआगा दारवण्णओ जाव वण-माला, तस्स णं सिद्धाययणस्स अंतो बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते ५। से जहाणामए आलिंगपुक्खरेइ वा जाव तस्स णं सिद्धाययणस्स णं बहुसमरमणिज्जस्स भूमिभागस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थ णं महं एगे देव-च्छंदए पण्णत्ते पंचधणुसयाइं आयामविक्खंभेणं साइरेगाइं पंच धणुसयाइं उद्धं उच्चत्तेणं सव्वरयणामए ६। एत्थ णं अट्ठसयं जिणपडिमाणं जिणु-स्सेहप्पमाणमित्ताणं संनिक्खित्तं चिट्ठइ एवं जाव धूवकडुच्छुगा ७॥सूत्रं १३॥

कहि णं भंते ! वेअड्ढे पव्वए दाहिणड्ढभरहकूडे णामं कूडे पण्णत्ते ?, गोयमा ! खंडप्पवायकूडस्स पुरच्छिमेणं सिद्धाययणकूडस्स पच्चच्छिमेणं

एत्थ णं वेअड्ढपव्वए दाहिणड्ढभरहकूडे णामं कूडे पण्णत्ते १। सिद्धाययण-कूडप्पमाणसरिसे जाव तस्स णं बहुसमरमणिज्जस्स भूमिभागस्स बहुमज्झ-देसभाए एत्थ णं महं एगे पासायवडिंसए पण्णत्ते २। कोसं उड्ढं उच्चत्तेणं अद्धकोसं विक्खंभेणं अब्भुग्गय-मूसियपहसिए जाव पासाईए ४, ३। तस्स णं पासायवडंसगस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थ णं महं एगा मणिपेढिआ पण्णत्ता, पंच धणुसयाइं आयामविक्खंभेणं अड्ढाइज्जाहि धणुसयाइं बाहल्लेणं सव्वमणिमई, तीसे णं मणिपेढिआए उप्पिं सिंहासणं पण्णत्तं, सपरिवारं भाणियव्वं ४। से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ–दाहिणड्ढभरहकूडे २?, गोयमा! दाहिणड्ढभरहकूडे णं दाहिणड्ढभरहे णामं देवे महिड्ढीए जाव पलिओवमट्ठिईए परिवसइ, से णं तत्थ चउण्हं सामाणिअसाहस्सीणं चउण्हं अग्गमहिसीणं सपरिवाराणं तिण्हं परिसाणं सत्तण्हं अणियाणं सत्तण्हं अणियाहिवईणं सोलसण्हं आयरक्खदेवसाहस्सीणं दाहिणड्ढभरह-कूडस्स दाहिणड्ढाए (भरहाए) रायहाणीए अण्णेसिं बहूणं देवाण य देवीण य जाव विहरइ ५। कहि णं भंते! दाहिणड्ढभरहकूडस्स देवस्स दाहिणड्ढा णामं रायहाणी पण्णत्ता?, गोयमा! मंदरस्स पव्वतस्स दक्खिणेणं तिरि-यमसंखेज्जदीवसमुद्दे वीईवइत्ता अण्णम्मि जंबुद्दीवे दीवे दक्खिणेणं बारस जोयणसहस्साइं ओगाहित्ता एत्थ णं दाहिणड्ढभरहकूडस्स देवस्स दाहिणड्ढ-भरहा णामं रायहाणी भाणिअव्वा जहा विजयस्स देवस्स ६। एवं सव्व-कूडा णेयव्वा जाव वेसमणकूडे परोप्परं पुरच्छिमपच्चत्थिमेणं, इमेसिं (इमा से) वण्णावासे, गाहा–'मज्झे वेअड्ढस्स उ कणयमया तिण्णि होंति कूडा उ। सेसा पव्वयकूडा सव्वे रयणामया होंति॥ १॥ माणिभद्दकूडे १ वेअड्ढकूडे २ पुण्णभद्दकूडे ३ एए तिण्णि कूडा कणगामया सेसा छप्पि रयणामया ७। दोण्हं विसरिसणामया देवा कयमालए चेय णट्टमालए चेव, सेसाणं छण्हं सरिसणामया–जण्णामया य कूडा तन्नामा खलु हवंति ते देवा।

पलिओवमट्ठिईया हवंति पत्तेअपत्तेयं ॥ १ ॥ रायहाणीओ जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं तिरिअं असंखेज्जदीवसमुद्दे वीईवइत्ता अणंमि जंबुद्दीवे दीवे बारस जोअणसहस्साइं ओगाहित्ता, एत्थ णं रायहाणीओ भाणिअव्वाओ विजयरायहाणीसरिसयाओ १ ॥ सूत्रं १४ ॥ से केणट्ठे णं भंते ! एवं वुच्चइ वेअड्ढे पव्वए वेअड्ढे पव्वए ?, गोयमा ! वेअड्ढे णं पव्वए भरहं वासं दुहा विभयमाणे २ चिट्ठइ, तंजहा—दाहिणड्ढभरहं च उत्तरड्ढभरहं च, वेअड्ढगिरिकुमारे अ इत्थ देवे महिड्ढीए जाव पलिओवमट्ठिइए परिवसइ, से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—वेअड्ढे पव्वए २, १ । अदुत्तरं च णं गोअमा ! वेयड्ढस्स पव्वयस्स सासए णामधेज्जे पण्णत्ते जं ण कयाइ ण आसि ण कयाइ ण अत्थि ण कयाइ ण भविस्सइ भुविं च भवइ अ भविस्सइ अ धुवे णिअए सासए अक्खए अव्वए अवट्ठिए णिच्चे २ ॥सूत्रं १५॥ कहि णं भंते ! जंबुद्दीवे दीवे उत्तरड्ढभरहे णामं वासे पण्णत्ते ?, गोयमा ! चुल्लहिमवंतस्स वासहरपव्वयस्स दाहिणे णं वेअड्ढस्स पव्वयस्स उत्तरेणं पुरच्छिम-लवणसमुद्दस्स पच्चच्छिमेणं पच्चच्छिम-लवणसमुद्दस्स पुरच्छिमेणं एत्थ णं जंबुद्दीवे दीवे उत्तरड्ढभरहे णामं वासे पण्णत्ते पाईणपडीणायए उदीणदाहिणविच्छिण्णे पलिअंकसंठिए दुहा लवणसमुद्दं पुट्ठे पुरच्छिमिल्लाए कोडीए पुरच्छिमिल्लं लवणसमुद्दं पुट्ठे पच्चच्छिमिल्लाए जाव पुट्ठे गंगासिंधूहिं महाणईहि तिभागपविभत्ते दोण्णि अट्ठतीसे जोअणसए तिण्णि अ एगूणवीसइभागे जोअणस्स विक्खंभेणं १ । तस्स बाहा पुरच्छिमपच्चच्छिमेणं अट्ठारस बाणउए जोअणसए सत्त य एगूणवीसइभागे जोअणस्स अद्धभागं च आयामेणं तस्स जीवा उत्तरेणं पाइणपडीणायया दुहा लवणसमुद्दं पुट्ठा तहेव जाव चोद्दस जोअणसहस्साइं चत्तारि अ एकहत्तरे जोअणसए छच्च एगूणवीसइभाए जोअणस्स किंचिविसेसूणे आयामेणं पण्णत्ता २ । तीसे धणुपट्ठे दाहिणेणं चोद्दस जोअणसहस्साइं पंच अट्ठा-

वीसे जोअणसए एक्कारस य एगूणवीसइभाए जोअणस्स परिक्खेवेणं ३। उत्तरड्ढभरहस्स णं भंते ! वासस्स केरिसए आयारभावपडोयारे पण्णत्ते ?, गोअमा ! बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते ४। से जहा णामए आलिंग-पुक्खरेइ वा जाव कित्तिमेहिं चेव अकित्तिमेहिं चेव ५। उत्तरड्ढभरहे णं भंते ! वासे मणुआणं केरिसए आयारभावपडोयारे पण्णत्ते ?, गोअमा ! ते णं मणुआ बहुसंघयणा जाव अप्पेगइआ सिज्झंति जाव सव्वदुक्खाणमंतं करेंति ६ ॥ सूत्रं १६ ॥ कहि णं भंते ! जंबुद्दीवे दीवे उत्तरड्ढभरहे वासे उसभकूडे णामं पव्वए पण्णत्ते ?, गोअमा ! गंगाकुंडस्स पच्चत्थिमेणं सिंधुकुंडस्स पुरच्छिमेणं चुल्लहिमवंतस्स वासहरपव्वयस्स दाहिणिल्ले णितंबे, एत्थ णं जंबुद्दीवे दीवे उत्तरड्ढभरहे वासे उसहकूडे णामं पव्वए पण्णत्ते १। अट्ठ जोअणाइं उद्धं उच्चत्तेणं, दो जोयणाइं उव्वेहेणं, मूले अट्ठ जोअणाइं विक्खंभेणं मज्झे छ जोअणाइं विक्खंभेणं उवरिं चत्तारि जोअणाइं विक्खंभेणं, मूले साइरेगाइं पणवीसं जोअणाइं परिक्खेवेणं मज्झे साइरेगाइं अट्ठारस जोअणाइं परिक्खेवेणं उवरिं साइ-रेगाइं दुवालस जोअणाइं परिक्खेवेणं, (पाठान्तरं—मूले बारस जोअणाइं विक्खंभेणं मज्झे अट्ठ जोअणाइं विक्खंभेणं उप्पिं चत्तारि जोअणाइं विक्खंभेणं मूले साइरेगाइं सत्तत्तीसं जोअणाइं परिक्खेवेणं मज्झे साइरेगाइं पणवीसं जोअणाइं परिक्खेवेणं उप्पि साइरेगाइं बारस जोअणाइं परिक्खेवेणं) २। मूले विच्छिण्णे मज्झे संक्खित्ते उप्पि तणुए गोपुच्छसंठाणसंठिए सव्वजंबूणयामए अच्छे सण्हे जाव पडिरूवे ३। से णं एगाए पउमवरवेइ-आए तहेव जाव भवणं कोसं आयामेणं अद्धकोसं विक्खंभेणं देसऊणं कोसं उद्धं उच्चत्तेणं, अट्ठो तहेव ४। उप्पलाणि पउमाणि जाव उसभे अ एत्थ देवे महिड्ढीए जाव दाहिणेणं रायहाणी तहेव मंदरस्स पव्वयस्स जहा विजयस्स अविसेसियं ५ ॥ सूत्रं १७ ॥

॥ इति प्रथमो वक्षस्कारः ॥ १ ॥

॥ अथ द्वितीयो वक्षस्कारः ॥

जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे भारहे वासे कतिविहे काले पराणत्ते ?, गोयमा ! दुविहे काले पराणत्ते, तंजहा—ओसप्पिणिकाले अ उस्सप्पिणिकाले अ १ । ओसप्पिणिकाले णं भंते ! कतिविहे पराणत्ते ?, गोयमा ! छव्विहे पराणत्ते, तंजहा—सुसमसुसमकाले १ सुसमाकाले २ सुसमदुस्समकाले ३ दुस्समसुसमाकाले ४ दुस्समाकाले ५ दुस्समदुस्समाकाले ६, २ । उस्सप्पिणिकाले णं भंते ! कतिविहे पराणत्ते ?, गोयमा ! छव्विहे पराणत्ते, तंजहा—दुस्समदुस्समाकाले १ जाव सुसमसुसमाकाले ६, ३ । एगमेगस्स णं भंते ! मुहुत्तस्स केवइया उस्सासद्धा विश्राहिया ?, गोश्रमा ! असंखिज्जाणं समयाणं समुदयसमिइसमागमेणं सा एगा आवलिअत्ति वुच्चइ संखिज्जाओ आवलिआओ ऊसासो संखिज्जाओ आवलिआओ नीसासो ४ । हट्ठस्स अणवगलस्स, णिरुवकिट्ठस्स जंतुणो । एगे ऊसासनीसासे, एस पाणुत्ति वुच्चई ॥ १ ॥ सत्त पाणूइं से थोवे, सत्त थोवाइं से लवे । लवाणं सत्तहत्तरीए, एस मुहुत्तेत्ति आहिए ॥ २ ॥ तिरिण सहस्सा सत्त य सयाइं तेवत्तरिं च ऊसासा । एस मुहुत्तो भणिओ सव्वेहिं अणंतनाणीहिं ॥ ३ ॥ एएणं मुहुत्तप्पमाणेणं तीसं मुहुत्ता अहोरत्तो पराणरस अहोरत्ता पक्खो दो पक्खा मासो दो मासा उऊ तिरिण उऊ अयणे दो अयणा संवच्छरे पंचसंवच्छरिए जुगे वीसं जुगाइं वाससए दस वाससयाइं वाससहस्से सयं वाससहस्साणं वाससयसहस्से चउरासीइं वाससयसहस्साइं से एगे पुव्वंगे चउरासीई पुव्वंगसयसहस्साइं से एगे पुव्वे एवं बिगुणं बिगुणं णेअव्वं तुडिए २ अडडे २ अववे २ हूहुए २ उप्पले २ पउमे २ णलिणे २ अत्थणिउरे २ अउए २ नउए २ पउए २ चूलिया २ सीसपहेलिए २ जाव चउरासीइं सीसपहेलिअंगसयसहस्साइं सा एगा सीसपहेलिया एताव ताव गणिए एताव ताव गणिअस्स विसए तेण परं ओवमिए ५ ॥ सूत्रं १८ ॥

से किं तं उवमिए ?, २ दुविहे पराणत्ते, तंजहा–पलिश्रोवमे अ सागरोवमे अ, से किं तं पलिश्रोवमे ?, पलिश्रोवमस्स परूवणं करिस्सामि, परमाणू दुविहे पराणत्ते, तंजहा–सुहुमे अ वावहारिए अ १ । अणंताणं सुहुमपरमाणुपुग्गलाणं समुदयसमिइसमागमेणं वावहारिए परमाणू णिप्फज्जइ तत्थ णो सत्थं कमइ–'सत्थेण सुतिक्खेणवि छेत्तुं भित्तुं च जं किर ण सका। तं परमाणुं सिद्धा वयंति आइं पमाणाणं ॥ १ ॥ २ । अणंताणं वावहारिअपरमाणूणं समुदयसमिइसमागमेणं सा एगा उस्सराहसराहआइ वा सराहसराहआइ वा उद्धरेणूइ वा तसरेणूइ वा रहरेणूइ वा वालग्गेइ वा लिक्खाइ वा जूआइ वा जवमज्झेइ वा उस्सेहंगुले इ वा ३। अट्ठ उस्सराहसराहआओ सा एगा सराहसराहया अट्ठ सराहसराहआओ सा एगा उद्धरेणू अट्ठ उद्धरेणूओ सा एगा तसरेणू अट्ठ तसरेणूओ सा एगा रहरेणू अट्ठ रहरेणूओ से एगे देवकुरूत्तरकुराण मणुस्साणं वालग्गे अट्ठ देवकुरूत्तरकुराण मणुस्साण वालग्गा से एगे हरिवासरम्मयवासाण मणुस्साणं वालग्गे ४। एवं हेमवयहेरणणवयाण मणुस्साणं पुव्वविदेहअवरविदेहाणं मणुस्साण वालग्गा सा एगा लिक्खा अट्ठ लिक्खाओ सा एगा जूआ अट्ठ जूआओ से एगे जवमज्झे अट्ठ जवमज्झा से एगे अंगुले एतेणं अंगुलप्पमाणेणं छ अंगुलाइं पाओ बारस अंगुलाइ विहत्थी चउवीसं अंगुलाइं रयणी अडयालीसं अंगुलाइं कुच्छी छराणउई अंगुलाइं से एगे अक्खेइ वा दंडेइ वा धणूइ वा जुगेइ वा मुसलेइ वा णालिआइ वा ५। एतेणं धणुप्पमाणेणं दो धणुसहस्साइं गाउअं चत्तारि गाउआइं जोअणं, एएणं जोअणप्पमाणेणं जे पल्ले जोअणं आयामविक्खंभेणं जोयणं उड्ढं उच्चत्तेणं तं तिगुणं सविसेसं परिक्खेवेणं, से णं पल्ले एगाहिअबेहियतेहिअ उक्कोसेणं सत्तरत्तपरूढाणं संमट्ठे सरिणचिए भरिए वालग्गकोडीणं ६ । ते णं वालग्गा णो कुत्थेज्जा णो परिविद्धंसेज्जा, णो अग्गी डहेज्जा, णो वाए हरेज्जा, णो पूइत्ताए

हव्वमागच्छेज्जा, तत्रो णं वाससए २ एगमेगं वालग्गं अवहाय जावइएणं कालेणं से पल्ले खीणे णीरए णिल्लेवे णिट्ठिए भवइ से तं पलिओवमे ७ । एएसिं पल्लाणं कोडाकोडी हवेज्ज दसगुणिश्रा । तं सागरोवमस्स उ एगस्स भवे परीमाणं ॥ १ ॥ एएणं सागरोवमप्पमाणेणं चत्तारि सागरोवमकोडाकोडीओ कालो सुसमसुसमा १ तिण्णि सागरोवमकोडाकोडीओ कालो सुसमा २ दो सागरोवमकोडाकोडीओ कालो सुसमदुस्समा ३ एगा सागरोवमकोडाकोडी बायालीसाए वाससहस्सेहिं ऊणिश्रा कालो दुस्समसुसमा ४ एक्कवीसं वाससहस्साइं कालो दुस्समा ५ एक्कवीसं वाससहस्साइं कालो दुस्समदुस्समा ६, पुणरवि उस्सप्पिणीए एक्कवीसं वाससहस्साइं कालो दुस्समदुस्समा १ एवं पडिलोमं णेअव्वं जाव चत्तारि सागरोवमकोडाकोडीओ कालो सुसमसुसमा ६, दससागरोवमकोडाकोडीओ कालो ओसप्पिणी दससागरोवमकोडाकोडीओ कालो उस्सप्पिणी वीसं सागरोवमकोडाकोडीओ कालो ओसप्पिणीउस्सप्पिणी कालचक्कं ८ ॥सूत्रं ११॥

जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे भरहे वासे इमीसे उस्सप्पिणीए सुसमसुसमाए समाए उत्तमकट्ठपत्ताए भरहस्स वासस्स केरिसए आयारभावपडोयारे होत्था ?, गोयमा ! बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे होत्था से जहाणामए आलिंगपुक्खरेइ वा जाव णाणामणिपंचवण्णेहिं तणेहि य मणीहि य उवसोभिए, तंजहा–किण्हेहिं जाव सुकिल्लेहिं १ । एवं वण्णो गंधो फासो सद्दो अ तणाण य मणीण य भाणिअव्वो, जाव तत्थ णं बहवे मणुस्सा मणुस्सीओ अ आसयंति सयंति चिट्ठंति णिसीअंति तुअट्टंति हसंति रमंति ललंति २। तीसे णं समाए भरहे वासे बहवे उद्दाला कुद्दाला मुद्दाला कयमाला णट्टमाला दंतमाला नागमाला सिंगमाला संखमाला सेअमाला णामं दुमगणा पण्णत्ता ३ । कुसविकुसविसुद्धरुक्खमूला मूलमंतो कंदमंतो जाव बीअमंतो पत्तेहि अ पुप्फेहि अ फलेहि अ उच्छण्णपडिच्छण्णा सिरिए अईव २

उवसोभेमाणा चिट्ठंति ४। तीसे णं समाए भरहे वासे तत्थ तत्थ बहवे भेरुतालवणाइं हेरुतालवणाइं मेरुतालवणाइं पभया(वा)लवणाइं सालवणाइं सरलवणाइं सत्तिवण्णवणाइं पूअफलिवणाइं इक्खुवणाइं खज्जूरीवणाइं णालिएरीवणाइं कुसविकुस-विसुद्धरुक्खमूलाइं जाव चिट्ठंति ५। तीसे णं समाए भरहे वासे तत्थ तत्थ बहवे सेरिआगुम्मा णोमालिआगुम्मा कोरंटयगुम्मा बंधुजीवगगुम्मा मणोज्जगुम्मा बीअगुम्मा बाणगुम्मा कणइरगुम्मा कुज्जायगुम्मा सिंदुवारगुम्मा मोग्गरगुम्मा जूहिआगुम्मा मल्लिआगुम्मा वासंतिआगुम्मा वत्थुलगुम्मा कत्थुलगुम्मा सेवालगुम्मा अगत्थिगुम्मा मगदंतिआगुम्मा चंपकगुम्मा जातीगुम्मा णवणीइआगुम्मा कुंदगुम्मा महाजाइगुम्मा रम्मा महामेहणिकुरंबभूआ दसद्धवण्णं कुसुमं कुसुमेंति जे णं भरहे वासे बहुसमरमणिज्जं भूमिभागं वायविधुअग्गसाला मुक्कपुप्फपुंजोवयारकलिअं करंति ६। तीसे णं समाए भरहे वासे तत्थ २ तहिं तहिं बहुईओ पउमलयाओ जाव सामलयाओ णिच्चं कुसुमिआओ किण्हाओ किण्होभासाओ जाव लयावण्णओ, तीसे णं समाए भरहे वासे तत्थ २ तहिं २ बहुइओ वणराइओ पण्णत्ताओ किण्हाओ किण्होभासाओ जाव मणोहराओ रयमत्तग--छप्पय--कोरग--भिंगारग--कोंडलग--जीवंजीवग--नंदीमुह-कविल-पिंगलक्खग-कारंडव-चक्कवायग-कलहंस-हंस-सारस-- अणेग-सउणगण-मिहुण-विअरिआओ सद्दुण्णइय-महुरसरणाइआओ संपिंडिअदरिय-भमर-महुकर-पहकर-परिलिंतमत्तच्छप्पय–कुसुमासव-लोल–महुर-गुमगुमंत–गुंजंतदेसभागाओ णाणाविहगुच्छ-गुम्म-मंडवगसोहिआओ, वावीपुक्खरिणीदीहिआसु अ सुणिवेसिअ-रम्मजालघरयाओ विचित्तसुह-केउभूओ अभिंतरपुप्फफलाओ बाहिरपत्तोच्छण्णाओ पत्तेहि अ पुप्फेहि अ उच्छण्णपरिच्छण्णाओ साउफलाओ णिरोगयाओ सव्वोउअपुप्फ-फलसमिद्धाओ पिंडिमनीहारिमं सुगंधिं सुहसुरभि मणहरं च महया गंधद्धणिं मुअंतिओ जाव

पासादीआओ ४, ७ ॥ सूत्रं ११ ॥ तीसे णं समाए भरहे वासे तत्थ तत्थ तहिं तहिं मत्तंगाणामं दुमगणा पण्णत्ता, जहा से चंदप्पभा जाव छण्णपडिच्छण्णा चिट्ठंति, एवं जाव अणिगणाणामं दुमगणा पण्णत्ता ॥ सूत्रं २० ॥ तीसे णं भंते ! भरहे वासे मणुआणं केरिसए आयारभाव-पडोयारे पण्णत्ते ?, गोयमा ! ते णं मणुआ सुपइट्ठिअ-कुम्मचारुचलणा जाव लक्खण-वंजणगुणोववेआ सुजाय-सुविभत्तसंगयंगा पासादीआ जाव पडि-रूवा १ । तीसे णं भंते ! समाए भरहे वासे मणुईणं केरिसए आगारभाव-पडोआरे पण्णत्ते ?, गोयमा ! ताओ णं मणुईओ सुजायसव्वंगसुंदरीओ पहाण-महिलागुणेहिं जुत्ता अइक्कंत-विसप्पमाणमउया सुकुमाल-कुम्म-संठिअ-विसिट्ठचलणा उज्जु(पउम)मउअ-पीवर-सुसाहयंगुलीओ अब्भुण्णय-रइअ-तलिण-तंबसुइरइय-णिद्धणक्खा रोमरहिअ-वट्टलट्ठ-संठिअ-अज-हण्ण-पसत्थ-लक्खण-अकोप्पजंघजुअलाओ सुणिम्मिअ-सुगूढसुजण्णु-(जाणु)मंडल-सुबद्धसंधीओ कयलीखंभाइरेक-संठिअणिव्वण-सुकुमाल-मउअ-मंसल-अविरल-समसंहिअ-सुजाय-वट्टपीवरणिरंतरोरू अट्ठावय-वीइयपट्ठ-संठिअ-पसत्थ-विच्छिण्णपिहुलसोणी वयणायामप्पमाण-दुगुणिअ-विसाल-मंसल-सुबद्ध-जहणवरधारिणीओ वज्जविराइअ-पसत्थ-लक्खण-निरोदर-तिवलिअ-बलिअ-तणुणअमज्झिमाओ उज्जुअ-समसहिअ-जच्चतणु-कसिण-णिद्ध-आइज्ज-लडह-सुजाय-सुविभत्त-कंतसोभंत-रुइल-रमणिज्जरोमराई गंगावत्त-पयाहिणावत्त-तरंग-भंगुर-रविकिरण-तरुणबोहिअ-आकोसायंत-पउम-गंभीरविअडणाभा अणुब्भड-पसत्थपीणकुच्छीओ सण्णयपासाओ संगयपासाओ सुजायपासाओ मिअमाइअपीणरइअपासाओ अकरंडुअ-कणग-रुअग-णिम्मल-सुजाय-णिरुवहयगायलट्ठीओ कंचण-कलसप्पमाण-समसहिअ-लट्ठचुच्चुआमेलग-जमल-जुअल-वट्टिअ-अब्भुण्णय-(पीवर) पीणरइअ-पीवरपओहराओ भुअंग-अणुपुव्व-तणुअ-गोपुच्छ-वट्ट-संहिअ-

णमिअ–आइज्जललिअबाहा तंबणहाओ मंसलग्गहत्थाओ पीवरकोमल-वरंगुलीओओ णिद्धपाणिरेहा रविससि-संखवरचक्क-सोत्थिय–सुविभत्त-सुविरइअपाणिलेहाओ पीणुण्णय--करक्कख--वत्थि--प्पएसा पडिपुण्णगलकपोला चउरंगुल--सुप्पमाण--कंबुवरसरिसगीवाओ मंसल-संठिअ–पसत्थहणुगाओ दाडिम–पुप्फप्पगास–पीवर--पलंब-कुंचिअवराधराओ सुंदरुत्तरोट्ठाओ दहिदगरय–चंदकुंद–वासंति--मउल–धवल–अच्छिद्द--विमलदसणाओ रत्तुप्पल-पत्त–मउअ–सुकुमाल-तालुजीहाओ कणवीर-मउल-कुडिल-अब्भुग्गय-उज्जु--तुंगणासाओ सारय--णवकमल–कुमुअ-कुवलय -विमल-दल-णिअर-सरिस–लक्खण–पसत्थ–अजिम्हकंतणयणा पत्तल–धवलायत--आतंबलोअणाओ आणामिअ–चाव-रुइल–किण्हब्भराइ–संगय-सुजायसुमगाओ अलीण-पमाण जुत्तसवणा सुसवणाओ पीणमट्ठगंडलेहाओ चउरंस-पसत्थ-समणिडालाओ कोमुई-रयणिअर–विमल–पडिपुण्णसोमवयणा छत्तुण्णयउत्तमंगाओ अकविल-सुसिणिद्ध--सुगंध--दीहसिरयाओ छत्त १ ज्झय २ जूअ ३ थूभ ४ दामणि ५ कमंडलु ६ कलस ७ वावि ८ सोत्थिअ ९ पडाग १० जव ११ मच्छ १२ कुम्म १३ रहवर १४ मगरज्झय १५ अंक (सुक) १६ थाल १७ अंकुस १८ अट्ठावय १९ सुपइट्ठग २० मयूर २१ सिरिअभिसेअ २२ तोरण २३ मेइणि २४ उदहि २५ वरभवण २६ गिरि २७ वरआयंस २८ सलीलगय २९ उसभ ३० सीह ३१ चामर ३२ उत्तम–पसत्थ–बत्तीस–लक्खणधारीओ हंससरिसगईओ कोइल-महुर–गिरसुस्सराओ कंता सव्वस्स अणुमयाओ ववगय वलिपलिअवंग-दुव्वण्ण–वाहि-दोहग्गसोगमुक्का उच्चत्तेण य णराण थोवूणमुस्सिआओ सभावसिंगारचारु-वेसा संगयगय-हसिय-भणिअ-चिट्ठिअ-विलास-संलावणिउण-जुत्तोवयारकुसला सुंदरथण-जहण-वयण-करचलण-णयण-लावण्ण-रूव-जोव्वण-विलासकलिआ णंदणवणविवरचारिणीउव्व अच्छराओ भरहवासमाणुसच्छराओ अच्छेरग-

पेच्छणिज्जाओ पासाईआओ जाव पडिरूवाओ, ते णं मणुआ ओहस्सरा हंसस्सरा कोंचस्सरा णंदिस्सरा णंदिघोसा सीहस्सरा सीहघोसा सुसरा सूसरणिग्घोसा छायायवोज्जोविअंगमंगा वज्जरिसहनारायसंघयणा समचउर-संठाणसंठिआ छविणिरातंका अणुलोमवाउवेगा कंकग्गहणी कवोयपरिणामा सउणिपोस-पिट्ठंतरोरुपरिणया छद्धणुसहस्समूसिआ, तेसि णं मणुआणं बे छप्पण्णा पिट्ठकरंडकसया पण्णत्ता समणाउसो ! पउमुप्पल-गन्ध-सरिस-णीसाससुरभिवयणा, ते णं मणुआ पगईउवसंता पगई-पयणु-कोहमाणमायालोभा मिउमद्दवसंपन्ना अल्लीणा भद्दगा विणीआ अप्पिच्छा असण्णिहिसंचया विडिमंतरपरिवसणा जहिच्छिअकामकामिणो ॥ सूत्रं २१ ॥ तेसि णं भंते ! मणुआणं केवइकालस्स आहारट्ठे समुप्पज्जइ ?, गोअमा ! अट्ठमभत्तस्स आहारट्ठे समुप्पज्जइ, पुढवीपुप्फफलाहारा णं ते मणुआ पण्णत्ता समणाउसो ! १ । तीसे णं भंते ! पुढवीए केरिसए आसाए पण्णत्ते ?, गोयमा ! से जहा णामए गुलेइ वा खंडेइ वा सक्कराइ वा मच्छंडिआइ वा पप्पडमोअएइ वा भिसेइ वा पुप्फुत्तराइ वा पउमुत्तराइ वा विजयाइ वा महाविजयाइ वा आकासिआइ वा आदंसिआइ वा आगासफलोवमाइ वा उग्गाइ वा अणोवमाइ वा इमेए अज्झोववणाए, भवे एआरूवे ?, णो इणमट्ठे समट्ठे, सा णं पुढवी इत्तो इट्ठतरिआ चेव जाव मणामतरिआ चेव आसाएणं पण्णत्ता २ । तेसि णं भंते ! पुप्फफलाणं केरिसए आसाए पण्णत्ते ?, गोयमा ! से जहा णामए रण्णो चाउरंतचक्कवट्टिस्स कल्लाणे भोअणजाए सयसहस्सनिप्फन्ने वण्णेणुववेए जाव फासेणं उववेए आसायणिज्जे विसायणिज्जे दिप्पणिज्जे दप्पणिज्जे मयणिज्जे [विग्घणिज्जे] बिंहणिज्जे सव्विंदिअगायपल्हायणिज्जे, भवे एआरूवे ?, णो इणमट्ठे समट्ठे, तेसि णं पुप्फफलाणं एत्तो इट्ठतराए चेव जाव आसाए पण्णत्ते ३ ॥ सूत्रं २२ ॥ ते णं भंते ! मणुया तमाहारमाहरेत्ता कहिं वसहिं उवेंति ?, गोअमा !

रुक्खगेहालया णं ते मणुआ पराणत्ता समणाउसो !, तेसि णं भंते ! रुक्खाणं केरिसए आयारभावपडोआरे पराणत्ते ?, गोअमा ! कूडागार-संठिया पेच्छाच्छत्तझय थूभतोरण-गोपुरवेइआ-चोप्फालग-अट्टालग-पासाय-हम्मिअ--गवक्ख--वालग्ग--पोइआवलभीघरसंठिआ अत्थरणो इत्थ वहवे वरभवण-विसिट्ठ-संठाणसंठिआ दुमगणा सुहसीअलच्छाया पराणत्ता समणा-उसो ! ॥ सूत्रं २३ ॥ अत्थि णं भंते ! तीसे समाए भरहे वासे गेहाइ वा गेहावणाइ वा ?, गोअमा ! णो इणट्ठे समट्ठे, रुक्खगेहालया णं ते मणुआ पराणत्ता समणाउसो !, १ । अत्थि णं भंते ! तीसे समाए भरहे वासे गामाइ वा जाव संणिवेसाइ वा ?, गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे, जहिच्छिअ-कामगामिणो णं ते मणुआ पराणत्ता २ । अत्थि णं भंते ! असीइ वा मसीइ वा किसीइ वा वणिएत्ति वा पणिएत्ति वा वाणिज्जेइ वा ?, णो इणट्ठे समट्ठे, ववगय-असि-मसि-किसि-वणिअ-पणिअवाणिज्जा णं ते मणुआ पराणत्ता समणाउसो !, ३ । अत्थि णं भंते ! हिरराणेइ वा सुवराणेइ वा कंसेइ वा दूसेइ वा मणि-मोत्तिअ-संख-सिलप्पवाल-रत्तरयणसावइज्जेइ वा ?, हंता अत्थि, णो चेव णं तेसिं मणुआणं परिभोगत्ताए हव्वमागच्छइ ४ । अत्थि णं भंते ! भरहे रायाइ वा जुवराया इ वा ईसर-तलवर-माडंबिअ-कोडुंबिअ-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइसत्थवाहाइ वा ?, गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे, ववगयइड्ढिसक्कारा णं ते मणुआ ५ । अत्थि णं भंते ! भरहे वासे दासेइ वा पेसेइ वा सिस्सेइ वा भयगेइ वा भाइलएइ वा कम्मयरएइ वा ?, णो इणट्ठे समट्ठे, ववगयआभिओगा णं ते मणुआ पराणत्ता समणाउसो !, ६ । अत्थि णं भंते ! तीसे समाए भरहे वासे मायाइ वा पियाइ वा भायाइ वा भगिणीइ वा भज्जाइ वा पुत्ताइ वा धूआइ वा सुराहाइ वा ?, हंता अत्थि, णो चेव णं तिव्वे पेम्मबंधणे समुप्पज्जइ ७ । अत्थि णं भंते ! भरहे वासे अरीइ वा वेरिएइ वा घायएइ वा वहएइ वा पडिणीयए वा पच्चामित्तेइ वा ?, णो

इणट्ठे समट्ठे, ववगयवेराणुसया णं ते मणुत्रा पराणत्ता समणाउसो !, ८। अत्थि णं भंते ! भरहे वासे मित्ताइ वा वयंसाइ वा णायएइ वा संघाडिएइ वा सहाइ वा सुहीइ वा संगएइति वा ?, हंता अत्थि, णो चेव णं तेसिं मणुआणं तिव्वे रागबंधणे समुप्पज्जइ ९। अत्थि णं भंते ! भरहे वासे आवाहाइ वा वीवाहाइ वा जराणाइ वा सद्धाइ वा थालीपागाइ वा मितपिंडनिवेदणाइ वा ?, णो इणट्ठे समट्ठे वयगय-आवाह-वीवाह-जराण-सद्ध-थालीपाक-मितपिंडनिवेदणा णं ते मणुआ पराणत्ता समणाउसो !, १०। अत्थि णं भंते ! भरहे वासे इंदमहाति वा खंदमहाइ वा णागमहाइ वा जक्खमहाइ वा भूअमहाइ वा अगडमहाइ वा तडागमहाइ वा दहमहाइ वा णदिमहाइ वा रुक्खमहाइ वा पव्वयमहाइ वा थूभमहाइ वा चेइयमहाइ वा ?, णो इणट्ठे समट्ठे, ववगयमहिमा णं ते मणुआ पराणत्ता ११। अत्थि णं भंते ! भरहे वासे णडपेच्छाइ वा णट्टपेच्छाइ वा जलपेच्छाइ वा मल्लपेच्छाइ वा मुट्ठिअपेच्छाइ वा वेलंबगपेच्छाइ वा कहगपेच्छाइ वा पवगपेच्छाइ वा लासगपेच्छाइ वा ?, णो इणट्ठे समट्ठे, ववगयकोउहल्ला णं ते मणुआ पराणत्ता समणाउसो !, १२। अत्थि णं भंते ! भरहे वासे सगडाइ वा रहाइ वा जाणाइ वा जुग्गाइ वा गिल्लिइ वा थिल्लिइ वा सीआइ वा संदमाणिआइ वा ?, णो इणट्ठे समट्ठे, पायचारविहारा णं ते मणुआ पराणत्ता, समणाउसो !, १३। अत्थि णं भंते ! भरहे वासे गावीइ वा महिसीइ वा अयाइ वा एलगाइ वा ?, हंता अत्थि, णो चेव णं तेसिं मणुआणं परिभोगत्ताए हव्वमागच्छंति १४। अत्थि णं भंते ! भरहे वासे आसाइ वा हत्थिइ वा उट्टाइ वा गोणाइ वा गवयाइ वा अयाइ वा एलगाइ वा पसयाइ वा मिआइ वा वराहाइ वा रुरुइ वा सरभाइ वा चमराइ वा कुरंगगोकराणमाइआ ?, हंता अत्थि, णो चेव णं तेसिं परिभोगत्ताए हव्वमागच्छंति १५। अत्थि णं भंते ! भरहे वासे सीहाइ वा वग्घाइ वा विग-दीविग-

अच्छतरच्छ–सिआल–बिडाल–सुणग--कोकंतियकोलसुणगाइ वा ?, हंता अत्थि, णो चेव णं तेसिं मणुआणं आबाहं वा वाबाहं वा छविच्छेअं वा उप्पायेंति, पगइभद्दया णं ते सावयगणा पण्णत्ता समणाउसो !, १६ । अत्थि णं भंते ! भरहे वासे सालीति वा वीहि-गोहूम-जव-जवजवाइ वा कलम-मसूर-मुग्ग मास-तिल-कुलत्थ-णिप्फाव-आलिसंदग–अयसि–कुसुंभ–कोद्दव-कंगु-वरग-रालग-सण-सरिसव-मूलगबीआइ वा ?, हंता अत्थि, णो चेव णं तेसिं मणुआणं परिभोगत्ताए हव्वमागच्छंति १७ । अत्थि णं भंते ! भरहे वासे गड्डाइ वा दरी-ओवाय-पवाय-विसमविज्जलाइ वा ?, णो इणट्ठे समट्ठे, भरहे णं वासे बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते, से जहाणामए आलिंग-पुक्खरेइ वा जाव मणीहिं उवसोभिए, तंजहा–कित्तिमेहिं चेव अकित्तिमेहिं चेव १८ । अत्थि णं भंते ! भरहे वासे खाणूइ वा कंटगतणयकयवराइ वा पत्तकयवराइ वा ?, णो इणट्ठे समट्ठे, ववगयखाणु-कंटगतण-कयवरपत्त-कयवरा णं सा समा पण्णत्ता, समणाउसो ! १९ । अत्थि णं भंते ! भरहे वासे डंसाइ वा मसगाइ वा जूआइ वा लिक्खाइ वा ढिंकुणाइ वा पिसुआइ वा ?, णो इणट्ठे समट्ठे, ववगय-डंस-मसग जूअ-लिक्ख-ढिंकुणपिसुआ उवद्दवविरहिआ णं सा समा पण्णत्ता २० । अत्थि णं भंते ! भरहे अहीइ वा अयगराइ वा ?, हंता अत्थि, णो चेव णं तेसिं मणुआणं आबाहं वा जाव पगइभद्दया णं ते वालगगणा पण्णत्ता, समणाउसो ! २१ । अत्थि णं भंते ! भरहे डिंबाइ वा डमराइ वा कलह-बोल-खार-वइरमहाजुद्धाइ वा महासंगामाइ वा महासत्थपडणाइ वा महापुरिसपडणाइ वा महारुहिरपडलाइ वा ?, गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे, ववगयवेराणुबंधा णं ते मणुआ पण्णत्ता समणाउसो ! २२ । अत्थि णं भंते ! भरहे वासे दुब्भूआणि वा कुल-रोगाइ वा गामरोगाइ वा मंडलरोगाइ वा पोट्टरोगाइ वा सीसवेअणाइ वा कण्णोट्ठ-अच्छि-णह-दंतवेअणाइ वा कासाइ वा सासाइ वा सोसाइ वा

दाहाइ वा अरिसाइ वा अजीरगाइ वा दओोदराइ वा पंडुरोगाइ वा भगंद-राइ वा एगाहिआइ वा बेआहिआइ वा तेआहिआइ वा चउत्थाहिआइ वा इंदग्गहाइ वा धणुग्गहाइ वा खंदग्गहाइ वा कुमारग्गहाइ वा जक्ख-ग्गहाइ वा भूअग्गहाइ वा मत्थयसूलाइ वा हिअयसूलाइ वा पोट्टसूलाइ वा कुच्छिसूलाइ वा जोणिसूलाइ वा गाममारीइ वा जाव सरिणवेसमारीइ वा पाणिक्खया जणक्खया कुलक्खया वसणब्भूअमणारिआ ?, गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे, ववगयरोगायंका णं ते मणुआ पराणत्ता समणाउसो ! २३ ॥ सूत्रं २४ ॥ तीसे णं भंते ! समाए भारहे वासे मणुआणं केवइअं कालं ठिई पराणत्ता ?, गोयमा ! जहराणेणं देसूणाइं तिरिण पलिओवमाइं उक्कोसेणं देसूणाइं तिरिण पलिओवमाइं १ । तीसे णं भंते ! समाए भारहे वासे मणुआणं सरीरा केवइअं उच्चत्तेणं पराणत्ता ?, गोयमा ! जहन्नेणं देसूणाइं तिरिण गाउआइं उक्कोसेणं तिरिण गाउआइं २ । से णं भंते ! मणुआ किंसंघयणी पराणत्ता ?, गोयमा ! वइरोसभणाराय संघयणी पराणत्ता ३ । तेसि णं भंते ! मणुआणं सरीरा किंसंठिआ, पराणत्ता ?, गोअमा ! समचउरंस-संठाणसंठिआ, तेसि णं मणुआणं बेछप्पराणा पिट्ठकरंडयसया पराणत्ता समणाउसो ! ४ । ते णं भंते ! मणुआ कालमासे कालं किच्चा कहिं गच्छंति कहिं उववज्जंति ?, गोयमा ! छम्मासावसेसाउआ जुअलगं पसवंति, एगूणपराणं राइंदिआइं सारक्खंति संगोवेंति २ त्ता कासित्ता छीइत्ता जंभाइत्ता अक्किट्ठा अव्वहिआ अपरिआविआ कालमासे कालं किच्चा देवलोएसु उववज्जंति, देवलोअपरिग्गहा णं ते मणुआ पराणत्ता समणा-उसो ! ५ । तीसे णं भंते ! समाए भरहे वासे कइविहा मणुस्सा अणु-सज्जित्था ?, गोयमा ! छव्विहा पराणत्ता, तंजहा—पम्हगंधा १ मिअगंधा २ अममा ३ तेअतली ४ सहा ५ सणिचारी ६, ६ ॥ सूत्रं २५ ॥ तीसे णं समाए चउहिं सागरोवमकोडाकोडीहिं काले विइक्कंते अणंतेहिं वराण-

पज्जवेहिं अणंतेहिं गंधपज्जवेहिं अणंतेहिं रसपज्जवेहिं अणंतेहिं फासपज्जवेहिं अणंतेहिं संघयणपज्जवेहिं अणंतेहि संठाणपज्जवेहिं अणंतेहिं उच्चत्तपज्जवेहिं अणंतेहि आउपज्जवेहिं अणंतेहि गुरुलहुपज्जवेहिं अणंतेहिं अगुरुलहुपज्जवेहिं अणंतेहिं उट्ठाण-कम्म-बल-वीरिअ-पुरिसकार--परकमपज्जवेहिं अणंतगुणपरिहाणीए परिहायमाणे एत्थ णं सुसमा णामं समाकाले पडिवज्जिंसु समणाउसो ! १ । जंबूदीवे णं भंते ! दीवे इमीसे ओसप्पिणीए सुसमाए समाए उत्तमकट्ठपत्ताए भरहस्स वासस्स केरिसए आयारभावपडोयारे होत्था ?. गोअमा ! बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे होत्था, से जहाणामए आलिंगपुक्खरेइ वा तं चेव जं सुसमसुसमाए पुव्ववणिअं, णवरं णाणत्तं चउधणुसहस्समूसिआ एगे अट्ठावीसे पिट्ठकरंडकसए छट्ठभत्तस्स आहारट्ठे, चउसट्ठिं राइंदिआइं सारक्खंति, दो पलिओवमाइं आऊ सेसं तं चेव २ । तीसे णं समाए चउव्विहा मणुस्सा अणुसज्जित्था, तंजहा—एका १ पउरजंघा २ कुसुमा ३ सुसमणा ४, ३ ॥ सूत्रं २६ ॥ तीसे णं समाए तिहिं सागरोवमकोडाकोडीहिं काले वीइक्कंते अणंतेहिं वण्णपज्जवेहिं जाव अणंतगुणपरिहाणीए परिहायमाणी २ एत्थ णं सुसमदुस्समाणामं समा पडिवज्जिंसु समणाउसो ! १ । सा णं समा तिहा विभज्जइ, तंजहा—पढमे तिभाए १ मज्झिमे तिभाए २ पच्छिमे तिभाए ३, २ । जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे, इमीसे ओसप्पिणीए सुसमदुस्समाए समाए पढममज्झिमेसु तिभाएसु भरहस्स वासस्स केरिसए आयारभावपडोआरे पुच्छा, गोअमा ! बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे होत्था, सो चेव गमो णेअव्वो णाणत्तं दो धणुसहस्साइं उद्धं उच्चत्तेणं, तेसिं च मणुआणं चउसट्ठिपिट्ठकरंडगा चउत्थभत्तस्स आहारत्थे समुप्पज्जइ ठिई पलिओवमं एगूणासीइं राइंदिआइं सारक्खंति संगोवेंति, जाव देवलोगपरिग्गहिआ णं ते मणुआ पण्णत्ता समणाउसो !, २ । तीसे णं भंते ! समाए पच्छिमे तिभाए भरहस्स वासस्स केरि-

सए आयारभावपडोयारे होत्था ?, गोअमा ! बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे होत्था से जहा णामए आलिंगपुक्खरे इ वा जाव मणीहिं उवसोभिए तंजहा–कित्तिमेहिं चेव अकित्तिमेहिं चेव ४। तीसे णं भंते ! समाए पच्छिमे तिभागे भरहे वासे मणुआणं केरिसए आयारभावपडोआरे होत्था ?, गोअमा ! तेसिं मणुआणं छव्विहे संघयणे छव्विह संठाणे बहूणि धणुसयाणि उद्धं उच्चत्तेणं जहण्णेणं संखिज्जाणि वासाणि उक्कोसेणं असंखिज्जाणि वासाणि आउअं पालंति पालित्ता अप्पेगइया णिरयगामी अप्पेगइया तिरिअगामी अप्पेगइआ मणुस्सगामी अप्पेगइया देवगामी अप्पेगइया सिज्झंति जाव सव्वदुक्खाणमंतं करेंति ५ ॥ सूत्रं २७ ॥ तीसे णं समाए पच्छिमे तिभाए पलिओवमट्ठभागावसेसे एत्थ णं इमे पण्णरस कुलगरा समुप्पज्जित्था, तंजहा–सुमई १ पडिस्सुई २ सीमंकरे ३ सीमंधरे ४ खेमंकरे ५ खेमंधरे ६ विमलवाहणे ७ चक्खुमं ८ जसमं ९ अभिचंदे १० चंदाभे ११ पसेणई १२ मरुदेवे १३ णाभी १४ उसभे त्ति ॥ सूत्रं २८ ॥ तत्थ णं सुमई १ पडिस्सुइ २ सीमंकर ३ सीमंधर ४ खेमंकरा ५ णं एतेसिं पंचण्हं कुलगराणं हक्कारे णामं दण्डणीई होत्था, ते णं मणुआ हक्कारेणं दंडेणं हया समाणा लज्जिआ विलज्जिआ वेड्डा भीआ तुसिणीआ विणओणया चिट्ठंति १। तत्थ णं खेमंधर ६ विमलवाहण ७ चक्खुमं ८ जसमं ९ अभिचंदाणं १० एतेसि णं पंचण्हं कुलगराणं मक्कारे णामं दंडणीई होत्था, ते णं मणुआ मक्कारेणं दंडेणं हया समाणा जाव चिट्ठंति २। तत्थ णं चंदाभ ११ पसेणइ १२ मरुदेव १३ णाभि १४ उसभाणं १५ एतेसिं णं पंचण्हं कुलगराणं धिक्कारे णामं दंडणीइ होत्था, ते णं मणुआ धिक्कारेणं दंडेणं हया समाणा जाव चिट्ठंति ३ ॥ सूत्रं २९ ॥ णाभिस्स णं कुलगरस्स मरुदेवाए भारिआए कुच्छिंसि एत्थ णं उसहे णामं अरहा कोसलिए पढमराया पढमजिणे पढमकेवली पढमतित्थकरे पढमधम्मवरचक्कवट्टी समुप्पज्जित्थे १।

तए णं उसभे अरहा कोसलिए वीसं पुव्वसयसहस्साइं कुमारवासमज्झे वसइ वसइत्ता तेवट्ठिं पुव्वसयसहस्साइं महारायवासमज्झे वसइ (मज्झावसइ), तेवट्ठिं पुव्वसयसहस्साइं महारायवासमज्झे वसमाणे लेहाइआओ गणिअप्पहाणाओ सउणरुअपज्जवसाणाओ बावत्तरिं कलाओ चोसट्ठिं महिलागुणे सिप्पसयं च कम्माणं तिण्णिवि पयाहिआए उवदिसइत्ति, उवदिसित्ता पुत्तसयं रज्जसए अभिसिंचइ, अभिसिंचित्ता तेसीइं पुव्वसयसहस्साइं महाराय-(अगार)वासमज्झे वसइ, वसित्ता जे से गिम्हाणं पढमे मासे पढमे पक्खे चित्तबहुले तस्स णं चित्तबहुलस्स णवमीपक्खेणं दिवसस्स पच्छिमे भागे चइत्ता हिरण्णं चइत्ता सुवण्णं चइत्ता कोसं कोट्ठागारं चइत्ता बलं चइत्ता वाहणं चइत्ता पुरं चइत्ता अंतेउरं चइत्ता विउलधण-कणग-रयण-मणि-मोत्तिअ-संख-सिलप्पवाल-रत्तरयण-संतसारसावइज्जं विच्छड्डयित्ता विगोवइत्ता दायं दाइआणं परिभाएत्ता सुदंसणाए सीआए सदेवमणुआसुराए परिसाए समणुगम्ममाणमग्गे संखिय-चक्किअ-णंगलिअ-मुहमंगलिअ-पूसमाणव-वद्धमाणग-आइक्खग-लंख-मंख-भिक्खाग–घंटिअगणेहिं ताहिं इट्ठाहिं कंताहिं पिआहिं मणुण्णाहिं मणामाहिं उरलाहिं कल्लाणाहिं सिवाहिं धन्नाहिं मंगल्लाहिं सस्सिरिआहिं हिययगमणिज्जाहिं हिययपल्हायणिज्जाइं कण्णमणणिव्वुईकराहिं अपुणरुत्ताहिं अट्ठसइआहिं वग्गूहिं अणवरयं अभिणंदंता य अभिथुणंता य एवं वयासी–जय जय नंदा! जय जय भद्दा! धम्मेणं अभीए परीसहोवसग्गाणं खंतिखमे भयभेरवाणं धम्मे ते अविग्घं भवउत्तिकट्टु अभिणंदंति अ अभिथुणंति अ. २। तए णं उसभे अरहा कोसलिए णयणमालासहस्सेहिं पिच्छिज्जमाणे २ एवं जाव णिग्गच्छइ जहा उववाइए जाव आउलबोलबहुलं णभं करंते विणीआए रायहाणीए मज्झंमज्झेणं णिग्गच्छइ २ आसिअ--संमज्जिअ-सित्त-सुइक--पुप्फोवयार-कलियं सिद्धत्थवण-विउलरायमग्गं करेमाणे हयगयरहपहकरेण पाइक्कचड-

करेण य मंदं २ उद्धतरेणुयं करेमाणे २ जेणेव सिद्धत्थवणे उज्जाणे जेणेव असोगवरपायवे तेणेव उवागच्छति २ असोगवरपायवस्स अहे सीअं ठावेइ २ त्ता सीआओ पच्चोरुहइ २ त्ता सयमेवाभरणालंकारं ओमुअइ २ त्ता सयमेव चउहिं अट्ठाहिं लोअं करेइ २ त्ता छट्ठेणं भत्तेणं अपाणएणं आसाढाहिं णक्खत्तेणं जोगमुवागएणं उग्गाणं भोगाणं राइन्नाणं खत्तिआणं चउहिं सहस्सेहिं सद्धिं एगं देवदूसमादाय मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए ३ ॥ सूत्रं ३० ॥ उसभे णं अरहा कोसलिए संवच्छरं साहिअं चीवरधारी होत्था, तेण परं अचेलए १। जप्पभिइं च णं उसभे अरहा कोसलिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए तप्पभिइं च णं उसभे अरहा कोसलिए णिच्चं वोसट्ठकाए चिअत्तदेहे जे केइ उवसग्गा उप्पज्जंति, तंजहा—दिव्वा वा जाव पडिलोमा वा अणुलोमा वा, तत्थ पडिलोमा वेत्तेण वा जाव कसेण वा काए आउट्टेज्जा अणुलोमा वंदेज्ज वा जाव पज्जुवासेज्ज वा ते सव्वे सम्मं सहइ जाव अहिआसेइ २। तए णं से भगवं समणे जाए ईरिआसमिए जाव पारिट्ठावणिआसमिए मणसमिए वयसमिए कायसमिए मणगुत्ते जाव गुत्तबंभयारी अकोहे जाव अलोहे संते पसंते उवसंते परिणिव्वुडे छिण्णसोए निरुवलेवे संखमिव निरंजणे जच्चकणगं व जायरूवे आदरिसपडिभागे इव पागडभावे कुम्मो इव गुत्तिंदिए पुक्खरपत्तमिव निरुवलेवे गगणमिव निरालंबणे अणिले इव णिरालए चंदो इव सोमदंसणे सूरो इव तेअंसी विहग इव अपडिबद्धगामी सागरो इव गंभीरे मंदरो इव अकंपे पुढवीविव सव्वफासविसहे जीवो विव अप्पडिहयगइत्ति ३। णत्थि णं तस्स भगवंतस्स कत्थइ पडिबंधे, से पडिबंधे चउव्विहे भवति, तंजहा—दव्वओ खित्तओ कालओ भावओ, दव्वओ इह खलु माया मे पिया मे भाया मे भगिणी मे जाव संगंथसंथुआ मे हिरण्णं मे सुवण्णं मे जाव उवगरणं मे, अहवा समासओ सच्चित्ते वा अचित्ते वा मीसए वा

दव्वजाए सेवं तस्स ण भवइ, खित्तओ गामे वा णगरे वा अरणो वा खेत्ते वा खले वा गेहे वा अंगणे वा एवं तस्स ण भवइ, कालओ थोवे वा लवे वा मुहुत्ते वा अहोरत्ते वा पक्खे वा मासे वा उऊए वा अयणे वा संवच्छरे वा अन्नयरे वा दीहकालपडिबंधे एवं तस्स ण भवइ, भावओ कोहे वा जाव लोहे वा भए वा हासे वा एवं तस्स ण भवइ, से णं भगवं वासावासवज्जं हेमंतगिम्हासु गामे एगराइए णगरे पंचराइए ववगयहास-सोग-अरइ-भयपरित्तासे णिम्ममे णिरहंकारे लहुभूए अगंथे वासीतच्छणे अदुट्ठे चंदणाणुलेवणे अरत्ते लेट्ठुंमि कंचणंमि अ समे इह लोए अपडिबद्धे जीवियमरणे निरवकंखे संसारपारगामी कम्मसंगणिग्घायणट्ठाए अब्भुट्ठिए विहरइ ४। तस्स णं भगवंतस्स एतेणं विहारेणं विहरमाणस्स एगे वाससहस्से विइक्कंते समाणे पुरिमतालस्स नगरस्स बहिया सगडमुहंसि उज्जाणंसि णिग्गोहवरपायवस्स अहे झाणंतरिआए वट्टमाणस्स फग्गुणबहुलस्स इक्कारसीए पुव्वण्हकालसमयंसि अट्ठमेणं भत्तेणं अपाणएणं उत्तरासाढाणक्खत्तेणं जोगमुवागएणं अणुत्तरेणं नाणेणं जाव चरित्तेणं अणुत्तरेणं तवेणं बलेणं वीरिएणं आलएणं विहारेणं भावणाए खंतीए गुत्तीए मुत्तीए तुट्ठीए अज्जवेणं मद्दवेणं लाघवेणं सुचरिअ-सोवचिअ-फलनिव्वाणमग्गेणं अप्पाणं भावेमाणस्स अणंते अणुत्तरे णिव्वाघाए णिरावरणे कसिणे पडिपुण्णे केवलवरनाणदंसणे समुप्पण्णे जिणे जाए केवली सव्वन्नू सव्वदरिसी सणेरइअ-तिरिअ-नरामरस्स लोगस्स पज्जवे जाणइ पासइ, तंजहा—आगइं गइं ठिइं उववायं भुत्तं कडं पडिसेविअं आवीकम्मं रहोकम्मं तं तं कालं मणवयकाये जोगे एवमादी जीवाणवि सव्वभावे अजीवाणवि सव्वभावे मोक्खमग्गस्स विसुद्धतराए भावे जाणमाणे पासमाणे एस खलु मोक्खमग्गे मम अण्णेसिं च जीवाणं हियसुहणिस्सेसकरे सव्वदुक्खविमोक्खणे परमसुहसमाणणे भविस्सइ ५। तते णं से भगवं समणाणं निग्गंथाण य णिग्गंथीण य पंच

महव्वयाइं सभावणगाइं छच्च जीवणिकाए धम्मं देसमाणो विहरति, तंजहा– पुढविकाइए भावणागमेणं पंच महव्वयाइं सभावणगाइं भाणिअव्वाइंति ६। उसभस्स णं अरहओ कोसलिअस्स अउरासी (गणा)गणहरा होत्था ७। उसभस्स णं अरहओ कोसलिअस्स उसभसेणपामोक्खाओ चुलसीइं समणसाहस्सीओ उक्कोसिआ समणसंपया होत्था ८। उसभस्स णं अरहओ कोसलिअस्स बंभीसुंदरीपामोक्खाओ तिण्णि अज्जिआसयसाहस्सीओ उक्कोसिआ अज्जिआसंपया होत्था ९। उसभस्स णं अरहओ कोसलिअस्स सेज्जंसपामोक्खाओ तिण्णि समणोवासगसयसाहस्सीओ पंच य साहस्सीओ उक्कोसिआ समणोवासगसंपया होत्था १०। उसभस्स णं अरहओ कोसलिअस्स सुभद्दापामोक्खाओ पंच समणोवासिआसयसाहस्सीओ चउपण्णं च सहस्सा उक्कोसिआ समणोवासिआसंपया होत्था ११। उसभस्स णं अरहओ कोसलिअस्स अजिणाणं जिणसंकासाणं सव्वक्खरसन्निवाईणं जिणो विव अवितहं वागरमाणाणं चत्तारि चउद्दसपुव्वीसहस्सा अद्धट्ठमा य सया उक्कोसिआ चउद्दसपुव्वीसंपया होथा १२। उसभस्स णं अरहओ कोसलिअस्स णव ओहिणाणिसहस्सा उक्कोसिआ ओहिणाणिसंपया हुत्था १३। उसभस्स णं अरहओ कोसलिअस्स वीसं जिणसहस्सा वीसं वेउव्विअसहस्सा छच्च सया उक्कोसिआ वेउव्विअसंपया हुत्था १४। बारस विउलमईसहस्सा छच्च सया पण्णासा बारस वाईसहस्सा छच्च सया पण्णासा १५। उसभस्स णं अरहओ कोसलिअस्स गइकल्लाणाणं ठिइकल्लाणाणं आगमेसिभद्दाणं बावीसं अणुत्तरोववाइआणं सहस्सा णव य सया १६। उसभस्स णं अरहओ कोसलिअस्स वीसं समणसहस्सा सिद्धा, चत्तालीसं अज्जिआसहस्सा सिद्धा संट्ठि अंतेवासीसहस्सा सिद्धा १७। अरहओ णं उसभस्स बहवे अंतेवासी अणगारा भगवंतो अप्पेगइआ मासपरिआया जहा उववाइए सव्वओ अणगारवण्णओ जाव उद्धंजाणू अहोसिरा झाणकोट्ठोवगया संजमेणं तवसा

अप्पाणं भावेमाणा विहरंति १८। अरहओ णं उसभस्स दुविहा अंतकरभूमी होत्था, तंजहा–जुगंतकरभूमी अ परिआयंतकरभूमी य, जुगंतकरभूमी जाव असंखेज्जाइं पुरिसजुगाइं, परिआयंतकरभूमी अंतोमुहुत्तपरिआए अंतमकासी १९॥ सूत्रं ३१॥ उसभे णं अरहा पंचउत्तरासाढे अभीइछट्ठे होत्था, तंजहा–उत्तरासाढाहिं चुए चइत्ता गब्भं वक्कंते उत्तरासाढाहिं जाए उत्तरासाढाहिं रायाभिसेअं पत्ते उत्तरासाढाहिं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए उत्तरासाढाहिं अणंते जाव समुप्पणणे, अभीइणा परिणिव्वुए ॥सूत्रं ३२॥ उसभे णं अरहा कोसलिए वज्जरिसहनारायसंघयणे समचउरंससंठाणसंठिए पंच धणुसयाइं उद्धं उच्चत्तेणं होत्था १। उसभे णं अरहा वीसं पुव्वसयसहस्साइं कुमारवासमज्झे वसित्ता तेवट्ठिं पुव्वसयसहस्साइं महारज्जवासमज्झे वसित्ता तेसीइं पुव्वसयसहस्साइं अगारवासमज्झे वसित्ता मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए २। उसभे णं अरहा एवं वाससहस्सं छउमत्थपरिआयं पाउणित्ता एगं पुव्वसहस्सं वाससहस्सूणं केवलिपरिआयं पाउणित्ता एगं पुव्वसयसहस्सं बहुपडिपुण्णं सामण्णपरिआयं पाउणित्ता चउरासीइं पुव्वसयसहस्साइं सव्वाउअं पालइत्ता जे से हेमंताणं तच्चे मासे पंचमे पक्खे माहबहुले, तस्स णं माहबहुलस्स तेरसीपक्खेणं दसहिं अणगारसहस्सेहिं सद्धिं संपरिवुडे अट्ठावयसेलसिहरंसि चोद्दसमेणं भत्तेणं अपाणएणं संपलिअंकणिसण्णे पुव्वण्हकालसमयंसि अभीइणा णक्खत्तेणं जोगमुवागएणं सुसमदूसमाए समाए एगूणणवउईहिं पक्खेहिं सेसेहिं कालगए वीइक्कंते जाव सव्वदुक्खप्पहीणे ३। जं समयं च णं उसभे अरहा कोसलिए कालगए वीइक्कंते समुज्जाए छिण्णजाइजरामरणबंधणे सिद्धे बुद्धे जाव सव्वदुक्खप्पहीणे तं समयं च णं सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो आसणे चलिए, तए णं से सक्के देविंदे देवराया आसणं चलिअं पासइ पासित्ता ओहिं पउंजइ २त्ता भयवं तित्थयरं ओहिणा आभोएइ २

त्ता एवं वयासी—परिणिव्वुए खलु जंबुद्दीवे दीवे भरहे वासे उसहे अरहा कोसलिए, तं जीअमेअं तीअपच्चुप्पराण-मणागयाणं सक्काणं देविंदाणं देवराईणं तित्थगराणं परिनिव्वाणमहिमं करेत्तए, तं गच्छामि णं अहंपि भगवतो तित्थगरस्स परिनिव्वाणमहिमं करेमित्तिकट्टु वंदइ णमंसइ २ त्ता चउरासीईए समाणिअसाहस्सीहिं तायत्तीसाए तायत्तीसएहिं चउहिं लोगपालेहिं जाव चउहिं चउरासीईहिं आयरक्खदेवसाहस्सीहिं अरणेहि अ बहूहिं सोहम्मकप्पवासीहिं वेमाणिएहि देवेहिं देवीहि अ सद्धिं संपरिवुडे ताए उक्किट्ठाए जाव तिरिअमसंखेज्जाणं दीवसमुद्दाणं मज्झंमज्झेणं जेणेव अट्ठावयपव्वए जेणेव भगवओ तित्थगरस्स सरीरए तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता विमणे णिराणंदे अंसुपुराणणयणे तित्थयर-सरीरयं तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेइ २ त्ता णच्चासरणे णाइदूरे सुस्सूसमाणे जाव पज्जुवासइ ४ । तेणं कालेणं तेणं समएणं ईसाणे देविंदे देवराया उत्तरद्धलोगाहिवई अट्ठावीस-विमाण-सयसहस्साहिवई सूलपाणी वसहवाहणे सुरिंदे अरयंबरवत्थधरे जाव विउलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरइ ५ । तए णं तस्स ईसाणस्स देविंदस्स देवरगणो आसणं चलइ, तए णं से ईसाणे जाव देवराया आसणं चलिअं पासइ २ त्ता ओहिं पउंजइ २ त्ता भगवं तित्थगरं ओहिणा आभोएइ २ त्ता जहा सक्के निअगपरिवारेणं भाणिअव्वो जाव पज्जुवासइ, एवं सव्वे देविंदा जाव अच्चुए णिअगपरिवारेणं आणेअव्वा, एवं जाव भवणवासीणं इंदा वाणमंतराणं सोलस जोइसिआणं दोरिण निअग-परिवारा णेअव्वा ६ । तए णं सक्के देविंदे देवराया बहवे भवणवइ-वाणमंतर-जोइसवेमाणिए देवे एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिआ ! णंदणवणाओ सरसाइं गोसीसवरचंदणकट्ठाइं साहरह २ त्ता तओ चिइगाओ रएह—एगं भगवओ तित्थगरस्स एगं गणधराणं एगं अवसेसाणं अणगा-

राणं ७। तए णं ते भवणवइ जाव वेमाणिश्रा देवा णंदणवणाश्रो सरसाइं गोसीसवरचंदणकट्ठाइं साहरंति २ त्ता तश्रो चिइगाश्रो रएंति, एगं भगवश्रो तित्थगरस्स एगं गणहराणं एगं श्रवसेसाणं श्रणगाराणं ८। तए णं से सक्के देविंदे देवराया श्राभिश्रोगे देवे सद्दावेइ २ त्ता एवं वयासी–खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! खीरोदगसमुद्दाश्रो खीरोदगं साहरह, तए णं ते श्राभिश्रोगा देवा खीरोदगसमुद्दाश्रो खीरोदगं साहरंति ९। तए णं से सक्के देविंदे देवराया तित्थगरसरीरगं खीरोदगेणं ण्हाणेति २ त्ता सरसेणं गोसीसवरचंदणेणं श्रणुलिंपइ २ त्ता हंसलक्खणं पडसाडयं णिश्रंसेइ २ त्ता सव्वालंकारविभूसिश्रं करेंति १०। तए णं ते भवणवइ जाव वेमाणिश्रा गणहरसरीरगाइं श्रणगारसरीरगाइंपि खीरोदगेणं ण्हावंति २ त्ता सरसेणं गोसीसवरचंदणेणं श्रणुलिंपंति २ त्ता श्रहताइं दिव्वाइं देवदूसजुअलाइं णिश्रंसंति २ त्ता सव्वालंकारविभूसिश्राइं करेंति ११। तए णं से सक्के देविंदे देवराया ते बहवे भवणवइ जाव वेमाणिए देवे एवं वयासी–खिप्पामेव भो देवाणुप्पिश्रा! ईहामिग-उसभ-तुरय जाव वणलयभत्तिचित्ताश्रो तश्रो सिवियाश्रो विउव्वह, एगं भगवश्रो तित्थगरस्स एगं गणहराणं एगं श्रवसेसाणं श्रणगाराणं १२। तए णं ते बहवे भवणवइ जाव वेमाणिश्रा तश्रो सिबिश्राश्रो विउव्वंति, एगं भगवश्रो तित्थगरस्स एगं गणहराणं एगं श्रवसेसाणं श्रणगाराणं १३। तए णं से सक्के देविंदे देवराया विमणे णिराणंदे श्रंसुपुण्णणयणे भगवश्रो तित्थगरस्स विणट्ठजम्मजरामरणस्स सरीरगं सीश्रं श्रारुहेति २ चिइगाए ठवेइ १४। तए णं ते बहवे भवणवइ जाव वेमाणिश्रा देवा गणहराणं श्रणगाराण य विणट्ठजम्मजरामरणाणं सरीरगाइं सीश्रं श्रारुहेंति २ त्ता चिइगाए ठवेंति १५। तए णं से सक्के देविंदे देवराया श्रग्गिकुमारे देवे सद्दावेइ २ त्ता एवं वयासी–खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! तित्थगरचिइगाए

जाव अणगारचिइगाए अगणिकायं विउव्वह २ त्ता एअमाणत्तिअं पच्च-प्पिणह १६ । तए णं ते अग्गिकुमारा देवा विमणा णिराणंदा अंसुपुण्ण-णयणा तित्थगरचिइगाए जाव अणगारचिइगाए अ अगणिकायं विउव्वंति १७ । तए णं से सक्के देविंदे देवराया वाउकुमारे देवे सद्दावेइ २ त्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! तित्थगरचिइगाए जाव अणगार-चिइगाए अ वाउक्कायं विउव्वह २ त्ता अगणिकायं उज्जालेह तित्थगर-सरीरगं गणहरसरीरगाइं अणगारसरीरगाइं च झामेह १८ । तए णं ते वाउकुमारा देवा विमणा णिराणंदा अंसुपुण्णणयणा तित्थगरचिइगाए जाव विउव्वंति अगणिकायं उज्जालेंति तित्थगरसरीरगं जाव अणगार-सरीरगाणि अ झामेंति १९ । तए णं से सक्के देविंदे देवराया ते बहवे भवणवइ जाव वेमाणिए देवे एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! तित्थगरचिइगाए जाव अणगारचिइगाए अगुरुतुरुक्कघयमधुं च कुंभग्गसो अ भारग्गसो अ साहरह २० । तए णं ते भवणवइ जाव तित्थगर जाव भारग्गसो अ साहरंति २१ । तए णं से सक्के देविंदे देवराया मेहकुमारे देवे सद्दावेइ ३ त्ता एवं वयासी——खिप्पामेव भो देवाणु-प्पिआ ! तित्थगरचिइगं जाव अणगारचिइगं च खीरोदगेणं णिव्वावेह, तए णं ते मेहकुमारा देवा तित्थगरचिइगं जाव णिव्वावेंति २२ । तए णं से सक्के देविंदे देवराया भगवओ तित्थगरस्स उवरिल्लं दाहिणं सकहं गेण्हइ ईसाणे देविंदे देवराया उवरिल्लं वामं सकहं गेण्हइ, चमरे असुरिंदे असुरराया हिट्ठिल्लं दाहिणं सकहं गेण्हइ बली वइरो-अणिंदे वइरोअणराया हिट्ठिल्लं वामं सकहं गेण्हइ, अवसेसा भवणवइ जाव वेमाणिआ देवा जहारिहं अवसेसाइं अंगमंगाइं, केई जिणभत्तीए केई जीअमेअंतिकट्टु केइ धम्मोत्तिकट्टु गेण्हंति २३ । तए णं से सक्के देविंदे देवराया बहवे भवणवइ जाव वेमाणिए देवे जहारिहं एवं वयासी—

खिप्पामेव भो देवाणुप्पिा ! सव्वरयणामए महइमहालए तो चेइअथूभे करेह, एगं भगवओ तित्थगरस्स चिइगाए एगं गणहरचिइगाए एगं अवसेसाणं अणगाराणं चिइगाए २४। तए णं ते बहवे जाव करेंति, तए णं ते बहवे भवणवइ जाव वेमाणिआ देवा तित्थगरस्स परिणिव्वाणमहिमं करेंति २ त्ता जेणेव नंदीसरवरे दीवे तेणेव उवागच्छन्ति २५। तए णं से सक्के देविंदे देवराया पुरच्छिमिल्ले अंजणगपव्वए अट्ठाहिअं महामहिमं करेति २६। तए णं सक्कस्स देविंदस्स देवरन्नो चत्तारि लोगपाला चउसु दहिमुहगपव्वएसु अट्ठाहियं महामहिमं करेंति २७। ईसाणे देविंदे देवराया उत्तरिल्ले अंजणगे अट्ठाहिअं तस्स लोगपाला चउसु दहिमुहगेसु अट्ठाहिअं, चमरो अ दाहिणिल्ले अंजणगे तस्स लोगपाला दहिमुहगपव्वएसु, बली पच्चत्थिमिल्ले अंजणगे तस्स लोगपाला दहिमुहगेसु २८। तए णं ते बहवे भवणवइवाणमंतर जाव अट्ठाहिआओ महामहिमाओ करेंति करित्ता तेणेव साइं २ विमाणाइं जेणेव साइं २ भवणाइं जेणेव साओ २ सभाओ सुहम्माओ जेणेव सगा २ माणवगा चेइअखंभा तेणेव उवागच्छंति २ त्ता वइरामएसु गोलवट्टसमुग्गएसु जिणसकहाओ पक्खिवंति २ अग्गेहिं वरेहिं मल्लेहि अ गंधेहि अ अच्चेंति २ विउलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणा विहरंति २९॥ सूत्रं ३३॥ तीसे णं समाए दोहिं सागरोवमकोडाकोडीहिं काले वीइक्कंते अणंतेहिं वण्णपज्जवेहिं तहेव जाव अणंतेहिं उट्ठाणकम्म जाव परिहायमाणे २ एत्थ णं दूसमसुसमाणामं समा काले पडिवज्जिसु समणाउसो ! १। तीसे णं भंते ! समाए भरहस्स वासस्स केरिसए आगारभावपडोआरे पण्णत्ते ?, गोअमा ! बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते, से जहाणामए आलिंगपुक्खरेइ वा जाव मणीहिं उवसोभिए, तंजहा—कत्तिमेहिं चेव अकत्तिमेहिं चेव २। तीसे णं भंते ! समाए भरहे वासे मणुआणं केरिसए आयारभावपडोयारे पण्णत्ते,

गोत्रमा ! तेसिं मणुत्राणं छव्विहे संघयणे छव्विहे संठाणे बहूइं धणूइं उद्धं उच्चत्तेणं जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पुव्वकोडीआउअं पालेंति २ त्ता अप्पेगइआ णिरयगामी जाव देवगामी अप्पेगइया सिज्झंति बुज्झंति जाव सव्वदुक्खाणमंतं करेंति ३ । तीसे णं समाए तत्रो वंसा समुप्पज्जित्था, तंजहा—अरहंतवंसे चक्कवट्टिवंसे दसारवंसे, तीसे णं समाए तेवीसं तित्थयरा इक्कारस चक्कवट्टी णव बलदेवा णव वासुदेवा समुप्पज्जित्था ४ ॥ सूत्रं ३४ ॥ तीसे णं समाए एक्काए सागरोवमकोडाकोडीए बायालीसाए वाससहस्सेहिं ऊणिआए काले वीइक्कंते अणंतेहिं वण्णपज्जवेहिं तहेव जाव परिहाणीए परिहायमाणे २ एत्थ णं दुसमाणामं समा काले पडिवज्जिस्सइ समणाउसो ! १ । तीसे णं भंते ! समाए भरहस्स वासस्स केरिसए आगारभावपडीआरे भविस्सइ ?, गोत्रमा ! बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे भविस्सइ से जहाणामए आलिंगपुक्खरेइ वा मुइंगपुक्खरेइ वा जाव णाणामणिपंचवण्णेहिं कत्तिमेहिं चेव अकत्तिमेहिं चेव २ । तीसे णं भंते ! समाए भरहस्स वासस्स मणुत्राणं केरिसए आयारभावपडोयारे पण्णत्ते ?, गोयमा ! तेसिं मणुत्राणं छव्विहे संघयणे छव्विहे संठाणे बहुइओ रयणीओ उद्धं उच्चत्तेणं जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं साइरेगं वाससयं आउअं पालेंति २ त्ता अप्पेगइआ णिरयगामी जाव सव्वदुक्खाणमंतं करेंति ३ । तीसे णं समाए पच्छिमे तिभागे गणधम्मे पासंडधम्मे रायधम्मे जायतेए धम्मचरणे अ वोच्छिज्जिस्सइ ४ ॥ सूत्रं ३५ ॥ तीसे णं समाए एक्कवीसाए वाससहस्सेहिं काले वीइक्कंते अणंतेहिं वण्णपज्जवेहिं गंधपज्जवेहिं रसपज्जवेहिं फासपज्जवेहिं जाव परिहायमाणे २ एत्थ णं दूसमदूसमाणामं समाकाले पडिवज्जिस्सइ समणाउसो ! १ । तीसे णं भंते ! समाए उत्तमकट्ठपत्ताए भरहस्स वासस्स केरिसए आयारभावपडोआरे भविस्सइ ?, गोत्रमा ! काले भविस्सइ हाहाभूए भंभा-

भूए कोलाहलभूए समाणुभावेण य खरफरुसधूलिमइला दुव्विसहा वाउला भयंकरा य वाया संवट्टगा य वाइस्संति २ । इह अभिक्खणं २ धूमाहिंति अ दिसा समंता रउस्सला रेणुकलुस-तमपडलणिरालोआ समयलुक्खयाए णं अहिअं चंदा सीअं मोच्छिहिंति अहिअं सूरिआ तविस्संति, अदुत्तरं च णं गोअमा ! अभिक्खणं अरसमेहा विरसमेहा खारमेहा खत्त(ट्ट)मेहा अग्गिमेहा विज्जुमेहा विसमेहा (असणिमेहा) अज(पि)वणिज्जोदगा वाहि-रोगवेदणोदीरणापरिणामसलिला अमणुण्णपाणिअगा चंडानिल-पहत-तिक्खधारा-णिवातपउरं वासं वासिहिंति ३ । जेणं भरहे वासे गामागर-णगर-खेड-कब्बड-मडंबदोणमुह-पट्टणासमगयं जणवयं चउप्पयगवेलए खहयरे पक्खिसंघे गामारण्णप्पयारणिरए तसे अ पाणे बहुप्पयारे रुक्खगुच्छ-गुम्मलय-वल्लि-पवालंकुरमादीए तणवणस्सइकाइए ओसहीओ अ विद्धंसेहिंति पव्वय-गिरि-डोंगरुत्थल-भट्ठिमादीए अ वेअड्ढगिरिवज्जे विरावेहिंति, सलिल-बिल-विसम-गत्त-(दुग्ग)णिण्णुण्णयाणि अ गंगासिंधुवज्जाइं समीकरेहिंति ४ । तीसे णं भंते ! समाए भरहस्स वासस्स भूमीए केरिसए आगारभावपडोआरे भविस्सइ ?, गोयमा ! भूमी भविस्सइ इंगालभूआ मुम्मुरभूआ छारिअभूआ तत्तकवेल्लुअभूआ तत्तसमजोइभूआ धूलिबहुला रेणुबहुला पंकबहुला पणयबहुला चलणिबहुला बहूणं धरणिगोअराणं सत्ताणं दुन्निक्कमा यावि भविस्सई ५ । तीसे णं भंते ! समाए भरहे वासे मणुआणं केरिसए आयारभावपडोआरे भविस्सइ ?, गोयमा ! मणुआ भविस्संति दुरूवा दुवण्णा दुगंधा दुरसा दुफासा अणिट्ठा अकंता अप्पिआ असुभा अमणुन्ना अमणामा हीणस्सरा दीणस्सरा अणिट्ठस्सरा अकंतस्सरा अपिअस्सरा अमणामस्सरा अमणुण्णस्सरा अणादेज्ज-वयणपच्चायाता णिलज्जा कूडकवड-कलह-बंधवेरनिरया मज्जायातिक्कमप्पहाणा अकज्जणिच्चुज्जुया गुरुणिओग-विणयरहिआ य विकलरूवा परूढ-णह-केस-मंसुरोमा काला खर-फरुस-सा(झा)मवण्णा फुट्टसिरा

कविलपलिअकेसा बहुराहारुणि-संपिणद्ध-दुद्दंसणिज्जरूवा संकुडिअ-वलीत-रंगपरिवेढिअंगमंगा जरापरिणयव्व थेरगणरा पविरल-परिसडिअ-दंतसेढी उब्भडघड(घाडा)मुहा विसम-णयण-वंकणासा वंक(ग)वली-विगय-भेसणमुहा दद्दुवि-किटिभ-सिब्भ-फुडिअ फरुसच्छवी चित्तलंगमंगा कच्छूखसराभिभूआ खरतिक्ख-णक्खकंडूइअविकयतणू टोलागि(लग)ति-विसमसंधिबंधणा उक्कुडुअ-ट्ठिअ-विभत्त-दुब्बल-कुसंघयण-कुप्पमाणकुसंठिआ कुरूवा कुट्ठाणासण कुसेज्ज-कुभोइणो असुइणो अणेग-वाहि-पीलिअंगमंगा खलंतविब्भलगई णिरुच्छाहा सत्तपरिवज्जिता विगयचेट्ठा नट्ठतेआ अभिक्खणं सीउण्ह-खरफरुस-वाय-विज्झडिअ-मलिण-पंसु-रओगुंडिअंगमंगा बहुकोहमाणमायालोभा बहुमोहा असुभदुक्खभागी ओसण्णं धम्मसण्ण-सम्मत्तपरिभट्ठा उक्कोसेणं रयणि-प्पमाणमेत्ता सोलस-वीसइ वास-परमाउसो बहुपुत्त-णत्तु-परियाल-पणयबहुला गंगासिंधूओ महाणईओ वेअड्ढं च पव्वयं नीसाए बावत्तरि णिगोअबीअं बीअमेत्ता बिलवासिणो मणुआ भविस्संति ६। ते णं भंते! मणुआ किमा-हारिस्संति?, गोअमा! तेणं कालेणं तेणं समएणं गंगासिंधूओ महाणईओ रहपहमित्तवित्थराओ अक्खसोअप्पमाणमेत्तं जलं वोज्झिहिंति, सेवि अ णं जले बहुमच्छकच्छभाइण्णे, णो चेव णं आउबहुले भविस्सइ ७। तए णं ते मणुआ सूरुग्गमणमुहुत्तंसि अ सूरत्थमणमुहुत्तंसि अ बिलेहितो णिद्धाइ-स्संति २ त्ता मच्छकच्छभे थलाइं गाहेहिंति मच्छकच्छभे थलाइं गाहेत्ता सीआतवतत्तेहिं मच्छकच्छभेहिं इक्कवीसं वाससहस्साइं वित्तिं कप्पेमाणा विहरिस्संति ८। ते णं भंते! मणुआ णिस्सीला णिव्वया णिग्गुणा णिम्मेरा णिप्पच्चक्खाणपोसहोववासा ओसण्णं मंसाहारा मच्छाहारा खुद्दा(ड्डा)हारा कुणिमाहारा कालमासे कालं किच्चा कहिं गच्छिहिंति कहिं उववज्जिहिंति?, गोअमा! ओसण्णं णरगतिरिक्खजोणिएसुं उववज्जि-हिंति ९। तीसे णं भंते! समाए सीहा वग्घा विगा दीविआ अच्छा

तरस्सा परस्सरा सरभ-सियाल-बिरालसुणगा कोलसुणगा ससगा चित्तगा चिल्लगा ओसरणं मंसाहारा मच्छाहारा खोद्दाहारा कुणिमाहारा कालमासे कालं किच्चा कहिं गच्छिहिंति कहिं उववज्जिहिंति ?, गोयमा ! ओसरणं णरगतिरिक्खजोणिएसु उववज्जिहिंति १० । ते णं भंते ! ढंका कंका पीलगा मग्गुगा सिही ओसरणं मंसाहारा जाव कहिं गच्छिहिंति कहिं उववज्जिहिंति ?, गोयमा ! ओसरणं णरगतिरिक्खजोणिएसु जाव उववज्जिहिंति ११ ॥ सूत्रं ३६ ॥ तीसे णं समाए इक्कवीसाए वाससहस्सेहिं काले वीइक्कंते आगमिस्साए उस्सप्पिणीए सावणबहुलपडिवए बालवकरणंसि अभीइणक्खत्ते चोद्दसपढमसमये अणंतेहिं वण्णपज्जवेहि जाव अणंतगुणपज्जवपरिवद्धीए परिवुद्धेमाणे २ एत्थ णं दूसमदूसमाणामं समा काले पडिवज्जिस्सइ समणाउसो ! १ । तीसे णं भंते ! समाए भरहस्स वासस्स केरिसए आगारभावपडोआरे भविस्सइ ?, गोयमा ! काले भविस्सइ हाहाभूए भंभाभूए एवं सो चेव दूसमदूसमावेढओ णेअव्वो २ । तीसे णं समाए एकवीसाए वाससहस्सेहिं काले विइक्कते अणंतेहिं वण्णपज्जवेहिं जाव अणंतगुणपरिवुद्धीए परिवुद्धेमाणे २ एत्थ णं दूसमाणामं समा काले पडिवज्जिस्सइ समणाउसो ! ३ ॥ सूत्रं ३७ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं पुक्खलसंवट्टए णामं महामेहे पाउब्भविस्सइ भरहप्पमाणमित्ते आयामेणं तदाणुरूवं च णं विक्खंभबाहल्लेणं १ । तए णं से पुक्खलसंवट्टए महामेहे खिप्पामेव पतणतणाइस्सइ खिप्पामेव पतणतणाइत्ता खिप्पामेव पविज्जुआइस्सइ खिप्पामेव पविज्जुआइत्ता खिप्पामेव जुगमुसलमुट्ठिप्पमाणमित्ताहिं धाराहिं ओघमेघं सत्तरत्तं वासं वासिस्सइ, जेणं भरहस्स वासस्स भूमिभागं इंगालभूअं मुम्मुरभूअं छारिअभूअं तत्तकवेल्लगभूअं तत्तसमजोइभूअं णिव्वाविस्सतित्ति २ । तंसि च णं पुक्खलसंवट्टगंसि महामेहंसि सत्तरत्तं णिवतितंसि समाणंसि एत्थ णं खीरमेहे णामं महामेहे

पाउब्भविस्सइ भरहप्पमाणमेत्ते आयामेणं तदणुरूवं च णं विक्खंभबाहल्लेणं ३। तए णं से खीरमेहे णामं महामेहे खिप्पामेव पतणतणाइस्सइ जाव खिप्पामेव जुगमुमलमुट्ठि जाव सत्तरत्तं वासं वासिस्सइ, जेणं भरहवासस्स भूमीए वण्णं गंधे रसं फासं च जणइस्सइ ४। तंसि च णं खीरमेहंसि सत्तरत्तं णिवतितंसि समाणंसि इत्थ णं घयमेहे णामं महामेहे पाउब्भविस्सइ, भरहप्पमाणमेत्ते आयामेणं, तदणुरूवं च णं विक्खंभबाहल्लेणं ५। तए णं से घयमेहे महामेहे खिप्पामेव पतणतणाइस्सइ जाव वासं वासिस्सइ जेणं भरहस्स वासस्स भूमीए सिणेहभावं जणइस्सइ ६। तंसिं च णं घयमेहंसि सत्तरत्तं णिवतितंसि समाणंसि एत्थ णं अमयमेहे णामं महामेहे पाउब्भविस्सइ भरहप्पमाणमित्तं आयामेणं जाव वासं वासिस्सइ ७। जे णं भरहे वासे रुक्ख-गुच्छ गुम्म-लय-वल्लि-तण-पव्वग-हरितग-ओसहि-पवालंकुर-माईए तणवणस्सइकाइए जणइस्सइ ८। तंसि च णं अमयमेहंसि सत्तरत्तं णिवतितंसि समाणंसि तत्थ णं रसमेहे णामं महामेहे पाउब्भविस्सइ भरहप्पमाणमित्ते आयामेणं जाव वासं वासिस्सइ ९। जेणं तेसिं बहूणं रुक्ख-गुच्छ-गुम्म-लय-वल्लि-तण-पव्वग-हरित-ओसहि-पवालंकुरमादीणं तित्त कडुअ-कसाय-अंबिलमहुरे पंचविहे रसविसेसे जणइस्सइ १०। तए णं भरहे वासे भविस्सइ परूढ रुक्ख गुच्छ-गुम्म लय-वल्लि-तण-पव्वयग-हरिअओसहिए, उवचिय-तय-पत्त-पवालपल्लवांकुर-पुप्फफलसमुइए सुहोवभोगे आवि भविस्सइ ११॥ सूत्रं ३८॥ तए णं ते मणुआ भरहं वासं परूढरुक्ख-गुच्छ-गुम्म-लय--वल्लि--तण--पव्वय-हरिअ--ओसहीयं उवचिअ--तय-पत्त-पवाल-पल्लवंकुर-पुप्फफलसमुइअं सुहोवभोगं जायं २ चावि पासिहिंति पासित्ता बिलेहिंतो णिद्धाइसंति णिद्धाइत्ता हट्ठतुट्ठा अणणमणणं सद्दाविस्संति २ त्ता एवं वदिस्संति–जाते णं देवाणुप्पिआ ! भरहे वासे परूढरुक्ख-गुच्छ-गुम्म-लय-वल्लि-तणपव्वय-हरिअ जाव सुहोवभोगे, तं जे णं देवाणुप्पिआ ! अम्हं

केइ अज्झप्पभिइ असुभं कुणिमं आहारं आहारिस्सइ से णं अणेगाहिं छायाहिं वज्जणिज्जे(वज्जे)त्तिकट्टु संठिइं ठवेस्संति २ त्ता भरहे वासे सुहंसुहेणं अभिरममाणा २ विहरिस्संति ॥ सूत्रं ३१ ॥ तीसे णं भंते ! समाए भरहस्स वासस्स केरिसए आयारभावपडोआरे भविस्सइ ?, गोयमा ! बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे भविस्सइ जाव कित्तिमेहिं चेव अकित्तिमेहि चेव १ । तीसे णं भंते ! समाए मणुआणं केरिसए आयारभावपडोआरे भविस्सइ ?, गोअमा ! तेसि णं मणुआणं छव्विहे संघयणे छव्विहे संठाणे बहूईओ रयणीओ उड्ढं उच्चत्तेणं जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं साइरेगं वाससयं आउअं पालेहिंति २ त्ता अप्पेगइआ णिरयगामी जाव अप्पेगइआ देवगामी, ण सिज्झंति २ । तीसे णं समाए एक्कवीसाए वाससहस्सेहिं काले वीइक्कंते अणंतेहि वण्णपज्जवेहिं जाव परिवड्ढेमाणे २ एत्थ णं दुसमसूसमाणामं समा काले पडिवज्जिस्सइ समणाउसो !, ३ । तीसे णं भंते ! समाए भरहस्स वासस्स केरिसए आयारभावपडोआरे भविस्सइ ?, गोअमा ! बहुसमरमणिज्जे जाव अकित्तिमेहि चेव ४ । तेसि णं भंते ! मणुआणं केरिसए आयारभावपडोआरे भविस्सइ ?, गोयमा ! तेसि णं मणुआणं छव्विहे संघयणे छव्विहे संठाणे बहूइं धणूइं उद्धं उच्चत्तेणं जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पुव्वकोडीआउअं पालिहिंति २ त्ता अप्पेगइआ णिरयगामी जाव अंतं करेहिंति ५ । तीसे णं समाए तओ वंसा समुप्पज्जिस्संति, तंजहा—तित्थगरवंसे चक्कवट्टिवंसे दसारवंसे ६ । तीसे णं समाए तेवीसं तित्थगरा एक्कारस चक्कवट्टी णव बलदेवा णव वासुदेवा समुप्पज्जिस्संति ७ । तीसे णं समाए सागरोवमकोडाकोडीए बायालीसाए वाससहस्सेहिं ऊणिआए काले वीइक्कंते अणंतेहि वण्णपज्जवेहिं जाव अणंतगुणपरिवुद्धीए परिवुद्धेमाणे २ एत्थ णं सुसमदुसमाणामं समा काले पडिवज्जिस्सइ समणाउसो ! ८ । सा णं समा तिहा विभजिस्सइ,

पढमे तिभागे मज्झिमे तिभागे पच्छिमे तिभागे ९। तीसे णं भंते ! समाए पढमे तिभाए भरहस्स वासस्स केरिसए आयरभावपडोआरे भविस्सइ ?, गोअमा ! बहुसमरमणिज्जे जाव भविस्सइ, मणुआणं जा चेव ओसप्पिणीए पच्छिमे तिभागे वत्तव्वया सा भाणिअव्वा, कुलगर-वज्जा उसभसामिवज्जा, अण्णे पढंति–तीसे णं समाए पढमे तिभाए इमे पण्णरस कुलगरा समुप्पज्जिस्संति तंजहा–सुमई (संमुई) जाव उसभे, सेसं तं चेव, दंडणीईओ पडिलोमाओ णेअव्वाओ १०। तीसे णं समाए पढमे तिभाए रायधम्मे जाव धम्मचरणे अ वोच्छिज्जिस्सइ ११। तीसे णं समाए मज्झिमपच्छिमेसु तिभागेसु जाव पढममज्झिमेसु वत्तव्वया ओसप्पिणीए सा भाणिअव्वा, सुसमा तहेव सुसमासुसमावि तहेव जाव छव्विहा मणुस्सा अणुसज्जिस्संति जाव सण्णिचारी १२॥ सूत्रं ४०॥

॥ इति द्वितीयो वक्षस्कारः ॥ २ ॥

॥ अथ चक्रिवर्णनात्मको तृतीयो वक्षस्कारः ॥

से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चई–भरहे वासे २ ?, गोअमा ! भरहे णं वासे वेअद्धस्स पव्वयस्स दाहिणेणं चोद्दसुत्तरं जोअणसयं एगस्स य एगूणवीसइभाए जोअणस्स अबाहाए लवणसमुद्दस्स उत्तरेणं चोद्दसुत्तरं जोअणसयं एक्कारस य एगूणवीसइभाए जोअणस्स अबाहाए गंगाए महा-णईए पच्चत्थिमेणं सिंधूए महाणईए पुरत्थिमेणं दाहिणद्ध-भरहमज्झिल्ल-तिभागस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थ णं विणीआणामं रायहाणी पण्णत्ता १। पाईण-पडिणायया उदीण-दाहिणविच्छिन्ना दुवालस-जोअणायामा णव-जोअणविच्छिण्णा धणवइ-मति-णिम्माया चामीयरपागारा णाणामणि-पंचवण्ण-कविसीसग–परिमंडिआभिरामा अलकापुरीसंकाशा पमुइयपक्की-लिआ पच्चक्खं देवलोगभूआ रिद्धित्थिमिअसमिद्धा पमुइअजणजाणवया

जाव पडिरूवा २ ॥ सूत्रं ४१ ॥ तत्थ णं विणीआए रायहाणीए भरहे णामं राया चाउरंतचक्कवट्टी समुप्पज्जित्था, महया हिमवंतमहंतमलयमंदर जाव रज्जं पसासेमाणे विहरइ १ । बिइओ गमो रायवण्णगस्स इमो तत्थ असंखेज्ज-कलवासंतरेण उप्पज्जए जसंसी उत्तमे अभिजाए सत्तवीरिअ-परक्कमगुणे पसत्थ-वण्ण-सर-सार-संघयण-तणुग-बुद्धिधारण-मेहा-संठाण-सीलप्पगई पहाण-गारवच्छायागइए अणेगवयणप्पहाणे तेअ-आउ-बल-वीरिअजुत्ते अझुसिर-घण-णिचिअ-लोह—संकलणाराय—वइर—उसह-संघयण-देहधारी झस १ जुग २ भिंगार ३ वद्धमाणग ४ भद्दासणग (भद्दमाणग) ५ संख ६ छत्त ७ वीअण ८ पडाग ९ चक्क १० णंगल ११ मुसल १२ रह १३ सोत्थिअ १४ अंकुस १५ चंदा १६ इच—१७ अग्गि १८ जूय १९ सागर २० इंदज्झय २१ पुहवि २२ पउम २३ कुंजर २४ सीहासण २५ दंड २६ कुम्म २७—गिरिवर २८ तुरगवर २९ वरमउड ३० कुंडल ३१ णंदावत्त ३२ धणु ३३ कोंत ३४ गागर ३५ भवणविमाण ३६—अणेग-लक्खण-पसत्थ-सुविभत्त-चित्त-करचरणदेसभागे उद्धामुह—लोम-जाल-सुकुमाल—णिद्ध-मउआवत्त—पसत्थ- लोम-विरइअ-सिरिवच्छ-च्छण्णविउलवच्छे देसखेत्त-सुविभत्तदेहधारी तरुण-रस्सि-बोहिअ-वरकमल-विबुद्धगब्भवण्णे हयपोसण-कोस सण्णिभ-पसत्थ—पिट्ठंत-णिरुवलेवे पउमुप्पल-कुंद-जाइ-जूहिय-वर-चंपग-णागपुप्फ-सारंग-तुल्लगंधी छत्तीसाअहिअ पसत्थ-पत्थिवगुणेहिं जुत्ते अव्वोच्छिण्णातपत्ते पाडग-उभयजोणी विसुद्ध-णिअग-कुल-गयणपुण्णचंदे चंदे इव सोमयाए णयण-मणणिव्वुईकरे अक्खोभे सागरो व थिमिए धणवइव्व भोग-समुदय-सद्दव्वयाए समरे अपराइए परमविक्कमगुणे अमरवइ-समाण-सरिसरूवे मणुअवई भरहचक्कवट्टी भरहं भुंजइ पणट्ठसत्तू २ ॥ सूत्रं ४२ ॥ तए णं तस्स भरहस्स रण्णो अण्णया कयाइ आउहघरसालाए दिव्वे चक्करयणे समुप्पज्जित्था १ । तए णं

से आउहघरिए भरहस्स रण्णो आउहघरसालाए दिव्वं चक्करयणं समुप्पण्णं पासइ पासित्ता हट्ठतुट्ठ चित्तमाणंदिए नंदिए पीइमणे परम-सोमणस्सिए हरिसवसविसप्पमाणहिअए जेणामेव से दिव्वे चक्करयणे तेणामेव उवागच्छइ २ त्ता तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेइ २ त्ता करयल जाव कट्टु चक्करयणस्स पणामं करेइ २ त्ता आउहघरसालाओ पडिणिक्खमइ २ त्ता जेणामेवा बाहिरिआ उवट्ठाणसाला जेणामेव भरहे राया तेणामेव उवागच्छइ २ त्ता करयल जाव जएणं विजएणं वद्धावेइ २ एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिआणं आउहघरसालाए दिव्वे चक्करयणे समु-प्पण्णे तं एअण्णं देवाणुप्पिआणं पिअट्ठयाए पिअं णिवएमो पिअं भे भवउ २। तते णं से भरहे राया तस्स आउहघरिअस्स अंतिए एअमट्ठं सोच्चा णिसम्म हट्ठ जाव सोमणस्सिए विअसिअ-वरकमल-णयणवयणे पयलिअ-वरकडग-तुडिअ-केऊर—मउड—कुंडल—हारविरायंत-रइअवच्छे पालंब—पलंबमाण-घोलंतभूसणधरे ससंभमं तुरिअं चवलं णरिंदे सीहासणाओ अब्भुट्ठेइ २ त्ता पायपीढाओ पच्चोरुहइ २ त्ता पाउआओ ओमुअइ २ त्ता एगसाडिअं उत्तरासंगं करेइ २ त्ता अंजलि-मउलि—अग्गहत्थे चक्करयणा-भिमुहे सत्तट्ठपयाइं अणुगच्छइ २ त्ता वामं जाणुं अंचेइ २ त्ता दाहिणं जाणुं धरणितलंसि णिहट्टु करयल जाव अंजलिं कट्टु चक्करयणस्स पणामं करेइ २ त्ता तस्स आउहघरिअस्स अहामालिअं मउडवज्जं ओमोअं दलइ २ त्ता विउलं जीविआरिहं पीइदाणं दलइ २ त्ता सक्कारेइ सम्माणेइ २ त्ता पडिविसज्जेइ २ त्ता सीहासणवरगए पुरत्थाभिमुहे सणिसण्णे ३। तए णं से भरहे राया कोडुंबिअपुरिसे सद्दावेइ २ त्ता एवं वयासी—खिप्पा-मेव भो देवाणुप्पिआ ! विणीअं रायहाणिं सब्भितरबाहिरिअं आसिअ-संमज्जिअ-सित्त-सुइग-संमट्ठ-रत्थंतरवीहिअं मंचाइमंचकलिअं णाणाविह-राग-वसण ऊसिअभय-पडागाइपडागमंडिअं लाउल्लोइअमहिअं गोसीस-सरस-रत्त-

चंदण-दद्दर-दिन्नपंचंगुलितलं उवचिय-चंदणकलसं चंदणघड-सुकय जाव गंधुद्धुआभिरामं सुगंधवरगंधिअं गंधवट्टिभूअं करेह कारवेह करेत्ता कारवेत्ता य एअमाणत्तिअं पच्चप्पिणह ४। तए णं ते कोडुंबिअपुरिसा भरहेणं रराणा एवं वुत्ता हट्ठतुट्ठा करयल जाव एवं सामित्ति आणाए विणएणं वयणं पडिसुणंति २ त्ता भरहस्स अंतिआओ पडिणिक्खमंति २ त्ता विणीअं रायहाणिं जाव करेत्ता कारवेत्ता य तमाणत्तिअं पच्चप्पिणंति ५। तए णं से भरहे राया जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता मज्जणघरं अणुपविसइ २ त्ता समुत्तजालाकुलाभिरामे विचित्त-मणिरयण-कुट्टिमतले रमणिज्जे राहाणमंडवंसि णाणा-मणिरयण-भत्तिचित्तंसि राहाण-पीढंसि सुहणिसरणे सुहोदएहिं गंधोदएहिं पुप्फोदएहिं सुद्धोदएहि अ पुराणे कल्लाणग पवर-मज्जणविहीए मज्जिए तत्थ कोउअसएहिं बहुविहेहिं कल्लाणग-पवर-मज्जणावसाणे पम्हल–सुकुमाल–गंधकासाइअलूहिअंगे सरस-सुरहि-गोसीस-चंदणाणुलित्तगत्ते अहय-सुमहग्घ-दूसरयण-सुसंवडे सुइमाला-वराणग-विलेवणे आविद्धमणिसुवराणे कप्पिअ-हारद्धहार-तिसरिअ-पालंब-पलंबमाण-कडिसुत्त-सुकयसोहे पिणद्ध-गेविज्जग-अंगुलिज्जग-ललिअंगय-ललिअकया-भरणे णाणामणि–कडग–तुडिअ-थंभिअभूए अहिअसस्सिरीए कुंडल-उज्जोइआणणे मउड-दित्तसिरए हारोत्थय-सुकयवच्छे पालंब-पलंबमाण-सुकय-पडउत्तरिज्जे मुद्दिआ-पिंगलंगुलीए णाणामणि-कणग-विमल-महरिह-णिउणोअविअ-मिसिमिसिंत–विरइअ-सुसिलिट्ठ–विसिट्ठ–लट्ठ-संठिअ-पसत्थ-आविद्धवीरवलए, किं बहुणा ?, कप्परुक्खए चेव अलंकिअविभूसिए णरिंदे सकोरंट जाव चउ-चामर-वालवीइअंगे मंगल-जयजय-सद्दकयालोए अणेग-गणणायग-दंडणायग जाव दूअसंधिवालसद्धिं संपरिवुडे धवल-महामेह-णिग्गए इव जाव ससिव्व पियदंसणे णरवई धूव-पुप्फ-गंध-मल्लहत्थगए मज्जणघराओ पडिणिक्खमइ २ त्ता जेणेव आउहघरसाला जेणेव चक्करयणे

तेणामेव पहारेत्थ गमणाए ६ । तए णं तस्स भरहस्स रगणो बहवे ईसर-पभिइत्रो अप्पेगइआ पउमहत्थगया अप्पेगइया उप्पलहत्थगया जाव अप्पे-गइया सयसहस्सपत्तहत्थगया भरहं रायाणं पिट्ठओ २ अणुगच्छंति ७ । तए णं तस्स भरहस्स रगणो बहूईओ—'खुज्जा चिलाइ वामणिवडभीओ बब्बरी बउसिआओ । जोणिअपल्हविआओ ईसिणिअथारुकिणिआओ ॥ १ ॥ लासिअ-लउसिअ-दमिली-सिंहलि तह आरबी-पुलिंदी अ । पक्कणि बहलि मुरुंडी सबरीओ पारसीओ अ ॥ २ ॥ अप्पेगइयाओ वंदण-कलस-हत्थगयाओ चंगेरी--पुप्फ--पडल--हत्थगयाओ भिंगार--आदंस-थाल-पाति-सुपइट्ठग-वायकरग-रयण—करंड-पुप्फचंगेरी—मल्लवरण-चुरण—गंधहत्थगयाओ वत्थ-आभरण--लोमहत्थय--चंगेरी--पुप्फ-पडल-हत्थगयाओ जाव लोमहत्थ-गयाओ अप्पेगइआओ सीहासण-हत्थगयाओ छत्त-चामर-हत्थगयाओ तिल्ल-समुग्गय-हत्थगयाओ—तेले कोट्ठसमुग्गे पत्ते चोए अ तगरमेला य । हरि-आले हिंगुलए मणोसिला सासवसमुग्गे ॥ १ ॥ अप्पेगइआओ तालिअंट-हत्थगयाओ अप्पेगइआओ धूव-कुडुच्छुअ-हत्थगयाओ भरहं रायाणं पिट्ठओ २ अणुगच्छंति ८ । तए णं से भरहे राया सव्विड्ढीए सव्वजुइए सव्वबलेणं सव्वसमुदयेणं सव्वायरेणं सव्वविभूसाए सव्वविभूईए सव्ववत्थ-पुप्फ-गंध-मल्लालंकारविभूसाए सव्वतुडिअ-सद्द-सण्णिणाएणं महया इड्ढीए जाव महया वरतुडिअ-जमगसमग-पवाइएणं संख-पणव-पडह-भेरि-झल्लरि-खरमुहि-मुरज-मुइंग-दुंदुहि-निग्घोसणाइएणं जेणेव आउहघरसाला तेणेव उवागच्छइ उवा-गच्छित्ता आलोए चक्करयणस्स पणामं करेइ २ त्ता जेणेव चक्करयणे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता लोमहत्थयं परामुसइ २ त्ता चक्करयणं पमज्जइ २ त्ता दिव्वाए उदगधाराए अब्भुक्खेइ २ त्ता सरसेणं गोसीसचंदणेणं अणुलिंपइ २ त्ता अग्गेहि वरेहिं गंधेहिं मल्लेहि अ अच्चिणइ पुप्फारुहणं मल्लगंधवरणचुरण-वत्थारुहणं आभरणारुहणं करेइ २ त्ता अच्छेहि सण्हेहिं सेएहिं रययामएहिं

अच्छरसातंडुलेहिं चक्करयणस्स पुरओ अट्ठट्ठमंगलए आलिहइ, तंजहा—सोत्थिय सिरिवच्छ णंदिआवत्त वद्धमाणग भद्दासण मच्छ कलस दप्पण अट्ठमंगलए आलिहित्ता काऊणं करेइ उवयारंति १। किं ते ?, पाडल-मल्लिअ-चंपग असोग-पुण्णाग-चूअमंजरि-णवमालिअ-बकुल-तिलग--कणवीर-कुंद कोज्जय-कोरंटय-पत्तदमणय-वरसुरहि-सुगंधगंधिअस्स कयग्गह-गहिअ-करयल-पब्भट्ठविप्पमुक्कस्स दसवद्धवण्णस्स कुसुमणिगरस्स तत्थ चित्तं जाणु-स्सेहप्पमाणमित्तं ओहिनिगरं करेत्ता चंदप्पभ-वइर-वेरुलिअ-विमलदंडं कंचण-मणि-रयण-भत्तिचित्तं कालागुरु-पवरकुंदुरुक्क-तुरुक्क-धूवगंधुत्तमाणुविद्धं च धूमवट्टिं विणिम्मुअंतं वेरुलिअमयं कडुच्छुअं पग्गहेत्तु पयते धूवं दहइ २ त्ता सत्तट्ठपयाइं पच्चोसक्कइ २ त्ता वामं जाणुं अंचेइ जाव पमाणं करेइ २ त्ता आउहघरसालाओ पडिणिक्खमइ २ मित्ता जेणेव बाहिरिआ उवट्ठाण-साला जेणेव सीहासणे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता सीहासणवरगए पुरत्थाभि-मुहे सण्णिसीअइ २ त्ता अट्ठारस सेणिपसेणीओ सद्दावेइ २ त्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! उस्सुक्कं उक्करं उक्किट्ठं अदिज्जं अमिज्जं अभडप्पवेसं अदंडकोदंडिमं अधरिमं गणिआ-वरणाडइज्जकलिअं अणेग-तालायराणुचरिअं अणुद्धुअमुइंगं अमिलाय-मल्लदामं पमुइअ-पक्कीलिअ-सपुरजणजाणवयं विजयवेजइअं चक्क(वेजयंतचक्क)रयणस्स अट्ठाहिअं महा-महिमं करेइ २ त्ता ममेअमाणत्तिअं खिप्पामेव पच्चप्पिणह १०। तए णं ताओ अट्ठारस सेणिप्पसेणीओ भरहेणं रन्ना एवं वुत्ताओ समा-णीओ हट्ठाओ जाव विणएणं पडिसुणेंति २ त्ता भरहस्स रण्णो अंतिआओ पडिणिक्खमेंति २ त्ता उस्सुक्कं उक्करं जाव करेंति अ कारवेंति अ २ त्ता जेणेव भरहे राया तेणेव उवा-गच्छंति २ त्ता जाव तमाणत्तिअं पच्चप्पिणंति ११॥ सूत्रं ४३॥

तए णं से दिव्वे चक्करयणे अट्ठाहिआए महामहिमाए निव्वत्ताए समाणीए

आउहघरसालाओ पडिणिक्खमइ २ त्ता अंतलिक्ख-पडिवरणो जक्ख-सहस्स-संपरिवुडे दिव्व-तुडिअ-सद्दसरिणणाएणं आपूरेंते चेव अंबरतलं विणीआए रायहाणीए मज्झंमज्झेणं णिग्गच्छइ २ त्ता गंगाए महाणईए दाहिणिल्ले णं कूले णं पुरत्थिमं दिसिं मागहतित्थाभिमुहे पयाते आवि होत्था १। तए णं से भरहे राया तं दिव्वं चक्करयणं गंगाए महाणईए दाहिणिल्लेणं कूलेणं पुरत्थिमं दिसिं मागह–तित्थाभिमुहं पयातं पासइ २ त्ता हट्टतुट्ठ जाव हियए कोडुंबिअपुरिसे सद्दावेइ २ त्ता एवं वयासी–खिप्पामेव भो देवाणुप्पिआ! आभिसेक्कं हत्थिरयणं पडिकप्पेह हय-गय-रह-पवर-जोहकलिअं चाउरंगिणिं सेणं सरणाहेह, एतमाणत्तिअं पच्चप्पिणह, तए णं ते कोडुंबिअ जाव पच्चप्पिणंति २। तए णं से भरहे राया जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता मज्जणघरं अणुपविसइ २ त्ता समुत्तजालभिरामे तहेव जाव धवलमहामेहणिग्गए इव ससिव्व पियदंसणे णरवई मज्जणघराओ पडिणिक्खमइ २ त्ता हयगय-रह-पवरवाहण-भडचड-गर-पहकरसंकुलाए सेणाए पहिअकित्ती जेणेव बाहिरिआ उवट्ठाणसाला जेणेव आभिसेक्के हत्थिरयणे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता अंजणगिरि-कडग-सरिणभं गयवइं णरवई दुरूढे ३। तए णं से भरहाहिवे णरिंदे हारोत्थए सुकयरइयवच्छे कुंडल-उज्जोइआणणे मउड-दित्तसिरए णरसीहे णरवई णरिंदे णरवसहे मरुअ-राय-वसभकप्पे अब्भहिअ-रायतेअलच्छीए दिप्पमाणे पसत्थमंगलसएहिं संथुव्वमाणे जयसद्दकयालोए हत्थिखंधवरगए सकोरंट-मल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं सेअवरचामराहिं उद्धुव्वमाणीहिं २ जक्खसहस्ससंपरिवुडे वेसमणे चेव धणवई अमरवइसरिणभाइ इड्ढीए पहिअकित्ती गंगाए महाणईए दाहिणिल्ले णं कूले णं गामागर-णगर-खेड-कब्बड-मडंब-दोणमुह–पट्टणासम–संबाह–सहस्समंडिअं थिमिअमेइणीअं वसुहं अभिजिणमाणे २ अग्गाइं वराइं रयणाइं पडिच्छमाणे २ तं दिव्वं

चक्करयणं अणुगच्छमाणे २ जोअणंतरिआहिं वसहीहिं वसमाणे २ जेणेव मागहतित्थे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता मागहतित्थस्स अदूरसामंते दुवालस-जोयणायामं णवजोअणविच्छिण्णं वरणगरसरिच्छं विजयखंधावार-निवेसं करेइ २ त्ता वड्ढइरयणं सद्दावेइ सद्दावइत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिआ ! ममं आवासं पोसहसालं च करेहि करेत्ता ममेअमाणत्तिअं पच्चप्पिणाहि ४। तए णं से वड्ढइरयणे भरहेणं रण्णा एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठचित्तमाणंदिए पीइमणे जाव अंजलिं कट्टु एवं सामी तहत्ति आणाए विणएणं वयणं पडिसुणेइ २ त्ता भरहस्स रण्णो आवसहं पोसहसालं च करेइ २ त्ता एअमाणत्तिअं खिप्पामेव पच्चप्पिणंति ५। तए णं से भरहे राया आभिसेक्काओ हत्थिरयणाओ पच्चोरुहइ २ त्ता जेणेव पोसहसाला तेणेव उवागच्छइ २ त्ता पोसहसालं अणुपविसइ २ त्ता पोसहसालं पमज्जइ २ त्ता दब्भसंथारगं संथरइ २ त्ता दब्भसंथारगं दुरूहइ २ त्ता मागहतित्थकुमारस्स देवस्स अट्ठमभत्तं पगिण्हइ २ त्ता पोसहसालाए पोसहिए बंभयारी उम्मुक्क-मणिसुवण्णे ववगय-मालावण्णगविलेवणे णिक्खित्तसत्थमुसले दब्भसंथारो-वगए एगे अबीए अट्ठमभत्तं पडिजागरमाणे २ विहरइ ६। तए णं से भरहे राया अट्ठमभत्तंसि परिणममाणंसि पोसहसालाओ पडिणिक्खमइ २ त्ता जेणेव बाहिरिआ उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ २ त्ता कोडुंबिअ-पुरिसे सद्दावेइ २ त्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिआ हयगयरह-पवरजोहकलिअं चाउरंगिणिं सेणं सण्णाहेह चाउग्घंटं च आसरहं पडिकप्पे-हत्तिकट्टु मज्जणघरं अणुपविसइ २ त्ता समुत्त तहेव जाव धवलमहामेह-णिग्गए जाव मज्जणघराओ पडिणिक्खमइ २ त्ता हयगयरह-पवरवाहणा जाव सेणाए(वइ) पहिअकित्ती जेणेव बाहिरिआ उवट्ठाणसाला जेणेव चाउग्घंटे आसरहे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता चाउग्घंटं आसरहं दुरूढे ७॥ सूत्रं ४४॥

तए णं से भरहे राया चाउग्घंटं आसरहं दुरूढे समाणे हयगयरह-पवर-

जोहकलिआए सद्धिं संपरिवुडे महया-भड-चडगर-पहगर-वंदपरिक्खित्ते चक्करयण-देसिअमग्गे अणेग-रायवर-सहस्साणुआयमग्गे महया उक्किट्ठ-सीहणाय-बोल-कलकलरवेणं पक्खुभिअ-महासमुद्द-रवभूअंपिव करेमाणे २ पुरत्थिमदिसाभिमुहे मागहतित्थेणं लवणसमुद्दं ओगाहइ जाव से रहवरस्स कुप्परा उल्ला १। तए णं से भरहे राया तुरगे निगिण्हइ २ त्ता रहं ठवेइ २ त्ता धणुं परामुसइ २। तए णं तं अइरुग्गय-बालचंद-इंदधणुस-न्निकासं वर-महिस-दरिअ-दप्पिअ-दढघण-सिंगरइअसारं उरगवरपवरगवल-पवरपरहुअ-भमर-कुल-णीलि-णिद्ध-धंतधोअपट्टं णिउणोविअ-मिसिमिसिंत-मणिरयण--घंटिआजाल-परिक्खित्तं तडितरुण-किरण-तवणिज्ज-बद्धचिंधं दद्दर-मलयगिरि-सिहरकेसर-चामर-वालद्धचंदचिंधं कालहरिअ-रत्त-पीअ-सुक्किल-बहुणहारुणि-संपिणद्धजीवं जीविअंतकरणं चलजीवं धणुं गहिऊण से णरवई उसुं च वरवइरकोडिअं वइरसारतोंडं कंचण-मणि-कणग-रयण-धोइट्ठसुकयपुंखं अणेग-मणिरयण--विविहसुविरइय-नामचिंधं वइसाहं ठाईऊण ठाणं आयतकण्णायतं च काऊण उसुमुदारं इमाइं वयणाइं तत्थ भाणिअ से णरवई-हंदि सुणंतु भवंतो बाहिरओ खलु सरस्स जे देवा। णागासुरा सुवण्णा तेसिं खु णमो पणिवयामि ॥ १ ॥ हंदि सुणंतु भवंतो अब्भिंतरओ सरस्स जे देवा। णागासुरा सुवण्णा सव्वे मे ते विसयवासी ॥ २ ॥ इतिकट्टु उसुं णिसिरइत्ति-'परिगरणिगरिअमज्झा वाउद्धुअ-सोभमाणकोसेज्जो। चित्तेण सोभए धणुवरेण इंदोव्व पच्चक्खं ॥ ३ ॥ तं चंचलायमाणं पंचमिचंदोवमं महाचावं। छज्जइ वामे हत्थे णरवइणो तंमि विजयंमि ॥ ४ ॥ तए णं से सरे भरहेणं रण्णा णिसट्ठे समाणे खिप्पामेव दुवालस जोअणाइं गंता मागहतित्थाधिपतिस्स देवस्स भवणंसि निवइए ३। तए णं से मागहतित्थाहिवई देवे भवणंसि सरं णिवइअं पासइ २ त्ता आसु-रुत्ते रुट्ठे चंडिकिए कुविए मिसिमिसेमाणे तिवलिअं भिउडिं णिडाले

साहरइ २ त्ता एवं वयासी—केस णं भो एस अपत्थिअपत्थए दुरंतपंतलक्खणे हीणपुण्णचाउद्दसे हिरिसिरिपरिवज्जिए जे णं मम इमाए एआणुरूवाए दिव्वाए देविद्धीए दिव्वाए देवजुईए दिव्वेणं दिव्वाणुभावेणं लद्धाए पत्ताए अभिसमण्णागयाए उप्पि अप्पुस्सुए भवणंसि सरं णिसिरइत्तिकट्टु सीहासणाओ अब्भुट्ठेइ २ त्ता जेणेव से णामाहयंके सरे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता तं णामाहयंकं सरं गेण्हइ णामंकं अणुप्पवाएइ णामंकं अणुप्पवाएमाणस्स इमे एआरूवे अब्भत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—उप्पण्णे खलु भो ! जंबुद्दीवे दीवे भरहे वासे भरहे णामं राया चाउरंतचक्कवट्टी तं जीअमेअं तीअपच्चुप्पण्णमणागयाणं मागहतित्थकुमाराणं देवाणं राईणमुवत्थाणीअं करेत्तए, तं गच्छामि णं अहंपि भरहस्स रण्णो उवत्थाणीअं करेमित्तिकट्टु एवं संपेहेइ संपेहेत्ता हारं मउडं कुंडलाणि अ कडगाणि अ तुडिआणि अ वत्थाणि अ आभरणाणि अ सरं च णामाहयंकं मागहतित्थोदगं च गेण्हइ गिण्हित्ता ताए उक्किट्ठाए तुरिआए चवलाए जयणाए सीहाए सिग्घाए उद्धुआए दिव्वाए देवगईए वीईवयमाणे २ जेणेव भरहे राया तेणेव उवागच्छइ २ त्ता अंतलिक्खपडिवण्णे सखिखिणीआइं पंचवण्णाइं वत्थाइं पवर परिहिए करयलपरिग्गहिअं दसणहं सिर जाव अंजलिं कट्टु भरहं रायं जएणं विजएणं वद्धावेइ २ त्ता एवं वयासी—अभिजिए णं देवाणुप्पिएहिं केवलकप्पे भरहे वासे पुरच्छिमेणं मागहतित्थमेराए तं अहण्णं देवाणुप्पिआणं विसयवासी अहण्णं देवाणुप्पिआणं आणत्तीकिंकरे अहण्णं देवाणुप्पिआणं पुरच्छिमिल्ले अंतवाले तं पडिच्छंतु णं देवाणुप्पिआ ! ममं इमेआरूवं पीइदाणंतिकट्टु हारं मउडं कुंडलाणि अ कडगाणि अ जाव मागहतित्थोदगं च उवणेइ ४ । तए णं से भरहे राया मागहतित्थकुमारस्स देवस्स इमेयारूवं पीइदाणं पडिच्छइ २ त्ता मागहतित्थकुमारं देवं सक्कारेइ सम्माणेइ

२ त्ता पडिविसज्जेइ ५ । तए णं से भरहे राया रहं परावत्तेइ २ त्ता मागहतित्थेणं लवणसमुद्दाओ पच्चुत्तरइ २ त्ता जेणेव विजयखंधावार-णिवेसे जेणेव बाहिरिआ उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ २ त्ता तुरए णिगिराहइ २ त्ता रहं ठवेइ २ रहाओ पचोरुहति २ त्ता जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छति २ मज्जणघरं अणुपविसइ २ त्ता जाव ससिव्व पिअदंसणे णरवई मज्जणघराओ पडिणिक्खमइ २ त्ता जेणेव भोअणमंडवे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता भोअणमंडवंसि सुहासणवरगए अट्ठमभत्तं पारेइ २ त्ता भोअणमंडवाओ पडिणिक्खमइ २ त्ता जेणेव बाहिरिआ उवट्ठाण-साला जेणेव सीहासणे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता सीहासणवरगए पुरत्था-भिमुहे णिसीअइ २ त्ता अट्ठारस सेणिप्पसेणीओ सद्दावेइ २ त्ता एवं वयासी–खिप्पामेव भो ! देवाणुप्पिया उस्सुक्कं उक्करं जाव मागहतित्थ-कुमारस्स देवस्स अट्ठाहिअं महामहिमं करेह २ त्ता मम एअमाणत्तिअं पच्चप्पिणह ६ । तए णं ताओ अट्ठारस सेणिप्पसेणीओ भरहेणं रगणा एवं वुत्ताओ समाणीओ हट्ठ जाव करेंति २ त्ता एअमाणत्तिअं पच्चप्पिणंति ७ । तए णं से दिव्वे चक्करयणे वइरामयतुंबे लोहिअक्खामयारए जंबूणय-णेमीए णाणा-मणि-खुरप्प--थालपरिगए मणि-मुत्ताजाल-भूसिए सणंदिघोसे सखिंखिणीए दिव्वे तरुण-रवि-मंडलणिभे णाणामणिरयण-घंटिआजालपरि-क्खित्ते सव्वोउअ-सुरभि-कुसुम-आसत्तमल्लदामे अंतलिक्खपडिवणे जक्ख-सहस्स-संपरिवुडे दिव्वतुडिअ-सद्दसरिणणादेणं पूरेंते चेव अंबरतलं णामेण य सुदंसणे णरवइस्स पढमे चक्करयणे मागहतित्थकुमारस्स देवस्स अट्ठाहिआए महामहिमाए णिव्वत्ताए समाणीए आउहघरसालाओ पडिणिक्खमइ २ त्ता दाहिणपच्चत्थिमं दिसिं वरदामतित्थाभिमुहे पयाए यावि होत्था ८ ॥सूत्रं ४५॥

तए णं से भरहे राया तं दिव्वं चक्करयणं दाहिणपच्चत्थिमं दिसिं वरदाम-तित्थाभिमुहं पयातं चावि पासइ २ त्ता हट्ठतुट्ठ–चित्तमाणंदिए जाव कोडु-

त्रिअपुरिसे सद्दावेइ २ त्ता एवं वयासी–खिप्पामेव भो देवाणुप्पिआ! हयगयरह–पवर–चाउरंगिणिं सेणं सण्णाहेह आभिसेक्कं हत्थिरयणं पडिकप्पेहत्तिकट्टु मज्जणघरं अणुपविसइ २ त्ता तेणेव कमेणं जाव धवल-महामेहणिग्गए जाव सेअवरचामराहिं उद्धुव्वमाणीहिं २ माइअ-वरफलय-पवरपरिगर-खेडय-वरवम्म-कवय-माढीसहस्सकलिए उक्कड-वरमउड-तिरीड-पडाग-झय-वेजयंति-चामर-चलंत--छत्तंधयार–कलिए असि–खेवणि–खग्ग-चाव-णाराय-कणय-कप्पणि–सूल–लउड-भिंडिमाल-धणुह–तोण-सरपहरणेहि अ काल-णील-रुहिर-पीअ-सुक्किल-अणेग-चिंध-सयसण्णिविट्ठे अप्फोडिअ सीहणाय-छेलिअ-हयहेसिअ-हत्थिगुलुगुलाइअ---अणेग--रह-सयसहस्स-घणघ-णेंत-णीहम्ममाण-सद्दसहिएण जमगसमग-भंभा-होरंभ-किणित-खरमुहि-मुगुंद-संखिअ-परिलिवच्चगपरिवाइणि--वंसवेणु-वीपंचिम--हति--कच्छभिरिगिसिगिअ-कल-ताल कंसताल-करधाणुत्थिदेण महता सद्दसण्णिणादेण सयलमवि जीव-लोगं पूरयंते बल-वाहण-समुदएणं एवं जक्खसहस्सपरिवुडे वेसमणे चेव धणवई अमरपतिसण्णिभाइ इद्धीए पहिअकित्ती गामागरणगरखेडकव्वड तहेव सेसं जाव विजयखंधावारणिवेसं करेइ २ त्ता वद्धइरयणं सद्दावेइ २ त्ता एवं वयासी–खिप्पामेव भो देवाणुप्पिआ! मम आवसहं पोसहसालं च करेहि, ममेअमाणत्तिअं पच्चप्पिणाहि ॥ सूत्रं ४६ ॥ तए णं ते आसम-दोणमुह गाम-पट्टण-पुर-वरखंधावार-गिहावणविभागकुसले एगासीतिपदेसु सव्वेसु चेव वत्थूसु णेगगुणजाणए पंडिए विहिण्णू पणयालीसाए देवयाणं वत्थुपरिच्छाए णेमिपासेसु भत्तसालासु कोट्टणिसु अ वास-घरेसु अ विभागकुसले छेज्जे वेज्झे (धेज्जे) अ दाणकम्मे पहाणबुद्धी जल-याणं भूमियाण य भायणे जलथलगुहासु जंतेसु परिहासु अ कालनाणे तहेव सद्दे वत्थुप्पएसे पहाणे गब्भिणि-कण्ण-रुक्ख-वल्लिवेढिअ-गुणदोस-विआणए गुणड्ढे सोलस--पासायकरणकुसले चउसट्ठिविकप्पवित्थियमई

णंदावत्ते य वद्धमाणो सोत्थिअरुअग तह सव्वओभद्दसण्णिवेसे अ बहु-
विसेसे उद्दंडिअ-देव-कोट्ट-दारु-गिरि-खाय वाहण-विभागकुसले—इअ तस्स
बहुगुणाड्ढे थवईरयणो णरिंदचंदस्स । तवसंजमनिव्विट्ठे किं करवाणीतुव-
ट्ठाई ॥ १ ॥ सो देवकम्मविहिणा खंधावारं णरिंदवयणेणं । आवसहभवण-
कलिअं करेइ सव्वं मुहुत्तेणं ॥ २ ॥ करेत्ता पवरपोसहघरं करेइ २ त्ता
जेणेव भरहे राया जाव एतमाणत्तिअं खिप्पामेव पच्चप्पिणइ, सेसं तहेव
जाव जणपवराओ मज्जणघराओ पडिणिक्खमइ २ त्ता जेणेव बाहिरिआ
उवट्ठाणसाला जेणेव चाउग्घंटे आसरहे तेणेव उवागच्छइ ॥ सूत्रं ४७ ॥
उवागच्छित्ता तते णं तं धरणितल-गमणलहुं तोतो बहुलक्खणपसत्थं हिम-
वंत-कंदरंतर-णिवाय-संवद्धिअ-चित्त-तिणिसदलिअं जंबूणय-सुकयकूबरं कणय-
दंडियारं पुलय-वरिंदणील-सासग-पवाल-फलिह-वररयण-लेट्ठु-मणि-विद्दुम-
विभूसिअं अडयालीसार—रइय—तवणिज्ज-पट्ट-संगहिअ-जुत्ततुंबं पघसिअ-
पसिअ—निम्मिअ—नवपट्ट—पुट्ठपरिणिट्ठिअं विसिट्ठ-लट्ठ—णवलोह—बद्धकम्मं
हरिपहरण-रयण-सरिसचक्कं कक्केयण-इंदणील-सासग-सुसमाहिअ-बद्धजाल-
कडगं पसत्थ-विच्छिण्णसमधुरं पुरवरं च गुत्तं सुकिरण-तवणिज्ज-जुत्तकलिअं
कंकटय(डग)-णिजुत्तकप्पणं पहरणाणुजायं खेडग-कणग-धणुमंडलग्ग-वरसत्ति-
कोंत-तोमर-सरसयबत्तीसतोणपरिमंडिअं कणगरयणचित्तं जुत्तं हलीमुह-
बलाग-गयदंत-चंद-मोत्तिअ-तणसोल्लिअ-कुंद-कुडय-वरसिंदुवार-कंदल-वरफेण-
णिगर-हार-कासप्पगासधवलेहिं अमर-मण-पवण-जइण-चवल-सिग्घगामीहिं
चउहिं चामराकणगविभूसिअंगेहिं तुरगेहिं सच्छत्तं सज्झयं सघंटं सपडागं
सुकयसंधिकम्मं सुसमाहिअ-समरकणग-गंभीर-तुलघोसं वरकुप्परं सुचक्कं
वरनेमीमंडलं वरधारातोंडं वरवइरबद्धतुंबं वरकंचणभूसिअं वरायरिअ-
णिम्मिअं वरतुरगसंपउत्तं वरसारहि-सुसंपग्गहिअ वरपुरिसे वरमहारहं दुरूढे
आरूढे पवर-रयणपरिमंडिअं कणय-खिंखिणी-जालसोभिअं अउज्झं सोआ-

मणि-कणग-तविअ-पंकय-जासुअण-जलण-जलिअ-सुअतोंडरागं गुंजद्ध-बंधुजीवग-रत्तहिंगुलगणिगर-सिंदूर-रुइल-कुंकुम-पारेवयचलणणयण-कोइल-दसणावरण-रइतातिरेग-रत्तासोग-कणग-केसुअ-गयतालु-सुरिंदगोवग-समप्पभ-प्पगासं बिंबफल-सिलप्पवाल-उट्ठितसूरसरिसं सव्वोउअ-सुरहि-कुसुम-आसत्तमल्लदामं ऊसिअसेअज्झयं महामेह-रसिअ-गंभीरणिद्धघोसं सत्तुहिअय-कंपणं पभाए अ सस्सिरीअं णामेणं पुहविविजयलंभंति विस्सुतं लोग-विस्सुतजसोऽहयं चाउग्घंटं आसरहं पोसहिए णरवई दुरूढे १ । तए णं से भरहे राया चाउग्घंटं आसरहं दुरूढे समाणे सेसं तहेव दाहिणाभिमुहे वरदामतित्थेणं लवणसमुद्दं ओगाहइ जाव से रहवरस्स कुप्परा उल्ला जाव पीइदाणं से, णवरिं चूडामणिं च दिव्वं उरत्थगेविज्जं सोणिअसुत्तगं कड-गाणि अ तुडिआणि अ जाव दाहिणिल्ले अंतवाले जाव अट्ठाहिअं महामहिमं करेंति २ त्ता एअमाणत्तिअं पच्चप्पिणंति २ । तए णं से दिव्वे चक्करयणे वरदाम-तित्थकुमारस्स देवस्स अट्ठाहिआए महामहिमाए निव्व-त्ताए समाणीए आउहघरसालाओ पडिणिक्खमइ २ त्ता अंतलिक्खपडि-वरणे जाव पूरंते चेव अंबरतलं उत्तरपच्चत्थिमं दिसिं पभासतित्थाभिमुहे पयाते यावि होत्था ३ । तए णं से भरहे राया तं दिव्वं चक्करयणं जाव उत्तरपच्चत्थिमं दिसिं तहेव जाव पच्चत्थिमदिसाभिमुहे पभासतित्थेणं लवणसमुद्दं ओगाहेइ २ त्ता जाव से रहवरस्स कुप्परा उल्ला जाव पीइदाणं से णवरं मालं मउडिं मुत्ताजालं हेमजालं कडगाणि अ तुडिआणि अ आभरणाणि अ सरं च णामाहयंकं पभासतित्थोदगं च गिराहइ २ त्ता जाव पच्चत्थिमेणं पभासतित्थमेराए अहएणं देवाणुप्पिआणं विसयवासी जाव पच्चत्थिमिल्ले अंतवाले, सेसं तहेव जाव अट्ठाहिआ निव्वत्ता ४ ॥ सूत्रं ४१ ॥ तए णं से दिव्वे चक्करयणे पभासतित्थकुमारस्स देवस्स अट्ठाहिआए महामहिमाए णिव्वत्ताए समाणीए आउहघरसालाओ पडिणिक्खमइ २ त्ता जाव पूरेंते

चेव अंबरतलं सिंधूए महाणईए दाहिणिल्लेणं कूलेणं पुरच्छिमं दिसिं सिंधुदेवीभवणाभिमुहे पयाते आवि होत्था १ । तए णं से भरहे राया तं दिव्वं चक्करयणं सिंधूए महाणईए दाहिणल्लेणं कूलेणं पुरच्छिमं दिसिं सिंधुदेवीभवणाभिमुहं पयातं पासइ २ त्ता हट्ठतुट्ठचित्त तहेव जाव जेणेव सिंधूए देवीए भवणं तेणेव उवागच्छइ २ त्ता सिंधूए देविए भवणस्स अदूरसामंते दुवालसजोअणायामं णवजोयणविच्छिण्णं वरणगरसारिच्छं विजयखंधावारणिवेसं करेइ जाव सिंधुदेविए अट्ठमभत्तं पगिण्हइ २ त्ता पोसहसालाए पोसहिए बंभयारी जाव दब्भसंथारोवगए अट्ठमभत्तिए सिंधुदेविं मणसि करेमाणे चिट्ठइ २ । तए णं तस्स भरहस्स रण्णो अट्ठमभत्तंसि परिणममाणंसि सिंधूए देवीए आसणं चलइ, तए णं सा सिंधुदेवी आसणं चलिअं पासइ २ त्ता ओहिं पउंजइ २ त्ता भरहं रायं ओहिणा आभोएइ २ त्ता (तीसे)इमे एआरूवे अब्भत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—उप्पण्णे खलु भो जंबुद्दीवे भरहे वासे भरहे णामं राया चाउरंतचक्कवट्टी ३ । तं जीअमेअं तीअपच्चुप्पण्ण-मणागयाणं सिंधूणं देवीणं भरहाणं राईणं उवत्थाणिअं करेत्तए ४ । तं गच्छामि णं अहंपि भरहस्स रण्णो उवत्थाणिअं करेमित्ति कट्टु कुंभट्ठसहस्सं रयणचित्तं णाणामणि-कणग-रयणभत्तिचित्ताणि अ दुवे कणगभद्दासणाणि य कडगाणि अ तुडिआणि अ जाव आभरणाणि अ गेण्हइ २ त्ता ताए उक्किट्ठाए जाव एवं वयासी—अभिजिए णं देवाणुप्पिएहिं केवलकप्पे(दाहिणे) भरहे वासे अहण्णं देवाणुप्पिआण विसयवासिणी अहण्णं देवाणुप्पिआणं आणत्तिकिंकरी तं पडिच्छंतु णं देवाणुप्पिआ! मम इमं इमं एआरूवं पीइदाणंतिकट्टु कुंभट्ठसहस्सं रयणचित्तं णाणामणिकणगकडगाणि अ जाव सो चेव गमो जाव पडिविसज्जेइ ५ । तए णं से भरहे राया पोसहसालाओ पडिणिक्खमइ २ त्ता जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता ण्हाए

कयबलिकम्मे जाव जेणेव भोअणमंडवे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता भोअण-मंडवंसि सुहासणवरगए अट्ठमभत्तं परियादियइ २ त्ता जाव सीहासणवर-गए पुरत्थिाभिमुहे णिसीअइ २ त्ता अट्ठारस सेणिप्पसेणीओ सद्दावेइ २ त्ता जाव अट्ठाहिआए महामहिमाए तमाणत्तिअं पच्चप्पिणंति ६ ॥सूत्रं ५०॥ तए णं से दिव्वे चक्करयणे सिंधूए देवीए अट्ठाहिआए महामहिमाए णिव्व-त्ताए समाणीए आउहघरसालाओ तहेव जाव उत्तरपुरच्छिमं दिसिं वेअद्ध-पव्वयाभिमुहे पयाए आवि होत्था १। तए णं से भरहे राया जाव जेणेव वेअद्धपव्वए जेणेव वेअद्धस्स पव्वयस्स दाहिणिल्ले णितंबे तेणेव उवाग-च्छइ २ त्ता वेअद्धस्स पव्वयस्स दाहिणिल्ले णितंबे दुवालसजोअणायामं णवजोअणविच्छिण्णं वरणगरसरिच्छं विजयखंधावारनिवेसं करेइ २ त्ता जाव वेअद्धगिरिकुमारस्स देवस्स अट्ठमभत्तं पगिण्हइ २ त्ता पोसहसालाए जाव अट्ठमभत्तिए वेअद्धगिरिकुमारं देवं मणसि करेमाणे २ चिट्ठइ २। तए णं तस्स भरहस्स रण्णो अट्ठमभत्तंसि परिणममाणंसि वेअद्धगिरिकुमारस्स देवस्स आसणं चलइ, एवं सिंधुगमो णेअव्वो, पीइदाणं आभिसेक्कं रयणालंकारं कडगाणि अ तुडिआणि अ वत्थाणि अ आभरणाणि अ गेण्हइ २ त्ता ताए उक्किट्ठाए जाव अट्ठाहिअं जाव पच्चप्पिणंति ३। तए णं से दिव्वे चक्करयणे अट्ठाहियाए महामहिमाए णिव्वत्ताए समाणीए जाव पच्चत्थिमं दिसिं तिमिसगुहाभिमुहे पयाए आवि होत्था ४। तए णं से भरहे राया तं दिव्वं चक्करयणं जाव पच्चत्थिमं दिसिं तिमिसगुहाभिमुहं पयातं पासइ २ त्ता हट्ठतुट्ठचित्त जाव तिमिसगुहाए अदूरसामंते दुवालसजोअणा-यामं णवजोअणविच्छिण्णं जाव कयमालस्स देवस्स अट्ठमभत्तं पगिण्हइ २ त्ता पोसहसालाए पोसहिए बंभयारी जाव कयमालगं देवं मणसि करेमाणे २ चिट्ठइ ५। तए णं तस्स भरहस्स रण्णो अट्ठमभत्तंसि परिणममाणंसि कय-मालस्स देवस्स आसणं चलइ तहेव जाव वेअद्धगिरिकुमारस्स णवरं पीइदाणं

इत्थीरयणस्स तिलगचोद्दसं भंडालंकारं कडगाणि अ जाव आभरणाणि अ गेण्हइ २ त्ता ताए उक्किट्ठाए जाव सक्कारेइ सम्माणेइ २ त्ता पडिविसज्जेइ जाव भोअणमंडवे, तहेव महामहिमा कयमालस्स पच्चप्पिणंति ६ ॥सूत्रं ५१॥
तए णं से भरहे राया कयमालस्स अट्ठाहिआए महामहिमाए णिव्वत्ताए समाणीए सुसेणं सेणावइं सद्दावेइ २ त्ता एवं वयासी—गच्छाहि णं भो देवाणुप्पिआ ! सिंधूए महाणईए पच्चत्थिमिल्लं णिक्खुडं ससिंधु-सागर-गिरिमेरागं सम-विसम-णिक्खुडाणि अ ओअवेहि ओअवेत्ता अग्गाइं वराइं रयणाइं पडिच्छाहि पडिच्छित्ता ममेअमाणत्तिअं पच्चप्पिणाहि १। तते णं से सेणावई बलस्स णेआ भरहे वासंमि विस्सुअजसे महाबलपरक्कमे महप्पा ओअंसी तेअलक्खणजुत्ते मिलक्खुभासाविसारए चित्तचारुभासी भरहे वासंमि णिक्खुडाणं निण्णाण य दुग्गमाण य दुप्पवेसाण य विआणए अत्थसत्थकुसले रयणं सेणावई सुसेणे भरहेणं रण्णा एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठचित्तमाणंदिए जाव करयलपरिग्गहिअं दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं सामी ! तहत्ति आणाए विणएणं वयणं पडिसुणेइ २ त्ता भरहस्स रण्णो अंतिआओ पडिणिक्खमइ २ त्ता जेणेव सए आवासे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता कोडुंबिअपुरिसे सद्दावेइ २ त्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिआ ! आभिसेक्कं हत्थिरयणं पडिकप्पेह हयगयरहपवर जाव चाउरंगिणिं सेणं सण्णाहेहत्तिकट्टु जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता मज्जणघरं अणुपविसइ २ त्ता ण्हाए कयबलिकम्मे कय-कोउअ-मंगलपायच्छित्ते सन्नद्ध-बद्ध-वम्मिअकवए उप्पीलिअ-सरासणपट्टिए पिणद्ध-गेविज्जे बद्ध-आविद्ध-विमल-वरचिंधपट्टे गहिआउहप्पहरणे अणेग—गणनायग—दंडनायग जाव सद्धिं संपरिवुडे सकोरंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं मंगल-जयसद्दकयालोए मज्जणघराओ पडिणिक्खमइ २ त्ता जेणेव बाहिरिआ उवट्ठाणसाला जेणेव आभिसेक्के हत्थिरयणे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता आभिसेक्कं हत्थिरयणं दुरूढे

२ । तए णं से सुसेणे सेणावई हत्थिखंधवरगए सकोरंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं हय-गय-रह—पवरजोहकलिआए चाउरंगिणीए सेणाए सद्धिं संपरिवुडे महया-भड-चडगर--पहगर--वंदपरिक्खित्ते महया-उक्किट्ठ-सीहणाय-बोल-कलकलसद्देणं समुद्द-रवभूयंपिव करेमाणे २ सव्विद्धीए सव्वज्जुईए सव्वबलेणं जाव निग्घोसनाइएणं जेणेव सिंधू महाणई तेणेव उवागच्छइ २ त्ता चम्मरयणं परामुसइ ३ । तए णं तं सिरिवच्छसरिसरूवं मुत्ततारद्धचंदचित्तं अयलमकंपं अभेज्जकवयं जंतं सलिलासु सागरेसु अ उत्तरणं दिव्वं चम्मरयणं सणसत्तरसाइं सव्वधण्णाइं जत्थ रोहंति एगदिवसेण वाविआइं, वासं णाऊण चक्कवट्टिणा परामुट्ठे दिव्वे चम्मरयणे दुवालस जोअणाइं तिरिअं पवित्थरइ तत्थ साहिआइं ४ । तए णं से दिव्वे चम्मरयणे सुसेणसेणावइणा परामुट्ठे समाणे खिप्पामेव णावाभूए जाए आवि होत्था ५ । तए णं से सुसेणे सेणावई सखंधावारबलवाहणे णावाभूयं चम्मरयणं दुरूहइ २ त्ता सिंधुं महाणइं विमलजलतुंगवीचिं णावाभूएणं चम्मरयणेणं सबलवाहणेससेणे समुत्तिण्णे ६ । तओ महाणईमुत्तरित्तु सिंधुं अप्पडिहयसासणे अ सेणावई कहिंचि गामागरणगरपव्वयाणि खेडकव्बडमडंबाणि पट्टणाणि सिंहलए बब्बरए अ सव्वं च अंगलोअं बलायालोअं च परमरम्मं जवण-दीवं च पवर-मणि-रयणग-कोसागारसमिद्धं आरबके रोमके अ अलसंडवि-सयवासी अ पिक्खुरे कालमुहे जोणए अ उत्तरवेअद्धसंसिआओ अ मेच्छजाई बहुप्पगारा दाहिणअवरेण जाव सिंधुसागरंतोत्ति सव्वपवरकच्छं च ओअवेऊण पडिणिअत्तो बहुसमरमणिज्जे अ भूमिभागे तस्स कच्छस्स सुहणिसण्णे ७ । ताहे ते जणवयाण णगराण पट्टणाण य जे अ तहिं सामिआ पभूआ आगरपती अ मंडलपती अ पट्टणपती अ सव्वे घेत्तूण पाहुडाइं आभरणाणि भूसणाणि रयणाणि य वत्थाणि अ महरिहाणि अण्णं च जं वरिट्ठं रायारिहं जं च इच्छिअव्वं एअं सेणावइस्स उवणेंति मत्थयकयंज-

लिपुडा ८। पुणरवि काऊण अंजलिं मत्थयंमि पणाया तुब्भे अम्हेऽत्थ सामिआ देवयंव सरणागया मो तुब्भं विसयवासिणोत्ति विजयं जंपमाणा सेणावइणा जहारिहं ठविअ पूइअ विसज्जिआ णिअत्ता सगाणि णगराणि पट्टणाणि अणुपविट्ठा ९। ताहे सेणावई सविणओ घेत्तूण पाहुडाइं आभरणाणि भूसणाणि रयणाणि य पुणरवि तं सिंधुणामधेज्जं उत्तिणो अणहसासणबले, तहेव भरहस्स रणो णिवेएइ णिवेइत्ता य अप्पिणित्ता य पाहुडाइं सक्कारिअसम्माणिए सहरिसे विसज्जिए सगं पडमंडवमइगए १०। तते णं सुसेणे सेणावई णहाए कयबलिकम्मे कय-कोउअ-मंगलपायच्छित्ते जिमिअभुत्तुत्तरागए समाणे जाव सरस-गोसीस-चंदणुक्खित्तगायसरीरे उप्पि पासायवरगए फुट्टमाणेहिं मुइंगमत्थएहिं बत्तीसइबद्धेहिं णाडएहिं वरतरुणीसंपउत्तेहि उवणच्चिज्जमाणे २ उवगिज्जमाणे २ उवलमि(लालि)ज्जमाणे २ महयाहय-णट्ट-गीअ-वाइअ-तंती-तल ताल-तुडिअ-घण-मुइंग-पडुप्पवाइअरवेणं इट्ठे सद्दफरिसरसरूवगंधे पंचविहे माणुस्सए कामभोगे भुंजमाणे विहरइ ११ ॥ सूत्रं ५२ ॥ तए णं से भरहे राया अण्णया कयाई सुसेणं सेणावइं सद्दावेइ २ त्ता एवं वयासी—गच्छ णं खिप्पामेव भो देवाणुप्पिआ ! तिमिसगुहाए दाहिणिल्लस्स दुवारस्स कवाडे विहाडेहि २ त्ता मम एअमाणत्तिअं पच्चप्पिणाहित्ति १। तए णं से सुसेणे सेणावई भरहेणं रण्णा एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठचित्तमाणंदिए जाव करयलपरिग्गहिअं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु जाव पडिसुणेइ २ त्ता भरहस्स रण्णो अंतियाओ पडिणिक्खमइ २ त्ता जेणेव सए आवासे जेणेव पोसहसाला तेणेव उवागच्छइ २ त्ता दब्भसंथारगं संथरइ जाव कयमालस्स देवस्स अट्ठमभत्तं पगिण्हइ पोसहसालाए पोसहिए बंभयारी जाव अट्ठमभत्तंसि परिणममाणंसि पोसहसालाओ पडिणिक्खमइ २ त्ता जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता णहाए कयबलिकम्मे कय-कोउअ-मंगलपायच्छित्ते सुद्धप्पावेसाइं मंगलाइं

वत्थाइं पवरपरिहिए अप्प-महग्घाभरणालंकियसरीरे धूव-पुप्फ-गंध-मल्लहत्थगए मज्जणघराओ पडिणिक्खमइ २ त्ता जेणेव तिमिसगुहाए दाहिणिल्लस्स दुवारस्स कवाडा तेणेव पहारेत्थ गमणाए २। तए णं तस्स सुसेणस्स सेणावइस्स बहवे राईसरतलवरमाडंबिअ जाव सत्थवाहप्पभियओ अप्पेगइआ उप्पलहत्थगया जाव सुसेणं सेणावइं पिट्ठओ २ अणुगच्छंति ३। तए णं तस्स सुसेणस्स सेणावइस्स बहूईओ खुज्जाओ चिलाइआओ जाव इंगिअ-चिंतिअ--पत्थिअ-विआणिआउ णिउणकुसलाओ विणीआओ अप्पेगइआओ कलसहत्थगयाओ जाव अणुगच्छंतीति ४। तए णं से सुसेणे सेणावई सव्विद्धीए सव्वजुईए जाव णिग्घोसणाइएणं जेणेव तिमिसगुहाए दाहिणिल्लस्स दुवारस्स कवाडा तेणेव उवागच्छइ२त्ता आलोए पणामं करेइ२त्ता लोमहत्थगं परामुसइ२त्ता तिमिसगुहाए दाहिणिल्लस्स दुवारस्स कवाडे लोमहत्थेणं पमज्जइ २ त्ता दिव्वाए उदगधाराए अब्भुक्खेइ २ त्ता सरसेणं गोसीसचंदणेणं पंचंगुलितले चच्चए दलइ २ त्ता अग्गेहिं वरेहिं गंधेहि अ मल्लेहि अ अच्चिणेइ २ त्ता पुप्फारुहणं जाव वत्थारुहणं करेइ २ त्ता आसत्तोसत्तविपुलवट्ट जाव करेइ २ त्ता अच्छेहिं सण्हेहि रययामएहिं अच्छरसातंडुलेहि तिमिस्सगुहाए दाहिणिल्लस्स दुवारस्स कवाडाणं पुरओ अट्ठट्ठमंगलए आलिहइ, तंजहा—सोत्थिय सिरिवच्छ जाव कयग्गहगहिअ-करयल-पब्भट्ठविप्पमुक्कस्स दसद्धवण्णस्स कुसुमणिगरस्स तत्थ चित्तं जाणुस्सेहपमाणमित्तं ओहिनगरं करेत्ता चंदप्पभ--वइर-वेरुलिअ-विमलदंडं जाव धूवं दलयइ २ त्ता वामं जाणुं अंचेइ २ त्ता करयल जाव मत्थए अंजलिं कट्टु कवाडाणं पणामं करेइ २ त्ता दंडरयणं परामुसइ ५। तए णं तं दंडरयणं पंचलइअं वइरसारमइअं विणासणं सव्वसत्तुसेण्णाणं खंधावारे णरवइस्स गड्ड-दरि-विसम-पब्भार-गिरिवरपवायाणं समीकरणं संतिकरं सुभकरं हितकरं रण्णो हिअइच्छिअ-मणोरह-

पूरगं दिव्वमप्पडिहयं दंडरयणं गहाय सत्तट्ठ पयाइं पच्चोसक्कइ पच्चोसक्कित्ता तिमिस्सगुहाए दाहिणिल्लस्स दुवारस्स कवाडे दंडरयणेणं महया २ सद्देणं तिक्खुत्तो आउडेइ ६। तए णं तिमिसगुहाए दाहिणिल्लस्स दुवारस्स कवाडा सुसेणसेणावइणा दंडरयणेणं महया २ सद्देणं तिक्खुत्तो आउडिआ समाणा महया २ सद्देणं कोंचारवं करेमाणा सरसरस्स सगाइं २ ठाणाइं पच्चोसक्कित्था ७। तए णं से सुसेणे सेणावई तिमिसगुहाए दाहिणिल्लस्स दुवारस्स कवाडे विहाडेइ २ त्ता जेणेव भरहे राया तेणेव उवागच्छइ २ त्ता जाव भरहं रायं करयलपरिग्गहिअं जएणं विजएणं वद्धावेइ २ त्ता एवं वयासी—विहाडिआ णं देवाणुप्पिआ! तिमिसगुहाए दाहिणिल्लस्स दुवारस्स कवाडा एअरणं देवाणुप्पिआणं पिअं णिवेएमो पिअं मे भवउ ८। तए णं से भरहे राया सुसेणस्स सेणावइस्स अंतिए एअमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठचित्तमाणंदिए जाव हिअए सुसेणं सेणावइं सक्कारेइ सम्माणेइ सक्कारित्ता सम्माणित्ता कोडुंबिअपुरिसे सद्दावेइ २ त्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिआ! आभिसेक्कं हत्थिरयणं पडिकप्पेह हयगयरहपवर तहेव जाव अंजणगिरि-कूडसण्णिभं गयवरं णरवई दूरूढे ९ ॥ सूत्रं ५३ ॥ तए णं से भरहे राया मणिरयणं परामुसइ तोतं चउरंगुल-प्पमाणमित्तं च अणग्घं तंसिअं छलंसं अणोवमजुइं दिव्वं मणिरयण-पतिसमं वेरुलिअं सव्वभूअकंतं जेण य मुद्धागएणं दुक्खं ण किंचि जाव हवइ आरोग्गे अ सव्वकालं तेरिच्छिअ-देवमाणुसकया य उवसग्गा सव्वे ण करेंति तस्स दुक्खं १। संगामेऽवि असत्थवज्झो होइ णरो मणिवरं धरेंता ठिअ—जोव्वण—केस—अवट्ठिअणहो हवइ अ सव्वभयविप्पमुक्को, तं मणिरयणं गहाय से णरवई हत्थिरयणस्स दाहिणिल्लाए कुंभीए णिक्खिवइ २। तए णं से भरहाहिवे णरिंदे हारोत्थए सुकयरइअवच्छे जाव अमरवइसण्णिभाए इद्धीए पहिअकित्ती मणिरयणकउज्जोए चक्करयण-

देसिअमग्गे अणेग--राय--सहस्साणुआयमग्गे महया-उक्किट्ठ-सीहणाय-बोल-कलकलरवेणं समुद्दरवभूअंपिव करेमाणे २ जेणेव तिमिसगुहाए दाहिणिल्ले दुवारे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता तिमिसगुहं दाहिणिल्लेणं दुवारेणं अईइ ससिव्व मेहंधयारनिवहं ३। तए णं से भरहे राया छत्तलं दुवालसंसिअं अट्ठकण्णिअं अहिगरणिसंठिअं अट्ठसोवण्णिअं कागणिरयणं परामुसइत्ति ४। तए णं तं चउरंगुलप्पमाणमित्तं अट्ठसुवण्णं च विसहरणं अउलं चउरंससंठाणसंठिअं समतलं माणुम्माणजोगा जतो लोगे चरंति सव्वजण-पण्णवगा, ण इव चंदो ण इव तत्थ सूरे ण इव अग्गी ण इव तत्थ मणिणो तिमिरं णासेंति अंधयारे जत्थ तयं दिव्वं भावजुत्तं दुवालस-जोअणाइं तस्स लेसाउ विवद्धंति तिमिर-णिगर-पडिसेहिआओ ५। रत्तिं च सव्वकालं खंधावारे करेइ आलोअं दिवसभूअं जस्स पभावेण चक्कवट्टी ६। तिमिसगुहं अतीति सेण्णसहिए अभिजेत्तुं बितिअमद्धभरहं रायवरे कागणिं गहाय तिमिसगुहाए पुरच्छिमिल्लपच्चत्थिमिल्लेसुं कडएसुं जोअणंतरिआइं पंचधणु-सयविक्खंभाइं जोअणुज्जोअकराइं चक्क-णेमीसंठिआइं चंद-मंडल-पडिणिकासाइं एगूणपण्णं मंडलाइं आलिहमाणे २ अणुप्पविसइ ७। तए णं सा तिमिसगुहा भरहेणं रण्णा तेहिं जोअणंतरिएहिं जाव जोअणु-ज्जोअकरेहि एगूणपण्णाए मंडलेहि आलिहिज्जमाणेहिं २ खिप्पामेव आलोग-भूआ उज्जोअभूआ दिवस(दीवसय)भूआ जाया यावि होत्था ८ ॥ सूत्रं ५४ ॥

तीसे णं तिमिसगुहाए बहुमज्झदेसभाए एत्थ णं उम्मग्गणिमग्गजलाओ णामं दुवे महाणईओ पण्णत्ताओ १। जाओ णं तिमिसगुहाए पुरच्छिमिल्लाओ भित्तिकडगाओ पवूढाओ समाणीओ पच्चत्थिमेणं सिंधुं महाणइं समप्पेंति २। से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ उम्मग-णिमग्गजलाओ महाणईओ ?, गोअमा! जण्णं उम्मग्गजलाए महाण-ईए तणं वा पत्तं वा कट्ठं वा सक्करा वा आसे वा हत्थी वा रहे वा जोहे

वा मणुस्से वा पक्खिप्पइ तराणं उम्मग्ग-जलामहाणई तिक्खुत्तो आहुणिअ २ एगंते थलंसि एडेइ, जराणं णिमग्गजलाए महाणईए तणं वा पत्तंग वा कट्ठं वा सक्करं वा जाव मणुस्से वा पक्खिप्पइ तराणं णिमग्गजलामहाणई तिक्खुत्तो आहुणिअ २ अंतो जलंसि णिमज्जावेइ, से तेणट्ठेणं गोअमा! एवं वुच्चइ—उम्मग्गणिमग्गजलाओ महाणईओ ३। तए णं से भरहे राया चक्करयणादेसिअमग्गे अणेग-रायवरसहस्साणुआयमग्गे महया उक्किट्ठसीहणाय जाव करेमाणे २ सिंधूए महाणईए पुरच्छिमिल्ले णं कूडे णं जेणेव उम्मग्गजला महाणई तेणेव उवागच्छइ २ त्ता वद्धइरयणं सद्दावेइ २ त्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिआ! उम्मग्गणिमग्गजलासु महाणईसु अणेगखंभसयसणिणविट्ठे अयलमकंपे अभेज्जकवए सालंबणबाहाए सव्वरयणामए सुहसंकमे करेहि करेत्ता मम एअमाणत्तिअं खिप्पामेव पच्चप्पिणाहि ४। तए णं से वद्धइरयणे भरहेणं रगणा एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठचित्तमाणंदिए जाव विणएणं पडिसुणेइ २ त्ता खिप्पामेव उम्मग्गणिमग्गजलासु महाणईसु अणेग-खंभ-सयसणिणविट्ठे जाव सुहसंकमे करेइ २ त्ता जेणेव भरहे राया तेणेव उवागच्छइ २ त्ता जाव एअमाणत्तिअं पच्चप्पिणइ ५। तए णं से भरहे राया सखंधावारबले उम्मग्गणिमग्गजलाओ महाणईओ तेहिं अणेग-खंभ-सय-सणिणविट्ठेहिं जाव सुहसंकमेहिं उत्तरइ ६। तए णं तीसे तिमिस्सगुहाए उत्तरिल्लस्स दुवारस्स कवाडा सयमेव महया २ कोंचारवं करेमाणा सरसरस्सगाइं २ ठाणाइं पच्चोसक्कित्था ७॥ सूत्रं ५५॥

तेणं कालेणं तेणं समएणं उत्तरड्ढभरहे वासे बहवे आवाडाणामं चिलाया परिवसंति अड्ढा दित्ता वित्ता विच्छिराण-विउल-भवण-सयणासण-जाणवाहणाइन्ना बहुधण-बहुजायरूवरयया आओग-पओगसंपउत्ता विच्छड्डिअपउरभत्तपाणा बहुदासीदास गोमहिस-गवेलगप्पभूआ बहुजणस्स अपरिभूआ

सूरा वीरा विक्कंता विच्छिराणा-विउल-बलवाहणा बहुसु समरसंपराएसु लद्धलक्खा यावि होत्था १। तए णं तेसिमावाडचिलायाणं अराणया कयाई विसयंसि बहूइं उप्पाइअसयाइं पाउब्भवित्था, तंजहा—अकाले गज्जिअं अकाले विज्जुआ अकाले पायवा पुप्फंति अभिक्खणं २ आगासे देवयाओ णच्चंति २। तए णं ते आवाडचिलाया विसयंसि बहूइं उप्पाइअसयाइं पाउब्भूयाइं पासंति पासित्ता अराणमराणं सद्दावेंति २ त्ता एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिआ! अम्हं विसयंसि बहूइं उप्पाइअसयाइं पाउब्भूआइं तंजहा—अकाले गज्जिअं अकाले विज्जुआ अकाले पायवा पुप्फंति अभिक्खणं २ आगासे देवयाओ णच्चंति, तं ण णज्जइ णं देवाणुप्पिआ! अम्हं विसयस्स के मन्ने उवद्दवे भविस्सईत्तिकट्टु ओहयमणसंकप्पा चिंता-सोगसागरं पविट्ठा करयल पल्हत्थमुहा अट्टज्झाणोवगया भूमिगयदिट्ठिआ झिआयंति ३। तए णं से भरहे राया चक्करयण-देसिअमग्गे जाव समुद्द-रवभूअं पिव करेमाणे २ तिमिसगुहाओ उत्तरिल्लेणं दारेणं णीति ससिव्व मेहंधयार-णिवहा ४। तए णं ते आवाडचिलाया भरहस्स रराणो अग्गा-णीअं एज्जमाणं पासंति २ त्ता आसुरुत्ता रुट्ठा चंडिक्किआ कुविआ मिसि-मिसेमाणा अराणमराणं सद्दावेंति २ त्ता एवं वयासी—एस णं देवाणुप्पिआ! केइ अप्पत्थि-अपत्थए दुरंत-पंतलक्खणे हीण-पुराणचाउद्दसे हिरि-सिरि-परिवज्जिए जे णं अम्हं विसयस्स उवरिं विरिएणं हव्वमागच्छइ तं तहा णं घत्तामो देवाणुप्पिआ! जहा णं एस अम्हं विसयस्स उवरिं विरिएणं णो हव्वमागच्छइत्तिकट्टु अराणमराणस्स अंतिए एअमट्ठं पडिसुणेंति २ त्ता सराणद्ध-बद्ध-वम्मियकवआ उप्पीलिअ-सरासणपट्टिआ पिणद्धगेविज्जा बद्ध-आविद्ध-विमल-वरचिंधपट्टा गहिआउहप्पहरणा जेणेव भरहस्स रराणो अग्गाणीअं तेणेव उवागच्छंति २ त्ता भरहस्स रराणो अग्गाणीएण सद्धिं संपलग्गा यावि होत्था ५। तए णं ते आवाडचिलाया भरहस्स रराणो

अग्गाणीअं हयमहिअ-पवरवीरघाइअ विवडिअ-चिंधद्धयपडागं किच्छप्पाणो-वगयं दिसोदिसिं पडिसेहिंति ६ ॥ सूत्रं ५६ ॥ तए णं से सेणाबलस्स णेआ वेढो जाव भरहस्स रणणो अग्गाणीअं आवाडचिलाएहिं हयमहियपवरवीर जाव दिसो दिसं पडिसेहिअं पासइ २ त्ता आसुरुत्ते रुट्ठे चंडिक्किए कुविए मिसिमिसेमाणे कमलामेलं आसरयणं दुरूहइ २ त्ता तए णं तं असीइ-मंगुलमूसिअं णवणउइ-मंगुलपरिणाहं अट्ठसय-मंगुलमायतं बत्तीसमंगुलमूसि-असिरं चउरंगुलकन्नागं वीसइअंगुलबाहागं चउरंगुलजाणूकं सोलसअंगुल-जंघागं चउरंगुलमूसिअखुरं मुत्तोली-संवत्त-वलिअमज्झं ईसिं अंगुलपणय-पट्ठं संणयपट्ठं संगयपट्ठं सुजायपट्ठं पसत्थपट्ठं विसिट्ठपट्ठं एणी-जाणुणणय-वित्थय-थद्धपट्ठं वित्तलयक-सणिवाय-अंकेल्लण-पहारपरिवज्जिअंगं तवणिज्ज-थासगाहिलाणं वरकणग-सुफुल्ल-थासग-विचित्त-रयणरज्जुपासं कंचण-मणि-कणग-पयरग-णाणाविह-घंटिआजाल-मुत्तिआजालएहिं परिमंडियेणं पट्ठेण सोभमाणेण सोभमाणं कक्केयण-इंदनील-मरगय-मसारगल्ल-मुहमंडणरइअं आविद्ध-माणिक्क-सुत्तगविभूसियं कणगामय-पउम-सुकयतिलकं देवमइविक-प्पिअं सुरवरिंद-वाहण-जोग्गावयं सुरूवं दूइज्जमाण-पंच-चारु-चामरामेलगं धरेंतं अण(द)ब्भवाहं अभेलणयणं कोकासिअ-बहलपत्तलच्छं सयावरण-नवकणग-तविअ-तवणिज्ज-तालुजीहासयं सिरिआभिसेअघोणं पोक्खरपत्तमिव सलिल-बिंदुजुअं अचंचलं चंचलसरीरं चोक्ख-चरग-परिव्वायगोविव हिलीयमाणं २ खुर-चलण-चच्चपुडेहिं धरणिअलं अभिहणमाणं २ दोवि अ चलणे जमगसमगं मुहाओ विणिग्गमंतं व सिग्घयाए मुणालतंतुउदगमवि णिस्साए पक्कमंतं जाइ-कुल--रूव-पच्चय-पसत्थ-बारसावत्तग-विसुद्धलक्खणं सुकुलप्पसूअं मेहावि-भद्दयविणीअं अणुअ-तणुअ-सुकुमाल-लोमनिद्धच्छविं सुजाय-अमर-मण-पवण-गरुल-जइण-चवलसिग्घगामिं इसिमिव खंतिखमए सुसीसमिव पच्चक्खयाविणीयं उदग-हुतवह-पासाण-पंसु-कद्दम-ससक्कर-सवालु-

इल-तड--कडग-विसम-पब्भार-गिरि-दर-सुलंघण-पिल्लण-णित्थारणासमत्थं अचंडपाडियं दंडयातिं अणंसुपातिं अकालतालुं च कालहेसिं जिअ-निद्दं गवेसगं जिअपरिसहं जच्चजातीअं मल्लिहाणिं सुगपत्त-सुवण्णकोमलं मणाभिरामं कमलामेलं णामेणं आसरयणं सेणावई कमेण समभिरूढे कुवलय-दलसामलं च रयणिकर-मंडलनिभं सत्तुजणविणासणं कणगरयणदंडं णवमालिअ-पुप्फ-सुरहिगंधिं णाणा-मणिलय-भत्तिचित्तं च पहोत-मिसिमिसिंत-तिक्खधारं दिव्वं खग्गरयणं लोके अणोवमाणं तं च पुणो वंस-रुक्ख-सिंगट्ठि-दंत-कालायस-विपुल-लोहदंडक-वरवइरभेदकं जाव सव्वत्थअप्पडिहयं किं पुण देहेसु जंगमाणं—पण्णासंगुलदीहो सोलस से अंगुलाइं विच्छिण्णो। अद्धंगुलसोणीको जेट्ठपमाणो असी भणिओ ॥ १ ॥ असि-रयणं णरवइस्स हत्थाओ तं गहिऊण जेणेव आवाडचिलाया तेणेव उवा-गच्छइ २ त्ता आवाडचिलाएहिं सद्धिं संपलग्गे आवि होत्था ॥ तए णं से सुसेणे सेणावइ ते आवाडचिलाए हय-महिअ-पवरवीरघाइअ जाव दिसो-दिसिं पडिसेहेइ ॥ सूत्रं ५७ ॥ तए णं ते आवाडचिलाया सुसेणसेणावइणा हयमहिआ जाव पडिसेहिया समाणा भीआ तत्था वहिआ उव्विग्गा संजायभया अत्थामा अबला अवीरिआ अपुरिसक्कारपरक्कमा अधारणिज्ज-मितिकट्टु अणेगाइं जोअणाइं अवक्कमंति २ त्ता एगयओ मिलायंति २ त्ता जेणेव सिंधू महाणई तेणेव उवागच्छंति २ त्ता वालुआसंथारए संथरेंति २ त्ता वालुआसंथारए दुरूहंति २ त्ता अट्ठमभत्ताइं पगिण्हंति २ त्ता वालुआ-संथारोवगया उत्ताणगा अवसणा अट्ठमभत्तिआ जे तेसिं कुलदेवया मेहमुहा णामं णागकुमारा देवा ते मणसी करेमाणा २ चिट्ठंति १। तए णं तेसिमावाडचिलायाणं अट्ठमभत्तंसि परिणममाणंसि मेहमुहाणं णागकुमाराणं देवाणं आसणाइं चलंति, तए णं ते मेहमुहा णागकुमारा देवा आसणाइं चलिआइं पासंति २ त्ता ओहिं पउंजंति २ त्ता आवाडचिलाए ओहिणा

आभोएंति २ त्ता अरणमरणं सद्दावेंति २ त्ता एवं वयासी–एवं खलु देवाणुप्पिआ ! जंबुद्दीवे दीवे उत्तरद्धभरहे वासे आवाडचिलाया सिंधूए महाणईए वालुआसंथारोवगया उत्ताणगा अवसणा अट्ठमभत्तिआ अम्हे कुलदेवए मेहमुहे णागकुमारे देवे मणसी करेमाणा २ चिट्ठंति २ । तं सेअं खलु देवाणुप्पिआ ! अम्हं आवाडचिलायाणं अंतिए पाउब्भवित्तएत्तिकट्टु अरणमरणस्स अंतिए एअमट्ठं पडिसुणेंति पडिसुणेत्ता ताए उक्किट्ठाए तुरिआए जाव वीतिवयमाणा २ जेणेव जंबुद्दीवे दीवे उत्तरद्धभरहे वासे जेणेव सिंधू महाणई जेणेव आवाडचिलाया तेणेव उवागच्छंति २ त्ता अंतलिक्खपडिवरणा सखिंखिणिआइं पंचवरणाइं वत्थाइं पवर परिहिआ ते आवाडचिलाए एवं वयासी–हं भो आवाडचिलाया ! जरणं तुब्भे देवाणुप्पिआ ! वालुआसंथारोवगया उत्ताणगा अवसणा अट्ठमभत्तिआ अम्हे कुलदेवए मेहमुहे णागकुमारे देवे मणसी करेमाणा २ चिट्ठह, तए णं अम्हे मेहमुहा णागकुमारा देवा तुब्भं कुलदेवया तुम्हं अंतिअरणं पाउब्भूआ, तं वदह णं देवाणुप्पिआ ! किं करेमो कि आउट्टेमो के वा भे मणसाइए ? ३ । तए णं ते आवाडचिलाया मेहमुहाणं णागकुमाराणं देवाणं अंतिए एअमट्ठं सोचा णिसम्म हट्ठतुट्ठचित्तमाणंदिआ जाव हिअया उट्ठाए उट्ठेंति २ त्ता जेणेव मेहमुहा णागकुमारा देवा तेणेव उवागच्छंति २ त्ता करयल-परिग्गहियं जाव मत्थए अंजलि कट्टु मेहमुहे णागकुमारे देवे जएणं विजएणं वद्धावेंति २ त्ता एवं वयासी–एस णं देवाणुप्पिए ! केई अपत्थि-अपत्थए दुरंतपंतलक्खणे जाव हिरिसिरिपरिवज्जिए जे णं अम्हं विसयस्स उवरिं विरिएणं हव्वमागच्छइ, तं तहा णं घत्तेह देवाणुप्पिआ ! जहा णं एस अम्हं विसयस्स उवरिं विरिएणं णो हव्वमागच्छइ ४ । तए णं ते मेहमुहा णागकुमारा देवा ते आवाडचिलाए एवं वयासी–एस णं भो देवाणुप्पिआ ! भरहे णामं राया चाउरंतचक्कवट्टी महिड्ढीए महज्जुईए जाव

महासोक्खे ५ । णो खलु एस सक्को केणाई देवेण वा दाणवेण वा किणरेण वा किंपुरिसेण वा महोरगेण वा गंधव्वेण वा सत्थप्पओगेण वा अग्गिप्पओगेण वा मंतप्पओगेण वा उवद्दवित्तए वा पडिसेहित्तए वा ६ । तहाविअ णं तुब्भं पिअट्ठयाए भरहस्स रगणो उवसग्गं करेमोत्तिकट्टु तेसिं आवाडचिलायाणं अंतिआओ अवक्कमंति २ त्ता वेउव्विअसमुग्घाएणं सम्मोहणंति २ त्ता मेहाणीअं विउव्वंति २ त्ता जेणेव भरहस्स रगणो विजयक्खंधावारणिवेसे तेणेव उवागच्छंति २ त्ता उप्पिं विजयक्खंधावारणिवेसस्स खिप्पामेव पतणुतणायंति २ त्ता खिप्पामेवा पविज्जुयायंति २ त्ता खिप्पामेव जुग-मुसल-मुट्ठिप्पमाणमेत्ताहिं धाराहिं ओघमेघं सत्तरत्तं वासं वासिउं पवत्ता यावि होत्था ७ ॥ सूत्रं ५८ ॥ तए णं से भरहे राया उप्पिं विजयक्खंधावारस्स जुग-मुसल-मुट्ठिप्पमाणमेत्ताहिं धाराहिं ओघमेघं सत्तरत्तं वासं वासमाणं पासइ २ त्ता चम्मरयणं परामुसइ १ । तए णं तं सिरिवच्छसरिसरूवं वेढो भाणिअव्वो जाव दुवालसजोअणाइं तिरिअं पवित्थरइ तत्थ साहिआइं २ । तए णं से भरहे राया सखंधावारबले चम्मरयणं दुरूहइ २ त्ता दिव्वं छत्तरयणं परामुसइ ३ । तए णं णवणउइ-सहस्स-कंचणसलागपरिमंडिअं महरिहं अउज्झं णिव्वण-सुपसत्थ-विसिट्ठ-लट्ठ-कंचणसुपुट्ठदंडं मिउ-रायय-वट्ट-लट्ठ-अरविंद-कण्णिअसमाणरूवं बत्थिपएसे अ पंजरविराइअं विविहभत्तिचित्तं मणि-मुत्त-पवाल-तत्त-तवणिज्ज-पंचवण्णिअ-धोअ-रयणरूव-रइयं रयण-मरीई-समोप्पणा-कप्पकार-मणुरंजिएल्लियं रायलच्छिचिंधं अज्जुण-सुवण्ण-पंडुर-पच्चत्थुअ-पट्ठदेसभागं तहेव तवणिज्ज-पट्ट-धम्मंतपरिगयं अहिअ-सस्सिरीअं सारय—रयणिअर-विमल-पडिपुण्ण-चंद-मंडलसमाणरूवं णरिंद-वामप्पमाण-पगइवित्थडं कुमुदसंडधवलं रगणो संचारिमं विमाणं सूरातव-वाय-वुट्ठिदोसाण य खयकरं तवगुणेहिं लद्धं—अहयं बहुगुणदाणं उऊण विवरीअ-सुहकयच्छाइं । छत्तरयणं पहाणं सुदुल्लहं अप्पपुराणाणं ॥ १ ॥

पमाणराईण तवगुणाण फलेगदेसभागं विमाणवासेवि दुल्लहतरं वग्घारिअ-मल्लदामकलावं सारय-धवलब्भ-रय(य)णिगरप्पगासं दिव्वं छत्तरयणं महीवइस्स धरणिअलपुण्णइंदो ४। तए णं से दिव्वे छत्तरयणे भरहेणं रण्णा परामुट्ठे समाणे खिप्पामेव दुवालस जोअणाइं पवित्थरइ साहिआइं तिरिअं ५ ॥ सूत्रं ५९ ॥ तए णं से भरहे राया छत्तरयणं खंधावारस्सुवरिं ठवेइ २ त्ता मणिरयणं परामुसइ वेढो जाव छत्तरयणस्स वत्थिभागंसि ठवेइ १। तस्स य अणतिवरं चारुरूवं सिल-णिहिअत्थमंत-मेत्त-सालि-जव-गोहूम-मुग्ग-मास-तिल--कुलत्थ-सट्ठिग-निप्फाव--चणग--कोद्दव-कोत्थुंभरि-कंगु-बरग-रालग-अणेग—धरणा—वरण—हारिअग—अल्लग—मूलग—हलिद्द--लाउअ-तउस-तुंब-कालिग-कविट्ठ-अंब-अंबिलि-असव्वणिप्फायए सुकुसले गाहावइरयणेत्ति सव्वजणवीसुअगुणे २। तए णं से गाहावइरयणे भरहस्स रण्णो तद्दिवस-प्पइण्ण-णिप्फाइअपूइआणं सव्वधरणाणं अणेगाइं कुंभसहस्साइं उव-ट्ठवेति ३। तए णं से भरहे राया चम्मरयणसमारूढे छत्तरयणसमो-च्छन्ने मणिरयणकउज्जोए समुग्गयभूएणं सुहंसुहेणं सत्तरत्तं परि-वसइ—'णवि से खुहा ण विलिअं णेव भयं णेव विज्जए दुक्खं। भरहाहिवस्स रण्णो खंधावारस्सवि तहेव ॥ १ ॥ ४ ॥ सूत्रं ६० ॥ तए णं तस्स भरहस्स रण्णो सत्तरत्तंसि परिणममाणंसि इमेआरूवे अब्भत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—केस णं भो ! अपत्थि-अपत्थए दुरंतपंतलक्खणे जाव परिवज्जिए जे णं ममं इमाए एआणुरूवाए जाव अभिसमण्णागयाए उप्पिं विजयखंधावारस्स जुगमुसलमुट्ठि जाव वासं वासइ १। तए णं तस्स भरहस्स रण्णो इमेआरूवं अब्भत्थिअं चिंतियं पत्थिअं मणोगयं संकप्पं समुप्पण्णं जाणित्ता सोलस देवसहस्सा सण्णज्झिउं पवत्ता याविहोत्था २। तए णं ते देवा सण्णद्ध-बद्ध-वम्मिअकवया जाव गहिआउहप्पहरणा जेणेव ते मेहमुहा णाग-

कुमारा देवा तेणेव उवागच्छंति २ त्ता मेहमुहे णागकुमारे देवे एवं वयासी–हं भो ! मेहमुहा णागकुमारा देवा ! अप्पत्थिअपत्थगा ! जाव परिवज्जिआ ! किराणं तुब्भि ण याणह भरहं रायं चउरंतचक्कवट्टिं महिद्धिअं जाव उद्दवित्तए वा पडिसेहित्तए वा तहावि णं तुब्भे भरहस्स रण्णो विजयखंधावारस्स उप्पिं जुगमुसलमुट्ठिप्पमाणमित्ताहिं धाराहिं ओघमेघं सत्तरत्तं वासं वासह ?, तं एवमवि गते इत्तो खिप्पामेव अवक्कमह अहव णं अज्ज पासह चित्तं जीवलोगं ३। तए णं ते मेहमुहा णागकुमारा देवा तेहिं देवेहिं एवं वुत्ता समाणा भीआ तत्थ वहिआ उव्विग्गा संजायभया मेघानीकं पडिसाहरंति २ त्ता जेणेव आवाडचिलाया तेणेव उवागच्छंति २ त्ता आवाडचिलाए एवं वयासी–एस णं देवाणुप्पिआ ! भरहे राया महिद्धीए जाव णो खलु एस सक्को केणइ देवेण वा जाव अग्गिप्पओगेण वा जाव उवद्दवित्तए वा पडिसेहित्तए वा तहावि अ णं ते अम्हेहिं देवाणुप्पिआ ! तुब्भं पिअट्ठयाए भरहस्स रण्णो उवसग्गे कए, तं गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिआ ! ण्हाया कयबलिकम्मा कय-कोउअ-मंगल-पायच्छित्ता उल्लपडसाडगा ओचूलगणिअच्छा अग्गाइं वराइं रयणाइं गहाय पंजलिउडा पायंवडिआ भरहं रायाणं सरणं उवेह, पणिवइअवच्छला खलु उत्तमपुरिसा णत्थि भे भरहस्स रण्णो अंतिआओ भयमितिकट्टु, एवं वदित्ता जामेव दिसिं पाउब्भूआ तामेव दिसिं पडिगया ४। तए णं ते आवाडचिलाया मेहमुहेहिं णागकुमारेहिं देवेहि एवं वुत्ता समणा उट्ठाए उट्ठेंति २ त्ता ण्हाया कयबलिकम्मा कय-कोउअ-मंगलपायच्छित्ता उल्लपडसाडगा ओचूलगणिअच्छा अग्गाइं वराइं रयणाइं गहाय जेणेव भरहे राया तेणेव उवागच्छंति २ त्ता करयलपरिग्गहिअं जाव मत्थए अंजलिं कट्टु भरहं रायं जएणं विजएणं वद्धाविंति २ त्ता अग्गाइं वराइं रयणाइं उवणेंति २ त्ता एवं वयासि–"वसुहर गुणहर जयहर, हिरिसिरि-धीकित्तिधार-

कणारिंद । लक्खणसहस्सधारक रायमिदं गो चिरं धारे ॥ १ ॥ हयवइ गयवइ णरवइ णवणिहिवइ भरहवासपढमवई । बत्तीसजणवयसहस्सराय सामी चिरं जीव ॥ २ ॥ पढमणरीसर ईसर हिग्रईसर महिलिग्रासहस्साणं । देवसयसाहसीसर चोद्दसरयणीसर जसंसी ॥ ३ ॥ सागरगिरिमेरागं उत्तरवाईणमभिजिग्रं तुमए । ता ग्रम्हे देवाणुप्पिग्रस्स विसए परिवसामो ॥ ४ ॥ ग्रहो णं देवाणुप्पिग्राणं इड्ढी जुई जसे बले वीरिए पुरिसक्कारपरक्कमे दिव्वा देवजुई दिव्वे देवाणुभावे लद्धे पत्ते ग्रभिसमण्णागए, तं दिट्ठा णं देवाणुप्पिग्राणं इद्धी एवं चेव जाव ग्रभिसमण्णागए, तं खामेमु णं देवाणुप्पिग्रा ! खमंतु णं देवाणुप्पिग्रा ! खंतुमरुहंतु णं देवाणुप्पिग्रा ! णाइ भुज्जो २ एवंकरणयाएत्तिकट्टु पंजलिउडा पायवडिग्रा भरहं रायं सरणं उविंति ५ । तए णं से भरहे राया तेसिं ग्रावाडचिलायाणं ग्रग्गाइं वराइं रयणाइं पडिच्छति २ त्ता ते ग्रावाडचिलाए एवं वयासी—गच्छह णं भो तुब्भे ममं बाहुच्छायापरिग्गहिया णिब्भया णिरुव्विग्गा सुहंसुहेणं परिवसह, णत्थि भे कत्तोवि भयमत्थित्तिकट्टु सक्कारेइ सम्माणेइ सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता पडिविसज्जेइ ६ । तए णं से भरहे राया सुसेणं सेणावेइं सद्दावेइ २ त्ता एवं वयासी—गच्छाहि णं भो देवाणुप्पिग्रा ! दोच्चंपि सिंधूए महाणईए पच्चत्थिमं णिक्खुडं ससिंधुसागरगिरिमेरागं समविसमणिक्खुडाणि ग्र ग्रोग्रवेहि २ त्ता ग्रग्गाइं वराइं रयणाइं पडिच्छाहि २ त्ता मम एग्रमाणत्तिग्रं खिप्पामेव पच्चप्पिणाहि जहा दाहिणिल्लस्स ग्रोयवणं तहा सव्वं भाणिग्रव्वं जाव पच्चणुभवमाणा विहरंति ७ ॥ सूत्रं ६१ ॥ तए णं दिव्वे चक्करयणे ग्रण्णया कयाइ ग्राउहघरसालाग्रो पडिणिक्खमइ २ त्ता ग्रंतलिक्खपडिवण्णे जाव उत्तरपुरच्छिमं दिसिं चुल्लहिमवंत-पव्वयाभिमुहे पयाते ग्रावि होत्था १ । तए णं से भरहे राया तं दिव्वं चक्करयणं जाव चुल्लहिमवंत-वासहरपव्वयस्स ग्रदूरसामंते दुवालसजोग्रणायामं जाव चुल्लहिमवंत-गिरिकुमारस्स देवस्स ग्रट्ठमभत्तं पगिण्हइ २ ।

तहेव जहा मागहतित्थस्स जाव समुद्दरवभूश्रंपिव करेमाणे २ उत्तरदिसाभिमुहे जेणेव चुल्लहिमवंत-वासहरपव्वए तेणेव उवागच्छइ २ त्ता चुल्लहिमवंत-वासहर-पव्वयं तिक्खुत्तो रहसिरेणं फुसइ फुसित्ता तुरए णिगिण्हइ णिगिण्हित्ता तहेव जाव आयतकण्णायतं च काऊण उसुमुदारं इमाणि वयणाणि तत्थ भाणीअ से णरवई जाव सव्वे मे ते विसयवासित्तिकट्टु उद्धं वेहासं उसुं णिसिरइ परिगरणिगरिअमज्झे जाव तए णं से सरे भरहेणं रण्णा उद्धं वेहासं णिसट्ठे समाणे खिप्पामेव बावत्तरिं जोश्रणाइं गंता चुल्लहिमवंतगिरि-कुमारस्स देवस्स मेराए णिवइए ३। तए णं से चुल्लहिमवंतगिरिकुमारे देवे मेराए सरं णिवइअं पासइ २ त्ता आसुरुत्ते रुट्ठे जाव पीइदाणं सव्वोसहिं च मालं गोसीसचंदणं कडगाणि जाव दहोदगं च गेण्हइ २ त्ता ताए उक्किट्ठाए जाव उत्तरेणं चुल्लहिमवंतगिरिमेराए अहण्णं देवाणुप्पिआणं विसयवासी जाव अहण्णं देवाणुप्पिआणं उत्तरिल्ले अंतवाले जाव पडिविस-ज्जेइ ४॥ सूत्रं ६२॥ तए णं से भरहे राया तुरए णिगिण्हइ २ त्ता रहं परावत्तेइ २ त्ता जेणेव उसहकूडे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता उसहकूडं पव्वयं तिक्खुत्तो रहसिरेणं फुसइ २ त्ता तुरए निगिण्हइ २ त्ता रहं ठवेइ २ त्ता छत्तलं दुवालसंसिअं अट्ठकण्णिअं अहिगरणिसंठिअं सोवण्णिअं कागणि-रयणं परामुसइ २ त्ता उसभकूडस्स पव्वयस्स पुरत्थिमिल्लंसि कडगंसि णामगं आउडेइ—ओसप्पिणीइमीसे तइआए समाइ पच्छिमे भाए। अहमंसि चक्कवट्टी भरहो इअ नामधिज्जेणं॥१॥ अहमंसि पढमराया अहयं भरहाहिवो णरवरिंदो। णत्थि महं पडिसत्तू जिअं मए भारहं वासं॥२॥" इतिकट्टु णामगं आउडेइ णामगं आउडित्ता रहं परावत्तेइ २ त्ता जेणेव विजय-खंधावारणिवेसे जेणेव बाहिरिआ उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ २ त्ता जाव चुल्लहिमवंतगिरिकुमारस्स देवस्स अट्ठाहिआए महामहिमाए णिव्वत्ताए समाणीए आउहघरसालाओ पडिणिक्खमइ २ त्ता जाव दाहिणिं

दिसिं वेअड्ढपव्वयाभिमुहे पयाते आवि होत्था ॥ सूत्रं ६३ ॥ तए णं से भरहे राया तं दिव्वं चक्करयणं जाव वेअड्ढस्स पव्वयस्स उत्तरिल्ले णितंबे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता वेअड्ढस्स पव्वयस्स उत्तरिल्ले णितंबे दुवालस-जोयणायामं जाव पोसहसालं अणुपविसइ जाव णमिविणमीणं विज्जाहर-राईणं अट्ठमभत्तं पगिराहइ २ त्ता पोसहसालाए जाव णमि-विणमि-विज्जा-हररायाणो मणसी करेमाणे २ चिट्ठइ १। तए णं तस्स भरहस्स रगणो अट्ठमभत्तंसि परिणममाणंसि णमिविणमीविज्जाहररायाणो दिव्वाए मईए चोइअमई अराणमराणस्स अंतिअं पाउब्भवंति २ त्ता एवं वयासी—उप्पराणे खलु भो देवाणुप्पिआ ! जंबुद्दीवे दीवे भरहे वासे भरहे राया चाउरंत-चक्कवट्टी तं जीअमेअं तीअ-पच्चुप्पराण-मणागयाणं विज्जाहरराईणं चक्क-वट्टीणं उवत्थाणिअं करेत्तए २। तं गच्छामो णं देवाणुप्पिआ ! अम्हेवि भरहस्स रगणो उवत्थाणिअं करेमो इति कट्टु विणमी णाऊणं चक्कवट्टिं दिव्वाए मईए चोइअमई माणुम्माणप्पमाणजुत्तं तेअस्सिं रूवलक्खणजुत्तं ठिअ-जुव्वण-केसवट्टिअणहं सव्वरोगणासणिं बलकरिं इच्छिअ-सी-उराहफास-जुत्तं—तिसु तणुअं तिसु तंबं तिवलीगतिउराणयं तिगंभीरं। तिसु कालं तिसु सेअं तिआयतं तिसु अ विच्छिराणं ॥ १ ॥ समसरीरं भरहे वासंमि सव्वमहिलप्पहाणं सुंदर-थण-जघण-वरकर-चलण-णयण-सिरसिज-दसण-ज-णहिअय-रमण-मणहरिं सिंगारागार जाव जुत्तोवयारकुसलं अमरवहूणं सुरूवं रूवेणं अणुहरंतीं सुभद्दं भद्दंमि जोव्वणे वट्टमाणिं इत्थीरयणं णमी अ रयणाणि य कडगाणि य तुडिआणि अ गेराहइ २ त्ता ताए उक्किट्ठाए तुरि-आए जाव उद्धूआए विज्जाहरगईए जेणेव भरहे राया तेणेव उवागच्छंति २ त्ता अंतलिक्खपडिवराणा सखिंखिणीयाइं जाव जएणं विजएणं वद्धा-वेंति २ त्ता एवं वयासी—अभिजिए णं देवाणुप्पिआ ! जाव अम्हे देवाणु-प्पिआणं आणत्तिकिंकरा इतिकट्टु तं पडिच्छंतु णं देवाणुप्पिआ !

अम्हं इमं जाव विणमी इत्थीरयणं णमी रयणाणि समप्पेइ ३। तए णं से भरहे राया जाव पडिविसज्जेइ २ त्ता पोसहसालाओ पडिणिक्खमइ २ त्ता मज्जणघरं अणुपविसइ २ त्ता भोअणमंडवे जाव नमिविनमीणं विज्जाहरराईणं अट्ठाहिअ महामहिमा ४। तए णं से दिव्वे चक्करयणे आउहघरसालाओ पडिणिक्खमइ जाव उत्तरपुरत्थिमं दिसिं गंगादेवी-भवणाभिमुहे पयाए आवि होत्था ५। सच्चेव सव्वा सिंधुवत्तव्वया जाव नवरं कुंभट्ठसहस्सं रयणचित्तं णाणा-मणि-कणग-रयण-भत्तिचित्ताणि अ दुवे कणगसीहासणाइं सेसं तं चेव जाव महिमत्ति ६॥ सूत्रं ६४॥

तए णं से दिव्वे चक्करयणे गंगाए देवीए अट्ठहियाए महामहिमाए निव्वत्ताए समाणीए आउहघरसालाओ पडिणिक्खमइ२त्ता जाव गंगाए महाणईए पच्चत्थिमिल्लेणं कूलेणं दाहिणदिसि खंडप्पवायगुहाभिमुहे पयाए आवि होत्था १। तते णं से भरहे राया जाव जेणेव खंडप्पवायगुहा तेणेव उवागच्छइ २ त्ता सव्वा कयमालकवत्तव्वया णेअव्वा णवरि णट्टमालगे देवे पीतिदाणं से आलंकारिअभंडं कडगाणि अ सेसं सव्वं तहेव जाव अट्ठाहिआ महामहिमत्ति २। तए णं से भरहे राया णट्टमालगस्स देवस्स अट्ठाहिआए महामहिमाए णिव्वत्ताए समाणीए सुसेणं सेणावइं सद्दावेइ २ त्ता जाव सिंधुगमो णेअव्वो, जाव गंगाए महाणईए पुरत्थिमिल्लं णिक्खुडं सगंगासागरगिरिमेरागं समविसमणिक्खुडाणि अ ओअवेइ २ त्ता अग्गाणि वराणि रयणाणि पडिच्छइ २ त्ता जेणेव गंगा महाणई तेणेव उवागच्छइ २ त्ता दोच्चंपि सक्खंधावारबले गंगामहाणई विमलजलतुंगवीइं णावाभूएणं चम्मरयणेणं उत्तरइ २ त्ता जेणेव भरहस्स रण्णो विजयखंधावारणिवेसे जेणेव बाहिरिआ उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ २ त्ता आभिसेकाओ हत्थिरयणाओ पच्चोरुहइ २ त्ता अग्गाइं वराइं रयणाइं गहाय जेणेव भरहे राया तेणेव उवागच्छइ २ त्ता करयलपरिग्ग-

हिअं जाव अंजलिं कट्टु भरहं रायं जएणं विजएणं वद्धावेइ २ त्ता अग्गाइं वराइं रयणाइं उवणेइ ३। तए णं से भरहे राया सुसेणस्स सेणावइस्स अग्गाइं वराइं रयणाइं पडिच्छइ २ त्ता सुसेणं सेणावइं सक्कारेइ सम्माणेइ २ त्ता पडिविसज्जेइ ४। तए णं से सुसेणे सेणावई भरहस्स रणणो सेसंपि तहेव जाव विहरइ ५। तए णं से भरहे राया अगणया कयाइ सुसेणं सेणावइरयणं सद्दावेइ २ त्ता एवं वयासी—गच्छणं भो देवाणुप्पिआ! खंडगप्पवायगुहाए उत्तरिल्लस्स दुवारस्स कवाडे विहाडेहि २ त्ता जहा तिमिसगुहाए तहा भाणिअव्वं जाव पिअं भे भवउ सेसं तहेव जाव भरहो तिमिस्सगुहाए उत्तरिल्लेणं दुवारेणं अईइ ६। ससिव्व मेहंधयार-निवहं तहेव पविसंतो मंडलाइं आलिहइ ७। तीसे णं खंडगप्पवायगुहाए बहुमज्झदेसभाए जाव उम्मग्गणिमग्गजलाओ णामं दुवे महाणईओ तहेव णवरं पच्चत्थिमिल्लाओ कडगाओ पवूढाओ समाणीओ पुरत्थिमेणं गंगं महाणइं समप्पेंति ८। सेसं तहेव णवरिं पच्चत्थिमिल्लेणं कूलेणं गंगाए संकमवत्तव्वया तहेवत्ति ९। तए णं खंडगप्पवायगुहाए दाहिणिल्लस्स दुवारस्स कवाडा सयमेव महया २ कोंचारवं करेमाणा २ सरसरस्सगाइं ठाणाइं पच्चोसक्कित्था १०। तए णं से भरहे राया चक्करयणदेसियमग्गे जाव खंडगप्पवायगुहाओ दक्खिणिल्लेणं दारेणं णीणेइ ससिव्व मेहंधयारनिव-हाओ ११ ॥ सूत्रं ६५ ॥ तए णं से भरहे राया गंगाए महाणईए पच्च-त्थिमिल्ले कूले दुवालसजोअणायामं णवजोअणविच्छिण्णं जाव विजय-क्खंधावारणिवेसं करेइ, अवसिट्ठं तं चेव जाव निहिरयणाणं अट्ठमभत्तं पगिरहइ १। तए णं से भरहे राया पोसहसालाए जाव णिहिरयणे मणसि करेमाणे करेमाणे चिट्ठइत्ति २। तस्स य अपरिमिअरत्तरयणा धुअमक्खय-मव्वया सदेवा लोकोपचयंकरा उवगया णव णिहिओ लोगविस्सुअजसा, तंजहा—"नेसप्पे १ पंडुअए २ पिंगलए ३ सव्वरयण ४ महपउमे ५।

काले ६ अ महाकाले ७ माणवगे महानिही ८ संखे ९ ॥ १ ॥ णेसप्पंमि णिवेसा गामागर-णगरपट्टणाणं च । दोणमुहमडंबाणं खंधावारावणगिहाणं ॥ १ ॥ गणिअस्स य उप्पत्ती माणुम्माणस्स जं पमाणं च । धरणस्स य बीआण य उप्पत्ती पंडुए भणिआ ॥ २ ॥ सव्वा आभरणविही पुरिसाणं जा य होइ महिलाणं । आसाण य हत्थीण य पिंगलगणिहिंमि सा भणिआ ॥ ३ ॥ रयणाइं सव्वरयणे चउदसवि वराइं चक्कवट्टिस्स । उप्पज्जंते एगिंदिआइं पंचिंदिआइं च ॥ ४ ॥ वत्थाण य उप्पत्ती णिप्फत्ती चेव सव्वभत्तीणं । रंगाण य धोव्वाण य सव्वाएसा महापउमे ॥ ५ ॥ काले कालणाणं भव्वपुराणं च तिसुवि वंसेसु । सिप्पसयं कम्माणि अ तिणि पयाए हिअकराणि ॥ ६ ॥ लोहस्स य उप्पत्ती होइ महाकालि आगराणं च । रुप्पस्स सुवण्णस्स य मणिमुत्तसिलप्पवालाणं ॥ ७ ॥ जोहाण य उप्पत्ती आवरणाणं च पहरणाणं च । सव्वा य जुद्धणीई माणवगे दंडणीई अ ॥ ८ ॥ णट्टविही णाडगविही कव्वस्स य चउव्विहस्स उप्पत्ती । संखे महाणिहिमी तुडिअंगाणं च सव्वेसिं ॥ ९ ॥ चक्कट्ठपइट्ठाणा अट्ठुस्सेहा य णव य विक्खंभा । बारसदीहा मंजूससंठिआ जण्हवीइ मुहे ॥ १० ॥ वेरुलिअ-मणिकवाडा कणगमया विविह-रयणपडिपुण्णा । ससि-सूर-चक्कलक्खण अणुसमवयणोववत्ती या ॥ ११ ॥ पलिओवमट्ठिईआ णिहिसरिणामा य तत्थ खलु देवा । जेसिं ते आवासा अक्किज्जा आहिवच्चा य ॥ १२ ॥ एए णव णिहिरयणा पभूय-धण-रयण-संचयसमिद्धा । जे वसमुपगच्छंति भरहाहिवचक्कवट्टीणं ॥ १३ ॥ ३ । तए णं से भरहे राया अट्ठमभत्तंसि परिणममाणंसि पोसहसालाओ पडिणिक्खमइ, एवं मज्जणघरपवेसो जाव सेणिपसेणिसद्दावणया जाव णिहिरयणाणं अट्ठाहिअं महामहिमं करेइ ४ । तए णं से भरहे राया णिहिरयणाणं अट्ठाहिआए महामहिमाए णिव्वत्ताए समाणीए सुसेणं सेणावइरयणं सद्दावेइ २ त्ता एवं वयासी—गच्छणं भो

देवाणुप्पिआ ! गंगमहाणईए पुरत्थिमिल्लं णिक्खुडं दुच्चंपि सगंगा-सागर-गिरि-मेरागं समविसम-णिक्खुडाणि अ ओअवेहि २ त्ता एअमाणत्तिअं पच्चप्पिणाहित्ति ५। तए णं से सुसेणे तं चेव पुव्ववणिअं भाणिअव्वं जाव ओअवित्ता तमाणत्तिअं पच्चप्पिणइ पडिविसज्जेइ जाव भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरइ ६। तए णं से दिव्वे चक्करयणे अन्नया कयाइ आउह-घरसालाओ पडिणिक्खमइ २ त्ता अंतलिक्खपडिवण्णे जक्ख-सहस्स-संपरि-वुडे दिव्वतुडिअ जाव आपूरेंते चेव विजयक्खंधावारणिवेसं मज्झंमज्झेणं णिग्गच्छइ २ त्ता दाहिणपच्चत्थिमं दिसिं विणीअं रायहाणिं अभिमुहे पयाए आवि होत्था ७। तए णं से भरहे राया जाव पासइ २ त्ता हट्ठतुट्ठ जाव कोडुंबिअपुरिसे सद्दावेइ २ त्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिआ ! आभिसेक्कं जाव पच्चप्पिणंति ८॥ सूत्रं ६६॥ तए णं से भरहे राया अज्जिअरज्जो णिज्जिअसत्तू उप्पण्णसमत्तरयणे चक्करयणप्पहाणे णवणिहिवई समिद्धकोसे बत्तीस-राय-वरसहस्साणुआयमग्गे सट्ठीए वरिससहस्सेहिं केवल-कप्पं भरहं वासं ओयवेइ ओअवेत्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ २ त्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिआ ! आभिसेक्कं हत्थिरयणं हयगयरह तहेव जाव अंजण-गिरि-कूडसण्णिभं गयवइं णरवई दुरूढे १। तए णं तस्स भरहस्स रण्णो आभिसेक्कं हत्थिरयणं दुरूढस्स समाणस्स इमे अट्ठट्ठमंगलगा पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठिआ, तंजहा—सोत्थिअसिरि-वच्छ जाव दप्पणे, तयणंतरं च णं पुण्णकलसभिंगार दिव्वा य छत्तपडागा जाव संपट्ठिआ २। तयणंतरं च वेरुलिअ-भिसंत-विमलदंडं जाव अहाणु-पुव्वीए संपट्ठिअं ३। तयणंतरं च णं सत्त एगिंदिअरयणा पुरओ अहाणु-पुव्वीए संपत्थिआ, तंजहा—चक्करयणे १ छत्तरयणे २ चम्मरयणे ३ दंडरयणे ४ असिरयणे ५ मणिरयणे ६ कागणिरयणे ७, ४। तयणंतरं च णं णव महाणिहिओ पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठिआ, तंजहा—णेसप्पे पंडुयए जाव

संखे ५। तयणंतरं च णं सोलस देवसहस्सा पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठिआ ६। तयणंतरं च णं बत्तीसं रायवरसहस्सा अहाणुपुव्वीए संपट्ठिआ ७। तयणंतरं च णं सेणावइरयणे पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठिए, एवं गाहावइरयणे वद्धइरयणे पुरोहिअरयणे ८। तयणंतरं च णं इत्थिरयणे पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठिए ९। तयणंतरं च णं बत्तीसं उडुकल्लाणिआ सहस्सा पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठिआ १०। तयणंतरं च णं बत्तीसं जणवयकल्लाणिआसहस्सा पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठिआ ११। तयणंतरं च णं बत्तीसं बत्तीसइबद्धा णाडगसहस्सा पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठिआ १२। तयणंतरं च णं तिण्णि सट्ठा सूअसया पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठिआ १३। तयणंतरं च णं अट्ठारस सेणिप्पसेणीओ पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठिआ १४। तयणंतरं च णं चउरासीइं आससयसहस्सा पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठिआ १५। तयणंतरं च णं चउरासीइं हत्थिसयसहस्सा पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठिआ १६। (तयणंतरं च णं चउरासीइं रहसयसहस्सा पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठिआ) तयणंतरं च णं छण्णउई मणुस्सकोडीओ पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठिआ १७। तयणंतरं च णं बहवे राईसर-तलवर जाव सत्थवाहप्पभिईओ पुरओ अहाणुपुव्वीइ संपट्ठिआ १८। तयणंतरं च णं बहवे असिग्गाहा लट्ठिग्गाहा कुंतग्गाहा चावग्गाहा चामरगाहा पासग्गाहा फलगग्गाहा परसुग्गाहा पोत्थयग्गाहा वीणग्गाहा कूअयग्गाहा हडप्फग्गाहा पीढग्गाहा दीविअगाहा सएहिं सएहिं रूवेहिं, एवं वेसेहिं चिंधेहिं निओएहिं सएहि २ नेवत्थेहिं पुरओ अहाणुपुव्वीए संपत्थिआ १९। तयणंतरं च णं बहवे दंडिणो मुंडिणो सिहंडिणो जडिणो पिच्छिणो हासकारगा खेड्डकारगा दवकारगा चाडुकारगा कंदप्पिआ कुक्कुइआ मोहरिआ गायंता य दीवंता य वायंता य नच्चंता य हसंता य रमंता य कीलंता य सासेंता य सावेंता य जावेंता य रावेंता य सोभेंता य सोभावेंता य आलोअंता

य जअजयसद्दं च पउंजमाणा पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठिआ २० । एवं उववाइअगमेणं जाव तस्स रण्णो पुरओ महआसा आसधरा उभओ पासिं णागा णागधरा पिट्ठओ रहा रहसंगेल्ली अहाणुपुव्वीए संपट्ठिआ इति २१ । तए णं से भरहाहिवे णरिंदे हारोत्थय-सुकय-रइअवच्छे जाव अमरवइसण्णि-भाए इद्धीए पहिअकित्ती चक्करयणदेसिअमग्गे अणेग-राय-वरसहस्साणु-आयमग्गे जाव समुद्द--रवभूअंपिव करेमाणे २ सव्विद्धीए सव्वज्जुईए जाव णिग्घोसणाइयरवेणं गामागर-णागर-खेडकव्बडमडंब जाव जोअणंतरिआहिं वसहीहिं वसमाणे २ जेणेव विणीआ रायहाणी तेणेव उवागच्छइ उवाग-च्छित्ता विणीआए रायहाणीए अदूरसामंते दुवालसजोअणायामं णवजोयण-विच्छिण्णं जाव खंधावारणिवेसं करेइ २ त्ता वद्धइरयणं सद्दावेइ २ त्ता जाव पोसहसालं अणुपविसइ २ त्ता विणीआए रायहाणीए अट्ठमभत्तं पगिण्हइ २ त्ता जाव अट्ठमभत्तं पडिजागरमाणे २ विहरइ २२ । तए णं से भरहे राया अट्ठमभत्तंसि परिणममाणंसि पोसहसालाओ पडिणिक्खमइ २ त्ता कोडुंबिअपुरिसे सद्दावेइ २ त्ता तहेव जाव अंजणगिरिकूडसण्णिभं गयवइं णरवई दूरूढे तं चेव सव्वं जहा हेट्ठा णवरिं णव महाणिहिओ चत्तारि सेणाओ ण पविसंति सेसो सो चेव गमो जाव णिग्घोसणाइएणं विणीआए रायहाणीए मज्झंमज्झेणं जेणेव सए गिहे जेणेव भवणवर-वडिंसगपडिदुवारे तेणेव पहारेत्थ गमणाए २३ । तए णं तस्स भरहस्स रण्णो विणीअं रायहाणिं मज्झंमज्झेणं अणुपविसमाणस्स अप्पे-गइआ देवा विणीअं रायहाणिं सब्भंतरबाहिरिअं आसिअ-सम्मज्जिओ-वलित्तं करेंति अप्पेगइआ मंचाइमंचकलिअं करेंति, एवं सेसेसुवि पएसु २४ । अप्पेगइआ णाणाविह-राग-वसणुस्सिय-धय-पडागामंडितभूमिअं अप्पेगइआ लाउल्लोइअमहिअं करेंति अप्पेगइआ जाव गंधवट्टिभूअं करेंति, अप्पेग-इआ हिरण्णवासं वासिंति सुवण्ण-रयण-वइरआभरणवासं वासेंति २५ ।

तए णं तस्स भरहस्स रगणो विणीश्रं रायहाणिं मज्झंमज्झेणं श्रणुपवि-
समाणस्स सिंघाडग जाव महापहेसु बहवे श्रत्थत्थिश्रा कामत्थिश्रा भोग-
त्थिश्रा लाभत्थिश्रा इद्धिसिश्रा किब्बिसिश्रा कारोडिश्रा कारवाहि(भारि)श्रा
संखिया चक्किश्रा गांगलिश्रा मुहमंगलिश्रा पूसमाणाया वद्धमाणाया लंखमंख-
माइश्रा ताहिं श्रोरलाहिं इट्ठाहिं कंताहिं पिश्राहिं मणुन्नाहिं मणामाहिं
सिवाहिं धराणाहिं मंगल्लाहिं सस्सिरीश्राहिं हिश्रयगमणिज्जाहिं हिश्रय-
पल्हायणिज्जाहिं वग्गूहिं श्रणवरयं श्रभिणंदंता य श्रभिथुणंता य एवं
वयासी–जय जय णंदा ! जय जय भद्दा ! भद्दं ते श्रजिश्रं जिणाहि जिश्रं
पालयाहि जिश्रमज्झे वसाहि इंदो विव देवाणं चंदो विव ताराणं चमरो विव
श्रसुराणं धरणो विव नागाणं बहूइं पुव्वसयसहस्साइं बहूईश्रो पुव्व-
कोडीश्रो बहूईश्रो पुव्वकोडाकोडीश्रो विणीश्राए रायहाणीए चुल्लहिमवंत-
गिरि-सागरमेरागस्स य केवलकप्पस्स भरहस्स वासस्स गामागर-णगर-खेड-
कव्वड-मडंब-दोणमुह-पट्टणासम-सरिणवेसेसु सम्मं पयापालणोवज्जिश्रलद्धजसे
महया जाव श्राहेवच्चं पोरेयच्चं जाव विहराहित्तिकट्टु जयजयसद्दं पउंजंति
२६ । तए णं से भरहे राया णयणमालासहस्सेहिं पिच्छिज्जमाणे २ वयण-
माला सहस्सेहिं श्रभिथुव्वमाणे २ हिश्रयमालासहस्सेहिं उणंदिज्जमाणे २
मणोरहमालास्सहसेहिं विच्छिप्पमाणे २ कंतिरूवसोहग्गगुणेहिं पिच्छिज्ज-
माणे २ श्रंगुलिमालास्सहसेहिं दाइज्जमाणे २ दाहिणहत्थे णं वहूणं णरणारी-
सहस्साणं श्रंजलिमालासहस्साइं पडिच्छेमाणे २ भवणपंतीसहस्साइं समइच्छ-
माणे २ तंती-तल-तालतुडिश्र-गीश्रवाइश्ररवेणं मधुरेणं मणहरेणं मंजुमंजुणा
घोसेणं श्रपडिबुज्झमाणे २ जेणेव सए गिहे जेणेव भवण-वरवडिंसयदुवारे
तेणेव उवागच्छइ २ त्ता श्राभिसेक्कं हत्थिरयणं ठवेइ २ त्ता श्रभिसे-
काश्रो हत्थिरयणाश्रो पच्चोरुहइ २ त्ता सोलस देवसहस्से सक्कारेइ सम्मा-
णेइ २ त्ता वत्तीसं रायसहस्से सक्कारेइ सम्माणेइ २ त्ता सेणावइरयणं

सक्कारेइ सम्माणेइ २ त्ता एवं गाहावइरयणं वद्धइरयणं पुरोहियरयणं सक्कारेइ सम्माणेइ २ त्ता तिण्णि सट्ठे सूत्रसए सक्कारेइ सम्माणेइ २ त्ता अट्ठारस सेणिप्पसेणीओ सक्कारेइ सम्माणेइ २ त्ता अण्णेवि बहवे राईसर जाव सत्थवाहप्पभिईओ सक्कारेइ सम्माणेइ २ त्ता पडिविसज्जेइ २७। इत्थीरयणेणं बत्तीसाए उडुकल्लाणिआसहस्सेहिं बत्तीसाए जणवय-कल्लाणिआसहस्सेहिं बत्तीसाए बत्तीसइबद्धेहिं णाडयसहस्सेहिं सद्धिं संपरि-वुडे भवणवरवडिंसगं अईइ जहा कुबेरो व्व देवराया केलास-सिहरि-सिंगभूअंति २८। तए णं से भरहे राया मित्तणाइणिअगसयणसंबंधिपरिअणं पच्चुवेक्खइ २ त्ता जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता जाव मज्जणघराओ पडिणिक्खमइ २ त्ता जेणेव भोअणमंडवे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता भोअणमंडवंसि सुहासणवरगए अट्ठमभत्तं पारेइ २ त्ता उप्पिं पासायवरगए फुट्टमाणेहि मुइंगमत्थएहिं बत्तीसइबद्धेहिं णाडएहिं उवलालिज्ज-माणे २ उवणच्चिज्जमाणे २ उवगिज्जमाणे २ महया जाव भुंजमाणे विहरइ २९॥ सूत्रं ६७॥ तए णं तस्स भरहस्स रण्णो अण्णया कयाइ रज्जधुरं चिंतेमाणस्स इमेआरूवे जाव समुप्पज्जित्था १। अभिजिए णं मए णिअग-बल-वीरिअ--पुरिसक्कारपरक्कमेण चुल्लहिमवंत--गिरिसागरमेराए केवलकप्पे भरहे वासे २। तं सेअं खलु मे अप्पाणं महारायाभिसेएणं अभिसिंचावित्तए-त्तिकट्टु एवं संपेहेति २ त्ता कल्लं पाउप्पभाए जाव जलंते जेणेव मज्जणघरे जाव पडिणिक्खमइ २ त्ता जेणेव बाहिरिआ उवट्ठाणसाला जेणेव सीहा-सणे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता सीहासणवरगए पुरत्थाभिमुहे णिसीअति निसीइत्ता सोलस देवसहस्से बत्तीसं रायवरसहस्से सेणावइरयणे जाव पुरोहियरयणे तिण्णि सट्ठे सूत्रसए अट्ठारस सेणिप्पसेणीओ अण्णे अ बहवे राईसरतलवर जाव सत्थवाहप्पभिअओ सद्दावेइ २ त्ता एवं वयासी—अभिजिए णं देवाणुप्पिआ! मए णिअगबलवीरिअ जाव केवलकप्पे भरहे

वासे तं तुब्भे णं देवाणुप्पिआ ! ममं महारायाभिसेअं विअरह, तए णं से सोलस देवसहस्सा जावप्पभिइओ भरहेणं रण्णा एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठकरयल मत्थए अंजलिं कट्टु भरहस्स रण्णो एअमट्ठं सम्मं विणएणं पडिसुणेंति २ । तए णं से भरहे राया जेणेव पोसहसाला तेणेव उवागच्छइ २ त्ता जाव अट्ठमभत्तिए पडिजागरमाणे विहरइ ३ । तए णं से भरहे राया अट्ठमभत्तंसि परिणममाणंसि अभिओगिए देवे सद्दावेइ २ त्ता एवं वयासी–खिप्पामेव भो देवाणुप्पिआ ! विणीआए रायहाणीए उत्तरपुरच्छिमे दिसीभाए एगं महं अभिसेअमण्डवं विउव्वेह २ त्ता मम एअमाणत्तिअं पच्चप्पिणह ४ । तए णं ते आभिओगा देवा भरहेणं रण्णा एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठा जाव एवं सामित्ति आणाए विणएणं वयणं पडिसुणेंति पडिसुणित्ता विणीआए रायहाणीए उत्तरपुरत्थिमं दिसीभागं अवक्कमंति २ त्ता वेउव्विअसमुग्घाएणं समोहणंति २ त्ता संखिज्जाइं जोअणाइं दंडं णिसिरंति, तंजहा–रयणाणं जाव रिट्ठाणं अहाबायरे पुग्गले परिसाडेंति २ त्ता अहासुहुमे पुग्गले परिआदिअंति २ त्ता दुच्चंपि वेउव्वियसमुग्घायेणं जाव समोहणंति २ त्ता बहुसमरमणिज्जं भूमिभागं विउव्वंति से जहाणामए आलिंगपुक्खरेइ वा जाव तस्स णं बहुसमरमणिज्जस्स भूमिभागस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थ णं महं एगं अभिसेअमण्डवं विउव्वंति अणेगखंभसयसण्णिविट्ठं जाव गंधवट्टिभूअं पेच्छाघरमंडववण्णगोत्ति ५ । तस्स णं अभिसेअमंडवस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थ णं महं एगं अभिसेअपेढं विउव्वंति अच्छं सण्हं, तस्स णं अभिसेअपेढस्स तिदिसिं तओ तिसोवाणपडिरूवए विउव्वंति ६ । तेसि णं तिसोवाणपडिरूवगाणं अयमेआरूवे वण्णावासे पण्णत्ते जाव तोरणा, तस्स णं अभिसेअपेढस्स बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते ७ । तस्स णं बहुसमरमणिज्जस्स भूमिभागस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थ णं महं एगं

सीहासणं विउव्वंति ८। तस्स णं सीहासणस्स अयमेआरूवे वराणावासे पराणत्ते जाव दामवराणगं समत्तंति ९। तए णं ते देवा अभिसेअमंडवं विउव्वंति २ त्ता जेणेव भरहे राया जाव पच्चप्पिणंति १०। तए णं से भरहे राया आभिओगाणं देवाणं अंतिए एअमट्ठं सोच्चा णिसम्म हट्ठतुट्ठ जाव पोसहसालाओ पडिणिक्खमइ २ त्ता कोडुंबिअपुरिसे सद्दावेइ २ त्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिआ! आभिसेक्कं हत्थिरयणं पडिकप्पेह २ त्ता हयगय जाव सराणाहेत्ता एअमाणत्तिअं पच्चप्पिणह जाव पच्चप्पिणंति ११। तए णं से भरहे राया मज्जणघरं अणुपविसइ जाव अंजणगिरिकूडसरिणभं गयवइं णरवई दूरूढे १२। तए णं तस्स भरहस्स रराणो आभिसेक्कं हत्थिरयणं दूरूढस्स समाणस्स इमे अट्ठट्ठमंगलगा जो चेव गमो विणीअं पविसमाणस्स सो चेव णिक्खममाणस्सवि जाव अप्पडिबुज्झमाणे विणीअं रायहाणिं मज्झंमज्झेणं णिग्गच्छइ २ त्ता जेणेव विणीआए रायहाणीए उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए अभिसेअमंडवे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता अभिसेअमंडवदुवारे आभिसेक्कं हत्थिरयणं ठावेइ २ त्ता आभिसेक्काओ हत्थिरयणाओ पच्चोरुहइ २ त्ता इत्थीरयणेणं बत्तीसाए उडु-कल्लाणिआसहस्सेहिं बत्तीसाए जणवय-कल्लाणिआसहस्सेहिं बत्तीसाए बत्तीसइबद्धेहिं णाडगसहस्सेहि सद्धिं संपरिवुडे अभिसेअमंडवं अणुपविसइ २ त्ता जेणेव अभिसेअपेढे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता अभिसेअपेढं अणुप्पदाहिणीकरेमाणे २ पुरत्थिमिल्लेणं तिसोवाणपडिरूवएणं दूरूहइ २ त्ता जेणेव सीहासणे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता पुरत्थाभिमुहे सरिणसराणेत्ति १३। तए णं तस्स भरहस्स रराणो बत्तीसं रायसहस्सा जेणेव अभिसेअमंडवे तेणेव उवागच्छंति २ त्ता अभिसेअमंडवं अणुपविसंति २ त्ता अभिसेअपेढं अणुप्पयाहिणीकरेमाणा २ उत्तरिल्लेणं तिसोवाणपडिरूवएणं जेणेव भरहे राया तेणेव उवागच्छंति २ त्ता करयल जाव अंजलिं कट्टु

भरहं रायाणं जएणं विजएणं वद्धावेंति २ त्ता भरहस्स रगणो णच्चासगणे णाइदूरे सुस्सूसमाणा जाव पज्जुवासंति १४। तए णं तस्स भरहस्स रगणो सेणावइरयणे जाव सत्थवाहप्पभिईओ तेऽवि तह चेव णवरं दाहिणिल्लेणं तिसोवाणपडिरूवएणं जाव पज्जुवासंति १५। तए णं से भरहे राया आभिओगे देवे सद्दावेइ २ एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिआ! ममं महत्थं महग्घं महरिहं महारायाभिसेअं उवट्ठवेह १६। तए णं ते आभिओगिआ देवा भरहेणं रगणा एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठचित्ता जाव उत्तरपुरत्थिमं दिसीभागं अवक्कमंति अवक्कमित्ता वेउव्विअसमुग्घाएणं समोहणंति, एवं जहा विजयस्स तहा इत्थंपि जाव पंडगवणे एगओ मिलायंति एगओ मिलाइत्ता जेणेव दाहिणद्धभरहे वासे जेणेव विणिआ रायहाणी तेणेव उवागच्छंति २ त्ता विणीअं रायहाणिं अणुप्पयाहिणीकरेमाणा २ जेणेव अभिसेअमंडवे जेणेव भरहे राया तेणेव उवागच्छंति २ त्ता तं महत्थं महग्घं महरिहं महारायाभिसेअं उवट्ठवेंति १७। तए णं तं भरहं रायाणं बत्तीसं रायसहस्सा सोभणंसि तिहि-करण-दिवस-णक्खत्तमुहुत्तंसि उत्तर-पोट्ठवयाविजयंसि तेहिं साभाविएहि अ उत्तरवेउव्विएहि अ वरकमलपइट्ठाणेहि सुरभि-वरवारिपडिपुराणेहिं जाव महया महया रायाभिसेएणं अभिसिंचंति, अभिसेओ जहा विजयस्स, अभिसिंचित्ता पत्तेअं २ जाव अंजलिं कट्टु ताहि इट्ठाहिं जहा पविसंतस्स भणिआ जाव विहराहित्तिकट्टु जयजयसद्दं पउंजंति १८। तए णं तं भरहं रायाणं सेणावइरयणे जाव पुरोहियरयणे तिरिण अ सट्ठा सूअसया अट्ठारस सेणिप्पसेणीओ अराणे अ बहवे जाव सत्थवाहप्पभिइओ एवं चेव अभिसिंचंति तेहि वरकमलपइट्ठाणेहिं तहेव जाव अभिथुणंति अ सोलस देवसहस्सा एवं चेव णवरं पम्हसुकुमालाए जाव मउडं पिणद्धेंति १९। तयणंतरं च णं दद्दर-मलयसुगंधगंधिएहिं

गंधेहिं गायाइं अब्भुक्खेंति (गंधेहिं भूकुडंति) दिव्वं च सुमणो-दामं पिणद्धेंति, किं बहुणा ?, गंठिमवेढिम जाव विभूसिअं करेंति, तए णं से भरहे राया महया २ रायाभिसेएणं अभिसिंचिए समाणे कोडुंबिअपुरिसे सद्दावेइ २ त्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिआ ! हत्थिखंधवरगया विणीयाए रायहाणीए सिंघाडगतिगचउक्कचच्चर जाव महापहपहेसु महया २ सद्देणं उग्घोसेमाणा २ उस्सुक्कं उक्करं उक्किट्ठं अदिज्जं अमिज्जं अब्भडपवेसं अदंडकुदंडिमं जाव सपुरजणवयं दुवालससंवच्छरिअं पमोअं घोसेह २ ममेअमाणत्तिअं पच्च-प्पिणहत्ति २० । तए णं ते कोडुंबिअपुरिसा भरहेणं रण्णा एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठचित्तमाणंदिआ पीइमणा हरिसवसविसप्पमाणहियया विणएणं वयणं पडिसुणेंति २ त्ता खिप्पामेव हत्थिखंधवरगया जाव घोसंति २ त्ता एअमाणत्तिअं पच्चप्पिणंति २१ । तए णं से भरहे राया महया २ राया-भिसेएणं अभिसित्ते समाणे सीहासणाओ अब्भुट्ठेइ २ त्ता इत्थिरयणेणं जाव णाडगसहस्सेहिं सद्धिं संपरिवुडे अभिसेअपेढाओ पुरत्थिमिल्लेणं तिसोवाण-पडिरूवएणं पच्चोरुहइ २ त्ता अभिसेअमंडवाओ पडिणिक्खमइ २ त्ता जेणेव आभिसेक्के हत्थिरयणे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता अंजणगिरिकूड-सण्णिभं गयवइं जाव दूरूढे २२ । तए णं तस्स भरहस्स रण्णो बत्तीसं राय-सहस्सा अभिसेअपेढाओ उत्तरिल्लेणं तिसोवाणपडिरूवएणं पच्चोरुहंति २३ । तए णं तस्स भरहस्स रण्णो सेणावइरयणे जाव सत्थवाहप्पभिईओ अभिसेअ-पेढाओ दाहिणिल्लेणं तिसोवाणपडिरूवएणं पच्चोरुहंति २४ । तए णं तस्स भरहस्स रण्णो आभिसेक्कं हत्थिरयणं दूरूढस्स समाणस्स इमे अट्ठट्ठमंगलगा पुरओ जाव संपत्थिआ जोऽविअ अइगच्छमाणस्स गमो पढमो जाव कुबेराव-साणो सो चेव इहंपि कमो सक्कारजढो णेअव्वो जाव कुबेरोव्व देवराया केलासं सिहरिसिंगभूअंति २५ । तए णं से भरहे राया मज्जणघरं अणुपविसइ २ त्ता

जाव भोत्र्प्रणामंडवंसि सुहासणवरगए अट्ठमभत्तं पारेइ २ त्ता भोअणमंडवाओ पडिणिक्खमइ २ त्ता उप्पिं पासायवरगए फुट्टमाणेहिं मुइंगमत्थएहिं जाव भुंजमाणे विहरइ २६ । तए णं से भरहे राया दुवालससंवच्छरिअंसि पमोअंसि णिव्वत्तंसि समाणंसि जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता जाव मज्जणघराओ पडिणिक्खमइ २ त्ता जेणेव बाहिरिआ उवट्ठाणसाला जाव सीहासणवरगए पुरत्थाभिमुहे णिसीअइ २ त्ता सोलस देवसहस्से सक्कारेइ सम्माणेइ २ त्ता पडिविसज्जेइ २ त्ता बत्तीसं रायवरसहस्सा सक्कारेइ सम्माणेइ २ त्ता सेणावइरयणं सक्कारेइ सम्माणेइ २ त्ता जाव पुरोहियरयणं सक्कारेइ सम्माणेइ २ त्ता एवं तिण्णि सट्ठे सूआरसए अट्ठारस सेणिप्पसेणीओ सक्कारेइ सम्माणेइ २ त्ता अण्णे अ बहवे राईसरतलवर जाव सत्थवाहप्पभिइओ सक्कारेइ सम्माणेइ २ त्ता पडिविसज्जेति २ त्ता उप्पिं पासायवरगए जाव विरहइ २७ ॥ सूत्रं ६८ ॥ भरहस्स रण्णो चक्करयणे १ दंडरयणे २ असिरयणे ३ छत्तरयणे ४ एते णं चत्तारि एगिंदियरयणे आउहघरसालाए समुप्पण्णा १ । चम्मरयणे १ मणिरयणे २ कागणिरयणे ३ णव य महाणिहओ एए णं सिरिघरंसि समुप्पण्णा २ । सेणावइरयणे १ गाहावइरयणे २ वद्धइरयणे ३ पुरोहिअरयणे ४ एए णं चत्तारि मणुअरयणा विणीआए रायहाणीए समुप्पण्णा ३ । आसरयणे १ हत्थिरयणे २ एए णं दुवे पंचिंदिअरयणा वेअड्ढगिरिपायमूले समुप्पण्णा ४ । सुभद्दा इत्थीरयणे उत्तरिल्लाए विज्जाहरसेढीए समुप्पण्णे ५ ॥ सूत्रं ६९ ॥ तए णं से भरहे राया चउदसण्हं रयणाणं णवण्हं महाणिहीणं सोलसण्हं देवसाहस्सीणं बत्तीसाए रायसहस्साणं बत्तीसाए उडुकल्लाणिआसहस्साणं बत्तीसाए जणवय-कल्लाणिआसहस्साणं बत्तीसाए बत्तीसइबद्धाणं णाडगसहस्साणं तिण्हं सट्ठीणं सूयारसयाणं अट्ठारसण्हं सेणिप्पसेणीणं चउरासीइए आससयसहस्साणं

चउरासीइए दंतिसयसहस्साणं चउरासीइए रहसयसहस्साणं छरगाउइए मणुस्सकोडीणं बावत्तरीए पुरवरसहस्साणं बत्तीसाए जणवयसहस्साणं छरगाउइए गामकोडीणं णवणउइए दोणमुहसहस्साणं अडयालीसाए पट्टण-सहस्साणं चउव्वीसाए कव्वडसहस्साणं चउव्वीसाए मडंबसहस्साणं वीसाए आगरसहस्साणं सोलसराहं खेडसहस्साणं चउदसराहं संवाहसहस्साणं छप्प-गणाए अंतरोदगाणं एगूणपरणाए कुरज्जाणं विणीआए रायहाणीए चुल्लहिम-वंत-गिरिसागरमेरागस्स केवलकप्पस्स भरहस्स वासस्स अरणेसिं च बहूणं राईसरतलवर जाव सत्थवाहप्पभिईणं आहेवच्चं पोरेवच्चं भट्टित्तं सामित्तं महत्तरगत्तं आणाईसरसेणावच्चं कारेमाणे पालेमाणे ओहयणिहएसु कंटएसु उद्धिअमलिएसु सव्वसत्तुसु णिज्जिएसु भरहाहिवे णरिंदे वरचंदणचच्चिअंगे वरहाररइअवच्छे वरमउडविसिट्ठए वरवत्थभूसणधरे सव्वोउअ-सुरहि-कुसुम-वरमल्लसोभिअसिरे वरणाडग-नाडइज्जवरइत्थिगुम्मसद्धिं संपरिवुडे सव्वो-सहिसव्वरयण-सव्वसमिइसमग्गे संपुरणमणोरहे हयामित्तमाणमहणे पुव्वकय-तवप्पभावनिविट्ठसंचिअफले भुंजइ माणुस्सए सुहे भरहे णामधेज्जेत्ति ॥सूत्रं ७०॥ तए णं से भरहे राया अरणया कयाइ जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता जाव ससिव्व पिअदंसणे णरवई मज्जणघराओ पडिणि-क्खमइ २ त्ता जेणेव आदंसघरे जेणेव सीहासणे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता सीहासणवरगए पुरत्थाभिमुहे णिसीअइ २ त्ता आदंसघरंसि अत्ताणं देहमाणे २ चिट्ठइ १। तए णं तस्स भरहस्स रगणो सुभेणं परिणामेणं पसत्थेहिं अज्झवसाणेहि लेस्साहिं विसुज्झमाणीहिं २ ईहापोह-मग्गण-गवेसणं करेमाणस्स तयावरिज्जाणं कम्माणं खएणं कम्मरयविकिरणकरं अपु-व्वकरणं पविट्ठस्स अणंते अणुत्तरे निव्वाघाए निरावरणे कसिणे पडिपुरणे केवलवरनाणदंसणे समुप्पराणे २। तए णं से भरहे केवली सयमेवा-भरणालंकारं ओमुअइ २ त्ता सयमेव पंचमुट्ठिअं लोअं करेइ २ त्ता

आयंसघराओ पडिणिक्खमइ २ त्ता अंतेउरमज्झंमज्झेणं णिग्गच्छइ २ त्ता दसहि रायवरसहस्सेहिं सद्धिं संपरिवुडे विणीअं रायहाणि मज्झंमज्झेणं णिग्गच्छइ २ त्ता मज्झदेसे सुहंसुहेणं विहरइ २ त्ता जेणेव अट्ठावए पव्वते तेणेव उवागच्छइ २ त्ता अट्ठावयं पव्वयं सणिअं २ दुरूहइ २ त्ता मेघघणसण्णिकासं देवसण्णिवायं पुढविसिलावट्टयं पडिलेहेइ २ त्ता संलेहणा-झूसणाझूसिए भत्तपाणपडिआइक्खिए पाओवगए कालं अणवकंखमाणे २ विहरइ ३। तए णं से भरहे केवली सत्तत्तरिं पुव्वसयसहस्साइं कुमार-वासमज्झे वसित्ता एगं वाससहस्सं मंडलिअरायमज्झे वसित्ता छ पुव्व-सयसहस्साइं वाससहस्सूणगाइं महारायमज्झे वसित्ता तेसीइ पुव्वसयसहस्साइं अगारवासमज्झे वसित्ता एगं पुव्वसयसहस्सं देसूणगं केवलिपरिआयं पाउणित्ता तमेव बहुपडिपुण्णं सामन्नपरिआयं पाउणित्ता चउरासीइ पुव्वसयसहस्साइं सव्वाउअं पाउणित्ता मासिएणं भत्तेणं अपाणएणं सवणेणं णक्खत्तेणं जोगमुवागएणं खीणे वेअणिज्जे आउए णामे गोए कालगए वीइक्कंते समुज्जाए छिण्ण-जाइ-जरा-मरणबन्धणे सिद्धे बुद्धे मुत्ते परिणिव्वुडे अंतगडे सव्वदुक्खप्पहीणे ४ ॥ इति भरतचक्रिचरितं ॥ सूत्रं ७१ ॥ भरहे अ इत्थ देवे महिड्ढीए महज्जुईए जाव पलिओवमट्ठिईए परिवसइ, से एएणट्ठेणं गोअमा ! एवं वुच्चइ भरहे वासे २ इति १। अदुत्तरं च णं गोयमा ! भरहस्स वासस्स सासए णामधिज्जे पण्णत्ते जं ण कयाइ ण आसि ण कयाइ णत्थि ण कयाइ ण भविस्सइ भुविं च भवइ अ भविस्सइ अ धुवे णिअए सासए अक्खए अव्वए अवट्ठिए णिच्चे भरहे वासे २ ॥ सूत्रं ७२ ॥

॥ इति तृतीयो वक्षस्कारः ॥ ३ ॥

॥ अथ चतुर्थो वर्षधरवर्षवर्णनाख्यो वक्षस्कारः ॥

कहि णं भंते ! जम्बुद्दीवे २ चुल्लहिमवंते णामं वासहरपव्वए पण्णत्ते ?, गोत्रमा ! हेमवयस्स वासस्स दाहिणेणं भरहस्स वासस्स उत्तरेणं पुरत्थिमलवणसमुद्दस्स पच्चत्थिमेणं पच्चत्थिमलवणसमुद्दस्स पुरत्थिमेणं एत्थ णं जम्बुद्दीवे दीवे चुल्लहिमवंते णामं वासहरपव्वए पण्णत्ते, पाईणपडीणायए उदीणदाहिणविच्छिण्णे दुहा लवणसमुद्दं पुट्ठे पुरत्थिमिल्लाए कोडीए पुरत्थिमिल्लं लवणसमुद्दं पुट्ठे पच्चत्थिमिल्लाए कोडीए पच्चत्थिमिल्लं लवणसमुद्दं पुट्ठे १ । एगं जोत्रणसयं उद्धं उच्चत्तेणं पणवीसं जोत्रणाइं उव्वेहेणं एगं जोत्रणसहस्सं बावण्णं च जोत्रणाइं दुवालस य एगूणवीसइ भाए जोत्रणस्स विक्खंभेणंति २। तस्स बाहा पुरत्थिमपच्चत्थिमेणं पंच जोत्रणसहस्साइं तिण्णि त्र पण्णासे जोत्रणसए पण्णरस य एगूणवीसइभाए जोत्रणस्स त्रद्धभागं च त्रायामेणं ३ । तस्स जीवा उत्तरेणं पाईणपडिणायया जाव पच्चत्थिमिल्लाए कोडीए पच्चत्थिमिल्लं लवणसमुद्दं पुट्ठा चउव्वीसं जोत्रणसहस्साइं णव य बत्तीसे जोत्रणसए त्रद्धभागं च किंचिविसेसूणा त्रायामेणं पण्णत्ता ४ । तीसे धणुपट्ठे दाहिणेणं पणवीसं जोत्रणसहस्साइं दोण्णि त्र तीसे जोत्रणसए चत्तारि त्र एगूणवीसइभाए जोत्रणस्स परिक्खेवेणं पण्णत्ते ५ । रुत्रगसंठाणसंठिए सव्वकणगामए त्रच्छे सण्हे तहेव जाव पडिरूवे उभत्रो पासिं दोहिं पउमवरवेइत्राहिं दोहि त्र वणसंडेहिं संपरिक्खित्ते दुण्हवि पमाणं वण्णगोत्ति ६ । चुल्लहिमवंतस्स वासहरपव्वयस्स उवरिं बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते से जहा णामए त्रालिंगपुक्खरेइ वा जाव बहवे वाणमंतरा देवा य देवीत्रो त्र त्रासयंति जाव विहरंति ७ ॥ सूत्रं ७२ ॥ तस्स णं बहुसमरमणिज्जस्स भूमिभागस्स बहुमज्झदेसभाए इत्थ णं इक्के महं पउमद्दहे णामं दहे पण्णत्ते पाईणपडिणायए उदीणदाहिणविच्छिण्णे इक्कं

जोअणसहस्सं आयामेणं पंच जोअणसयाइं विक्खंभेणं दस जोअणाइं उव्वेहेणं अच्छे सण्हे रययामयकूले जाव पासाईए जाव पडिरूवेत्ति १। से णं एगाए पउमवरवेइआए एगेण य वणसंडेणं सव्वओ समंता संपरिक्खित्ते वेइआ-वणसंडवण्णओ भाणिअव्वोत्ति, तस्स णं पउमद्दहस्स चउद्दिसिं चत्तारि तिसोवाणपडिरूवगा पण्णत्ता, वण्णावासो भाणिअव्वोत्ति २। तेसि णं तिसोवाण-पडिरूवगाणं पुरओ पत्तेअं २ तोरणा पण्णत्ता, ते णं तोरणा णाणामणिमया ३। तस्स णं पउमद्दहस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थं महं एगे पउमे पण्णत्ते, जोअणं आयामविक्खंभेणं अद्धजोअणं बाहल्लेणं दस जोअणाइं उव्वेहेणं दो कोसे ऊसिए जलंताओ साइरेगाइं दसजोअणाइं सव्वग्गेणं पण्णत्ता ४। से णं एगाए जगईए सव्वओ समंता संपरिक्खित्ते जम्बुद्दीवजगइप्पमाणा गवक्ख-कडएवि तह चेव पमाणेणंति, तस्स णं पउमस्स अयमेआरूवे वण्णावासे पण्णत्ते, तंजहा—वइरामया मूला रिट्ठामए कंदे वेरुलिआमए णाले वेरुलि-आमया बाहिरपत्ता जम्बूणयामया अब्भिंतरपत्ता तवणिज्जमया केसरा णाणामणिमया पोक्खरत्थिभाया कणगामई कण्णिगा, सा णं अद्धजोयणं आयामविक्खंभेणं कोसं बाहल्लेणं सव्वकणगामई अच्छा सण्हा जाव पडि-रुवा ५। तीसे णं कण्णिआए उप्पिं बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते, से जहा णामए आलिंगपुक्खरेइ वा जाव तस्स णं बहुसमरमणिज्जस्स भूमि-भागस्स बहुमज्झदेसभाए ६। एत्थ णं महं एगे भवणे पण्णत्ते, कोसं आयामेणं अद्धकोसं विक्खंभेणं देसूणगं कोसं उद्धं उच्चत्तेणं अणेगखंभ-सयसण्णिविट्ठे पासाईए दरिसणिज्जे ७। तस्स णं भवणस्स तिदिसिं तओ दारा पण्णत्ता, ते णं दारा पंचधणुसयाइं उद्धं उच्चत्तेणं अद्धाइज्जाइं धणुसयाइं विक्खंभेणं तावतिअं चेव पवेसेणं सेआवरकणगथूमिआ जाव वणमालाओ णेअव्वाओ ८। तस्स णं भवणस्स अंतो बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते से जहाणामए आलिंग पुक्खरेइ वा जाव तस्स णं बहुमज्झ-

देसभाए एत्थ णं महई एगा मणिपेढिआ पण्णत्ता, सा णं मणिपेढिआ पंचधणुसयाइं आयामविक्खंभेणं अद्धाइज्जाइं धणुसयाइं बाहल्लेणं सव्व-मणिमई अच्छा सण्हा जाव पडिरूवा ९ । तीसे णं मणिपेढिआए उप्पिं एत्थ णं महं एगे सयणिज्जे पण्णत्ते सयणिज्जवण्णओ भाणिअव्वो १० । से णं पउमे अण्णेणं अट्ठसएणं पउमाणं तदद्धुच्चत्तप्पमाणमित्ताणं सव्वओ समंता संपरिक्खित्ते, ते णं पउमा अद्धजोअणं आयामविक्खंभेणं कोसं बाहल्लेणं दसजोअणाइं उव्वेहेणं कोसं ऊसिया जलंताओ साइरेगाइं दसजोअणाइं उच्चत्तेणं ११ । तेसि णं पउमाणं अयमेआरूवे वण्णावासे पण्णत्ते, तंजहा—वइरामया मूला जाव कणगामई कण्णिआ, सा णं कण्णिआ कोसं आयामेणं अद्धकोसं बाहल्लेणं सव्वकणगामई अच्छा इति १२ । तीसे णं कण्णिआए उप्पिं बहुसमरमणिज्जे जाव मणीहिं उवसोभिए, तस्स णं पउमस्स अवरुत्तरेणं उत्तरेणं उत्तरपुरत्थिमेणं एत्थ णं सिरीए देवीए चउण्हं सामाणिअसाहस्सीणं चत्तारि पउमसाहस्सीओ पण्णत्ताओ १३ । तस्स णं पउमस्स पुरत्थिमेणं एत्थ णं सिरीए देवीए चउण्हं महत्तरिआणं चत्तारि पउमा पण्णत्ता, तस्स णं पउमस्स दाहिण-पुरत्थिमेणं सिरिए देवीए अब्भिंतरिआए परिसाए अट्ठण्हं देवसाहस्सीणं अट्ठ पउमसाहस्सीओ पण्णत्ताओ, दाहिणेणं मज्झिमपरिसाए दसण्हं देवसाहस्सीणं दस पउमसाहसीओ पण्णत्ताओ, दाहिणपच्चत्थिमेणं बाहि-रिआए परिसाए बारसण्हं देवसाहस्सीणं बारस पउमसाहस्सीओ पण्णत्ताओ, पच्चत्थिमेणं सत्तण्हं अणिआहिवईणं सत्त पउमा पण्णत्ता १४ । तस्स णं पउमस्स चउद्दिसिं सव्वओ समंता इत्थ णं सिरीए देवीए सोलसण्हं आय-रक्खदेवसाहस्सीणं सोलस पउमसाहस्सीओ पण्णत्ताओ, से णं तीहिं पउम-परिक्खेवेहिं सव्वओ समंता संपरिक्खित्ते, तंजहा—अब्भितरकेणं मज्झिमएणं बाहिरएणं, अब्भितरए पउमपरिक्खेवे बत्तीसं पउमसयसाहस्सीओ पण्णत्ताओ

मज्झिमए पउमपरिक्खेवे चत्तालीसं पउमसयसाहस्सीओ पराणत्ताओ बाहिरए पउमपरिक्खेवे अडयालीसं पउमसयसाहस्सीओ पराणत्ताओ, एवामेव सपुव्वावरेणं तिहिं पउमपरिक्खेवेहिं एगा पउमकोडी वीसं च पउमसयसाहस्सीओ भवंतीति अक्खायं १५। से केणट्ठे णं भंते ! एवं वुच्चइ-पउमद्दहे २ ?, गोअमा ! पउमद्दहे णं तत्थ २ देसे तहिं २ बहवे उप्पलाइं जाव सयसहस्सपत्ताइं पउमद्दहप्पभाइं (पउमद्दहवराणाइं) पउमद्दहवराणाभाइं सिरी अ इत्थ देवी महिद्धीआ जाव पलिओवमट्ठिईआ परिवसइ, से एएणट्ठे णं जाव अदुत्तरं च णं गोअमा ! पउमद्दहस्स सासए णामधेज्जे पराणत्ते ण कयाई णासि न कयाई णत्थि जाव भरहे वासे १६ ॥ सूत्रं ७४ ॥

तस्स उ णं पउमद्दहस्स पुरत्थिमिल्लेणं तोरणेणं गंगा महाणई पवूढा समाणी पुरत्थाभिमुही पञ्च जोअणसयाइं पव्वएणं गंता गंगावत्तणकूडे आवत्ता समाणी पञ्च तेवीसे जोअणसए तिरिण अ एगूणवीसइभाए जोअणस्स दाहिणाभिमुही पव्वएणं गंता महया घडमुहपवत्तएणं मुत्तावलिहारसंठिएणं साइरेगजोअणसइएणं पवाएणं पवडइ १ । गंगा महाणई जओ पवडइ इत्थ णं महं एगा जिब्भिया पराणत्ता, सा णं जिब्भिआ अद्धजोअणं आयामेणं छ सकोसाइं जोअणाइं विक्खंभेणं अद्धकोसं बाहल्लेणं मगर-मुह-विउट्ट-संठाणसंठिआ सव्ववइरामई अच्छा सराहा २ । गंगा महाणई जत्थ पवडइ एत्थ णं महं एगे गंगप्पवाए कुंडे णामं कुंडे पराणत्ते, सट्ठिं जोअणाइं आयामविक्खंभेणं णउअं जोअणसयं किंचिविसेसाहिअं परिक्खेवेणं, दस जोअणाइं उव्वेहेणं अच्छे सराहे रययामयकूले समतीरे वइरामयपासाणे वइरतले सुवराण-सुब्भ-रययामयवालुआए वेरुलिअ-मणि-फालिअ-पडलपच्चोअडे सुहोआरे सुहोत्तारे णाणा-मणि-तित्थसुबद्धे वट्टे अणुपुव्व-सुजाय-वप्प-गंभीर-सीअलजले संछराण-पत्त-भिसमुणाले बहुउप्पल-कुमुअ-णलिण-सुभग-सोगंधिअ-पोंडरीअ-महापोंडरीअ-सयपत्त-सहस्सपत्त-

सयसहस्सपत्त-पप्फुल्लकेसरोवचिए छप्पय-महुयर-परिभुज्जमाणकमले अच्छ-विमल-पत्थसलिले पुण्णे पडिहत्थ-भमंत-मच्छ-कच्छभ-अणेगसउण-गण-मिहुण-पविअरिय-सद्दुन्नइअ-महुरसरणाइए पासाईए दरिसणिज्जे अभिरूवे पडिरूवे ३। से णं एगाए पउमवरवेइयाए एगेण य वणसण्डेणं सव्वओ समंता संपरिक्खित्ते वेइआवणसंडगाणं पउमाणं च वण्णओ भाणिअव्वो ४। तस्स णं गंगप्पवायकुंडस्स तिदिसिं तओ तिसोवाणपडिरूवगा पण्णत्ता, तंजहा–पुरत्थिमेणं दाहिणेणं पच्चत्थिमेणं, तेसि णं तिसोवाणपडिरूवगाणं अयमेयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते, तंजहा–वइरामया णेम्मा रिट्ठामया पइट्ठाणा वेरुलिआमया खंभा सुवण्णरुप्पमया फलया लोहिक्खमईओ सूईओ वइरामया संधी णाणामणिमया आलंबणा आलंबणबाहाओत्ति ५। तेसि णं तिसोवाणपडिरूवगाणं पुरओ पत्तेअं २ तोरणा पण्णत्ता, ते णं तोरणा णाणामणिमया णाणामणिमएसु खंभेसु उवणिविट्ठसंनिविट्ठा विविहमुत्तंतरोवइआ विविह-तारारूवोवचिआ ईहामिअ-उसह-तुरग-णर-मगर-विहग-वालग-किण्णर-रुरु-सरभ-चमर-कुंजर-वणलय-पउमलयभत्तिचित्ता खंभुग्गय-वइर-वेइआ परिगयाभिरामा विज्जाहर-जमल-जुअल-जंतजुत्ताविव अच्चिसहस्समालणीआ रूवगसहस्सकलिआ भिसमाणा भिब्भिसमाणा चक्खुलोअणलेसा सुहफासा सस्सिरीअरूवा घंटावलि-चलिअ-महुर-मणहरसरा पासादिआ ४, ६। तेसिं णं तोरणाणं उवरिं बहवे अट्ठट्ठमंगलगा पण्णत्ता, तंजहा–सोत्थिए सिरिवच्छे जाव पडिरूवा, तेसि णं तोरणाणं उवरिं बहवे किण्हचामरज्झया जाव सुक्किल्लचामरज्झया अच्छा सण्हा रुप्पपट्टा वइरामयदण्डा जलयामलगंधिआ सुरम्मा पासाईया ४, ७। तेसि णं तोरणाणं उप्पिं बहवे छत्ताइच्छत्ता पडागाइपडागा घंटाजुअला चामरजुअला उप्पलहत्थगा पउमहत्थगा जाव सयसहस्सपत्तहत्थगा सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा ८। तस्स णं गंगप्पवायकुंडस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थ णं महं एगे गंगादीवे

णामं दीवे पण्णत्ते अट्ठ जोअणाइं आयामविक्खंभेणं साइरेगाइं पणवीसं जोअणाइं परिक्खेवेणं दो कोसे ऊसिए जलंताओ सव्ववइरामए अच्छे सण्हे, से णं एगाए पउमवरवेइआए एगेण य पुणसंडेणं सव्वओ समंता संपरिक्खित्ते वण्णओ भाणिअव्वो १। गंगादीवस्स णं दीवस्स उप्पिं बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते, तस्स णं बहुमज्झदेसभाए एत्थ णं महं गंगाए देवीए एगे भवणे पण्णत्ते कोसं आयामेणं अद्धकोसं विक्खंभेणं देसूणगं च कोसं उद्धं उच्चत्तेणं अणेगखंभसयसण्णिविट्ठे जाव बहुमज्झदेसभाए मणिपेढियाए सयणिज्जे १०। से केणट्ठेणं जाव सासए णामधेज्जे पण्णत्ते, तस्स णं गंगप्पवायकुंडस्स दक्खिणिल्लेणं तोरणेणं गंगामहाणई पवूढा समाणि उत्तरद्धभरहवासं एज्जेमाणी २ सत्तहिं सलिलासहस्सेहिं आउरेमाणी २ अहे खंडप्पवायगुहाए वेअद्धपव्वयं दालइत्ता दाहिणद्धभरहवासं एज्जेमाणी २ दाहिणद्धभरहवासस्स बहुमज्झदेसभागं गंता पुरत्थाभिमुही आवत्ता समाणी चोद्दसहिं सलिलासहस्सेहिं समग्गा अहे जगइं दालइत्ता पुरत्थिमेणं लवणसमुद्दं समप्पेइ ११। गंगा णं महाणई पवहे छ सकोसाइं जोअणाइं विक्खंभेणं अद्धकोसं उव्वेहेणं तयणंतरं च णं मायाए २ परिवद्धमाणी २ मुहे बासट्ठिं जोअणाइं अद्धजोअणं च विक्खंभेणं सकोसं जोअणं उव्वेहेणं उभओ पासिं दोहिं पउमवरवेइआहिं दोहिं वणसंडेहिं संपरिक्खित्ता वेइआवणसंडवण्णओ भाणिअव्वो १२। एवं सिंधूएवि णेअव्वं जाव तस्स णं पउमद्दहस्स पच्चत्थिमिल्लेणं तोरणेणं सिंधुआवत्तणकूडे दाहिणाभिमुही सिंधुप्पवायकुंडं सिंधुद्दीवो अट्ठो सो चेव जाव अहेतिमिसगुहाए वेअद्धपव्वयं दालइत्ता पच्चत्थिमाभिमुही आवत्ता समाणा चोद्दससलिला अहे जगइं पच्चत्थिमेणं लवणसमुद्दं जाव समप्पेइ, सेसं तं चेवत्ति १३। तस्स णं पउमद्दहस्स उत्तरिल्लेणं तोरणेणं रोहिअंसा महाणई पवूढा समाणी दोण्णि छावत्तरे

जोअणसए छच्च एगूणवीसइभाए जोअणस्स उत्तराभिमुही पव्वएणं गंता महया घड-मुहपवत्तिएणं मुत्तावलि-हारसंठिएणं साइरेग-जोअणसइएणं पवाएणं पवडइ १४। रोहिअंसाणामं महाणई जओ पवडइ एत्थ णं महं एगा जिब्भिआ पणत्ता, सा णं जिब्भिआ जोअणं आयामेणं अद्धतेरसजोअणाइं विक्खंभेणं कोसं बाहल्लेणं मगरमुह-विउट्ठसंठाणसंठिआ सव्ववइरामई अच्छा १५। रोहिअंसा महाणई जहिं पवडइ एत्थ णं महं एगे रोहिअंसापवायकुण्डे णाम कुण्डे पणत्ते सवीसं जोअणसयं आयामविक्खंभेणं तिण्णि असीए जोअणसए किंचिविसेसुणे परिक्खेवेणं, दसजोअणाइं उव्वेहेणं अच्छे कुंडवण्णओ जाव तोरणा १६। तस्स णं रोहिअंसाववायकुंडस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थ णं महं एगे रोहिअंसा णामं दीवे पणत्ते सोलस जोअणाइं आयामविक्खंभेणं साइरेगाइं पण्णासं जोयणाइं परिक्खेवेणं दो कोसे ऊसिए जलंताओ सव्वरयणामए अच्छे सण्हे सेसं तं चेव जाव भवणं अट्ठो अ भाणिअव्वोति १७। तस्स णं रोहिअंसप्पवायकुंडस्स उत्तरिल्लेणं तोरणेणं रोहिअंसा महाणई पवूढा समाणी हेमवयं वासं एज्जेमाणी २ चउद्दसहिं सलिलासहस्सेहिं आपूरेमाणी २ सद्दावइ-वट्टवेअड्ढपव्वयं अद्धजोअणेणं असंपत्ता समाणी पच्चत्थिमाभिमुही आवत्ता समाणी हेमवयं वासं दुहा विभयमाणी २ अट्ठावीसाए सलिलासहस्सेहिं समग्गा अहे जगइं दालइत्ता पच्चत्थिमेणं लवणसमुद्दं समप्पेइ १८। रोहिअंसा णं पवहे अद्धतेरसजोअणाइं विक्खंभेणं कोसं उव्वेहेणं तयणंतरं च णं मायाए २ परिवद्धमाणी २ मुहमूले पणवीसं जोअणसयं विक्खंभेणं अद्धाइज्जाइं जोअणाइं उव्वेहेणं उभओ पासिं दोहिं पउमवरवेइआहिं दोहि अ वणसंडेहिं संपरिक्खित्ता १९ ॥सूत्रं ७५॥ चुल्लहिमवंते णं भंते! वासहरपव्वए कइ कूडा पणत्ता?, गोयमा! इक्कारस कूडा पणत्ता, तंजहा-सिद्धायणकूडे १ चुल्लहिमवन्तकूडे २

भरहकूडे ३ इलादेवीकूडे ४ गंगादेवीकूडे ५ सिरिकूडे ६ रोहिअंसकूडे ७ सिन्धुदेवीकूडे ८ सुरदेवीकूडे ९ हेमवयकूडे १० वेसमणकूडे ११, १। कहि णं भंते ! चुल्लहिमवन्ते वासहरपव्वए सिद्धायणकूडे णामं कूडे पण्णत्ते ?, गोयमा ! पुरच्छिम-लवणसमुद्दस्स पच्चत्थिमेणं चुल्लहिमवन्त-कूडस्स पुरत्थिमेणं एत्थ णं सिद्धायणकूडे णामं कूडे पण्णत्ते, पंच जोअण-सयाइं उद्धं उच्चत्तेणं मूले पंच जोअणसयाइं विक्खंभेणं मज्झे तिण्णि अ पण्णत्तरे जोअणसए विक्खंभेणं उप्पिं अद्धाइज्जे जोअणसए विक्खंभेणं मूले एगं जोअणसहस्सं पंच य एगासीए जोअणसए किंचिविसेसाहिए परिक्खेवेणं मज्झे एगं जोअणसहस्सं एगं च छलसीअं जोअणसयं किंचिविसेसूणं परिक्खेवेणं उप्पिं सत्तइक्काणउए जोअणसए किंचिविसेसूणे परिक्खेवेणं, मूले विच्छिण्णे मज्झे संखित्ते उप्पिं तणुए गोपुच्छसंठाणसंठिए सव्वरयणा-मए अच्छे, से णं एगाए पउमवरवेइआए एगेण य वणसंडेणं सव्वओ समंता संपरिक्खित्ते सिद्धायणस्स कूडस्स णं उप्पिं बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते जाव तस्स णं बहुसमरमणिज्जस्स भूमिभागस्स बहुमज्झ-देसभाए एत्थ णं महं एगे सिद्धायणे पण्णत्ते पण्णासं जोअणाइं आया-मेणं पणवीसं जोअणाइं विक्खंभेणं छत्तीसं जोअणाइं उद्धं उच्चत्तेणं जाव जिणपडिमावण्णओ भाणिअव्वो २। कहि णं भंते ! चुल्लहिमवंते वासहर-पव्वए चुल्लहिमवंतकूडे नामं कूडे पण्णत्ते ?, गोयमा ! भरहकूडस्स पुरत्थि-मेणं सिद्धायणकूडस्स पच्चत्थिमेणं, एत्थ णं चुल्लहिमवंते वासहरपव्वए चुल्लहिमवंतकूडे णामं कूडे पण्णत्ते, एवं जो चेव सिद्धायणकूडस्स उच्चत्त-विक्खंभ-परिक्खेवो जाव बहुसमरमणिज्जस्स भूमिभागस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थ णं महं एगे पासायवडेंसए पण्णत्ते बासट्ठिं जोअणाइं अद्धजोअणं च उच्चत्तेणं इकतीसं जोअणाइं कोसं च विक्खंभेणं अब्भुग्गय-मूसिअपहसिए विव विविह-मणि-रयणभत्तिचित्ते वाउद्धुअ-विजय-वेजयंती-पडाग-च्छत्ताइ-

छत्तकलिए तुंगे गगणतल-मभिलंघमाणसिहरे जालंतर-रयण-पंजरुम्मीलिएव्व मणिरयणथूभिआए विअसिअ-सयवत्त-पुंडरीअ-तिलय-रयणद्धचंदचित्ते णाणामणिमयदामालंकिए अंतो बहिं च सण्ह-वइर-तवणिज्ज-रुइल-वालुगापत्थडे सुहफासे सस्सिरीअरूवे पासाईए जाव पडिरूवे, तस्स णं पासायवडेंसगस्स अंतो बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पन्नत्ते जाव सीहासणं सपरिवारं ३। से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ चुल्लहिमवंतकूडे २ ?, गोयमा ! चुल्लहिमवंते णामं देवे महिद्धीए जाव परिवसइ ४। कहि णं भंते ! चुल्लहिमवंतगिरिकुमारस्स देवस्स चुल्लहिमवंता णामं रायहाणी पन्नत्ता ?, गोयमा ! चुल्लहिमवंतकूडस्स दक्खिणेणं तिरियमसंखेज्जे दीवसमुद्दे वीईवइत्ता अण्णं जम्बुद्दीवं २ दक्खिणेणं बारस जोअणसहस्साइं ओगाहित्ता इत्थ णं चुल्लहिमवंतस्स गिरिकुमारस्स देवस्स चुल्लहिमवंता णामं रायहाणी पण्णत्ता, बारस जोयणसहस्साइं आयामविक्खंभेणं, एवं विजयरायहाणीसरिणा भाणिअव्वा ५। एवं अवसेसाणवि कूडाणं वत्तव्वया णेअव्वा, आयाम--विक्खंभ--परिक्खेव--पासायदेवयाओ सीहासणपरिवारो अट्ठो अ देवाण य देवीण य रायहाणीओ णेअव्वाओ, चउसु देवा चुल्लहिमवंत १ भरह २ हेमवय ३ वेसमणकूडेसु ४, सेसेसु देवयाओ ६। से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ चुल्लहिमवंते वासहरपव्वए २ ? गोयमा ! महाहिमवंतवासहरपव्वयं पणिहाय आयामुच्चत्तुव्वेह-विक्खंभ-परिक्खेवं पडुच्च ईसिं खुड्डतराए चेव हस्सतराए चेव णीअतराए चेव, चुल्लहिमवंते अ इत्थ देवे महिद्धीए जाव पलिओवमट्ठिइए परिवसइ, से एएणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—चुल्लहिमवंते वासहरपव्वए २, अदुत्तरं च णं गोयमा ! चुल्लहिमवंतस्स सासए णामधेज्जे पण्णत्ते जं ण कयाइ णासि ३,७ ॥ सूत्रं ७६ ॥

कहि णं भंते ! जंबुद्दीवे दीवे हेमवए णामं वासे पण्णत्ते ?, गोयमा ! महाहिमवंतस्स वासहरपव्वयस्स दक्खिणेणं चुल्लहिमवंतस्स वासहर-

पव्वयस्स उत्तरेणं पुरत्थिमलवणसमुद्दस्स पच्चत्थिमेणं पच्चत्थिमलवणसमुद्दस्स पुरत्थिमेणं एत्थ णं जंबुद्दीवे दीवे हेमवए णामं वासे पराणत्ते १। पाईण-पडीणायए उदीण-दाहिणविच्छिराणे पलिअंक-संठाणसंठिए दुहा लवण-समुद्दं पुट्ठे पुरत्थिमिल्लाए कोडीए पुरत्थिमिल्लं लवणसमुद्दं पुट्ठे, पच्चत्थिमिल्लाए कोडीए पच्चत्थिमिल्लं लवणसमुद्दं पुट्ठे २। दोरिण जोअणसहस्साइं एगं च पंचुत्तरं जोअणसयं पंच य एगूणवीसइभाए जोअणस्स विक्खंभेणं, तस्स बाहा पुरत्थिमपच्चत्थिमेणं छज्जोअणसहस्साइं सत्त य पणवराणे जोअणसए तिरिण अ एगूणवीसइभाए जोअणस्स आयामेणं ३। तस्स जीवा उत्तरेणं पाईणपडीणायया दुहओ लवणसमुद्दं पुट्ठा पुरत्थिमिल्लाए कोडीए पुरत्थिमिल्लं लवणसमुद्दं पुट्ठा पच्चत्थिमिल्लाए जाव पुट्ठा सत्ततीसं जोअणसहस्साइं छच्च चउवत्तरे जोअणसए सोलस य एगूणवीसइभाए जोअणस्स किंचिविसेसूणे आयामेणं ४। तस्स धणुं दाहिणेणं अट्ठतीसं जोअणसहस्साइं सत्त य चत्ताले जोअणसए दस य एगूणवीसइभाए जोअणस्स परिक्खेवेणं ५। हेमवयस्स णं भंते! वासस्स केरिसए आयारभावपडोआरे पराणत्ते?, गोयमा! बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पराणत्ते, एवं तइअसमाणुभावो णेअव्वोत्ति ६॥ सूत्रं ७७॥ कहि णं भंते! हेमवए वासे सद्दावई णामं वट्टवेअद्धपव्वए पराणत्ते?, गोअमा! रोहिआए महाणईए पच्चच्छिमेणं रोहिअंसाए महाणईए पुरत्थिमेणं हेमवय-वासस्स बहुमज्झदेसभाए, एत्थ णं सद्दावई णामं वट्टवेअद्धपव्वए पराणत्ते १। एगं जोअणसहस्सं उद्धं उच्चत्तेणं अद्धाइज्जाइं जोअणसयाइं उव्वेहेणं सव्व-त्थसमे पल्लग-संठाणसंठिए एगं जोअणसहस्सं आयामविक्खंभेणं तिरिण जोअणसहस्साइं एगं च बावट्ठं जोअणसयं किंचिविसेसाहिअं परिक्खेवेणं पराणत्ते, सव्वरयणामए अच्छे २। से णं एगाए पउमवरवेइआए एगेण य वणसंडेणं सव्वओ समंता संपरिक्खित्ते, वेइआवणसंडवराणओ भाणिअव्वो

३। सद्दावइस्स णं वट्टवेअद्धपव्वयस्स उवरिं बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पगणत्ते, तस्स णं बहुसमरमणिज्जस्स भूमिभागस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थ णं महं एगे पासायवडेंसए पगणत्ते बावट्ठिं जोअणाइं अद्धजोयणं च उद्धं उच्चत्तेणं इक्कतीसं जोअणाइं कोसं च आयामविक्खंभेणं जाव सीहासणं सपरिवारं ४। से केणट्ठे णं भंते! एवं वुच्चइ सद्दावई वट्टवेयद्धपव्वए २?, गोअमा! सद्दावइ–वट्टवेअद्धपव्वए णं खुड्डा खुड्डिआसु वावीसु जाव बिलपंतिआसु बहवे उप्पलाइं पउमाइं सद्दावइप्पभाइं सद्दावइवगणाइं सद्दावतिवगणाभाइं सद्दावई अ इत्थ देवे महिद्धीए जाव महाणुभावे पलिओवमठिइए परिवसइ ५। से णं तत्थ चउगहं सामाणिअसाहस्सीणं जाव रायहाणी विनेयव्वा, मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं अगणंमि जम्बुद्दीवे दीवे त्ति ६॥ सूत्रं ७८॥ से केणट्ठे णं भंते! एवं वुच्चइ हेमवए वासे २?, गोअमा! चुल्लहिमवंतमहाहिमवंतेहिं वासहरपव्वएहिं दुहओ समवगूढे णिच्चं हेमं दलइ णिच्चं हेमं दलइत्ता णिच्चं हेमं पगासइ हेमवए अ इत्थ देवे महिद्धीए पलिओवमट्ठिइए परिवसइ, से तेणट्ठे णं गोअमा! एवं वुच्चइ हेमवए वासे हेमवए वासे ॥सूत्रं ७९॥ कहि णं भंते! जम्बुद्दीवे २ महाहिमवंते णामं वासहरपव्वए पगणत्ते?, गोयमा! हरिवासस्स दाहिणेणं हेमवयस्स वासस्स उत्तरेणं पुरत्थिम-लवणसमुद्दस्स पच्चत्थिमेणं पच्चत्थिम-लवणसमुद्दस्स पुरत्थिमेणं, एत्थ णं जम्बुद्दीवे दीवे महाहिमवंते णामं वासहरपव्वए पगणत्ते १। पाईणपडीणायए उदीणदाहिणविच्छिगणे पलियंकसंठाणसंठिए दुहा लवणसमुद्दं पुट्ठे पुरत्थिमिल्लाए कोडीए जाव पुट्ठे पच्चत्थिमिल्लाए कोडीए पच्चत्थिमिल्लं लवणसमुद्दं पुट्ठे दो जोअणसयाइं उद्धं उच्चत्तेणं पगणासं जोअणाइं उव्वेहेणं चत्तारि जोअणसहस्साइं दोगिण अ दसुत्तरे जोअणसए दस य एगूणवीसइभाए जोअणस्स विक्खंभेणं २। तस्स बाहा पुरत्थिमपच्चत्थिमेणं णव जोअणसहस्साइं दोगिण अ छावत्तरे जोअणसए णव य एगूण-

वीसइभाए जोअणस्स अद्धभागं च आयामेणं, तस्स जीवा उत्तरेणं पाईणपडीणायया दुहा लवणसमुद्दं पुट्ठा पुरत्थिमिल्लाए कोडीए पुरत्थिमिल्लं लवणसमुद्दं पुट्ठा पच्चत्थिमिल्लाए जाव पुट्ठा तेवरणं जोअणसहस्साइं नव य एगतीसे जोअणसए छच्च एगूणवीसइभाए जोअणस्स किंचिविसेसाहिए आयामेणं ३। तस्स धणुं दाहिणेणं सत्तावरणं जोअणसहस्साइं दोरिण अ तेणउए जोअणसए दस य एगूणवीसइभाए जोअणस्स परिक्खेवेणं, रुअगसंठाणसंठिए सव्वरयणामए अच्छे उभओ पासिं दोहिं पउमवरवेइआहिं दोहि अ वणसंडेहिं संपरिक्खित्ते ४। महाहिमवंतस्स णं वासहरपव्वयस्स उप्पिं बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे परणत्ते, जाव णाणाविहपंचवरणेहिं मणीहि अ तणेहि अ उवसोभिए जाव आसयंति सयंति य ५ ॥ सूत्रं ८० ॥ महाहिमवंतस्स णं बहुमज्झदेसभाए एत्थ णं एगे महापउमद्दहे णामं दहे परणत्ते, दो जोअणसहस्साइं आयामेणं एगं जोअणसहस्सं विक्खंभेणं दस जोअणाइं उव्वेहणं अच्छे रययामयकूले एवं आयामविक्खंभविहूणा जा चेव पउमद्दहस्स वत्तव्वया सा चेव णेअव्वा १। पउमप्पमाणं दो जोअणाइं अट्ठो जाव महापउमद्दहवरणाभाइं हिरी अ इत्थ देवी जाव पलिओवमट्ठिइया परिवसइ, से एएणट्ठेणं गोअमा ! एवं वुच्चइ, अदुत्तरं च णं गोअमा ! महापउमद्दहस्स सासए णामधिज्जे परणत्ते जं ण कयाइ णासी ३, २। तस्स णं महापउमद्दहस्स दक्खिणिल्लेणं तोरणेणं रोहिआ महाणई पवूढा समाणी सोलस पंचुत्तरे जोअणसए पंच य एगूणवीसइभाए जोअणस्स दाहिणाभिमुही पव्वएणं गंता महया घडमुहपवित्तिएणं मुत्तावलिहारसंठिएणं साइरेगदोजोअणसइएणं पवाएणं पवडइ ३। रोहिआ णं महाणई जओ पवडइ एत्थ णं महं एगा जिब्भिया परणत्ता, सा णं जिब्भिआ जोअणं आयामेणं अद्धतेरसजोअणाइं विक्खंभेणं कोसं बाहल्लेणं मगरमुह-विउट्ट-संठाण-

संठिआ सव्ववइरामई अच्छा ४ । रोहिआ णं महाणई जहिं पवडइ एत्थ णं महं एगे रोहिअप्पवायकुंडे णामं कुंडे पण्णत्ते सवीसं जोअणसयं आयामविक्खंभेणं पण्णत्तं तिण्णि असीए जोअणसए किंचिविसेसूणे परिक्खेवेणं दस जोअणाइं उव्वेहेणं अच्छे सण्हे सो चेव वण्णओ, वइरतले वट्टे समतीरे जाव तोरणा ५ । तस्स णं रोहिअप्पवायकुण्डस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थ णं महं एगे रोहिअदीवे णामं दीवे पण्णत्ते, सोलस जोअणाइं आयामविक्खंभेणं साइरेगाइं पण्णासं जोअणाइं परिक्खेवेणं दो कोसे ऊसिए जलंताओ सव्ववइरामए अच्छे ६ । से णं एगाए पउमवरवेइआए एगेण य वणसंडेणं सव्वओ समंता संपरिक्खित्ते ७ । रोहिअदीवस्स णं दीवस्स उप्पिं बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते, तस्स णं बहुसमरमणिज्जस्स भूमिभागस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थ णं महं एगे भवणे पण्णत्ते, कोसं आयामेणं सेसं तं चेव पमाणं च अट्ठो अ भाणिअव्वो ८ । तस्स णं रोहिअप्पवायकुण्डस्स दक्खिणिल्लेणं तोरणेणं रोहिआ महाणई पवूढा समाणी हेमवयं वासं एज्जेमाणी २ सद्दावइ-वट्टवेअद्धपव्वयं अद्धजोअणेणं असंपत्ता पुरत्थाभिमुही आवत्ता समाणी हेमवयं वासं दुहा विभयमाणी २ अट्ठावीसाए सलिलासहस्सेहिं समग्गा अहे जगइं दालइत्ता पुरत्थिमेणं लवणसमुद्दं समप्पेइ रोहिआ णं जहा रोहिअंसा तहा पवाहे अ मुहे अ भाणिअव्वा इति जाव संपरिक्खित्ता ९ । तस्स णं महापउमद्दहस्स उत्तरिल्लेणं तोरणेणं हरिकंता महाणई पवूढा समाणी सोलस पंचुत्तरे जोअणसए पंच य एगूणवीसइभाए जोअणस्स उत्तराभिमुही पव्वएणं गंता महया घडमुहपवित्तिएणं मुत्तावलिहारसंठिएणं साइरेगदुजोअणसइएणं पवाएणं पवडइ १० । हरिकंता महाणई जओ पवडइ एत्थ णं महं एगा जिब्भिआ पण्णत्ता, दो जोयणाइं आयामेणं पणवीसं जोअणाइं विक्खंभेणं अद्धं जोअणं बाहल्लेणं मगरमुह—विउट्ठ-संठाणसंठिआ सव्ववइरा(रयणा)मई-

अच्छा ११। हरिकंता गां महागाई जहिं पवडइ एत्थ गां महं एगे हरिकंत-प्पवायकुंडे गामं कुंडे पगगत्ते दोगिगा अ चत्ताले जोअगसए आयामविक्खंभेणं सत्तअउगाट्ठे जोयगसए परिक्खेवेगां अच्छे १२। एवं कुगडवत्तव्वया सव्वा नेयव्वा जाव तोरगा, तस्स गां हरिकंतप्पवायकुगडस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थ गां महं एगे हरिकंतदीवे गामं दीवे पगगत्ते बत्तीसं जोअगाइं आयामविक्खंभेगां एगुत्तरं जोअगसयं परिक्खेवेगां दो कोसे ऊसिए जलंताओ सव्वरयगामए अच्छे १३। से गां एगाए पउमवरवेइआए एगेगा य वगसंडेगां जाव संपरिक्खित्ते वगगाओ भागिअव्वो, पमागां च सयगिज्जं च अट्ठो अ भागिअव्वो १४। तस्स गां हरिकंतप्पवायकुगडस्स उत्तरिल्लेगां तोरगोगां जाव पवूढा समागी हरिवरसं वासं एज्जेमागी २ विअडावाइं वट्टवेअद्धं जोअगोगां असंपत्ता पच्चत्थिमाभिमुही आवत्ता समागी हरिवासं दुहा विभयमागी २ छप्पगगाए सलिलासहस्सेहिं समग्गा अहे जगइं दालइत्ता पच्चत्थिमेगां लवगासमुद्दं समप्पेइ १५। हरिकंता गां महागाई पवहे पगावीसं जोअगाइं विक्खंभेगां अद्धजोअगां उव्वेहेगां तयगांतरं च गां मायाए २ परिवद्धमागी २ मुहमूले अद्धाइज्जाइं जोअगसयाइं विक्खंभेगां पंच जोअगाइं उव्वेहेगां, उभओ पासिं दोहिं पउमवरवेइआहिं दोहि अ वगसंडेहिं संपरिक्खित्ता १६ ॥ सूत्रं ८१ ॥

महाहिमवंते गां भंते ! वासहरपव्वए कइ कूडा पगगत्ता ?, गोयमा ! अट्ठ कूडा पगगत्ता, तंजहा—सिद्धायययगकूडे १ महाहिमवंतकूडे २ हेमवयकूडे ३ रोहिअकूडे ४ हिरिकूडे ५ हरिकंतकूडे ६ हरिवासकूडे ७ वेरुलिअ-कूडे ८, १। एवं चुल्लहिमवंतकूडागां जा चेव वत्तव्वया सच्चेव गोअव्वा २। से केगाट्ठेगां भंते ! एवं वुच्चइ महाहिमवंते वासहरपव्वए २ ?, गोअमा ! महाहिमवंते गां वासहरपव्वए चुल्लहिमवंतं वासहरपव्वयं पगिहाय आयामुच्चत्तुव्वेह-विक्खंभपरिक्खेवेगां महंततराए चेव दीहतराए चेव, महाहिमवंते अ

इत्थ देवे महिद्धीए जाव पलिओवमट्ठिइए परिवसइ ३ ॥ सूत्रं ८२ ॥ कहि णं भंते ! जंबुद्दीवे दीवे हरिवासे णामं वासे पराणत्ते ?, गोयमा ! णिसहस्स वासहरपव्वयस्स दक्खिणेणं महाहिमवंत-वासहरपव्वयस्स उत्तरेणं पुरत्थिम-लवणसमुद्दस्स पच्चत्थिमेणं पच्चत्थिमलवणसमुद्दस्स पुरत्थिमेणं एत्थ णं जंबुद्दीवे २ हरिवासे णामं वासे पराणत्ते एवं जाव पच्चत्थिमिल्लाए कोडीए पच्चत्थिमिल्लं लवणसमुद्दं पुट्ठे अट्ठ जोअणसहस्साइं चत्तारि अ एगवीसे जोअणसए एगं च एगूणवीसइभागं जोअणस्स विक्खंभेणं १ । तस्स बाहा पुरत्थिमपच्चत्थिमेणं तेरस जोअणसहस्साइं तिरिण अ एगसट्ठे जोअणसए छच्च एगूणवीसइभाए जोअणस्स अद्धभागं च आयामेणं २ । तस्स जीवा उत्तरेणं पाईणपडीणायया दुहा लवणसमुद्दं पुट्ठा पुरत्थिमिल्लाए कोडीए पुरत्थिमिल्लं जाव लवणसमुद्दं पुट्ठा तेवत्तरि जोअणसहस्साइं णव य एगुत्तरे जोअणसए सत्तरस य एगूणवीसइभाए जोअणस्स अद्धभागं च आयामेणं ३ । तस्स धणुं दाहिणेणं चउरासीइं जोअणसहस्साइं सोलस जोअणाइं चत्तारि एगूणवीसइभाए जोअणस्स परिक्खेवेणं ४ । हरिवासस्स णं भंते ! वासस्स केरिसए आगारभावपडोआरे पराणत्ते ?, गोअमा ! बहुसम-रमणिज्जे भूमिभागे पराणत्ते जाव मणीहिं तणेहि अ उवसोभिए एवं मणीणं तणाण य वराणो गंधो फासो सद्दो भाणिअव्वो ५ । हरिवासे णं तत्थ तत्थ देसे तहिं तहिं बहवे खुड्डा खुड्डिआओ एवं जो सुसमाए अणुभावो सो चेव अपरिसेसो वत्तव्वोत्ति ६ । कहि णं भंते ! हरि-वासे वासे विअडावई णामं वट्टवेअद्धपव्वए पराणत्ते ?, गोयमा ! हरीए महाणईए पच्चत्थिमेणं हरिकंताए महाणईए पुरत्थिमेणं हरिवासस्स २ बहु-मज्झदेसभाए एत्थ णं विअडावई णामं वट्टवेअद्धपव्वए पराणत्ते ७ । एवं जो चेव सद्दावइस्स विक्खंभुच्चत्तुव्वेह-परिक्खेवसंठाण—वराणावासो अ सो चेव विअडावइस्सवि भाणिअव्वो, णवरं अरुणो देवो पउमाइं जाव

विअडावइवण्णाभाइं अरुणो अ इत्थ देवे महिद्धीए एवं जाव दाहिणेणं रायहाणी णेअव्वा ८। से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ–हरिवासे हरिवासे ?, गोअमा! हरिवासे णं वासे मणुआ अरुणा अरुणोभासा सेआ णं संखदलसण्णिकासा हरिवासे अ इत्थ देवे महिद्धीए जाव पलिओवमट्ठिईए परिवसइ, से तेणट्ठेणं गोअमा! एवं वुच्चइ हरिवासे २, ६ ॥ सूत्रं ८३ ॥ कहि णं भंते! जंबुद्दीवे २ णिसहे णामं वासहरपव्वए पण्णत्ते ?, गोअमा! महाविदेहस्स वासस्स दक्खिणेणं हरिवासस्स उत्तरेणं पुरत्थिमलवणसमुद्दस्स पच्चत्थिमेणं पच्चत्थिमलवणसमुद्दस्स पुरत्थिमेणं एत्थ णं जंबुद्दीवे दीवे णिसहे णामं वासहरपव्वए पण्णत्ते १। पाईणपडीणायए उदीणदाहिणविच्छिण्णे दुहा लवणसमुद्दं पुट्ठे पुरत्थिमिल्लाए जाव पुट्ठे पच्चत्थिमिल्लाए जाव पुट्ठे, चत्तारि जोयणसयाइं उद्धं उच्चत्तेणं चत्तारि गाउअसयाइं उव्वेहेणं सोलस जोअणसहस्साइं अट्ठ य बायाले जोअणसए दोण्णि य एगूणवीसइभाए जोअणस्स विक्खंभेणं २। तस्स बाहा पुरत्थिमपच्चत्थिमेणं वीसं जोअणसहस्साइं एगं च पण्णट्ठं जोअणसयं दुण्णि अ एगूणवीसइभाए जोअणस्स अद्धभागं च आयामेणं ३। तस्स जीवा उत्तरेणं जाव चउणवइं जोअणसहस्साइं एगं च छप्पण्णं जोअणसयं दुण्णि अ एगूणवीसइभाए जोअणस्स आयामेणं ४। तस्स धणुं दाहिणेणं एगं जोअणसयसहस्सं चउवीसं च जोअणसहस्साइं तिण्णि अ छायाले जोअणसए णव य एगूणवीसइभाए जोअणस्स परिक्खेवेणं रुअगसंठाणसंठिए सव्वतवणिज्जमए अच्छे ५। उभओ पासिं दोहिं पउमवरवेइआहिं दोहि अ वणसंडेहिं जाव संपरिक्खित्ते, णिसहस्स णं वासहरपव्वयस्स उप्पिं बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते जाव आसयंति सयंति ६। तस्स णं बहुसमरमणिज्जस्स भूमिभागस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थ णं महं एगे तिगिंछिद्दहे णामं दहे पण्णत्ते ७। पाईणपडीणायए उदीणदाहिणविच्छिण्णे

चत्तारि जोअणसहस्साइं आयामेणं दो जोअणसहस्साइं विक्खंभेणं दस जोअणाइं उव्वेहेणं अच्छे सण्हे जाव रययामयकूले ८। तस्स णं तिगिञ्छिद्दहस्स चउद्दिसिं चत्तारि तिसोवाणपडिरूवगा पण्णत्ता एवं जाव आयामविक्खंभविहूणा जा चेव महापउमद्दहस्स वत्तव्वया सा चेव तिगिंछिद्दहस्सवि वत्तव्वया तं चेव पउमद्दहप्पमाणं अट्ठो जाव तिगिंछिवण्णाइं ९। थिई अ इत्थ देवी पलिओवमट्ठिइआ परिवसइ, से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ तिगिंछिद्दहे तिगिंछिद्दहे १०॥ सूत्रं ८४॥ तस्स णं तिगिंछिद्दहस्स दक्खिणिल्लेणं तोरणेणं हरिमहाणई पवूढा समाणी सत्त जोअणसहस्साइं चत्तारि अ एकवीसे जोअणसए एगं च एगूणवीसइभागं जोअणस्स दाहिणाभिमुही पव्वएणं गंता महया घडमुह-पवित्तिएणं जाव साइरेगचउजोअणसइएणं पवाएणं पवडइ १। एवं जा चेव हरिकंताए वत्तव्वया सा चेव हरिएवि णेअव्वा, जिब्भिआए कुंडस्स दीवस्स भवणस्स तं चेव पमाणं अट्ठोऽवि भाणिअव्वो जाव अहे जगइं दालइत्ता छप्पण्णाए सलिलासहस्सेहिं समग्गा पुरत्थिमं लवणसमुद्दं सम-प्पेइ, तं चेव पवहे अ मुहमूले अ पमाणं उव्वेहो अ जो हरिकंताए जाव वणसंडसंपरिक्खित्ता २। तस्स णं तिगिंछिद्दहस्स उत्तरिल्लेणं तोरणेणं सीओआ महाणई पवूढा समाणी सत्त जोअणसहस्साइं चत्तारि अ एगवीसे जोअणसए एगं च एगूणवीसइभागं जोअणस्स उत्तराभिमुही पव्वएणं गंता महया घडमुहपवित्तिएणं जाव साइरेगचउजोअणसइएणं पवाएणं पवडइ ३। सीओआ णं महाणई जओ पवडइ एत्थ णं महं एगा जिब्भिआ पण्णत्ता चत्तारि जोअणाइं आयामेणं पण्णासं जोअणाइं विक्खंभेणं जोअणं बाहल्लेणं मगरमुह-विउट्ट-संठाणसंठिआ सव्ववइरामई अच्छा ४। सीओआ णं महाणई जहिं पवडइ एत्थ णं महं एगे सीओअप्पवायकुण्डे णामं कुण्डे पण्णत्ते चत्तारि असीए जोअणसए आयामविक्खंभेणं पण्णरसअट्ठारे जोअणसए किंचिविसे-

सूणे परिक्खेवेणं अच्छे, एवं कुंडवत्तव्वया णेअव्वा जाव तोरणा ५। तस्स णं सीओअप्पवायकुण्डस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थ णं महं एगे सीओअदीवे णामं दीवे पण्णत्ते चउसट्ठिं जोअणाइं आयामविक्खंभेणं दोण्णि बिउत्तरे जोअणसए परिक्खेवेणं दो कोसे ऊसिए जलंताओ सव्ववइरामए अच्छे, सेसं तमेव वेइया-वणसंड-भूमिभाग-भवणसयणिज्जअट्ठो भाणिअव्वो ६। तस्स णं सीओअप्पवायकुण्डस्स उत्तरिल्लेणं तोरणेणं सीओआ महाणई पवूढा समाणी देवकुरुं एज्जेमाणा २ चित्तविचित्तकूडे पव्वए निसढ-देवकुरु-सूर-सुलस-विज्जुप्पभदहे अ दुहा विभयमाणि २ चउरासीए सलिला-सहस्सेहिं आपूरेमाणी २ भद्दसालवणं एज्जेमाणी २ मंदरं पव्वयं दोहिं जोअणेहिं असंपत्ता पच्चत्थिमाभिमुही आवत्ता समाणी अहे विज्जुप्पभं वक्खारपव्वयं दारइत्ता मंदरस्स पव्वयस्स पच्चत्थिमेणं अवरविदेहं वासं दुहा विभयमाणी २ एगमेगाओ चक्कवट्टिविजयाओ अट्ठावीसाए २ सलिला-सहस्सेहिं आपूरेमाणी २ पञ्चहिं सलिलासयसहस्सेहिं दुतीसाए अ सलिलासहस्सेहि समग्गा अहे जयंतस्स दारगस्स जगइं दालइत्ता पच्च-त्थिमेणं लवणसमुद्दं समप्पेति ७। सीओआ णं महाणई पवहे पण्णासं जोअणाइं विक्खंभेणं जोअणं उव्वेहेणं, तयणंतरं च णं मायाए २ परिवद्ध-माणी २ मुहमूले पञ्च जोअणसयाइं विक्खंभेणं दस जोअणाइं उव्वेहेणं उभओ पासिं दोहिं पउमवरवेइआहिं दोहि अ वणसंडेहिं संपरि-क्खित्ता ८। णिसढे णं भंते ! वासहरपव्वए णं कति कूडा पण्णत्ता ?, गोयमा ! णव कूडा पण्णत्ता, तंजहा—सिद्धाययणकूडे १ णिसढकूडे २ हरिवासकूडे ३ पुव्वविदेहकूडे ४ हरिकूडे ५ धिईकूडे ६ सीओआकूडे ७ अवरविदेहकूडे ८ रुअगकूडे ९ जो चेव चुल्लहिमवंतकूडाणं उच्चत्तविक्खंभ-परिक्खेवो पुव्वं वण्णिओ रायहाणी अ सच्चेव इहंपि णेअव्वा ९। से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ णिसहे वासहरपव्वए २ ?, गोअमा ! णिसहे

णं वासहरपव्वए बहवे कूडा णिसहसंठाणसंठिश्रा उसभसंठाणसंठिश्रा, णिसहे श्र इत्थ देवे महिड्ढीए जाव पलिश्रोवमठिइए परिवसइ, से तेणट्ठे णं गोश्रमा ! एवं वुच्चइ णिसहे वासहरपव्वए २, १० ॥ सूत्रं ८५ ॥

कहि णं भंते ! जंबुद्दीवे दीवे महाविदेहे णामं वासे पण्णत्ते ?, गोश्रमा ! णीलवंतस्स वासहरपव्वयस्स दक्खिणेणं णिसहस्स वासहरपव्वयस्स उत्तरेण पुरत्थिम-लवणसमुद्दस्स पच्चत्थिमेणं पच्चत्थिम-लवणसमुद्दस्स पुरत्थिमेणं एत्थ णं जंबुदीवे २ महाविदेहे णामं वासे पण्णत्ते १ । पाईणपडीणायए उदीण-दाहिणविच्छिण्णे पलिश्रंक संठाणसंठिए दुहा लवणसमुद्दं पुट्ठे पुरत्थिम जाव पुट्ठे पच्चत्थिमिल्लाए कोडीए पच्चत्थिमिल्लं जाव पुट्ठे तित्तीसं जोश्रण-सहस्साइं छच्च चुलसीए जोश्रणसए चत्तारि श्र एगूणवीसइभाए जोश्रणस्स विक्खंभेणंति २ । तस्स बाहा पुरत्थिमपच्चत्थिमेणं तेत्तीसं जोश्रणसहस्साइं सत्त य सत्तसट्ठे जोश्रणसए सत्त य एगूणवीसइभाए जोश्रणस्स श्रायामेणंति ३ । तस्स जीवा बहुमज्झदेसभाए पाईणपडीणायया दुहा लवणसमुद्दं पुट्ठा पुरत्थिमिल्लाए कोडीए पुरत्थिमिल्लं जाव पुट्ठा एवं पच्चत्थिमिल्लाए जाव पुट्ठा, एगं जोयणसयसहस्सं श्रायामेणंति ४ । तस्स धणुं उभश्रो पासिं उत्तर-दाहिणेणं एगं जोयणसयसहस्सं श्रट्ठावण्णं जोश्रणसहस्साइं एगं च तेरसु-त्तरं जोश्रणसयं सोलस य एगूणवीसइभागे जोयणस्स किंचिविसेसाहिए परिक्खेवेणंति ५ । महाविदेह णं वासे चउव्विहे चउप्पडोश्रारे पण्णत्ते, तंजहा—पुव्वविदेहे १ श्रवरविदेहे २ देवकुरा ३ उत्तरकुरा ४, ६ । महा-विदेहस्स णं भंते ! वासस्स केरिसए श्रागारभावपडोश्रारे पण्णत्ते ?, गोश्रमा ! बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते जाव कित्तिमेहि चेव श्रकित्तिमेहिं चेव ७ । महाविदेहे णं भंते ! वासे मणुश्राणं केरिसए श्रायारभावपडोश्रारे पण्णत्ते ?, तेसि णं मणुश्राणं छव्विहे संघयणे छव्विहे संठाणे पंचधणुसयाइं उद्धं उच्चत्तेणं जहण्णेणं श्रंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पुव्व-

कोडीआउअं पालेंति पालेत्ता अप्पेगइआ णिरयगामी जाव अप्पेगइआ सिज्झंति जाव अंतं करेंति ८। से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ–महाविदेहे वासे २?, गोअमा! महाविदेहे णं वासे भरहेरवय-हेमवय-हेरण्णवय-हरिवास-रम्मगवासेहिंतो आयाम-विक्खंभ संठाणपरिणाहेणं विच्छिण्णतराए चेव विपुलतराए चेव महंततराए चेव सुप्पमाणतराए चेव महाविदेहा य इत्थ मणूसा परिवसंति, महाविदेहे अ इत्थ देवे महिद्धीए जाव पलिओवमट्ठिइए परिवसइ, से तेणट्ठेणं गोअमा! एवं वुच्चइ–महाविदेहे वासे २, अदुत्तरं च णं गोअमा! महाविदेहस्स वासस्स सासए णामधेज्जे पण्णत्ते, जं ण कयाइ णासि ३, १॥ सूत्रं ८६॥ कहि णं भंते! महाविदेहे वासे गंधमायणे णामं वक्खारपव्वए पण्णत्ते?, गोअमा! णीलवंतस्स वासहरपव्वयस्स दाहिणेणं मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरपच्चत्थिमेणं गंधिलावइस्स विजयस्स पुरच्छिमेणं उत्तरकुराए पच्चत्थिमेणं एत्थ णं महाविदेहे वासे गंधमायणे णामं वक्खारपव्वए पण्णत्ते उत्तरदाहिणायए पाईणपडीणविच्छिण्णे, तीसं जोअणसहस्साइं दुण्णि अ णउत्तरे जोअणसए छच्च य एगूणवीसइभाए जोअणस्स आयामेणं णीलवंतवासहरपव्वयंतेणं चत्तारि जोअणसयाइं उद्धं उच्चत्तेणं चत्तारि गाउअसयाइं उव्वेहेणं पंच जोअणसयाइं विक्खंभेणं तयणंतरं च णं मायाए २ उस्सेहुव्वेहपरिवद्धीए परिवद्धमाणे २ विक्खंभपरिहाणीए परिहायमाणे २ मंदरपव्वयंतेणं पंच जोअणसयाइं उद्धं उच्चत्तेणं पंच गाउअसयाइं उव्वेहेणं अंगुलस्स असंखिज्जइभागं विक्खंभेणं पण्णत्ते गयदंतसंठाणसंठिए सव्वरयणामए अच्छे १। उभओ पासिं दोहिं पउमवरवेइआहिं दोहि अ वणसंडेहिं सव्वओ समंता संपरिक्खित्ते, गंधमायणस्स णं वक्खारपव्वयस्स उप्पिं बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे जाव आसयंति २। गंधमायणे णं वक्खारपव्वए कति कूडा पण्णत्ता?, गोयमा! सत्त कूडा पन्नत्ता, तंजहा–सिद्धाययणकूडे १ गंध-

मायणकूडे २ गंधिलावईकूडे ३ उत्तरकूरुकुडे ४ फलिहकूडे ५ लोहियक्ख-कूडे ६ आणंदकूडे ७, ३। कहि णं भंते! गंधमायणे वक्खारपव्वए सिद्धाययणकूडे णामं कूडे पराणते ?, गोअमा! मंदरस्स पव्वयस्स उत्तर-पच्चत्थिमेणं गंधमायणकूडस्स दाहिणपुरत्थिमेणं, एत्थ णं गंधमायणे वक्खारपव्वए सिद्धाययणकूडे णामं कूडे पराणत्ते, जं चेव चुल्लहिमवंते सिद्धायययणकूडस्स पमाणं तं चेव एएसिं सव्वेसिं भाणिअव्वं ४। एवं चेव विदिसाहिं तिरिण कूडा भाणिअव्वा, चउत्थे ततिअस्स उत्तरपच्चत्थिमेणं पंचमस्स दाहिणेणं, सेसा उ उत्तरदाहिणेणं, फलिहलोहिअक्खेसु भोगंकरभोगवईओ देवयाओ सेसेसु सरिसणामया देवा, छसुवि पासाय-वडेंसगा रायहाणीओ विदिसासु ५। से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ गंधमायणे वक्खारपव्वए २ ?, गोयमा! गंधमायणस्स णं वक्खारपव्वयस्स गंधे से जहा णामए कोट्ठपुडाण वा जाव पीसिज्जमाणाण वा उक्किरिज्जमाणाण वा विकिरिज्जमाणाण वा परिभुज्जमाणाण वा जाव ओराला मणुराणा जाव गंधा अभिणिस्सवन्ति, भवे एआरूवे ?, णो इणट्ठे समट्ठे, गंधमायणस्स णं इत्तो इट्ठतराए चेव जाव गंधे पराणत्ते से एएणट्ठेणं गोअमा! एवं वुच्चइ गंधमायणे वक्खारपव्वए २, १। गंधमायणे अ इत्थ देवे महिद्धीए परिवसइ, अदुत्तरं च णं सासए णामधिज्जे इति ६॥ सूत्रं ८७॥ कहि णं भंते! महाविदेहे वासे उत्तरकुरा णामं कुरा पराणत्ता, गोयमा! मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरेणं णीलवंतस्स वासहरपव्वयस्स दक्खिणेणं गंधमायणस्स वक्खार-पव्वयस्स पुरत्थिमेणं मालवंतस्स वक्खारपव्वयस्स पच्चत्थिमेणं एत्थ णं उत्तरकुरा णामं कुरा पराणत्ता पाईणपडीणायया उदीण-दाहिणविच्छिराणा अद्धचंद-संठाणसंठिआ इक्कारस जोअणसहस्साइं अट्ठ य बायाले जोअणसए दोरिण अ एगूणवीसइभाए जोअणस्स विक्खंभेणंति १। तीसे जीवा उत्तरेणं पाईणपडीणायया दुहा वक्खारपव्वयं पुट्ठा, तंजहा—पुरत्थिमिल्लाए

कोडीए पुरत्थिमिल्लं वक्खारपव्वयं पुट्ठा, एवं पच्चत्थिमिल्लाए जाव पच्चत्थिमिल्लं वक्खारपव्वयं पुट्ठा २। तेवरणं जोअणसहस्साइं आयामेणंति तीसे णं धणु दाहिणेणं सट्ठिं जोअणसहस्साइं चत्तारि अ अट्ठारसे जोअणसए दुवालस य एगूणवीसइभाए जोअणस्स परिक्खेवेणं ३। उत्तरकुराए णं भंते! कुराए केरिसए आयारभावपडोआरे पण्णत्ते?, गोयमा! बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पसगात्ते, एवं पुव्ववणिणआ जच्चेव सुसमसुसमावत्तव्वया सच्चेव णेअव्वा जाव पउमगंधा १ मिअगंधा २ अममा ३ सहा ४ तेतली ५ सणिचारी ६,४ ॥ सूत्रं ८८ ॥ कहि णं भंते! उत्तरकुराए जमगाणामं दुवे पव्वया पण्णत्ता?, गोअमा! णीलवंतस्स वासहरपव्वयस्स दक्खिणिल्लाओ चरिमंताओ अट्ठ-जोअणसए चोत्तीसे चत्तारि अ सत्तभाए जोअणस्स अबाहाए सीआए महाणईए उभओ कूले एत्थ णं जमगाणामं दुवे पव्वया पण्णत्ता, जोअणसहस्सं उड्ढं उच्चत्तेणं अड्डाइज्जाइं जोअणसयाइं उव्वेहेणं मूले एगं जोअणसहस्सं आयाम-विक्खंभेणं मज्झे अद्धट्ठमाणि जोअणसयाइं आयामविक्खंभेणं उवरिं पंच जोअणसयाइं आयामविक्खंभेणं मूले तिण्णि जोअणसहस्साइं एगं च बावट्ठं जोअणसयं किंचिविसेसाहिअं परिक्खेवेणं मज्झे दो जोअणसहस्साइं तिण्णि बावत्तरे जोअणसए किंचिविसेसाहिए परिक्खेवेणं उवरि एगं जोअणसहस्सं पंच य एकासीए जोअणसए किंचिविसेसाहिए परिक्खेवेणं मूले विच्छिण्णा मज्झे संखित्ता उप्पिं तणुआ जमगसंठाणसंठिआ सव्वकणगामया अच्छा सण्हा १। पत्तेअं २ पउमवरवेइआपरिक्खित्ता पत्तेअं २ वणसंडपरिक्खित्ता, ताओ णं पउमवरवेइआओ दो गाऊआइं उद्धं उच्चत्तेणं पंच धणुसयाइं विक्खंभेणं, वेइ-आवणसंडवण्णओ भाणिअव्वो २। तेसि णं जमगपव्वयाणं उप्पिं बहु-समरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते, जाव तस्स णं बहुसमरमणिज्जस्स भूमिभागस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थ णं दुवे पासायवडेंसगा पण्णत्ता, ते णं पासायवडेंसगा बावट्ठिं जोअणाइं अद्धजोअणं च उद्धं उच्चत्तेणं इक्कतीसं जोअणाइं कोसं

च आयामविक्खंभेणं पासायवरणाओ भाणिअव्वो ३ । सीहासणा सपरिवारा जाव एत्थ णं जमगाणं देवाणं सोलसण्हं आयरक्खदेवसाहस्सीणं सोलस भद्दासणसाहस्सीओ पण्णत्ताओ ४। से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ जमगा पव्वया २ ?, गोअमा ! जमगपव्वएसु णं तत्थ २ देसे २ तहिं २ वहवे खुड्डाखुड्डियासु वावीसु जाव बिलपंतियासु बहवे उप्पलाइं जाव जमगवण्णाभाइं जमगा य इत्थ दुवे देवा महिद्धीया, ते णं तत्थ चउण्हं सामाणिअसाहस्सीणं जाव भुंजमाणा विहरंति, से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—जमगपव्वया २, अदुत्तरं च णं सासए णामधिज्जे जाव जमगपव्वया २, ५। कहि णं भंते ! जमगाणं देवाणं जमिगाओ रायहाणीओ पण्णत्ताओ ?, गोअमा ! जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरेणं अण्णंमि जंबुद्दीवे २ वारस जोअणसहस्साइं ओगाहित्ता एत्थ णं जमगाणं देवाणं जमिगाओ रायहाणीओ पण्णत्ताओ बारस जोअणसहस्साइं आयामविक्खंभेणं सत्तत्तीसं जोअणसहस्साइं णव य अडयाले जोअणसए किंचिविसेसाहिए परिक्खेवेणं, पत्तेअं २ पायारपरिक्खित्ता ६। ते णं पागारा सत्तत्तीसं जोअणाइं अद्धजोअणं च उद्धं उच्चत्तेणं मूले अद्धत्तेरस जोअणाइं विक्खंभेणं मज्झे छ सकोसाइं जोअणाइं विक्खंभेणं उवरिं तिण्णि सअद्धकोसाइं जोअणाइं विक्खंभेणं मूले विच्छिण्णा मज्झे संखित्ता उप्पिं तणुआ बाहिं वट्टा अंतो चउरंसा सव्वरयणामया अच्छा ७। ते णं पागारा णाणामणिपंचवण्णेहिं कविसीसएहिं उवसोहिआ, तंजहा—किण्हेहिं जाव सुकिल्लेहिं, ते णं कविसीसगा अद्धकोसं आयामेणं देसूणं अद्धकोसं उद्धं उच्चत्तेणं पंच धणुसयाइं बाहल्लेणं सव्वमणिमया अच्छा ८। जमिगाणं रायहाणीणं एगमेगाए बाहाए पणवीसं पणवीसं दारसयं पण्णत्तं, ते णं दारा बावट्ठिं जोअणाइं अद्धजोअणं च उद्धं उच्चत्तेणं इक्कतीसं जोअणाइं कोसं च विक्खंभेणं तावइअं चेव पवेसेणं, सेआ वरकणगथूभिआगा एवं रायप्पसेणइज्ज-

विमाणवत्तव्वयाए दारवरणाओ जाव अट्ठट्ठमंगलगाइंति ९। जमियाणं रायहाणीणं चउद्दिसिं पंचपंच जोअणसए अबाहाए चत्तारि वणसण्डा पण्णत्ता, तंजहा—असोगवणे १ सत्तिवण्णवणे २ चंपगवणे ३ चूअवणे ४, ते णं वणसंडा साइरेगाइं बारसजोअणसहस्साइं आयामेणं पंच जोअण-सयाइं विक्खंभेणं पत्तेअं २ पागारपरिक्खित्ता किण्हा वणसंडवण्णओ भूमीओ पासायवडेंसगा य भाणिअव्वा १०। जमिगाणं रायहाणीणं अंतो बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते वण्णगोत्ति, तेसि णं बहुसम-रमणिज्जाणं भूमिभागाणं बहुमज्झदेसभाए एत्थ णं दुवे उवयारियालयणा पण्णत्ता, बारस जोअणसयाइं आयामविक्खंभेणं तिण्णि जोअणसहस्साइं सत्त य पंचाणउए जोअणसए परिक्खेवेणं अद्धकोसं च बाहल्लेणं सव्व-जंबूणयामया अच्छा ११। पत्तेअं पत्तेअं पउमवरवेइआपरिक्खित्ता, पत्तेअं पत्तेअं वणसंडवण्णओ भाणिअव्वो, तिसोवाणपडिरूवगा तोरणा चउद्दिसिं भूमिभागा य भाणिअव्वत्ति १२। तस्स णं बहुमज्झदेसभाए एत्थ णं एगे पासायवडेंसए पण्णत्ते बावट्ठिं जोअणाइं अद्धजोअणं च उद्धं उच्चत्तेणं इकतीसं जोअणाइं कोसं च आयामविक्खंभेणं वण्णओ उल्लोआ भूमिभागा सीहासणा सपरिवारा १३। एवं पासायपंतीओ, एत्थ पढमापंती से णं पासायवडिंसगे अण्णेहिं चउहिं तदद्धुच्चत्तपमाणमित्तेहिं पासायवडेंसएहिं सव्वओ समंता संपरिक्खित्ते, एकतीसं जोअणाइं कोसं च उद्धं उच्चत्तेणं साइरे-गाइं अद्धसोलसजोअणाइं आयामविक्खंभेणं, बिइअपासायपंती ते णं पासा-यवडेंसया साइरेगाइं अद्धसोलसजोअणाइं उद्धं उच्चत्तेणं साइरेगाइं अद्धट्ठमाइं जोअणाइं आयामविक्खंभेणं, तइअपासायपंती ते णं पासायवडेंसया साइ-रेगाइं अद्धट्ठमाइं जोअणाइं उद्धं उच्चत्तेणं साइरेगाइं अद्धुट्ठजोअणाइं आया-मविक्खंभेणं वण्णओ सीहासणा सपरिवारा १४। तेसि णं मूलपासाय-वडिंसयाणं उत्तरपुरच्छिमे दिसीभाए एत्थ णं जमगाणं देवाणं सहाओ

सुहम्माओ पराणत्ताओ, अद्धतेरस जोअणाइं आयामेणं छस्सकोसाइं जोअ-
णाइं विक्खंभेणं णव जोअणाइं उद्धं उच्चत्तेणं अणेग-खंभ-सयसरिणविट्ठा
सभावराणओ १५। तासिणं सभाणं सुहम्माणं तिदिसिं तओ दारा
पराणत्ता, ते णं दारा दो जोअणाइं उद्धं उच्चत्तेणं जोअणं विक्खंभेणं
तावइअं चेव पवेसेणं, सेआ वराणओ जाव वणमाला १६। तेसि णं
दाराणं पुरओ पत्तेअं २ तओ मुहमंडवा पराणत्ता, ते णं मुहमंडवा
अद्धतेरसजोअणाइं आयामेणं छस्सकोसाइं जोअणाइं विक्खंभेणं साइरेगाइं
दो जोअणाइं उद्धं उच्चत्तेणं जाव दारा भूमिभागा यत्ति १७। पेच्छाघर-
मंडवाणं तं चेव पमाणं भूमिभागो मणिपेढिआओत्ति, ताओ णं मणि-
पेढिआओ जोअणं आयामविक्खंभेणं अद्धजोअणं बाहल्लेणं सव्वमणि-
मईआ सीहासणा भाणिअव्वा १८। तेसि णं पेच्छाघरमंडवाणं पुरओ
मणिपेढिआओ पराणत्ताओ, ताओ णं मणिपेढिआओ दो जोअणाइं
आयामविक्खंभेणं जोअणं बाहल्लेणं सव्वमणिमईओ ११। तासि णं
उप्पिं पत्तेअं २ तओ थूभा, ते णं थूभा दो जोअणाइं उद्धं उच्चत्तेणं
दो जोअणाइं आयामविक्खंभेणं सेआ संखतल जाव अट्ठट्ठमंगलया २०।
तेसि णं थूभाणं चउद्दिसिं चत्तारि मणिपेढिआओ पराणत्ताओ, ताओ
णं मणिपेढिआओ जोअणं आयामविक्खंभेणं अद्धजोअणं बाहल्लेणं
जिणपडिमाओ वत्तव्वाओ, चेइअरुक्खाणं मणिपेढिआओ दो जोअणाइं
आयामविक्खंभेणं जोअणं बाहल्लेणं चेइअरुक्खवराणओत्ति २१। तेसि
णं चेइअरुक्खाणं पुरओ ताओ मणिपेढिआओ पराणत्ताओ, ताओ
णं मणिपेढिआओ जोयणं आयामविक्खंभेणं अद्धजोअणं बाहल्लेणं २२।
तासि णं उप्पिं पत्तेअं २ महिंदज्झया पराणत्ता, ते णं अद्धट्ठमाइं जोअणाइं
उद्धं उच्चत्तेणं अद्धकोसं उव्वेहेणं अद्धकोसं बाहल्लेणं वइरामयवट्ट वराणओ
वेइआवणसंडतिसोवाणतोरणा य भाणिअव्वा २३। तासि णं सभाणं

सुहम्माणं छम्मणोगुलिआसाहस्सीओ पण्णत्ताओ, तंजहा—पुरत्थिमेणं दो साहस्सीओ पण्णत्ताओ पच्चत्थिमेणं दो साहस्सीओ दक्खिणेणं एगा साहस्सी उत्तरेणं एगा जाव दामा चिट्ठंतित्ति, एवं गोमाणसिआओ, णवरं धूवघडिआओत्ति २४। तासि णं सुहम्माणं सभाणं अंतो बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते, मणिपेढिआ दो जोअणाइं आयामविक्खंभेणं जोअणं बाहल्लेणं, तासि णं मणिपेढिआणं उप्पिं माणवए चेइअखंभे महिंदज्झयप्पमाणे उवरिं छक्कोसे ओगाहित्ता हेट्ठा छक्कोसे वज्जित्ता जिणसकहाओ पण्णत्ताओत्ति २५। माणवगस्स पुव्वेणं सीहासणा सपरिवारा पच्चत्थिमेणं सयणिज्जवण्णओ २६। सयणिज्जाणं उत्तरपुरत्थिमे दिसिभाए खुड्डगमहिंदज्झया मणिपेढिआविहूणा महिंदज्झयप्पमाणा, तेसिं अवरेणं चोप्फाला पहरणकोसा, तत्थ णं बहवे फलिहरयणपामुक्खा जाव चिट्ठंति २७। सुहम्माणं उप्पिं अट्ठट्ठमंगलगा, तासि णं उत्तरपुरत्थिमेणं सिद्धाययणा एस चेव जिणघराणवि गमोत्ति, णवरं इमं णाणत्तं—एतेसिं णं बहुमज्झदेसभाए पत्तेअं २ मणिपेढिआओ दो जोअणाइं आयामविक्खंभेणं जोअणं बाहल्लेणं २८। तासिं उप्पिं पत्तेअं २ देवच्छंदया पण्णत्ता, दो जोअणाइं आयामविक्खंभेणं साइरेगाइं दो जोअणाइं उद्धं उच्चत्तेणं सव्वरयणामया २९। जिणपडिमा वण्णओ जाव धूवकडुच्छुगा, एवं अवसेसाणवि सभाणं जाव उववायसभाए सयणिज्जं हरओ अ अभिसेअसभाए बहु आभिसेक्के भंडे, अलंकारिअसभाए बहु अलंकारिअभंडे चिट्ठइ, ववसायसभासु पुत्थयरयणा, णंदा पुक्खरिणीओ, बलिपेढा सव्वरयणामया, दो जोअणाइं आयामविक्खंभेणं जोअणं बाहल्लेणं जावत्ति ३०। उववाओ संकप्पो अभिसेअ विहूसणा य ववसाओ। अच्चणिअ सुधम्मगमो जहा य परिवारणा इद्धी ॥ १ ॥ जावइयंमि पमाणंमि हुंति जमगाओ णीलवंताओ। तावइअमंतरं खलु जमगदहाणं दहाणं च ॥ २ ॥ सूत्रं ८१ ॥

कहि णं भंते ! उत्तरकूराए णीलवंतद्दहे णामं दहे पराणत्ते ?, गोत्रमा ! जमगाणं दक्खिणिल्लाओ चरिमंताओ अट्ठसए चोत्तीसे चत्तारि अ सत्तभाए जोअणस्स अबाहाए सीआए महाणईए बहुमज्झदेसभाए एत्थ णं णीलवंतद्दहे णामं दहे पराणत्ते दाहिणउत्तरायए पाईणपडीणविच्छिराणे जहेव पउमद्दहे तहेव वराणओ णेअव्वो. णाणत्तं दोहिं पउमवरवेइआहिं दोहि य वणसंडेहिं संपरिक्खित्ते १ । णीलवंते णामं णागकुमारे देवे सेसं तं चेव णेअव्वं, णीलवंतद्दहस्स पुव्वावरे पासे दस २ जोअणाइं अबाहाए एत्थ णं वीसं कंचणगपव्वया पराणत्ता २ । एगं जोयणसयं उद्धं उच्चत्तेणं– मूलंमि जोअणसयं पराणत्तरि जोअणाइं मज्झंमि । उवरितले कंचणगा पराणासं जोअणा हुंति ॥ १ ॥ मूलंमि तिरिण सोले सत्तत्तीसाइं दुरिण मज्झंमि । अट्ठावराणं च सयं उवरितले परिरओ होइ ॥ २ ॥ पढमित्थ नीलवंतो १ बितिओ उत्तरकुरू २ मुणेअव्वो । चंदद्दहोत्थ तइओ ३ एरावय ४ मालवंतो अ ५ ॥ ३ ॥ एवं वराणओ अट्ठो पमाणं पलिओवमट्ठिइआ देवा ३ ॥ सूत्रं ९० ॥ कहि णं भंते ! उत्तरकुराए २ जम्बूपेढे णामं पेढे पराणत्ते ?, गोअमा ! णीलवंतस्स वासहरपव्वयस्स दक्खिणेणं मंदरस्स उत्तरेणं मालवंतस्स वक्खारपव्वयस्स पचत्थिमेणं सीआए महाणईए पुरत्थिमिल्ले कूले एत्थ णं उत्तरकुराए कुराए जम्बूपेढे णामं पेढे पराणत्ते, पंच जोअणसयाइं आयामविक्खंभेणं पराणरस एकासीयाइं जोयणसयाइं किंचिविसेसाहिआइं परिक्खेवेणं, बहुमज्झदेसभाए बारस जोअणाइं बाहल्लेणं तयणंतरं च णं मायाए २ पदेसपरिहाणीए २ सव्वेसु णं चरिमपेरंतेसु दो दो गाऊआइं बाहल्लेणं सव्वजम्बूणयामए अच्छे १ । से णं एगाए पउमवरवेइआए एगेण य वणसंडेणं सव्वओ समंता संपरिक्खित्ते दुराहंपि वराणओ, तस्स णं जंबूपेढस्स चउद्दिसिं एए चत्तारि तिसोवाण- पडिरूवगा पराणत्ता वराणओ जाव तोरणाइं २ । तस्स णं जम्बूपेढस्स

बहुमज्झदेसभाए एत्थ णं मणिपेढिआ पराणत्ता अट्ठजोअणाइं आयामविक्खं-
भेणं चत्तारि जोअणाइं बाहल्लेणं ३। तीसे णं मणिपेढिआए उप्पिं एत्थ
णं जम्बूसुदंसणा पराणत्ता, अट्ठ जोअणाइं उद्धं उच्चत्तेणं अद्धजोअणं
उव्वेहेणं, तीसे णं खंधो दो जोअणाइं उद्धं उच्चत्तेणं अद्धजोअणं
बाहल्लेणं, तीसे णं साला छ जोअणाइं उद्धं उच्चत्तेणं बहुमज्झदेसभाए
अट्ठ जोअणाइं आयामविक्खंभेणं साइरेगाइं अट्ठ जोअणाइं सव्वग्गेणं ४।
तीसे णं अयमेआरूवे वराणावासे पराणत्ते—वइरामया मूला रययसुपइट्ठि-
अविडिमा जाव अहिअहियय-मण-णिव्वुइकरी पासाईआ ४, ५। जंबूए णं
सुदंसणाए चउद्दिसिं चत्तारि साला पराणत्ता, तेसि णं सालाणं बहुमज्झदेसभाए
एत्थ णं सिद्धाययणे पराणत्ते, कोसं आयामेणं अद्धकोसं विक्खंभेणं देसूणगं
कोसं उद्धं उच्चत्तेणं अणेगखंभसयसरिणविट्ठे जाव दारा पंचधणुसयाइं उद्धं
उच्चत्तेणं जाव वणमालाओ मणिपेढिआ पंचधणुसयाइं आयामविक्खंभेणं
अद्धाइज्जाइं धणुसयाइं बाहल्लेणं ६। तीसे णं मणिपेढिआए उप्पिं देव-
च्छंदए पंचधणुसयाइं आयामविक्खंभेणं साइरेगाइं पंचधणुसयाइं उद्धं उच्च-
त्तेणं, जिणपडिमावराणओ सव्वो णेअव्वोत्ति ७। तत्थ णं जे से पुरत्थि-
मिल्ले साले एत्थ णं भवणे पराणत्ते, कोसं आयामेणं एवमेव णवरमित्थ
सयणिज्जं सेसेसु पासायवडेंसया सीहासणा य सपरिवारा इति ८। जंबू
णं बारसहिं पउमवरवेइआहिं सव्वओ समंता संपरिक्खित्ता, वेइआणं
वराणओ, जंबू णं अरणेणं अट्ठसएणं जंबूणं तदद्धुच्चत्ताणं सव्वओ समंता
संपरिक्खित्ता, तासि णं वराणओ ९। ताओ णं जंबू छहिं पउमवरवेइ-
आहिं संपरिक्खित्ता, जंबूए णं सुदंसणाए उत्तरपुरत्थिमेणं उत्तरेणं उत्तर-
पच्चत्थिमेणं एत्थ णं अणाढिअस्स देवस्स चउराहं सामाणिअसाहस्सीणं
चत्तारि जंबूसाहस्सीओ पराणत्ताओ १०। तीसे णं पुरत्थिमेणं चउराहं
अग्गमहिसीणं चत्तारि जंबूओ पराणत्ताओ,—दक्खिणपुरत्थिमे दक्खिणेण

तह अवरदक्खिणेणं च। अट्ठ दस बारसेव य भवंति जंबूसहस्साइं ॥ १ ॥
अणिआहिवाण पच्चत्थिमेण सत्तेव होंति जंबूओ। सोलस साहस्सीओ
चउद्दिसिं आयरक्खाणं ॥ २ ॥ जंबूए णं तिहिं सइएहिं वणसंडेहिं सव्वओ
समंता संपरिक्खित्ता, जंबूए णं पुरत्थिमेणं पण्णासं जोअणाइं पढमं
वणसंडं ओगाहित्ता एत्थ णं भवणे पण्णत्ते कोसं आयामेणं सो चेव
वण्णओ सयणिज्जं च, एवं सेसासुवि दिसासु भवणा ११। जंबूए णं
उत्तरपुरत्थिमेणं पढमं वणसंडं पण्णासं जोअणाइं ओगाहित्ता एत्थ णं
चत्तारि पुक्खरिणीओ पण्णत्ताओ, तंजहा—पउमा १ पउमप्पभा २ कुमुदा ३
कुमुदप्पभा ४, ताओ णं कोसं आयामेणं अद्धकोसं विक्खंभेणं पंचधणुसयाइं
उव्वेहेणं वण्णओ १२। तासि णं मज्झे पासायवडेंसगा कोसं आयामेणं
अद्धकोसं विक्खंभेणं देसूणं कोसं उद्धं उच्चत्तेणं वण्णओ सीहासणा
सपरिवारा १३। एवं सेसासु विदिसासु, गाहा—पउमा पउमप्पभा चेव,
कुमुदा कुमुदप्पहा। उप्पलगुम्मा णलिणा, उप्पला उप्पलुज्जला ॥ १ ॥
भिंगा भिंगप्पभा चेव, अंजणा कज्जलप्पभा। सिरिकंता सिरिमहिआ,
सिरिचंदा चेव सिरिनिलया ॥ २ ॥ जंबूए णं पुरत्थिमिल्लस्स भवणस्स
उत्तरेणं उत्तरपुरत्थिमिल्लस्स पासायवडेंसगस्स दक्खिणेणं एत्थ णं कूडे
पण्णत्ते अट्ठ जोअणाइं उद्धं उच्चत्तेणं दो जोअणाइं उव्वेहेणं मूले अट्ठ
जोअणाइं आयामविक्खंभेणं बहुमज्झदेसभाए छ जोअणाइं आयामविक्खं-
भेणं उवरिं चत्तारि जोअणाइं आयामविक्खंभेणं—पणवीसट्ठारस बारसेव
मूले अ मज्झि उवरिं च। सविसेसाइं परिरओ कूडस्स इमस्स बोद्धव्वो
॥ १ ॥ मूले विच्छिण्णे मज्झे संखित्ते उवरिं तणुए सव्वकणगामए अच्छे
वेइआवणसंडवण्णओ, एवं सेसावि कूडा इति १४। जंबूए णं सुदंसणाए
दुवालस णामधेज्जा पन्नत्ता, तंजहा—सुदंसणा १ अमोहा २ य, सुप्पबुद्धा ३
जसोहरा ४। विदेहजंबू ५ सोमणसा ६, णिअया ७ णिच्चमंडिआ ८

॥ १ ॥ सुभद्दा य ९ विसाला य १०, सुजाया ११ सुमणा १२ विश्रा। सुदंसणाए जंबूए, णामधेज्जा दुवालस ॥ २ ॥ १५। जंबूए णं अट्ठट्ठ-मंगलगा १६। से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ-जंबू सुदंसणा २ ?, गोश्रमा ! जंबूए णं सुदंसणाए अणाढिए णामं देवे जंबूदीवाहिवई परिवसइ महिड्ढीए, से णं तत्थ चउण्हं सामाणिअसाहस्सीणं जाव आयरक्खदेव-साहस्सीणं, जंबुद्दीवस्स णं दीवस्स जंबूए सुदंसणाए अणाढिआए राय-हाणीए अण्णेसिं च बहूणं देवाण य देवीण य जाव विहरइ, से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ, जंबू सुदंसणा २, अदुत्तरं णं च णं गोश्रमा ! जंबूसुदंसणा जाव भुविं च ३ धुवा णिअआ सासया अक्खया जाव अव-ट्ठिआ १७। कहि णं भंते ! अणाढिअस्स देवस्स अणाढिआ णामं राय-हाणी पण्णत्ता ?, गोश्रमा ! जंबूदीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरेणं जं चेव पुव्ववण्णिअं जमिगापमाणं तं चेव णेअव्वं, जाव उववाओ अभिसेओ अ निरवसेसोत्ति १८ ॥ सूत्रं ९१ ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ उत्तर-कुरा २ ?, गोश्रमा ! उत्तरकुराए उत्तरकुरुणामं देवे परिवसइ महिड्ढीए जाव पलिओवमट्ठिइए, से तेणट्ठेणं गोश्रमा ! एवं वुच्चइ उत्तरकुरा २, अदुत्तरं च णंति जाव सासए १। कहि णं भंते ! महाविदेहे वासे माल-वंते णामं वक्खारपव्वए पण्णत्ते ?, गोयमा ! मंदरस्स पव्वयस्स उत्तर-पुरत्थिमेणं णीलवंतस्स वासहरपव्वयस्स दाहिणेणं उत्तरकुराए पुरत्थिमेणं वच्छस्स चक्कवट्टिविजयस्स पच्चत्थिमेणं एत्थ णं महाविदेहे वासे मालवंते णामं वक्खारपव्वए पण्णत्ते उत्तरदाहिणायए पाईणपडीणविच्छिण्णे जं चेव गंधमायणस्स पमाणं विक्खंभो अ णवरमिमं णाणत्तं सव्ववेरुलिआमए अवसिट्ठं तं चेव जाव गोश्रमा ! नव कूडा पण्णत्ता, तंजहा—सिद्धाययण-कूडे—सिद्धे य मालवंते उत्तरकुरु कच्छसागरे रयए। सीओय पुण्णभद्दे हरिस्सहे चेव बोद्धव्वे ॥ १ ॥ २। कहि णं भंते ! मालवंते वक्खारपव्वए

सिद्धाययणकूडे णामं कूडे पराणत्ते ?, गोअमा ! मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरपुरत्थिमेणं मालवंतस्स कूडस्स दाहिणपच्चत्थिमेणं एत्थ णं सिद्धाययणे कूडे णामं कुडे पराणत्ते, पंच जोअणसयाइं उद्धं उच्चत्तेणं अवसिट्ठं तं चेव जाव रायहाणी ३। एवं मालवंतस्स कूडस्स उत्तरकुरुकूडस्स कच्छकूडस्स, एए चत्तारि कूडा दिसाहिं पमाणेहिं णेअव्वा, कूडसरिसणामया देवा ४। कहि णं भंते ! मालवंते सागरकूडे नामं कूडे पराणत्ते ?, गोअमा ! कच्छकूडस्स उत्तरपुरत्थिमेणं रययकूडस्स दक्खिणेणं एत्थ णं सागरकूडे णामं कूडे पराणत्ते, पंच जोअणसयाइं उद्धं उच्चत्तेणं अवसिट्ठं तं चेव सुभोगा देवी रायहाणी उत्तरपुरत्थिमेणं रययकूडे भोगमालिणी देवी रायहाणी उत्तरपुरत्थिमेणं, अवसिट्ठा कूडा उत्तरदाहिणेणं णेअव्वा एक्केणं पमाणेणं ५ ॥ सूत्रं १२ ॥ कहि णं भंते ! मालवंते हरिस्सहकूडे णामं कूडे पराणत्ते ?, गोअमा ! पुराणभद्दस्स उत्तरेणं णीलवंतस्स दक्खिणेणं एत्थ णं हरिस्सहकूडे णामं कूडे पराणत्ते, एगं जोअणसहस्सं उद्धं उच्चत्तेणं जमगपमाणेणं णेअव्वं १। रायहाणी उत्तरेणं असंखेज्जे दीवे अराणंमि जंबुद्दीवे दीवे उत्तरेणं बारस जोअणसहस्साइं ओगाहित्ता एत्थ णं हरिस्सहस्स देवस्स हरिस्सहा-णामं रायहाणी पराणत्ता, चउरासीइं जोअणसहस्साइं आयामविक्खंभेणं बे जोअणसयमहस्साइं पराणट्ठिं च सहस्साइं छच्च छत्तीसे जोअणसए परिक्खेवेणं सेसं जहा चमरचंचाए रायहाणीए तहा पमाणं भाणिअव्वं, महिद्धीए महज्जुईए २। से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ मालवंत वक्खारपव्वए २ ?, गोअमा ! मालवंते णं वक्खारपव्वए तत्थ तत्थ देसे २ तहिं २ बहवे सरिआगुम्मा णोमालिआगुम्मा जाव मगदंतिआगुम्मा, ते णं गुम्मा दसद्धवराणं कुसुमं कुसुमेंति, जे णं तं मालवंतस्स वक्खारपव्वयस्स बहुसमरमणिज्जं भूमिभागं वाय-विधुअग्ग—सालामुक्क—पुप्फपुंजोवयारकलिअं करेंति, मालवंते अ इत्थ

देवे महिद्धीए जाव पलिओवमट्ठिइए परिवसइ, से तेणट्ठेणं गोअमा ! एव वुच्चइ, अदुत्तरं च णं जाव णिच्चे ३ ॥ सूत्रं ९३ ॥ कहि णं भंते ! जंबुद्दीवे दीवे महाविदेहे वासे कच्छे णामं विजए पराणत्ते ?, गोअमा ! सीआए महाणईए उत्तरेणं णीलवंतस्स वासहर-पव्वयस्स दक्खिणेणं चित्तकूडस्स वक्खारपव्वयस्स पच्चत्थिमेणं मालवं-तस्स वक्खारपव्वयस्स पुरत्थिमेणं एत्थ णं जंबुद्दीवे २ महाविदेहे वासे कच्छे णामं विजए पराणत्ते उत्तरदाहिणायए पाईणपडीणविच्छिराणे पलिअंकसंठाणसंठिए गंगासिंधूहिं महाणईहिं वेयद्धेण य पव्वएणं छब्भाग-पविभत्ते सोलस जोअणसहस्साइं पंच य बाणउए जोअणसए दोरिण अ एगूणवीसइभाए जोअणस्स आयामेणं दो जोअणसहस्साइं दोरिण अ तेर-सुत्तरे जोअणसए किंचिविसेसूणे विक्खंभेणंति १ । कच्छस्स णं विजयस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थ णं वेअद्धे णामं पव्वए पराणत्ते, जे णं कच्छं विजयं दुहा विभयमाणे २ चिट्ठइ, तंजहा—दाहिणद्धकच्छं च उत्तरद्धकच्छं चेति २ । कहि णं भंते ! जंबुद्दीवे दीवे महाविदेहे वासे दाहिणद्धकच्छे णामं विजए पराणत्ते ?, गोअमा ! वेअद्धस्स पव्वयस्स दाहिणेणं सीआए महाणईए उत्तरेणं चित्तकूडस्स वक्खारपव्वयस्स पच्चत्थिमेणं मालवंतस्स वक्खारपव्वयस्स पुरत्थिमेणं एत्थ णं जंबुद्दीवे दीवे महाविदेहे वासे दाहिणद्धकच्छे णामं विजए पन्नत्ते उत्तरदाहिणायए पाईणपडीणविच्छिराणे अट्ठ जोअणसहस्साइं दोरिण अ एगसत्तरे जोअणसए एक्कं च एगूणवीसइभागं जोअणस्स आयामेणं दो जोअणसह-स्साइं दोरिण अ तेरसुत्तरे जोअणसए किंचिविसेसूणे विक्खंभेणं पलि-अंकसंठाणसंठिए ३ । दाहिणद्धकच्छस्स णं भंते ! विजयस्स केरिसए आयारभावपडोआरे पराणत्ते ?, गोअमा ! बहुसमरमणिज्जे भूमि-भागे पराणत्ते, तंजहा—जाव कत्तिमेहिं चेव अकत्तिमेहिं चेव ४ । दाहिणद्ध-

कच्छे णं भंते ! विजए मणुत्राणं केरिसए आयारभावपडोआरे पराणत्ते ?, गोअमा ! तेसि णं मणुआणं छव्विहे संघयणे जाव सव्वदुक्खाणमंतं करेंति ५। कहि णं भंते ! जंबुद्दीवे दीवे महाविदेहे वासे कच्छे विजए वेअद्धे णामं पव्वए पन्नत्ते ?, गोअमा ! दाहिणद्धकच्छविजयस्स उत्तरेणं उत्तरद्धकच्छस्स दाहिणेणं चित्तकूडस्स पच्चत्थिमेणं मालवंतस्स वक्खारपव्वयस्स पुरत्थिमेणं एत्थ णं कच्छे विजए वेअद्धे णामं पव्वए पराणत्ते, तंजहा—पाईणपडीणायए उदीणदाहिणविच्छिराणे दुहा वक्खारपव्वए पुट्ठे—पुरत्थिमिलाए कोडीए जाव दोहिवि पुट्ठे भरहवेअद्धसरिसए णवरं दो बाहाओ जीवा धणुपट्ठं च ण कायव्वं, विजयविक्खंभसरिसे आयामेणं, विक्खंभो उच्चत्तं उव्वेहो तहेव च विज्जाहरआभिओगसेढीओ तहेव, णवरं पणपराणं २ विज्जाहरणगरावासा पराणत्ता, आभिओगसेढीए उत्तरिल्लाओ सेढीओ सीआए ईसाणस्स सेसाओ सक्कस्सत्ति, कूडा—'सिद्धे १ कच्छे २ खंडग ३ माणी ४ वेअद्ध ५ पुराण ६ तिमिसगुहा ७। कच्छे ८ वेसमणे वा ९ वेअद्धे होंति कूडाइं ॥ १ ॥६। कहि णं भंते ! जंबुद्दीवे २ महाविदेहे वासे उत्तरद्धकच्छे णाम विजए पराणत्ते ?, गोअमा ! वेयद्धस्स पव्वयस्स उत्तरेणं णीलवंतस्स वासहरपव्वयस्स दाहिणेणं मालवंतस्स वक्खारपव्वयस्स पुरत्थिमेणं चित्तकूडस्स वक्खारपव्वयस्स पच्चत्थिमेणं एत्थ णं जंबुद्दीवे दीवे जाव सिज्झंति ७। तहेव णेअव्वं सव्वं कहि णं भंते ! जंबुद्दीवे दीवे महाविदेहे वासे उत्तरद्धकच्छे विजए सिंधुकुंडे णामं कुंडे पराणत्ते ?, गोअमा ! मालवंतस्स वक्खारपव्वयस्स पुरत्थिमेणं उसभकूडस्स पच्चत्थिमेणं णीलवंतस्स वासहरपव्वयस्स दाहिणिल्ले णितंबे एत्थ णं जंबुद्दीवे दीवे महाविदेहे वासे उत्तरद्धकच्छविजए सिंधुकुंडे णामं कुंडे पराणत्ते, सट्ठिं जोअणाणि आयामविक्खंभेणं जाव भवणं अट्ठो रायहाणी अ णेअव्वा, भरहसिंधुकुंडसरिसं सव्वं

गोअव्वं, जाव तस्स णं सिंधुकुंडस्स दाहिणिल्लेणं तोरणेणं सिंधुमहाणई पवूढा समाणी उत्तरद्धकच्छविजयं एज्जेमाणी २ सत्तहिं सलिलासहस्सेहिं आपूरेमाणी २ अहे तिमिसगुहाए वेअद्धपव्वयं दालयित्ता दाहिणकच्छ-विजयं एज्जेमाणी २ चोद्दसहिं सलिलासहस्सेहिं समग्गा दाहिणेणं सीयं महाणइं समप्पेइ, सिंधुमहाणई पवहे अ मूले अ भरहसिंधुसरिसा पमा-णेणं जाव दोहिं वणसंडेहिं संपरिक्खित्ता ८। कहि णं भंते ! उत्तरद्धकच्छ-विजए उसभकूडे णामं पव्वए पराणत्ते ?, गोअमा ! सिंधुकुंडस्स पुरत्थिमेणं गंगाकुराडस्स पच्चत्थिमेणं णीलवंतस्स वासहरपव्वयस्स दाहिणिल्ले णितंबे एत्थ णं उत्तरद्धकच्छविजए उसहकूडे णामं पव्वए पराणत्ते, अट्ठ जोअणाइं उद्धं उच्चत्तेणं तं चेव पमाणं जाव रायहाणी से णवरं उत्तरेणं भाणिअव्वा ९। कहि णं भंते ! उत्तरद्धकच्छे विजए गंगाकुराडे णामं कुराडे पराणत्ते ?, गोअमा ! चित्तकूडस्स वक्खारपव्वयस्स पच्चत्थिमेणं उसहकूडस्स पव्वयस्स पुरत्थिमेणं णीलवंतस्स वासहरपव्वयस्स दाहिणिल्ले णितंबे एत्थ णं उत्तरद्धकच्छे गंगाकुराडे णामं कुराडे पराणत्ते सट्ठिं जोअणाइं आयामविक्खंभेणं तहेव जहा सिंधू जाव वणसंडेण य संपरिक्खित्ता १०। से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ कच्छे विजए २ ?, गोअमा ! कच्छे विजए वेअद्धस्स पव्वयस्स दाहिणेणं सीआए महाणईए उत्तरेणं गंगाए महाणईए पच्चत्थिमेणं सिंधूए महाणईए पुरत्थिमेणं दाहिणद्धकच्छविजयस्स बहु-मज्झदेसभाए, एत्थ णं खेमाणामं रायहाणी पन्नत्ता विणीआरायहाणीसरिसा भाणिअव्वा, तत्थ णं खेमाए रायहाणीए कच्छे णामं राया समुप्पज्जइ, महया हिमवंत जाव सव्वं भरहोअवणं भाणिअव्वं निक्खमणवज्जं सेसं सव्वं भाणि-अव्वं जाव भुंजए माणुस्सए सुहे, कच्छणामधेज्जे अ कच्छे इत्थ देवे महद्धीए जाव पलिओवमट्ठिईए परिवसइ, से एएणट्ठेणं गोअमा ! एवं वुच्चइ कच्छे विजए कच्छे विजए जाव णिच्चे ११ ॥ सूत्रं १४ ॥ कहि

णं भंते ! जंबुद्दीवे दीवे महाविदेहे वासे चित्तकूडे णामं वक्खारपव्वए पण्णत्ते ?, गोअमा ! सीआए महाणईए उत्तरेणं णीलवंतस्स वासहर-पव्वयस्स दाहिणेणं कच्छविजयस्स पुरत्थिमेणं सुकच्छविजयस्स पच्चत्थिमेणं एत्थ णं जंबुद्दीवे दीवे महाविदेहे वासे चित्तकूडे णामं वक्खारपव्वए पण्णत्ते, उत्तरदाहिणायए पाईणपडीणविच्छिण्णे सोलसजोअणसहस्साइं पञ्च य बाणउए जोअणसए दुण्णि अ एगूणवीसइभाए जोअणस्स आयामेणं पञ्च जोअणसयाइं विक्खंभेणं नीलवंत-वासहरपव्वयंतेणं चत्तारि जोअणसयाइं उद्धं उच्चत्तेणं चत्तारि गाऊअसयाइं उव्वेहेणं तयणंतरं च णं मायाए २ उस्सेहोव्वेहपरिवुद्धीए परिवद्धमाणे २ सीआमहाणईअंतेणं पञ्च जोअणसयाइं उद्धं उच्चत्तेणं पञ्च गाऊअसयाइं उव्वेहेणं अस्सखंध-संठाणसंठिए सव्वरयणामए अच्छे सण्हे जाव पडिरूवे, उभओ पासि दोहिं पउमवरवेइआहिं दोहि अ वणसंडेहिं संपरिक्खित्ते, वण्णओ दुण्हवि, चित्तकूडस्स णं वक्खारपव्वयस्स उप्पिं बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते जाव आसयंति १। चित्तकूडे णं भंते ! वक्खारपव्वए कति कूडा पण्णत्ता ?, गोअमा ! चत्तारि कूडा पण्णत्ता, तंजहा—सिद्धाययणकूडे चित्तकूडे कच्छकूडे सुकच्छकूडे, समा उत्तरदाहिणेणं परुप्परंति, पढमं सीआए उत्तरेणं चउत्थए नीलवंतस्स वासहरपव्वयस्स दाहिणेणं एत्थ णं चित्तकूडे णामं देवे महिद्धीए जाव रायहाणी सेत्ति २ ॥ सूत्रं ६५ ॥ कहि णं भंते ! जम्बुद्दीवे दीवे महाविदेहे वासे सुकच्छे णामं विजए पण्णत्ते ?, गोअमा ! सीआए महाणईए उत्तरेणं णीलवंतस्स वासहर-पव्वयस्स दाहिणेणं गाहावईए महाणईए पच्चत्थिमेणं चित्तकूडस्स वक्खार-पव्वयस्स पुरत्थिमेणं एत्थ णं जम्बुद्दीवे दीवे महाविदेहे वासे सुकच्छे णामं विजए पण्णत्ते, उत्तरदाहिणायए जहेव कच्छे विजए तहेव सुकच्छे विजए, णवरं खेमपुरा रायहाणी सुकच्छे राया समुप्पज्जइ तहेव सव्वं १। कहि णं

भंते ! जम्बुद्दीवे २ महाविदेहे वासे गाहावइकुंडे नामं कुंडे पराणत्ते ?, गोयमा ! सुकच्छविजयस्स पुरत्थिमेणं महाकच्छस्स विजयस्स पच्चत्थिमेणं णीलवंतस्स वासहरपव्वयस्स दाहिणिल्ले णितम्बे एत्थ णं जम्बुद्दीवे दीवे महाविदेहे वासे गाहावइकुंडे णामं कुराडे पराणत्ते, जहेव रोहिअंसाकुराडे तहेव जाव गाहावइदीवे भवणे, तस्स णं गाहावइस्स कुराडस्स दाहिणिल्लेणं तोरणेणं गाहावई महाणई पवूडा समाणी सुकच्छमहाकच्छविजए दुहा विभयमाणी २ अट्ठावीसाए सलिलासहस्सेहिं समग्गा दाहिणेणं सीअं महाणइं समप्पेइ, गाहावई णं महाणई पवहे अ मुहे अ सव्वत्थ समा पणवीसं जोअणसयं विक्खंभेणं अद्धाइज्जाइं जोअणाइं उव्वेहेणं उभओ पासिं दोहि य पउमवरवेइआहिं दोहि अ वणसराडेहिं जाव दुराहवि वराणओ इति २। कहि णं भंते ! महाविदेहे वासे महाकच्छे णामं विजये पराणत्ते ?, गोअमा ! णीलवंतस्स वासहरपव्वयस्स दाहिणेणं सीआए महाणईए उत्तरेणं पम्हकूडस्स वक्खारपव्वयस्स पच्चत्थिमेणं गाहावईए महाणईए पुरत्थिमेणं एत्थ णं महाविदेहे वासे महाकच्छे णामं विजए पराणत्ते, सेसं जहा कच्छविजयस्स जाव महाकच्छे इत्थ देवे महिद्धीए अट्ठो अ भाणिअव्वो ३। कहि णं भंते ! महाविदेहे वासे पम्हकूडे णामं वक्खार-पव्वए पराणत्ते ?, गोअमा ! णीलवंतस्स दक्खिणेणं सीआए महाणईए उत्तरेणं महाकच्छस्स पुरत्थिमेणं कच्छावईए पच्चत्थिमेणं एत्थ णं महाविदेहे वासे पम्हकूडे णामं वक्खारपव्वए पराणत्ते, उत्तरदाहिणायए पाईणपडीण-विच्छिराणे सेसं जहा चित्तकूडस्स जाव आसयंति, पम्हकूडे चत्तारि कूडा पराणत्ता, तंजहा—सिद्धाययणकूडे पम्हकूडे महाकच्छकूडे कच्छावइकूडे, एवं जाव अट्ठो, पम्हकूडे इत्थ देवे महद्धिए पलिओवमट्ठिईए परिवसइ, से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ ४। कहि णं भंते ! महाविदेहे वासे कच्छ-गावती णामं विजए पराणत्ते ?, गोयमा ! णीलवंतस्स दाहिणेणं सीआए

महाणईए उत्तरेणं दहावतीए महाणईए पच्चत्थिमेणं पम्हकूडस्स पुरत्थिमेणं एत्थ णं महाविदेहे वासे कच्छगावती णामं विजए पराणत्ते, उत्तरदाहिणायए पाईणपडीणविच्छिराणे, सेसं जहा कच्छस्स विजयस्स जाव कच्छगावई अ इत्थ देवे ५। कहि णं भंते! महाविदेहे वासे दहावई कुराडे णामं कुराडे पराणत्ते ?, गोअमा! आवत्तस्स विजयस्स पच्चत्थिमेणं कच्छगावईए विजयस्स पुरत्थिमेणं णीलवंतस्स दाहिणिल्ले णितंबे एत्थ णं महाविदेहे वासे दहावई-कुराडे णामं कुराडे पराणत्ते, सेसं जहा गाहावईकुराडस्स जाव अट्ठो, तस्स णं दहावईकुराडस्स दाहिणेणं तोरणेणं दहावई महाणई पवूढा समाणी कच्छावई-आवत्ते विजए दुहा विभयमाणी २ दाहिणेणं सीअं महाणइं समप्पेइ, सेसं जहा गाहावइए ६। कहि णं भंते! महाविदेहे वासे आवत्ते णामं विजए पराणत्ते ?, गोअमा! णीलवंतस्स वासहरपव्वयस्स दाहिणेणं सीआए महाणईए उत्तरेणं णलिणकूडस्स वक्खारपव्वयस्स पच्चत्थिमेणं दहावतीए महाणईए पुरत्थिमेणं एत्थ णं महाविदेहे वासे आवत्ते णामं विजए पराणत्ते, सेसं जहा कच्छस्स विजयस्स इति ७। कहि णं भंते! महाविदेहे वासे णलिणकूडे णामं वक्खारपव्वए पराणत्ते ?, गोयमा! णीलवंतस्स दाहिणेणं सीआए उत्तरेणं मंगलावइस्स विजयस्स पच्चत्थिमेणं आवत्तस्स विजयस्स पुरत्थिमेणं एत्थ णं महाविदेहे वासे णलिणकूडे णामं वक्खारपव्वए पराणत्ते, उत्तरदाहिणायए पाईणपडीणविच्छिराणे, सेसं जहा चित्तकूडस्स जाव आसयंति ८। णलिणकूडे णं भंते! कति कूडा पराणत्ता ?, गोअमा! चत्तारि कूडा पराणत्ता, तंजहा–सिद्धाययणकूडे णलिणकूडे आवत्तकूडे मंगलावत्तकूडे, एए कूडा पंचसइआ रायहाणीओ उत्तरेणं ९। कहि णं भंते! महाविदेहे वासे मंगलावत्ते णामं विजए पराणत्ते ?, गोअमा! णीलवंतस्स दक्खिणेणं सीआए उत्तरेणं णलिणकूडस्स पुरत्थिमेणं पंकावईए पच्चत्थिमेणं एत्थ णं मंगलावत्ते णामं विजए पराणत्ते,

जहा कच्छस्स विजए तहा एसो भाणियव्वो जाव मंगलावत्ते अ इत्थ देवे परिवसइ, से एएणट्ठेणं जाव वुच्चइ १०। कहि णं भंते! महाविदेहे वासे पंकावई कुंडे णामं कुण्डे पण्णत्ते? गोअमा! मंगलावत्तस्स विजयस्स पुरत्थिमेणं पुक्खलविजयस्स पच्चत्थिमेणं णीलवंतस्स दाहिणे णितंबे, एत्थ णं पंकावई जाव कुण्डे पण्णत्ते तं चेव गाहावइकुण्डमाणं जाव मंगलावत्तपुक्खलावत्तविजये दुहा विभयमाणी २ अवसेसं तं चेव जं चेव गाहावईए ११। कहि णं भंते! महाविदेहे वासे पुक्खलावत्ते णामं विजए पण्णत्ते?, गोअमा! णीलवंतस्स दाहिणेणं सीआए उत्तरेणं पंकावईए पुरत्थिमेणं एक्कसेलस्स वक्खारपव्वयस्स पच्चत्थिमेणं, एत्थ णं पुक्खलावत्ते णामं विजए पण्णत्ते जहा कच्छविजए तहा भाणिअव्वं जाव पुक्खले अ इत्थ देवे महिड्ढिए पलिओवमट्ठिइए परिवसइ, से एएणट्ठेणं जाव वुच्चइ १२। कहि णं भंते! महाविदेहे वासे एगसेले णामं वक्खारपव्वए पन्नत्ते?, गोयमा! पुक्खलावत्तचक्कवट्टिविजयस्स पुरत्थिमेणं पोक्खलावतीचक्कवट्टिविजयस्स पच्चत्थिमेणं णीलवंतस्स दक्खिणेणं सीआए उत्तरेणं, एत्थ णं एगसेले णामं वक्खारपव्वए पण्णत्ते, चित्तकूडगमेणं णेअव्वो जाव देवा आसयंति, चत्तारि कूडा पन्नत्ता, तंजहा–सिद्धाययणकूडे एगसेलकूडे पुक्खलावत्तकूडे पुक्खलावईकूडे, कूडाणं तं चेव पञ्चसइअं परिमाणं जाव एगसेले अ देवे महिद्धीए १३। कहि णं भंते! महाविदेहे वासे पुक्खलावई णामं चक्कवट्टिविजए पण्णत्ते?, गोअमा! णीलवंतस्स दक्खिणेणं सीआए उत्तरेणं उत्तरिल्लस्स सीआमुहवणस्स पच्चत्थिमेणं एगसेलस्स वक्खारपव्वयस्स पुरत्थिमेणं, एत्थ णं महाविदेहे वासे पुक्खलावई णामं विजए पण्णत्ते, उत्तरदाहिणायए एवं जहा कच्छविजयस्स जाव पुक्खलावई अ इत्थ देवे परिवसइ, एएणट्ठेणं १४। कहिं णं भंते! महाविदेहे वासे सीआए महाण-

ईए उत्तरिल्ले सीत्रामुहवणे णामं वणे पराणत्ते ?, गोत्रमा ! णीलवंतस्स दक्खिणेणं सीत्राए उत्तरेणं पुरत्थिमलवणसमुद्दस्स पच्चत्थिमेणं पुक्खलावइ-चक्कवट्टिविजयस्स पुरत्थिमेणं, एत्थ णं सीत्रामुहवणे णामं वणे पराणत्ते उत्तरदाहिणायए पाईणपडीणविच्छिरणे सोलसजोत्रणसहस्साइं पञ्च य बाणउए जोत्रणसए दोरिण त्र एगूणवीसइभाए जोत्रणस्स त्रायामेणं सीत्राए महाणईए त्रंतेणं दो जोत्रणसहस्साइं नव य बावीसे जोत्रणसए विक्खंभेणं तयणंतरं च णं मायाए २ परिहायमाणे २ णीलवंतवासहर-पव्वयंतेणं एगं एगूणवीसइभागं जोत्रणस्स विक्खंभेणंति, से णं एगाए पउम-वरवेइत्राए एगेण य वणसंडेणं संपरिक्खित्तं वरणत्रो सीत्रामुहवणस्स जाव देवा त्रासयंति १५ । एवं उत्तरिल्लं पासं समत्तं, विजया भणित्रा १६ । रायहाणीत्रो इमात्रो—खेमा १ खेमपुरा २ चेव, रिट्ठा ३ रिट्ठपुरा ४ तहा । खग्गी ५ मंजूसा ६ त्रवित्र, त्रोसही ७ पुंडरीगिणी ८ ॥ १ ॥ १७ । सोलस विज्जाहरसेढीत्रो तावइत्रात्रो त्रभित्रोगसेढीत्रो सव्वात्रो इमात्रो ईसाणस्स, सव्वेसु विजएसु कच्छवत्तव्वया जाव त्रट्ठो, रायाणो सरिसणामगा विजएसु सोलसराहं वक्खारपव्वयाणं चित्तकूडवत्त-व्वया जाव कूडा चत्तारि २ बारसराहं णईणं गाहावइ वत्तव्वया जाव उभत्रो पासिं दोहिं पउमवरवेइत्राहिं वणसंडेहि त्र वरणत्रो १८ ॥ सूत्रं ९६ ॥

कहि णं भंते ! जम्बुद्दीवे दीवे महाविदेहे वासे सीत्राए महाणईए दाहि-णिल्ले सीयामुहवणे णामं वणे पराणत्ते ?, एवं जह चेव उत्तरिल्लं सीत्रा-मुहवणं तह चेव दाहिणंपि भाणित्रव्वं, णवरं णिसहस्स वासहरपव्वयस्स उत्तरेणं सीत्राए महाणईए दाहिणेणं पुरत्थिमलवणसमुद्दस्स पच्चत्थिमेणं वच्छस्स विजयस्स पुरत्थिमेणं एत्थ णं जम्बुद्दीवे दीवे महाविदेहे वासे सीत्राए महाणईए दाहिणिल्ले सीत्रामुहवणे णामं वणे पन्नत्ते, उत्तरदाहि-णायए तहेव सव्वं णवरं णिसहवासहरपव्वयंतेणं एगमेगूणवीसइभागं

जोअणस्स विक्खंभेणं किण्हे किण्होभासे जाव महया गंधद्धणिं मुअंते जाव आसयंति उभओ पासिं दोहिं पउमवरवेइआहि वणखण्डेहिं परिक्खित्ते वणओ इति १। कहि णं भंते! जम्बुद्दीवे दीवे महाविदेहे वासे वच्छे णामं विजए पण्णत्ते?, गोअमा! णिसहस्स वासहरपव्वयस्स उत्तरेणं सीआए महाणईए दाहिणेणं दाहिणिल्लस्स सीआमुहवणस्स पच्चत्थिमेणं तिउडस्स वक्खारपव्वयस्स पुरत्थिमेणं एत्थ णं जम्बुद्दीवे दीवे महाविदेहे वासे वच्छे णामं विजए पण्णत्ते, तं चेव पमाणं सुसीमा रायहाणी १, तिउडे वक्खारपव्वए सुवच्छे विजए कुण्डला रायहाणी २, तत्तजला णई महावच्छे विजए अपराजिआ रायहाणी ३, वेसमणकूडे वक्खारपव्वए वच्छावई विजए पभंकरा रायहाणी ४, मत्तजला णई रम्मे विजए अंकावई रायहाणी ५, अंजणे वक्खारपव्वए रम्मगे विजए पम्हावई रायहाणी ६, उम्मत्तजला महाणई रमणिज्जे विजए सुभा रायहाणी ७, मायंजणे वक्खारपव्वए मंगलावई विजए रयणसंचया रायहाणीति ८, एवं जह चेव सीआए महाणईए उत्तरं पासं तह चेव दक्खिणिल्लं भाणिअव्वं २। दाहिणिल्लसीआमुहवणाइ, इमे वक्खारकूडा तंजहा—तिउडे १ वेसमणकूडे २ अंजणे ३ मायंजणे ४, [णईउ तत्तजला १ मत्तजला २ उम्मत्तजला ३,] विजया तंजहा—वच्छे सुवच्छे महावच्छे चउत्थे वच्छगावई। रम्मे रम्मए चेव, रमणिज्जे मंगलावई ॥ १ ॥ रायहाणीओ, तंजहा—सुसीमा कुण्डला चेव, अवराइअ पहंकरा। अंकावई पम्हावई सुभा रयणसंचया ॥ २ ॥ ३। वच्छस्स विजयस्स णिसहे दाहिणेणं सीआ उत्तरेणं दाहिणिल्लसीदामुहवणे पुरत्थिमेणं तिउडे पच्चत्थिमेणं सुसीमा रायहाणी पमाणं तं चेवेति ४। वच्छाणंतरं तिउडे तओ सुवच्छे विजए एएणं कमेणं तत्तजला णई महावच्छे विजए वेसमणकूडे वक्खारपव्वए वच्छावई विजए मत्तजला णई रम्मे विजए अंजणे वक्खारपव्वए रम्मए विजए उम्मत्तजला णई रमणिज्जे विजए मायंजणे वक्खारपव्वए मंगलावई

विजए ५ ॥ सूत्रं १७ ॥ कहि णं भंते ! जम्बुद्दीवे दीवे महाविदेहे वासे सोमणसे णामं वक्खारपव्वए पराणत्ते ?, गोयमा ! णिसहस्स वासहर-पव्वयस्स उत्तरेणं मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणपुरत्थिमेणं मंगलावईविजयस्स पच्चत्थिमेणं देवकुराए पुरत्थिमेणं एत्थ णं जम्बुद्दीवे २ महाविदेहे वासे सोमणसे णामं वक्खारपव्वए पराणत्ते उत्तरदाहिणायए पाईणपडीणविच्छिराणे जहा मालवंते वक्खारपव्वए तहा णवरं सव्वरययामए अच्छे जाव पडिरूवे १ । णिसहवासहर-पव्वयंतेणं चत्तारि जोअणसयाइं उद्धं उच्चत्तेणं चत्तारि गाऊअसयाइं उव्वेहेणं सेसं तहेव सव्वं णवरं अट्ठो से गोअमा ! सोमणसे णं वक्खारपव्वए बहवे देवा य देवीओ अ सोमा सुमणा सोमणसे अ इत्थ देवे महिद्धीए जाव परिवसइ से एएणट्ठेणं गोअमा ! जाव णिच्चे २ । सोमणसे वक्खारपव्वए कइ कूडा पराणत्ता ?, गोयमा ! सत्त कूडा पराणत्ता, तंजहा—सिद्धे १ सोमणसे २ विअ बोद्धव्वे मंगला-वईकूडे ३ । देवकुरु ४ विमल ५ कंचण ६ वसिट्ठकूडे ७ अ बोद्धव्वे ॥ १ ॥ एवं सव्वे पञ्चसइआ कूडा ३ । एएसिं पुच्छाए दिसिविदिसाए भाणिअव्वा जहा गंधमायणस्स, विमलकञ्चणकूडेसु णवरिं देवयाओ सुवच्छा वच्छमित्ता य अवसिट्ठेसु कूडेसु सरिसणामया देवा रायहाणीओ दक्खिणेणं ४ । कहि णं भंते ! महाविदेहे वासे देवकुराणामं कुरा पराणत्ता ?, गोअमा ! मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं णिसहस्स वासहरपव्व-यस्स उत्तरेणं विज्जुप्पहस्स वक्खारपव्वयस्स पुरत्थिमेणं सोमणसवक्खार-पव्वयस्स पच्चत्थिमेणं एत्थ णं महाविदेहे वासे देवकुराणामं कुरा पराणत्ता पाईणपडिणायया उदीणदाहिणविच्छिराणा इक्कारस जोअणसहस्साइं अट्ठ य बायाले जोअणसए दुरिण अ एगूणवीसइभाए जोअणस्स विक्खंभेणं जहा उत्तरकुराए वत्तव्वया जाव अणुसज्जमाणा पम्हगंधा मिअगंधा अममा सहा तेतली सणिचारीति ६, ५ ॥ सूत्रं १८ ॥ कहि

णं भंते ! देवकुराए चित्तविचित्तकूडाणं दुवे पव्वया पन्नत्ता ? गोयमा ! णिसहस्स वासहरपव्वयस्स उत्तरिल्लाओ चरिमंताओ अट्ठचोत्तीसे जोअणसए चत्तारि अ सत्तभाए जोअणस्स अबाहाए सीओआए महाणईए पुरत्थिमपच्चत्थिमेणं उभओकूले एत्थ णं चित्तविचित्तकूडा णामं दुवे पव्वया पन्नत्ता, एवं जच्चेव जमगपव्वयाणं सच्चेव, एएसिं रायहाणीओ दक्खिणेणंति ॥ सूत्रं ९९ ॥ कहि णं भंते ! देवकुराए २ णिसढद्दहे णामं दहे पण्णत्ते ?, गोयमा ! तेसिं चित्तविचित्तकूडाणं पव्वयाणं उत्तरिल्लाओ चरिमंताओ अट्ठचोतीसे जोअणसए चत्तारि अ सत्तभाए जोअणस्स अबाहाए सीओआए महाणईए बहुमज्झदेसभाए एत्थ णं णिसहद्दहे णामं दहे पण्णत्ते, एवं जच्चेव नीलवंतउत्तरकुरुचंदेरावयमालवंताणं वत्तव्वया सच्चेव णिसहदेवकुरु-सूरसुलसविज्जुप्पभाणं णेअव्वा, रायहाणीओ दक्खिणेणंति ॥ सूत्रं १०० ॥ कहि णं भंते ! देवकुराए २ कूडसामलिपेढे णामं पेढे पण्णत्ते ?, गोअमा ! मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणपच्चत्थिमेणं णिसहस्स वासहरपव्वयस्स उत्तरेणं विज्जुप्पभस्स वक्खारपव्वयस्स पुरत्थिमेणं सीओआए महाणईए पच्चत्थिमेणं देवकुरुपच्चत्थिमद्धस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थ णं देवकुराए कुराए कूडसामली पेढे णामं पेढे पण्णत्ते १ । एवं जच्चेव जम्बूए सुदंसणाए वत्तव्वया सच्चेव सामलीएवि भाणिअव्वा णामविहूणा गरुलवेणु(गरुलवेग)देवे रायहाणी दक्खिणेणं अवसिट्ठं तं चेव जाव देवकुरू अ इत्थ देवे पलिओवमट्ठिइए परिवसइ, से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ देवकुरा २, अदुत्तरं च णं देवकुराए जाव णिच्चे २ ॥ सूत्रं १०१ ॥ कहि णं भंते ! जंबुद्दीवे २ महाविदेहे वासे विज्जुप्पभे णामं वक्खारपव्वए पन्नत्ते ?, गोयमा ! णिसहस्स वासहरपव्वयस्स उत्तरेणं मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणपच्चत्थिमेणं देवकुराए पच्चत्थिमेणं पम्हस्स विजयस्स पुरत्थिमेणं, एत्थ णं जंबुद्दीवे २ महाविदेहे वासे विज्जुप्पभे वक्खारपव्वए पन्नत्ते, उत्तरदाहिणायए

एवं जहा मालवंते णवरि सव्वतवणिज्जमए अच्छे जाव देवा आसयंति १। विज्जुप्पभे णं भंते ! वक्खारपव्वए कइ कूडा पण्णत्ता?, गोयमा ! नव कूडा पन्नत्ता, तंजहा—सिद्धायणकूडे विज्जुप्पभकूडे देवकुरुकूडे पम्हकूडे कणगकूडे सोवत्थिअकूडे सीओआकूडे सयज्ज(यंज)लकूडे हरिकूडे २। सिद्धे अ विज्जुणामे देवकुरु पम्हकणगसोवत्थी। सीओआ य सयज्जलहरिकूडे चेव बोद्धव्वे ॥ १ ॥ एए हरिकूडवज्जा पञ्चसइआ णेअव्वा ३। एएसिं कूडाणं पुच्छाए दिसिविदिसाओ णेअव्वाओ जहा मालवंतस्स हरिस्सहकूडे तह चेव हरिकूडे रायहाणी जह चेव दाहिणेणं चमरचंचा रायहाणी तह णेअव्वा, कणगसोवत्थिअकूडेसु वारिसेणबलाहयाओ दो देवयाओ अवसिट्ठेसु कूडेसु कूडसरिसणामया देवा रायहाणीओ दाहिणेणं ४। से केणट्ठे णं भंते ! एवं वुच्चइ—विज्जुप्पभे वक्खारपव्वए २?, गोअमा ! विज्जुप्पभे णं वक्खारपव्वए विज्जुमिव सव्वओ समंता ओभासेइ उज्जोवेइ पभासइ विज्जुप्पभे य इत्थ देवे पलिओवमट्ठिइए जाव परिवसइ, से एएणट्ठे णं गोअमा ! एवं वुच्चइ विज्जुप्पभे २, अदुत्तरं च णं जाव णिच्चे ५ ॥ सूत्रं १०२ ॥

एवं पम्हे विजए अस्सपुरा रायहाणी अंकावई वक्खारपव्वए १, सुपम्हे विजए सीहपुरा रायहाणी खीरोदा महाणई २, महापम्हे विजए महापुरा रायहाणी पम्हावई वक्खारपव्वए ३, पम्हगावई विजए विजयपुरा रायहाणी सीअसोआ महाणई ४, संखे विजए अवराइआ रायहाणी आसीविसे वक्खारपव्वए ५, कुमुदे विजए अरजा रायहाणी अंतोवाहिणी महाणई ६, णलिणे विजए असोगा रायहाणी सुहावहे वक्खारपव्वए ७, णलिणावई विजए वीयसोगा रायहाणी ८ दाहिणिल्ले सीओआमुहवणसंडे, उत्तरिल्लेवि एमेव भाणिअव्वे जहा सीआए १। वप्पे विजए विजया रायहाणी चन्दे वक्खारपव्वए १, सुवप्पे विजए जयंती रायहाणी ओम्मिमालिणी णई २, महावप्पे विजए जयंती रायहाणी सूरे वक्खारपव्वए

३, वप्पावई विजए अपराइआ रायहाणी फेणमालिणी णई ४, वग्गू विजए चक्कपुरा रायहाणी णागे वक्खारपव्वए ५, सुवग्गू विजए खग्गपुरा रायहाणी गंभीरमालिणी अंतरणई ६, गन्धिले विजए अवज्झा रायहाणी देवे वक्खारपव्वए ७, गंधिलावई विजए अओज्झा रायहाणी ८, २। एवं मंदरस्स पव्वयस्स पच्चत्थिमिल्लं पासं भाणिअव्वं तत्थ ताव सीओआए महाणईए दक्खिणिल्ले णं कूले इमे विजया, तंजहा—पम्हे सुपम्हे महापम्हे, चउत्थे पम्हगावई। संखे कुमुए णलिणे, अट्ठमे णलिणावई ॥ १ ॥ ३। इमाओ रायहाणीओ, तंजहा—आसपुरा सीहपुरा महापुरा चेव हवइ विजयपुरा। अवराइआ य अरया असोग तह वीअसोगा य ॥ २ ॥ ४। इमे वक्खारा, तंजहा—अंके पम्हे आसीविसे सुहावहे, एवं इत्थ परिवाडीए दो दो विजया कूडसरिसणामया भाणिअव्वा दिसा विदिसाओ अ भाणिअव्वाओ, सीओआमुहवणं च भाणिअव्वं सीओआए दाहिणिल्लं उत्तरिल्लं च ५। सीओआए उत्तरिल्ले पासे इमे विजया, तंजहा—वप्पे सुवप्पे महावप्पे चउत्थे वप्पयावई। वग्गू अ सुवग्गू अ, गंधिले गंधिलावई ॥ १ ॥ ६। रायहाणीओ इमाओ, तंजहा—विजया वेजयन्ती जयंती अपराजिआ। चक्कपुरा खग्गपुरा हवइ अवज्झा अउज्झा य ॥ २ ॥ ७। इमे वक्खारा तंजहा—चन्दपव्वए १ सूरपव्वए २ नागपव्वए ३ देवपव्वए ४, ८। इमाओ णईओ सीओआए महाणईए दाहिणिल्ले कूले—खीरोआ सीहसोआ अंतरवाहिणीओ णईओ ३, उम्मिमालिणी १ फेणमालिणी २ गंभीरमालिणी ३ उत्तरिल्लविजयाणन्तरा उत्ति, इत्थ परिवाडीए दो दो कूडा विजयसरिसणामया भाणिअव्वा, इमे दो दो कूडा अवट्ठिआ तंजहा—सिद्धाययणकूडे पव्वयसरिसणामकूडे १ ॥ सूत्रं १०३ ॥ कहि णं भंते! जंबुद्दीवे २ महाविदेहे वासे मंदरे णामं पव्वए पण्णत्ते?, गोअमा! उत्तरकुराए दक्खिणेणं देवकुराए उत्तरेणं पुव्वविदेहस्स वासस्स पच्चत्थिमेणं अवरविदे-

हस्स वासस्स पुरत्थिमेणं जंबुद्दीवस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थ णं जंबुद्दीवे दीवे मंदरेणामं पव्वए पण्णत्ते, णवणउतिजोअणसहस्साइं उद्धं उच्चत्तेणं एगं जोअणसहस्सं उव्वेहेणं मूले दसजोअणसहस्साइं णवइं च जोअणाइं दस य एगारसभाए जोअणस्स विक्खंभेणं, धरणिअले दस जोअणसहस्साइं विक्खंभेणं तयणंतरं च णं मायाए २ परिहायमाणे परिहायमाणे उवरितले एगं जोअणसहस्सं विक्खंभेणं मूले एक्कत्तीसं जोअणसहस्साइं णव य दसुत्तरे जोअणसए तिण्णि अ एगारसभाए जोअणस्स परिक्खेवेणं धरणिअले एक्कत्तीसं जोअणसहस्साइं छच्च तेवीसे जोअणसए परिक्खेवेणं उवरितले तिण्णि जोअणसहस्साइं एगं च बावट्ठं जोअणसयं किंचिविसेसाहिअं परिक्खेवेणं मूले विच्छिण्णे मज्झे संखित्ते उवरिं तणुए गोपुच्छसंठाणसंठिए सव्वरयणामए अच्छे सण्हेत्ति १ । से णं एगाए पउमवरवेइआए एगेण य वणसंडेणं सव्वओ समंता संपरिक्खित्ते वण्णओत्ति, मंदरे णं भंते ! पव्वए कइ वणा पण्णत्ता ?, गोयमा ! चत्तारि वणा पन्नत्ता, तंजहा– भद्दसालवणे १ णंदणवणे २ सोमणसवणे ३ पंडगवणे ४, २ । कहि णं भंते ! मंदरे पव्वए भद्दसालवणे णामं वणे पन्नत्ते ?, गोअमा ! धरणिअले एत्थ णं मंदरे पव्वए भद्दसालवणे णामं वणे पण्णत्ते पाइणपडीणायए उदीण-दाहिणविच्छिण्णे सोमणस-विज्जुप्पह-गंधमायणमालवंतेहिं वक्खारपव्वएहिं सीआसीओआहि अ महाणईहिं अट्ठभागपविभत्ते मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमपच्चत्थिमेणं बावीसं बावीसं जोअणसहस्साइं आयामेणं उत्तरदाहिणेणं अड्ढाइज्जाइं अड्ढाइज्जाइं जोअणसयाइं विक्खंभेणंति, से णं एगाए पउमवरवेइयाए एगेण य वणसंडेणं सव्वओ समंता संपरिक्खित्ते दुण्हवि वण्णओ भाणिअव्वो किण्हे किण्होभासे जाव देवा आसयंति सयंति ३ । मंदरस्स णं पव्वयस्स पुरत्थिमेणं भद्दसालवणं पण्णासं जोअणाइं ओगाहित्ता एत्थ णं महं एगे सिद्धाययणे पण्णत्ते पण्णासं जोअणाइं आयामेणं

पणवीसं जोअणाइं विक्खंभेणं छत्तीसं जोअणाइं उद्धं उच्चत्तेणं अणेगखंभसयसंणिविट्ठे वण्णओ ४। तस्स णं सिद्धायणस्स तिदिसिं तओ दारा पन्नत्ता, ते णं दारा अट्ठ जोअणाइं उद्धं उच्चत्तेणं चत्तारि जोअणाइं विक्खंभेणं तावइयं चेव पवेसेणं सेआ वरकणगथूभिआगा जाव वणमालाओ भूमिभागो अ भाणिअव्वो ५। तस्स णं बहुमज्झदेसभाए एत्थ णं महं एगा मणिपेढिया पण्णत्ता अट्ठजोअणाइं आयामविक्खंभेणं चत्तारि जोअणाइं बाहल्लेणं सव्वरयणामई अच्छा ६। तीसे णं मणिपेढिआए उवरिं देवच्छन्दए अट्ठजोअणाइं आयामविक्खंभेणं साइरेगाइं अट्ठजोअणाइं उद्धं उच्चत्तेणं जाव जिणपडिमावण्णओ देवच्छंदगस्स जाव धूवकडुच्छुआणं इति ७। मंदरस्स णं पव्वयस्स दाहिणेणं भद्दसालवणं पण्णासं एवं चउद्दिसिंपि मंदरस्स भद्दसालवणे चत्तारि सिद्धायणा भाणिअव्वा ८। मंदरस्स णं पव्वयस्स उत्तरपुरत्थिमेणं भद्दसालवणं पण्णासं जोअणाइं ओगाहित्ता एत्थ णं चत्तारि णंदापुक्खरिणीओ पण्णत्ताओ, तंजहा—पउमा १ पउमप्पभा २ चेव, कुमुदा ३ कुमुदप्पभा ४, १। ताओ णं पुक्खरिणीओ पण्णासं जोअणाइं आयामेणं पणवीसं जोअणाइं विक्खंभेणं दसजोअणाइं उव्वेहेणं वण्णओ वेइआवणसंडाणं भाणिअव्वो १०। चउद्दिसिं तोरणा जाव तासि णं पुक्खरिणीणं बहुमज्झदेसभाए एत्थ णं महं एगे ईसाणस्स देविंदस्स देवरण्णो पासायवडिंसए पण्णत्ते पंचजोअणसयाइं उद्धं उच्चत्तेणं अद्धाइज्जाइं जोअणसयाइं विक्खंभेणं आयामेणवि, अब्भुग्गयमूसिय एवं सपरिवारो पासायवडिंसओ भाणिअव्वो ११। मंदरस्स णं एवं दाहिणपुरत्थिमेणं पुक्खरिणीओ उप्पलगुम्मा णलिणा उप्पला उप्पलुज्जला तं चेव पमाणं मज्झे पासायवडिंसओ सक्कस्स सपरिवारो तेणं चेव पमाणेणं दाहिणपच्चत्थिमेणवि पुक्खरिणीओ भिंगा भिंगनिभा चेव, अंजणा अंजणप्पभा १२। पासायवडिंसओ सक्कस्स सीहासणं

सपरिवारं, उत्तरपुरत्थिमेणं पुक्खरिणीओ–सिरिकंता १ सिरिचंदा २ सिरिमहिआ ३ चेव सिरिणिलया ४ । पासायवडिंसओ ईसाणस्स सीहासणं सपरिवारंति १३ । मंदरे णं भंते ! पव्वए भद्दसालवणे कइ दिसाहत्थिकूडा पन्नत्ता ?, गोयमा ! अट्ठ दिसाहत्थिकूडा पण्णत्ता, तंजहा—पउमुत्तरे १ णीलवंते २ सुहत्थी ३ अंजणागिरी ४ । कुमुदे अ ५ पलासे अ ६, वडिंसे ७ रोअणागिरी ८ ॥ १ ॥ १४ । कहि णं भंते ! मंदरे पव्वए भद्दसालवणे पउमुत्तरे णामं दिसाहत्थिकूडे पन्नत्ते ?, गोअमा ! मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरपुरत्थिमेणं पुरत्थिमिल्लाए सीआए उत्तरेणं एत्थ णं पउमुत्तरे-णामं दिसाहत्थिकूडे पण्णत्ते पंचजोअणसयाइं उद्धं उच्चत्तेणं पंचगाउअसयाइं उव्वेहेणं एवं विक्खंभपरिक्खेवो भाणिअव्वो चुल्लहिमवंतसरिसो, पासायाण य तं चेव पउमुत्तरो देवो रायहाणी उत्तरपुरत्थिमेणं १, १५ । एवं णील-वंतदिसाहत्थिकूडे मंदरस्स दाहिणपुरत्थिमेणं पुरत्थिमिल्लाए सीआए दक्खि-णेणं एअस्सवि नीलवंतो देवो रायहाणी दाहिणपुरत्थिमेणं २, १६ । एवं सुहत्थिदिसाहत्थिकूडे मंदरस्स दाहिणपुरत्थिमेणं दक्खिणिल्लाए सीओआए पुरत्थिमेणं एअस्सवि सुहत्थी देवो रायहाणी दाहिणपुरत्थिमेणं ३, १७ । एवं चेव अंजणागिरिदिसाहत्थिकूडे मंदरस्स दाहिणपच्चत्थिमेणं दक्खिणिल्लाए सीओआए पच्चत्थिमेणं, एअस्सवि अंजणागिरी देवो रायहाणी दाहिणपच्चत्थिमेणं ४, १८ । एवं कुमुदे विदिसाहत्थिकूडे मंदरस्स दाहिण-पच्चत्थिमेणं पच्चत्थिमिल्लाए सीओआए दक्खिणेणं एअस्सवि कुमुदो देवो रायहाणी दाहिणपच्चत्थिमेणं ५, १९ । एवं पलासे विदिसाहत्थिकूडे मंदरस्स उत्तरपच्चत्थिमेणं पच्चत्थिमिल्लाए सीओआए उत्तरेणं एअस्सवि पलासो देवो रायहाणी उत्तरपच्चत्थिमेणं ६, २० । एवं वडेंसे विदिसाहत्थि-कूडे मंदरस्स उत्तरपच्चत्थिमेणं उत्तरिल्लाए सीआए महाणईए पच्चत्थिमेणं एअस्सवि वडेंसो देवो रायहाणी उत्तरपच्चत्थिमेणं २१ । एवं रोअणागिरी

दिसाहत्थिकूडे मंदरस्स उत्तरपुरत्थिमेणं उत्तरिल्लाए सीआए पुरत्थिमेणं एयस्सवि रोअणागिरी देवो रायहाणी उत्तरपुरत्थिमेणं २२ ॥सूत्रं १०४ ॥ कहि णं भंते ! मंदरे पव्वए णंदणवणे णामं वणे पण्णत्ते ?, गोयमा ! भद्दसालवणस्स बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ पञ्चजोअणसयाइं उद्धं उप्पइत्ता एत्थ णं मंदरे पव्वए णंदणवणे णामं वणे पण्णत्ते पंचजोअणसयाइं चक्कवालविक्खंभेणं वट्टे वलयाकारसंठाणसंठिए जे णं मंदरं पव्वयं सव्वओ समंता संपरिक्खित्ताणं चिट्ठइत्ति णवजोअणसहस्साइं णव य चउप्पण्णे जोअणसए छच्चेगारसभाए जोअणस्स बाहिं गिरिविक्खंभो एगत्तीसं जोअणसहस्साइं चत्तारि अ अउणासीए जोअणसए किंचिविसेसाहिए बाहिं गिरिपरिरएणं अट्ठ जोअणसहस्साइं णव य चउप्पण्णे जोअणसए छच्चेगारसभाए जोअणस्स अंतो गिरिविक्खंभो अट्ठावीसं जोअणसहस्साइं तिण्णि य सोलसुत्तरे जोअणसए अट्ठ य इक्कारसभाए जोअणस्स अंतो गिरिपरिरएणं, से णं एगाए पउमवरवेइआए एगेण य वणसंडेणं सव्वओ समंता संपरिक्खित्ते वण्णओ जाव देवा आसयंति १ । मंदरस्स णं पव्वयस्स पुरत्थिमेणं एत्थ णं महं एगे सिद्धाययणे पण्णत्ते एवं चउद्दिसिं चत्तारि सिद्धाययणा विदिसासु पुक्खरिणीओ तं चेव पमाणं सिद्धाययणाणं पुक्खरिणीणं च पासायवडिंसगा तह चेव सक्केसाणाणं तेणं चेव पमाणेणं २ णंदणवणे णं भंते ! कइ कूडा पण्णत्ता ?, गोअमा ! णव कूडा पण्णत्ता, तंजहा—णंदणवणकूडे १ मंदरकूडे २ णिसहकूडे ३ हिमवयकूडे ४ रययकूडे ५ रुअगकूडे ६ सागरचित्तकूडे ७ वइरकूडे ८ बलकूडे ९, ३ । कहि णं भंते ! णंदणवणे णंदणवणकूडे णामं कूडे पण्णत्ते ?, गोअमा ! मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमिल्लसिद्धाययणस्स उत्तरेणं उत्तरपुरत्थिमिल्लस्स पासायवडेंसयस्स दक्खिणेणं, एत्थ णं णंदणवणे णंदणवणे णामं कूडे पण्णत्ते पंचसइआ कूडा पुव्ववण्णिआ भाणिअव्वा, देवी मेहंकरा राय-

हाणी विदिसाएत्ति १, ४। एआहिं चेव पुव्वाभिलावेणं गोअव्वा इमे कूडा इमाहिं दिसाहिं पुरत्थिमिल्लस्स भवणस्स दाहिणेणं दाहिणपुरत्थिमिल्लस्स पासायवडेंसगस्स उत्तरेणं मंदरे कूडे मेहवई रायहाणी पुव्वेणं २, ५। दक्खिणिल्लस्स भवणस्स पुरत्थिमेणं दाहिणपुरत्थिमिल्लस्स पासायवडेंसगस्स पच्चत्थिमेणं णिसहे कूडे सुमेहा देवी रायहाणी दक्खिणेणं ३, ६। दक्खिणिल्लस्स भवणस्स पच्चत्थिमेणं दक्खिणपच्चत्थिमिल्लस्स पासायवडेंसगस्स पुरत्थिमेणं हेमवए कूडे हेममालिनी देवी रायहाणी दक्खिणेणं ४, ७। पच्चत्थिमिल्लस्स भवणस्स दक्खिणेणं दाहिणपच्चत्थिमिल्लस्स पासायवडेंसगस्स उत्तरेणं रयए कूडे सुवच्छा देवी रायहाणी पच्चत्थिमेणं ५, ८। पच्चत्थिमिल्लस्स भवणस्स उत्तरेणं उत्तरपच्चत्थिमिल्लस्स पासायवडेंसगस्स दक्खिणेणं रुअगे कूडे वच्छमित्ता देवी रायहाणी पच्चत्थिमेणं ६, ९। उत्तरिल्लस्स भवणस्स पच्चत्थिमेणं उत्तर पच्चत्थिमिल्लस्स पासायवडेंमगस्स पुरत्थिमेणं सागरचित्ते कूडे वइरसेणा देवी रायहाणी उत्तरेणं ७,१०। उत्तरिल्लस्स भवणस्स पुरत्थिमेणं उत्तरपुरत्थिमिल्लस्स पासायमडेंसगस्स पच्चत्थिमेणं वइरकूडे बलाहया देवी रायहाणी उत्तरेणंति ८, ११। कहि णं भंते ! णंदणवणे बलकूडे णामं कूडे पराणत्ते ?, गोअमा ! मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरपुरत्थिमेणं एत्थ णं णंदणवणे बलकूडे णामं कूडे पराणत्ते, एवं जं चेव हरिस्सहकूडस्स पमाणं रायहाणी अ तं चेव बलकूडस्सवि, णवरं बलो देवो रायहाणी उत्तरपुरत्थिमेणंति १२ ॥ सूत्रं १०५ ॥ कहि णं भंते ! मंदरए पव्वए सोमणसवणे णामं वणे पराणत्ते ?, गोअमा ! णंदणवणस्स बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ अद्धतेवट्ठि जोअणसहस्साइं उद्धं उप्पइत्ता एत्थ णं मंदरे पव्वए सोमणसवणे णामं वणे पराणत्ते पंचजोयणसयाइं चक्कवालविक्खंभेणं वट्टे वलयाकारसंठाणसंठिए जे णं मंदरं पव्वयं सव्वओ समंता संपरिक्खित्ताणं

चिट्ठइ १। चत्तारि जोअणसहस्साइं दुण्णि य बावत्तरे जोअणसए अट्ठ य इक्कारसभाए जोअणस्स बाहिं गिरिविक्खंभेणं तेरस जोअणसहस्साइं पंच य एक्कारे जोअणसए छच्च इक्कारसभाए जोअणस्स बाहिं गिरिपरिरएणं तिण्णि जोअणसहस्साइं दुण्णि अ बावत्तरे जोअणसए अट्ठ य इक्कारसभाए जोयणस्स अंतो गिरिविक्खंभेणं दस जोअणसहस्साइं तिण्णि अ अउणापण्णे जोअणसए तिण्णि अ इक्कारसभाए जोअणस्स अंतो गिरिपरिरएणंति २। से णं एगाए पउमवरवेइआए एगेण य वणसंडेणं सव्वओ समंता संपरिक्खित्ते वण्णओ किण्हे किण्होभासे जाव आसयंति एवं कूडवज्जा सच्चेव णंदणवणवत्तव्वया भाणियव्वा, तं चेव ओगाहिऊण जाव पासायवडेंसगा सक्कीसाणाणंति ३॥ सूत्रं १०६॥ कहि णं भंते! मंदरपव्वए पंडगवणे णामं वणे पण्णत्ते ?, गोयमा! सोमणसवणस्स बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ छत्तीसं जोअणसहस्साइं उद्धं उप्पइत्ता एत्थ णं मंदरे पव्वए सिहरतले पंडगवणे णामं वणे पण्णत्ते, चत्तारि चउणउए जोयणसए चक्कवालविक्खंभेणं वट्टे वलयाकारसंठाणसंठिए, जे णं मंदरचूलिअं सव्वओ समंता संपरिक्खित्ताणं चिट्ठइ तिण्णि जोअणसहस्साइं एगं च बावट्ठं जोअणसयं किंचिविसेसाहिअं परिक्खेवेणं १। से णं एगाए पउमवरवेइआए एगेण य वणसंडेणं जाव किण्हे देवा आसयंति २। पंडगवणस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थ णं मंदरचूलिआ णामं चूलिआ पण्णत्ता चत्तालीसं जोअणाइं उद्धं उच्चत्तेणं मूले बारस जोअणाइं विक्खंभेणं मज्झे अट्ठ जोअणाइं विक्खंभेणं उप्पिं चत्तारि जोअणाइं विक्खंभेणं मूले साइरेगाइं सत्ततीसं जोअणाइं परिक्खेवेणं मज्झे साइरेगाइं पणवीसं जोअणाइं परिक्खेवेणं उप्पिं साइरेगाइं बारस जोअणाइं परिक्खेवेणं मूले विच्छिण्णा मज्झे संखित्ता उप्पिं तणुआ गोपुच्छसंठाणसंठिआ सव्ववेरुलिआमई अच्छा ३। सा णं एगाए पउमवरवेइआए जाव संपरिक्खित्ता

इति उप्पिं बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे जाव सिद्धाययणं बहुमज्झदेसभाए कोसं आयामेणं अद्धकोसं विक्खंभेणं देसूणगं कोसं उद्धं उच्चत्तेणं अणेगखंभसय जाव धुवकडुच्छुगा ४। मंदरचूलिआए णं पुरत्थिमेणं पंडगवणं पण्णासं जोअणाइं ओगाहित्ता एत्थ णं महं एगे भवणे पण्णत्ते ५। एवं जच्चेव सोमणसे पुव्ववण्णिओ गमो भवणाणं पुक्खरिणीणं पासायवडेंसगाण य सो चेव णेअव्वो जाव सक्कीसाणवडेंसगा तेणं चेव परिमाणेणं ६ ॥सूत्रं १०७॥ पण्डकवणे णं भंते! वणे कइ अभिसेअसिलाओ पण्णत्ताओ?, गोअमा! चत्तारि अभिसेअसिलाओ पण्णत्ताओ, तंजहा–पंडुसिला १ पण्डुकंबलसिला २ रत्तसिला ३ रत्तकम्बलसिलेति ४, १। कहि णं भंते! पण्डगवणे पण्डुसिलाणामं सिला पण्णत्ता?, गोअमा! मंदरचूलिआए पुरत्थिमेणं पंडगवणपुरत्थिमपेरंते, एत्थ णं पंडगवणे पंडुसिला णामं सिला पण्णत्ता उत्तरदाहिणायया पाईणपडीणविच्छिण्णा अद्धचंदसंठाणसंठिआ पंचजोअणसयाइं आयामेणं अद्धाइज्जाइं जोअणसयाइं विक्खंभेणं चत्तारि जोअणाइं बाहल्लेणं सव्वकणगामई अच्छा २। वेइआवणसंडेणं सव्वओ समंता संपरिक्खित्ता वण्णओ, तीसे णं पण्डुसिलाए चउद्दिसिं चत्तारि तिसोवाणपडिरूवगा पण्णत्ता जाव तोरणा वण्णओ, तीसे णं पण्डुसिलाए उप्पिं बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते जाव देवा आसयंति ३। तस्स णं बहुसमरमणिज्जस्स भूमिभागस्स बहुमज्झदेसभाए उत्तरदाहिणेणं एत्थ णं दुवे अभिसेय-सीहासणा पण्णत्ता पंच धणुसयाइं आयामविक्खंभेणं अद्धाइज्जाइं धणुसयाइं बाहल्लेणं सीहासणवण्णओ भाणिअव्वो विजयदूसवज्जोति ४। तत्थ णं जे से उत्तरिल्ले सीहासणे तत्थ णं बहूहिं भवणवइ-वाणमंतर-जोइसिअ-वेमाणिएहिं देवेहिं देवीहि अ कच्छाइआ तित्थयरा अभिसिच्चंति, तत्थ णं जे से दाहिणिल्ले सीहासणे तत्थ णं बहूहिं भवण जाव वेमाणिएहिं देवेहिं देवीहि अ वच्छाईआ तित्थयरा

अभिसिच्चंति ५ । कहि णं भंते ! पंडगवणे पंडकंबलासिलाणामं सिला पण्णत्ता ?, गोश्रमा ! मंदरचूलिश्राए दक्खिणेणं पंडगवणदाहिणपेरंते, एत्थ णं पंडगवणे पंडुकंबलसिलाणामं सिला पण्णत्ता, पाईणपडीणायया उत्तरदाहिणविच्छिरणा एवं तं चेव पमाणं वत्तव्वया य भाणिश्रव्वा जाव तस्स णं बहुसमरमणिज्जस्स भूमिभागस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थ णं महं एगे सीहासणे पण्णत्ते, तं चेव सीहासणप्पमाणं तत्थ णं बहूहिं भवणवइ जाव भारहगा तित्थयरा अहिसिच्चंति ६ । कहि णं भंते ! पंडगवणे रत्तसिला णामं सिला पण्णत्ता ?, गोश्रमा ! मंदरचूलिश्राए पच्चत्थिमेणं पंडगवण-पच्चत्थिमपेरंते, एत्थं णं पंडगवणे रत्तसिला णामं सिला पण्णत्ता उत्तर-दाहिणायया पाईणपडीणविच्छिरणा जाव तं चेव पमाणं सव्वतवणिज्जमई अच्छा ७ । उत्तरदाहिणेणं एत्थ णं दुवे सीहासणा पण्णत्ता, तत्थ णं जे से दाहिणिल्ले सीहासणे तत्थ णं बहूहिं भवणवइ-वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणिएहिं देवेहिं देवीहि अ पम्हाइश्रा तित्थयरा अहिसिच्चंति, तत्थ णं जे से उत्तरिल्ले सीहासणे तत्थ णं बहूहिं भवण जाव वप्पाइश्रा तित्थयरा अहिसिच्चंति ८। कहि णं भंते ! पंडगवणे रत्तकंबलसिला णामं सिला पण्णत्ता ?, गोश्रमा ! मंदरचूलिश्राए उत्तरेणं पंडगवणउत्तरचरिमंते एत्थं णं पंडगवणे रत्तकंबलसिला णामं सिला पण्णत्ता, पाईणपडीणायया उदीणदाहिणविच्छिरणा सव्वतवणिज्जमई अच्छा जाव मज्झदेसभाए सीहासणे, तत्थ णं बहूहिं भवणवइ जाव देवेहिं देवीहि अ एरावयगा तित्थयरा अहिसिच्चंति ९ ॥ सूत्रं १०८ ॥ मंदरस्स णं भंते ! पव्वयस्स कइ कण्डा पण्णत्ता ?, गोयमा ! तश्रो कंडा पण्णत्ता, तंजहा—हिट्ठिल्ले कंडे मज्झिल्ले कण्डे उवरिल्ले कण्डे १ । मंदरस्स णं भंते ! पव्वयस्स हिट्ठिल्ले कण्डे कतिविहे पण्णत्ते ?, गोश्रमा ! चउव्विहे पण्णत्ते, तंजहा—पुढवी १ उवले २ वइरे ३ सक्करा ४, २ । मज्झिमिल्ले णं भंते ! कण्डे कतिविहे पण्णत्ते ?,

गोश्रमा ! चउव्विहे पराणत्ते, तंजहा—श्रंके १ फलिहे २ जायरूवे ३ रयए ४,३ । उवरिल्ले कराडे कतिविहे पराणत्ते ?, गोश्रमा ! एगागारे पराणत्ते सव्व-जम्बूणायामए ४ । मंदरस्स णं भंते ! पव्वयस्स हेट्ठिल्ले कराडे केवइश्रं बाहल्लेणं पराणत्ते ?, गोयमा ! एगं जोश्रणसहस्सं बाहल्लेणं पराणत्ते ५ । मज्झिमिल्ले कराडे पुच्छा, गोश्रमा ! तेवट्ठिं जोश्रणसहस्साइं बाहल्लेणं पराणत्ते ६ । उवरिल्ले पुच्छा, गोयमा ! छत्तीसं जोश्रणसहस्साइं बाहल्लेणं पराणत्ते ७ । एवामेव सपुव्वावरेणं मंदरे पव्वए एगं जोश्रणसयसहस्सं सव्वग्गेणं पराणत्ते ८ ॥सूत्रं १०९ ॥ मंदरस्स णं भंते ! पव्वयस्स कति णामधेज्जा पराणत्ता ?, गोश्रमा ! सोलस णामधेज्जा पराणत्ता, तंजहा—मंदर १ मेरु २ मणोरम ३ सुदंसण ४ सयंपभे श्र ५ गिरिराया ६ । रयणोच्चय ७ सिलोच्चय ८ मज्झे लोगस्स ९ णाभी य १० ॥ १ ॥ श्रच्छे(त्थे) श्र ११ सूरिश्रावत्ते १२, सूरिश्रावरणे १३ तिश्रा । उत्तमे(रे) १४ श्र दिसादीश्र १५, वडेंसेति १६ श्र सोलसे ॥ २ ॥ १ । से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ मंदरे पव्वए २ ?, गोश्रमा ! मंदरे पव्वए मंदरे णामं देवे परिवसइ महिड्ढीए जाव पलिश्रोवम-ट्ठिइए, से तेणट्ठेणं गोश्रमा ! एवं वुच्चइ मंदरे पव्वए २ श्रदुत्तरं तं चेवत्ति २ ॥ सूत्रं ११० ॥ कहि णं भंते ! जंबुद्दीवे दीवे णीलवंते णामं वासहर-पव्वए पराणत्ते ?, गोयमा ! महाविदेहस्स वासस्स उत्तरेणं रंमगवासस्स दक्खिणेणं पुरत्थिमिल्ललवणसमुद्दस्स पच्चत्थिमेणं पच्चत्थिमलवणसमुद्दस्स पुरत्थिमेणं एत्थ णं जंबुद्दीवे २ णीलवंते णामं वासहरपव्वए पराणत्ते पाईणपडीणायए उदीणदाहिणविच्छिराणे णिसहवत्तव्वया णीलवंतस्स भाणिश्रव्वा १ । णवरं जीवा दाहिणेणं धणु उत्तरेणं एत्थ णं केसरिद्दहो दाहिणेणं सीश्रा महाणई पवूढा समाणी उत्तरकुरुं एज्जेमाणी २ जमग-पव्वए णीलवंत-उत्तरकुरु-चंदेरावतमालवंतद्दहे श्र दुहा विभयमाणी २ चउरा-सीए सलिलासहस्सेहिं श्रापूरेमाणी २ भद्दसालवणं एज्जेमाणी २ मंदरं

पव्वयं दोहिं जोत्रणेहिं असंपत्ता पुरत्थाभिमुही आवत्ता समाणी अहे मालवंतवक्खारपव्वयं दालयित्ता मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमेणं पुव्वविदेहवासं दुहा विभयमाणी २ एगमेगाओ चक्कवट्टिविजयाओ अट्ठावीसाए २ सलिलासहस्सेहिं आपूरेमाणी २ पंचहिं सलिलासयसहस्सेहिं बत्तीसाए अ सलिलासहस्सेहिं समग्गा अहे विजयस्स दारस्स जगइं दालइत्ता पुरत्थिमेणं लवणसमुद्दं समप्पेइ, अवसिट्ठं तं चेवत्ति २। एवं णारिकंताविउत्तराभिमुही णेअव्वा, णवरमिमं णाणत्तं गंधावइवट्टवेअद्धपव्वयं जोअणेणं असंपत्ता पच्चत्थाभिमुही आवत्ता समाणी अवसिट्ठं तं चेव पवहे अ मुहे अ जहा हरिकंतासलिला इति ३। णीलवंते णं भंते! वासहरपव्वए कइ कूडा पराणत्ता ?, गोअमा! नव कूडा पराणत्ता, तंजहा—सिद्धाययणकूडे २, सिद्धे १ णीले २ पुव्वविदेहे ३ सीआ य ४ कित्ति ५ णारी अ ६। अवरविदेहे ७ रंमगकूडे ८ उवदंसणे चेव ९ ॥ १ ॥ ४। सव्वे एए कूडा पंचसइआ रायहाणीउ उत्तरेणं ५। से केणट्ठे णं भंते! एवं वुच्चइ—णीलवंते वासहरपव्वए २ ?, गोअमा! णीले णीलोभासे णीलवंते अ इत्थ देवे महिद्धीए जाव परिवसइ सव्ववेरुलिआमए णीलवंते जाव णिच्चेति ६ ॥ सूत्रं १११ ॥

कहि णं भंते! जम्बुद्दीवे २ रम्मए णामं वासे पराणत्ते ?, गोयमा! णीलवंतस्स उत्तरेणं रुप्पिस्स दक्खिणेणं पुरत्थिमलवणसमुद्दस्स पच्चत्थिमेणं पच्चत्थिमलवणसमुद्दस्स पुरत्थिमेणं एवं जह चेव हरिवासं तह चेव रम्मयं वासं भाणिअव्वं, णवरं दक्खिणेणं जीवा उत्तरेणं धणुं अवसेसं तं चेव १। कहि णं भंते! रम्मए वासे गंधावईणामं वट्टवेअद्धपव्वए पराणत्ते ?, गोअमा! णरकंताए पच्चत्थिमेणं णारीकंताए पुरत्थिमेणं रम्मगवासस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थ णं गंधावईणामं वट्टवेअद्धे पव्वए पराणत्ते, जं चेव विअडावइस्स तं चेव गंधावइस्सवि वत्तव्वं, अट्ठो बहवे उप्पलाइं जाव गंधावईवराणाइं गंधावइप्पभाइं पउमे अ इत्थ देवे महिद्धीए जाव पलिओ-

वमट्ठिईए परिवसइ, रायहाणी उत्तरेणंति २ । से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ रम्मए वासे २ ?, गोअमा ! रम्मगवासे णं रम्मे रम्मए रमणिज्जे रम्मए अ इत्थ देवे जाव परिवसइ, से तेणट्ठेणं जाव वुच्चइ रम्मएवासे २, ३ । कहि णं भंते ! जम्बुद्दीवे २ रुप्पी णामं वासहरपव्वए पण्णत्ते ?, गोअमा ! रम्मगवासस्स उत्तरेणं हेरण्णवयवासस्स दक्खिणेणं पुरत्थिमलवणसमुद्दस्स पच्चत्थिमेणं पच्चत्थिमलवणसमुद्दस्स पुरत्थिमेणं एत्थ णं जम्बुद्दीवे दीवे रुप्पी णामं वासहरपव्वए पण्णत्ते पाईणपडीणायए उदीणदाहिणविच्छिण्णे ४ । एवं जा चेव महाहिमवंतवत्तव्वया सा चेव रुप्पिस्सवि, णवरं दाहिणेणं जीवा उत्तरेणं धणु अवसेसं तं चेव महापुण्डरीए दहे णरकंता णदी दक्खिणेणं णेअव्वा जहा रोहिआ पुरत्थिमेणं गच्छइ, रुप्पकूला उत्तरेणं णेअव्वा जहा हरिकंता पच्चत्थिमेणं गच्छइ, अवसेसं तं चेवत्ति ५ । रुप्पिमि णं भंते ! वासहरपव्वए कइ कूडा पण्णत्ता ?, गोयमा ! अट्ठ कूडा पण्णत्ता, तंजहा—सिद्धे १ रुप्पी २ रम्मग ३ णरकंता ४ बुद्धि ५ रुप्पकूला य ६ । हेरण्णवय ७ मणिकंचण ८ अट्ठ य रुप्पिमि कूडाइं ॥ १ ॥ ६ । सव्वेवि एए पंचसइआ रायहाणीओ उत्तरेणं ७ । से केणट्ठेणं भंते । एवं वुच्चइ रुप्पी वासहरपव्वए २ ?, गोअमा ! रुप्पीणामवासहरपव्वए रुप्पी रुप्पपट्टे रुप्पोभासे सव्वरुप्पामए रुप्पी अ इत्थ देवे पलिओवमट्ठिईए परिवसइ, से एएणट्ठेणं गोअमा ! एवं वुच्चइत्ति ८ । कहि णं भंते ! जम्बुद्दीवे २ हेरण्णवए णामं वासे पण्णत्ते ?, गोयमा ! रुप्पिस्स उत्तरेणं सिहरिस्स दक्खिणेणं पुरत्थिमलवणसमुद्दस्स पच्चत्थिमेणं पच्चत्थिमलवणसमुद्दस्स पुरत्थिमेणं एत्थ णं जम्बुद्दीवे दीवे हिरण्णवए वासे पण्णत्ते, एवं जह चेव हेमवयं तह चेव हेरण्णवयंपि भाणिअव्वं, णवरं जीवा दाहिणेणं उत्तरेणं धणुं अवसिट्ठं तं चेवत्ति १ । कहि णं भंते ! हेरण्णवए वासे मालवंतपरिआए णामं वट्टवेअद्धपव्वए पण्णत्ते ?, गोयमा ! सुवण्णकूलाए

जीयमेग्रं तीग्रपच्चुप्पराणमणागयाणं ग्रहेलोगवत्थव्वाणं ग्रट्ठरहं दिसा-कुमारीमहत्तरिग्राणं भगवग्रो तित्थगरस्स जम्मणमहिमं करेत्तए, तं गच्छामो णं ग्रम्हेवि भगवग्रो जम्मणमहिमं करेमोत्तिकट्टु एवं वयंति २ त्ता पत्तेग्रं पत्तेग्रं ग्राभिग्रोगिए देवे सद्दावेंति २ त्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिग्रा ! ग्रणेगखंभसयसरिणविट्ठे लीलट्ठिग्र एवं विमाणवरणग्रो भाणिग्रव्वो जाव जोग्रणविच्छिरणे दिव्वे जाणविमाणे विउव्वित्ता एग्रमाण-त्तिग्रं पच्चप्पिणहत्ति ३। तए णं ते ग्राभिग्रोगा देवा ग्रणेगखंभसय जाव पच्चप्पिणंति ४। तए णं ताग्रो ग्रहेलोगवत्थव्वाग्रो ग्रट्ठ दिसा-कुमारीमहत्तरिग्राग्रो हट्ठतुट्ठचित्तमाणंदिया पीग्रमणा परमसोमणस्सिग्रा हरिसवस-विसप्पमाणहिग्रया विग्रसिग्र-वरकमलनयणा पचलिग्र-वरकडग-तुडिग्र-केऊर-मउड-कुण्डल—हारविरायंतरइग्रवच्छा पालंबपलंबमाण-घोलंत भूसणधरा ग्रसंभमं तुरिग्रं चवलं सीहासणाग्रो ग्रब्भुट्ठेंति २ त्ता पत्तेग्रं पत्तेग्रं चउहिं सामाणिग्रसाहस्सीहिं चउहिं महत्तरिग्राहिं जाव ग्रणोहिं वहूहिं देवेहिं देवीहि ग्र सद्धिं संपरिवुडाग्रो ते दिव्वे जाणविमाणे दुरू-हंति दुरूहित्ता सव्विड्ढीए सव्वजुईए घणमुइंग-पणव जाव पवाइग्ररवेणं ताए उक्किट्ठाए जाव देवगईए जेणेव भगवग्रो तित्थगरस्स जम्मणणगरे जेणेव तित्थयरस्स जम्मणभवणे तेणेव उवागच्छंति २ त्ता भगवग्रो तित्थयरस्स जम्मणभवणं तेहिं दिव्वेहि जाणविमाणेहिं तिखुत्तो ग्रायाहिण-पयाहीणं करेंति करित्ता उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए ईसिं चउरंगुलम-संपत्ते धरणिग्रले ते दिव्वे जाणविमाणे ठविंति ठवित्ता पत्तेग्रं २ चउहिं सामाणिग्रसहस्सेहिं जाव सद्धिं संपरिवुडाग्रो दिव्वेहिंतो जाण-विमाणेहिंतो पच्चोरुहंति २ त्ता सव्विड्ढीए जाव णाइएणं जेणेव भगवं तित्थयरे तित्थयरमाया य तेणेव उवागच्छंति २ त्ता भगवं तित्थयरं तित्थयरमायरं च तिखुत्तो ग्रायाहिणपयाहिणं करेंति २ त्ता पत्तेग्रं २

करयलपरिग्गहिअं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासो—णमोत्थु ते रयणकुच्छिधारिए जगप्पईवदाईए सव्वजगमंगलस्स चक्खुणो अ मुत्तस्स सव्वजगजीववच्छलस्स हिअकारग-मग्गदेसिय-पागिद्धिविभुपभुस्स जिणस्स णाणिस्स नायगस्स बुहस्स बोहगस्स सव्वलोगनाहस्स निम्ममस्स पवरकुल-समुब्भवस्स जाईए खत्तिअस्स जंसि लोगुत्तमस्स जणणी धण्णासि तं पुण्णासि कयत्थासि, अम्हे णं देवाणुप्पिए ! अहेलोगवत्थव्वाओ अट्ठ दिसाकुमारीमहत्तरिआओ भगवओ तित्थगरस्स जम्मणमहिमं करिस्सामो तएणं तुब्भाहिं ण भाइयव्वं इतिकट्टु उत्तरपुरत्थिमं दिसीभागं अवक्कमंति २ त्ता वेउव्विअसमुग्घाएणं सम्मोहणंति २ त्ता संखिज्जाइं जोयणाइं दंडं निसरंति, तंजहा—रयणाणं जाव संवट्टगवाए विउव्वंति २ त्ता तेणं सिवेणं मउएणं मारुएणं अणुद्धुएणं भूमि-तल-विमलकरणेणं मणहरेणं सव्वोउअ-सुरहि-कुसुम-गंधाणुवासिएणं पिंडिमणिहारिमेणं गंधुद्धुएणं तिरिअं पवाइएणं भगवओ तित्थयरस्स जम्मणभवणस्स सव्वओ समंता जोअणपरिमंडलं से जहा णामए कम्मगरदारए सिआ जाव तहेव जं तत्थ तणं वा पत्तं वा कट्ठं वा कयवरं वा असुइमचोक्खं पूइअं दुब्भिगंधं तं सव्वं आहुणिअ २ एगंते एडेंति २ जेणेव भगवं तित्थयरे तित्थयरमाया य तेणेव उवागच्छंति २ त्ता भगवओ तित्थयरस्स तित्थयरमायाए अ अदूरसामंते आगायमाणीओ परिगायमाणीओ चिट्ठंति ५ ॥सूत्रं ११३॥ ते णं काले णं ते णं समए णं उद्धलोगवत्थव्वाओ अट्ठ दिसाकुमारीमहत्तरिआओ सएहिं २ कूडेहिं सएहिं २ भवणेहिं सएहिं २ पासायवडेंसएहिं पत्तेअं २ चउहिं सामाणिअसाहस्सीहिं एवं तं चेव पुव्व-वण्णिअं जाव विहरंति, तंजहा—मेहंकरा १ मेहवई २, सुमेहा ३ मेहमा-लिनी ४ । सुवच्छा ५ वच्छमित्ता य ६, वारिसेणा ७ बलाहगा ॥ १ ॥ १ । तए णं तासिं उद्धलोगवत्थव्वाणं अट्ठण्हं दिसाकुमारी-महत्तरिआणं पत्तेअं २ आसणाइं चलंति, एवं तं चेव पुव्ववण्णिअं भाणिअव्वं जाव अम्हे णं

पच्चत्थिमेणं रुप्पकूलाए पुरत्थिमेणं एत्थ णं हेरणवयस्स वासस्स बहुमज्झदेसभाए मालवंतपरिआए णामं वट्टवेअड्ढे पण्णत्ते जह चेव सद्दावइ तह चेव मालवंतपरिआएवि, अट्ठो उप्पलाइं पउमाइं मालवंतप्पभाइं मालवंतवण्णाइं मालवंतवण्णाभाइं पभासे अ इत्थ देवे महिद्धीए पलिओवमट्ठिईए परिवसइ, से एएणट्ठेणं जाव वुच्चइ, रायहाणी उत्तरेणंति १० । से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ–हेरण्णवए वासे २ ?, गोअमा ! हेरण्णवए णं वासे रुप्पीसिहरीहिं वासहरपव्वएहि दुहओ समवगूढे णिच्चं हिरण्णं दलइ णिच्चं हिरण्णं मुंचइ णिच्चं हिरण्णं पगासइ हेरण्णवए अ इत्थ देवे परिवसइ से एएणट्ठेणंति ११ । कहि णं भंते ! जम्बुद्दीवे दीवे सिहरी णामं वासहरपव्वए पण्णत्ते ?, गोअमा ! हेरण्णवयस्स उत्तरेणं एरावयस्स दाहिणेणं पुरत्थिमलवणसमुद्दस्स पच्चत्थिमेणं पच्चत्थिमलवणसमुद्दस्स पुरत्थिमेणं, एवं जह चेव चुल्लहिमवंतो तह चेव सिहरीवि णवरं जीवा दाहिणेणं धणु उत्तरेणं अवसिट्ठं तं चेव पुण्डरीए द्दहे सुवण्णकूला महाणई दाहिणेणं णेअव्वा जहा रोहिअंसा पुरत्थिमेणं गच्छइ, एवं जह चेव गंगासिंधूओ तह चेव रत्तारत्तवईओ णेअव्वाओ पुरत्थिमेणं रत्ता पच्चत्थिमेणं रत्तवई अवसिट्ठं तं चेव, [अवसेसं णेयव्वं] १२ । सिहरिम्मि णं भंते ! वासहरपव्वए कइ कूडा पण्णत्ता ?, गोयमा ! इक्कारस कूडा पन्नत्ता, तंजहा–सिद्धाययणकूडे १ सिहरिकूडे २ हेरण्णवयकूडे ३ सुवण्णकूलाकूडे ४ सुरादेवीकूडे ५ रत्ताकूडे ६ लच्छीकूडे ७ रत्तवईकूडे ८ इलादेवीकूडे ९ एरवयकूडे १० तिगिच्छिकूडे ११, एवं सव्वेवि कूडा पंचसइआ रायहाणीओ उत्तरेणं १३ । से केणट्ठेणं भंते ! एवमुच्चइ सिहरिवासहरपव्वए २ ?, गोअमा ! सिहरिमि वासहरपव्वए बहवे कूडा सिहरिसंठाणसंठिआ सव्वरयणामया सिहरी अ इत्थ देवे जाव परिवसइ, से तेणट्ठेणं जाव वुच्चइ १४ । कहि णं भंते !

जंबुद्दीवे दीवे एरावए णामं वासे पराणत्ते ?, गोत्रमा ! सिहरिस्स उत्तरेणं उत्तरलवणसमुद्दस्स दक्खिणेणं पुरत्थिमलवणसमुद्दस्स पच्चत्थिमेणं पच्चत्थिमलवणसमुद्दस्स पुरत्थिमेणं, एत्थ णं जंबुद्दीवे दीवे एरावए णामं वासे पराणत्ते, खाणुबहुले कंटकबहुले, एवं जच्चेव भरहस्स वत्तव्वया सच्चेव सव्वा निरवसेसा णेत्रव्वा सत्रोत्रवणा सणिक्खमणा सपरिनिव्वाणा, णवरं एरावत्रो चक्कवट्टी एरावत्रो देवो, से तेणट्ठेणं एरावए वासे २ १५ ॥ सूत्रं ११२ ॥ वासहरवास वराणो ॥

॥ इति चतुर्थो वक्षस्कारः ॥ ४ ॥

॥ अथ पञ्चमो जिनजन्माभिषेकाख्यो वक्षस्कारः ॥

जया णं एकमेक्के चक्कवट्टिविजए भगवंतो तित्थयरा समुप्पज्जंति तेणं कालेणं तेणं समएणं अहेलोगवत्थव्वात्रो अट्ठ दिसाकुमारीत्रो महत्तरित्रात्रो सएहिं २ कूडेहिं सएहिं २ भवणेहिं सएहिं २ पासायवडेंसएहिं पत्तेत्रं २ चउहिं सामाणित्रसाहस्सीहिं चउहिं महत्तरित्राहिं सपरिवाराहिं सत्तहिं अणिएहिं सत्तहिं अणित्राहिवईहिं सोलसएहिं आयरक्खदेवसाहस्सीहिं अराणेहि अ बहूहिं भवणवइवाणमंतरेहिं देवेहिं देवीहि अ सद्धिं संपरिवुडात्रो महया हयणट्टगीयवाइत्र जाव भोगभोगाइं भुंजमाणीत्रो विहरंति, तंजहा– भोगंकरा १ भोगवई २, सुभोगा ३ भोगमालिनी ४। तोयधारा ५ विचित्ता य ६, पुप्फमाला ७ अणिंदित्रा ८ ॥ १ ॥ १ । तए णं तासिं अहेलोगवत्थव्वाणं अट्ठराहं दिसाकुमारीणं मयहरित्राणं पत्तेयं पत्तेयं आसणाइं चलंति २। तए णं तात्रो अहेलोगवत्थव्वात्रो अट्ठ दिसाकुमारीत्रो महत्तरित्रात्रो पत्तेयं २ आसणाइं चलित्राइं पासंति २ त्ता ओहिं पउंजंति पउंजित्ता भगवं तित्थयरं ओहिणा आभोएंति २ त्ता अराणमराणं सद्दाविंति २ त्ता एवं वयासी–उप्पराणे खलु भो ! जंबुद्दीवे दीवे भयवं ! तित्थयरे तं

देवाणुप्पिए ! उद्धलोगवत्थव्वाओ अट्ठ दिसाकुमारीमहत्तरिआओ जेणं भगवओ तित्थगरस्स जम्मणमहिमं करिस्सामो तेणं तुब्भेहिं ण भाइअव्वं-तिकट्टु उत्तरपुरत्थिमं दिसीभागं अवक्कमंति २ त्ता जाव अब्भवद्दलए विउव्वंति २ त्ता जाव तं निहयरयं णट्ठरयं भट्ठरयं पसंतरयं उवसंतरयं करेंति २ खिप्पामेव पच्चुवसमंति २। एवं पुप्फवद्दलंसि पुप्फवासं वासंति वासित्ता जाव कालागुरुपवर जाव सुरवराभिगमणजोग्गं करेंति २ त्ता जेणेव भयवं तित्थयरे तित्थयरमाया य तेणेव उवागच्छंति २ त्ता जाव आगायमाणीओ परिगायमाणीओ चिट्ठंति ३ ॥ सूत्रं ११४ ॥ तेणं काले णं तेणं समए णं पुरत्थिम-रुअगवत्थव्वाओ अट्ठ दिसाकुमारीमहत्तरिआओ सएहिं २ कूडेहिं तहेव जाव विहरंति, तंजहा—णंदुत्तरा य १ णंदा २, आणंदा ३ णंदिवद्धणा ४। विजया य ५ वेजयंती ६, जयंती ७ अपराजिआ ८ ॥ १ ॥ सेसं तं चेव जाव तुब्भाहिं ण भाइअव्वंतिकट्टु भगवओ तित्थयरस्स तित्थयरमायाए अ पुरत्थिमेणं आयंसहत्थगयाओ आगायमाणीओ परिगायमाणिओ चिट्ठंति १। तेणं कालेणं तेणं समएणं दाहिण-रुअवगत्थव्वाओ अट्ठ दिसाकुमारीमहत्तरिआओ तहेव जाव विहरंति, तंजहा—समाहारा १ सुप्पइराणा २, सुप्पबुद्धा ३ जसोहरा ४। लच्छिमई ५ सेसवई ६, चित्तगुत्ता ७ वसुंधरा ८ ॥ १ ॥ तहेव जाव तुब्भाहिं न भाइअव्वंतिकट्टु भगवओ तित्थयरस्स तित्थयरमाऊए अ दाहिणेणं भिंगारहत्थगयाओ अगायमाणीओ परिगायमाणीओ चिट्ठंति २। तेणं कालेणं तेणं समएणं पच्चत्थिमरुअगवत्थव्वाओ अट्ठ दिसाकुमारीमहत्तरिआओ सएहिं २ जाव विहरंति, तंजहा—इलादेवी १ सुरादेवी २, पुहवी ३ पउमावई ४। एगणासा ५ णवमिआ ६, भद्दा ७ सीआ य ८ अट्ठमा ॥ १ ॥ तहेव जाव तुब्भाहि ण भाइअव्वंतिकट्टु जाव भगवओ तित्थयरस्स तित्थयरमाऊए अ पच्चत्थिमेणं तालिअंटहत्थगयाओ आगाय-

माणीओ परिगायमाणीओ चिट्ठंति ३। तेणं कालेणं तेणं समएणं उत्तरिल्ल-रुअगवत्थव्वाओ जाव विहरंति, तंजहा—अलंबुसा १ मिस्सकेसी २, पुण्डरीआ य ३ वारुणी ४। हासा ५ सव्वप्पभा ६ चेव, सिरि ७ हिरि ८ चेव उत्तरओ ॥ १ ॥ तहेव जाव वंदित्ता भगवओ तित्थयरस्स तित्थयरमाऊए अ उत्तरेणं चामरहत्थगयाओ आगायमाणीओ परि-गायमाणीओ चिट्ठंति ४। तेणं कालेणं तेणं समएणं विदिसिरुअग-वत्थव्वाओ चत्तारि दिसाकुमारीमहत्तरिआओ जाव विहरंति, तंजहा—चित्ता य १ चित्तकणगा २, सतेरा ३ य सोदामिणी ४। तहेव जाव ण भाइअव्वंतिकट्टु भगवओ तित्थयरस्स तित्थयरमाऊए अ चउसु विदिसासु दीविआहत्थगयाओ आगायमाणीओ परिगायमाणीओ चिट्ठंति ५। तेणं कालेणं तेणं समएणं मज्झिमरुअगवत्थव्वाओ चत्तारि दिसाकुमारी-महत्तरिआओ सएहिं २ कूडेहिं तहेव जाव विहरंति, तंजहा—रूआ रूआ-सिआ, सुरूआ रूअगावई। तहेव जाव तुब्भाहिं ण भाइयव्वंतिकट्टु भग-वओ तित्थयरस्स चउरंगुलवज्जं णाभिणालं कप्पंति कप्पेत्ता विअरगं खणंति खणित्ता विअरगे णाभिं णिहणंति णिहणित्ता रयणाण य वइराण य पुरेंति २ त्ता हरिआलिआए पेढं बंधंति २ त्ता तिदिसिं तओ कयलीहरए विउव्वंति ६। तए णं तेसि कयलीहरगाणं बहुमज्झदेसभाए तओ चाउस्सालए विउव्वंति, तए णं तेसिं चाउस्सालगाणं बहुमज्झदेसभाए तओ सीहासणे विउव्वंति, तेसि णं सीहासणाणं अयमेयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते सव्वो वण्णगो भाणिअव्वो ७। तए णं ताओ रुअगमज्झ-वत्थव्वाओ चत्तारि दिसाकुमारीओ महत्तराओ जेणेव भयवं तित्थयरे तित्थयरमाया य तेणेव उवागच्छंति २ त्ता भगवं तित्थयरं करयलसंपुडेणं गिण्हंति तित्थयरमायरं च बाहाहिं गिण्हंति २ त्ता जेणेव दाहिणिल्ले कयलीहरए जेणेव चाउसालए जेणेव सीहासणे तेणेव उवागच्छंति २

त्ता भगवं तित्थयरं तित्थयरमायरं च सीहासणे णिसीयावेंति २ त्ता सयपाग-सहस्सपागेहिं तिल्लेहिं अब्भंगेंति २ त्ता सुरभिणा गंधवट्टएणं उव्वट्टेंति २ त्ता भगवं तित्थयरं करयलपुडेण तित्थयरमायरं च बाहासु गिरहंति २ त्ता जेणेव पुरत्थिमिल्ले कयलीहरए जेणेव चउसालए जेणेव सीहासणे तेणेव उवागच्छंति उवागच्छित्ता भगवं तित्थयरं तित्थयरमायरं च सीहासणे णिसी-आवेंति २ त्ता तिहिं उदएहिं मज्जावेंति, तंजहा—गंधोदएणं १ पुप्फोदएणं २ सुद्धोदएणं, मज्जावित्ता सव्वालंकारविभूसिअं करेंति २ त्ता भगवं तित्थयरं करयलपुडेणं तित्थयरमायरं व बाहाहिं गिरहंति २ त्ता जेणेव उत्तरिल्ले कयलीहरए जेणेव चउसालए जेणेव सीहासणे तेणेव उवागच्छंति २ त्ता भगवं तित्थयरं तित्थयरमायरं च सीहासणे णिसीआविंति २ त्ता आभिओगे देवे सद्दाविंतिं २ त्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! चुल्लहिमवंताओ वासहरपव्वयाओ गोसीसचंदणकट्ठाइं साहरह ८। तए णं ते आभिओगा देवा ताहिं रुअगमज्झवत्थव्वाहि चउहिं दिसाकुमारीमहत्तरिआहिं एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठा जाव विणएणं वयणं पडिच्छंति २ त्ता खिप्पामेव चुल्लहिमवंताओ वासहरपव्वयाओ सरसाइं गोसीसचंदणकट्ठाइं साहरंति ९। तए णं ताओ मज्झिमरुअगवत्थव्वाओ चत्तारि दिसाकुमारीमहत्तरिआओ सरगं करेंति २ त्ता अरणिं घडेंति अरणिं घडित्ता सरएणं अरणिं महिंति २ त्ता अग्गिं पाडेंति २ अग्गिं संधुक्खंति २ त्ता गोसीसचंदणकट्ठे पक्खिवंति २ त्ता अग्गिं उज्जालंति २ समिहाकट्ठाइं पक्खिविन्ति २ त्ता अग्गिहोमं करेंति २ त्ता भूतिकम्मं करेंति २ त्ता रक्खापोट्टलिअं बंधंति बंधेत्ता णाणामणि-रयणभत्तिचित्ते दुविहे पाहाणवट्टगे गहाय भगवओ तित्थयरस्स कण्णमूलंमि टिट्टिआविति भवउ भयवं पव्वयाउए २, १०। तए णं ताओ रुअगमज्झवत्थव्वाओ चत्तारि दिसाकुमारिमहत्तरिआओ भयवं तित्थयरं करयलपुडेणं तित्थयरमायरं च बाहाहिं गिरहंति गिरिहत्ता जेणेव भगवओ

तित्थयरस्स जम्मणभवणे तेणेव उवागच्छंति २ त्ता तित्थयरमायरं सयणिज्जंसि णिसीश्राविंति णिसीश्राविता भयवं तित्थयरं माउए पासे ठवेंति ठवित्ता आगायमाणीओ परिगायमाणीओ चिट्ठंति ११॥ सूत्रं ११५॥

तेणं कालेणं तेणं समएणं सक्के णामं देविंदे देवराया वज्जपाणी पुरंदरे सयकऊ सहस्सक्खे मघवं पागसासणे दाहिणद्धलोकाहिवई बत्तीसविमाणा-वास-सयसहस्साहिवई एरावणवाहणे सुरिंदे अरयंबरवत्थधरे आलइयमाल-मउडे नवहेम-चारुचित्त-चंचलकुण्डल-विलिहिज्जमाणगंडे(गल्ले) भासुरबोंदी पलम्बवणमाले महिद्धीए महज्जुईए महाबले महायसे महाणुभागे महासोक्खे सोहम्मे कप्पे सोहम्मवडिंसए विमाणे सभाए सुहम्माए सक्कंसि सीहासणंसि से णं तत्थ बत्तीसाए विमाणावाससयसाहस्सीणं चउरासीए सामाणिअसाह-स्सीणं तायत्तीसाए तायत्तीसगाणं चउण्हं लोगपालाणं अट्ठण्हं अग्गमहि-सीणं सपरिवाराणं तिण्हं परिसाणं सत्तण्हं अणिआणं सत्तण्हं अणिआहिवईणं चउण्हं चउरासीणं आयरक्खदेवसाहस्सीणं अन्नेसिं च बहूणं सोहम्मकप्पवासीणं वेमाणियाणं देवाण य देवीण य (अण्णेसिं बहूणं देवाण य देवीण य आभियोगिउववण्णगाणं) आहेवच्चं पोरेवच्चं सामित्तं भट्टित्तं महत्तरगत्तं आणाईसरसेणावच्चं कारेमणे पाले-माणे महयाहय-णट्ट-गीय-वाइय-तंती-तल-ताल-तुडिअ-घणमुइंग-पडुपडहवाइ-अरवेणं दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरइ १। तए णं तस्स सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो आसणं चलइ २। तए णं से सक्के जाव आसणं चलिअं पासइ २ त्ता ओहिं पउंजइ पउंजित्ता भगवं तित्थयरं ओहिणा आभोएइ २ त्ता हट्ठतुट्ठचित्ते आनंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवस-विसप्पमाणहिअए धाराहय-कयंवनीप-सुरभि-कुसुम-चंचुमालइअ-ऊसविअ-रोमकूवे विअसिअ-वरकमल-नयणवयणे पचलिअ-वरकडग-तुडिअ-केऊरमउडे कुण्डल-हारविरायंतवच्छे पालम्ब-पलम्बमाण-घोलंत-भूसणधरे ससंभमं

तुरिअं चवलं सुरिंदे सीहासणाओ अब्भुट्ठेइ २ त्ता पायपीढाओ पच्चोरुहइ २ त्ता वेरुलिअ-वरिट्ठ-रिट्ठ-अंजण-निउणोविअ-मिसिमिसिंत मणिरयणमंडिआओ पाउआओ ओमुअइ २ त्ता एगसाडिअं उत्तरासंगं करेइ २ त्ता अंजलि-मउलियग्गहत्थे तित्थयराभिमुहे सत्तट्ठ पयाइं अणुगच्छइ २ त्ता वामं जाणुं अंचेइ २ त्ता दाहिणं जाणुं धरणीअलंसि सा(नि)हट्टु तिक्खुत्तो मुद्धाणं धरणियलंसि निवेसे(वाडे)इ २ त्ता ईसिं पच्चुण्णमइ २ त्ता कडगतुडिअथंभिआओ भुआओ साहरइ २ त्ता करयलपरिग्गहिअं दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी—णमोत्थु णं अरहंताणं भगवंताणं, आइगराणं तित्थयराणं सयंसंबुद्धाणं, पुरिसुत्तमाणं पुरिससीहाणं पुरिसवरपुण्डरीआणं पुरिसवरगंधहत्थीणं, लोगुत्तमाणं लोगणाहाणं लोगहियाणं लोगपईवाणं लोगपज्जोअगराणं, अभयदयाणं चक्खुदयाणं मग्गदयाणं सरणदयाणं जीवदयाणं बोहिदयाणं, धम्मदयाणं धम्मदेसयाणं धम्मनायगाणं धम्मसारहीणं धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं, दीवो ताणं सरणं गई पइट्ठा अप्पडिहयवरनाणदंसणधराणं विअट्टच्छउमाणं, जिणाणं जावयाणं तिण्णाणं तारयाणं बुद्धाणं बोहयाणं मुत्ताणं मोअगाणं, सव्वन्नूणं सव्वदरिसीणं सिव-मयल-मरुअ-मणंत-मक्खय-मव्वाबाह-मपुणरावित्ति-(त्तयं) सिद्धिगइणामधेयं ठाणं संपत्ताणं णमो जिणाणं जिअभयाणं, णमोऽत्थु णं भगवओ तित्थगरस्स आइगरस्स जाव संपाविउकामस्स, वंदामि णं भगवंतं तत्थगयं इहगए, पासउ मे भयवं ! तत्थगए इहगयंतिकट्टु वंदइ णमंसइ २ त्ता सीहासणवरंसि पुरत्थाभिमुहे सण्णिसण्णे ३ । तए णं तस्स सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो अयमेआरूवे जाव संकप्पे समुप्पज्जित्था—उप्पण्णे खलु भो जंबुद्दीवे दीवे भगवं तित्थयरे तं जीयमेयं तीअपच्चुप्पण्णमणागयाणं सक्काणं देविंदाणं देवराईणं तित्थयराणं जम्मणमहिमं करेत्तए, तं गच्छामि णं अहंपि भगवओ तित्थगरस्स जम्मण-

महिमं करेमित्तिकट्टु एवं संपेहेइ २ त्ता हरिणेगमेसिं पायत्ताणीयाहिवइं देवं सद्दावेति २ त्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिआ ! सभाए सुहम्माए मेघोघरसिअं गंभीरमहुरयरसद्दं जोयणपरिमंडलं सुघोसं सूसरं घंटं तिक्खुत्तो उल्लालेमाणे २ महया महया सद्देणं उग्घोसेमाणे २ एवं वयाहि—आणवेइ णं भो सक्के देविंदे देवराया गच्छइ णं भो सक्के देविंदे देवराया जंबुद्दीवे २ भगवओ तित्थयरस्स जम्मणमहिमं करित्तए, तं तुब्भेवि य णं देवाणुप्पिआ ! सव्विद्धीए सव्वजुईए सव्वबलेणं सव्व-समुदएणं सव्वायरेणं सव्वविभूईए सव्वविभूसाए सव्वसंभमेणं सव्वणाडएहिं सव्वोवरोहेहिं सव्वपुप्फ-वत्थ-गंधमल्लालंकारविभूसाए सव्वदिव्व-तुडिअ-सद्द-सणिणाएणं महया इद्धीए जाव रवेणं णिअय-परिआलसंपरिवुडा सयाइं २ जाणविमाणवाहणाइं दुरूढा समाणा अकालपरिहीणं चेव सक्कस्स जाव अंतिअं पाउब्भवह ४। तए णं से हरिणेगमेसी देवे पायत्ताणीयाहिवई सक्केणं ३ जाव एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठ जाव एवं देवोत्ति आणाए विण-एणं वयणं पडिसुणेइ २ त्ता सक्कस्स ३ अंतिआओ पडिणिक्खमइ २ त्ता जेणेव सभाए सुहम्माए मेघोघर-सिअ-गम्भीर-महुरयरसद्दा जोअण-परिमंडला सुघोसा घण्टा तेणेव उवागच्छइ २ त्ता तं मेघोघ-रसिअ-गम्भीर-महुरयरसद्दं जोअणपरिमण्डलं सुघोसं घंटं तिक्खुत्तो उल्लालेइ ५। तए णं तीसे मेघोघ-रसिअ-गम्भीर-महुरयरसद्दाए जोअणपरिमंडलाए सुघोसाए घंटाए तिक्खुत्तो उल्लालिआए समाणीए सोहम्मे कप्पे अण्णेहिं एगूणेहिं बत्तीसविमाणावाससयसहस्सेहिं अण्णाइं एगूणाइं बत्तीसं घंटासयसह-स्साइं जमगसमगं कणकणारावं काउं पयत्ताइं हुत्था ६। तए णं सोहम्मे कप्पे पासाय-विमाण-निक्खुडावडिअ-सद्द-समुट्ठिअ-घण्टा-पडेंसुआ-सयसहस्स-संकुले जाए आवि होत्था ७। तए णं तेसिं सोहम्मकप्पवासीणं बहूणं वेमाणियाणं देवाण य देवीण य एगंतरइपसत्त-णिच्च-पमत्त-विसय-सुहमुच्छि-

आणं सूसर-घरटारसिअ-विउलबोल-पूरिअ-चवलपडिबोहणे कए समाणे घोसण-कोऊहल-दिरणकरण-एगग्गचित्त-उवउत्तमाणसाणं से पायत्ताणी-आहिवई देवे तंसि घरटारवंसि निसंत-पडिसंतंसि समाणंसि तत्थ २ तहिं २ देसे महया २ सद्देणं उग्घोसेमाणे २ एवं वयासीति—हंत ! सुणंतु भवंतो बहवे सोहम्मकप्पवासी वेमाणिअदेवा देवीओ अ सोहम्मकप्पवइणो इणमो वयणं हिअसुहत्थं—आणावइ णं भो सक्के तं चेव जाव अंतिअं पाउब्भवह ८। तए णं ते देवा देवीओ अ एअमट्ठं सोच्चा हट्ठतुट्ठ जाव हिअआ अप्पेगइआ वंदणवत्तिअं एवं पूअणवत्तिअं सक्कारवत्तिअं सम्माण-वत्तिअं दंसणवत्तिअं कोऊहलवत्तियं सक्कवयणं अणुवत्तमाणा अरणमरणं अणुवत्तमाणा जिणभत्तिरागेणं अप्पेगइआ तं जीअमेअं एवमादित्ति-कट्टु जाव पाउब्भवंति ९। तए णं से सक्के देविंदे देवराया ते विमा-णिए देवे देवीओ अ अकालपरिहीणं चेव अंतिअं पाउब्भवमाणे पासइ २ त्ता हट्ठे पालयं णामं आभिओगिअं देवं सद्दावेइ २ त्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिआ ! अणेगखंभ-सय-सण्णिविट्ठं लीलट्ठिय-साल-भंजिआकलिअं ईहामिअ-उसभ-तुरग-णर-मगर-विहग-वालग-किरणर-रुरु-सरभ-चमर-कुंजर-वणलय-पउमलयभत्तिचित्तं खंभुग्गय-वइर-वेइआ-परिगया-भिरामं विज्जाहर-जमलजुअल-जंतजुत्तंपिव अच्चीसहस्समालिणीअं रूवग-सहस्सकलिअं भिसमाणं भिब्भिसमाणं चक्खुल्लोअणलेसं सुहफासं सस्सिरी-अरूवं घरटावलिअचलिअ-महुरमणहरसरं सुहं कंतं दरिसणिज्जं णिउ-णोविअ-मिसिमिसिंत-मणिरयण-घंटिआजालपरिक्खित्तं जोयणसयसहस्स-विच्छिरणं पंचजोअण-सयमुव्विद्धं सिग्घं तुरिअं जइणणिव्वाहि दिव्वं जाणविमाणं विउव्वाहि २ त्ता एअमाणत्तिअं पच्चप्पिणाहि १० ॥ सूत्रं ११६ ॥ तए णं से पालयदेवे सक्केणं देविंदेणं देवरराणा एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठ जाव वेउव्विअसमुग्घाएणं समोहणित्ता तहेव करेइ १। तस्स

णं दिव्वस्स जाणविमाणस्स तिदिसिं तत्रो तिसोवाणपडिरूवगा वण्णत्रो तेसि णं पडिरूवगाणं पुरत्रो पत्तेत्रं २ तोरणा वण्णात्रो जाव पडि-रूवा १, २। तस्स णं जाणविमाणस्स अंतो बहुसमरमणिज्जे भूमि-भागे, से जहा नामए आलिंगपुक्खरेइ वा जाव दीविअचम्मेइ वा अणेग-संकु-कीलक-सहस्सवितते आवड-पच्चावड-सेढी-पसेढि-सुत्थिअ-सोव-त्थिअ-वद्धमाण--पूसमाणव--मच्छंडग--मगरंडग--जारमार(णा अच्छदाममोरा अंडालारामंडा) फुल्लावली-पउमपत्त-सागर-तरंग--वसंतलय--पउमलयभत्ति-चित्तेहिं सच्छाएहिं सप्पभेहिं समरीइएहिं सउज्जोएहिं णाणाविहपंचवण्णेहिं मणीहिं उवसोभिए २, ३। तेसि णं मणीणं वण्णे गंधे फासे अ भाणिअव्वे जहा रायप्पसेणइज्जे ४। तस्स णं भूमिभागस्स बहुमज्झ-देसभाए पिच्छाघरमण्डवे अणेगखंभसयसण्णिविट्ठे वण्णत्रो जाव पडिरूवे ५। तस्स उल्लोए पउमलयभत्तिचित्ते जाव सव्वतवणिज्जमए जाव पडिरूवे ६। तस्स णं मण्डवस्स बहुसमरमणिज्जस्स भूमिभागस्स बहुमज्झदेसभागंसि महं एगा मणिपेढिआ अट्ठ जोअणाइं आयाम-विक्खंभेणं चत्तारि जोअणाइं बाहल्लेणं सव्वमणिमयी वण्णत्रो ७। तीए उवरिं महं एगे सीहासणे वण्णत्रो ८। तस्सुवरिं महं एगे विजयदूसे सव्वरयणामए वण्णत्रो ९। तस्स मज्झदेसभाए एगे वइरामए अंकुसे, एत्थ णं महं एगे कुम्भिक्के मुत्तादामे, से णं अन्नेहिं तदद्धुच्चत्तप्पमाण-मित्तेहिं चउहिं अद्धकुम्भिक्केहिं मुत्तादामेहिं सव्वत्रो समंता संपरि-क्खित्ते १०। ते णं दामा तवणिज्जलंबूसगा सुवण्ण-पयरगमण्डिआ णाणा-मणिरयण-विविह-हारद्धहारउवसोभिआ समुदया ईसिं अण्णमण्णम-संपत्ता पुव्वाइएहिं वाएहिं मंदं एइज्जमाणा २ जाव निव्वुइकरेणं सद्दे णं ते पएसे आपूरेमाणा २ जाव अईव उवसोभेमाणा २ चिट्ठंति ११। तस्स णं सीहासणस्स अवरुत्तरेणं उत्तरेणं उत्तरपुरत्थिमेणं एत्थ णं सक्कस्स

चउरासीए सामाणिअसाहस्सीणं चउरासीई भद्दासणसाहस्सीओ पुरत्थिमेणं अट्ठण्हं अग्गमहिसीणं एवं दाहिणपुरत्थिमेणं अब्भिंतरपरिसाए दुवालसण्हं देवसाहस्सीणं दाहिणेणं मज्झिमाए चउदसण्हं देवसाहस्सी णं दाहिणपच्चत्थिमेणं बाहिरपरिसाए सोलसण्हं देवसाहस्सीणं पच्चत्थिमेणं सत्तण्हं अणिआहिवईणं १२। तए णं तस्स सीहासणस्स चउद्दिसिं चउण्हं चउरासीणं आयरक्खदेवसाहस्सीणं एवमाई विभासिअव्वं सूरिआभगमेणं जाव पच्चप्पिणंति १३॥ सूत्रं ११७॥ तए णं से सक्के जाव हट्ठहिअए दिव्वं जिणिंदाभिगमणजुग्गं सव्वालंकारविभूसिअं उत्तरवेउव्विअं रूवं विउव्विइ २ त्ता अट्ठहिं अग्गमहिसीहिं सपरिवाराहिं णट्टाणीएणं गंधव्वाणीएण य सद्धिं तं विमाणं अणुप्पयाहिणीकरेमाणे २ पुव्विल्लेणं तिसोवाणेणं दुरूहइ २ त्ता जाव सीहासणंसि पुरत्थाभिमुहे सण्णिसण्णेत्ति १। एवं चेव सामाणिआवि उत्तरेणं तिसोवाणेणं दुरूहित्ता पत्तेअं २ पुव्वण्णत्थेसु भद्दासणेसु णिसीअंति अवसेसा य देवा देवीओ अ दाहिणिल्लेणं तिसोवाणेणं दुरूहित्ता तहेव जाव णिसीअंति २। तए णं तस्स सक्कस्स तंसि विमाणंसि दुरूढस्स इमे अट्ठट्ठमंगलगा पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठिआ ३। तयणंतरं च णं पुण्णकलसभिंगारं दिव्वा य छत्तपडागा सचामरा य दंसणरइअआलोअदरिसणिज्जा वाउद्धुअविजयवेजयंती अ समूसिआ गगणतलमणुलिहंती पुरओ अहाणुपुव्वीए संपत्थिआ ४। तयणंतरं छत्तभिंगारं, तयणंतरं च णं वइरामय-वट्ट-लट्ठ-संठिअ-सुसिलिट्ठ-परिघट्ठ-मट्ठ-सुपइट्ठिए विसिट्ठे अणेगवर-पंचवण्ण-कुडभी-सहस्स-परिमंडिआभिरामे वाउद्धुअ-विजय वेजयंती-पडागाछत्ताइच्छत्तकलिए तुंगे गयणतल-मणुलिहंतसिहरे जोअणसहस्समूसिए महइमहालए महिंदज्झए पुरओ अहाणुपुव्वीए संपत्थिएत्ति ५। तयणंतरं च णं सरूव-नेवत्थ-परिअच्छिअ-सुसज्जा सव्वालंकारविभूसिआ पंच अणिआ पंच अणिआहिवईणो जाव

संपट्ठिआ ६ । तयणंतरं च णं बहवे आभिओगिआ देवा य देवीओ अ सएहिं सएहिं रूवेहिं जाव णिओगेहिं सक्कं देविंदं देवरायं पुरओ अ मग्गओ अ पासओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठिआ ७ । तयणंतरं च णं बहवे सोहम्मकप्पवासी देवा य देवीओ अ सव्विद्धीए जाव दुरूढा सम्माणा मग्गओ अ जाव संपट्ठिआ ८ । तए णं से सक्के तेणं पंचाणिअपरिक्खित्तेणं जाव महिदज्झएणं पुरओ पकड्ढिज्जमाणेणं चउरासीए सामाणिअ जाव परिवुडे सव्विद्धीए जाव रवेणं सोहम्मस्स कप्पस्स मज्झंमज्झेणं तं दिव्वं देवद्धिं जाव उवदंसेमाणे २ जेणेव सोहम्मस्स कप्पस्स उत्तरिल्ले निज्जाणमग्गे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता जोअणसयसाहस्सीएहिं विग्गहेहिं ओवयमाणे २ ताए उक्किट्ठाए जाव देवगईए वीईवयमाणे २ तिरियमसंखिज्जाणं दीवसमुद्दाणं मज्झंमज्झेणं जेणेव णंदीसरवरे दीवे जेणेव दाहिणपुरत्थिमिल्ले रइकरगपव्वए तेणेव उवागच्छइ २ त्ता एवं जा चेव सूरिआभस्स वत्तव्वया णवरं सक्काहिगारो वत्तव्वो जाव तं दिव्वं देविद्धिं जाव दिव्वं जाणविमाणं पडिसाहरमाणे २ जाव जेणेव भगवओ तित्थयरस्स जम्मणनगरे जेणेव भगवओ तित्थयरस्स जम्मणभवणे तेणेव उवागच्छति २ त्ता भगवओ तित्थयरस्स जम्मणभवणं तेणं दिव्वेणं जाणविमाणेणं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेइ २ त्ता भगवओ तित्थयरस्स जम्मणभवणस्स उत्तरपुरत्थिमे दिसीभागे चतुरंगुलमसंपत्तं धरणियले तं दिव्वं जाणविमाणं ठवेइ २ त्ता अट्ठहिं अग्गमहिसीहिं दोहिं अणीएहिं गंधव्वाणीएण य णट्टाणीएण य सद्धिं ताओ दिव्वाओ जाणविमाणाओ पुरत्थिमिल्लेणं तीसोवाणपडिरूवएणं पच्चोरुहइ ९ । तए णं सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो चउरासीइ सामाणिअसाहस्सीओ ताओ दिव्वाओ जाणविमाणाओ उत्तरिल्लेणं तिसोवाणपडिरूवएणं पच्चोरुहंति १० । अवसेसा देवा य देवीओ अ ताओ दिव्वाओ जाणविमाणाओ दाहिणिल्लेणं तिसोवाणपडिरूवएणं

पज्जोरुहंति ११ । तए णं से सक्के देविंदे देवराया चउरासीए सामाणिअ-साहस्सीएहिं जाव सद्धिं संपरिवुडे सव्विड्ढीए जाव दुंदुभिणिग्घोस-णाइयरवेणं जेणेव भगवं तित्थयरे तित्थयरमाया य तेणेव उवागच्छइ २ त्ता आलोए चेव पणामं करेइ २ त्ता भगवं तित्थयरं तित्थयरमायरं च तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेइ २ त्ता करयल जाव एवं वयासी—णमोत्थु ते रयणकुच्छिधारए एवं जहा दिसाकुमारीओ जाव धण्णासि पुण्णासि तं कयत्थाऽसि, अहण्णं देवाणुप्पिए ! सक्के णामं देविंदे देवराया भगवओ तित्थयरस्स जम्मणमहिमं करिस्सामि, तं णं तुब्भाहिं ण भाइयव्वंतिकट्टु ओसोवणिं दलयइ २ त्ता तित्थयरपडिरूवगं विउव्वइ तित्थयरमाउआए पासे ठवइ २ त्ता पंच सक्के विउव्वइ विउव्वित्ता एगे सक्के भगवं तित्थयरं करयलपुडेणं गिण्हइ एगे सक्के पिट्ठओ आय-वत्तं धरेइ दुवे सक्का उभओ पासिं चामरुक्खेवं करेंति एगे सक्के पुरओ वज्जपाणी पकड्ढइ १२ । तए णं से सक्के देविंदे देवराया अण्णेहिं बहूहिं भवणवइ-वाणमंतर-जोइसवेमाणिएहिं देवेहिं देवीहि अ सद्धिं संपरिवुडे सव्विड्ढीए जाव णाइएणं ताए उक्किट्ठाए जाव वीईवयमाणे जेणेव मंदरे पव्वए जेणेव पंडगवणे जेणेव अभिसेअसिला जेणेव अभिसेअसीहासणे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता सीहासणवरगए पुरत्थाभिमुहे सण्णिसण्णे १३ ॥सूत्रं ११८॥

तेणं कालेणं तेणं समएणं ईसाणे देविन्दे देवराया सूलपाणी वसभवाहणे सुरिन्दे उत्तरद्धलोगाहिवई अट्ठावीस-विमाणवास-सयसहस्साहिवई अरयंबर-वत्थधरे एवं जहा सक्के इमं णाणत्तं—महाघोसा घण्टा लहुपरक्कमो पाय-त्ताणियाहिवई पुप्फओ विमाणकारी दक्खिणे निज्जाणमग्गे उत्तरपुरत्थिमिल्लो रइकरपव्वओ मंदरे समोसरिओ जाव पज्जुवासइ १ । एवं अवसिट्ठावि इंदा भाणिअव्वा जाव अच्चुओ २ । इमं णाणत्तं—चउरासीइ असीइ बावत्तरि सत्तरी अ सट्ठी अ । पण्णा चत्तालीसा तीसा वीसा दस सहस्सा

॥ १ ॥ एए सामाणिआणं ३ । बत्तीसट्ठावीसा बारसट्ठ चउरो सयसहस्सा । पएणा चत्तालीसा छच्च सहस्सारे ॥ १ ॥ आणयपाणयकप्पे चत्तारि सयाऽऽरणच्चुए तिरिण । एए विमाणाणं ४ । इमे जाणविमाणकारी देवा, तंजहा—पालय १ पुप्फे य २ सोमणसे ३ सिरिवच्छे अ ४ णंदिआवत्ते ५ । कामगमे ६ पीइगमे ७ मणोरमे ८ विमल ९ सव्वओभद्दे १० ॥१॥५। सोहम्मगाणं सणंकुमारगाणं बंभलोअगाणं महासुक्कयाणं पाणयगाणं इंदाणं सुघोसा घराटा हरिणेगमेसी पायत्ताणीआहिवई उत्तरिल्ला णिज्जाणभूमी दाहिणपुरत्थिमिल्ले रइकरगपव्वए, ईसाणगाणं माहिंद-लंतग-सहस्सार-अच्चुअगाण य इंदाण महाघोसा घराटा लहुपरक्कमो पायत्ताणीआहिवई दक्खिणिल्ले णिज्जाणमग्गे उत्तरपुरत्थिमिल्ले रइकरगपव्वए ६ । परिसा णं जहा जीवाभिगमे आयरक्खा सामाणिअचउग्गुणा सव्वेसिं जाणविमाणा सव्वेसिं जोअणसयसहस्सविच्छिराणा उच्चत्तेणं सविमाणप्पमाणा महिंदज्झया सव्वेसिं जोअणसाहस्सिआ, सक्कवज्जा मन्दरे समोअरंति जाव पज्जुवासंति ७ ॥ सूत्रं ११९ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं चमरे असुरिन्दे असुरराया चमरचञ्चाए रायहाणीए सभाए सुहम्माए चमरंसि सीहासणंसि चउसट्ठीए सामाणिअसाहस्सीहिं तायत्तीसाए तायत्तीसेहिं चउहिं लोगपालेहिं पंचहिं अग्गमहिसीहिं सपरिवाराहि तिहिं परिसाहिं सत्तहिं अणिएहिं सत्तहिं अणियाहिवईहिं चउहिं चउसट्ठीहिं आयरक्खसाहस्सीहिं अरणेहि अ जहा सक्के णवरं इमं णाणत्तं—दुमो पायत्ताणीआहिवई ओघस्सरा घराटा विमाणं पराणासं जोअणसहस्साइं महिंदज्झओ पञ्चजोअणसयाइं विमाणकारी आभिओगिओ देवो अवसिट्ठं तं चेव जाव मन्दरे समोसरइ पज्जुवासईति १ । तेणं कालेणं तेणं समएणं बली असुरिंदे असुरराया एवमेव णवरं सट्ठी सामाणीअसाहस्सीओ चउगुणा आयरक्खा महादुमो पायत्ताणीआहिवई महाओहस्सरा घराटा सेसं तं चेव परिसाओ जहा जीवाभिगमे २ ।

तेणं कालेणं तेणं समएणं धरणे तहेव णाणत्तं छ सामाणिअसाहस्सीओ छ अग्गमहिओ चउग्गुणा आयरक्खा मेघस्सरा घंटा भद्दसेणो पायत्ताणीयाहिवई विमाणं पणवीसं जोअणसहस्साइं महिंदज्झओ अद्धाइज्जाइं जोअणसयाइं एवमसुरिंदवज्जिआणं भवणवासिइंदाणं, णवरं असुराणं ओघस्सरा घंटा णागाणं मेघस्सरा सुवण्णाणं हंसस्सरा विज्जूणं कोंचस्सरा अग्गीणं मंजुस्सरा दिसाणं मंजुघोसा उदहीणं सुस्सरा दीवाणं महुरस्सरा वाऊणं णंदिस्सरा थणिआणं णंदिघोसा ३ । चउसट्ठी सट्ठी खलु छच्च सहस्सा उ असुरवज्जाणं । सामाणिआ उ एए चउग्गुणा आयरक्खा उ ॥ १ ॥ दाहिणिल्लाणं पायत्ताणीआहिवई भद्दसेणो उत्तरिल्लाणं दक्खोत्ति । वाणमंतरजोइसिआ णेअव्वा, एवं चेव, णवरं चत्तारि सामाणिअसाहस्सीओ चत्तारि अग्गमहिसीओ सोलस आयरक्खसहस्सा विमाणा सहस्सं महिंदज्झया पणवीसं जोअणसयं घंटा दाहिणाणं मंजुस्सरा उत्तराणं मंजुघोसा पायत्ताणीआहिवई विमाणकारी अ आभिओगा देवा जोइसिआणं सुस्सरा सुस्सरणिग्घोसाओ घंटाओ मंदरे समोसरणं जाव पज्जुवासंति ४ ॥ सूत्रं १२० ॥ तए णं से अच्चुए देविंदे देवराया महं देवाहिवे आभिओगे देवे सद्दावेइ २ त्ता एवं वयासी–खिप्पामेव भो देवाणुप्पिआ ! महत्थं महग्घं महारिहं विउलं तित्थयराभिसेअं उवट्ठवेह १ । तए णं ते अभिओगा देवा हट्ठतुट्ठ जाव पडिसुणित्ता उत्तरपुरत्थिमं दिसीभागं अवक्कमंति २ त्ता वेउव्विअसमुग्घाएणं जाव समोहणित्ता अट्ठसहस्सं सोवण्णिअकलसाणं एवं रुप्पमयाणं मणिमयाणं सुवण्णरुप्पमयाणं सुवण्णमणिमयाणं रुप्पमणिमयाणं सुवण्णरुप्पमणिमयाणं अट्ठसहस्सं भोमिज्जाणं अट्ठसहस्सं चंदणकलसाणं एवं भिंगाराणं आयंसाणं थालाणं पाईणं सुपईट्ठगाणं चित्ताणं रयणकरंडगाणं वायकरगाणं पुप्फचंगेरीणं, एवं जहा सूरिआभस्स सव्वचंगेरीओ सव्वपडलगाइं विसेसि-

अंतराइं भाणिअव्वाइं २ । सीहासण-छत्त-चामर-तेल्लसमुग्ग जाव सरिसव-समुग्गा तालिअंटा जाव अट्ठसहस्सं कडुच्छुगाणं विउव्वंति विउव्वित्ता साहाविए विउव्विए अ कलसे जाव कडुच्छुए अ गिरिहत्ता जेणेव खीरोदए समुद्दे तेणेव आगम्म खीरोदगं गिराहंति २ त्ता जाइं तत्थ उप्पलाइं पउमाइं जाव सहस्सपत्ताइं ताइं गिराहंति ३ । एवं पुक्खरोदाओ जाव भरहेरवयाणं मागहाइतित्थाणं उदगं मट्टिअं च गिराहंति २ त्ता एवं गंगाईणं महाणईणं जाव चुल्लहिमवंताओ सव्वतुअरे सव्वपुप्फे सव्वगंधे सव्वमल्ले जाव सव्वोसहीओ सिद्धत्थए य गिराहंति २ त्ता पउमद्दहाओ दहोअगं उप्पलादीणि अ, एवं सव्वकुलपव्वएसु वट्टवेअद्धेसु सव्वमहद्दहेसु सव्ववासेसु सव्वचक्कवट्टिविजएसु वक्खारपव्वएसु अंतरणाईसु विभामिज्जा जाव उत्तर-कुरुसु जाव सुदंसणभद्दसालवणे सव्वतुअरे जाव सिद्धत्थए अ गिराहंति ४। एवं णंदणवणाओ सव्वतुअरे जाव सिद्धत्थए अ सरसं च गोसीसचंदणं दिव्वं च सुमणदामं गेराहंति, एवं सोमणसपंडगवणाओ अ सव्वतुअरे जाव सुमणसदामं दद्दरमलयसुगंधे य गिराहंति २ त्ता एगओ मिलंति २ त्ता जेणेव सामी तेणेव उवागच्छंति २ त्ता महत्थं जाव तित्थयरा-भिसेअं उवट्ठवेंति ५ ॥ सूत्रं १२१ ॥ तए णं से अच्चुए देविंदे दसहिं सामाणिअसाहस्सीहिं तायत्तीसाए तावत्तीसएहिं चउहिं लोगपालेहिं तिहिं परिसाहिं सत्तहिं अणिएहिं सत्तहिं अणिआहिवईहिं चत्तालीसाए आयरक्ख-देवसाहस्सीहिं सद्धिं संपरिवुडे तेहिं साभाविएहिं विउव्विएहि अ वर-कमलपइट्ठाणेहिं सुरभिवरवारिपडिपुराणेहिं चंदणकयचच्चाएहिं आविद्ध-कराठेगुणेहिं पउमुप्पलपिहाणेहिं करयलसुकुमारपरिग्गहिएहिं अट्ठसहस्सेणं सोवरिणआणं कलसाणं जाव अट्ठसहस्सेणं भोमेज्जाणं जाव सव्वो-दएहिं सव्वमट्टिआहिं सव्वतुअरेहिं जाव सव्वोसहिसिद्धत्थएहिं सव्वि-ड्ढीए जाव रवेणं महया २ तित्थयराभिसेएणं अभिसिंचंति १ । तए णं

सामिस्स महया २ अभिसेअंसि वट्टमाणंसि इंदाईआ देवा छत्त-चामर-धूव-कडुच्छुअ-पुप्फ-गंध जाव हत्थगया हट्ठतुट्ठ जाव वज्जसूलपाणी पुरओ चिट्ठंति पंजलिउडा इति, एवं विजयाणुसारेण जाव अप्पेगइआ देवा आसिअ-संमज्जिओवलित्त-सित्त-सुइ-सम्मट्ठ-रत्थंतरावणवीहिअं करेन्ति जाव गंधवट्टिभूअंति २ । अप्पेगइया हिरण्णवासं वासिंति एवं सुवण्ण-रयण-वइर-आभरण-पत्त-पुप्फ-फल-बीअ-मल्ल-गंध-वण्ण जाव चुण्णवासं वासंति ३ । अप्पेगइया हिरण्णविहिं भाइंति एवं जाव चुण्णविधिं भाइंति ४ । अप्पेगइआ चउव्विहं वज्जं वाएन्ति, तंजहा—ततं १ विततं २ घणं ३ झुसिरं ४, ५ । अप्पेगइआ चउव्विहं गेअं गायंति, तंजहा—उक्खित्तं १ पायत्तं २ मंदायईयं ३ रोइआवसाणं (रोइअगं) ४, ६ । अप्पेगइआ चउव्विहं णट्टं णच्चन्ति, तंजहा—अंचिअं १ दुअं २ आरभडं ३ भसोलं ४, ७ । अप्पेगइआ चउव्विहं अभिणयं अभिणेंति, तंजहा—दिट्ठंतिअं पाडिस्सुइअं सामण्णोवणिवाइअं लोगमज्झावसाणिअं ८ । अप्पेगइया बत्तीसइविहं दिव्वं णट्टविहिं उवदंसेन्ति ९ । अप्पेगइआ उप्पयनिवयं निवयउप्पयं संकुचिअपसारिअं जाव भंतसंभंतणामं दिव्वं नट्टविहिं उवदंसंति १० । अप्पेगइआ तंडवेंति अप्पेगइआ लासेन्ति अप्पेगइआ पीणेन्ति ११ । एवं बुक्कारेन्ति अप्फोडेन्ति वग्गन्ति सीहणायं णदंति अप्पेगइआ सव्वाइं करेन्ति अप्पेगइआ हयहेसिअं एवं हत्थिगुलुगुलाइअं रहघणघणाइअं अप्पेगइआ तिण्णिवि, अप्पेगइआ उच्छोलंति अप्पेगइआ पच्छोलंति अप्पेगइआ तिवइं छिंदंति पायदद्दरयं करेन्ति भूमिचवेडे दलयंति अप्पेगइआ महया सद्देणं रावेंति, एवं संजोगा विभासिअव्वा १२ । अप्पेगइआ हक्कारेन्ति, एवं पुक्कारेन्ति वक्कारेन्ति ओवयंति उप्पयंति परिवयंति जलंति तवंति पयवंति गज्जंति विज्जुआयंति वासिंति अप्पेगइआ देवुक्कलिअं करेंति, एवं देवकहकहगं

करेंति अप्पेगइआ दुहुदुहुगं करेंति अप्पेगइआ विकिअभूयाइं रूवाइं विउव्वित्ता पणच्चंति एवमाइ विभासेज्जा जहा विजयस्स जाव सव्वओ समंता आहावेंति परिधावेंतित्ति ॥ सूत्रं १२२ ॥ तए णं से अच्चुइंदे सपरिवारे सामिं तेणं महया महया अभिसेएणं अभिसिंचइ २ त्ता करयलपरिग्गहिअं जाव मत्थए अंजलिं कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेइ २ त्ता ताहिं इट्ठाहिं जाव जयजयसद्दं पउंजति पउंजित्ता जाव पम्हलसुकुमालाए सुरभीए गंधकासाईए गायाइं लूहेइ २ त्ता एवं जाव कप्परुक्खगंपिव अलंकियविभूसिअं करेइ २ त्ता जाव णट्टविहिं उवदंसेइ २ त्ता अच्छेहिं सण्हेहिं रययामएहिं अच्छरसातण्डुलेहिं भगवओ सामिस्स पुरओ अट्ठट्ठमंगलगे आलिहइ, तंजहा—"दप्पण १ भद्दासणं २ वद्धमाण ३ वरकलस ४ मच्छ ५ सिरिवच्छा ६ । सोत्थिअ ७ णंदावत्ता ८ लिहिआ अट्ठट्ठमंगलगा ॥ १ ॥" १ । लिहिऊण करेइ उवयारं, किंते ?, पाडलमल्लिअ-चंपगासोग—पुन्नाग-चूअ-मंजरि-णवमालिअ--बउल—तिलय—कणवीर-कुंद-कुज्जग-कोरंट—पत्तदमणग—वरसुरभिगंधगंधिअस्स कयग्गह--गहिअ-करयल-पब्भट्ठविप्पमुक्कस्स दसद्धवण्णस्स कुसुमणिअरस्स तत्थ चित्तं जण्णुस्सेहप्पमाणमित्तं ओहिनिकरं करेत्ता चंदप्पभ-रयण-वइर-वेरुलिअ-विमलदण्डं कंचण-मणिरयणभत्तिचित्तं कालागुरु-पवर-कुंदुरुक्क-तुरुक्क—धूवगंधुत्तमाणुविद्धं च धूमवट्टिं विणिम्मुअंतं वेरुलिअमयं कडुच्छुअं पग्गहित्तु पयएणं धूवं दाऊण जिणवरिंदस्स सत्तट्ठ पयाइं ओसरित्ता दसंगुलिअं अंजलिं करिअ मत्थयंमि पयओ अट्ठसयविसुद्धगंथजुत्तेहिं महावित्तेहिं अपुणरुत्तेहिं अत्थजुत्तेहिं संथुणइ २ त्ता वामं जाणुं अंचेइ २ त्ता जाव करयलपरिग्गहिअं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी—णमोऽत्थु ते सिद्ध-बुद्ध-णीरय-समण-सामाहिअ-समत्त-समजोगि-सल्लगत्तण-णिब्भय-णीराग-दोस-णिम्मम-णिस्संग--णीसल्ल—माणमूरण—गुणरयण—सीलसागर—मणंतमप्प-

मेय भविअ-धम्म-वरचाउरंतचक्कवट्टी णमोऽत्थु ते अरहओत्तिकट्टु एवं वंदइ णमंसइ २ त्ता णच्चासरणे णाइदूरे सुस्सूसमाणे जाव पज्जुवासइ १। एवं जहा अच्चुअस्स तहा जाव ईसाणस्सवि भाणिअव्वं, एवं भवणवइ-वाणमंतर-जोइसिआ य सूरपज्जवसाणा सएणं परिवारेणं पत्तेअं २ अभिसिंचंति २। तए णं से ईसाणे देविंदे देवराया पंच ईसाणे विउव्वइ २ त्ता एगे ईसाणे भगवं तित्थयरं करयलसंपुडेणं गिण्हइ २ त्ता सीहासणवरगए पुरत्थाभिमुहे सण्णिसण्णे एगे ईसाणे पिट्ठओ आयवत्तं धरेइ दुवे ईसाणा उभओ पासिं चामरुक्खेवं करेन्ति एगे ईसाणे पुरओ सूलपाणी चिट्ठइ ३। तए णं से सक्के देविंदे देवराया आभिओगे देवे सद्दावेइ २ त्ता एसोवि तह चेव अभिसेआणत्तिं देइ तेऽवि तह चेव उवणेन्ति ४। तए णं से सक्के देविंदे देवराया भगवओ तित्थयरस्स चउद्दिसिं चत्तारि धवलवसभे विउव्वेइ सेए संख-दल-विमल-निम्मल-दधिघण-गोखीर-फेण-रयणिगरप्पगासे, पासाईए दरसणिज्जे अभिरूवे पडिरूवे ५। तए णं तेसिं चउण्हं धवलवसभाणं अट्ठहिं सिंगेहिंतो अट्ठ तोअधाराओ णिग्गच्छन्ति ६। तए णं ताओ अट्ठ तोअधाराओ उद्धं वेहासं उप्पयंति २ त्ता एगओ मिलायंति २ त्ता भगवओ तित्थयरस्स मुद्धाणंसि निवयंति ७। तए णं से सक्के देविंदे देवराया चउरासीईए सामाणिअसाहस्सीहिं एअस्सवि तहेव अभिसेओ भाणिअव्वो जाव णमोऽत्थु ते अरहओत्ति कट्टु वंदइ णमंसइ जाव पज्जुवासइ ८॥ सूत्रं १२३ ॥

तए णं से सक्के देविंदे देवराया पंच सक्के विउव्वइ २ त्ता एगे सक्के भयवं तित्थयरं करयलपुडेणं गिण्हइ एगे सक्के पिट्ठओ आयवत्तं धरेइ दुवे सक्का उभओ पासिं चामरुक्खेवं करेन्ति एगे सक्के वज्जपाणी पुरओ पगड्ढइ १। तए णं से सक्के चउरासीईए सामाणिअसाहस्सीहिं जाव अण्णेहि अ भवणवइवाणमंतरजोइसवेमाणिएहि देवेहि देवीहि अ सद्धिं

संपरिवुडे सव्विड्ढीए जाव णाइअरवेणं ताए उक्किट्ठाए जेणेव भगवओ तित्थयरस्स जम्मणणयरे जेणेव जम्मणभवणे जेणेव तित्थयरमाया तेणेव उवागच्छइ २ त्ता भगवं तित्थयरं माऊए पासे ठवेइ २ त्ता तित्थयर-पडिरूवगं पडिसाहरइ २ त्ता ओसोवणिं पडिसाहरइ २ त्ता एगं महं खोमजुअलं कुंडलजुअलं च भगवओ तित्थयरस्स उस्सीसगमूले ठवेइ २ त्ता एगं महं सिरिदामगंडं तवणिज्जलंबूसगं सुवण्णपयरगमंडिअं णाणा-मणि-रयण-विविह-हारद्धहार-उवसोहिअसमुदयं भगवओ तित्थयरस्स उल्लोअंसि निक्खिवइ तण्णं भगवं तित्थयरे अणिमिसाए दिट्ठीए देहमाणे २ सुहंसुहेणं अभिरममाणे चिट्ठइ २। तए णं से सक्के देविंदे देवराया वेसमणं देवं सद्दावेइ २ त्ता एवं वदासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिआ ! बत्तीसं हिरण्णकोडीओ बत्तीसं सुवण्णकोडीओ बत्तीसं णंदाइं बत्तीसं भद्दाइं सुभगे सुभग-रूवजुव्वणलावण्णे अ भगवओ तित्थयरस्स जम्मणभवणंसि साहराहि २ त्ता एअमाणत्तिअं पच्चप्पिणाहि ३। तए णं से वेसमणे देवे सक्केणं जाव विणएणं वयणं पडिसुणेइ २ त्ता जंभए देवे सद्दावेइ २ त्ता एवं वदासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिआ ! बत्तीसं हिरण्ण-कोडीओ जाव भगवओ तित्थयरस्स जम्मणभवणंसि साहरह साहरित्ता एअमाणत्तिअं पच्चप्पिणह ४। तए णं ते जंभगा देवा वेसमणेणं देवेणं एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठ जाव खिप्पामेव बत्तीसं हिरण्णकोडीओ जाव च भगवओ तित्थयरस्स जम्मणभवणंसि साहरंति २ त्ता जेणेव वेसमणे देवे तेणेव जाव पच्चप्पिणंति ५। तए णं से वेसमणे देवे जेणेव सक्के देविंदे देवराया जाव पच्चप्पिणइ ६। तए णं से सक्के देविंदे देवराया २ अभिओगे देवे सद्दावेइ २ त्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिआ ! भगवओ तित्थयरस्स जम्मणणयरंसि सिंघाडग जाव महा-पहपहेसु महया २ सद्देणं उग्घोसेमाणा २ एवं वदह—हंदि सुणंतु भवंतो

बहवे भवणवइ-वाणमंतरजोइसवेमाणिया देवा य देवीओ अ जे णं देवाणुप्पिआ ! तित्थयरस्स तित्थयरमाऊए वा असुभं मणं पधारेइ तस्स णं अज्जगमंजरिआ इव सयधा मुद्धाणं फुट्टउत्तिकट्टु घोसणं घोसेह २ त्ता एअमाणत्तिअं पच्चप्पिणह ७। तए णं ते आभिओगा देवा जाव एवं देवोत्ति आणाए विणएणं वयणं पडिसुणंति २ त्ता सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो अंतिआओ पडिणिक्खमंति २ खिप्पामेव भगवओ तित्थगरस्स जम्मणणगरंसि सिंघाडग जाव एवं वयासी–हंदि सुणंतु भवंतो बहवे भवणवइ जाव जे णं देवाणुप्पिआ ! तित्थयरस्स जाव फुट्टिहीतित्तिकट्टु घोसणगं घोसंति २ त्ता एअमाणत्तिअं पच्चप्पिणंति ८। तए णं ते बहवे भवणवइ-वाणमंतर-जोइस-वेमाणिआ देवा भगवओ तित्थगरस्स जम्मणमहिमं करेंति २ त्ता जेणेव णंदीसरदीवे तेणेव उवागच्छंति २ त्ता अट्ठाहियाओ महामहिमाओ करेंति २ जामेव दिसिं पाउब्भूआ तामेव दिसिं पडिगया ९ ॥ सूत्रं १२४ ॥

॥ इति पञ्चमो वक्षस्कारः ॥ ५ ॥

॥ अथ षष्ठो जम्बूद्वीपपदार्थसंग्रहो वक्षस्कारः ॥

जंबुद्दीवस्स णं भंते ! दीवस्स पदेसा लवणसमुद्दं पुट्ठा ?, हंता पुट्ठा १। ते णं भंते ! किं जंबुद्दीवे दीवे लवणसमुद्दे ?, गोअमा ! जंबुद्दीवे णं दीवे णो खलु लवणसमुद्दे २। एवं लवणसमुद्दस्सवि पएसा जंबुद्दीवे पुट्ठा भाणिअव्वा ३। जंबुद्दीवे णं भंते ! जीवा उद्दाइत्ता २ लवणसमुद्दे पच्चायंति ?, गोयमा ! अत्थेगइआ पच्चायंति अत्थेगइआ नो पच्चायंति, एवं लवणस्सवि जंबुद्दीवे दीवे णेअव्वमिति ४ ॥ सूत्रं १२५ ॥ खंडा १ जोअण २ वासा ३ पव्वय ४ कूडा ५ य तित्थ ६ सेढीओ ७। विजय ८ दह ९ सलिलाओ १० पिंडए होइ संगहणी ॥ १ ॥" जंबुद्दीवे णं भंते !

दीवे भरहप्पमाणमेत्तेहिं खंडेहिं केवइअं खंडगणिएणं पराणत्ता ?, गोयमा ! णउअं खंडसयं खंडगणिएणं पराणत्ते १ । जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे केवइअं जोअणगणिएणं पराणत्ते ?, गोअमा ! सत्तेव य कोडिसया णउआ छप्पराण सयसहस्साइं । चउणवइं च सहस्सा सयं दिवड्ढं च गणिअपयं ॥ १ ॥ २ । जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे कति वासा पराणत्ता ?, गोअमा ! सत्त वासा पराणत्ता, तंजहा—भरहे एरवए हेमवए हिरराणवए हरिवासे रम्मगवासे महाविदेहे ३ । जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे केवइआ वासहरा पराणत्ता केवइआ मंदरा पव्वया पराणत्ता केवइआ चित्तकूडा केवइआ विचित्तकूडा केवइआ जमगपव्वया केवइआ कंचणपव्वया केवइआ वक्खारा केवइआ दीहवेअद्धा केवइआ वट्टवेअद्धा पराणत्ता ?, गोअमा ! जंबुद्दीवे छ वासहरपव्वया एगे मंदरे पव्वए एगे चित्तकूडे एगे विचित्तकूडे दो जमगपव्वया दो कंचणगपव्वयसया वीसं वक्खारपव्वया चोत्तीसं दीहवेअद्धा चत्तारि वट्टवेअद्धा, एवामेव सपुव्वावरेणं जंबुद्दीवे दीवे दुरिण अउणत्तरा पव्वयसया भवंतीतिमक्खायं ४ । जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे केवइआ वासहरकूडा केवइआ वक्खारकूडा केवइआ वेअद्धकूडा केवइआ मंदरकूडा पराणत्ता ?, गोयमा ! छप्पराणं वासहरकूडा छराणउइं वक्खारकूडा तिरिण छलुत्तरा वेअद्धकूडसया नव मंदरकूडा पराणत्ता, एवामेव सपुव्वावरेणं जंबुद्दीवे चत्तारि सत्तट्ठा कूडसया भवंतीतिमक्खायं ५ । जंबुद्दीवे दीवे भरहे वासे कति तित्था पराणत्ता ?, गोयमा ! तओ तित्था पराणत्ता, तंजहा—मागहे वरदामे पभासे ६ । जंबुदीवे २ एरवए वासे कति तित्था पराणत्ता ?, गोयमा ! तओ तित्था पराणत्ता ?, तंजहा—मागहे वरदामे पभासे, एवामेव सपुव्वावरेणं जंबुद्दीवे महाविदेहे वासे एगमेगे चक्कवट्टिविजए कति तित्था पराणत्ता ?, गोयमा ! तओ तित्था पराणत्ता, तंजहा—मागहे वरदामे पभासे, एवामेव सपुव्वावरेणं जंबुद्दीवे २ एगे बिउत्तरे तित्थसए भवंतीतिमक्खायं

७। जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे केवइआ विज्जाहरसेढीओ केवइआ आभिओगसेढीओ पराणत्ताओ ?, गोयमा ! जंबुद्दीवे दीवे अट्ठसट्ठी विज्जाहरसेढीओ अट्ठसट्ठी आभिओगसेढीओ पराणत्ताओ, एवामेव सपुव्वावरेणं जंबुद्दीवे दीवे छत्तीसे सेढिसए भवतीतिमक्खायं ८। जंबुद्दीवे दीवे केवइआ चक्कवट्टिविजया केवइआओ रायहाणीओ केवइआओ तिमिसगुहाओ केवइआओ खंडप्पवायगुहाओ केवइआ कयमालया देवा केवइया णट्टमालया देवा केवइया उसभकूडा पराणत्ता ?, गोयमा ! जंबुद्दीवे दीवे चोत्तीसं चक्कवट्टिविजया चोत्तीसं रायहाणीओ चोत्तीसं तिमिसगुहाओ चोत्तीसं खंडप्पवायगुहाओ चोत्तीसं कयमालया देवा चोत्तीसं णट्टमालया देवा चोत्तीसं उसभकूडा पव्वया पराणत्ता ९। जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे केवइआ महद्दहा पराणत्ता ?, गोअमा ! सोलस महद्दहा पराणत्ता, जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे केवइयाओ महाणईओ वासहरपवहाओ केवइआओ महाणईओ कुंडप्पवहाओ पराणत्ता ?, गोयमा ! जंबुद्दीवे २ चोद्दस महाणईओ वासहरपव्वहाओ छावत्तरिं महाणईओ कुंडप्पवहाओ, एवामेव सपुव्वावरेणं जंबुद्दीवे दीवे णउतिं महाणईओ भवंतीतिमक्खायं १०। जंबुद्दीवे २ भरहेरवएसु वासेसु कइ महाणईओ पराणत्ताओ ?, गोअमा ! चत्तारि महाणईओ पराणत्ताओ, तंजहा–गंगा सिंधू रत्ता रत्तवई, तत्थ णं एगमेगा महाणई चउद्दसहिं सलिलासहस्सेहिं समग्गा पुरत्थिमपच्चत्थिमेणं लवणसमुद्दं समप्पेइ, एवामेव सपुव्वावरेणं जंबुद्दीवे दीवे भरहएरवएसु वासेसु छप्पराणं सलिलासहस्सा भवंतीतिमक्खायं ११। जंबुद्दीवे णं भंते ! हेमवयहेरराणवएसु वासेसु कति महाणईओ पराणत्ताओ ?, गोयमा ! चत्तारि महाणईओ पराणत्ताओ, तंजहा–रोहित्ता रोहिअंसा सुवराणकूला रुप्पकूला, तत्थ णं एगमेगा महाणई अट्ठावीसाए अट्ठावीसाए सलिलासहस्सेहिं समग्गा पुरत्थिमपच्चत्थिमेणं लवणसमुद्दं समप्पेइ, एवामेव सपुव्वावरेणं जंबुद्दीवे २ हेमवयहेरराणवएसु

वासेसु बारसुत्तरे सलिलासयसहस्से भवंतीतिमक्खायं इति १२ । जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे हरिवासरम्मगवासेसु कइ महाणईओ पण्णत्ताओ ?, गोयमा ! चत्तारि महाणईओ पण्णत्ताओ, तंजहा—हरि हरिकंता नरकंता णारिकंता, तत्थ णं एगमेगा महाणई छप्पण्णाए २ सलिलासहस्सेहिं समग्गा पुरत्थिमपच्चत्थिमेणं लवणसमुद्द' समप्पेइ, एवामेव सपुव्वावरेणं जंबुद्दीवे २ हरिवासरम्मगवासेसु दो चउवीसा सलिलासयसहस्सा भवंतीतिमक्खायं १३ । जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे महाविदेहे वासे कइ महाणईओ पण्णत्ताओ ?, गोयमा ! दो महाणईओ पण्णत्ताओ, तंजहा—सीआ य सीओआ य, तत्थ णं एगमेगा महाणई पंचहिं २ सलिलासयसहस्सेहिं बत्तीसाए अ सलिलासहस्सेहिं समग्गा पुरत्थिमपच्चत्थिमेणं लवणसमुद्द' समप्पेइ १४ । एवामेव सपुव्वावरेणं जंबुद्दीवे दीवे महाविदेहे वासे दस सलिलासयसहस्सा चउसट्ठिं च सलिलासहस्सा भवंतीतिमक्खायं १५ । जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दक्खिणेणं केवइया सलिलासयसहस्सा पुरत्थिमपच्चत्थिमाभिमुहा लवणसमुद्द' समप्पेंति ?, गोयमा ! एगे छण्णउए सलिलासयसहस्से पुरत्थिमपच्चत्थिमाभिमुहे लवणसमुद्द' समप्पेंति १६ । जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरेणं केवइया सलिलासयसहस्सा पुरत्थिमपच्चत्थिमाभिमुहा लवणसमुद्द' समप्पेंति ?, गोयमा ! एगे छण्णउए सलिलासयसहस्से पुरत्थिमपच्चत्थिमाभिमुहे जाव समप्पेइ १७। जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे केवइया सलिलासयसहस्सा पुरत्थाभिमुहा लवणसमुद्द' समप्पेंति ?, गोयमा ! सत्त सलिलासयसहस्सा अट्ठावीसं च सहस्सा जाव समप्पेंति १८। जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे केवइआ सलिलासयसहस्सा पच्चत्थिमाभिमुहा लवणसमुद्द' समप्पेंति ?, गोअमा ! सत्त सलिलासयसहस्सा अट्ठावीसं च सहस्सा जाव समप्पेंति १९। एवामेव सपुव्वावरेणं जंबुद्दीवे दीवे चोद्दस सलिलासयसहस्सा छप्पण्णं च सहस्सा भवंतीतिमक्खायं २० ॥ सूत्रं १२६॥

॥ इति षष्ठो वक्षस्कारः ॥ ६ ॥

॥ अथ सप्तमो ज्योतिषधिकारवर्णनो वक्षस्कारः ॥

जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे कइ चंदा पभासिंसु पभासंति पभासिस्संति कइ सूरिआ तवइंसु तवेंति तविस्संति केवइया णक्खत्ता जोगं जोइंसु जोअंति जोइस्संति केवइआ महग्गहा चारं चरिंसु चरंति चरिस्संति केवइआओ तारागणकोडाकोडीओ सोभं सोभिंसु सोभंति सोभिस्संति ?, गोअमा ! दो चंदा पभासिंसु ३ दो सूरिआ तवइंसु ३ छप्पराणं णक्खता जोगं जोइंसु ३ छावत्तरं महग्गहसयं चारं चरिंसु ३, १ । एगं च सयसहस्सं तेत्तीसं खलु भवे सहस्साइं । णव य सया पराणासा तारागणकोडिकोडीणं ॥ १ ॥ सूत्रं १२७ ॥ कइ णं भंते ! सूरमंडला पराणत्ता ?, गोअमा ! एगे चउरासीए मंडलसए पराणत्ते इति १ । जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे केवइअं ओगाहित्ता केवइआ सूरमंडला पराणत्ता ?, गोअमा ! जंबुद्दीवे २ असीअं जोअणसयं ओगाहित्ता एत्थ णं पराणट्ठी सूरमंडला पराणत्ता २ । लवणे णं भंते ! समुद्दे केवइअं ओगाहित्ता केवइआ सूरमंडला पराणत्ता ?, गोअमा ! लवणे समुद्दे तिरिण तीसे जोअणसए ओगाहित्ता एत्थ णं एगूणवीसे सूरमंडलसए पराणत्ते ३ । एवामेव सपुव्वावरेणं जंबुद्दीवे दीवे लवणे अ समुद्दे एगे चुलसीए सूरमंडलसए भवंतीतिमक्खायंति १, ४ ॥ सूत्रं १२८ ॥ सव्वब्भंतराओ णं भंते ! सूरमंडलाओ केवइआए अबाहाए सव्वबाहिरए सूरमंडले पराणत्ते ?, गोयमा ! पंचदसुत्तरे जोअणसए अबाहाए सव्वबाहिरए सूरमंडले पराणत्ते २ ॥ सूत्रं १२९ ॥ सूरमंडलस्स णं भंते ! सूरमंडलस्स य केवइयं अबाहाए अंतरे पराणत्ते ?, गोअमा ! दो जोअणाइं अबाहाए अंतरे पराणत्ते २ ॥ सूत्रं १३० ॥ सूरमंडले णं भंते ! केवइअं आयामविक्खंभेणं केवइअं परिक्खेवेणं केवइअं बाहल्लेणं पराणत्ते ?, गोअमा ! अडयालीसं एगसट्ठिभाए जोअणस्स आयामविक्खंभेणं तं तिगुणं सविसेसं परिक्खेवेणं चउवीसं एगसट्ठिभाए

जोअणस्स बाहल्लेणं पण्णत्ते इति ४ ॥ सूत्रं १३१ ॥ जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे मंदरस्स पव्वयस्स केवइआए अबाहाए सव्वब्भंतरे सूरमंडले पण्णत्ते ?, गोअमा ! चोआलीसं जोअणसहस्साइं अट्ठ य वीसे जोअणसए अबाहाए सव्वब्भंतरे सूरमंडले पण्णत्ते १ । जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे मंदरस्स पव्वयस्स केवइअबाहाए सव्वब्भंतराणंतरे सूरमंडले पण्णत्ते ?, गोयमा ! चोआलीसं जोअणसहस्साइं अट्ठ य बावीसे जोअणसए अडयालीसं च एगसट्ठिभागे जोअणस्स अबाहाए अब्भंतराणंतरे सूरमंडले पन्नत्ता २ । जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे मंदरस्स पव्वयस्स केवइआए अबाहाए अब्भंतरतच्चे सूरमंडले पण्णत्ते ?, गोयमा ! चोआलीसं जोअणसहस्साइं अट्ठ य पणवीसे जोअणसए पणतीसं च एगसट्ठिभागे जोअणस्स अबाहाए अब्भंतरतच्चे सूरमंडले पण्णत्ते इति ३ । एवं खलु एतेणं उवाएणं णिक्खममाणे सूरिए तयणंतराओ मंडलाओ तयणंतरं मंडलं संकममाणे २ दो दो जोअणाइं अडयालीसं च एगसट्ठिभाए जोअणस्स एगमेगे मंडले अबाहावुड्ढिं अभिवद्धेमाणे २ सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइति ४ । जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे मंदरस्स पव्वयस्स केवइआए अबाहाए सव्वबाहिरे सूरमंडले पण्णत्ते ?, गोयमा ! पणयालीसं जोअणसहस्साइं तिण्णि अ तीसे जोअणसए अबाहाए सव्वबाहिरे सूरमंडले पण्णत्ते ५ । जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे मंदरस्स पव्वयस्स केवइआए अबाहाए सव्वबाहिराणंतरे सूरमंडले पण्णत्ते ?, गोअमा ! पणयालीसं जोअणसहस्साइं तिण्णि अ सत्तावीसे जोअणसए तेरस य एगसट्ठिभाए जोअणस्स अबाहाए बाहिराणंतरे सूरमंडले पण्णत्ते ६ । जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे मंदरस्स पव्वयस्स केवइयाए अबाहाए बाहिरतच्चे सूरमंडले पण्णत्ते ?, गोयमा ! पणयालीसं जोअणसहस्साइं तिण्णि अ चउवीसे जोअणसए छव्वीसं च एगसट्ठिभाए जोअणस्स अबाहाए बाहिरतच्चे

सूरमंडले पराणत्ते ७। एवं खलु एएणं उवाएणं पविसमाणे सूरिए तयाणंतराओ मंडलाओ तयाणंतरं मंडलं संकममाणे २ दो दो जोअणाइं अडयालीसं च एगसट्ठिभाए जोयणस्स एगमेगे मंडले अबाहावुद्धिं णिवुड्ढेमाणे २ सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ ५,८॥ सूत्रं १३२॥ जंबुद्दीवे दीवे सव्वब्भंतरे णं भंते! सूरमंडले केवइअं आयामविक्खंभेणं केवइयं परिक्खेवेणं पराणत्ते ?, गोयमा ! णवणउइं जोअणसहस्साइं छच्च चत्ताले जोअणसए आयामविक्खंभेणं तिरिण य जोअणसयसहस्साइं पराणरस य जोअणसहस्साइं एगूणणउइं च जोअणाइं किंचिविसेसाहिआइं परिक्खेवेणं १। अब्भंतराणंतरे णं भंते! सूरमंडले केवइअं आयामविक्खंभेणं केवइअं परिक्खेवेणं पराणत्ते ?, गोअमा ! णवणउइं जोअणसहस्साइं छच्च पणयाले जोअणसए पणतीसं च एगसट्ठिभाए जोअणस्स आयामविक्खंभेणं तिरिण जोअणसयसहस्साइं पराणरस य जोअणसहस्साइं एगं सत्तुत्तरं जोअणसयं परिक्खेवेणं पराणत्ते २। अब्भंतरतच्चे णं भंते! सूरमंडले केवइअं आयामविक्खंभेणं केवइअं परिक्खेवेणं पराणत्ते ?, गोयमा ! णवणउइं जोअणसहस्साइं छच्च एकावरणे जोअणसए णव य एगसट्ठिभाए जोअणस्स आयामविक्खंभेणं तिरिण अ जोअणसयसहस्साइं पराणरस जोअणसहस्साइं एगं च पणवीसं जोअणसयं परिक्खेवेणं ३। एवं खलु एतेणं उवाएणं णिक्खममाणे सूरिए तयाणंतराओ मंडलाओ तयाणंतरं मंडलं उवसंकममाणे २ पंच २ जोअणाइं पणतीसं च एगसट्ठिभाए जोअणस्स एगमेगे मंडले विक्खंभवुद्धिं अभिवड्ढेमाणे २ अट्ठारस २ जोअणाइं परिरयवुद्धिं अभिवड्ढेमाणे २ सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ ४। सव्वबाहिरए णं भंते! सूरमंडले केवइअं आयामविक्खंभेणं केवइअं परिक्खेवेणं पराणत्ते ? गोयमा ! एगं जोयणसयसहस्सं छच्च सट्ठे जोअणसए आयामविक्खंभेणं तिरिण अ जोअणसयसहस्साइं अट्ठारस य सहस्साइं तिरिण अ पराणरसुत्तरे जोअण-

सए परिक्खेवेणं ५ । बाहिराणंतरे णं भंते ! सूरमंडले केवइअं आयामविक्खंभेणं केवइअं परिक्खेवेणं पण्णत्ते ?, गोअमा ! एगं जोअणसयसहस्सं छच्च चउपण्णे जोअणसए छव्वीसं च एगसट्ठिभागे जोअणस्स आयामविक्खंभेणं तिण्णि अ जोअणसयसहस्साइं अट्ठारस य सहस्साइं दोण्णि य सत्ताणउए जोअणसए परिक्खेवेणं ६ । बाहिरतच्चे णं भंते ! सूरमंडले केवइअं आयामविक्खंभेणं केवइअं परिक्खेवेणं पण्णत्ते ?, गोयमा ! एगं जोअणसयसहस्सं छच्च अडयाले जोअणसए बावण्णं च एगसट्ठिभाए जोअणस्स आयामविक्खंभेणं तिण्णि जोअणसयसहस्साइं अट्ठारस य सहस्साइं दोण्णि अ अउणासीए जोअणसए (किंचिविसेसाहिए) परिक्खेवेणं ७ । एवं खलु एएणं उवाएणं पविसमाणे सूरिए तयणंतराओ मंडलाओ तयाणंतरं मंडलं संकममाणे २ पंच पंच जोअणाइं पणतीसं च एगसट्ठिभाए जोअणस्स एगमेगे मंडले विक्खंभवुद्धिं णिव्वुद्धेमाणे २ अट्ठारस २ जोअणाइं परिरयवुद्धिं णिव्वुड्ढेमाणे २ सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ ६, ८ ॥ सूत्रं १३३ ॥ जया णं भंते ! सूरिए सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं एगमेगेणं मुहुत्तेणं केवइअं खेत्तं गच्छइ ?, गोयमा ! पंच पंच जोअणसहस्साइं दोण्णि अ एगावण्णे जोअणसए एगूणतीसं च सट्ठिभाए जोअणस्स एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छइ १ । तया णं इहगयस्स मणूसस्स सीआलीसाए जोअणसहस्सेहिं दोहि अ तेवट्ठेहिं जोअणसएहिं एगवीसाए अ जोअणस्स सट्ठिभाएहिं सूरिए चक्खुप्फासं हव्वमागच्छइ २ । से णिक्खममाणे सूरिए नवं संवच्छरं अयमाणे पढमंसि अहोरत्तंसि सव्वब्भंतराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ ३ । जया णं भंते ! सूरिए अब्भंतराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति तया णं एगमेगेणं मुहुत्तेणं केवइअं खेत्तं गच्छइ ?, गोअमा ! पंच पंच जोअणसहस्साइं दोण्णि अ एगावण्णे जोअणसए सीआलीसं च

सट्ठिभागे जोअणस्स एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छइ ४। तया णं इहगयस्स मणुसस्स सीआलीसाए जोअणसहस्सेहिं एगूणासीए जोअणसए सत्तावण्णाए अ सट्ठिभाएहिं जोअणस्स सट्ठिभागं च एगसट्ठिधा छेत्ता एगूणवीसाए चुण्णिआभागेहिं सूरिए चक्खुप्फासं हव्वमागच्छइ ५। से णिक्खममाणे सूरिए दोच्चंसि अहोरत्तंसि अब्भंतरतच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ ६। जया णं भंते! सूरिए अब्भंतरतच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं एगमेगेणं मुहुत्तेणं केवइअं खेत्तं गच्छइ ?, गोअमा! पंच पंच जोअणसहस्साइं दोण्णि अ बावण्णे जोअणसए पंच य सट्ठिभाए जोअणस्स एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छइ ७। तया णं इहगयस्स मणुसस्स सीआलीसाए जोअणसहस्सेहि छण्णउइए जोअणेहिं तेत्तीसाए सट्ठिभागेहिं जोअणस्स सट्ठिभागं च एगसट्ठिधा छेत्ता दोहिं चुण्णिआभागेहिं सूरिए चक्खुप्फासं हव्वमागच्छति ८। एवं खलु एतेणं उवाएणं णिक्खममाणे सूरिए तयाणंतराओ मंडलाओ तयाणंतरं मंडलं संकममाणे संकममाणे अट्ठारस २ सट्ठिभागे जोअणस्स एगमेगे मंडले मुहुत्तगइं अभिवड्ढेमाणे अभिवुड्ढेमाणे चुलसीइं २ सआइं जोअणाइं पुरिसच्छायं णिव्वुड्ढेमाणे २ सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ ९। जया णं भंते! सूरिए सव्वबाहिरमंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं एगमेगेणं मुहुत्तेणं केवइअं खेत्तं गच्छइ ?, गोअमा! पंच पंच जोअणसहस्साइं तिण्णि अ पंचुत्तरे जोअणसए पण्णरस य सट्ठिभाए जोअणस्स एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छइ १०। तया णं इहगयस्स मणुसस्स एगतीसाए जोअणसहस्सेहिं अट्ठहि अ एगत्तीसेहिं जोअणसएहिं तीसाए अ सट्ठिभाएहिं जोअणस्स सूरिए चक्खुप्फासं हव्वमागच्छइ, एस णं पढमे छम्मासे, एस णं पढमस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे ११। से सूरिए दोच्चे छम्मासे अयमाणे पढमंसि अहोरत्तंसि बाहिराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ १२। जया णं

भंते ! सूरिए बाहिराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं एगमेगेणं मुहुत्तेणं केवइअं खेत्तं गच्छइ ?, गोअमा ! पंच पंच जोअणसहस्साइं तिण्णि अ चउरुत्तरे जोअणसए सत्तावण्णं च सट्ठिभाए जोअणस्स एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छइ १३ । तया णं इहगयस्स मणुसस्स एगत्तीसाए जोअणसहस्सेहिं णवहि अ सोलसुत्तरेहिं जोअणसएहिं इगुणालीसाए अ सट्ठिभाएहिं जोअणस्स सट्ठिभागं च एगसट्ठिधा छेत्ता सट्ठीए चुण्णिआभागेहिं सूरिए चक्खुप्फासं हव्वमागच्छइ १४ । से पविसमाणे सूरिए दोच्चंसि अहोरत्तंसि बाहिरतच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ १५ । जया णं भंते ! सूरिए बाहिरतच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं एगमेगेणं मुहुत्तेणं केवइअं खेत्तं गच्छइ ?, गोअमा ! पंच पंच जोअणसहस्साइं तिण्णि अ चउरुत्तरे जोअणसए इगुणालीसं च सट्ठिभाए जोअणस्स एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छइ १६ । तया णं इहगयस्स मणुयस्स एगाहिएहिं बत्तीसाए जोअणसहस्सेहि एगूणपण्णाए अ सट्ठिभाएहिं जोअणस्स सट्ठिभागं च एगसट्ठिधा छेत्ता तेवीसाए चुण्णिआभाएहिं सूरिए चक्खुप्फासं हव्वमागच्छइ १७ । एवं खलु एएणं उवाएणं पविसमाणे सूरिए तयाणंतराओ मंडलाओ तयाणंतरं मंडलं संकममाणे २ अट्ठारस २ सट्ठिभाए जोअणस्स एगमेगे मंडले मुहुत्तगइं निवड्ढेमाणे २ सातिरेगाइं पंचासीतिं २ जोअणाइं पुरिसच्छायं अभिवड्ढेमाणे २ सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ १८ । एस णं दोच्चे छम्मासे, एस णं दोच्चस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे, एस णं आइच्चे संवच्छरे, एस णं आइच्चस्स संवच्छरस्स पज्जवसाणे पण्णत्ते १९ ॥ सूत्रं १३४ ॥ जया णं भंते ! सूरिए सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं केमहालए दिवसे केमहालिया राई भवइ ?, गोअमा ! तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ जहण्णिआ दुवालसमुहुत्ता राई भवइ १ । से णिक्खममाणे सूरिए णवं संवच्छरं अयमाणे पढमंसि

अहोरत्तंसि अब्भंतराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ २। जया णं भंते ! सूरिए अब्भंतराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं केमहालए दिवसे केमहालिया राई भवइ ?, गोयमा ! तया णं अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणे दुवालसमुहुत्ता राई भवइ दोहि अ एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिअत्ति ३। से णिक्खममाणे सूरिए दोच्चंसि अहोरत्तंसि जाव चारं चरइ तया णं केमहालए दिवसे केमहालिया राई भवइ ?, गोअमा ! तया णं अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणे दुवालसमुहुत्ता राई भवइ चउहिं एगसट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिअत्ति ४। एवं खलु एएणं उवाएणं निक्खममाणे सूरिए तयाणंतराओ मंडलाओ तयाणंतरं मंडलं संकममाणे दो दो एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं मंडले दिवसखित्तस्स निव्वुड्ढेमाणे २ रयणिखित्तस्स अभिवद्धेमाणे २ सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइत्ति ५। जया णं सूरिए सव्वब्भंतराओ मंडलाओ सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं सव्वब्भंतरमंडलं पणिहाय एगेणं तेसीएणं राइंदिअसएणं तिण्णि छावट्ठे एगसट्ठिभागमुहुत्तसए दिवसखेत्तस्स निव्वुद्धेत्ता रयणिखेत्तस्स अभिवुद्धेत्ता चारं चरइत्ति ६। जया णं भंते ! सूरिए सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं केमहालए दिवसे केमहालिया राई भवइ ?, गोअमा ! तया णं उत्तमकट्ठपत्ता उक्कोसिआ अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइत्ति, एस णं पढमे छम्मासे एस णं पढमस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे ७। से पविसमाणे सूरिए दोच्चं छम्मासं अयमाणे पढमंसि अहोरत्तंसि बाहिराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ ८। जया णं भंते ! सूरिए बाहिराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं केमहालए दिवसे भवइ ?, केमहालिया राई भवइ ? गोअमा ! अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ दोहिं एगसट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणा दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ दोहिं

एगसट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिए ६ । से पविसमाणे सूरिए दोच्चंसि अहोरत्तंसि बाहिरतच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ १० । जया णं भंते ! सूरिए बाहिरतच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं केमहालए दिवसे भवइ केमहालिया राई भवइ ?, गोयमा ! तया णं अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ चउहिं एगसट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणा दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ चउहिं एगसट्ठिभाग-मुहुत्तेहिं अहिए इति ११ । एवं खलु एएणं उवाएणं पविसमाणे सूरिए तयाणंतराओ मंडलाओ तयाणंतरं मंडलं संकममाणे २ दो दो एगसट्ठिभाग-मुहुत्तेहि एगमेगे मंडले रयणिखेत्तस्स निवुड्ढेमाणे २ दिवसखेत्तस्स अभि-वुड्ढेमाणे २ सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइत्ति १२ । जया णं भंते ! सूरिए सव्वबाहिराओ मंडलाओ सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं सव्वबाहिरं मंडलं पणिहाय एगेणं तेसीएणं राइंदिअसएणं तिण्णि छावट्ठे एगसट्ठिभागमुहुत्तसए रयणिखेत्तस्स णिव्वुड्ढेत्ता दिवसखेत्तस्स अभिवड्ढेत्ता चारं चरइ १३ । एस णं दोच्चे छम्मासे, एस णं दुच्चस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे, एस णं आइच्चे संवच्छरे, एस णं आइच्चस्स संवच्छरस्स पज्जवसाणे पण्णत्ते ८, १४ ॥ सूत्रं १३५ ॥

जया णं भंते ! सूरिए सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं किंसंठिआ तावखित्तसंठिई पण्णत्ता ?, गोयमा ! उद्धीमुह-कलंबुआपुप्फ-संठाणसंठिआ तावखेत्तसंठिई पण्णत्ता अंतो संकुआ बाहिं वित्थडा अंतो वट्टा बाहिं विहुला अंतो अंकमुहसंठिआ बाहिं सगडुद्धी-(सोत्थिअ) मुहसंठिआ उभओ पासे णं तीसे दो बाहाओ अवट्ठिआओ हवंति पणयालीसं २ जोअणसहस्साइं आयामेणं, दुवे अ णं तीसे बाहाओ अणवट्ठिआओ हवंति, तंजहा—सव्वब्भंतरिआ चेव बाहा सव्वबाहिरिआ चेव बाहा, तीसे णं सव्वब्भंतरिआ बाहा मंदरपव्वयंतेणं णवजोअण-सहस्साइं चत्तारि छलसीए जोअणसए णव य दसभाए जोअणस्स परि-

क्खेवेणं १। एस णं भंते! परिक्खेवविसेसे कओ आहिएति वएज्जा ?, गोअमा! जे णं मंदरस्स परिक्खेवे तं परिक्खेवं तिहिं गुणेत्ता दसहिं छेत्ता दसहिं भागे हीरमाणे एस परिक्खेवविसेसे आहिएति वदेज्जा, तीसे णं सव्वबाहिरिआ बाहा लवणसमुद्दंतेणं चउणवई जोअणसहस्साइं अट्ठसट्ठे जोअणसए चत्तारि अ दसभाए जोअणस्स परिक्खेवेणं २। से णं भंते! परिक्खेवविसेसे कओ आहिएति वएज्जा ?, गोयमा! जे णं जंबुद्दीवस्स परिक्खेवे तं परिक्खेवं तिहिं गुणेत्ता दसहिं छेत्ता दसभागे हीरमाणे एस णं परिक्खेवविसेसे आहिएत्ति वएज्जा इति ३। तया णं भंते! तावखित्ते केवइअं आयामेणं पण्णत्ते ?, गोयमा! अट्ठहत्तरिं जोअणसहस्साइं तिण्णि अ तेत्तीसे जोअणसए जोअणस्स तिभागं च आयामेणं पण्णत्ते ४। मेरुस्स मज्झयारे जाव य लवणस्स रुंदछब्भागो। तावायामो एसो सगडुद्धीसंठिओ नियमा ॥ १॥" तया णं भंते! किंसंठिआ अंधकारसंठिई पण्णत्ता ?, गोअमा! उद्धीमुहकलंबुआपुप्फसंठाणसंठिआ अंधकारसंठिई पण्णत्ता, अंतो संकुआ बाहिं वित्थडा तं चेव जाव तीसे णं सव्वब्भंतरिआ बाहा मंदरपव्वयंतेणं छज्जोअणसहस्साइं तिण्णि अ चउवीसे जोअणसए छच्च दसभाए जोअणस्स परिक्खेवेणंति ५। से णं भंते! परिक्खेवविसेसे कओ आहिएतिवएज्जा ?, गोयमा! जे णं मंदरस्स पव्वयस्स परिक्खेवे तं परिक्खेवं दोहिं गुणेत्ता दसहिं छेत्ता दसहिं भागे हीरमाणे एस णं परिक्खेवविसेसे आहिएति वएज्जा, तीसे णं सव्वबाहिरिआ बाहा लवणसमुद्दंतेणं तेसट्ठी जोअणसहस्साइं दोण्णि य पणयाले जोअणसए छच्च दसभाए जोअणस्स परिक्खेवेणं ६। से णं भंते! परिक्खेवविसेसे कओ आहिएति वएज्जा ?, गोयमा! जे णं जंबुद्दीवस्स परिक्खेवे तं परिक्खेवं दोहिं गुणेत्ता जाव तं चेव ७। तया णं भंते! अंधयारे केवइए आयामेणं पण्णत्ते ?, गोयमा! अट्ठहत्तरिं जोअणसहस्साइं तिण्णि अ

तेत्तीसे जोअणसए तिभागं च आयामेणं पण्णत्ते ८। जया णं भंते! सूरिए सव्वबाहिरमंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं किंसंठिआ तावक्खित्तसंठिई पण्णत्ता ?, गोयमा ! उद्धीमुह-कलंबुआपुप्फ-संठाणसंठिआ पण्णत्ता, तं चेव सव्वं णेअव्वं णवरं णाणत्तं जं अंधयारसंठिइए पुव्ववण्णिअं पमाणं तं तावखित्तसंठिईए णेअव्वं, जं ताव खित्तसंठिईए पुव्ववण्णिअं पमाणं तं अंधयारसंठिईए णेअव्वं १॥ सूत्रं १३६ ॥ जंबुद्दीवे णं भंते! दीवे सूरिआ उग्गमणमुहुत्तंसि दूरे अ मूले अ दीसंति मज्झंतिअमुहुत्तंसि मूले अ दूरे अ दीसंति अत्थमणमुहुत्तंसि दूरे अ मूले अ दीसंति ?, हंता, गोयमा ! तं चेव जाव दीसंति १। जंबुद्दीवे णं भंते ! सूरिआ उग्गमणमुहुत्तंसि अ मज्झंतिअमुहुत्तंसि अ अत्थमणमुहुत्तंसि अ सव्वत्थ समा उच्चत्तेणं ?, हंता तं चेव जाव उच्चत्तेणं २। जइ णं भंते ! जंबुद्दीवे दीवे सूरिआ उग्गमणमुहुत्तंसि अ मज्झंतिअमुहुत्तंसि अत्थमणमुहुत्तंसि सव्वत्थ समा उच्चत्तेणं, कम्हा णं भंते! जंबुद्दीवे दीवे सूरिया उग्गमणमुहुत्तंसि दूरे अ मूले अ दीसंति मज्झंतियमुहुत्तंसि मूले अ दूरे अ दीसंति अत्थमणमुहुत्तंसि दूरे अ मूले अ दीसंति ? गोयमा ! लेसापडिघाएणं उग्गमणमुहुत्तंसि दूरे अ मूले अ दीसंति इति लेसाहितावेणं मज्झंतिअमुहुत्तंसि मूले अ दूरे अ दीसंति लेसापडिघाएणं अत्थमणमुहुत्तंसि दूरे अ मूले अ दीसंति, एवं खलु गोअमा ! तं चेव जाव दीसंति १०, ३ ॥ सूत्रं १३७ ॥ जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे सूरिआ किं तीअं खेत्तं गच्छंति पडुप्पण्णं खेत्तं गच्छंति अणागयं खेत्तं गच्छंति ?, गोअमा ! णो तीअं खेत्तं गच्छंति पडुप्पण्णं खेत्तं गच्छन्ति णो अणागयं खेत्तं गच्छन्ति १। तं भंते किं पुट्ठं गच्छन्ति जाव नियमा छद्दिसिंति, एवं ओभासेंति २। तं भंते ! किं पुट्ठं ओभासेंति ? एवं आहारपयाइं णेअव्वाइं पुट्ठोगाढ-मणंतर-अणुमह-आदिविसयाणुपुव्वी अ जाव णिअमा छद्दिसिं, एवं उज्जोवेंति तवेंति पभासेंति ११, ३

॥ सूत्रं १३८ ॥ जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे सूरिआणं किं तीते खित्ते किरिआ कज्जइ पडुप्पएणो खित्ते किरिआ कज्जइ अणागए खित्ते किरिआ कज्जइ ?, गोअमा ! णो तीए खित्ते किरिआ कज्जइ पडुप्पएणो खित्ते किरिया कज्जइ णो अणागए खित्ते किरिया कज्जइ १। सा भंते ! किं पुट्ठा कज्जइ अपुट्ठा कज्जइ ?, गोअमा ! पुट्ठा कज्जइ णो अणापुट्ठा कज्जइ जाव णिअमा छद्दिसिं २ ॥ सूत्रं १३९ ॥ जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे सूरिआ केवइअं खेत्तं उद्धं तवयंति अहे तिरिअं च ?, गोअमा ! एगं जोअणसयं उद्धं तवयंति अट्ठारससयजोअणाइं अहे तवयंति सीआलीसं जोअणसहस्साइं दोणि अ तेवट्ठे जोअणसए एगवीसं च सट्ठिभाए जोअणस्स तिरिअं तवयंतित्ति १३ ॥ सूत्रं १४० ॥ अंतो णं भंते ! माणुसुत्तरस्स पव्वयस्स जे चंदिम-सूरिअ-गहगण-णक्खत्ततारारूवा ते णं भंते ! देवा किं उद्धोववएणगा कप्पोववएणगा विमाणोववएणगा चारोववएणगा चारट्ठिईआ गइरइआ गइसमावएणगा ?, गोअमा ! अंतो णं माणुसुत्तरस्स पव्वयस्स जे चंदिम-सूरिअ जाव तारारूवे ते णं देवा णो उद्धोववएणगा णो कप्पोववएणगा विमाणोववएणगा चारोववएणगा णो चारट्ठिईआ गइरइआ गइसमावएणगा उद्धीमुह-कलंबुआपुप्फ-संठाणसंठिएहिं जोअणसाहस्सिएहिं तावखेत्तेहिं साहस्सिआहिं वेउव्विआहिं बाहिराहिं परिसाहिं महयाहय-णट्ट-गीअ-वाइअ-तंती-तल-ताल-तुडिअ-घण-मुइंग-पडुप्पवाइअरवेणं दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणा महया उक्किट्ठि-सीहणाय-बोल-कलकलरवेणं अच्छं पव्वयरायं पयाहिणावत्त-मण्डलचारं मेरुं अणुपरिअट्टंति १४ ॥ सूत्रं १४१ ॥ तेसि णं भंते ! देवाणं जाहे इंदे चुए भवइ से कहमियाणिं पकरेंति ?, गोयमा ! ताहे चत्तारि पंच वा सामाणिआ देवा तं ठाणं उवसंपज्जित्ता णं विहरंति जाव तत्थ अएणे इंदे उववएणे भवइ १ । इंदट्ठाणे णं भंते ! केवइअं कालं उववाएणं विरहिए ?, गोयमा ! जहएणेणं एगं समयं

उक्कोसेणं छम्मासे उववाएणं विरहिए २। बहिआ णं भंते! मणुसुत्तरस्स पव्वयस्स जे चंदिम जाव तारारूवा तं चेव णेअव्वं णाणत्तं विमाणोववणगा णो चारोववणगा चारठिईआ णो गइरइआ णो गइसमावणगा पक्किट्टगसंठाणसंठिएहिं जोअणसयसाहस्सिएहिं तावखित्तेहिं सयसाहस्सिआहिं वेउव्विआहिं बाहिराहिं परिसाहिं महयाहयणट्ट जाव भुंजमाणा सुहलेसा मंदलेसा मंदातवलेसा चित्तंतरलेसा अणणोणणसमोगाढाहिं लेसाहिं कूडाविव ठाणठिआ सव्वओ समंता ते पएसे ओभासंति उज्जोवेंति तवेंति पभासेंति ३। तेसि णं भंते! देवाणं जाहे इंदे चुए भवइ से कहमियाणिं पकरेंति जाव जहणणेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं छम्मासा इति १५, ४॥ सूत्रं १४२॥ कइ णं भंते! चंदमण्डला पणत्ता?, गोयमा! पणरस चंदमण्डला पणत्ता १। जंबुद्दीवे णं भंते! दीवे केवइअं ओगाहित्ता केवइआ चंदमण्डला पणत्ता?, गोयमा! जंबुद्दीवे २ असीयं जोअणसयं ओगाहित्ता पंच चंदमण्डला पणत्ता २। लवणे णं भंते! पुच्छा, गोयमा! लवणे णं समुद्दे तिणि तीसे जोअणसए ओगाहित्ता एत्थ णं दस चंदमण्डला पणत्ता, एवामेव सपुव्वावरेणं जंबुद्दीवे दीवे लवणे य समुद्दे पणरस चंदमण्डला भवंतीतिमक्खायं १, ३॥ सूत्रं १४३॥ सव्वब्भंतराओ णं भंते! चंदमंडलाओ णं केवइआए अबाहाए सव्वबाहिरए चंदमण्डले पणत्ते?, गोअमा! पंचदसुत्तरे जोअणसए अबाहाए सव्वबाहिरए चंदमण्डले पणत्ते २॥ सूत्रं १४४॥ चंदमंडलस्स णं भंते! चंदमंडलस्स केवइआए अबाहाए अंतरे पणत्ते?, गोयमा! पणतीसं २ जोअणाइं तीसं च एगसट्ठिभाए जोअणस्स एगसट्ठिभागं च सत्तहा छेत्ता चत्तारि चुणिआभाए चंदमंडलस्स चंदमंडलस्स अबाहाए अंतरे पणत्ते ३॥ सूत्रं १४५॥ चंदमंडले णं भंते! केवइअं आयामविक्खंभेणं केवइअं परिक्खेवेणं

केवइअं बाहल्लेणं पराणत्ते ?, गोअमा ! छप्पराणं एगसट्ठिभाए जोअणस्स आयामविक्खंभेणं तं तिगुणं सविसेसं परिक्खेवेणं अट्ठावीसं च एगसट्ठिभाए जोअणस्स बाहल्लेणं ४ ॥ सूत्रं १४६ ॥ जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स केवइआए अबाहाए सव्वब्भंतरए चंदमराडले पराणत्ते ?, गोअमा ! चोआलीसं जोअणसहस्साइं अट्ठ य वीसे जोअणसए अबाहाए सव्वब्भंतरे चंदमंडले पराणत्ते १ । जंबुद्दीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स केवइयाए अबाहाए अब्भंतराणंतरे चंदमंडले पराणत्ते ?, गोयमा ! चोआलीसं जोअणसहस्साइं अट्ठ य छप्पराणे जोअणसए पणवीसं च एगसट्ठिभाए जोअणस्स एगट्ठिभागं च सत्तहा छेत्ता चत्तारि चुरिणआभाए अबाहाए अब्भंतराणंतरे चंदमंडले पराणत्ते २ । जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स केवइआए अबाहाए अब्भंतरतच्चे मंडले पराणत्ते ?, गोअमा ! चोआलीसं जोअणसहस्साइं अट्ठ य बाणउए जोअणसए एगावराणं च एगसट्ठिभाए जोअणस्स एगट्ठिभागं च सत्तहा छेत्ता एगं चुरिणआभागं अबाहाए अब्भंतरतच्चे चंदमंडले पराणत्ते ३ । एवं खलु एएणं उवाएणं णिक्खममाणे चंदे तयाणंतराओ मंडलाओ तयाणंतरं मंडलं संकममाणे २ छत्तीसं २ जोअणाइं पणवीसं च एगट्ठिभाए जोअणस्स एगट्ठिभागं च सत्तहा छेत्ता चत्तारि चुरिणआभाए एगमेगे मंडले अबाहाए बुद्धिं अभिवद्धेमाणे २ सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ ४ । जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स केवइआए अबाहाए सव्वबाहिरे चंदमंडले पराणत्ते ?, गोयमा ! पणयालीसं जोअणसहस्साइं तिरिण अ तीसे जोअणसए अबाहाए सव्वबाहिरए चंदमंडले पराणत्ते ५ । जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स केवइआए अबाहाए बाहिराणंतरे चंदमंडले पराणत्ते ?, गोयमा ! पणयालीसं जोअणसहस्साइं दोरिण अ तेणउए जोअणसए पणतीसं च एगसट्ठिभाए जोअणस्स एगट्ठिभागं च सत्तहा छेत्ता तिरिण चुरिणआभाए अबाहाए बाहिराणंतरे चंदमंडले

पण्णत्ते ६। जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स केवइआए अबाहाए बाहिरतच्चे चंदमंडले पण्णत्ते ?, गोयमा ! पणयालीसं जोअणसहस्साइं दोण्णि अ सत्तावण्णे जोअणसए णव य एगट्ठिभाए जोअणस्स एगट्ठिभागं च सत्तहा छेत्ता छ चुण्णिआभाए अबाहाए बाहिरतच्चे चंदमंडले पण्णत्ते ७। एवं खलु एएणं उवाएणं पविसमाणे चंदे तयाणंतराओ मंडलाओ तयाणंतरं मंडलं संकममाणे २ छत्तीसं २ जोअणाइं पणवीसं च एगसट्ठिभाए जोअणस्स एगट्ठिभागं च सत्तहा छेत्ता चत्तारि चुण्णिआभाए एगमेगे मंडले अबाहाए वुद्धिं णिव्वुद्धेमाणे २ सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ ५, ८॥ सूत्रं १४७॥ सव्वब्भंतरे णं भंते ! चंदमंडले केवइअं आयामविक्खंभेणं केवइअं परिक्खेवेणं पण्णत्ते ?, गोयमा ! णवणउइं जोअणसहस्साइं छच्चत्ताले जोअणसए आयामविक्खंभेणं तिण्णि अ जोअणसयसहस्साइं पण्णरस जोअणसहस्साइं अउणाणउतिं च जोअणाइं किंचिविसेसाहिए परिक्खेवेणं पण्णत्ते १। अब्भंतराणंतरे सा चेव पुच्छा, गोयमा ! णवणउइं जोअणसहस्साइं सत्त य बारसुत्तरे जोअणसए एगावण्णं च एगट्ठिभागे जोअणस्स एगट्ठिभागं च सत्तहा छेत्ता एगं चुण्णिआभागं आयामविक्खंभेणं तिण्णि अ जोयणसयसहस्साइं पन्नर सहस्साइं तिण्णि अ एगूणवीसे जोअणसए किंचिविसेसाहिए परिक्खेवेणं २। अब्भंतरतच्चे णं जाव पण्णत्ते ?, गोयमा ! णवणउइं जोअणसहस्साइं सत्त य पञ्चासीए जोअणसए इगतालीसं च एगट्ठिभाए जोअणस्स एगट्ठिभागं च सत्तहा छेत्ता दोण्णि अ चुण्णिआभाए आयामविक्खंभेणं तिण्णि अ जोअणसयसहस्साइं पण्णरस जोअणसहस्साइं पंच य इगुणापण्णे जोअणसए किंचिविसेसाहिए परिक्खेवेणं ३। एवं खलु एएणं उवाएणं णिक्खममाणे चंदे जाव संकममाणे २ बावत्तरिं २ जोअणाइं एगावण्णं च एगट्ठिभाए जोअणस्स एगट्ठिभागं च सत्तहा छेत्ता एगं च चुण्णिआभागं एगमेगे

मंडले विक्खंभवुड्ढिं अभिवड्ढेमाणे २ दो दो तीसाइं जोअणसयाइं परिरय-वुड्ढिं अभिवड्ढेमाणे २ सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ ४। सव्वबाहिरए णं भंते ! चंदमंडले केवइअं आयामविक्खंभेणं केवइअं परिक्खेवेणं पण्णत्ते ?, गोयमा ! एगं जोयणसयसहस्सं छच्चसट्ठे जोअणसए आयामविक्खंभेणं तिण्णि अ जोयणसयसहस्साइं अट्ठारस सहस्साइं तिण्णि अ पण्णरसुत्तरे जोअणसए परिक्खेवेणं ५। बाहिराणंतरे णं पुच्छा, गोयमा ! एगं जोअणसयसहस्सं पंच सत्तासीए जोअणसए णव य एगट्ठिभाए जोअणस्स एगट्ठिभागं च सत्तहा छेत्ता छ चुण्णिआभाए आयामविक्खंभेणं तिण्णि अ जोअणसयसहस्साइं अट्ठारस य सहस्साइं पंचासीइं च जोअणाइं परिक्खेवेणं ६। बाहिरतच्चे णं भंते ! चंदमंडले जाव पण्णत्ते ?, गोयमा ! एगं जोअणसयसहस्सं पंच य चउदसुत्तरे जोअण-सए एगूणवीसं च एगसट्ठिभाए जोअणस्स एगट्ठिभागं च सत्तहा छेत्ता पंच चुण्णिआभाए आयामविक्खंभेणं तिण्णि अ जोअणसयसहस्साइं सत्तरस सहस्साइं अट्ठ य पणपण्णे जोअणसए परिक्खेवेणं ७। एवं खलु एएणं उवाएणं पविसमाणे चंदे जाव संकममाणे २ बावत्तरिं २ जोअणाइं एगावण्णं च एगट्ठिभाए जोअणस्स एगट्ठिभागं च सत्तहा छेत्ता एगं चुण्णिआभागं एगमेगे मण्डले विक्खंभवुड्ढिं णिव्वुड्ढेमाणे २ दो दो तीसाइं जोअणसयाइं परिरयवुड्ढिं णिव्वुड्ढेमाणे २ सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ ६, ८॥ सूत्रं १४८॥ जया णं भंते ! चंदे सव्वब्भं-तरमण्डलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं एगमेगेणं मुहुत्तेणं केवइअं खेत्तं गच्छइ ?, गोअमा ! पंच जोअणसहस्साइं तेवत्तरिं च जोअणाइं सत्तत्तरिं च चोआले भागसए गच्छइ मण्डलं तेरसहिं सहस्सेहिं सत्तहि अ पणवीसेहिं सएहिं छेत्ता इति, तया णं इहगयस्स मणूसस्स सीआलीसाए जोअणसहस्सेहिं दोहि अ तेवट्ठेहिं जोअणएहिं एगवीसाए अ सट्ठिभाएहिं जोअणस्स

चंदे चक्खुप्फासं हव्वमागच्छइ १ । जया णं भंते ! चंदे अब्भंतराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ जाव केवइअं खेत्तं गच्छइ ?, गोयमा ! पंच जोअण-सहस्साइं सत्तत्तरिं च जोअणाइं छत्तीसं च चोअत्तरे भागसए गच्छइ, मंडलं तेरसहि सहस्सेहिं जाव छेत्ता २ । जया णं भंते ! चंदे अब्भंतरतच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं एगमेगेणं मुहुत्तेणं केवइअं खेत्तं गच्छइ ?, गोयमा ! पंच जोअणसहस्साइं असीइं च जोअणाइं तेरस य भागसहस्साइं तिण्णि अ एगूणवीसे भागसए गच्छइ, मंडलं तेरसहिं जाव छेत्ता ३ । एवं खलु एएणं उवाएणं णिक्खममाणे चंदे तयाणंतराओ जाव संकममाणे २ तिण्णि २ जोअणाइं छण्णउइं च पंचावण्णे भागसए एघमेगे मंडले मुहुत्तगइं अभिवद्धेमाणे २ सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ ४ । जया णं चंदे सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं एगमेगेणं मुहुत्तेणं केवइअं खेत्तं गच्छइ ?, गोयमा ! पंच जोअणसहस्साइं एगं च पणवीसं जोअणसयं अउणत्तरिं च णउए भागसए गच्छइ, मंडलं तेरसहिं भाग-सहस्सेहिं सत्तहि अ जाव छेत्ता ५ । तया णं इहगयस्स मणूसस्स एक्कत्ती-साए जोअणसहस्सेहिं अट्ठहि अ एगत्तीसेहिं जोअणसएहिं चंदे चक्खु-प्फासं हव्वमागच्छइ ६ । जया णं भंते ! बाहिराणंतरं पुच्छा, गोअमा ! पंच जोअणसहस्साइं एक्कं च एक्कवीसं जोअणसयं एक्कारस य सट्ठे भागसहस्से गच्छइ, मंडलं तेरसहिं जाव छेत्ता ७ । जया णं भंते ! बाहिर-तच्चं पुच्छा, गोअमा ! पंच जोअणसहस्साइं एगं च अट्ठारसुत्तरं जोअण-सयं चोद्दस य पंचुत्तरे भागसए गच्छइ मंडलं तेरसहिं सहस्सेहिं सत्तहिं पणवीसेहिं सएहिं छेत्ता ८ । एवं खलु एएणं उवाएणं जाव संकममाणे २ तिण्णि २ जोअणाइं छण्णउतिं च पंचावण्णे भागसए एगमेगे मंडले मुहुत्तगइं णिवुद्धेमाणे २ सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चार चरइ ९ ॥ सूत्रं १४९ ॥ कइ णं भंते ! णक्खत्तमंडला पण्णत्ता ?, गोअमा !

अट्ठ णक्खत्तमंडला पण्णत्ता १, १। जंबुद्दीवे दीवे केवइअं ओगाहित्ता केवइआ णक्खत्तमंडला पण्णत्ता ?, गोअमा ! जंबुद्दीवे दीवे असीअं जोअणसयं ओगाहेत्ता एत्थ णं दो णक्खत्तमंडला पण्णत्ता २। लवणे णं समुद्दे केवइअं ओगाहेत्ता केवइआ णक्खत्तमंडला पण्णत्ता ?, गोअमा ! लवणे णं समुद्दे तिण्णि तीसे जोअणसए ओगाहित्ता एत्थ णं छ णक्खत्तमंडला पण्णत्ता, एवामेव सपुव्वावरेणं जंबुद्दीवे दीवे लवणसमुद्दे अट्ठ णक्खत्तमंडला भवंतीतिमक्खायं २, ३। सव्वब्भंतराओ णं भंते ! णक्खत्तमंडलाओ केवइआए अबाहाए सव्वबाहिरए णक्खत्तमंडले पण्णत्ते ?, गोअमा ! पंचदसुत्तरे जोअणसए अबाहाए सव्ववाहिरए णक्खत्तमंडले पण्णत्ते ४। णक्खत्तमंडलस्स णं भंते ! णक्खत्तमंडलस्स य एस णं केवइआए अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ?, गोअमा ! दो जोअणाइं णक्खत्तमंडलस्स य णक्खत्तमंडलस्स य अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ३, ५। णक्खत्तमंडले णं भंते ! केवइअं आयामविक्खंभेणं केवइअं परिक्खेवेणं केवइअं बाहल्लेणं पण्णत्ते ?, गोअमा ! गाउअं आयामविक्खंभेणं तं तिगुणं सविसेसं परिक्खेवेणं अद्धगाउअं बाहल्लेणं पण्णत्ते ४, ६। जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे मंदरस्स पव्वयस्स केवइआए अबाहाए सव्वब्भंतरे णक्खत्तमंडले पण्णत्ते ?, गोअमा ! चोयालीसं जोअणसहस्साइं अट्ठ य वीसे जोअणसए अबाहाए सव्वब्भंतरे णक्खत्तमंडले पण्णत्ते ७। जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे मंदरस्स पव्वयस्स केवइआए अबाहाए सव्वबाहिरए णक्खत्तमंडले पण्णत्ते ?, गोअमा ! पणयालीसं जोअणसहस्साइं तिण्णि अ तीसे जोअणसए अबाहाए सव्वबाहिरए णक्खत्तमंडले पण्णत्ते ५, ८। सव्वब्भंतरे णक्खत्तमंडले केवइअं आयामविक्खंभेणं केवइअं परिक्खेवेणं पण्णत्ते ?, गोअमा ! णवणउतिं जोअणसहस्साइं छच्चचत्ताले जोअणसए आयामविक्खंभेणं तिण्णि अ जोअणसयसहस्साइं पण्णरसं सहस्साइं एगूणणवतिं च

जोअणाइं किंचिविसेसाहिए परिक्खेवेणं पराणत्ते ६। सव्वबाहिरए णं भंते ! णक्खत्तमंडले केवइअं आयामविक्खंभेणं केवइअं परिक्खेवेणं पराणत्ते ?, गोअमा ! एगं जोअणसयसहस्सं छच्च सट्ठे जोअणसए आयामविक्खंभेणं तिरिण अ जोअणसयसहस्साइं अट्ठारस य सहस्साइं तिरिण अ पराणरसुत्तरे जोअणसए परिक्खेवेणं १० । जया णं भंते ! णक्खत्ते सव्वब्भंतरामंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं एगमेगेणं मुहुत्तेणं केवइअं खेत्तं गच्छइ ?, गोअमा ! पंच जोअणसहस्साइं दोरिण य पराणट्ठे जोअणसए अट्ठारस य भागसहस्से दोरिण अ तेवट्ठे भागसए गच्छइ, मंडलं एक्कवीसाए भागसहस्सेहिं णवहि अ सट्ठेहि सएहिं छेत्ता ११। जया णं भंते ! णक्खत्ते सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं एगमेगेणं मुहुत्तेणं केवइअं खेत्तं गच्छइ ?, गोअमा ! पंच जोअणसहस्साइं तिरिण अ एगूणवीसे जोअणसए सोलस य भागसहस्सेहिं तिरिण अ पराणट्ठे भागसए गच्छइ, मंडलं एगवीसाए भागसहस्सेहिं णवहि अ सट्ठेहिं सएहिं छेत्ता १२। एते णं भंते ! अट्ठ णक्खत्तमंडला कतिहिं चंदमंडलेहिं समोअरंति ?, गोयमा ! अट्ठहिं चंदमंडलेहिं समोअरंति, तंजहा— पढमे चंदमंडले ततिए छट्ठे सत्तमे अट्ठमे दसमे इकारसमे पराणरसमे चंदमंडले १३। एगमेगेणं भंते ! मुहुत्तेणं केवइआइं भागसयाइं गच्छइ ?, गोयमा ! जं जं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तस्स २ मंडलपरिक्खेवस्स सत्तरस अट्ठसट्ठीए भागसए गच्छइ, मंडलं सयसहस्सेणं अट्ठाणउइए अ सएहिं छेत्ता १४ । एगमेगेणं भंते ! मुहुत्तेणं सूरिए केवइआइं भागसयाइं गच्छइ ?, गोअमा ! जं जं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तस्स २ मंडलपरिक्खेवस्स अट्ठारसतीसे भागसए गच्छइ, मंडलं सयसहस्सेहिं अट्ठाणउतीए अ सएहिं छेत्ता १५। एगमेगेणं भंते ! मुहुत्तेणं णक्खत्ते केवइआइं भागसयाइं गच्छइ ?, गोयमा ! जं जं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तस्स

तस्स मंडलपरिक्खेवस्स अट्ठारस पणतीसे भागसए गच्छइ मंडलं सयसहस्सेणं अट्ठाणउईए अ सएहिं छेत्ता १६ ॥ सूत्रं १५० ॥ जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे सूरिआ उदीणपाईणमुग्गच्छ पाईणदाहिणमागच्छंति १ पाईणदाहिणमुग्गच्छ दाहिणपडीणमागच्छंति २ दाहिणपडीणमुग्गच्छ पडीणउदीणमागच्छंति ३ पडीणउदीणमुग्गच्छ उदीणपाईणमागच्छंति ४ ?, हंता गोअमा ! जहा पंचमसए पढमे उद्देसे जाव णेवत्थि उस्सप्पिणी अवट्ठिए णं तत्थ काले पण्णत्ते समणाउसो !, इच्चेसा जंबुद्दीवपण्णत्तीए सूरपण्णत्ती वत्थुसमासेणं समत्ता भवइ १ । जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे चंदिमा उदीणपाईणमुग्गच्छ पाईणदाहिणमागच्छंति जहा सूरवत्तव्वया जहा पंचमसयस्स दसमे उद्देसे जाव अवट्ठिए णं तत्थ काले पण्णत्ते समणाउसो ! इच्चेसा जंबुद्दीवपण्णत्तीए चंदपण्णत्ती वत्थुसमासेणं समत्ता भवइ २ ॥ सूत्रं १५१ ॥ कति णं भंते ! संवच्छरा पण्णत्ता ?, गोयमा ! पंच संवच्छरा पण्णत्ता, तंजहा–णक्खत्तसंवच्छरे जुगसंवच्छरे पमाणसंवच्छरे लक्खणसंवच्छरे सणिच्छरसंवच्छरे १ । णक्खत्तसंवच्छरे णं भंते ! कइविहे पण्णत्ते ?, गोअमा ! दुवालसविहे पण्णत्ते, तंजहा–सावणे भद्दवए आसोए जाव आसाढे, जं वा विहप्फई महग्गहे दुवालसेहिं संवच्छरेहिं सव्वणक्खत्तमंडलं समाणेइ सेत्तं णक्खत्तसंवच्छरे १ । जुगसंवच्छरे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ?, गोअमा ! पंचविहे पण्णत्ते, तंजहा–चदे २ अभिवड्ढिए चंदे अभिवड्ढिए चेव २ । पढमस्स णं भंते ! चंदसंवच्छरस्स कइ पव्वा पण्णत्ता ?, गोयमा ! चोव्वीसं पव्वा पण्णत्ता ३ । बितिअस्स णं भंते ! चंदसंवच्छरस्स कइ पव्वा पण्णत्ता ?, गोयमा ! चउव्वीसं पव्वा पण्णत्ता ४ । एवं पुच्छा ततिअस्स, गोअमा ! छव्वीसं पव्वा पण्णत्ता, चउत्थस्स चंदसंवच्छरस्स चोव्वीसं पव्वा, पंचमस्स णं अहिवड्ढिअस्स छव्वीसं पव्वा य पण्णत्ता, एवामेव सपुव्वावरेणं पंचसंवच्छरिए जुए एगे चउव्वीसे पव्वसए पण्णत्ते,

सेत्तं जुगसंवच्छरे ५। पमाणसंवच्छरे णं भंते ! कतिविहे पराणत्ते ?, गोअमा ! पंचविहे पराणत्ते, तंजहा—णक्खत्ते चंदे उऊ आइच्चे अभिवड्ढिए, सेत्तं पमाणसंवच्छरे ६। लक्खणसंवच्छरे णं भंते ! कतिविहे पराणत्ते ?, गोअमा ! पंचविहे पराणत्ते, तंजहा—"समयं नक्खत्ता जोगं जोअंति समयं उऊ परिणामंति। णच्चुराह णाइसीओ बहूदओ होइ णक्खत्ते ॥ १ ॥ ससि समगपुराणमासिं जोएंती विसमचारिणक्खत्ता। कडुओ बहुदओ आ तमाहु संवच्छरं चंदं ॥ २ ॥ विसमं पवालिणो परिणमंति अणुऊसु दिंति पुप्फफलं। वासं न सम्म वासइ तमाहु संवच्छरं कम्मं ॥ ३ ॥ पुढविदगाणं च रसं पुप्फफलाणं च देइ आइच्चो। अप्पेणवि वासेणं सम्मं निप्फज्जए सस्सं ॥ ४ ॥ आइच्चतेअतविआ खणलवदिवसा उऊ परिणमंति। पूरेइ अ णिराणयथले तमाहु अभिवड्ढिअं जाण ॥ ५ ॥ से तं णक्खत्तसंवच्छरे ७। सणिच्छरसंवच्छरे णं भंते ! कतिविहे पराणत्ते ?, गोअमा ! अट्ठाविसइविहे पराणत्ते, तंजहा—अभिई सवणे धणिट्ठा सयभिसया दो अ होंति भद्दवया। रेवइ अस्सिणि भरणी कत्तिअ तह रोहिणी चेव ॥ १ ॥ जाव उत्तराओ आसाढाओ जं वा सणिच्चरे महग्गहे तीसाए संवच्छरेहिं सव्वं णक्खत्तमंडलं समाणेइ सेत्तं सणिच्चरसंवच्छरे ८ ॥ सूत्रं १५२ ॥ एगमेगस्स णं भंते ! संवच्छरस्स कइ मासा पराणत्ता ?, गोअमा ! दुवालस मासा पराणत्ता, तेसि णं दुविहा णामधेज्जा पराणत्ता, तंजहा—लोइआ लोउत्तरिआ य, तत्थ लोइआ णामा इमे, तंजहा—सावणे भद्दवए जाव आसाढे, लोउत्तरिआ णामा इमे, तंजहा—अभिणंदिए पइट्ठे अ, विजए पीइवद्धणे। सेअंसे य सिवे चेव, सिसिरे अ सहेमवं ॥ १ ॥ णवमे वसंतमासे, दसमे कुसुमसंभवे। एक्कारसे निदाहे अ, वणविरोहे अ बारसमे ॥ २ ॥ १। एगमेगस्स णं भंते ! मासस्स कति पक्खा पराणत्ता ?, गोअमा ! दो पक्खा पराणत्ता, तंजहा—बहुलपक्खे अ सुक्कपक्खे अ २। एगमेगस्स

णं भंते ! पक्खस्स कइ दिवसा पराणत्ता ?, गोत्रमा ! पराणरस दिवसा पराणत्ता, तंजहा–पडिवादिवसे बितिश्रादिवसे जाव पराणरसीदिवसे ३। एतेसि णं भंते ! पराणरसराहं दिवसाणं कइ णामधेज्जा पराणत्ता ?, गोत्रमा ! पराणरस नामधेज्जा पराणत्ता, तंजहा–पुव्वंगे सिद्धमणोरमे अ तत्तो मणोरहे चेव जसभद्दे अ जसधरे छट्ठे सव्वकामसमिद्धे अ ॥ १ ॥ इंदमुद्धाभिसित्ते अ सोमणस धणंजए अ बोद्धव्वे। अत्थसिद्धे अभिजाए अच्चसणे सयंजए चेव ॥ २ ॥ अग्गिवेसे उवसमे दिवसाणं होंति णामधेज्जा ॥४। एतेसि णं भंते ! पराणरसराहं दिवसाणं कति तिही पराणत्ता ?, गोयमा ! पराणरस तिही पराणत्ता, तंजहा–नंदे भद्दे जए तुच्छे पुराणो पक्खस्स पंचमी। पुणरवि णंदे भद्दे जए तुच्छे पुराणो पक्खस्स दसमी। पुणरवि णंदे भद्दे जए तुच्छे पुराणो पक्खस्स पराणरसी, एवं ते तिगुणा तिहीश्रो सव्वेसिं दिवसाणंति ५। एगमेगस्स णं भंते ! पक्खस्स कइ राईश्रो पराणत्ताश्रो ?, गोत्रमा ! पराणस्स राईश्रो पराणत्ताश्रो, तंजहा–पडिवाराई जाव पराणरसीराई ६। एश्रासि णं भंते ! पराणरसराहं राईणं कइ णामधेज्जा पराणत्ता ?, गोत्रमा ! पराणरस नामधेज्जा पराणत्ता, तंजहा–उत्तमा य सुणक्खत्ता, एलावच्चा जसोहरा। सोमणसा चेव तहा, सिरिसंभूत्रा य बोद्धव्वा ॥ १ ॥ विजया य वेजयंति जयंति अपराजिश्रा य इच्छा य। समाहारा चेव तहा तेश्रा य तहा अईतेश्रा ॥ २ ॥ देवाणंदा णिरई रयणीणं णामधिज्जाइं ७। एयासि णं भंते ! पराणरसराहं राईणं कइ तिही पराणत्ता ?, गोयमा ! पराणरस तिही पराणत्ता, तंजहा–उग्गवई भोगवई जसवई सव्वसिद्धा सुहणामा, पुणरवि उग्गवई भोगवई जसवई सव्वसिद्धा सुहणामा, पुणरवि उग्गवई भोगवई जसवई सव्वसिद्धा सुहणामा, एवं तिगुणा एते तिहीश्रो सव्वेसिं राईणं ८। एगमेगस्स णं भंते ! अहोरत्तस्स कइ मुहुत्ता पराणत्ता ?, गोत्रमा ! तीसं

मुहुत्ता पएणत्ता, तंजहा—रुद्दे सेए मित्ते वाउ सुबीए तहेव अभिचंदे। माहिंद बलव बंभे बहुसच्चे चेव ईसाणे ॥ १ ॥ तट्ठे अ भाविअप्पा वेसमणे वारुणे अ आणंदे। विजए अ वीससेणे पायावच्चे उवसमे अ ॥ २ ॥ गंधव्व अग्गिवेसे सयवसहे आयवे य अममे अ। अणवं भोमे वसहे सव्वट्ठे रक्खसे चेव ॥ ३ ॥ १ ॥ सूत्रं १५३ ॥

कति णं भंते! करणा पएणत्ता ?, गोअमा! एक्कारस करणा पएणत्ता, तंजहा—बवं बालवं कोलवं थीविलोअणं गराइ वणिज्जं विट्ठी सउणी चउप्पयं नागं किंत्थुग्घं १। एतेसि णं भंते! एक्कारसएहं करणाणं कति करणा चरा कति करणा थिरा पएणत्ता ?, गोयमा! सत्त करणा चरा, चत्तारि करणा थिरा पएणत्ता, तंजहा—बवं बालवं कोलवं थिविलोअणं गरादि वणिजं विट्ठी, एते णं सत्त करणा चरा, चत्तारि करणा थिरा पएणत्ता, तंजहा—सउणी चउप्पयं णागं किंत्थुग्घं, एते णं चत्तारि करणा थिरा पएणत्ता २। एते णं भंते! चरा थिरा वा कया भवंति ?, गोअमा! सुक्कपक्खस्स पडिवाए राओ बवे करणे भवइ, बितियाए दिवा बालवे करणे भवइ, राओ कोलवे करणे भवइ, ततिआए दिवा थीविलोअणं करणं भवइ, राओ गराइ करणं भवइ, चउत्थीए दिवा वणिजं राओ विट्ठी, पंचमीए दिवा बवं राओ बालवं, छट्ठीए दिवा कोलवं राओ थीविलोअणं, सत्तमीए दिवा गराइ राओ वणिज्जं, अट्ठमीए दिवा विट्ठी राओ बवं, नवमीए दिवा बालवं राओ कोलवं, दसमीए दिवा थीविलोअणं राओ गराइं, एक्कारसीए दिवा वणिज्जिं राओ विट्ठी, बारसीए दिवा बवं राओ बालवं, तेरसीए दिवा कोलवं राओ थीविलोअणं, चउद्दसीए दिवा गराति करणं राओ वणिज्जं, पुण्णिमाए दिवा विट्ठीकरणं राओ बवं करणं भवइ, बहुलपक्खस्स पडिवाए दिवा बालवं राओ कोलवं, बितिआए दिवा थीविलोअणं राओ गरादि, ततिआए दिवा वणिज्जं राओ विट्ठी, चउत्थीए दिवा बवं राओ बालवं,

पंचमीए दिवा कोलवं राओ थीविलोअणं, छट्ठीए दिवा गराइं राओ वणिज्जं सत्तमीए दिवा विट्ठी राओ बवं, अट्ठमीए दिवा बालवं राओ कोलवं, णवमीए दिवा थीविलोअणं राओ गराइं, दसमीए दिवा वणिज्जं राओ विट्ठी, एक्कारसीए दिवा बवं राओ बालवं, बारसीए दिवा कोलवं राओ थीविलोअणं, तेरसीए दिवा गराइं राओ वणिज्जं, चउद्दसीए दिवा विट्ठी राओ सउणी, अमावासाए दिवा चउप्पयं राओ णागं, सुक्कपक्खस्स पाडिवए दिवा किंत्थुग्घं करणं भवइ ३ ॥ सूत्रं १५४ ॥ किमाइआ णं भंते ! संवच्छरा किमाइआ अयणा किमाइआ उऊ किमाइआ मासा किमाइआ पक्खा किमाइआ अहोरत्ता किमाइआ मुहुत्ता किमाइआ करणा किमाइआ णक्खत्ता पराणत्ता ?, गोअमा ! चंदाइआ संवच्छरा दक्खिणाइया अयणा पाउसाइआ उऊ सावणाइआ मासा बहुलाइआ पक्खा दिवसाइआ अहोरत्ता रोद्दाइआ मुहुत्ता बालवाइआ करणा अभिजिआइआ णक्खत्ता पराणत्ता समणाउसो ! इति १ । पंचसंवच्छरिए णं भंते ! जुगे केवइआ अयणा केवइआ उऊ एवं मासा पक्खा अहोरत्ता केवइआ मुहुत्ता पराणत्ता ?, गोयमा ! पंचसंवच्छरिए णं जुगे दस अयणा तीसं उऊ सट्ठी मासा एगे वीसुत्तरे पक्खसए अट्ठारसतीसा अहोरत्तसया चउप्पराणं मुहुत्तसहस्सा णव सया पराणत्ता २ ॥ सूत्रं १५५ ॥ जोगा १ देवय २ तारग्ग ३ गोत्त ४ संठाण ५ चंदरविजोगा ६ । कुल ७ पुरिणम अवमंसा य ८ सरिणवाए ९ अ णेता य १० ॥ १ ॥ कति णं भंते ! णक्खत्ता पराणत्ता ?, गोयमा ! अट्ठावीसं णक्खत्ता पराणत्ता, तंजहा–अभिई १ सवणो २ धणिट्ठा ३ सयभिसया ४ पुव्वभद्दवया ५ उत्तरभद्दवया ६ रेवई ७ अस्सिणी ८ भरणी ९ कत्तिआ १० रोहिणी ११ मिअसिर १२ अद्दा १३ पुणव्वसू १४ पूसो १५ अस्सेसा १६ मघा १७ पुव्वफग्गुणि १८ उत्तरफग्गुणि १९ हत्थो २० चित्ता २१ साई २२ विसाहा २३ अणु-

राहा २४ जिट्ठा २५ मूलं २६ पुव्वासाढा २७ उत्तरासाढा २८ ॥ सूत्रं १५६ ॥ एतेसि णं भंते ! अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं कयरे णक्खत्ता जे णं सया चंदस्स दाहिणेणं जोअं जोएंति कयरे णक्खत्ता जे णं सया चंदस्स उत्तरेणं जोअं जोएंति कयरे णक्खत्ता जे णं चंदस्स दाहिणेणवि उत्तरेणवि पमद्दंपि जोगं जोएंति कयरे णक्खत्ता जे णं चंदस्स दाहिणेणंपि पमद्दंपि जोअं जोएंति कयरे णक्खत्ता जे णं सया चंदस्स पमद्दं जोअं जोएंति ?, गोयमा ! एतेसि णं अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं तत्थ जे ते णक्खत्ता जे णं सया चंदस्स दाहिणेणं जोअं जोएंति ते णं छ, तंजहा—संठाण १ अद्द २ पुस्सो ३ ऽसिलेस ४ हत्थो ५ तहेव मूलो अ ६। बाहिरओ बाहिरमंडलस्स छप्पेते णक्खत्ता ॥१॥ १। तत्थ णं जे ते णक्खत्ता जे णं सया चंदस्स उत्तरेणं जोगं जोएंति ते णं बारस, तंजहा—अभिई सवणो धणिट्ठा सयभिसया पुव्वभद्दवया उत्तरभद्दवया रेवइ अस्सिणी भरणी पुव्वाफग्गुणी उत्तराफग्गुणी साई २। तत्थ णं जे ते नक्खत्ता जे णं सया चंदस्स दाहिणओवि उत्तरओवि पमद्दंपि जोगं जोएंति ते णं सत्त, तंजहा—कत्तिआ रोहिणी पुणव्वसू मघा चित्ता विसाहा अणुराहा ३। तत्थ णं जे ते णक्खत्ता जे णं सया चंदस्स दाहिणओवि पमद्दंपि जोगं जोएंति, ताओ णं दुवे आसाढाओ सव्वबाहिरए मंडले जोगं जोअंसु वा ३, ४। तत्थ णं जे से णक्खत्ते जे णं सया चंदस्स पमद्दं जोएइ सा णं एगा जेट्ठा ५ ॥ सूत्रं १५७ ॥ एतेसि णं भंते ! अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं अभिई णक्खत्ते किंदेवयाए पणत्ते ?, गोअमा ! बम्हदेवयाए पणत्ते, सवणे णक्खत्ते विण्हुदेवयाए पणत्ते, धणिट्ठा वसुदेवया पणत्ता १। एए णं कमेणं णेअव्वा अणुपरिवाडी य इमाओ देवयाओ—बम्हा विण्हु वसू वरुणे अय अभिवद्धी पूसे आसे जमे अग्गी पयावई सोमे रुद्दे अदिती बहस्सई सप्पे पिऊ भगे अज्जम सविआ तट्ठा वाउ इंदग्गी मित्तो इंदे

निरई आउ विस्सा य २ । एवं णक्खत्ताणं एआ परिवाडी णेअव्वा जाव उत्तरासाढा किंदेवया पराणत्ता ?, गोअमा ! विस्सदेवया पराणत्ता ३ । ॥ सूत्रं १५८ ॥ एतेसि णं भंते ! अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं अभिईणक्खत्ते कतितारे पराणत्ते ?, गोअमा ! तितारे पराणत्ते, एवं णेअव्वा जस्स जइआओ ताराओ, इमं च तं तारग्गं–तिगतिगपंचगसयदुग दुगवत्तीसगतिगं तह तिगं च । छप्पंचगतिगएक्कगपंचगतिग छक्कगं चेव ॥ १ ॥ सत्तगदुगदुग पंचग एक्केक्कग पंच चउतिगं चेव । एक्कारसग चउक्कं चउक्कगं चेव तारग्गं ॥ २ ॥ इति ॥ सूत्रं १५९ ॥ एतेसि णं भंते ! अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं अभिई णक्खत्ते किंगोत्ते पराणत्ते ?, गोयमा ! मोग्गलायणसगोत्ते, गाधा–मोग्गल्ला-यण १ संखायणे २ अ तह अग्गभाव ३ कसिणल्ले ४ । तत्तो अ जाउ-कराणे ५ धणंजए ६ चेव बोद्धव्वे ॥ १ ॥ पुस्सायणे ७ अ अस्सायणे अ ८ भग्गवेसे ९ अ अग्गिवेसे १० अ । गोअम ११ भारद्दाए १२ लोहिच्चे १३ चेव वासिट्ठे १४ ॥ २ ॥ ओमज्जायण १५ मंडव्वायणे १६ अ पिंगायणे १७ अ गोवल्ले १८ । कासव १९ कोसिय २० दब्भा २१ य चामरच्छाय २२ सुंगा य २३ ॥ ३ ॥ गोवल्लायण २४ तेगिच्छायणे २५ अ कच्चायणे २६ हवइ मूले । ततो अ बज्झिआयण २७ वग्घावच्चे अ गोत्ताइं २८ ॥ ४ ॥ १ । एतेसि णं भंते ! अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं अभिई-णक्खत्ते किंसंठिए पराणत्ते ?, गोअमा ! गोसीसावलिसंठिए पराणत्ते, गाहा–गोसीसावलि १ काहार २ सउणि ३ पुप्फोवयार ४ वावी य ५–६ । णावा ७ आसक्खंधग ८ भग ९ छुरघरए १० अ सगडुद्धी ११ ॥ १ ॥ मिगसीसावलि १२ रुहिरबिंदु १३ तुल्ल १४ वद्धमाणग १५ पडागा १६ । पागारे १७ पलिअंके १८–१९ हत्थे २० मुहफुल्लए २१ चेव ॥ २ ॥ खीलग २२ दामणि २३ एगावली २४ अ गयदंत २५ विच्छुअअले य २६ । गयविक्कमे २७ अ तत्तो सीहनिसीही अ २८ संठाणा ॥ ३ ॥ २

॥ सूत्रं १६० ॥ एतेसि णं भंते ! अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं अभिईणक्खत्ते कतिमुहुत्ते चंदेण सद्धिं जोगं जोएइ ?, गोअमा ! णव मुहुत्ते सत्तावीसं च सत्तट्ठिभाए मुहुत्तस्स चंदेण सद्धिं जोगं जोएइ १। एवं इमाहिं गाहाहिं अणुगंतव्वं—अभिइस्स चंदजोगो सत्तट्ठिखंडिओ अहोरत्तो। ते हुंति णव मुहुत्ता सत्तावीसं कलाओ अ ॥ १ ॥ सयभिसया भरणीओ अद्दा अस्सेस साइ जेट्ठा य। एते छणक्खत्ता पराणरसमुहुत्तसंजोगा ॥ २ ॥ तिरणेव उत्तराइं पुणव्वसू रोहिणी विसाहा य। एए छणक्खत्ता पणयालमुहुत्तसंजोगा ॥ ३ ॥ अवसेसा णक्खत्ता पराणरसवि हुंति तीसइमुहुत्ता। चंदंमि एस जोगो णक्खत्ताणं मुणेअव्वो ॥ ४ ॥ २। एतेसि णं भंते ! अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं अभिईणक्खत्ते कति अहोरते सूरेण सद्धिं जोगं जोएइ ?, गोअमा ! चत्तारि अहोरत्ते छच्च मुहुत्ते सूरेण सद्धिं जोगं जोएइ, एवं इमाहिं गाहाहिं णेअव्वं—अभिई छच्च मुहुत्ते चत्तारि अ केवले अहोरत्ते। सूरेण समं गच्छइ एत्तो सेसाण वोच्छामि ॥ १ ॥ सयभिसया भरणीओ अद्दा अस्सेस साइ जेट्ठा य। वच्चंति मुहुत्ते इकवीस छच्चेवऽहोरत्ते ॥ २ ॥ तिरणेव उत्तराइं पुणव्वसू रोहिणी विसाहा य। वच्चंति मुहुत्ते तिरिण चेव वीसं अहोरत्ते ॥ ३ ॥ अवसेसा णक्खत्ता पराणरसवि सूरसहगया जंति। बारस चेव मुहुत्ते तेरस य समे अहोरत्ते ॥ ४ ॥ ३ ॥ सूत्रं १६१ ॥ कति णं भंते ! कुला कति उवकुला कति कुलोवकुला पराणत्ता ?, गोयमा ! बारस कुला बारस उवकुला चत्तारि कुलोवकुला पराणत्ता, बारस कुला, तंजहा—धणिट्ठाकुलं १ उत्तरभद्दवयाकुलं २ अस्सिणीकुलं ३ कत्तियाकुलं ४ मिगसिरकुलं ५ पुस्सो कुलं ६ मघाकुलं ७ उत्तरफग्गुणीकुलं ८ चित्ताकुलं ९ विसाहाकुलं १० मूलो कुलं ११ उत्तरासाढाकुलं १२, १। मासाणं परिणामा होंति कुला उवकुला उ हेट्ठिमगा। होंति पुण कुलोवकुला अभीभिसय अद्द अणुराहा ॥ १ ॥ बारस उवकुला तंजहा—सवणो उवकुलं

१ पुव्वभद्दवया उवकुलं रेवई उवकुलं भरणीउवकुलं रोहिणीउवकुलं पुणव्वसू उवकुलं अस्सेसा उवकुलं पुव्वफग्गुणी उवकुलं हत्थो उवकुलं साई उवकुलं जेट्ठा उवकुलं पुव्वासाढा उवकुलं २। चत्तारि कुलोवकुला, तंजहा–अभिई कुलोवकुला सयभिसया कुलोवकुला अद्दा कुलोवकुला अणुराहा कुलोवकुला ३। कति णं भंते ! पुण्णिमाओ कति अमावासाओ पण्णत्ताओ ?, गोअमा ! बारस पुण्णिमाओ बारस अमावासाओ पण्णत्ताओ, तंजहा–साविट्ठी पोट्ठवई आसोई कत्तिगी मग्गसिरी पोसी माही फग्गुणी चेत्ती वइसाही जेट्ठामूली आसाढी ४। साविट्ठिण्णं भंते ! पुण्णिमासिं कति णक्खत्ता जोगं जोएंति ?, गोयमा ! तिण्णि णक्खत्ता जोगं जोएंति, तंजहा–अभिई सवणो धणिट्ठा ३, ५। पोट्ठवईण्णं भंते ! पुण्णिमं कइ णक्खत्ता जोगं जोएंति ?, गोअमा ! तिण्णि णक्खत्ता जोएंति, तंजहा–सयभिसया पुव्वभद्दवया उत्तरभद्दवया ६। अस्सोइण्णं भंते ! पुण्णिमं कति णक्खत्ता जोगं जोएंति ?, गोअमा ! दो जोएंति, तंजहा–रेवई अस्सिणी अ, कत्तिइण्णं दो–भरणी कत्तिआ य, मग्गसिरिण्णं दो–रोहिणी मग्गसिरं च, पोसिं तिण्णि–अद्दा पुणव्वसू पुस्सो, माघिण्णं दो–अस्सेसा मघा य, फग्गुणिं णं दो–पुव्वाफग्गुणी य, उत्तराफग्गुणी य, चेत्तिण्णं दो–हत्थो चित्ता य, विसाहिण्णं दो–साई विसाहा य, जेट्ठामूलिण्णं तिण्णि–अणुराहा जेट्ठा मूलो, आसाढिण्णं दो–पुव्वासाढा उत्तरासाढा ७। साविट्ठिण्णं भंते ! पुण्णिमं किं कुलं जोएइ उवकुलं जोएइ कुलोवकुलं जोएइ ?, गोयमा ! कुलं वा जोएइ उवकुलं वा जोएइ कुलोवकुलं वा जोएइ, कुलं जोएमाणे धणिट्ठा णक्खत्ते जोएइ उवकुलं जोएमाणे सवणे णक्खत्ते जोएइ कुलोवकुलं जोएमाणे अभिई णक्खत्ते जोएइ, साविट्ठीण्णं पुण्णिमासिं णं कुलं वा जोएइ जाव कुलोवकुलं वा जोएइ, कुलेण वा जुत्ता उवकुलेण वा जुत्ता कुलोवकुलेण वा जुत्ता साविट्ठी पुण्णिमा जुत्तत्ति वत्तव्वं सिआ ८।

पोट्ठवदिएणं भंते ! पुरिणमं किं कुलं जोएइ ३ पुच्छा, गोयमा ! कुलं वा उवकुलं वा कुलोवकुलं वा जोएइ, कुलं जोएमाणे उत्तरभद्दवया णक्खत्ते जोएइ उवकुलं जोएमाणे पुव्वभद्दवया णक्खत्ते जोएइ, कुलोवकुलं जोएमाणे सयभिसया णक्खत्ते जोएइ, पोट्ठवइएणं पुरिणमं कुलं वा जोएइ जाव कुलोवकुलं वा जोएइ कुलेण वा जुत्ता जाव कुलोवकुलेण वा जुत्ता पोट्ठवई पुराणमासी जुत्तत्तिवत्तव्वं सिया ९। अस्सोइएणं भंते ! पुच्छा, गोयमा ! कुलं वा जोएइ उवकुलं वा जोएइ णो लब्भइ कुलोवकुलं, कुलं जोएमाणे अस्सिणीणक्खत्ते जोएइ उवकुलं जोएमाणे रेवइणक्खत्ते जोएइ, अस्सोइएणं पुरिणमं कुलं वा जोएइ उवकुलं वा जोएइ कुलेण वा जुत्ता उवकुलेण वा जुत्ता अस्सोई पुरिणमा जुत्तत्तिवत्तव्वं सिआ १०। कत्तिइएणं भंते ! पुरिणमं किं कुलं ३ पुच्छा, गोयमा ! कुलं वा जोएइ उवकुलं वा जोएइ णो कुलोवकुलं जोएइ, कुलं जोएमाणे कत्तिआणक्खत्ते जोएइ उवकुलं जोएमाणे भरणी कत्तिइएणं जाव वत्तव्वं ११। मग्गसिरिएणं भंते ! पुरिणमं किं कुलं तं चेव दो जोएइ णो भवइ कुलोवकुलं, कुलं जोएमाणे मग्गसिरणक्खत्ते जोएइ उवकुलं जोएमाणे रोहिणी मग्गसिरएणं पुरिणमं जाव वत्तव्वं सिआ १२। एवं सेसिआओऽवि जाव आसाढिं, पोसिं जेट्ठामूलिं च कुलं वा उवकुलं वा कुलोवकुलं वा, सेसिआणं कुलं वा उवकुलं वा कुलोवकुलं ण भएणइ १३। साविट्ठिएणं भंते ! अमावासं कति णक्खत्ता जोएंति ?, गोयमा ! दो णक्खत्ता जोएंति, तंजहा—अस्सेसा य महा य १४। पोट्ठवइएणं भंते ! अमावासं कति णक्खत्ता जोएंति ?, गोअमा ! दो पुव्वाफग्गुणी उत्तराफग्गुणी अ १५। अस्सोइएणं भंते ! दो, हत्थे चित्ता य, कत्तिइएणं दो—साई विसाहा य, मग्गसिरिएणं तिरिण—अणुराहा जेट्ठा मूलो अ, पोसिरिंण दो—पुव्वासाढा उत्तरासाढा, माहिएणं तिरिण—अभिई सवणो धणिट्ठा, फग्गुणिं तिरिण—सयभिसया पुव्वभद्दवया उत्तरभद्दवया, चेत्तिएणं दो—रेवई

अस्सिणी अ, वइसाहिणं दो—भरणी कत्तिआ य, जेट्ठामूलिणं दो—रोहिणी मग्गसिर च, आसाढिणं तिरिण—अद्दा पुणव्वसू पुस्सो १६। साविट्ठिणं भंते! अमावासं किं कुलं जोएइ उवकुलं जोएइ कुलोवकुलं जोएइ ?, गोयमा ! कुलं वा जोइए उवकुलं वा जोएइ णो लब्भइ कुलोवकुलं, कुलं जोएमाणे महाणक्खत्ते जोएइ, उवकुलं जोएमाणे अस्सेसाणक्खत्ते जोएइ, साविट्ठिणं अमावासं कुलं वा जोएइ उवकुलं वा जोएइ, कुलेण वा जुत्ता उवकुलेण वा जुत्ता साविट्ठिअमावासा जुत्तत्तिवत्तव्वं सिआ १७। पोट्ठवईणं भंते ! अमावासं तं चेव दो जोएइ कुलं वा जोएइ उवकुलं वा जोएइ, कुलं जोएमाणे उत्तराफग्गुणीणक्खत्ते जोएइ उवकुलं जोएमाणे पुव्वाफग्गुणी, पोट्ठवइणं अमावासं जाव वत्तव्वं सिआ, मग्गसिरिणं तं चेव कुलं मूले णक्खत्ते जोएइ उवकुलं जोएमाणे जेट्ठा कुलोवकुलं जोएमाणे अणुराहा जाव जुत्तत्तिवत्तव्वं सिआ, एवं माहीए फग्गुणीए आसाढीए कुलं वा उवकुलं वा कुलोवकुलं वा, अवसेसिआणं कुलं वा उवकुलं वा जोएइ १८। जया णं भंते ! साविट्ठी पुरिणमा भवइ तया णं माही अमावासा भवइ ?, जया णं भंते ! माहीपुरिणमा भवइ तया णं साविट्ठी अमावासा भवइ ?, हंता ! गोयमा ! जया णं साविट्ठी तं चेव वत्तव्वं १९। जया णं भंते ! पोट्ठवई पुरिणमा भवइ तया णं फग्गुणी अमावासा भवइ जया णं फग्गुणी पुरिणमा भवइ तया णं पोट्ठवई अमावासा भवइ ?, हंता ! गोअमा ! तं चेव, एवं एतेणं अभिलावेणं इमाओ पुरिणमाओ इमाओ अमावासाओ णेअव्वाओ—अस्सिणी पुरिणमा चेत्ती अमावासा, कत्तिगी पुरिणमा वइसाही अमावासा, मग्गसिरी पुरिणमा जेट्ठामूली अमावासा, पोसी पुरिणमा आसाढी अमावासा २०॥ सूत्रं १६२ ॥ वासाणं पढमं मासं कति णक्खत्ता णेंति ?, गोयमा ! चत्तारि णक्खत्ता णेंति, तंजहा—उत्तरासाढा अभिई सवणो धणिट्ठा, उत्तरासाढा चउद्दस अहोरत्ते

ऐोइ, अभिई सत्त अहोरत्ते ऐोइ, सवणो अट्ठऽहोरत्ते ऐोइ, धणिट्ठा एगं अहो-
रत्तं ऐोइ, तंसि च णं मासंसि चउरंगुलपोरसीए छायाए सूरिए अणुपरि-
अट्टइ, तस्स णं मासस्स चरिमदिवसे दो पदा चत्तारि अ अंगुला पोरिसी
भवइ १। वासाणं भंते! दोच्चं मासं कइ णक्खत्ता णेंति?, गोयमा!
चत्तारि–धनिट्ठा सयभिसया पुव्वभद्दवया उत्तराभद्दवया, धणिट्ठा णं चउद्दस
अहोरत्ते ऐोइ सयभिसया सत्त अहोरत्ते ऐोइ पुव्वाभद्दवया अट्ठ अहोरत्ते ऐोइ
उत्तराभद्दवया एगं, तंसि च णं मासंसि अट्ठंगुलपोरिसीए छायाए सूरिए
अणुपरियट्टइ, तस्स मासस्स चरिमे दिवसे दो पया अट्ठ य अंगुला पोरिसी
भवइ २। वासाणं भंते! तइअं मासं कइ णक्खत्ता णेंति?, गोयमा!
तिरिण णक्खत्ता णेंति, तंजहा–उत्तरभद्दवया रेवई अस्सिणी, उत्तरभद्द-
वया चउद्दस राइंदिए ऐोइ रेवई पराणरस अस्सिणी एगं, तंसि च णं
मासंसि दुवालसंगुलपोरिसीए छायाए सूरिए अणुपरिअट्टइ, तस्स णं
मासस्स चरिमे दिवसे लेहट्ठाइं तिरिण पयाइं पोरिसी भवइ ३। वासाणं
भंते! चउत्थं मासं कति णक्खत्ता णेंति?, गोयमा! तिरिण–अस्सिणी
भरणी कत्तिआ, अस्सिणी चउद्दस भरणी पन्नरस कत्तिआ एगं, तंसि च णं
मासंसि सोलसंगुलपोरिसीए छायाए सूरिए अणुपरिअट्टइ, तस्स णं मासस्स
चरमे दिवसे तिरिण पयाइं चत्तारि अंगुलाइं पोरिसी भवइ ४। हेमंताणं
भंते! पढमं मासं कति णक्खत्ता णेंति?, गोयमा! तिरिण–कत्तिआ
रोहिणी मिगसिरं, कत्तिआ चउद्दस रोहिणी पराणरस मिगसिरं एगं अहो-
रत्तं ऐोइ, तंसि च णं मासंसि वीसंगुलपोरिसीए छायाए सूरिए अणुपरि-
अट्टइ, तस्स णं मासस्स जे से चरिमे दिवसे तंसि च णं दिवसंसि तिरिण
पयाइं अट्ठ य अंगुलाइं पोरिसी भवइ ५। हेमंताणं भंते! दोच्चं मासं
कति णक्खत्ता णेंति?, गोअमा! चत्तारि णक्खत्ता णेंति, तंजहा–मिअसिरं
अद्दा पुणव्वसू पुस्सो, मिअसिरं चउद्दस राइंदिआइं ऐोइ अद्दा अट्ठ ऐोइ

पुणव्वसू सत्त राइंदिआइं पुस्सो एगं राइंदिअं णेइ, तया णं चउव्वीसंगुलपोरिसीए छायाए सूरिए अणुपरिअट्टइ, तस्स णं मासस्स जे से चरिमे दिवसे तंसि च णं दिवसंसि लेहट्टाइं चत्तारि पयाइं पोरिसी भवइ ६। हेमंताणं भंते! तच्चं मासं कति णक्खत्ता णेंति?, गोअमा! तिण्णि–पुस्सो असिलेसा महा, पुस्सो चोद्दस राइंदिआइं णेइ असिलेसा पण्णरस महा एक्कं, तया णं वीसंगुलपोरिसीए छायाए सूरिए अणुपरिअट्टइ, तस्स णं मासस्स जे से चरिमे दिवसे तंसि च णं दिवसंसि तिण्णि पयाइं अट्ठंगुलाइं पोरिसी भवइ ७। हेमंताणं भंते! चउत्थं मासं कति णक्खत्ता णेंति?, गोअमा! तिण्णि णक्खत्ता णेंति, तंजहा–महा पुव्वाफग्गुणी उत्तरफग्गुणी, महा चउद्दस राइंदिआइं णेइ, पुव्वाफग्गुणी पण्णरस राइंदिआइं णेइ, उत्तराफग्गुणी एगं राइंदिअं णेइ, तया णं सोलसंगुलपोरिसीए छायाए सूरिए अणुपरिअट्टइ, तस्स णं मासस्स जे से चरिमे दिवसे तंसि च णं दिवसंसि तिण्णि पयाइं चत्तारि अंगुलाइं पोरिसी भवइ ८। गिम्हाणं भंते! पढमं मासं कति णक्खत्ता णेंति?, गोअमा! तिण्णि णक्खत्ता णेंति–उत्तराफग्गुणी हत्थो चित्ता, उत्तराफग्गुणी चउद्दस राइंदिआइं णेइ, हत्थो पण्णरस राइंदिआइं णेइ, चित्ता एगं राइंदिअं णेइ, तया णं दुवालसंगुलपोरिसीए छायाए सूरिए अणुपरिअट्टइ, तस्स णं मासस्स जे से चरिमे दिवसे तंसि च णं दिवसंसि लेहट्टाइं तिण्णि पयाइं पोरिसी भवइ ९। गिम्हाणं भंते! दोच्चं मासं कति णक्खत्ता णेंति?, गोअमा! तिण्णि णक्खत्ता णेंति, तंजहा–चित्ता साई विसाहा, चित्ता चउद्दस राइंदिआइं णेइ, साई पण्णरस राइंदिआइं णेइ, विसाहा एगं राइंदिअं णेइ, तया णं अट्ठंगुलपोरिसीए छायाए सूरिए अणुपरिअट्टइ, तस्स णं मासस्स जे से चरिमे दिवसे तंसि च णं दिवसंसि दो पयाइं अट्ठंगुलाइं पोरिसी भवइ १०। गिम्हाणं भंते! तच्चं मासं कति णक्खत्ता णेंति?, गोयमा! चत्तारि णक्खत्ता णेंति,

तंजहा–विसाहाऽणुराहा जेट्ठा मूलो, विसाहा चउद्दस राइंदिश्राइं णेइ श्रणुराहा श्रट्ठ राइंदिश्राइं णेइ जेट्ठा सत्त राइंदिश्राइं णेइ मूलो एक्कं राइंदिश्रं, तया णं चउरंगुलपोरिसीए छायाए सूरिए श्रणुपरिश्रट्टइ, तस्स णं मासस्स जे से चरिमे दिवसे तंसि च णं दिवसंसि दो पयाइं चत्तारि श्र श्रंगुलाइं पोरिसी भवइ ११। गिम्हाणं भंते ! चउत्थं मासं कति णक्खत्ता णेंति ?, गोश्रमा ! तिरिण णक्खत्ता णेंति, तंजहा–मूलो पुव्वासाढा उत्तरासाढा, मूलो चउद्दस राइंदिश्राइं णेइ पुव्वासाढा परणरस राइंदिश्राइं णेइ उत्तरासाढा एगं राइंदिश्रं णेइ, तया णं वट्टाए समचउरंससंठाणसंठिश्राए णग्गोहपरिमरडलाए सकायमणुरंगिश्राए छायाए सूरिए श्रणुपरिश्रट्टइ, तस्स णं मासस्स जे से चरिमे दिवसे तंसि च णं दिवसंसि लेहट्ठाइं दो पयाइं पोरिसी भवइ १२। एतेसि णं पुव्ववरिणश्राणं पयाणं इमा संगहणी, तंजहा–जोगो देवय-तारग्ग-गोत्तसंठाण चंदरविजोगो। कुलपुरिणमश्रवमंसा णेश्रा छाया य बोद्धव्वा ॥ १ ॥ १३ ॥ सूत्रं १६३॥ हिट्ठिं ससिपरिवारो मंदरऽबाधा तहेव लोगंते। धरणितलाश्रो श्रबाधा श्रंतो बाहिं च उद्धमुहे ॥ १ ॥ संठाणं च पमाणं वहंति सीहगई इद्धिमंता य। तारंतरऽग्गमहिसी तुडिश्र पहु ठिई श्र श्रप्पबहू ॥ २ ॥ श्रत्थि णं भंते ! चंदिमसूरिश्राणं हिट्ठिंपि ताराख्वा श्रणुंपि तुल्लावि समेवि ताराख्वा श्रणुंपि तुल्लावि उप्पिंपि ताराख्वा श्रणुंपि तुल्लावि ?, हंता ! गोयमा ! तं चेव उच्चारेश्रव्वं १। से केणट्ठे णं भंते ! एवं वुच्चइ–श्रत्थि णं भंते ! जहा जहा णं तेसिं देवाणं तवनियमबंभचेराणि ऊसिश्राइं भवसि तहा तहा णं तेसि णं देवाणं एवं परणायए, तंजहा–श्रणुत्ते वा तुल्लते वा, जहा जहा णं तेसिं देवाणं तवनियमबंभचेराणि णो ऊसिश्राइ भवंति तहा तहा णं तेसिं देवाणं एवं णो परणायए, तंजहा–श्रणुत्ते वा तुल्लत्ते वा २ ॥ सूत्रं १६४॥ एगमेगस्स णं भंते ! चंदस्स केवइश्रा महग्गहा परिवारो केवइश्रा णक्खत्ता परिवारो केवइश्रा

तारागणकोडाकोडीओ पराणत्ताओ ?, गोयमा ! अट्ठासीइ महग्गहा परिवारो अट्ठावीसं णक्खत्ता परिवारो छावट्ठिसहस्साइं णव सया पराणत्तरा तारागण-कोडाकोडीओ पराणत्ता ॥ सूत्र १६५ ॥ मंदरस्स णं भंते ! पव्वयस्स केवइआए अबाहाए जोइसं चारं चरइ ?, गोअमा ! इक्कारसहिं इक्कवीसेहिं जोअणसएहिं अबाहाए जोइसं चारं चरइ १ । लोगंताओ णं भंते ! केवइआए अबाहाए जोइसे पराणत्ते ?, गोयमा ! एक्कारस एक्कारसेहिं जोअण-सएहिं अबाहाए जोइसे पराणत्ते २ । धरणितलाओ णं भंते ! सत्तहिं णउएहिं जोअणसएहिं जोइसे चारं चरइ, एवं सूरविमाणे अट्ठहिं सएहिं, चंदविमाणे अट्ठहिं असीएहिं, उवरिल्ले तारारूवे नवहिं जोअणसएहिं चारं चरइ ३ । जोइसस्स णं भंते ! हेट्ठिल्लाणो तलाओ केवइआए अबाहाए सूरविमाणे चारं चरइ ?, गोअमा ! दसहिं जोअणेहिं अबाहाए चारं चरइ एवं चंद-विमाणे णउईए जोअणेहिं चारं चरइ, उवरिल्ले तारारूवे दसुत्तरे जोअणसए चारं चरइ, सूरविमाणाओ चंदविमाणे असीईए जोअणेहिं चारं चरइ, सूरविमाणाओ जोअणसए उवरिल्ले तारारूवे चारं चरइ, चंदविमाणाओ वीसाए जोअणेहिं उवरिल्ले णं तारारूवे चारं चरइ ४ ॥ सूत्रं १६६ ॥ जंबु-द्दीवे णं भंते ! दीवे अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं कयरे णक्खत्ते सव्वब्भंतरिल्लं चारं चरइ ?, कयरे णक्खत्ते सव्वबाहिरं चारं चरइ ?, कयरे सव्वहिट्ठिल्लं चारं चरइ ? कयरे सव्वउवरिल्लं चारं चरइ ?, गोयमा ! अभिई णक्खत्ते सव्व-ब्भंतरं चारं चरइ, मूलो सव्वबाहिरं चारं चरइ, भरणी सव्वहिट्ठिल्लगं साई सव्वुवरिल्लगं चारं चरइ १ । चंदविमाणे णं भंते ! किंसंठिए पराणत्ते ?, गोयमा ! अद्धकविट्ठसंठाणसंठिए सव्वफालिआमए अब्भुग्गयमुसिए एवं सव्वाइं णेअव्वाइं २ । चंदविमाणे णं भंते ! केवइयं आयामविक्खंभेणं केवइयं बाहल्लेणं ?, गोयमा ! छप्पराणे खलु भाए विच्छिराणं चंदमंडलं होइ । अट्ठावीसं भाए बाहल्लं तस्स बोद्धव्वं ॥ १ ॥ अडयालीसं भाए

विच्छिराणं सूरमंडलं होइ । चउवीसं खलु भाए बाहल्लं तस्स बोद्धव्वं ॥ २ ॥ दो कोसे अ गहाणं णक्खत्ताणं तु हवइ तस्सद्धं । तस्सद्धं ताराणं तस्सद्धं चेव बाहल्लं ॥ ३ ॥ ३ ॥ सूत्रं १६७ ॥ चंदविमाणेणं भंते ! कति देवसाहस्सीओ परिवहंति ?, गोअमा ! सोलस–देवसाहस्सीओ परिवहंतित्ति १ । चंदविमाणस्स णं पुरत्थिमेणं सेआणं सुभगाणं सुप्पभाणं संखतल-विमल-निम्मल-दधिघण-गोखीर-फेण-रययणिगरप्पगासाणं थिर-लट्ठ-पउट्ठ-वट्ट-पीवर-सुसिलिट्ठ-विसिट्ठ-तिक्खदाढा-विडंबिअमुहाणं रत्तुप्पल-पत्त-मउय-सूमाल-तालुजीहाणं महु-गुलिअ-पिंगलक्खाणं पीवर-वरोरु-पडिपुणणविउलखंधाणं मिउविसय-सुहुम-लक्खण-पसत्थ–वरवण्ण-केसर–सडोव-सोहिआण ऊसिअ-सुनमिय--सुजाय–अप्फोडिअलंगूलाणं वइरामयणक्खाणं वइरामयदाढाणं वइरामयदंताणं तवणिज्जजीहाणं तवणिज्जतालुआणं तवणिज्ज-जुत्त-जोत्तगसुजोइआणं कामगमाणं पीइगमाणं मणोगमाणं मणोरमाणं अमिअगईणं अमिअ-बल-वीरिअ-पुरिसकारपरक्कमाणं महया अप्फोडिअ-सीहणाय-बोल-कलकलरवेणं महुरेणं मणहरेणं पूरेंता अंबरं दिसाओ अ सोभयंता चत्तारि देवसाहस्सीओ सीहरूवधारीणं पुरत्थिमिल्लं बाहं वहंति १ । चंदविमाणस्स णं दाहिणेणं सेआणं सुभगाणं सुप्पभाणं संखतल-विमल-निम्मल-दधिघण-गोखीर-फेण-रययणिगरप्पगासाणं वइरामय-कुंभ-जुअल सुट्ठिअ-पीवर-वरवइर-सोंड-वट्टिअ-दित्त-सुरत्तपउमप्पगासाणं अब्भुणणयमुहाणं तवणिज्ज-विसाल-कण्ण-चंचल-चलंतविमलुज्जलाणं महुवण्ण-भिसंतणिद्ध-पत्तल-निम्मल-तिवण्ण-मणिरयणलोअणाणं अब्भुग्गय-मउल-मल्लिआधवल-सरिस-संठिअ-णिव्वण-दढ-कसिण-फालिआमय--सुजाय--दंत-मुसलोवसोभिआणं कंचणकोसी-पविट्ठ-दंतग्गविमल-मणिरयण--रुइल--पेरंत--चित्तरूवगविराइआणं तवणिज्ज-विसाल-तिलगप्पमुहपरिमण्डिआणं नानामणिरयण-मुद्ध-गेविज्ज–बद्ध–गलयवरभूसणाणं वेरुलिअ–विचित्त- -दण्डनिम्मल--वइ-

रामय–तिक्ख–लट्ठ-अंकुस–कुंभ-जुअलयंतरोडिआणं तवणिज्ज-सुबद्ध-कच्छ-दप्पिअबलुद्धराणं विमल-घण-मण्डल-वइरामय-लालाललियतालणं णाणा-मणिरयण-घण्ट-पासगरजतामय-बद्धरज्जुलंबिअ--घंटाजुअल-महुरसरमणहराणं अल्लीण-पमाणजुत्त-वट्टिअ–सुजाय–लक्खण–पसत्थ–रमणिज्ज–वालगत्तपरि-पुंछणाणं उवचिअ-पडिपुण्ण--कुम्म-चलण-लहुविक्कमाणं अंकामयणक्खाणं तवणिज्जजीहाणं तवणिज्जतालुआणं तवणिज्जजोत्तगसुजोइआणं काम-गमाणं पीइगमाणं मणोगमाणं मणोरमाणं अमिअगईणं अमिअबलवीरिअ-पुरिसक्कारपरक्कमाणं महया-गंभीर-गुल्लुगुलाइतरवेणं महुरेणं मणहरेणं पूरेंता अंबरं दिसाओ अ सोभयंता चत्तारि देवसाहस्सीओ गयरूवधारीणं देवाणं दक्खिणिल्लं बाहं परिवहंति २। चंदविमाणस्स णं पच्चत्थिमेणं सेआणं सुभगाणं सुप्पभाणं चल-चवल-ककुहसालीणं घण-निचिअ-सुबद्ध-लक्खणु-ण्णय–ईसिआणय–वसभोट्ठाणं चंकमिअ-ललिअ-पुलिअ-चलचवल-गव्विअ-गईणं सन्नतपासाणं संगतपासाणं सुजायपासाणं पीवरवट्टिअसुसंठिअ-कडीणं ओलंबपलंब-लक्खणपमाणजुत्त-रमणिज्जवालगण्डाणं समखुरवालि-धाणाणं समलिहिअसिंग-तिक्खग्गसंगयाणं तणुसुहुमसुजायणिद्धलोमच्छवि-धराणं उवचिअ–मंसल–विसाल--पडिपुण्ण–खंधपएससुंदराणं वेरुलिअ-भिसंत–कडक्ख-सुनिरिक्खणाणं जुत्तपमाण-पहाण-लक्खण-पसत्थ-रमणिज्ज-गग्गर-गल्लसोभिआणं घरघरग-सुसद्द-बद्ध-कंठ-परिमण्डिआणं णाणामणि-कणग-रयण-घण्टिआ--वेगच्छिग-सुकयमालिआणं वरघण्टा-गलय-मालुज्जल-सिरिधराणं पउमुप्पल-सगल-सुरभि-मालाविभूसिआणं वइरखुराणं विविह-विक्खुराणं फालिआमयदंताणं तवणिज्जजीहाणं तवणिज्जतालुआणं तवणिज्ज-जोत्तगसुजोइआणं कामगमाणं पीइगमाणं मणोगमाणं मणोरमाणं अमिअ-गईणं अमिअ--बलवीरिअ--पुरिसक्कारपरक्कमाणं महया-गज्जिअ-गंभीररवेणं महुरेणं मणहरेणं पूरेंता अंबरं दिसाओ अ सोभयंता चत्तारि देवसाहस्सीओ

वसहरूवधारीणं देवाणं पच्चत्थिमिल्लं बाहं परिवहंति ३। चंदविमाणस्स णं उत्तरेणं सेआणं सुभगाणं सुप्पभाणं तरमल्लिहायणाणं हरिमेल-मउल-मल्लिअच्छाणं चंचुच्चिअ-ललिअ-पुलिअ-चलचवलचंचलगईणं लंघण-वग्गण-धावण-धोरण-तिवइ-जइणसिक्खिअगईणं ललंत--लाम-गललाय-वरभूसणाणं सन्नयपासाणं संगयपासाणं सुजायपासाणं पीवरवट्टिअ-सुसंठिअकडीणं ओलंब-पलंब-लक्खण-पमाण-जुत्त--रमणिज्जवालपुच्छाणं तणुसुहुम--सुजाय--णिद्ध-लोमच्छविहराणं मिउविसय--सुहुम--लक्खण--पसत्थ-विच्छिण्ण-केसरवालि-हराणं ललंत-थासग-ललाड-वरभूसणाणं मुहमण्डग-ओचूलग-चामर-थासग-परिमण्डिअकडीणं तवणिज्जखुराणं तवणिज्जजीहाणं तवणिज्जतालुआणं तवणिज्ज-जोत्तग-सुजोइआणं कामगमाणं जाव मणोरमाणं अमिअगईणं अमिअ-बलवीरिअ-पुरिसकारपरक्कमाणं महयाहय-हेसिअ-किलकिलाइअरवेणं मणहरेणं पूरेंता अंबरं दिसाओ अ सोभयंता चत्तारि देवसाहस्सीओ हय-रूवधारीणं देवाणं उत्तरिल्लं बाहं परिवहंति ४। गाहा—सोलसदेवसहस्सा हवंति चंदेसु चेव सूरेसु। अट्ठेव सहस्साइं एक्केक्कंमी गहविमाणे ॥ १ ॥ चत्तारि सहस्साइं णक्खत्तंमि अ हवंति इक्किक्के। दो चेव सहस्साइं तारारूवेक्कमेक्कंमि ॥ २ ॥ एवं सूरविमाणाणं जाव तारारूवविमाणाणं, णवरं एस देवसंघाएति ५ ॥ १६८ ॥ एतेसि णं भंते ! चंदिम—सूरिअ—गहगण—नक्खत्त—तारारूवाणं कयरे सव्व-सिग्घगई कयरे सव्वसिग्घगतितराए चेव ?, गोअमा ! चंदेहिंतो सूरा सव्वसिग्घगई सूरेहिंतो गहा सिग्घगई गहेहिंतो णक्खत्ता सिग्घगई णक्खत्तेहिंतो तारारूवा सिग्घगई, सव्वप्पगई चंदा सव्वसिग्घगई तारारूवा ॥ सूत्रं १६६ ॥ एतेसि णं भंते ! चंदिम-सूरिअ-गह-णक्खत्त-तारारूवाणं कयरे सव्वमहिड्ढिआ कयरे सव्वप्पिड्ढिआ ? गोयमा ! तारारूवेहिंतो णक्खत्ता महिड्ढिआ णक्खत्तेहिंतो गहा महिड्ढिआ गहेहिंतो सूरिआ

महिड्ढिआ सूरेहिंतो चंदा महिड्ढिया सव्वप्पिड्ढिआ ताराख्वा सव्वमहिड्ढिआ चन्दा ॥ सूत्रं १७० ॥ जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे ताराए अ ताराए अ केवइए अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ?, गोअमा ! दुविहे अंतरे पण्णत्ते, तंजहा–वाघाइए अ निव्वाघाइए अ, निव्वाघाइए जहण्णेणं पंचधणुसयाइं उक्कोसेणं दो गाऊआइं, वाघाइए जहण्णेणं दोण्णि छावट्ठे जोअणसए उक्कोसेणं बारस जोअणसहस्साइं दोण्णि अ बायाले जोअणसए ताराख्वस्स २ अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ॥ सूत्रं १७१ ॥ चंदस्स णं भंते ! जोइसिंदस्स जोइसरण्णो कइ अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ ?, गोअमा ! चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तंजहा–चन्दप्पभा दोसिणाभा अच्चिमाली पभंकरा, तओ णं एगमेगाए देवी चत्तारि २ देवीसहस्साइं परिवारो पण्णत्तो, पभू णं ताओ एगमेगा देवी अन्नं देवीसहस्सं विउव्वित्तए, एवामेव सपुव्वावरेणं सोलस देवीसहस्सा, सेत्तं तुडिए १ । पहू णं भंते ! चंदे जोइसिंदे जोइसराया चंदवडेंसए विमाणे चंदाए रायहाणीए सभाए सुहम्माए तुडिएणं सद्धिं महयाहय-णट्टगीअवाइअ जाव दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरित्तए ?, गोअमा ! णो इणट्ठे समट्ठे २ । से केणट्ठेणं जाव विहरित्तए ?, गोयमा ! चंदस्स णं जोइसिंदस्स जोइसरण्णो चंदवडेंसए विमाणे चंदाए रायहाणीए सभाए सुहम्माए माणवए चेइअखंभे वइरामएसु गोलवट्टसमुग्गएसु बहूईओ जिणसकहाओ सन्निखित्ताओ चिट्ठंति ताओ णं चंदस्स अण्णेसि च बहूणं देवाण य देवीण य अच्चणिज्जाओ जाव पज्जुवासणिज्जाओ, से तेणट्ठेणं गोयमा ! णो पभू ३ । पभू णं चंदे सभाए सुहम्माए चउहिं सामाणिअसाहस्सीहिं एवं जाव दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरित्तए केवलं परिआरिद्धीए, णो चेव णं मेहुणवत्तिअं, विजया १ वेजयंति २ जयंती ३ अपराजिआ ४ सव्वेसिं गहाईणं एआओ अग्गमहिसीओ, छावत्तररसवी गहसयस्स एआओ

अग्गमहिसीओ वत्तव्वाओ ४ । इमाहि गाहाहिं—इंगालए १ विआलए २ लोहिअंके ३ सणिच्छरे चेव । आहुणिए ५ पाहुणिए ६ कणगसणामा य पंचेव ११ ॥ १ ॥ सोमे १२ सहिए १३ आसणेय १४ कज्जोवए १५ अ कब्बुरए १६ । अयकरए १७ दुंदुभए संखसनामेवि तिण्णेव ॥ २ ॥ एवं भाणिअव्वं जाव भावकेउस्स अग्गमहिसीओ ५ ॥ सूत्रं १७२ ॥ चंदविमाणे णं भंते ! देवाणं केवइअं कालं ठिई पण्णत्ता ?, गोयमा ! जहण्णेणं चउभागपलिओवमं उक्कोसेणं पलिओवमं वाससयसहस्समब्भहिअं १ । चंदविमाणे णं देवीणं ? जहण्णेणं चउभागपलिओवमं उक्कोसेणं अद्धपलियोवमं पण्णासाए वाससहस्सेहिमब्भहिअं २ । सूरविमाणे देवाणं ? जहण्णेणं चउब्भागपलिओवमं उक्कोसेणं पलिओवमं वाससहस्समब्भहियं ३ । सूरविमाणे देवीणं ? जहण्णेणं चउब्भागपलिओवमं उक्कोसेणं अद्धपलिओवमं पंचहिं वाससएहिं अब्भहियं ४ । गहविमाणे देवाणं ? जहण्णेणं चउब्भागपलिओवमं उक्कोसेणं पलिओवमं ५ । गहविमाणे देवीणं ? जहण्णेणं चउब्भागपलिओवमं उक्कोसेणं अद्धपलिओवमं ६ । णक्खत्तविमाणे देवाणं ? जहण्णेणं चउब्भागपलिओवमं उक्कोसेणं अद्धपलिणोवमं ७ । णक्खत्तविमाणे देवीणं ? जहण्णेणं चउब्भागपलिओवमं उक्कोसेणं साहिअं चउब्भागपलिओवमं ८ । ताराविमाणे देवाणं ? जहण्णेणं अट्ठभागपलिओवमं उक्कोसेणं चउब्भागपलिओवमं ९ । ताराविमाणदेवीणं ? जहण्णेणं अट्ठभागपलिओवमं उक्कोसेणं साइरेगं अट्ठभागपलिओवमं १० ॥ सूत्रं १७३ ॥ बह्मा विण्हू अ वसू वरुणे अय वुड्ढी पूस आस जमे । अग्गि पयावइ सोमे रुद्दे अदिती बहस्सई सप्पे ॥१॥ पिउ भग अज्जम सविआ तट्ठा वाऊ तहेव इंदग्गी । मित्ते इंदे निरुई आऊ विस्सा य बोद्धव्वे ॥ २ ॥ इति ॥सूत्रं १७४॥ एतेसि णं भंते ! चंदिमसूरिअगहणक्खत्तताराख्वाणं कयरे २ हिंतो अप्पा वा बहुआ वा तुल्ला वा विसेसा-

हिश्रा वा ?, गोयमा ! चंदिमसूरिश्रा दुवे तुल्ला सव्वत्थोवा णक्खत्ता संखेज्जगुणा गहा संखेज्जगुणा तारारूवा संखेज्जगुणा ॥ सूत्रं १७५ ॥ जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे जहराणपए वा उक्कोसपए वा केवइश्रा तित्थयरा सव्वग्गेणं पराणत्ता ?, गोश्रमा ! जहराणपए चत्तारि उक्कोसपए चोत्तीसं तित्थयरा सव्वग्गेणं पराणत्ता १ । जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे केवइश्रा जहराणपए वा उक्कोसपए वा चक्कवट्टी सव्वग्गेणं पराणत्ता ?, गोयमा ! जहराणपदे चत्तारि उक्कोसपदे तीसं चक्कवट्टी सव्वग्गेणं पराणत्ता इति, बलदेवा तत्तिश्रा चेव जत्तिश्रा चक्कवट्टी, वासुदेवावि तत्तिया चेव २ । जंबुद्दीवे दीवे केवइश्रा निहिरयणा सव्वगेणं पराणत्ता ?, गोयमा ! तिरिण छलुत्तरा णिहिरयणसया सव्वग्गेणं पराणत्ता ३ । जंबुद्दीवे २ केवइश्रा णिहिरयणसया परिभोगत्ताए हव्वमागच्छंति ?, गोयमा ! जहराणपए छत्तीसं उक्कोसपए दोरिण सत्तरा णिहिरयणसया परिभोगत्ताए हव्वमागच्छंति ४ । जंबुद्दीवे २ केवइश्रा पंचिंदिश्ररयणसया सव्वग्गेणं पराणत्ता ?, गोयमा ! दो दसुत्तरा पंचिंदिश्ररयणसया सव्वग्गेणं पराणत्ता ५। जंबुद्दीवे २ जहराणपदे वा उक्कोसपदे वा केवइश्रा पंचिंदिश्ररयणसया परिभोगत्ताए हव्वमागच्छंति ?, गोयमा ! जहराणपए श्रट्ठावीसं उक्कोसपए दोरिण दसुत्तरा पंचिंदिश्ररयणसया परिभोगत्ताए हव्वमागच्छंति ६ । जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे केवइश्रा एगिंदिश्ररयणसया सव्वग्गेणं पराणत्ता ?, गोयमा ! दो दसुत्तरा एगिंदिश्ररयणसया सव्वग्गेणं पराणत्ता ७ । जंबूद्दीवे णं भंते ! दीवे केवइश्रा एगिंदिश्ररयणसया परिभोगत्ताए हव्वमागच्छंति ?, गोयमा ! जहराणपए श्रट्ठावीसं उक्कोसेणं दोरिण दसुतरा एगिंदिश्ररयणसया परिभोगत्ताए हव्वमागच्छंति ८ ॥ सूत्रं १७६ ॥ जंबूद्दीवे णं भंते ! दीवे केवइश्रं श्रायामविक्खंभेणं केवइश्रं परिक्खेवेणं केवइश्रं उव्वेहेणं केवइश्रं उद्धं उच्चतेणं केवइश्रं सव्वग्गेणं पराणत्ता ?, गोयमा ! जंबुद्दीवे २

एगं जोअणसयसहस्सं आयामविक्खंभेणं तिरिण जोअणसयसहस्साइं सोलस य सहस्साइं दोरिण अ सत्तावीसे जोअणसए तिरिण अ कोसे अट्ठावीसं च धणुसयं तेरस अंगुलाइं अद्धंगुलं च किंचिविसेसाहिअं परिक्खेवेणं पराणत्ते, एगं जोअणसहस्सं उव्वेहेणं णवणउतिं जोअणसहस्साइं साइरेगाइं उद्धं उच्चतेणं साइरेगं जोअणसयसहस्सं सव्वग्गेणं पराणत्ते ॥ सूत्रं १७७ ॥ जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे किं सासए असासए ?, गोअमा ! सिअ सासए सिअ असासए १। से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ–सिअ सासए सिअ असासए ?, गोयमा ! दव्वट्ठयाए सासए वणपज्जवेहिं गंधपज्जवेहिं रसपज्जवेहिं फासपज्जवेहिं असासए, से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ सिअ सासए सिअ असासए २। जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे कालओ केवचिरं होइ ? गोअमा ! ण कयावि णासि ण कयावि णत्थि ण कयावि ण भविस्सइ, भुविं च भवइ अ भविस्सइ अ धुवे णिइए सासए अक्खए अव्वए अवट्ठिए णिच्चे जंबुद्दीवे दीवे पराणत्ते ३ ॥ सूत्रं १७८ ॥ जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे किं पुढविपरिणामे आउपरिणामे जीवपरिणामे पोग्गलपरिणामे ?, गोअमा ! पुढविपरिणामेवि आउपरिणामेवि जीवपरिणामेवि पुग्गलपरिणामेवि १ । जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे सव्वपाणा सव्वजीवा सव्वभूआ सव्वसत्ता पुढविकाइअत्ताए आउकाइअत्ताए तेउकाइअत्ताए वाउकाइअत्ताए वणस्सइकाइअत्ताए उववरणपुव्वा ?, हंता गोअमा ! असइं अदुवा अणंतखुत्तो २ ॥ सूत्रं १७९ ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ जंबुद्दीवे २ ?, गोयमा ! जंबुद्दीवे णं दीवे तत्थ २ देसे २ तहिं २ बहवे जंबूरुक्खा जंबूवणा जंबूवणसंडा णिच्चं कुसुमिया जाव पिंडिम-मंजरिवडेंसगधरा सिरीए अईव उवसोभेमाणा चिट्ठंति, जंबूए सुदंसणाए अणाढिएणामं देवे महिद्धीए जाव पलिओवमट्ठिइए परिवसइ, से तेणट्ठेणं गोअमा ! एवं वुच्चइ जंबुद्दीवे दीवे ॥ सूत्रं १८० ॥ तए णं समणे भगवं महावीरे मिहिलीए णयरीए माणि-

भद्दे चेइए बहूणं समणाणं बहूणं समणीणं बहूणं सावयाणं बहूणं सावियाणं बहूणं देवाणं बहूणं देवीणं मज्झगए एवमाइक्खइ एवं भासइ एवं पराणवेइ एवं परूवेइ जंबूदीवपराणत्ती णामत्ति अज्जो! अज्झयणं अट्ठं च हेउं च पसिणं च कारणं च वागरणं च भुज्जो २ उवदंसेइत्तिबेमि ॥ सूत्रं १८१ ॥

॥ इति सप्तमो वक्षस्कारः ॥ ७ ॥

॥ इतिश्रीजम्बूद्वीपप्रज्ञप्तिसूत्रं समाप्तम् ॥

॥ ग्रंथाग्रं ४१४६ ॥

卐

॥ अर्हम् ॥

श्री-श्रुतस्थविरप्रणीतं

॥ श्रीमच्चन्द्रप्रज्ञप्तिसूत्रम् ॥

नमो अरिहंताणं ॥ जयइ नव-नलिण-कुवलय-वियसिय-सयवत्त-पत्तल-दलच्छो । वीरो गइंद–मयगल–सललिय–गयविक्कमो भयवं ॥ १ ॥ नमिऊण असुर-सुर-गरुल-भुयग-परिवंदिए गयकिलेसे । अरिहे सिद्धायरिय-उवज्झाए सव्वसाहू य ॥ २ ॥ फुड-वियड-पागडत्थं, वुच्छं पुव्व-सुय-सार-नीसंदं । सुहुमं गणिणोवइट्ठं, जोइस-गणरायपण्णत्तिं ॥ ३ ॥ नामेण इंदभूइत्ति गोयमो वंदिऊण तिविहेणं । पुच्छइ जिणवर-वसहं, जोइसरायस्स पण्णत्तिं ॥ ४ ॥ कइ मंडलाइ वच्चइ १, तिरिच्छा किं च गच्छई २ । ओभासइ केवइयं ३, सेयाइ किं ते संठिई ४ ॥ ५ ॥ कहिं पडिहया लेसा ५, कहं ते ओयसंठिइ ६ । के सूरियं वरयते ७, कहं ते उदयसंठिई ८ ॥ ६ ॥ कइकट्ठा पोरिसीच्छाया ९, जोगेत्ति किं ते आहिए १० । किं ते संवच्छरा-णाई ११, कइ संवच्छराइ य १२ ॥ ७ ॥ कहं चंदमसो वुड्ढी, १३, कया ते दो(जो)सिणा बहू १४ । के सिग्घगई वुत्ते १५ किं ते दो(जो)सिण-लक्खणं १६ ॥ ८ ॥ चयणोववाय १७ उच्चत्ते १८, सूरिया कइ आहिया १९ । अणुभावे केव संवुत्ते २०, एवमेयाइं वीसई ९ ॥ सूत्रं १ ॥ वड्ढोवड्ढी १ मुहुत्ताण-मद्धमंडलसंठिई २ । के ते चिराणं परियरइ ३ अंतरं किं चरंति य ४ ॥ १० ॥ ओगाहइ केवइयं ५ केवइयं च विकंपइ ६ । मंडलाण य संठाणे ७ विक्खंभो ८ अट्ठ पाहुडा ॥ ११ ॥ सू० २ ॥ छप्पंच य सत्तेव य,

अट्ठ य तिन्नि य हवंति पडिवत्ती । पढमस्स पाहुडस्स उ, हवंति एयाओ पडिवत्ती ॥ १२ ॥ सू० ३ ॥ पडिवत्तीओ उदए, अदुव अत्थमणेसु य । भेयघाए कराणकला, मुहुत्ताण गईइ य ॥ १३ ॥ निक्खममाणे सिग्घगई, पविसंते मंदगईइ य । चुलसीइसयं पुरिसाणं, तेसिं च पडिवत्तीओ ॥ १४ ॥ उदयम्मि अट्ठ भणिया, भेयग्घाए दुवे च पडिवत्ती । चत्तारि मुहुत्तगईए, होंति तइयम्मि पडिवत्ती ॥ १५ ॥ सू० ४ ॥ आवलिय १ मुहुत्तग्गे २ एवंभागा ३ य जोगस्सा ४ । कुलाइं ५ पुराणमासी ६ य, संनिवाए ७ य संठिई ८ ॥ १६ ॥ तारग्गं ९ च णेता य १० चंदमग्गत्ति ११ यावरे । देवताण य अज्झयणा १२ मुहुत्ताणं नामया १३ इय ॥१७॥ दिवसा राई य वुत्ता १४ य, तिहि १५ गोत्ता १६ भोयणाणि य १७। आइच्चचार १८ मासा १९ य, पंच संवच्छरा २० इय ॥ १८ ॥ जोइसस्स य दाराइं २१, नक्खत्तविचए २२ विय । दसमे पाहुडे एए, बावीसं पाहुडपाहुडा ॥ १९ ॥ सू० ५ ॥

तेणं कालेणं तेणं समएणं मिहिला णामं णयरी होत्था रिद्धत्थिमियसमिद्धा पमुइयजणजाणवया जाव पासादीया, वण्णओ १ । तीसे णं मिहिलाए णयरीए बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए एत्थ णं माणिभद्दे णामं चेइए होत्था चिराईए वण्णओ २ । तीसे णं मिहिलाए णयरीए जियसत्तूणामं राया, धारिणी देवी, वण्णओ ३ । तेणं कालेणं तेणं समएणं तंमि माणिभद्दे चेइए सामी समोसढे, परिसा णिग्गया, धम्मो कहिओ, परिसा पडिगया जाव राया जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए ४,॥ सू० ६ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी इंदभूईणामं अणगारे गोयमगोत्तेणं सत्तुस्सेहे जाव पज्जुवासमाणे एवं वयासी ॥ सू० ७ ॥ ता कहं ते वड्ढोवड्ढी मुहुत्ताणं आहितेत्ति वदेज्जा ? गोयमा ! ता अट्ठ एगूणवीसे मुहुत्तसते सत्तावीसं च सत्तट्ठिभागे मुहुत्तस्स

आहितेत्ति वदेज्जा ॥ सू० ८ ॥ ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतरातो मंडलातो सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति, सव्वबाहिरातो मंडलातो सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति, एस णं अद्धा केवतियं राइंदियग्गेणं आहितेत्ति वदेज्जा ? ता तिरिणा छावट्ठे राइंदियसएइं रातिंदियग्गेणं आहितेत्ति वदेज्जा ॥ सू० ६ ॥ ता एयाए णं अद्धाए सूरिए कइ मंडलाइं चरइ ? कइ मंडलाइं दुक्खुत्तो चरइ ? कइ मंडलाइं एगखुत्तो चरइ ? ता चुलसीयं मंडलसयं चरइ, बासीति मंडलसयं दुक्खुत्तो चरइ, तं जहा—विक्खममाणे चेव पविसमाणे चेव १ । दुवे य खलु मंडलाइं सइं चरइ, तं जहा—सव्वब्भंतरं चेव मंडलं, सव्वबाहिरं चेव मंडलं २ ॥ सू० १० ॥ जइ खलु तस्सेव आइच्चस्स संवच्छरस्स सइं अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, सइं अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ, सइं दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ, सइं दुवालसमुहुत्ता राई भवइ १ । ता पढमे छम्मासे अत्थि अट्ठारसमुहुत्ता राई, नत्थि अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे, अत्थि दुवालसमुहुत्ते दिवसे, नत्थि दुवालसमुहुत्ता राई भवइ २ । दोच्चे छम्मासे अत्थि अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे, णत्थि अट्ठारसमुहुत्ता राई, अत्थि दुवालसमुहुत्ता राई, णत्थि दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ ३ । पढमे वा छम्मासे दोच्चे वा छम्मासे णत्थि पण्णरसमुहुत्ते दिवसे भवइ, णत्थि पण्णरसमुहुत्ता राई भवइ ४ । जं णं पढमे वा छम्मासे दोच्चे वा छम्मासे णत्थि पण्णरसमुहुत्ते दिवसे भवति, णत्थि पण्णरसमुहुत्ता राती भवति तत्थ णं कं हेउं वएज्जा ? ता अयरणं जंबुद्दीवे दीवे सव्वदीवसमुद्दाणं सव्वब्भंतराए जाव विसेसाहिए परिक्खेवेणं पण्णत्ते ५ । ता जयाणं सूरिए सव्वब्भंतरमंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहरिणया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ ६ । से निक्खममाणे सूरिए नवं संवच्छरं अयमाणे पढमंसि अहोरत्तंसि अब्भिंतराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ ७ । ता जया णं सूरिए अब्भिंतरा-

णंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणे, दुवालसमुहुत्ता राई भवइ दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिया ८। से णिक्खममाणे सूरिए दोच्चंसि अहोरत्तंसि अब्भंतरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ ९। ता जया णं सूरिए अब्भितरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणे, दुवालसमुहुत्ता राई भवइ, चउहिं एगट्ठिभागमुत्तेहिं अहिया १०। एवं खलु एएणं उवाएणं णिक्खममाणे सूरिए तयाणंतराओ मंडलाओ तयाणंतरं मंडलं संकममाणे दो दो एगट्ठिभागमुहुत्ते एगमेगे मंडले दिवसखेत्तस्स णिव्वुड्ढेमाणे २ रयणिखेत्तस्स अभिवुड्ढेमाणे २ सव्वबाहिरमंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ ११। ता जया णं सूरिए सव्व-ब्भंतरातो मंडलाओ सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं सव्वब्भंतरमंडलं पणिहाय एगेणं तेसीएणं राइंदियसएणं तिण्णि छावट्ठे एगट्ठिभागमुहुत्तसते दिवसखेत्तस्स निव्वुड्ढित्ता रतणिखेत्तस्स अभिवुड्ढित्ता चारं चरइ, तया णं उत्तमकट्ठपत्ता उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ, जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ १२। एस णं पढमे छम्मासे। एस णं पढमस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे १३। से पविसमाणे सूरिए दोच्चं छम्मासं अ(आ)यमाणे पढमंसि अहोरत्तंसि बाहिराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ १४। ता जया णं सूरिए बाहिराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणा, दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिए १५। से पविसमाणे सूरिए दोच्चंसि अहोरत्तंसि बाहिरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ १६। ता जया णं सूरिए बाहिरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणा, दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिए १७। एवं

खलु एएणुवाएणं पविसमाणे सूरिए तयाणंतराओ मंडलाओ तयाणंतरं मंडलं संकममाणे २ दो दो एगट्ठिभागमुहुत्ते एगमेगे मंडले रतणिखेत्तस्स निव्वुड्ढेमाणे २ दिवसखेत्तस्स अभिवुड्ढेमाणे २ सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ १८। ता जया णं सूरिए सव्वबाहिराओ मंडलाओ सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं सव्वबाहिरं मंडलं पणिधाय एगेणं तेसीएणं राइंदियसएणं तिण्णि छावट्ठिएगसट्ठिभागमुहुत्तसते रयणिखेत्तस्स निव्वुड्ढित्ता दिवसखेत्तस्स अभिवड्ढित्ता चारं चरइ तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ १९। एस णं दोच्चे छम्मासे। एस णं दोच्चस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे। एस णं आइच्चे संवच्छरे। एस णं आइच्चस्स संवच्छरस्स पज्जवसाणे २०। इति खलु तस्सेवं आइच्चस्स संवच्छरस्स सइं अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, सइं अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ २१। सइं दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ, सइं दुवालसमुहुत्ता राई भवइ २२। पढमे छम्मासे अत्थि अट्ठारसमुहुत्ता राई, णत्थि अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, अत्थि दुवालसमुहुत्ते दिवसे, णत्थि दुवालसमुहुत्ता राई भवइ २३। दोच्चे छम्मासे अत्थि अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवति णत्थि अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ, अत्थि दुवालसमुहुत्ता राई, णत्थि दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ २४। पढमे वा छम्मासे दोच्चे वा छम्मासे णत्थि पण्णरसमुहुत्ते दिवसे भवति, णत्थि पण्णरसमुहुत्ता राई भवति, णण्णत्थ राइंदियाणं वड्ढोवुड्ढीए मुहुत्ताण वा चयोवचएणं, णण्णत्थ वा अणुवायगईए २५। पुव्वेण दुन्निभागापाहुडियगाहाओ भाणितव्वाओ २६ ॥ सू० ११॥
पढमस्स पाहुडस्स पढमं पाहुडपाहुडं ॥

॥ इति प्रथमप्राभृते प्रथमं प्राभृतप्राभृतम् ॥ १-१ ॥

......

॥ अथ प्रथमप्राभृते द्वितीयं प्राभृतप्राभृतम् ॥

ता कहं ते अद्धमंडलसंठिई आहितेति वदेज्जा ? तत्थ खलु इमा दुविहा अद्धमंडलसंठिई पराणत्ता, तं जहा—दाहिणा चेव अद्धमंडलसंठिई, उत्तरा चेव अद्धमंडलसंठिई १। ता कहं ते दाहिणा अद्धमंडलसंठिई आहितेति वदेज्जा ? ता अयराणं जंबुद्दीवे दीवे सव्वदीवसमुद्दाणं जाव परिक्खेवेणं पराणत्ते २। ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतरं दाहिणं अद्धमंडलसंठिइं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहरिणया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ ३। से निक्खममाणे सूरिए णवं संवच्छरं अयमाणे पढमंसि अहोरत्तंसि दाहिणाए अंतराए भागाए तस्सादिपएसाए अब्भितराणंतरं उत्तरं अद्धमंडलसंठिइं उवसंकमित्ता चारं चरइ ४। ता जया णं सूरिए अब्भितराणंतरं उत्तरं अद्धमंडलसंठिइं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणे, दुवालसमुहुत्ता राई भवइ दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिया ५। से णिक्खममाणे सूरिए दोच्चंसि अहोरत्तंसि उत्तराए अंतराए भागाए तस्सादिपएसाए अब्भितरं तच्चं दाहिणं अद्धमंडलसंठिइं उवसंकमित्ता चारं चरइ ६। ता जया णं सूरिए अब्भितरं तच्चं दाहिणं अद्धमंडलसंठिइं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणे, दुवालसमुहुत्ता राई भवइ चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिया ७। एवं खलु एएणं उवाएणं णिक्खममाणे सूरिए तयाणंतराओऽणंतरंसि तंसि २ देसंसि तं तं अद्धमंडलसंठिइं संकममाणे २ दाहिणाए अंतराए भागाए तस्सादिपएसाए सव्वबाहिरं उत्तरं अद्धमंडलसंठिइं उवसंकमित्ता चारं चरइ ८। ता जया णं सूरिए सव्वबाहिरं उत्तरं अद्धमंडलसंठिइं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं उत्तमकट्ठपत्ता उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ, जहराणए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ ९। एस णं

पढमे छम्मासे, एस णं पढमस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे १० । से पविसमाणे सूरिए दोच्चं छम्मासं अयमाणे पढमंसि अहोरत्तंसि उत्तराए अंतराए भागाए तस्सादिपएसाए बाहिराणंतरं दाहिणं अद्धमंडलसंठिइं उवसंकमित्ता चारं चरइ ११ । ता जया णं सूरिए बाहिराणंतरं दाहिणं अद्धमंडलसंठिइं उवसंकमित्ता चारं चरइ, तया णं अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणा, दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिए १२ । से पविसमाणे सूरिए दोच्चंसि अहोरत्तंसि दाहिणाए अंतराए भागाए तस्सादिपएसाए बाहिराणंतरं तच्चं उत्तरं अद्धमंडलसंठिइं उवसंकमित्ता चारं चरइ १३ । ता जया णं सूरिए बाहिराणंतरं तच्चं उत्तरं अद्धमंडलसंठिइं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणा, दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिए, (तदा राइदिवसपमाणं तं चेव भाणियव्वं) १४ । एवं खलु एएणं उवाएणं पविसमाणे सूरिए तयाणंतराओ तयाणंतरं तंसि २ देसंसि तं तं अद्धमंडलसंठिइं संकममाणे २ उत्तराए अंतराए भागाए तस्सादिपएसाए सव्वब्भंतरं दाहिणं अद्धमंडलसंठिइं उवसंकमित्ता चारं चरइ १५ । ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतरं दाहिणं अद्धमंडलसंठिइं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ १६ । एस णं दोच्चे छम्मासे, एस णं दोच्चस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे, एस णं आइच्चे संवच्छरे, एस णं आइच्चस्स संवच्छरस्स पज्जवसाणे १७ ॥ सू० १२ ॥ ता कहं ते उत्तरा अद्धमंडलसंठिई आहितेति वदेज्जा ? ता अयण्णं जंबुद्दीवे दीवे सव्वदीव जाव परिक्खेवेणं पण्णत्ते १ । ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतरं उत्तरं अद्धमंडलसंठिइं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई

भवइ २। से निक्खममाणे सूरिए णवं संवच्छरं अयमाणे पढमंसि अहोरत्तंसि उत्तराए अंतराए भागाए तस्साइपएसाए अब्भंतराणंतरं दाहिणं अद्धमंडलसंठिइं उवसंकिमित्ता चारं चरइ ३। ता जया णं सूरिए अब्भंतराणंतरं दाहिणं अद्धमंडलसंठिइं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणे, दुवालसमुहुत्ता राई भवइ दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहि अहिया ४। से णिक्खममाणे सूरिए दोच्चंसि अहोरत्तंसि दाहिणाए अंतराए भागाए तस्साइपएसाए अब्भिंतराणंतरं तच्चं उत्तरं अद्धमंडलसंठिइं उवसंकमित्ता चारं चरइ ५। ततो जयाणं सूरिए अब्भिंतराणंतरं तच्चं उत्तरं अद्धमंडलसठिइं उवसंकमित्ता चारं चरइ तता णं दिवसराइपमाणं तं चेव भाणियव्वं (तया णं अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणे, दुवालसमुहुत्ता राई भवइ चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिया) ६। एवं खलु एएणं उवाएणं निक्खममाणे सूरिए तयाणंतराओ तयाणंतरं मंडलाओ मंडलं संकममाणे तंसि तंसि देसंसि तं तं अद्धमंडलसंठिइं संकममाणे २ उत्तराए अंतराए भागाए तस्साइपएसाए सव्वबाहिरं दाहिणं अद्धमंडलसंठिइं उवसंकमित्ता चारं चरइ ७। ता जया णं सूरिए सव्वबाहिरं दाहिणं अद्धमंडलसंठिइं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं उत्तमकट्ठपत्ता उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ, जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ ८। एस णं पढमे छम्मासे, एस णं पढमस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे ९। से पविसमाणे सूरिए दोच्चं छम्मासं अयमाणे पढमंसि अहोरत्तंसि दाहिणाए अंतराए भागाए तस्साइपएसाए बाहिराणंतरं उत्तरं अद्धमंडलसंठिइं उवसंकमित्ता चारं चरइ १०। ततो जया णं सूरिए बाहिराणंतरं उत्तरं अद्धमंडलसंठिइं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणा, दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिए ११। से पविसमाणे सूरिए

दोच्चंसि अहोरत्तंसि उत्तराए अंतराए भागाए तस्साइपएसाए बाहिरं तच्चं दाहिणं अद्धमंडलसंठिइं उवसंकमित्ता चारं चरइ १२। ता जया णं सूरिए बाहिरं तच्चं दाहिणं अद्धमंडलसंठिइं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणा, दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिए १३। एवं खलु एएणं उवाएणं पविसमाणे सूरिए तयाणंतराओ तयाणंतरं तंसि तंसि देसंसि तं तं अद्धमंडलसंठिइं संकममाणे २ दाहिणाए अंतराए भागाए तस्साइपएसाए सव्वब्भंतरं उत्तरं अद्धमंडलसंठिइं उवसंकमित्ता चारं चरइ १४। ता जता णं सूरिए सव्वब्भंतरं उत्तरं अद्धमंडलसंठिइं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहन्निया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ (जहा दाहिणा तहा चेव णवरं उत्तरट्ठिओ अब्भिंतराणंतरं दाहिणं उवसंकमइ, दाहिणातो अब्भितरं तच्चं उत्तरं उवसंकमति, एवं खलु एएणं उवाएणं जाव सव्वबाहिरं दाहिणं उवसंकमति, सव्वबाहिरं दाहिणं उवसंकमति २ ता दाहिणाओ बाहिराणंतरं उत्तरं उवसंकमति उत्तरातो बाहिरं तच्चं दाहिणं तच्चातो दाहिणातो संकममाणे २ जाव सव्वब्भंतरं उवसंकमति तहेव—इति सूर्यप्रज्ञप्तौ) १५। एस णं दोच्चे छम्मासे, एस णं दोच्चस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे, एस णं आइच्चे संवच्छरे, एस णं आइच्चस्स संवच्छरस्स पज्जवसाणे, गाहाओ १६ ॥ सूत्रं १३ ॥ बीयं पाहुडपाहुडं समत्तं ॥

॥ इति प्रथमप्राभृते द्वितीयं प्राभृतप्राभृतम् ॥ १-२ ॥

॥ अथ प्रथमप्राभृते तृतीयं प्राभृतप्राभृतम् ॥

ता किं ते चिणणं पडिचरति आहितेति वदेज्जा ?, तत्थ खलु इमे दुवे सूरिया पण्णत्ता, तंजहा—भारहे चेव सूरिए, एरवए चेव सूरिए १।

ता एते णं दुवे सूरिया पत्तेयं २ तीसाए २ मुहुत्तेहिं एगमेगं अद्धमंडलं चरइ सट्ठीए सट्ठीए मुहुत्तेहिं एगमेगं मंडलं संघातति २। ता णिक्खममाणा खलु एते दुवे सूरिया णो अरणमरणस्स चिरणं पडिचरंति पविसमाणा खलु एते दुवे सूरिया अरणमरणस्स चिरणं पडिचरंति तं सतमेगं चोतालं ३। तत्थ णं को हेउ—त्ति वदेज्जा ? ता अयरणं जंबुद्दीवे दीवे जाव परिक्खेवेणं ४। तत्थ णं अयं भारहए चेव सूरिए जंबुद्दीवस्स दीवस्स पाईणपडीणायत-उदीणदाहिणाययाए जीवाए मंडलं चउवीसएणं सएणं छेत्ता दाहिणपुरत्थिमिल्लंसि चउभागमडलंसि बाणउतिय-सूरियमताइं जाइं सूरिए अप्पणा चेव चिरणाइं पडिचरइ, उत्तरपच्चत्थिमिल्लंसि चउभागमंडलंसि एकाणउइं सूरियमयाइं जाइं सूरिए अप्पणा चेव चिरणाइं पडिचरइ ५। तत्थ अयं भारहे सूरिए एरवयस्स सूरियस्स जंबुद्दीवस्स दीवस्स पाईणपडीणाययाए उदीणदाहिणाययाए जीवाए मंडलं चउवीसएणं सएणं छेत्ता-उत्तरपुरत्थिमिल्लंसि चउभागमंडलंसि बाणउति सूरियमताइं जाइं सूरिए परस्स चिरणाइं पडिचरइ, दाहिणपच्चत्थिमिल्लंसि चउब्भागमंडलंसि एक्काणउति सूरियमताइं जाइं सूरिए परस्स चेव चिरणाइं पडिचरइ ६। तत्थ अयं एरवए सूरिए जंबुद्दीवस्स दीवस्स पाईणपडीणाययाए उदीणदाहिणाययाए जीवाए मंडलं चउवीसएणं सएणं छेत्ता उत्तरपुरत्थिमिल्लंसि चउब्भागमंडलंसि बाणउइं सूरियमताइं जाइं सूरिए अप्पणा चिरणाइं पडिचरइ, दाहिणपुरत्थिमिल्लंसि चउब्भागमंडलंसि एक्काणउइं सूरियमयाइं जाइं सूरिए अप्पणा चेव चिरणाइं पडिचरइ ७। तत्थ णं एयं एरवतिए सूरिए भारहस्स सूरियस्स जंबुद्दीवस्स पाईणपडीणाययाए उदीणदाहिणाययाए जीवाए मंडलं चउवीसएणं सएणं छित्ता दाहिणपच्चत्थिमिल्लंसि चउब्भागमंडलंसि बाणउइं सूरियमताइं जाइं सूरिए परस्स चिरणाइं पडिचरइ, उत्तरपुरत्थिमिल्लंसि चउब्भागमंडलंसि एक्काणउतिं सूरियमताइं जाइं सूरिए परस्स

चेव चिराणाइं पडिचरइ ८। ता निक्खममाणा खलु एते दुवे सूरिया णो अराणमराणस्स चिराणं पडिचरंति ९। पविसमाणा खलु एते दुवे सूरिया अराणमराणस्स तंजहा—चिराणं पडिचरंति, सयमेगं चोत्तालं, गाहाओ १० ॥ सू० १४ ॥ तइयं पाहुडपाहुडं समत्तं ॥

॥ इति प्रथमप्राभृते तृतीयं प्राभृतप्राभृतम् ॥ १-३ ॥

॥ अथ प्रथमप्राभृते चतुर्थं प्राभृतप्राभृतम् ॥

ता केवइयं एए दुवे सूरिया अराणमराणस्स अंतरं कट्टु चारं चरंति आहितेति वएज्जा? तत्थ खलु इमाओ छ पडिवत्तीओ पराणत्ताओ, तंजहा—तत्थ एगे एवमाहंसु—ता एगं जोयणसहस्स एगं च तेत्तीसं जोयणसयं, अराणमराणस्स अंतरं कट्टु सूरिया चारं चरंति आहितेति वदेज्जा, एगे एवमाहंसु १। एगे पुण एवमाहंसु—ता एगं जोयणसहस्सं एगं चउतीसं जोयणसयं अराणमराणस्स अंतरं कट्टु सूरिया चारं चरंति आहितेति वदेज्जा, एगे एवमाहंसु २। एगे पुण एवमाहंसु—ता एगं जोयणसहस्सं एगं च पणतीसं जोयणसयं अराणमराणस्स अंतरं कट्टु सूरिया चारं चरंति आहितेति वदेज्जा, एगे एवमाहंसु ३। एगे पुण एवमाहंसु—ता एगं दीवं एगं समुद्दं अराणमराणस्स अंतरं कट्टु सूरिया चारं चरंति आहितेति वदेज्जा एगे एवमाहंसु ४। एगे पुण एवमाहंसु—ता दो दीवे दो समुद्दे अराणमराणस्स अंतरं कट्टु सूरिया चारं चरंति आहितेति वदेज्जा, एगे एवमाहंसु ५। एगे पुण एवमाहंसु—ता तिरिण दीवे तिरिण समुद्दे अराणमराणस्स अंतरं कट्टु सूरिया चारं चरंति आहितेति वदेज्जा, एगे एवमाहंसु ६, १। एयं पुण एवं वयामो—ता पंच पंच जोयणाइं पणतीसं च एगट्ठिभागे जोयणस्स एगमेगे मंडले अराणमराणस्स अंतरं अभिवड्ढेमाणा वा निवड्ढेमाणा वा सूरिया चारं चरंति आहितेति वदेज्जा २। तत्थ णं को हेऊ आहितेति वएज्जा?

ता अयगणं जम्बुद्दीवे दीवे जाव परिक्खेवेणं ३ । ता जया णं एते दुवे सूरिया सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरंति तया णं णवणउइं जोयणसहस्साइं छच्च चत्ताले जोयणसते अगणमगणस्स अंतरं कट्टु चारं चरंति आहितेति वदेज्जा, तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहरिणाया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ ४ । ते निक्खममाणा सूरिया णवं संवच्छरं अयमाणा पढमंसि अहोरत्तंसि अब्भितराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरंति ५ । ता जया णं एते दुवे सूरिया अब्भितराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरंति तया णं णवणवतिं जोयणसहस्साइं छच्च पणताले जोयणसते पणतीसं च एगट्ठिभागे जोयणस्स अगणमगणस्स अंतरं कट्टु चारं चरति आहितेति वदेज्जा, तया णं अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणे, दुवालसमुहुत्ता राई भवइ दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिया ६ । से निक्खममाणा सूरिया दोच्चंसि अहोरत्तंसि अब्भितरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरंति ७ । ता जया णं एते दुवे सूरिया अब्भितरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरंति तया णं णवणवतिं जोयणसहस्साइं छच्च इक्कावगणे जोयणसते नव य एगट्ठिभागे जोयणस्स अगणमगणस्स अंतरं कट्टु चारं चरंति आहितेति वदेज्जा, तया णं अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणे, दुवालसमुहुत्ता राई भवइ चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिया ८ । एवं खलु एएणं उवाएणं णिक्खममाणा एते दुवे सूरिया तयाणंतराओ मंडलाओ, तयाणंतरं मंडलं संकममाणा २ पंचजोयणाइं पणतीसं च एगट्ठिभागे जोयणस्स एगमेगे मंडले अगणमगणस्स अंतरं अभिवड्ढेमाणा २ सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरंति ९ । ता जया णं एते दुवे सूरिया सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरंति तया णं एगं जोयणसयसहस्सं छच्चसट्ठे जोयणसते अगण-

मणस्स अंतरं कट्टु चारं चरंति, तया णं उत्तमकट्ठपत्ता उक्कोसिया अट्ठारस-मुहुत्ता राई भवइ, जहराणए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ १० । एस णं पढमे छम्मासे । एस णं पढमस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे ११ । ते पविसमाणा सूरिया दोच्चं छम्मासं अयमाणा पढमंसि अहोरत्तंसि बाहिराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरंति १२ । ता जया णं एते दुवे सूरिया बाहिराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरंति तया णं एगं जोयणसयसहस्सं छच्च उप्पराणे जोयणसते छत्ती(व्वी)सं च एगट्ठिभागे जोयणस्स अराण-मराणस्स अंतरं कट्टु चारं चरंति तया णं अट्ठारसमुहुत्ता राई भवई दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणा, दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिए १३ । ते पविसमाणा सूरिया दोच्चंसि अहोरत्तंसि बाहिरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरंति १४ । ता जया णं एते दुवे सूरिया बाहिरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरंति तया णं एगं जोयणसयसहस्सं छच्च अडयाले जोयणसते बावराणं च एगट्ठिभागे जोयणस्स अराण-मराणस्स अंतरं कट्टु चारं चरंति तया णं अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणा, दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिए १५ । एवं खलु एएणं उवाएणं पविसमाणा एते दुवे सूरिया तयाणंतराओ मंडलाओ तयाणंतरं मंडलं संकममाणा २ पंच जोयणाइं पणतीसे च एगट्ठिभागे जोयणस्स एगमेगे मंडले अराणमराणस्स अंतरं निव्वड्ढेमाणा २ सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरंति १६ । ता जया णं एते दुवे सूरिया सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरंति तया णं णवणउतिं जोयणसहस्साइं छच्च चत्ताले जोयणसते अराणमराणस्स अंतरं कट्टु चारं चरंति, तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहरिणाया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ १७ । एस णं दोच्चे छम्मासे, एस णं दोच्चस्स छम्मासस्स पज्ज-

वसाणे, एस णं आइच्चे संवच्छरे, एस णं आइच्चसंवच्छरस्स पज्जवसाणे १८ ॥ सूत्रं १५ ॥ चउत्थं पाहुडपाहुडं समत्तं ॥

॥ इति प्रथमप्राभृते चतुर्थं प्राभृतप्राभृतम् ॥ १—४ ॥

॥ अथ प्रथमप्राभृते पञ्चमं प्राभृतप्राभृतम् ॥

ता केवइयं ते दीवं वा समुद्दं वा ओगाहित्ता सूरिए चारं चरइ आहितेति वदेज्जा ? तत्थ खलु इमाओ पंच पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ, तंजहा–तत्थेगे एवमाहंसु–ता एगं जोयणसहस्सं एगं च तेत्तीसं जोयणसयं दीवं वा समुद्दं वा ओगाहित्ता सूरिए चारं चरइ, एगे एवमाहंसु १, एगे पुण एवमाहंसु–ता एगं जोयणसहस्सं एगं च चउत्तीसं जोयणसयं दीवं वा समुद्दं वा ओगाहित्ता सूरिए चारं चरइ, एगे एवमाहंसु २, एगे पुण एवमाहंसु–ता एगं जोयणसहस्सं एगं च पणतीसं जोयणसयं दीवं वा समुद्दं वा ओगाहित्ता सूरिए चारं चरइ, एगे एवमाहंसु ३, एगे पुण एवमाहंसु–ता अवड्ढं दीवं वा समुद्दं वा ओगाहित्ता सूरिए चारं चरइ, एगे एवमाहंसु ४, एगे पुण एवमाहंसु–ता नो किंचि दीवं वा समुद्दं वा ओगाहित्ता सूरिए चारं चरइ, एगे एवमाहंसु ५, १ । तत्थ जे ते एवमाहंसु–ता एगं जोयणसहस्सं एगं च तेत्तीसं जोयणसयं दीवं वा समुद्दं वा ओगाहित्ता सूरिए चारं चरइ ते एवमाहंसु–जया णं सूरिए सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ, तया णं जंबुद्दीवं दीवं एगं जोयणसहस्सं एगं तेत्तीसं जोयणसयं ओगाहित्ता सूरिए चारं चरइ, तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ २ । ता जया णं सूरिए सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं लवणसमुद्दं एगं जोयणसहस्सं एगं च तेत्तीसं जोयणसयं ओगाहित्ता चारं चरइ, तया णं उत्तमकट्ठपत्ता उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ, जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ १, ३ ।

एवं चोत्तीसेऽवि २, पणतीसे वि एवं चेव भाणियव्वं ३, ४। तत्थ णं जे ते एवमाहंसु—ता अवड्ढं दीवं वा समुद्दं वा ओगाहित्ता सूरिए चारं चरइ ते एवमाहंसु—जया णं सूरिए सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं अवड्ढं जंबुद्दीवं दीवं ओगाहित्ता चारं चरइ तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ, एवं सव्वबाहिरेवि, णवरं अवड्ढं लवणसमुद्दं तया णं राइं दियं तहेव ४, ५। तत्थ णं जे ते एवमाहंसु—ता णो किंचि दीवं वा समुद्दं वा ओगाहित्ता सूरिए चारं चरइ, ते एवमाहंसु—ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं णो किंचि दीवं वा समुद्दं वा ओगाहित्ता सूरिए चारं चरइ तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तहेव एवं सव्वबाहिरए मंडले, णवरं णो किंचि लवणसमुद्दं ओगाहित्ता चारं चरइ, राइं दियं तहेव, एगे एवमाहंसु ५, ६ ॥ सूत्रं १६ ॥ वयं पुण एवं वयामो ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं जंबुद्दीवं दीवं असीतं जोयणसयं ओगाहित्ता चारं चरइ, तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ १। एवं सव्वबाहिरेवि, (ता जया णं सूरिए सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं) णवरं लवणसमुद्दं तिण्णि तीसे जोयणसते ओगाहित्ता चारं चरइ, तया णं उत्तमकट्ठपत्ता उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ, गाथाओ भाणितव्वाओ २ ॥ सूत्रं १७ ॥ पढमस्स पंचमं पाहुडपाहुडं।

इति प्रथमप्राभृते पञ्चमं प्राभृतप्राभृतम् ॥१-५॥

......

॥ अथ प्रथमप्राभृते षष्ठं प्राभृतप्राभृतम् ॥

ता केवइयं ते एगमेगेणं राइंदिएणं विकंपइत्ता २ सूरिए चारं चरइ आहितेति वदेज्जा ? तत्थ खलु इमाओ सत्त पडिवत्तीओ, पराणत्ताओ, तंजहा–तत्थेगे एवमाहंसु–ता दो जोयणाइं अद्धदुचत्तालीसे तेसीइं सयभागे जोयणस्स एगमेगेणं राइंदिएणं विकंपइत्ता २ सूरिए चारं चरइ, एगे एवमाहंसु १, एगे पुण एवमाहंसु–ता अड्ढाइज्जाइं जोयणाइं एगमेगेणं राइंदिएणं विकंपइत्ता २ सूरिए चारं चरइ, एगे एवमाहंसु २, एगे पुण एवमाहंसु–ता तिभागूणाइं तिन्नि जोयणाइं, एगमेगेणं राइंदिएणं विकंपइत्ता २ सूरिए चारं चरइ, एगे एवमाहंसु ३, एगे पुण एवमाहंसु–ता तिरिण जोयणाइं अद्धसीतालीसं च तेसीइसयभागे जोयणस्स एगमेगेणं राइंदिएणं विकंपइत्ता २ सूरिए चारं चरइ, एगे एवमाहंसु ४, एगे पुण एवमाहंसु–ता अद्धुट्ठाइं जोयणाइं एगमेगेणं राइंदिएणं विकंपइत्ता २ सूरिए चारं चरइ, एगे एवमाहंसु ५, एगे पुण एवमाहंसु–ता चउब्भागूणाइं चत्तारि जोयणाइं एगमेगेणं राइंदिएणं विकंपइत्ता २ सूरिए चारं चरइ, एगे एवमाहंसु ६, एगे पुण एवमाहंसु–ता चत्तारि जोयणाइं अद्धवावराणं च तेसीइसयभागे जोयणस्स एगमेगेणं राइंदिएणं विकंपइत्ता २ सूरिए चारं चरइ, एगे एवमाहंसु ७, १ । वयं पुण एवं वयामो–ता दो जोयणाइं अडयालीसं च एगट्ठिभागे जोयणस्स एगमेगं मंडलं एगमेगेणं राइंदिएणं विकंपइत्ता २ सूरिए चारं चरइ २ । तत्थ णं को हेऊ इति वदेज्जा ? ता अयराणं जंबुद्दीवे दीवे जाव परिक्खेवेणं परागात्ते, ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहरिणया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ २ । से णिक्खममाणे सूरिए णवं संवच्छरं अयमाणे पढमंसि अहोरत्तंसि अब्भितराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ ३ । ता

जया णं सूरिए अब्भिंतराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं दो जोयणाइं अडयालीसं च एगट्ठिभागे जोयणस्स एगेणं राइंदिएणं विकंपइत्ता २ चारं चरइ तया णं अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणे, दुवालसमुहुत्ता राई भवइ दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिया ४ । से णिक्खममाणे सूरिए दोच्चंसि अहोरत्तंसि अब्भितरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ ५ । ता जया णं सूरिए अब्भिंतरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं पंच जोयणाइं पणतीसं च एगट्ठिभागे जोयणस्स दोहिं राइंदिएहिं विकंपइत्ता चारं चरइ तया णं अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ चउहि एगट्ठिभागमुहुत्तेहि ऊणे, दुवालसमुहुत्ता राई भवइ चउहि एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिया ६ । एवं खलु एएणं उवाएणं णिक्खममाणे सूरिए तयाणंतराओ मंडलाओ तयाणंतरं मंडलं संकममाणे २ दो जोयणाइं अडयालीसं च एगट्ठिभागे जोयणस्स एगमेगं मंडलं एगमेगेणं राइंदिएहिं विकंपमाणे २ सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ ७ । ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतराओ मंडलाओ सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं सव्वब्भंतरं मंडलं पणिहाय एगेणं तेसीएणं राइंदियसएणं पंचदसुत्तरजोयणसए विकंपइत्ता चारं चरइ तया णं उत्तमकट्ठपत्ता उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ, जहएणए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ ८ । एस णं पढमे छम्मासे, एस णं पढमस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे ९ । से पविसमाणे सूरिए दोच्चं छम्मासं अयमाणे पढमंसि अहोरत्तंसि बाहिराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ १० । ता जया णं सूरिए बाहिराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं दो जोयणाइं अडयालीसं च एगट्ठिभागे जोयणस्स एगेणं राइंदिएणं विकंपइत्ता चारं चरइ तया णं अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ, दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहि ऊणा, दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिए ११ । से पवि-

समाणे सूरिए दोच्चंसि अहोरत्तंसि बाहिरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ १२। ता जया णं सूरिए बाहिरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं पंचजोयणाइं पणतीसं च एगट्ठिभागे जोयणस्स दोहिं राइंदिएहिं विकंपइत्ता २ चारं चरइ तया णं अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणा, दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिए १३। एवं खलु एएणं उवाएणं पविसमाणे सूरिए तयाणंतराओ मंडलाओ तयाणंतरं मंडलं संकममाणे २ दो जोयणाइं अडयालीसं च एगट्ठिभागे जोयणस्स एगमेगं मंडलं एगमेगेणं राइंदिएणं विकंपमाणे २ सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ १४। ता जया णं सूरिए सव्वबाहिराओ मंडलाओ सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं सव्वबाहिरं मंडलं पणिहाय एगेणं तेसीएणं राइंदियसएणं पंचदसुत्तरे जोयणसए विकंपइत्ता चारं चरइ, तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ १५। एस णं दोच्चे छम्मासे, एस णं दोच्चस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे, एस णं आइच्चे संवच्छरे, एस णं आइच्चस्स संवच्छरस्स पज्जवसाणे १६॥ सूत्रं १८॥ छट्ठं पाहुडपाहुडं॥

॥ इति प्रथमप्राभृते षष्ठं प्राभृतप्राभृतम् ॥ १—६ ॥

॥ अथ प्रथमप्राभृते सप्तमं प्राभृतप्राभृतम् ॥

ता कहं ते मंडलसंठिई आहितेति वदेज्जा ? तत्थ खलु इमाओ अट्ठ पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ, तंजहा—तत्थेगे एवमाहंसु—ता सव्वावि णं मंडलावता समचउरंस-संठाणसंठिया पण्णत्ता, एगे एवमाहंसु १, एगे पुण एवमाहंसु—ता सव्वावि णं मंडलावता विसमचउरंस-संठाणसंठिया पण्णत्ता, एगे एवमाहंसु २, एगे पुण एवमाहंसु—ता सव्वावि णं मंडलावता समचउ-

कोणसंठिया पराणत्ता, एगे एवमाहंसु ३, एगे पुण एवमाहंसु—ता सव्वावि णं मंडलावता विसमचउक्कोणसंठिया पराणत्ता, एगे एवमाहंसु ४, एगे पुण एवमाहंसु—ता सव्वावि णं मंडलावता समचक्कवालसंठिया पराणत्ता, एगे एवमाहंसु ५, एगे पुण एवमाहंसु—ता सव्वावि णं मंडलावता विसमचक्कवालसंठिया पराणत्ता, एगे एवमाहंसु ६, एगे पुण एवमाहंसु—ता सव्वावि णं मंडलावता चक्कद्धचक्कवालसंठिया पराणत्ता, एगे एवमाहंसु ७, एगे पुण एवमाहंसु—ता सव्वावि णं मंडलावता छत्तागारसंठिया पराणत्ता, एगे एवमाहंसु ८, १। तत्थ जे ते एवमाहंसु—ता सव्वाविणं मंडलावता छत्तागारसंठिया पराणत्ता, एएणं णएणं णायव्वं, णो चेव णं इयरेहिं २ ॥सूत्रं ११॥ पढमस्स पाहुडस्स सत्तमं पाहुड पाहुडं समत्तं ॥१—७॥

॥ अथ प्रथमप्राभृते अष्टमं प्राभृतप्राभृतम् ॥

ता सव्वा वि णं मंडलवया केवइयं बाहल्लेणं केवइयं आयामविक्खंभेणं, केवइयं परिक्खेवेणं आहियाति वदेज्जा ? तत्थ खलु इमा तिरिण पडिवत्तीओ पराणत्ताओ, तंजहा—तत्थेगे एवमाहंसु—ता सव्वावि णं मंडलवया जोयणं बाहल्लेणं एगं जोयणसहस्सं एगं तेत्तीसं जोयणसयं आयामविक्खंभेणं, तिरिण जोयणसहस्साइं तिरिण य णवणउई जोयणसते परिक्खेवेणं पराणत्ता, एगे एवमाहंसु १, एगे पुण एवमाहंसु—ता सव्वा वि णं मंडलवया जोयणं बाहल्लेणं, एगं जोयणसहस्सं एगं च चउत्तीसं जोयणसयं आयामविक्खंभेणं तिरिण जोयणसहस्साइं चत्तारि बिउत्तराइं जोयणसयाइं परिक्खेवेणं पराणत्ता, एगे एवमाहंसु २, एगे पुण एवमाहंसु—ता सव्वा वि णं मंडलवया जोयणं बाहल्लेणं, एगं जोयणसहस्सं एगं च पणतीसं जोयणसयं आयामविक्खंभेणं, तिरिण जोयणसहस्साइं चत्तारि पंचुत्तराइं जोयणसयाइं परिक्खेवेणं पराणत्ता, एगे एवमाहंसु ३, १ ।

वयं पुण एवं वयामो—ता सव्वावि णं मंडलवया अडयालीसं एगट्ठिभागे जोयणस्स बाहल्लेणं अणियया आयामविक्खंभपरिक्खेवेणं आहियाति वदेज्जा २। तत्थ णं को हेऊ? त्ति वदेज्जा? ता अयण्णं जंबुद्दीवे दीवे जाव परिक्खेवेणं ता जया णं सुरिए सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं सा मंडलवया अडयालीसं एगट्ठिभागे जोयणस्स बाहल्लेणं, णवणउइजोयणसहस्साइं छच्च चत्ताले जोयणसयाइं आयामविक्खंभेणं, तिण्णि जोयणसयसहस्साइं पण्णरसजोयणसहस्साइं एगूणणउई जोयणाइं किंचिविसेसाहिए परिक्खेवेणं, तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ ३। से णिक्खममाणे सूरिए णवं संवच्छरं अयमाणे पढमंसि अहोरत्तंसि अब्भितराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ ४। ता जया णं सूरिए अब्भितराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं सा मंडलवया अडयालीसं एगट्ठिभागा जोयणस्स बाहल्लेणं, णवणवइं जोयणसहस्साइं छच्च पणयाले जोयणसते पणतीसं च एगट्ठिभागे जोयणस्स आयामविक्खंभेणं, तिण्णि जोयणसयसहस्साइं पण्णरसं च सहस्साइं एगं सत्तुत्तरं जोयणसयं किंचि विसेसूणं परिक्खेवेणं तया णं दिवसरातिप्पमाणं तहेव (तया णं अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणे, दुवालसमुहुत्ता राई भवइ दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिया) ५। से निक्खममाणे सूरिए दोच्चंसि अहोरत्तंसि अब्भितरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ ६। ता जया णं सूरिए अब्भितरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं सा मंडलवया अडयालीसं एगट्ठिभागा जोयणस्स बाहल्लेणं, णवणवइजोयणसहस्साइं छच्च एकावन्ने जोयणसते णव य एगट्ठिभागा जोयणस्स आयामविक्खंभेणं, तिण्णि जोयणसयसहस्साइं पण्णरस य सहस्साइं एगं च पणवीसं जोयणसयं परिक्खेवेणं पण्णत्ता, तया णं दिवस-

राई तहेव (तया णं अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणे, दुवालसमुहुत्ता राई भवइ चउहि एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिया) ७। एवं खलु एएणं उवाएणं निक्खममाणे सूरिए तयाणंतराओ मंडलाओ तयाणंतरं मंडलं उवसंकममाणे २ पंच २ जोयणाइं पणतीसं च एगट्ठिभागे जोयणस्स एगमेगे मंडले विक्खंभवुड्ढिं अभिवड्ढेमाणे २ अट्ठारस २ जोयणाइं परिरयवुड्ढिं अभिवड्ढेमाणे २ सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ ८। ता जया णं सूरिए सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं सा मंडलवया अडयालीसं एगट्ठिभागा जोयणस्स बाहल्लेणं एगं च जोयणसयसहस्सं छच्चसट्ठे जोयणसते आयामविक्खंभेणं, तिण्णि जोयणसयसहस्साइं अट्ठारससहस्साइं तिण्णि य पणणरसुत्तरे जोयणसते परिक्खेवेणं, तया णं उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ, जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ ९। एस णं पढमे छम्मासे, एस णं पढमस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे १०। से पविसमाणे सूरिए दोच्चं छम्मासं अयमाणे पढमंसि अहोरत्तंसि बाहिराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ ११। ता जया णं सूरिए बाहिराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं सा मंडलवया अडयालीसं एगट्ठिभागा जोयणस्स बाहल्लेणं, एगं जोयणसयसहस्सं छच्च चउप्पण्णे जोयणसयाइं छव्वीसं च एगट्ठिभागा जोयणस्स आयामविक्खंभेणं, तिण्णि जोयणसयसहस्साइं अट्ठारससहस्साइं दोण्णि य सत्ताणउए जोयणसयाइं परिक्खेवेणं पण्णत्ते तता णं राईदियं तहेव, (तया णं अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणा, दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिए) १२। से पविसमाणे सूरिए दोच्चंसि अहोरत्तंसि बाहिरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ १३। ता जया णं सूरिए बाहिरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं सा मंडलवया अडयालीसं एगट्ठिभागा जोयणस्स बाहल्लेणं, एगं जोयण-

सयसहस्सं छच्च अडयाले जोयणसते बावरणं च एगट्ठिभागा जोयणस्स आयामविक्खंभेणं, तिरिण जोयणसयसहस्साइं अट्ठारससहस्साइं दोरिण च एगूणासीते जोयणसते परिक्खेवेणं पराणत्ते, दिवसराई तहेव, (तया णं अट्ठारस-मुहुत्ता राई भवइ चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणा, दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिए) १४। एवं खलु एएणं उवाएणं पविसमाणे सूरिए तयाणंतराओ मंडलाओ तयाणंतरं मंडलं संकममाणे २ पंच २ जोयणाइं पणतीसं च एगट्ठिभागे जोयणस्स एगमेगे मंडले विक्खंभवुड्ढिं निव्वुड्ढेमाणे २ अट्ठारसजोयणाइं परिरयवुड्ढिं णिव्वुड्ढे-माणे २ सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ १५। ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं सा मंडलवया अडयालीसं एगट्ठिभागा जोयणस्स बाहल्लेणं, णवणवइं जोयणसहस्साइं छच्च चत्ताले जोयणसते आयामविक्खंभेणं, तिरिण जोयण-सयसहस्साइं पराणरससहस्साइं अउणाणउईं च जोयणाइं किंचिविसेसाहि-याइं परिक्खेवेणं पराणत्ते, तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहरिणया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ १६। एस णं दोच्चे छम्मासे, एस णं दोच्चस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे, एस णं आइच्चे संवच्छरे, एस णं आइच्चस्स संवच्छरस्स पज्जवसाणे १७। ता सव्वा वि णं मंडलवया अडयालीसं च एगट्ठिभागे जोयणस्स बाहल्लेणं, सव्वा वि णं मंडलंतरिया दो जोयणाइं विक्खंभेणं, एस णं अद्धा तेसीयसतपडुप्पराणे (एगे तेयासीई जोयणसए सपडिपुराणा) पंचदसुत्तरे जोयणसते आहितेति वदेज्जा १८। ता अब्भितराओ मंडलवयाओ बाहिरं मंडलवयं बाहिराओ वा मंडल-वयाओ अब्भितरं मंडलवयं एस णं अद्धा केवतियं आहिताति वदेज्जा? ता पंचसुत्तर-जोयणसते आहिताति वदेज्जा १९। अब्भितराते मंडल-वताते बाहिरा मंडलवया एस णं अद्धा केवतियं आहिताति वदेज्जा? ता

पंचदसुत्तरे जोयणसये अडयालीसं च एगसट्ठिभागे जोयणस्स अहिया २० । ता अब्भितराओ मंडलवयाओ बाहिरमंडलवया बाहिराओ मंडलवयाओ अब्भितरा मंडलवया, एस णं अद्धा केवतियं आहितातिं वदेज्जा ? ता पंचनवुत्तरे जोयणसते तेरस एगट्ठिभागे जोयणस्स आहितेति वदेज्जा २१ । अब्भितराओ मंडलवयाओ बाहिरा मंडलवया बाहिराए मंडलवयाए अब्भितरमंडलवया, एस णं अद्धा केवइया आहितेति वदेज्जा ?, ता पंचदसुत्तरे जोयणसये आहितेति वदेज्जा २२ ॥ सू० २० ॥ अट्ठम पाहुड-पाहुडं पढमं पाहुडं समत्तं ॥ १ ॥

॥ इति प्रथमप्राभृते अष्टमं प्राभृतप्राभृतम् ॥१-८॥ इति प्रथमं प्राभृतम् ॥ १ ॥

॥ अथ द्वितीयप्राभृते प्रथमं प्राभृतप्राभृतम् ॥

ता कहं ते तेरिच्छगई आहितेति वएज्जा ? तत्थ खलु इमाओ अट्ठ पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ, तंजहा-तत्थेगे एवमाहंसु-ता पुरत्थिमातो लोयंतातो पाओ मरीची आगासंसि उट्ठेइ, से णं इमं लोयं तिरियं करेइ, करित्ता पच्चत्थिमंसि लोयंतंसि सायं सूरिए आगासंसि विद्धंसइ एगे एवमाहंसु १, एगे पुण एवमाहंसु-ता पुरत्थिमाओ लोयंताओ पाओ सूरिए आगासंसि उट्ठेइ से णं इमं लोयं तिरियं करेइ, करित्ता पच्चत्थिमंसि लोयंतंसि सायं सूरिए आगासंसि विद्धंसइ, एगे एवमाहंसु २, एगे पुण एवमाहंसु-ता पुरत्थि-माओ लोयंताओ पाओ सूरिए आगासंसि उत्तिट्ठइ, से णं इमं लोयं तिरियं करेइ, करित्ता पच्चत्थिमंसि लोयंतंसि सायं सूरिए आगासं अणुपविसइ २ अहे पडियागच्छइ २ पुणरवि अवरभूपुरत्थिमाओ लोयंताओ पाओ सूरिए आगासंसि उत्तिट्ठइ, एगे एवमाहंसु ३, एगे पुण एवमाहंसु-ता पुरत्थिमाओ लोयंताओ पाओ सूरिए पुढविओ उत्तिट्ठइ, से णं इमं लोयं तिरियं करेइ, करित्ता पच्चत्थिमिल्लंसि लोयंतंसि सायं सूरिए पुढवि-

कायंसि विद्धंसइ, एगे एवमाहंसु ४, एगे पुण एवमाहंसु—ता पुरत्थिमाओ लोयं ताओ पाओ सूरिए पुढविओ उत्तिट्ठइ, से णं इमं तिरियं लोयं करेइ करित्ता पच्चत्थिमंसि लोयंतंसि सायं सूरिए पुढविकायं अणुपविसइ २ अहे पडियागच्छइ २ पुणरवि अवरभूपुरत्थिमाओ लोयंताओ पाओ सूरिए पुढविओ उत्तिट्ठइ, एगे एवमाहंसु ५, एगे पुण एवमाहंसु ता पुरत्थिमिल्लाओ लोयंताओ पाओ सूरिए आउकायंसि उत्तिट्ठइ, से णं इमं लोयं तिरियं करेइ २ पच्चत्थिमंसि लोयंतंसि सायं सूरिए आउकायंसि विद्धंसइ एगे एवमाहंसु ६, एगे पुण एवमाहंसु—ता पुरत्थिमाओ लोयंताओ पाओ सूरिए आउओ उत्तिट्ठइ, से णं इमं तिरियं लोयं करेइ २ पच्चत्थिमंसि लोयंतंसि सायं सूरिए आउकायंसि पविसइ २ अहे पडियागच्छइ २ पुणरवि अवरभूपुरत्थिमाओ लोयंताओ पाओ सूरिए आउओ उत्तिट्ठइ, एगे एवमाहंसु ७, एगे पुण एवमाहंसु—ता पुरत्थिमाओ लोयंताओ बहूइं जोयणाइं, बहूइं जोयणसयाइं, बहूइं जोयणसहस्साइं, उड्ढं दूरं उप्पइत्ता एत्थ णं पाओ सूरिए आगासंसि उत्तिट्ठइ, से णं इमं दाहिणड्ढं लोयं तिरियं करेइ, करित्ता उत्तरड्ढलोयं तमेव राओ, से णं इमं उत्तरड्ढलोयं तिरियं करेइ, करित्ता दाहिणड्ढलोयं तमेव राओ, से णं इमाइं दाहिणउत्तरड्ढलोयाइं तिरियं करेइ करित्ता पुरत्थिमाओ लोयंताओ बहूइं जोयणाइं बहूइं जोयणसयाइं, बहूइं जोयणसहस्साइं उड्ढं दूरं उप्पइत्ता एत्थ णं पाओ सूरिए आगासंसि उत्तिट्ठइ, एगे एवमाहंसु ८, १। वयं पुण एवं वयामो—ता जंबूद्दीवस्स दीवस्स पाईणपडीणायय—उदीण-दाहिणाययाए जीवाए मंडलं चउव्वीसेणं सएणं छेत्ता दाहिणपुरत्थिमंसि उत्तरपच्चत्थिमंसि य चउब्भागमंडलंसि इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए बहुसम-रमणिज्जाओ भूमिभागाओ अट्ठजोयणसयाइं उड्ढं उप्पइत्ता एत्थ णं पाओ दुवे सूरिया आगासाओ उत्तिट्ठंति २। ते णं इमाइं दाहिणुत्तराइं जंबूद्दीव-

भागाइं तिरियं करेंति त्ता पुरत्थिमपच्चत्थिमाइं जंबूदीवभागाइं मामेव राम्रो, ते णं इमाइं पुरत्थिमपच्चत्थिमाइं जंबूदीवभागाइं तिरियं करेंति त्ता दाहिणु-त्तराइं जंबूदीवभागाइं तमेव राम्रो ३ । ते णं इमाइं दाहिणुत्तराइं पुरत्थिम-पच्चत्थिमाइं जंबूद्दीवभागाइं तिरियं करेंति त्ता जंबूदीवस्स दीवस्स पाईणपडिणा-यय-उदीणदाहिणायययाए जीवाए मंडलं चउव्वीसेणं सएणं छेत्ता दाहिणपुर-त्थिमिल्लंसि उत्तरपच्चत्थिमिल्लंसि य चउब्भागमंडलंसि इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाम्रो भूमिभागाम्रो अट्ठजोयणसयाइं उड्ढं उप्पइत्ता, एत्थ णं पाम्रो दुवे सूरिया आगासंसि उत्तिट्ठंति ४ ॥सूत्रं २१॥ बितियस्स पढमं ॥

॥ इति द्वितीयप्राभृते प्रथमं प्राभृतप्राभृतम् ॥ २—१ ॥

। अथ द्वितीयप्राभृते द्वितीयं प्राभृतप्राभृतम् ॥

ता कहं ते मंडलाम्रो मंडलं संकममाणे २ सूरिए चारं चरइ आहिएति वएज्जा ? तत्थ खलु इमाम्रो दुवे पडिवत्तीम्रो पराणत्ताम्रो, तंजहा—तत्थेगे एवमाहंसु—ता मंडलाम्रो मंडलं संकममाणे २ सूरिए भेयघाएणं संकामइ, एगे एवमाहंसु १, एगे पुण एवमाहंसु—ता मंडलाम्रो मंडलं संकममाणे सूरिए कराणकलं निव्वेढेइ, एगे एवमाहंसु २, १ । तत्थ णं जे ते एवमाहंसु—ता मंडलाम्रो मंडलं संकममाणे २ सूरिए भेयघाएणं संकामइ, तेसि णं अयं दोसे—ता जेणंतरेणं मंडलाम्रो मंडलं संकममाणे २ सूरिए भेयघाएणं संकमइ एवइयं च णं अद्धं पुरम्रो न गच्छइ, पुरम्रो, पुरतो अगच्छमाणे मंडलकालं परिहवेइ, तेसि णं अयं दोसे १, तत्थ णं जे ते एवमाहंसु—ता मंडलाम्रो मंडलं संकममाणे सूरिए कराणकलं णिव्वेढेइ, तेसि णं अयं विसेसे—ता जेणंतरेणं मंडलाम्रो मंडलं संकम-माणे सूरिए कराणकलं णिव्वेढेइ, तेसि णं अयं विसेसे—ता जेणंतरेणं मंडलाम्रो मंडलं संकममाणे सूरिए कराणकलं निव्वेढेति, एवइयं च

णं अद्धं पुरओ गच्छइ, पुरओ गच्छमाणे मंडलकालं ण परिहवेइ, तेसि णं अयं विसेसे २, तत्थ जे ते एवमाहंसु–मंडलाओ मंडलं संकममाणे सूरिए कणकलं णिव्वेढेइ, एएणं णएणं णेयव्वं णो चेव णं इयरेणं ॥ सूत्रं २२ ॥ बितियस्स पाहुडस्स बितियं ॥ २–२ ॥

॥ अथ द्वितीयप्राभृते तृतीयं प्राभृतप्राभृतम् ॥

ता केवइयं ते खेत्तं सूरिए एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छइ ? आहितेति वएज्जा ? तत्थ खलु इमाओ चत्तारि पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ, तंजहा–तत्थ एगे एवमाहंसु–ता छ छ जोयणसहस्साइं सूरिए एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छइ, एगे एवमाहंसु १, एगे पुण एवमाहंसु–ता पंच पंच जोयणसहस्साइं सूरिए एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छइ, एगे एवमाहंसु २, एगे पुण एवमाहंसु–ता चत्तारि चत्तारि जोयणसहस्साइं सूरिए एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छइ, एगे एवमाहंसु ३, एगे पुण एवमाहंसु–ता छवि पंचवि चत्तारि वि जोयणसहस्साइं सूरिए एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छइ एगे एवमाहंसु ४, १ । तत्थ णं जे ते एवमाहंसु–ता छ छ जोयणसहस्साइं सूरिए एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छइ, ते एवमाहंसु–ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ, तंसि च णं दिवसंसि एगं जोयणसयसहस्सं अट्ठ य जोयणसहस्साइ तावक्खेत्ते पण्णत्ते २ । ता जया णं सूरिए सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं उत्तमकट्ठपत्ता उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ, जहन्नए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तंसि च णं दिवसंसि बावत्तरिं जोयणसहस्साइं तावक्खेत्ते पण्णत्ते तया णं छ छ जोयणसहस्साइं सूरिए एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छइ १, ३ । तत्थ णं जे ते एवमाहंसु–ता पंच पंच जोयणसहस्साइं सूरिए एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छइ

ते एवमाहंसु–ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ तंसि च णं दिवसंसि नउइजोयणसहस्साइं तावक्खेत्ते पण्णत्ते ४। जया णं सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं उत्तमकट्ठपत्ता उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ, जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ तंसि च णं दिवसंसि सट्ठिं जोयणसहस्साइं तावक्खेत्ते पण्णत्ते तया णं पंच पंच जोयणसहस्साइं सूरिए एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छइ २, ५। तत्थ णं जं ते एवमाहंसु–चत्तारि चत्तारि जोयणसहस्साइं सूरिए एगमेगेणं मुहुत्तेण गच्छइ ते एवमाहंसु–ता जया णं सूरिए सव्व-ब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं दिवस–राई तहेव, तंसि च णं दिवसंसि बावत्तरिं जोयणसहस्साइं तावक्खेत्ते पण्णत्ते ६। ता जया णं सूरिए सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं राइंदिवं तहेव, तंसि च णं दिवसंसि अडयालीसं जोयणसहस्साइं तावक्खेत्ते पण्णत्ते, तया णं चत्तारि २ जोयणसहस्साइं सूरिए एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छइ ३, ७। तत्थ णं जे ते एवमाहंसु छवि पंचवि चत्तारि वि जोयणसहस्साइं सूरिए एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छइ ते एवमाहंसु–ता सूरिए णं उग्गमणमुहुत्तंसि य अत्थमणमुहुत्तंसि य सिग्घगई भवइ तया णं छ छ जोयणसहस्साइ एग-मेगेणं मुहुत्तेणं गच्छइ, मज्झिमं तावक्खेत्तं समासाएमाणे २ सूरिए मज्झि-मगई भवइ तया णं पंच २ जोयणसहस्साइं एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छइ, मज्झिमं तावक्खेत्तं संपत्ते सूरिए मंदगई भवइ तया णं चत्तारि २ जोयण-सहस्साइं एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छइ, तत्थ को हेऊ त्ति वएज्जा ? ता अयण्णं जंबुद्दीवे दीवे जाव परिक्खेवेणं पण्णत्ते ८। ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता–राई

भवइ (दिवसराई तहेव), तंसि च णं दिवसंसि एकाणउइ-जोयणसहस्साइं तावक्खेत्ते पराणत्ते ६ । ता जया णं सूरिए सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं उत्तमकट्ठपत्ता उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ, जहराणए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ (राइंदियं तहेव), तंसि च णं दिवसंसि एगट्ठिजोयणसहस्साइं तावक्खेत्ते पराणत्ते तया णं छ वि पंच वि चत्तारि वि जोयणसहस्साइं सूरिए एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छइ, एगे एवमाहंसु ४, १० । वयं पुण एवं वयामो—ता साइरेगाइं पंच पंच जोयणसहस्साइं सूरिए एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छइ तत्थ को हेऊ त्ति वएज्जा ? ता अयं णं जंबुद्दीवे दीवे जाव परिक्खेवेणं पराणत्ते ११ । ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं पंच पंच जोयणसहस्साइं दोरिण य एकावराणे जोयणसयाइं एगूणतीसं च सट्ठिभागे जोयणस्स एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छइ, तया णं इहगयस्स मणुसस्स सीयालीसाए जोयणसहस्सेहिं, दोहि य तेवट्ठेहिं जोयणसएहिं, एक्कवीसाए य सट्ठिभागेहिं जोयणस्स सूरिए चक्खुप्फासं हव्वमागच्छइ तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहरिणया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ, (दिवसराई तहेव) १२ । से निक्खममाणे सूरिए णवं संवच्छरं अयमाणे पढमंसि अहोरत्तंसि अब्भिंतराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ १३ । ता जया णं सूरिए अब्भिंतराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं पंच पंच जोयणसहस्साइं दोरिण य एकावराणे जोयणसते सीयालीसं च सट्ठिभागे जोयणस्स एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छइ तया णं इह गयस्स मणूसस्स सीयालीसाए जोयणसहस्सेहिं अउणासीए य जोयणसए णं सत्तावराणाए य सट्ठिभागेहिं जोयणस्स, सट्ठिभागं च एगट्ठिहा छेत्ता एगूणवीसाए चुरिणयाभागेहिं सूरिए चक्खुप्फासं हव्वमागच्छइ, तया णं उत्तमकट्ठपत्ते अट्ठारस मुहुत्ते दिवसे भवइ दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं हीणे, दुवालसमुहुत्ता राई भवति चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिया

(दिवसराई तहेव) १४। से निक्खममाणे सूरिए दोच्चंसि अहोरत्तंसि अब्भिंतरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ १५ । ता जया णं सूरिए अब्भिंतरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं पंच २ जोयणसहस्साइं दोण्णि य बावण्णे जोयणसते पंच य सट्ठिभाए जोयणस्स एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छइ तया णं इहगयस्स मणूसस्स सीयालीसाए जोयणसहस्सेहिं छण्णउईए य जोयणेहिं तेत्तीसाए य सट्ठिभागेहिं जोयणस्स सट्ठिभागं च एगसट्ठिहा छेत्ता दोहिं चुण्णियाभागेहिं सूरिए चक्खुप्फासं हव्वमागच्छइ, तया णं अट्ठारस मुहुत्ते दिवसे भवइ, चउहिं एगसट्ठिभागमुहुत्तेहिं हीणे, दुवालसमुहुत्ता राई भवइ चउहिं एगसट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिया (दिवसराई तहेव) १६ । एवं खलु एएणं उवाएणं णिक्खममाणे सूरिए तयाणंतराओ तयाणंतरं मंडलाओ मंडलं संकममाणे २ अट्ठारस २ सट्ठिभागे जोयणस्स एगमेगे मंडले मुहुत्तगइं अभिवुड्ढेमाणे २ चुलसीइं २ सताइं जोयणाइं पुरिसच्छायं णिव्वुड्ढेमाणे २ सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ १७। ता जया णं सूरिए सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं पंच २ जोयणसहस्साइं तिन्नि य पंचुत्तरे जोयणसते पण्णरस य सट्ठिभागे जोयणस्स एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छइ, तया णं इहगयस्स मणूसस्स एक्कतीसाए जोयणसहस्सेहिं अट्ठहिं एक्कतीसेहिं जोयणसएहिं तीसाए य सट्ठिभागेहिं जोयणस्स सूरिए चक्खुप्फासं हव्वमागच्छइ तया णं उत्तमकट्ठपत्ता उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ, जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ १८। एस णं पढमे छम्मासे, एस णं पढमस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे १९ । से पविसमाणे सूरिए दोच्चं छम्मासं अयमाणे पढमंसि अहोरत्तंसि बाहिराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ २० । ता जया णं सूरिए बाहिराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं पंच २ जोयणसहस्साइं तिण्णि य चउरुत्तरे जोयणसते सत्तावण्णं च सट्ठिभाए जोयणस्स एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छइ,

तया णं इहगयस्स मणूसस्स एक्कतीसाए जोयणसहस्सेहिं नवहि य सोल-
सुत्तरेहिं जोयणसएहिं एगूण चत्तालीसाए सट्ठिभागेहिं जोयणस्स, सट्ठिभागं
च एगट्ठिहा छेत्ता सट्ठीए चुणियाभागेहिं सूरिए चक्खुप्फासं हव्वमागच्छइ
तया णं अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ दोहिं एगसट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणा, दुवा-
लसमुहुत्ते दिवसे भवइ दोहिं एगसट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिए (राइदियं तहेव)
२१। से पविसमाणे सूरिए दोच्चंसि अहोरत्तंसि बाहिरं तच्चं मंडलं
उवसंकमित्ता चारं चरइ २२। ता जया णं सूरिए बाहिरं तच्चं मंडलं
उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं पंच २ जोयणसहस्साइं तिन्नि य
चउरुत्तरे जोयणसते ऊतालीसं च सट्ठिभागे जोयणस्स एगमेगेणं
मुहुत्तेणं गच्छइ तया णं इहगयस्स मणूसस्स एगाहिएहिं बत्तीसाए
जोयणसहस्सेहिं एगूणपराणाए य सट्ठिभागेहिं जोयणस्स, सट्ठिभागं च
एगट्ठिहा छेत्ता तेवीसाए चुणियाभागेहिं सूरिए चक्खुप्फासं हव्वमा-
गच्छइ तया णं अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ चउहिं एगसट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणा,
दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ चउहिं एगसट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिए (राइदियं तहेव)
२३। एवं खलु एएणं उवाएणं पविसमाणे सूरिए तयाणंतराओ तयाणं-
तरं मंडलाओ मंडलं संकममाणे संकममाणे अट्ठारस २ सट्ठिभागे जोयणस्स
एगमेगे मंडले मुहुत्तगइं णिव्वुड्ढेमाणे २ साइरेगाइं पंचासीइं २ जोय-
णाइं पुरिसच्छायं अभिवुड्ढेमाणे २ सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं
चरइ २४। ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं
चरइ तया णं पंच २ जोयणसहस्साइं दोणि य एकावरणे जोयणसते
एगूणतीसं च सट्ठिभागे जोयणस्स एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छइ तया णं
इहगयस्स मणूसस्स सीयालीसाए जोयणसहस्सेहिं दोहि य तेवट्ठेहिं जोयण-
सएहि य एक्कवीसाए य सट्ठिभागेहिं जोयणस्स सूरिए चक्खुफासं हव्वमा-
गच्छइ तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ,

जहरिणया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ २५ । एस णं दोच्चे छम्मासे, एस णं दोच्चस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे, एस णं आइच्चे संवच्छरे, एस णं आइच्चसंवच्छरस्स पज्जवसाणे २६ ॥ सूत्रं २३ ॥ बितियं पाहुडं समत्तं ॥

॥ इति द्वितीयप्राभृते तृतीयं प्राभृतप्राभृतम् ॥ २-३ ॥

॥ इति द्वितीयं प्राभृतम् ॥ २ ॥

॥ अथ तृतीयं प्राभृतम् ॥

ता केवइयं खेत्तं चंदिमसूरिया ओभासेंति उज्जोवेंति तवेंति पगासेंति आहितेति वएज्जा ? तत्थ खलु इमाओ बारसपडिवत्तीओ पन्नत्ताओ, तं जहा—तत्थेगे एवमाहंसु—ता एगं दीवं एगं समुद्दं चंदिमसूरिया ओभासेंति उज्जोवेंति तवेंति पगासेंति एगे एवमाहंसु १, एगे पुण एवमाहंसु—ता तिण्णि दीवे तिण्णि समुद्दे चंदिमसूरिया ओभासेंति ४ एगे एवमाहंसु २, एगे पुण एवमाहंसु—ता अद्धचउत्थे (आहुट्ठे) दीवे-अद्धचउत्थे समुद्दे चंदिमसूरिया ओभासेंति ४, एगे एवमाहंसु ३, एगे पुण एवमाहंसु—ता सत्तदीवे सत्त समुद्दे चंदिमसूरिया ओभासेंति ४, एगे एवमाहंसु ४, एगे पुण एवमाहंसु—ता दसदीवे दससमुद्दे चंदिमसूरिया ओभासेंति ४, एगे एवमाहंसु ५, एगे पुण एवमाहंसु—ता बारस दीवे बारस-समुद्दे चंदिमसूरिया ओभासेंति ४, एगे एवमाहंसु ६, एगे पुण एवमा-हंसु—ता बायालीसं दीवे बायालीसं समुद्दे चंदिमसूरिया ओभासेंति ४, एगे एवमाहंसु ७, एगे पुण एवमाहंसु—ता बावत्तरिं दीवे बावत्तरिं समुद्दे चंदिमसूरिया ओभासेंति ४, एगे एवमाहंसु ८, एगे पुण एवमाहंसु—ता बायालीसं दीवसयं बायालीसं समुद्दसयं चंदिमसूरिया ओभासेंति ४, एगे एवमाहंसु ९, एगे पुण एवमाहंसु—ता बावत्तरिं दीवसयं बावत्तरिं समुद्दसयं चंदिमसूरिया ओभासेंति ४, एगे एवमाहंसु १०, एगे

पुण एवमाहंसु–ता बायालीसं दीवसहस्सं बायालीसं समुद्दसहस्सं चंदिमसूरिया ओभासेंति ४, एगे एवमाहंसु ११, एगे पुण एवमाहंसु–ता बावत्तरं दीवसहस्सं बावत्तरं समुद्दसहस्सं चंदिमसूरिया ओभासेंति उज्जोवेंति तवेंति पगासेंति, एगे एवमाहंसु १२, १ । वयं पुण एवं वयामो–ता अयं णं जंबुद्दीवे दीवे सव्वदीवसमुद्दाणं जाव परिक्खेवेणं पण्णत्ते २ । से णं एगाए जगईए सव्वओ समंता संपरिक्खित्ते ३ । सा णं जगई अट्ठजोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता एवं जहा जंबुद्दीवपण्णत्तीए जाव एवामेव सपुव्वावरेणं जंबुद्दीवे दीवे चोद्दस सलिलासयसहस्सा, छप्पण्णं च सलिलासहस्सा भवंतीतिमक्खायं ४ । जंबुद्दीवे णं दीवे पंच चक्कभागसंठिता आहितात्ति वएज्जा ५ । ता कहं जंबुद्दीवे दीवे पंचचक्कभागसंठिए आहिएति वएज्जा ? ता जया णं एए दुवे सूरिया सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरंति तया णं जंबुद्दीवस्स दीवस्स तिण्णि पंचचक्कभागे ओभासेंति उज्जोवेंति तवेंति पभासेंति, तं जहा–एगे वि सूरिए एगं दिवड्ढं पंचचक्कभागं ओभासेइ उज्जोवेइ तवेइ पगासेइ, एगे वि सूरिए एगं दिवड्ढं पंच चक्कभागं ओभासेइ उज्जोवेइ तवेइ पगासेइ तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ ६ । ता जया णं एए दुवे सूरिया सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरंति तया णं जंबुद्दीवस्स दीवस्स दोण्णि पंच चक्कभागे ओभासेंति उज्जोवेंति तवेंति पगासेंति, ता एगे वि सूरिए एगं पंचचक्कवालभागं ओभासेइ उज्जोवेइ तवेइ पगासेइ तया णं उत्तमकट्ठपत्ता उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ, जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ ७॥ सूत्रं २४॥ ततियं पाहुडं समत्तं॥ ३ ॥

॥ इति तृतीयं प्राभृतम् ॥ ३ ॥



॥ अथ चतुर्थं प्राभृतम् ॥

ता कहं ते सेयते संठिई आहियाति वएज्जा? तत्थ खलु इमा दुविहा संठिई पराणत्ता, तं जहा—चंदिमसूरियसंठिई य १ तावक्खेत्तसंठिई य २,१। ता कहं ते चंदिमसूरियसंठिई आहियाति वएज्जा? तत्थ खलु इमाओ सोलस पडिवत्तीओ पराणत्ताओ, तं जहा—तत्थेगे एवमाहंसु ता समचउरंस-संठिया णं चंदिमसूरियसंठिई पराणत्ता, एगे एवमाहंसु १, एगे पुण एवमा-हंसु—ता विसमचउरंससंठिया चंदिमसूरियसंठिई पराणत्ता, एगे एवमाहंसु २, एवं एएणं अभिलावेणं समचउक्कोणसंठिया ३, विसमचउक्कोणसंठिया ४, समचक्कवालसंठिया ५, विसमचक्कवालसंठिया ६, चक्कद्धचक्कवालसंठिया पराणत्ता, एगे एवमाहंसु ७, एगे पुण एवमाहंसु—ता छत्तागारसंठिया चंदिमसूरिय संठिती पन्नत्ता ८, गेहसंठिया ९, गेहावणसंठिया १०, पासायसंठिया ११, गोपुरसंठिया १२, पेच्छाघरसंठिया १३, वलभीसंठिया १४, हम्मियतल-संठिया १५, वालग्गपोइया संठिया चंदिमसूरियसंठिई पराणत्ता, एगे एवमाहंसु १६, २। तत्थ णं जे ते एवमाहंसु—ता समचउरंससंठिया चंदिम-सूरियसंठिई पराणत्ता, एएणं णएणं णेयव्वं नोचेव णं इयरेहिं ३। ता कहं ते तावक्खेत्तसंठिई आहियाति वएज्जा? तत्थ खलु इमाओ सोलस पडिवत्तीओ पराणत्ताओ, तं जहा—तत्थ णं एगे एवमाहंसु—ता गेहसंठिया तावक्खेत्तसंठिई पराणत्ता १, एवं ताओ चेव अट्ठ पडिवत्तीओ णेयव्वाओ जाव वालग्गपोइया संठिया तावक्खेत्तसंठिई पराणत्ता, एगे एवमाहंसु ८, एगे पुण एवमाहंसु—ता जस्संठिए जंबुद्दीवे दीवे तस्संठिया तावक्खेत्तसंठिई पराणत्ता, एगे एवमाहंसु ९, एगे पुण एवमाहंसु—ता जस्संठिए भारहे वासे तस्संठिया तावक्खेत्तसंठिई पराणत्ता, एगे एवमाहंसु १०, एवं उज्जाणसंठिया ११, निज्जाणसंठिया १२, एगओ णिसधसंठिया १३, दुहओ णिसह-

संठिया १४, एगे पुण एवमाहंसु—सेयणगसंठिया तावक्खेत्तसंठिई पराणत्ता एगे एवमाहंसु १५, एगे पुण एवमाहंसु—ता सेणगपट्ठसंठिया तावक्खेत्त-संठिई पराणत्ता एगे एमाहंसु १६, ३। वयं पुण एवं वयामो—ता उद्धीमुह-कलंबुया पुप्फसंठिया तावक्खेत्तसंठिई पराणत्ता अंतो संकुडा बाहिं वित्थडा, अंतो वट्टा बाहिं पिधुला, अंतो अंकमुहसंठिया बाहिं सत्थियमुहसंठिया, उभओ पासेणं तीसे दुवे बाहाओ अवट्ठियाओ भवंति, पणयालीसं पण-यालीसं जोयणसहस्साइं आयामेणं, तीसे दुवे बाहाओ अणवट्ठियाओ भवंति, तं जहा—सव्वब्भंतरिया चेव बाहा, सव्वबाहिरिया चेव बाहा ४। तत्थ को हेऊ त्ति वदेज्जा? ता अयराणं जंबुद्दीवे दीवे जाव परिक्खेवेणं ५। ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं उद्धीमुहकलंबुयापुप्फसंठिया तावक्खेत्तसंठिई आहियाति वएज्जा—अंतो संकुडा बाहिं वित्थडा, अंतो वट्टा बाहिं पिहुला, अंतो अंकमुहसंठिया बाहिं सत्थियमुहसंठिया, दुहओ पासेणं तीसे तहेव जाव सव्वबाहिरिया चेव बाहा ६। तीसे णं सव्वब्भंतरिया बाहा मंदरपव्वयंतेणं णव जोयणसहस्साइं, चत्तारि य छलसीते जोयणसते, णव य दसभागा जोयणस्स परिक्खेवेणं आहिताति वदेज्जा ७। ता से णं परिक्खेवविसेसे कओ आहिएति वएज्जा? ता जे णं मंदरस्स पव्वयस्स परिक्खेवे, तं परिक्खेवं तिहिं गुणित्ता दसहिं छित्ता दसहिं भागे हीरमाणे एस णं परिक्खेवविसेसे आहिएति वएज्जा, तीसे णं सव्वबाहिरिया बाहा लवणसमुद्दं ते णं चउणउई जोयण-सहस्साइं, अट्ठ य अट्ठसट्ठि जोयणसयाइं चत्तारि य दसभागे जोयणस्स परिक्खेवेणं आहियाति वएज्जा ८। ता से णं परिक्खेवविसेसे कओ आहिएति वएज्जा? ता जे णं जंबुद्दीवस्स दीवस्स परिक्खेवे, तं परिक्खेवं तिहिं गुणित्ता दसहिं छित्ता दसहिं भागे हीरमाणे एस णं परिक्खेवविसेसे आहिएति वएज्जा १०। ता से णं तावक्खेत्ते केवइए आयामेणं आहिएति

वएज्जा ? ता अट्ठुत्तरिं जोयणसहस्साइं तिरिणि य तेत्तीसे जोयणसते जोयणतिभागे य आयामेणं आहिएति वएज्जा ११ । तया णं किं संठिया अंधगारसंठिई आहियाति वएज्जा ? उद्धीमुहकलंबुया पुप्फसंठिया तहेव जाव बाहिरिया चेव बाहा १२ । तीसे णं सव्वब्भंतरिया बाहा मंदरपव्वयं-तेणं छज्जोयणसहस्साइं तिरिणि य चउवीसे जोयणसयाइं छच्च दस भागे जोयणस्स परिक्खेवेणं आहियाति वएज्जा १३ । तीसे णं परिक्खेवविसेसे कओ आहिएति वएज्जा ? ता जे णं मंदरस्स पव्वयस्स परिक्खेवे, तं परि-क्खेवं दोहिं गुणेत्ता सेसं तहेव १४ । तीसे णं सव्वबाहिरिया बाहा लवणसमुद्दंतेणं तेवट्ठिजोयणसहस्साइं, दोरिणि य पणयाले जोयणसते छच्च दसभागा जोयणस्स परिक्खेवेणं आहियाति वएज्जा १५ । ता से णं परिक्खेवविसेसे कओ आहिएति वएज्जा ? ता जे णं जंबुद्दीवस्स दीवस्स परिक्खेवे, तं परिक्खेवं दोहिं गुणित्ता दसहिं छेत्ता, दसहि भागे हीरमाणे एस णं परिक्खेवविसेसे आहिएति वएज्जा १६ । ता से णं अंधयारे केवइए आयामेणं आहिएति वएज्जा ? ता अट्ठुत्तरिं जोयणसहस्साइं तिरिणि य तेत्तीसाइं जोयणसयाइं, जोयणतिभागं च आयामेणं आहिएति वएज्जा, तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहरिणया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ १७ । ता जया णं सूरिए सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं किं संठिया तावक्खेत्तसंठिई आहियाति वएज्जा ? ता उद्धीमुह-कलंबुयापुप्फसंठिया तावक्खेत्तसंठिई आहियाति वएज्जा १८ । एवं जं अब्भितरमंडले अंधयारसंठिईए पमाणं तं बाहिरमंडले तावक्खेत्तसंठिईए पमाणं जं तहिं तावक्खेत्तसंठिईए तं बाहिरमंडले अंधयार-संठिईए भाणियव्वं जाव तया णं उत्तमकट्ठपत्ता उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ, जहरणए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ १९ । ता जंबुद्दीवेणं दीवे सूरिया केवइयं खेत्तं उड्ढं तवेंति ? केवइयं खेत्तं अहे तवेंति ? केवइयं खेत्तं

तिरियं तवेंति ? ता जंबुद्दीवे णं दीवे सूरिया एगं जोयणसयं उड्ढं तवेंति, अट्ठारसजोयणसयाइं अहे तवेंति, सीयालीसं जोयणसहस्साइं दुन्नि य तेवड्ढे जोयणसए एक्कवीसं च सट्ठिभागे जोयणस्स तिरियं तवेंति २० ॥ सू० २५ ॥ चउत्थं पाहुडं समत्तं ॥ ४

॥ अथ पञ्चमं प्राभृतम् ॥

ता कंसि णं सूरियस्स लेस्सा पडिहयाति वएज्जा ? तत्थ खलु इमाओ वीसं पडिवत्तीओ पराणत्ताओ, तं जहा–तत्थेगे एवमाहंसु–ता मंदरंसि णं पव्वयंसि सूरियस्स लेस्सा पडिहया आहितेति वएज्जा, एगे एवमाहंसु १, एगे पुण एवमाहंसु–ता मेरुंसि णं पव्वयंसि सूरियस्स लेस्सा पडिहया आहियाति वएज्जा, एगे एवमाहंसु २, एवं एएणं अभिलावेणं ता मणोरमंसि णं पव्वयंसि ३, ता सुदंसणंसि णं पव्वयंसि ४, ता सयंपभंसि णं पव्वयंसि ५, ता गिरिरायंसि णं पव्वयंसि ६, ता रयणुच्चयंसि णं पव्वयंसि ७, ता सिलुच्चयंसि णं पव्वयंसि ८, ता लोयमज्झंसि णं पव्वयंसि ९, ता लोयणाभिंसि णं पव्वयंसि १०, ता अच्छंसि णं पव्वयंमि ११, ता सूरियावत्तंसि णं पव्वयंसि १२, ता सूरियावरणंसि णं पव्वयंसि १३, ता उत्तमंसि णं पव्वयंसि १४, ता दिसादिंसि णं पव्वयंसि १५, ता अवयंसंसि णं पव्वयंसि १६, ता धरणिखीलंसि णं पव्वयंसि १७, ता धरणिसिंगंसि णं पव्वयंसि १८, ता पव्वतिंदंसि णं पव्वयंसि १९, एगे पुण एवमाहंसु ता पव्वयरायंसि णं पव्वयंसि सूरियस्स लेस्सा पडिहया आहितेति वएज्जा, एगे एवमाहंसु २०, १। वयं पुण एवं वयामो–जंसि णं पव्वयंसि सूरियस्स लेसा पडिहया से ता मंदरेवि पवुच्चइ, मेरु वि पवुच्चइ जाव पव्वयरायावि पवुच्चइ २१, २। ता जे णं पुग्गला सूरियस्स लेस्सं फुसंति ते णं पुग्गला सूरियस्स लेस्सं

पडिहणंति अदिट्ठा वि णं पुग्गला सूरियस्स लेस्सं पडिहणंति, चरिमलेस्संतरगया वि पुग्गला सूरियस्स लेस्सं पडिहणंति ३ ॥ सूत्रं २६ ॥ चंदपन्नत्तीए पंचमं पाहुडं समत्तं ॥ ५ ॥

॥ अथ षष्ठं प्राभृतम् ॥

ता कहं ते ओयसंठिई आहितेति वएज्जा? तत्थ खलु इमाओ पणवीसं पडिवत्तीओ पराणत्ताओ, तंजहा–तत्थेगे एवमाहंसु ता अणुसमयमेव सूरियस्सओया अराणा उप्पज्जइ, अराणा अवेइ, एगे एवमाहंसु १, एगे पुण एवमाहंसु ता अणुमुहुत्तमेव सूरियस्स ओया अराणा उप्पज्जइ अराणा अवेइ, एगे एवमाहंसु २, एवं एएणं अभिलावेणं–ता अणुराइंदियमेव ३, ता अणुपक्खमेव ४, ता अणुमासमेव ५, ता अणुउउमेव ६, ता अणुअयणमेव ७, ता अणुसंवच्छरमेव ८, ता अणुजुगमेव ९, ता अणुवाससयमेव १०, ता अणुवाससहस्समेव ११, ता अणुवाससयसहस्समेव १२, ता अणुपुव्वमेव १३, ता अणुपुव्वसयमेव १४, ता अणुपुव्वसहस्समेव १५, ता अणुपुव्वसयसहस्समेव १६, ता अणुपलिओवममेव १७, ता अणुपलिओवमसयमेव १८, ता अणुपलिओवमसहस्समेव १९, ता अणुपलिओवमसयसहस्समेव २०, ता अणुसागरोवममेव २१, ता अणुसागरोवमसयमेव २२, ता अणुसागरोवमसहस्समेव २३, ता अणुसागरोवमसयसहस्समेव २४, एगे एवमाहंसु–ता अणुउस्सप्पिणि ओसप्पिणिमेव सूरियस्स ओया अराणा उप्पज्जइ अराणा अवेइ, एगे एवमाहंसु २५,१। वयं पुण एवं वयामो–ता तीसं तीसं मुहुत्ते सूरियस्स ओया अवट्ठिया भवइ, तेण परं सूरियस्स ओया अणवट्ठिया भवइ २। छम्मासे सूरिए ओयं णिव्वुड्ढेइ, छम्मासे सूरिए ओयं अभिवुड्ढेइ ३। णिक्खममाणे सूरिए देसं णिव्वुड्ढेइ, पविसमाणे सूरिए देसं अभिवुड्ढेइ ४। तत्थ को हेऊ

आहितेति वएज्जा ? ता अयरणं जंबुद्दीवे दीवे जाव परिक्खेवेणं पराणत्ते ५ । ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ जहरिणया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ ६ । से णिक्खममाणे सूरिए णवं संवच्छरं अयमाणे पढमंसि अहोरत्तंसि अब्भितराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ ७ । ता जया णं सूरिए अब्भितराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं एगेणं राइंदिएणं एगं भागं ओयाए दिवसखित्तस्स णिव्वुड्ढित्ता रयणिखित्तस्स अभिवड्ढित्ता चारं चरइ, मंडलं अट्ठारसहिं तीसेहिं सएहि छित्ता, तया णं अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ दोहिं एगसट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणे, दुवालसमुहुत्ता राई भवइ दोहिं एगसट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिया ८ । से णिक्खममाणे सूरिए दोच्चंसि अहोरत्तंसि अब्भितराणंतरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ ९ । ता जया णं सूरिए अब्भितराणंतरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं दोहिं राइंदिएहिं दो भागे ओयाए दिवसखेत्तस्स णिव्वुड्ढित्ता, २ रयणिखेत्तस्स अभिवड्ढेत्ता चारं चरइ, मंडलं अट्ठारसेहि तीसेहिं सएहिं छेत्ता, तया णं अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ चउहि एगसट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणे, दुवालसमुहुत्ता राई भवइ चउहिं एगसट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिया १० । एवं खलु एएणं उवाएणं णिक्खममाणे सूरिए तयाणंतराओ तयाणंतरं मंडलाओ मंडलं संकममाणे २ एगमेगे मंडले एगमेगेणं राइंदिएणं एगमेगं २ भागं ओयाए दिवसखेत्तस्स निव्वुड्ढेमाणे २ रयणिक्खेत्तस्स अभिवड्ढेमाणे २ सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ ११ । ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतराओ मंडलाओ सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं सव्वब्भंतरं मंडलं पणिहाय एगेणं तेसिएणं राइंदियसएणं एगं तेसीयं भागसयं ओयाए दिवसखेत्तस्स णिवुड्ढेत्ता रयणिखेत्तस्स अभिवुड्ढेत्ता चारं चरइ, मंडलं अट्ठारसहिं तीसेहिं सएहिं छेत्ता, तया णं उत्तमकट्ठपत्ता उक्को-

सिया अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ जहरणाए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ १२। एस णं पढमे छम्मासे, एस णं पढमस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे १३। से पविसमाणे सूरिए दोच्चं छम्मासं अयमाणे पढमंसि अहोरत्तंसि बाहिराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ १४। ता जया णं सूरिए बाहिराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं एगेणं राइंदिएणं एगं भागं ओयाए रयणिखेत्तस्स णिव्वुड्ढेत्ता, दिवसखेत्तस्स अभिव्वुड्ढेत्ता चारं चरइ मंडलं अट्ठारसहिं तीसेहिं सएहि छेत्ता, तया णं अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ दोहिं एगसट्ठिभागमुहुत्तेहि ऊणा दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिए १५। से पविसमाणे सूरिए दोच्चंसि अहोरत्तंसि बाहिराणंतरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ १६। ता जया णं सूरिए बाहिराणंतरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं दोहिं राइंदिएहिं दोभाए ओयाए रयणिखेत्तस्स णिव्वुड्ढेत्ता, दिवसखेत्तस्स अभिव्वुड्ढेत्ता चारं चरइ, मंडलं अट्ठारसहिं तीसेहिं सएहिं छेत्ता, तया णं अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणा, दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिए १७। एवं खलु एएणं उवाएणं पविसमाणे सूरिए तयाणंतराओ तयाणंतरं मंडलाओ मंडलं संकममाणे २ एगमेगे मंडले एगमेगेणं राइंदिएणं एगमेगं भागं ओयाए रयणिखेत्तस्स णिव्वुड्ढेमाणे २ दिवसखेत्तस्स अभिव्वुड्ढेमाणे २ सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ १८। ता जया णं सूरिए सव्वबाहिराओ मंडलाओ सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं सव्वबाहिरं मंडलं पणिहाय एगेणं तेसीएणं राइंदियसएणं एगं तेसीयं भागसयं ओयाए रयणिखेत्तस्स णिव्वुड्ढेत्ता, दिवसखेत्तस्स अभिव्वुड्ढेत्ता चारं चरइ, मंडलं अट्ठारसहिं तीसेहिं सएहिं छेत्ता, तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहरिणया [illegible] भवइ १९। एस णं दोच्चे

छम्मासे, एस णं दोच्चस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे, एस णं आइच्चे संवच्छरे, एस णं आइच्चस्स संवच्छरस्स पज्जवसाणे २० ॥ सूत्रं २७ ॥ छट्ठं पाहुडं समत्तं ॥ ६ ॥

॥ अथ सप्तमं प्राभृतम् ॥

ता किं ते सूरियं वरंति आहितेति वएज्जा ? तत्थ खलु इमाओ वीसई पडिवत्तीओ पराणत्ताओ, तं जहा–तत्थेगे एवमाहंसु–ता मंदरे णं पव्वए सूरियं वरइ, एगे एवमाहंसु १, एगे पुण एवमाहंसु–ता मेरूणं पव्वए सूरियं वरइ, एगे एवमाहंसु २, एवं एएणं अभिलावेणं जाव वीसइमा पडिवत्ती जाव ता पव्वयराएणं पव्वए सूरियं वरइ, एगे एवमाहंसु २०, १ । वयं पुण एवं वयामो-मंदरे वि पवुच्चइ, मेरू वि पवुच्चइ, एवं जाव पव्वयराओ वि पवुच्चइ २ । ता जे णं पोग्गला सूरियस्स लेसं फुसंति ते णं पोग्गला सूरियं वरयंति, अदिट्ठावि णं पोग्गला सूरियं वरयंति, चरमलेस्संतरगया वि णं पोग्गजा सूरियं वरंति ३ ॥ सूत्रं॥ २८ ॥ सत्तमं पाहुडं समत्तं ॥ ७ ॥

॥ अथ अष्टमं प्राभृतम् ॥

ता कहं ते उदयसंठिई आहियाति वएज्जा ? तत्थ खलु इमाओ तिरिण पडिवत्तीओ पराणत्ताओ, तं जहा–तत्थ एगे एवमाहंसु–ता जया णं जम्बुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ तया णं उत्तरड्ढे वि अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ १ । ता जया णं उत्तरड्ढे अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ तया णं दाहिणड्ढे वि अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ २ । जया णं जंबुदीवे दाहिणड्ढे सत्तरसमुहुत्ते दिवसे भवइ तया णं उत्तरड्ढे वि सत्तरसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जया णं उत्तरड्ढे सत्तरसमुहुत्ते दिवसे भवइ तया णं दाहिणड्ढे वि सत्तरसमुहुत्ते दिवसे भवइ ३ । एवं परिहावेतव्वं सोलसमुहुत्ते, पराणरसमुहुत्ते, चोद्दसमुहुत्ते, तेरसमुहुत्ते दिवसे जाव ता जया णं जंबुद्दीवे २

दाहिणड्ढे बारसमुहुत्ते दिवसे भवइ तया णं उत्तरड्ढे वि बारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जया णं उत्तरड्ढे बारसमुहुत्ते दिवसे भवइ तया णं दाहिणड्ढे वि बारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तया णं जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिम-पच्चत्थिमेणं सया पण्णरसमुहुत्ते दिवसे भवइ, सया पण्णरसमुहुत्ता राई भवइ, अवट्ठिया णं तत्थ राइंदिया समणाउसो ! पण्णत्ता, एगे एवमाहंसु १, ४। एगे पुण एवमाहंसु--ता जया णं जंबुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे अट्ठारसमुहुत्ता-णंतरे दिवसे भवइ तया णं उत्तरड्ढे वि अट्ठारसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ, जया णं उत्तरड्ढे अट्ठारसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ तया णं दाहिणड्ढे वि अट्ठारसमुहुत्ताणतरे दिवसे भवइ ५। एवं परिहावेतव्वं–सत्तरसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवति, सोलसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवति, पण्णरसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवति, चउद्दसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवति, तेरसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवति ६। जया णं जंबुद्दीवे दाहिणड्ढे बारसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ तया णं उत्तरड्ढे वि बारसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ, जया णं उत्तरड्ढे बारसमुहुत्ता-णंतरे दिवसे भवइ तया णं दाहिणड्ढे वि बारसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ, तया णं जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमपच्चत्थिमेणं नो सया पण्णरसमुहुत्ते दिवसे भवइ, नो सया पण्णरसमुहुत्ता राई भवइ, अणवट्ठिया णं तत्थ राइंदिया समणाउसो ! पण्णत्ता, एगे एवमाहंसु २, ७। एगे पुण एवमाहंसु–ता जया णं जंबुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ तया णं उत्तरड्ढे दुवालसमुहुत्ता राई भवइ, जया णं उत्तरड्ढे अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ तया णं दाहिणड्ढे दुवालसमुहुत्ता राई भवइ ८। ता जया णं दाहिणड्ढे अट्ठारसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ तया णं उत्तरड्ढे दुवालसमुहुत्ता राई भवइ, जया णं उत्तरड्ढे अट्ठारसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ तया णं दाहिणड्ढे दुवालसमुहुत्ता राई भवइ ९। एवं सत्तरसमुहुत्ते दिवसे, सत्तरसमुहुत्ताणंतरे, सोलसमुहुत्ते सोलसमुहुत्ताणंतरे, पण्णरसमुहुत्ते पण्णरस-

मुहुत्ताणंतरे, चउद्दसमुहुत्ते चउद्दसमुहुत्ताणंतरे, तेरसमुहुत्ते तेरसमुहुत्ताणंतरे १० । ता जया णं जंबुद्दीवे २ दाहिणड्ढे बारसमुहुत्ते दिवसे भवइ तया णं उत्तरड्ढे बारसमुहुत्ता राई भवइ, जया णं उत्तरड्ढे बारसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ तया णं दाहिणड्ढे दुवालसमुहुत्ता राई भवति, तया णं जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमपच्चत्थिमेणं णोवत्थि पराणरसमुहुत्ते दिवसे णोवत्थि पराणरसमुहुत्ता राई भवइ, वोच्छिराणा णं तत्थ राइंदिया पराणत्ता समणाउसो ! एगे एवमाहंसु ३, ११ । वयं पुण एवं वयामो–ता जंबुद्दीवे दीवे सूरिया उदीणपाईणमुग्गच्छ–पाईणदाहिणमागच्छंति, पाईणदाहिणमुग्गच्छ–दाहिणपडीणमागच्छंति, दाहिणपडीणमुग्गच्छ-पडीणउदीणमागच्छंति, पडीणउदीणमुग्गच्छ-उदीणपाईणमागच्छंति १, १२ । ता जया णं जम्बुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे दिवसे भवइ तया णं उत्तरड्ढे वि दिवसे भवइ, जया णं उत्तरड्ढे दिवसे भवइ तया णं जबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमपच्चत्थिमेण राई भवई १३ । ता जया णं जबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमेणं दिवसे भवइ तया णं पच्चत्थिमेण वि दिवसे भवइ, जया णं पच्चत्थिमेणं दिवसे भवइ तया णं जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरदाहिणेणं राई भवइ २, १४ । ता जया णं जंबुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ तया णं उत्तरड्ढे वि उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ १५ । जया उत्तरड्ढे उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ तया णं जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमेणं जहरिणया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ १६ । ता जया णं जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमेणं अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ तया णं पच्चत्थिमेण वि उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ १७ । जया णं पच्चत्थिमेणं उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ तया णं जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरदाहिणेणं जहरिणया दुवालसमुहुत्ता राई भवई १८ । एवं एएणं गमेणं नेयव्वं,

अट्ठारसमुहुत्ताणंतरे दिवसे साइरेगदुवालसमुहुत्ता राई भवइ, सत्तरसमुहुत्ते दिवसे तेरसमुहुत्ता राई भवइ १६ । सत्तरसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवति साइरेगा तेरसमुहुत्ता राई भवइ २० । सोलसमुहुत्ते दिवसे चउद्दसमुहुत्ता राई भवइ २१ । सोलसमुहुत्ताणंतरे दिवसे साइरेगचउद्दसमुहुत्ता राई भवइ २२ । पराणरसमुहुत्ते दिवसे पराणरसमुहुत्ता राई भवइ २३ । पराणरसमुहुत्ताणंतरे दिवसे साइरेगा पराणरसमुहुत्ता राई भवइ २४ । चउद्दसमुहुत्ते दिवसे सोलसमुहुत्ता राई भवइ २५ । चउद्दसमुहुत्ताणंतरे दिवसे साइरेगसोलसमुहुत्ता राई भवइ २६ । तेरसमुहुत्ते दिवसे सत्तरसमुहुत्ता राई भवइ २७ । तेरसमुहुत्ताणंतरे दिवसे साइरेगसत्तरसमुहुत्ता राई भवइ २८ । ता जया णं जंबुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे जहराणए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ (उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ), तया णं उत्तरड्ढे वि जहराणए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ २६ । ता जया णं उत्तरड्ढे जहराणए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ तया णं जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमपच्चत्थिमेणं उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ ३० । ता जया णं जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमेणं जहराणए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ तया णं पच्चत्थिमेणं जहराणए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ ३१ । जया णं पच्चत्थिमेणं जहराणए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ तया णं जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरदाहिणेणं उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ ३, ३२ । ता जया णं जंबुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे वासाणं पढमे समए पडिवज्जइ तया णं उत्तरड्ढे वि वासाणं पढमे समए पडिवज्जइ ३३ । जया णं उत्तरड्ढे वासाणं पढमे समये पडिवज्जति तया णं जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमपच्चत्थिमेणं अणंतरपुक्खडकालसमयंसि वासाणं पढमे समए पडिवज्जइ ३४ । ता जया णं जंबुद्दीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमेणं वासाणं पढमे समये पडिवज्जइ तया णं पच्चत्थिमेण वि वासाणं पढमे समये

पडिवज्जइ ३५। जया णं पच्चत्थिमेणं वासाणं पढमे समये पडिवज्जइ तया णं जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरदाहिणेणं अणंतरपच्छाकय-कालसमयंसि वासाणं पढमे समए पडिवण्णे भवइ ३६। जहा समओ, एवं आवलिया, आणापाणू, थोवे, लवे, मुहुत्ते, अहोरत्ते, पक्खे, मासे, उऊ, एवं दस आलावगा वासाणं भाणियव्वा ४, ३७। ता जया णं जंबुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे हेमंताणं पढमे समए पडिवज्जइ तया णं उत्तरड्ढे वि हेमंताणं पढमे समए पडिवज्जइ ३८। जया णं जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमेणं पच्चत्थिमेणं अणंतरपुराकडे कालसमयंसि य हेमंताणं पढमे समए पडिवज्जइ ३९। एयस्स वि वासस्स दस आलावगा जाव उऊओ ५, ४०। ता जया णं जंबुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे गिम्हाणं पढमे समए पडिवज्जइ तया णं उत्तरड्ढे वि गिम्हाणं पढमे समए पडिवज्जइ ४१। ता जया णं उत्तरदाहिणड्ढे गिम्हाणं पढमे समए पडिवज्जइ तया णं जंबुद्दीवे दीवे पुरत्थिमपच्चत्थिमेणं अणंतरपुराकडकालसमयंसि गिम्हाणं पढमे समए पडिवज्जइ ४२। एयस्स वि वासागमो दस आलावगा भाणियव्वा जाव उऊओ ६, ४३। ता जया णं जंबुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे पढमे अयणे पडिवज्जइ तया णं उत्तरद्धेवि पढमे अयणे पडिवज्जइ ४४। जया णं उत्तरड्ढे पढमे अयणे पडिवज्जइ तया णं दाहिणद्धे वि पढमे अयणे पडिवज्जइ ४५। जया णं उत्तरद्धे पढमे अयणे पडिवज्जइ तया णं जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमपच्चत्थिमेणं अणंतरेपुराकडकालसमयंसि पढमे अयणे पडिवज्जइ ४६। ता जया णं जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमेणं पढमे अयणे पडिवज्जइ तया णं पच्चत्थिमेण वि पढमे अयणे पडिवज्जइ ४७। ता जया णं पच्चत्थिमेणं पढमे अयणे पडिवज्जइ तया णं जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरदाहिणे णं अणंतरपच्छाकड-कालसमयंसि पढमे अयणे पडिवन्ने भवइ ४८। एवं संवच्छरे जुगे वास-

सए, एवं वाससहस्से वाससयसहस्से पुव्वंगे, पुव्वे, तुडियंगे, तुडिए अववंगे, अववे, हुहुयंगे, हुहुए, उप्पलंगे, उप्पले, पउमंगे, पउमे, णलिणंगे, णलिणे, अच्छनिउरंगे, अच्छनिउरे, अउयंगे, अउए, नउयंगे, नउए चूलियंगे चूलिया, सीसपहेलियंगे सीसपहेलिया, पलिओवमे, सागरोवमे ४१। ता जया णं जंबुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे पढमे समए उस्सप्पिणी पडिवज्जइ तया णं उत्तरड्ढे वि पढमे समए उस्सप्पिणी पडिवज्जइ ५०। जया णं उत्तरड्ढे पढमे समए उस्सप्पिणी पडिवज्जइ तया णं जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमपच्चत्थिमेणं नेवत्थि ओस्सप्पिणी, नेवत्थि उस्सप्पिणी, अवट्ठिए णं तत्थ काले पण्णत्ते समणाउसो! ७, एवं उस्सप्पिणीवि ५१। जया णं लवणे समुद्दे दाहिणद्धे दिवसे भवति, तया णं लवणसमुद्दे उत्तरद्धे दिवसे भवति ५२। जया णं उत्तरद्धे दिवसे भवति तया णं लवणसमुद्दे पुरच्छिमपच्चत्थिमेणं राई भवति ५३। जहा जंबुद्दीवे २ तहेव जाव उस्सप्पिणी, तहा धायइसंडे णं दीवे सूरिया उदीणपाईणमुग्गच्छंति तहेव ५४। ता जया णं धायइसंडे दीवे दाहिणद्धे दिवसे भवति तया णं उत्तरद्धे दिवसे भवति ५५। जया णं उत्तरद्धे दिवसे भवति तया णं धायइसंडे दीवे मंदराणं पव्वत्ताणं पुरत्थिमपच्चित्थमेणं राइ भवति ५६। एवं जंबुद्दीवे २ जहा तहेव जाव उस्सप्पिणी, कालोए णं जहा लवणे समुद्दे तहेव, ता अब्भंतरपुक्खरद्धे णं सूरिया उदीणपाईणमुग्गच्छ तहेव ५७। ता जया णं अब्भंतरपुक्खरद्धे णं दाहिणद्धे दिवसे भवति तदा णं उत्तरद्धेवि दिवसे भवति ५८। जया णं उत्तरद्धे दिवसे भवति तदा णं अब्भिंतरपुक्खरद्धे मंदराणं पव्वयाणं पुरत्थिमपच्चत्थिमेणं राई भवति, सेसं जहा जंबुद्दीवे तहेव जाव ओसप्पिणी उस्सप्पिणीओ ५९ ॥ सूत्रं २१ ॥ अट्ठमं पाहुडं समत्तं ॥

॥ इति अष्टमं प्राभृतम् ॥ ८ ॥

॥ अथ नवमं प्राभृतम् ॥

ता कइकट्टं ते सूरिए पोरिसीं छाया णिव्वत्तेइ आहितेति वएज्जा, तत्थ खलु इमाओ तिण्णि पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—तत्थ एगे एवमाहंसु—ता जे णं पोग्गला सूरियस्स लेस्सं फुसंति ते णं पोग्गला संतप्पंति, ते णं पोग्गला संतप्पमाणा तयाणंतराइं बाहिराइं पोग्गलाइं संताविंतीत्ति एस णं से समिए तावक्खेत्ते, एगे एवमाहंसु १, एगे पुण एवमाहंसु—ता जे णं पोग्गला सूरियस्स लेस्सं फुसंति ते णं पोग्गला नो संतप्पंति, ते णं पोग्गला असंतप्पमाणा तयाणंतराइं बाहिराइं पोग्गलाइं नो संतावेंति एस णं से समिए तावक्खेत्ते, एगे एवमाहंसु २, एगे पुण एवमाहंसु—ता जे णं पोग्गला सूरियस्स लेस्सं फुसंति ते णं पोग्गला अत्थेगइया संतप्पंति, अत्थेगइया नो संतप्पंति तत्थ अत्थेगइया संतप्पमाणा तयाणंतराइं बाहिराइं पोग्गलाइं अत्थेगइयाइं संतावेंति, अत्थेगइयाइं नो संतावेंति, एस णं से समिए तावक्खेत्ते, एगे एवमाहंसु ३, १। वयं पुण एवं वयामो—ता जाओ इमाओ चंदिमसूरियाणं देवाणं विमाणेहितो लेस्साओ उच्छूढा (बहिया) अभिनिसट्टाओ पयावेंति, एयासि णं लेस्साणं अंतरेसु अण्णयरीओ छिन्नलेसाओ संमुच्छंति, तए णं ताओ छिन्नलेस्साओ संमुच्छियाओ समाणीओ तदाणंतराइं बाहिराइं पोग्गलाइं संतावेंति, एस णं से समिए तावक्खेत्ते २। ता कइकट्टं ते सूरिए पोरिसीं छायं निव्वत्तेइ? आहितेति वदेज्जा? तत्थ खलु इमाओ पणवीसं पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—तत्थ एगे एवमाहंसु ता अणुसमयमेव सूरिए पोरिसीं छायं निव्वत्तेइ एगे एवमाहंसु १, एगे पुण एवमाहंसु ता अणुमुहुत्तमेव सूरिए पोरिसिच्छायं णिव्वत्तेइ एगे एवमाहंसु २, एवं एएणं अभिलावेणं णेत्तव्वं ता जाओ चेव ओयसंठिईए पणवीसं पडिवत्तीओ ताओ चेव णेयव्वाओ जाव एगे पुण एवमाहंसु ता अणुओसप्पिणी उस्सप्पिणीमेव सूरिए पोरिसि-

छायं निव्वत्तेइ, एगे एवमाहंसु २५, ३। वयं पुण एवं वयामो—ता सूरियस्स णं उच्चत्तं च लेस्सं च पडुच्च छाउद्देसे ?, उच्चत्तं च छायं च पडुच्च लेसुद्देसे, लेस्सं च छायं च पडुच्च उच्चत्तोद्देसो २, तत्थ खलु इमाओ दो पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—एगे एवमाहंसु—ता अत्थि णं से दिवसे जंसि णं दिवसंसि सूरिए चउपोरिसिच्छायं निव्वत्तेइ, अत्थि णं से दिवसे जंसि णं दिवसंसि सूरिए दुपोरिसिच्छायं निव्वत्तेइ, एगे एवमाहंसु १, एगे पुण एवमाहंसु—ता अत्थि णं से दिवसे जंसि णं दिवसंसि सूरिए दुपोरिसिं छायं निव्वत्तेइ, अत्थि णं से दिवसे जंसि णं दिवसंसि सूरिए नो किंचि पोरिसिच्छायं निव्वत्तेइ एगे एवमाहंसु २, ४। तत्थ णं जे ते एवमाहंसु—ता अत्थि णं से दिवसे जंसि णं दिवसंसि सूरिए चउपोरिसियं छायं निव्वत्तेइ, अत्थि णं से दिवसे जंसि णं दिवसंसि सूरिए दुपोरिसियं छायं निव्वत्तेइ, ते णं एवमाहंसु—ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ तंसि च णं दिवसंसि सूरिए चउपोरिसियं छायं निव्वत्तेइ, तंजहा—उग्गमणमुहुत्तंसि य अत्थमणमुहुत्तंसि य लेस्सं अभिवड्ढेमाणे नो चेव णं निव्वुड्ढेमाणे ५। ता जया णं सूरिए सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ, तया णं उत्तमकट्ठपत्ता उक्कोसिया-अट्ठारसमुहुत्ता राई भवति, जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ तंसि च णं दिवसंसि सूरिए दुपोरिसियं छायं निव्वत्तेइ, तंजहा—उग्गमणमुहुत्तंसि य अत्थमणमुहुत्तंसि य लेस्सं अभिवड्ढेमाणे नो चेव णं निव्वुड्ढेमाणे १, ६। तत्थ णं जे ते एवमाहंसु—ता अत्थि णं से दिवसे जंसि णं दिवसंसि सूरिए दुपोरिसियं छायं निव्वत्तेइ, अत्थि णं से दिवसे जंसि णं दिवसंसि सूरिए नो किंचि पोरिसियं निव्वत्तेइ ते एवमाहंसु—ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं उत्तमकट्ठपत्ते

उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ जहरिणया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ तंसि च णं दिवसंसि सूरिए दुपोरिसियं छायं णिव्वत्तेइ, तं जहा–उग्गमण-मुहुत्तंसि य अत्थमणमुहुत्तंसि य, लेस्सं अभिवड्ढेमाणे णो चेव णं निव्वुड्ढे-माणे ७। ता जया णं सूरिए सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं उत्तमकट्ठपत्ता उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ तंसि च णं दिवसंसि सूरिए नो किंचि पोरिसिं छायं निव्वत्तेइ, तं जहा–उग्गमणमुहुत्तंसि य अत्थमणमुहुत्तंसि य, नो चेव णं लेस्सं अभिवड्ढेमाणे वा निवुड्ढेमाणे वा ८। ता कइकट्ठं ते सूरिए पोरिसि-च्छायं निव्वत्तेइ आहिएत्ति वएज्जा? तत्थ इमाओ छण्णउई पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ, तं जहा–तत्थेगे एवमाहंसु–ता अत्थि णं से देसे जंसि च णं देसंसि सूरिए एगपोरिसिं छायं निव्वत्तेइ, एगे एवमाहंसु १, एगे पुण एवमाहंसु–ता अत्थि णं से देसे जंसि णं देसंसि सूरिए दुपोरिसियं छायं निव्वत्तेइ, एगे एवमाहंसु २, एवं एएणं अभिलावेणं णेयव्वं जाव–एगे पुण एवमाहंसु–ता अत्थि णं से देसे जंसि णं देसंसि सूरिए छण्णउइ–पोरि-सियं छायं णिव्वत्तेइ, एगे एवमाहंसु ९६, १। तत्थ णं जे ते एवमाहंसु–ता अत्थि णं से देसे जंसि णं देसंसि सूरिए एगपोरिसियं छायं णिव्वत्तेइ, ते एवमाहंसु–ता सूरियस्स णं सव्वहेट्ठिमाओ सूरियप्पडिहिओ बहित्ता अभिणिसट्ठाहिं लेस्साहिं ताडिज्जमाणीहिं इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ जावइयं सूरिए उड्ढं उच्चत्तेणं एवइयाए एगाए अद्धाए एगेणं छायाणुमाणप्पमाणेणं उमाए एत्थ से सूरिए एगपोरिसियं छायं निव्वत्तेइ १, तत्थ णं जे ते एवमाहंसु–ता अत्थि णं से देसे जंसि णं देसंसि सूरिए दुपोरिसियं छायं निव्वत्तेइ, ते एवमाहंसु–ता सूरियस्स णं सव्वहेट्ठिमाओ सूरियप्पडिहिओ बहित्ता अभिणिसट्ठाताहिं लेस्साहिं ताडिज्जमाणीहिं इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ

जावइयं सूरिए उड्ढं उच्चत्तेणं एवइयाहिं दोहिं अद्धाहिं दोहिं छायाणुमाणप्पमाणेहिं उमाए एत्थ णं से सूरिए दुपोरिसियं छायं णिव्वत्तेइ २,१०। एवं णेयव्वं जाव तत्थ जे ते एवमाहंसु—ता अत्थि णं से देसे जंसि च णं देसंसि सूरिए छण्णउइं पोरिसिं छायं णिव्वत्तेइ, ते एवमाहंसु—ता सूरियस्स णं सव्वहिट्ठिमाओ सूरियप्पडिहिओ बहित्ता अभिणिसट्ठाहिं लेस्साहिं ताडिज्जमाणीहिं इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ जावइयं सूरिए उड्ढं उच्चत्तेणं एवइयाहिं छण्णउईए अद्धाहिं छण्णवईए छायाणुमाणप्पमाणेहिं उमाए, एत्थ णं से सूरिए छण्णउई पोरिसियं छायं णिव्वत्तेइ (एवं एक्केक्काए पडिवत्तिए भाणितव्वं जाव छन्नउतिमा पडिवत्ती) एगे एवमाहंसु ११। वयं पुण एवं वयामो—सूरिए साइरेग-अउणट्ठिपोरिसीणं सूरिए पोरिसीछायं निव्वत्तेइ १२। ता अवड्ढपोरिसी णं छाया दिवसस्स किं गए वा सेसे वा ? ता तिभागे गए वा सेसे वा १३। ता पोरिसी णं छाया दिवसस्स किं गए वा सेसे वा ? ता चउब्भागे गए वा सेसे वा १४। ता दिवड्ढपोरिसी णं छाया दिवसस्स किं गए वा सेसे वा ? ता पंचमभागे गए वा सेसे वा १५। एवं अद्धपोरिसिं छोढुं २ पुच्छा दिवसस्स भागं छोढुं २ वागरणं जाव ता अद्ध(वड्ढ)अगूणसट्ठिपोरिसी णं छाया दिवसस्स किं गए वा सेसे वा ? ता एगूणवीससयभागे गए वा सेसे वा ? ता अउणसट्ठिपोरिसी णं छाया दिवसस्स किं गए वा सेसे वा ? बावीससहस्सभागे गए वा सेसे वा १६। ता साइरेगअउणसट्ठिपोरिसी णं छाया दिवसस्स किं गए वा सेसे वा ? ता णत्थि किंचि गए वा सेसे वा १७। तत्थ खलु इमा पणवीसनिविट्ठा छाया पण्णत्ता, तं जहा—खंभछाया १, रज्जुच्छाया २, पागारछाया ३, पासायछाया ४, उत्तरछाया ५, उच्चत्तछाया ६, अणुलोमछाया ७, पडिलोमछाया ८, आरुभिताछाया ९, उवहिताछाया १०, समाछाया ११, पडिहताछाया १२, खील-

छाया १३, पक्खच्छाया १४, पुरओउदग्गा १५, पिट्ठओउदग्गा १६, पुरिमकंठभागोवगता छाया १७, पच्छिमकंठभागोवगता १७, छायाणुवादिणी १९, किट्ठाणुवादिणीछाया २०, छायच्छाया २१, छायानिकप्पो २२, वेहासच्छाया २३, सगउच्छाया (कडच्छाया) २४, गोलच्छाया २५, १८। तत्थ णं गोलच्छाया अट्ठविहा पराणत्ता, तं जहा—गोलच्छाया अवद्धगोलच्छाया गोल(गाढल)गोलच्छाया, अवड्ढगोल(गाढल)गोलच्छाया, गोलावलिच्छाया अवड्ढगोलावलिच्छाया, गोलपुंजच्छाया, अवड्ढगोलपुंजच्छाया १९ ॥ सूत्रं ३१ ॥ नवमं पाहुडं समत्तं ॥

॥ इति नवमं प्राभृतम् ॥ ९ ॥

॥ अथ दशमप्राभृते प्रथमं प्राभृतप्राभृतम् ॥

ता जोगेत्ति वत्थुस्स आवलियानिवाए आहिएत्ति वएज्जा १। ता कहं ते जोगेत्ति वत्थुस्स आवलियाणिवाए आहिएत्ति वएज्जा ? तत्थ खलु इमाओ पंच पडिवत्तीओ पराणत्ताओ, तं जहा—तत्थेगे एवमाहंसु—ता सव्वे वि णं णक्खत्ता कत्तियादिया भरणिपज्जवसाणा पराणत्ता एगे एवमाहंसु १, एगे पुण एवमाहंसु—ता सव्वे वि णं नक्खत्ता मघादिया अस्सेसापज्जवसाणा पराणत्ता, एगे एवमाहंसु २, एगे पुण एवमाहंसु—ता सव्वे वि णं नक्खत्ता धणिट्ठाइया सवणपज्जवसाणा पराणत्ता, एगे एवमाहंसु ३, एगे पुण एवमाहंसु ता सव्वे वि णं णक्खत्ता अस्सिणीआदिया रेवईपज्जवसाणा पराणत्ता, एगे एवमाहंसु ४, एगे पुण एवमाहंसु—ता सव्वे वि णं णक्खत्ता भरणीआइया अस्सिणीपज्जवसाणा पराणत्ता, एगे एवमाहंसु ५, २। वयं पुण एवं वयामो—ता सव्वे वि णं णक्खत्ता अभिईआदिया उत्तरासाढापज्जवसाणा पराणत्ता, तं जहा—अभिई सवणो जाव उत्तरसाढा ॥ सूत्रं ३२ ॥ दसमस्स पढमं पाहुडपाहुडं समत्तं ॥ १०—१ ॥

॥ अथ दशमप्राभृते द्वितीयं प्राभृतप्राभृतम् ॥

ता कहं ते मुहुत्तग्गे आहिएति वएज्जा ? ता एएसि णं अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं अत्थि णक्खत्तं जे णं णवमुहुत्ते सत्तावीसं च सत्तसट्ठिभाए मुहुत्तस्स चंदेण सद्धिं जोयं जोएइ, अत्थि णक्खत्ता जे णं पण्णरसमुहुत्ते चंदेण सद्धिं जोयं जोएंति २, अत्थि नक्खत्ता जे णं तीसं मुहुत्ते चंदेण सद्धिं जोयं जोएंति ३, अत्थि णं नक्खत्ता जे णं पणयालीसे मुहुत्ते चंदेण सद्धिं जोयं जोएंति ४, १। ता एएसि णं अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं कयरे नक्खत्ते जे णं नवमुहुत्ते सतावीसं च सत्तट्ठिभाए मुहुत्तस्स चंदेण सद्धिं जोयं जोएंति १ ? कयरे णक्खत्ता जे णं पण्णरसमुहुत्ते चंदेण सद्धिं जोयं जोएंति २ ? कयरे णक्खत्ता जे णं तीसं मुहुत्ते चंदेण सद्धिं जोयं जोएंति ३ ? कयरे णक्खत्ता जे णं पणयालीसे मुहुत्ते चंदेण सद्धिं जोयं जोएंति ४ ? ता एएसि णं अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं तत्थ जं तं णक्खत्ते जे णं णवमुहुत्ते सत्तावीसं च सत्तट्ठिभाए मुहुत्तस्स चंदेण सद्धिं जोयं जोएइ से णं एगे अभीई १, तत्थ जे ते णक्खत्ता जे णं पण्णरसमुहुत्ते चंदेण सद्धिं जोयं जोएंति ते णं छ, तं जहा—सतभिसया १, भरणी २, अद्दा ३, अस्सेसा ४, साई ५, जेट्ठा ६, २, तत्थ जे ते णक्खत्ता जे णं तीसं मुहुत्ते चंदेण सद्धिं जोयं जोएंति ते णं पण्णरस, तं जहा—सवणे १, धणिट्ठा २, पुव्वाभद्दवया ३, रेवई ४, अस्सिणी ५, कत्तिया ६, मग्गसिरा ७, पुस्सं ८, महा ९, पुव्वाफग्गुणी १०, हत्थो ११, चित्ता १२, अणुराहा १३, मूलो १४, पुव्वआसाढा १५, ३, तत्थ जे ते णक्खत्ता जे णं पणयालीसे मुहुत्ते चंदेण सद्धिं जोयं जोएंति ते णं छ, तं जहा—उत्तराभद्दवया १, रोहिणी २, पुणव्वसू ३, उत्तराफग्गुणी ४, विसाहा ५, उत्तरासाढा ६, ४, २ ॥ सूत्रं ३३ ॥ ता एएसि णं अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं अत्थि णक्खत्ते जे णं चत्तारि अहोरत्ते छच्च मुहुत्ते सूरिएण सद्धिं जोयं जोएइ १, अत्थि णक्खत्ता

जे णं छ अहोरत्ते एक्कवीसं च मुहुत्ते सूरिएण सद्धिं जोयं जोएंति २, अत्थि णक्खत्ता जे णं तेरस अहोरत्ते बारस य मुहुत्ते सूरिएण सद्धिं जोयं जोएंति ३, अत्थि णक्खत्ता जे णं वीसं अहोरत्ते तिण्णि य मुहुत्ते सूरिएण सद्धिं जोयं जोएंति ४, १ । ता एएसि णं अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं कयरं णक्खत्तं चत्तारि अहोरत्ते छच्च मुहुत्ते सूरिएण सद्धिं जोयं जोएइ १, ? कयरे णक्खत्ता जे णं छ अहोरत्ते एकवीसमुहुत्ते सूरिएण सद्धिं जोयं जोएंति २ ? कयरे णक्खत्ता जे णं तेरस अहोरत्ते बारस य मुहुत्ते सूरिएण सद्धिं जोयं जोएंति ३ ? कयरे णक्खत्ता जे णं वीसं अहोरत्ते तिन्नि य मुहुत्ते सूरिएण सद्धिं जोयं जोएंति ४ ? ता एएसि णं अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं तत्थ जे से णक्खत्ते जे णं चत्तारि अहोरत्ते छच्च मुहुत्ते सूरिएण सद्धिं जोयं जोएइ से णं एगे अभिई १, तत्थ जे ते णक्खत्ता जे णं छ अहोरत्ते एकवीसं च मुहुत्ते सूरिएण सद्धिं जोयं जोएंति ते णं छ, तं जहा–सयभिसया १, भरणी २, भद्दा ३, अस्सेसा ४, साई ५, जेट्ठा ६, २, तत्थ जे ते नक्खत्ता तेरसअहोरत्ते दुवालस य मुहुत्ते सूरिएण सद्धिं जोयं जोएंति ते णं पराणरस, तं जहा–सवणो १, धणिट्ठा २, पुव्वाभद्दवया ३, रेवई ४, अस्सिणी ५, कत्तिया ६, मग्गसिरं ७, पूसो ८, मघा ९, पुव्वाफल्गुणी १०, हत्थो ११, चित्ता १२, अणुराहा १३, मूलो १४, पुव्वाआसाढा १५, ३, तत्थ जे ते णक्खत्ता जे णं वीसं अहोरत्ते तिण्णि य मुहुत्ते सूरिएण सद्धिं जोयं जोएंति ते णं छ, तं जहा–उत्तराभद्दवया १, रोहिणी २, पुणव्वसू ३, उत्तराफग्गुणी ४, विसाहा ५, उत्तरासाढा ६, ४ ॥ सूत्रं ३४ ॥ दसमस्स बितीयं ॥ १०-२ ॥

॥ इति दशमप्राभृते द्वितीयं प्राभृतप्राभृतम् ॥ १०-२ ॥

॥ अथ दशमप्राभृते तृतीयं प्राभृतप्राभृतम् ॥

ता कहं ते एवंभागा आहियाति वएज्जा ? ता एएसिणं अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं अत्थि णक्खत्ता पुव्वंभागा समखेत्ता तीसमुहुत्ता पएणत्ता १, अत्थि णक्खत्ता पच्छंभागा समखेत्ता तीसमुहुत्ता पएणत्ता २, अत्थि णक्खत्ता णत्तंभागा अवड्ढखेत्ता पएणरसमुहुत्ता पएणत्ता ३, अत्थि णक्खत्ता उभयंभागा दिवड्ढखेत्ता पणयालीसं मुहुत्ता पएणत्ता ४, १ । एएसिणं अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं कयरे णक्खत्ता जे णं पुव्वंभागा समखेत्ता तीसं-मुहुत्ता पएणत्ता १ ?, कयरे णक्खत्ता जे णं पच्छंभागा समखेत्ता तीसं मुहुत्ता पएणत्ता २ ? कयरे णक्खत्ता जे णं णत्तंभागा अवड्ढखेत्ता पएणरसमुहुत्ता पएणत्ता ३ ?, कयरे णक्खत्ता जे णं उभयंभागा दिवड्ढखेत्ता पणयालीसं-मुहुत्ता पएणत्ता ४ ?, ता एएसिणं अट्ठावीसाए नक्खत्ताणं तत्थ जे ते णक्खत्ता पुव्वंभागा समखेत्ता तीसं मुहुत्ता पएणत्ता ते णं छ, तं जहा–पुव्वापोट्ठवया १, कत्तिया २, महा ३, पुव्वाफग्गुणी ४, मूलो ५, पुव्वा-साढा ६, १, तत्थ जे ते णक्खत्ता पच्छंभागा समखेत्ता तीसं मुहुत्ता पएणत्ता, ते णं दस, तं जहा–अभिई १, सवणो २, धणिट्ठा ३, रेवई ४, अस्सिणी ५, मिगसिरं ६, पूसो ७, हत्थो ८, चित्ता ९, अणुराहा १०, २, तत्थ जे ते णक्खत्ता णत्तंभागा अवड्ढखेत्ता पएणरसमुहुत्ता पएणत्ता ते णं छ, तं जहा–सयभिसया १, भरणी २, अद्दा ३, अस्सेसा ४, साई ५, जेट्ठा ६, ३, तत्थ जे ते णक्खत्ता उभयंभागा दिवड्ढखेत्ता पणयालीसं मुहुत्ता पएणत्ता, ते णं छ, तं जहा–उत्तरापोट्ठवया १, रोहिणी २, पुणव्वसू ३, उत्तराफग्गुणी ४, विसाहा ५, उत्तरासाढा ६, ४ ॥ सूत्रं ३५ ॥ दसमस्स ततियं पाहुड पाहुडं समत्तं ॥ १०-३ ॥

॥ इति दशमप्राभृते तृतीयं प्राभृतप्राभृतम् ॥ ११—३ ॥

॥ अथ दशमप्राभृते चतुर्थं प्राभृतप्राभृतम् ॥

ता कहं ते जोगस्स आदी आहितेति वएज्जा ? ता अभीइसवणा खलु दुवे णक्खत्ता पच्छाभागा समखेत्ता साइरेगउत्तालीसमुहुत्ता तप्पढमयाए सायं चंदेण सद्धिं जोयं जोएंति, तओ पच्छा अवरं साइरेगं दिवसं १। एवं खलु अभिईसवणा दुवे णक्खत्ता एगराइं एगं च साइरेगं दिवसं चंदेण सद्धिं जोयं जोएंति, जोयं जोएत्ता जोयं अणुपरियट्टंति जोयं अणुपरियट्टित्ता सायं चंदं धणिट्ठाणं समप्पंति २। ता धणिट्ठा खलु णक्खत्ते पच्छा भागे समखेत्ते तीसंमुहुत्ते तप्पढमयाए सायं चंदेण सद्धिं जोयं जोएइ, जोयं जोइत्ता तओ पच्छा राइं अवरं च दिवसं, एवं खलु धणिट्ठा णक्खत्ते एगं च राइं एगं च दिवसं, चंदेण सद्धिं जोयं जोएइ, जोयं जोइत्ता जोयं अणुपरियट्टइ, अणुपरियट्टित्ता सायं चंदं सयभिसयाणं समप्पेइ ता सयभिसया खलु णक्खत्ते णत्तंभागे अवड्ढखेत्ते पणरसमुहुत्ते तप्पढमयाए सायं चंदेण सद्धिं जोयं जोएइ णो लभइ अवरं दिवसं, एव खलु सयभिसया णक्खत्ते एगं राइं चंदेण सद्धिं जोयं जोएइ जोयं जोइत्ता जोयं अणुपरियट्टइ,जोयं अणुपरियट्टित्ता पातो चंदं पुव्वाणं पोट्ठवयाणं समप्पेइ ३। ता पुव्वापोट्ठवया खलु णक्खत्ते पुव्वंभागे समखेत्ते तीसं मुहुत्ते तप्पढमयाए पाओ चंदेण सद्धिं जोयं जोएइ, तओ पच्छा अवरराइं, एवं खलु पुव्वापोट्ठवया णक्खत्ते एगं च दिवसं एगं च राइं चंदेण सद्धिं जोयं जोएइ जोयं जोइत्ता जोयं अणुपरियट्टइ, अणुपरियट्टित्ता पाओ चदं उत्तरापोट्ठवयाणं समप्पेइ ४। ता उत्तरापोट्ठवया खलु णक्खत्ते उभयं भागे दिवड्ढखेत्ते पणयालीसमुहुत्ते तप्पढमयाए पाओ चंदेण सद्धिं जोयं जोएइ अवरं च राइं तओ पच्छा अपरं दिवसं, एवं खलु उत्तरापोट्ठवया णक्खत्ते एगं दिवसं एगं च राइं अवरं च दिवसं चंदेण सद्धिं जोयं जोएइ, जोयं जोइत्ता जोयं अणुपरियट्टइ अणुपरियट्टित्ता सायं चंदं रेवईणं समप्पेइ ५। ता रेवई खलु णक्खत्ते पच्छं

भागे समखेत्ते तीसं मुहुत्ते तप्पढमयाए सायं चंदेणं सद्धिं जोयं जोएइ, तओ पच्छा अवरं दिवसं एवं खलु रेवई णक्खत्ते एगं राइं एगं च दिवसं चंदेण सद्धिं जोयं जोएइ जोयं जोइत्ता जोयं अणुपरियट्टइ अणुपरियट्टित्ता सायं चंदं अस्सिणीणं समप्पेइ ६। ता अस्सिणी खलु णक्खत्ते पच्छं भागे समखेत्ते तीसं मुहुत्ते तप्पढमयाए सायं चंदेण सद्धिं जोयं जोएइ, तओ पच्छा अवरं दिवसं एवं खलु अस्सिणी णक्खत्ते एगं च राइं–एगं च दिवसं चंदेण सद्धिं जोयं जोएइ, जोयं जोइत्ता जोयं अणुपरिट्टइ, अणुपरियट्टित्ता सायं चंदं भरणीणं समप्पेइ ७। ता भरणी खलु णक्खत्ते णत्तं भागे अवड्ढखेत्ते पण्णरसमुहुत्ते तप्पढमयाए सायं चंदेण सद्धिं जोयं जोएइ, णो लभइ अवरं दिवसं, एवं खलु भरणी णक्खत्ते एगं राइं चंदेण सद्धिं जोयं जोएइ, जोयं जोइत्ता जोयं अणुपरियट्टइ अणुपरियट्टित्ता (जहा सत्त-भिसया जाव) पाओ चंदं कत्तियाणं समप्पेइ ८। ता कत्तिया खलु णक्खत्ते पुव्वंभागे समखेत्ते तीसइ मुहुत्ते तप्पढमयाए पाओ चंदेण सद्धिं जोयं जोएइ तओ पच्छा राइं एवं खलु कत्तिया णक्खत्ते एगं च दिवसं एगं च राइं चंदेण सद्धिं जोयं जोएइ जोयं जोइत्ता जोयं अणुपरियट्टइ, अणुपरिय-ट्टित्ता पाओ चंदं रोहिणीणं समप्पेइ ९। रोहिणी जहा उत्तराभद्दवया १०। मगसिरं जहा धणिट्ठा ११। अद्दा जहा सयभिसया १२। पुणव्वसू जहा उत्तरभद्दवया १३। पुस्सो जहा धणिट्ठा १४। अस्सेसा जहा सयभिसया १५। महा जहा पुव्वाफग्गुणी १६। पुव्वाफग्गुणी जहा पुव्वाभद्दवया १७। उत्तराफग्गुणी जहा उत्तराभद्दवया १८। हत्थो चित्ता य जहा धणिट्ठा १९–२०। साई जहा सयभिसया २१। विसाहा जहा उत्तराभद्दवया २२। अणुराहा जहा धणिट्ठा २३। जिट्ठा जहा सयभिसया २४। मूलं २५ पुव्वासाढा य जहा पुव्वाभद्दवया २६। उत्तरासाढा जहा उत्तराभद्दवया २७। (एवं जहा सयभिसया तहा नत्तंभागा नेयव्वा एवं जहा पुव्वाभद्दवया तहेव

पुव्वंभागा छप्पि नेयव्वा, जहा धनिट्ठा तहा पच्छंभागा अट्ठ नेयव्वा जाव एवं खलु उत्तरासाढा दो दिवसे एगं च राइं चंदेण सद्धिं जोगं जोएति, ता जोगं अणुपरियट्टति २ सागं चंदं अभितीसवणाणं समप्पेति) ॥ सूत्रं ३६ ॥ दसमस्स चउत्थं पाहुडपाहुडं समत्तं ॥ १०-४ ॥

॥ अथ दशमप्राभृते पञ्चमं प्राभृतप्राभृतम् ॥

ता कहंते कुला आहिआति वएज्जा ? तत्थ खलु इमे बारस कुला, बारस उवकुला, चत्तारि कुलोवकुला पण्णत्ता १। बारस कुला, तं जहा–धणिट्ठाकुलं १, उत्तराभद्दवयाकुलं २, अस्सिणीकुलं ३, कत्तियाकुलं ४, मगसिरकुलं ५, पुस्सकुलं ६, मघाकुलं ७, उत्तराफग्गुणीकुलं ८, चित्ताकुलं ९, विसाहाकुलं १०, मूलंकुलं ११, उत्तरासाढाकुलं १२, २। बारस उवकुला, तं जहा–सवणो उवकुलं १, पुव्वपोट्ठवयाउवकुलं २, रेवईउवकुलं ३, भरणीउवकुलं ४, रोहिणीउवकुलं ५, पुणव्वसुउवकुलं ६, अस्सेसाउवकुलं ७, पुव्वाफग्गुणी उवकुलं ८, हत्थोउवकुलं ९, साईउवकुलं १०, जेट्ठाउवकुलं ११, पुव्वासाढाउवकुलं १२, ३। चत्तारि कुलोवकुला, तं जहा–अभिइकुलोवकुलं १, सयभिसया कुलोवकुलं २, अद्दा कुलोवकुलं ३, अणुराहा कुलोवकुलं ४, ४ ॥ सूत्रं ३७ ॥ दसमस्स पाहुडस्स पंचमं पाहुडपाहुडं समत्तं ॥ १०-५ ॥

॥ अथ दशमप्राभृते षष्ठं प्राभृतप्राभृतम् ॥

ता कहं ते पुण्णमासी आहियाति वएज्जा ? तत्थ खलु इमाओ बारस पुण्णमासीओ, बारस अमावासाओ, पण्णत्ताओ तं जहा–साविट्ठी १, पोट्ठवई २, आसोयी ३, कत्तियी ४, मग्गसिरी ५, पोसी ६, माही ७, फग्गुणी ८, चेत्ती ९, वेसाही १०, जेट्ठामूली ११, आसाढी १२, १। ता साविट्ठिं णं पुण्णमासिं कइ णक्खत्ता जोएंति ? ता तिण्णि

णक्खत्ता जोएंति, तं जहा—अभिई १, सवणो २, धणिट्ठा ३, १, २ । ता पुव्वपोट्ठवइं णं पुण्णिमं कइ णक्खत्ता जोएंति ? ता तिण्णि णक्खत्ता जोएंति, तं जहा—सयभिसया १, पुव्वापोट्ठवया २, उत्तरापोट्ठवया ३, २, ३ । ता आसोइं णं पुण्णिमं कइ णक्खत्ता जोएंति ? ता दोण्णि णक्खत्ता जोएंति, तं जहा— रेवई अस्सिणी य ३, ४ । ता कत्तिइं णं पुण्णिमं कइ णक्खत्ता जोएंति ? ता दोण्णि णक्खत्ता जोएंत्ति, तं जहा—भरणी कत्तिया च ४, ५ । ता मग्गसिरिं णं पुण्णिमं कइ णक्खत्ता जोएंति ? ता दोण्णि णक्खत्ता जोएंति, तं जहा—रोहिणी मग्गसिरा य ५, ६ । ता पोसि णं पुण्णिमं कइ णक्खत्ता जोएंति ?, ता तिण्णि णक्खत्ता जोएंति, तं जहा—अद्दा १, पुणव्वसू २, पुस्सो ३, ६, ७ । ता माहि णं पुण्णिमं कइ णक्खत्ता जोएंति ?, ता दोण्णि णक्खत्ता जोएंति ?, तं जहा—अस्सेसा मघा य ७, ८ । ता फग्गुणिं णं पुण्णिमं कइ णक्खत्ता जोएंति ? ता दोन्नि नक्खत्ता जोएंति ? तं जहा—पुव्वाफग्गुणी उत्तराफग्गुणी य ८, ९ । ता चेत्तिं णं पुण्णिमं कइ णक्खत्ता जोएंति ? ता दोण्णि णक्खत्ता जोएंति, तं जहा—हत्थो चित्ता य ९, १० । ता वेसाहिं णं पुण्णिमं कइ णक्खत्ता जोएंति ? ता दोण्णि णक्खत्ता जोएंति, तं जहा--साई विसाहा य १०, ११ । ता जेट्ठामूलिं णं पुण्णिमं कइ णक्खत्ता जोएंति ? ता तिण्णि णक्खत्ता जोएंति, तं जहा—अणुराहा १, जेट्ठा २, मूलो य ३, ११, १२ । तावत् आसाढिं णं पुण्णिमं कइ णक्खत्ता जोएंति ? ता दो णक्खत्ता जोएंति, (एएणं अभिलावेणं मग-सिरिणं दोन्नि, तंजहा—रोहिणी मग्गसिरोय, पोसिणं तिन्नी, तंजहा—अद्दा पुनव्वसू पुस्सो, माहिणं दोन्नि, तंजहा—अस्सेसा महा य, फग्गुणीणं दोन्नि तंजहा—पुव्वफग्गुणी उत्तराफग्गुणी य, चित्तिणं दोन्नि, तंजहा—हत्थो चित्ता य, विसाहिणं दोन्नि, तंजहा—साति विसाहा य, जेट्ठामूलिणं तिन्नि, तंजहा—अणुराहा जेट्ठा मुलो, आसाढिणं दोन्नि) तं जहा—पुव्वासाढा

उत्तरासाढा य १२, १३ ॥ सूत्रं ३८ ॥ ता सावट्ठिरणं पुरिणमासिरणं किं कुलं जोएइ उवकुलं जोएइ, कुलोवकुलं जोएइ? ता कुलं वा जोएइ, उवकुलं वा जोएइ, कुलोवकुलं वा जोएइ, कुल जोएमाणे धणिट्ठा णक्खत्ते जोएइ, उवकुलं जोएमाणे सवणे णक्खत्ते जोएइ, कुलोवकुलं जोए-माणे अभिईणक्खत्ते जोएइ, साविट्ठि पुरिणमं कुलं वा जोएइ, उवकुलं वा जोएइ, कुलोवकुलं वा जोएइ, कुलेण वा जुत्ता उवकुलेण वा जुत्ता कुलोवकुलेण वा जुत्ता साविट्ठी पुरिणमा जुत्ताति वत्तव्वं सिया १। ता पोट्ठवइरणं पुरिणमं किं कुलं जोएइ, उवकुलं जोएइ, कुलोवकुलं जोएइ? ता कुलं वा जोएइ, उवकुलं वा जोएइ, कुलोवकुलं वा जोएइ, कुलं जोएमाणे उत्तरापोट्ठवया णक्खत्ते जोएइ उवकुलं जोएमाणे पुव्वापोट्ठवया णक्खत्ते जोएइ, कुलोवकुलं जोएमाणे सयभिसया णक्खत्ते जोएइ, पोट्ठवइं णं पुरिणमं कुलं वा जोएइ, उवकुलं वा जोएइ, कुलोवकुलं वा जोएइ, कुलेण वा जुत्ता, उव-कुलेण वा जुत्ता कुलोवकुलेण वा जुत्ता, पोट्ठवई पुरिणमा जुत्ता–ति वत्तव्वं सिया २। ता आसोइं पुरिणमासिणिं किं कुलं जोएइ, उवकुलं जोएइ, कुलोवकुल जोएइ? ता कुलं वा जोएइ, उवकुलं वा जोएइ, नो कुलोवकुलं जोएइ, कुलं जोएमाणे अस्सिणी णक्खत्ते जोएइ, उवकुलं जोएमाणे रेवई णक्खत्ते जोएइ, आसोइं णं पुरिणमं कुलं वा जोएइ, उवकुलं वा जोएइ, कुलेण वा जुत्ता उवकुलेण वा जुत्ता आसोई पुरिणमा जुत्ता–ति वत्तव्वं सिया ३। एवं एएणं अभिलावेणं नेत्तव्वा, जाव पोसिं पुरिणमं, जेट्ठामूलिं पुरिणमं च कुलोवकुलं पि जोएइ, सेसासु णत्थि कुलोवकुलं जाव आसाढी पुरिणमासिणी जुत्ता–ति वत्तव्वं सिया ४। दुवालस अमावासाओ पराणत्ताओ, तं जहा–सावट्ठीपोट्ठवइ जाव आसाढी ५। ता साविट्ठिं णं अमावासं कइ णक्खत्ता जोएंति? ता दुन्नि णक्खत्ता जोएंति, तं जहा–असेस्सा महा य १, एवं एएणं अभिलावेणं णेयव्वं–ता पोट्ठवइं दो णक्खत्ता जोएंति, तं जहा–पुव्वाफग्गुणी उत्तराफग्गुणी य २,

आसोइं दोन्नि हत्थो चित्ता य ३, कत्तिइं दोन्नि, साई विसाहा य ४, मग्गसिरिं तिरिण, अणुराहा जेट्ठा मूलो ५, पोसिं दोन्नि, पुव्वासाढा उत्तरासाढा ६, माहिं तिरिण, अभीई सवणो धणिट्ठा य ७, फग्गुणी तिरिण, सयभिसया पुव्वपोट्ठवया उत्तरापोट्ठवया य ८, चेत्तिं तिरिण, उत्तराभद्दवया, रेवई, अस्सिणी य ९, वेसाहिं दोन्नि, भरणी कत्तिया य १०, जेट्ठामूलिं दोन्नि, रोहिणी मग्गसिरं च ११, ता आसाढिं णं अमावासं कइ णक्खत्ता जोएंति ? ता तिरिण णक्खत्ता जोएंति, तं जहा—अद्दा पुणव्वसू, पुस्सो य १२,५ । ता साविट्ठिं णं अमावासं किं कुलं जोएइ ? उवकुलं जोएइ ? कुलोवकुलं जोएइ ? कुलं वा जोएइ, उवकुलं वा जोएइ नो लब्भइ कुलोवकुलं, कुलं जोएमाणे महाणक्खत्ते जोएइ, उवकुलं वा जोएमाणे असलेसा णक्खत्ते जोएइ कुलेण वा जुत्ता उवकुलेण वा जुत्ता साविट्ठी अमावासा जुत्ता—ति वत्तव्वं सिया ६ । एवं णेयव्वं णवरं मग्गसिराए, माहीए फग्गणीए, आसाढीए य अमावासाए कुलोवकुलं भाणियव्वं, सेसाणं कुलोवकुलं णत्थि ॥ सूत्रं ३९ ॥ दसमस्स पाहुडस्स छट्ठं पाहुडपाहुडं समत्तं ॥ १०—६ ॥

॥ अथ दशमप्राभृते सप्तमं प्राभृतप्राभृतम् ॥

ता कहं ते संनिवाए आहिएति वएज्जा ? ता जया णं साविट्ठी पुरिणमा भवइ तया णं माही अमावासा भवइ १ । जया णं माही पुरिणमा भवइ तया णं साविट्ठी अमावासा भवइ २ । जया णं पोट्ठवई पुरिणमा भवइ तया णं फग्गुणी अमावासा भवइ ३ । जया णं फग्गुणी पुरिणमा भवइ तया णं पोट्ठवई अमावासा भवइ ४ । जया णं आसोई पुरिणमा भवइ तया णं चेत्ती अमावासा भवइ ५ । जया णं चेत्ती पुरिणमा भवइ तया णं आसोई अमावासा भवइ ६ । जया णं कत्तिई पुरिणमा भवइ तया णं वेसाही

अमावासा भवइ ७। जया णं वेसाही पुण्णिमा भवइ तया णं कत्तिया अमावासा भवइ ८। जया णं मग्गसिरी पुण्णिमा भवइ तया णं जेट्ठामूली अमावासा भवइ ९। जया णं जेट्ठामूली पुण्णिमा भवइ तया णं मग्गसिरी अमावासा भवइ (एवं एएणं अभिलावेणं आसोइए चेतिए य कत्तीए वेसाहिए मग्गसिराए जेट्ठामूलीए य) १०। जया णं पोसी पुण्णिमा भवइ तया णं आसाढी अमावासा भवइ ११। जया णं आसाढी पुण्णिमा भवइ तया णं पोसी अमावासा भवइ १२ ॥ सूत्रं ४० ॥ दसमस्स पाहुडस्स सत्तमं पाहुड-पाहुडं समत्तं ॥ १०-७ ॥

॥ अथ दशमप्राभृते अष्टमं प्राभृतप्राभृतम् ॥

ता कहं ते नक्खत्तसंठिई आहिएति वएज्जा ? ता एएसि णं अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं अभिई णं णक्खत्ते किं संठिए पण्णत्ते ? गोयमा ! गोसीसावलिसंठिए पण्णत्ते १। सवणे काहारसंठिए पण्णत्ते २। धणिट्ठा संठिए सउणिपलीणगसंठिए ३। सयभिसया पुप्फोवयारसंठिए ४। एवं पुव्वापोट्ठवया अवड्ढवावीसंठिए ५। एवं उत्तरावि ६। रेवईणक्खत्ते णावासंठिए ७। अस्सिणी णक्खत्ते आसक्खंधसंठिए ८। भरणीणक्खत्ते भगसंठिए ९। कत्तिया णक्खत्ते छुरघरसंठिए पण्णत्ते १०। रोहिणीणक्खत्ते सगडुद्धिसंठिए ११। मिग्गसिरणक्खत्ते मिगसीसावलिसंठिए १२। अद्दाणक्खत्ते रुधिरबिंदुसंठिए १३। पुणव्वसुणक्खत्ते तुलासंठिए १४। पुस्से णक्खत्ते वद्धमाणसंठिए १५। अस्सेसा णक्खत्ते पडागसंठिए १६। महाणक्खत्ते पागारसंठिए १७। पुव्वाफग्गुणीणक्खत्ते अद्धपलियंकसंठिए १८। एवं उत्तरावि १९। हत्थे णक्खत्ते हत्थसंठिए २०। चित्ताणक्खत्ते मुहफुल्लसंठिए २१। साइणक्खत्ते खीलगसंठिए २२। विसाहा णक्खत्ते दामणिसंठिए २३। अणुराहा णक्खत्ते एगावलिसंठिए २४। जेट्ठाणक्खत्ते

गयदंतसंठिए २५ । मूले णक्खत्ते विच्छुय लंगूलसंठिए २६ । पुव्वासाढा-णक्खत्ते गयविक्कमसंठिए २७ । उत्तरासाढाणक्खत्ते सीहनिसाइयसंठिए २८ ॥ सूत्रं ४१ ॥ दसमस्स अट्ठमं पाहुडपाहुडं समत्तं ॥ १०—८ ॥

॥ अथ दशमप्राभृते नवमं प्राभृतप्राभृतम् ॥

ता कहं ते नक्खत्ताणं तारग्गे आहिएति वएज्जा ? ता एएसि णं अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं अभिईणक्खत्ते कइ तारे पण्णत्ते ? गोयमा ! तितारे पण्णत्ते १ । सवणे णक्खत्ते तितारे २ । धणिट्ठा णक्खत्ते पणतारे ३ । सयभिसया णक्खत्ते सततारे ४ । पुव्वापोट्ठवया णक्खत्ते दुतारे ५ । एवं उत्तरापोट्ठवयावि ६ । रेवईणक्खत्ते बत्तीसइतारे ७ । अस्सिणी णक्खत्ते तितारे ८ । भरणी तितारे ६ । कत्तिया छत्तारे १० । रोहिणी पंचतारे ११ । मिगसिर तितारे १२ । अद्दा एगतारे १३ । पुणव्वसु पंचतारे १४ । पुस्से तितारे १५ । अस्सेसा छत्तारे (एगतारे) १६ । महा सत्ततारे १७ । पुव्वाफग्गुणी दुतारे १८ । एवं उत्तरावि १६ । हत्थे पंचतारे २० । चित्ता एगतारे २१ । साई एगतारे २२ । विसाहा पंचतारे २३ । अणुराहा चउतारे २४ । जेट्ठा तितारे २५ । मूले एगारसतारे २६ । पुव्वासाढा चउतारे २७ । उत्तरासाढा णक्खत्ते चउतारे पण्णत्ते ॥ सूत्रं ४२ ॥ दसमस्स पाहुडस्स नवमं पाहुडपाहुडं समत्तं ॥ १०—६ ॥

॥ अथ दशमप्राभृते दसमं प्राभृतप्राभृतम् ॥

ता कहं ते णेया अहिएति वएज्जा ? ता वासाणं पढमं मासं कइ णक्खत्ता णेंति ? ता चत्तारि णक्खत्ता णेंति, तं जहा—उत्तरासाढा अभिई सवणे धणिट्ठा, उत्तरासाढाचोद्दस अहोरत्ते णेइ, अभिई सत्त अहोरत्ते णेइ, सवणे अट्ठ अहोरत्ते णेइ धणिट्ठा एगं अहोरत्तं णेइ, तंसि च णं मासंसि चउरंगुलाए पोरिसीए छायाए सूरिए अणुपरियट्टइ, तस्स णं मासस्स

चरिमे दिवसे दो पायाइं चत्तारि य अंगुलाइं पोरिसी भवइ १। ता वासाणं दोच्चं मासं कइ णक्खत्ता णेंति ? ता चत्तारि णक्खत्ता णेंति, तं जहा– धणिट्ठा, सयभिसया पुव्वपोट्ठवया उत्तरपोट्ठवया, एवं एएणं अभिलावेणं जहेव जंबुद्दीवपन्नत्तीए तहेव इत्थंपि भाणियव्वं, धणिट्ठा चोद्दसअहोरत्ते णेइ सयभिसया सत्त अहोरत्ते णेइ, पुव्वापोट्ठवया अट्ठ अहोरत्ते णेइ, उत्तरा-पोट्ठवया एगं अहोरत्तं णेइ, तंसि च णं मासंसि अट्ठंगुलाए पोरिसीए छायाए सूरिए अणुपरियट्टइ तस्स णं मासस्स चरिमे दिवसे दो पयाइं अट्ठ अंगुलाइं पोरिसी भवइ २। ता वासाणं तइयं मासं कइ णक्खत्ता णेंति ? ता तिण्णि णक्खत्ता णेंति, तं जहा–उत्तरपोट्ठवया रेवई, अस्सिणी उत्तरापोट्ठवया चोद्दसअहोरत्ते णेइ, रेवई पण्णरस अहोरत्ते णेइ अस्सिणी एगं अहोरत्तं णेइ, तंसि च णं मासंसि दुवालसंगुलाए पोरिसीए छाया सूरिए अणुपरियट्टइ, तस्स णं मासस्स चरिमे दिवसे लेहट्ठाइं तिण्णि पयाइं पोरिसी भवइ ३। ता वासाणं चउत्थं मासं कइ णक्खत्ता णेंति, तं जहा–अस्सिणी भरणी कत्तिया, अस्सिणी चउद्दस अहोरत्ते णेइ, भरणी पण्णरस अहोरत्ते णेइ, कत्तिया एगं अहोरत्तं णेइ, तंसि च णं मासंसि सोलसंगुलाए पोरिसीए छायाए सूरिए अणुपरियट्टइ, तस्स णं मासस्स चरिमे दिवसे तिण्णि पयाइं चत्तारि अंगुलाइं पोरिसी भवइ ४। ता हेमंताणं पढमं मासं कइ णक्खत्ता णेंति ? ता तिण्णि णक्खत्ता णेंति, तं जहा– कत्तिया रोहिणी संठाणा, कत्तिया चोद्दसअहोरते णेइ, रोहिणी पण्णरस अहोरत्ते णेइ, संठाणा एगं अहोरत्तं णेइ, तंसि च णं मासंसि वीसंगुलाए पोरिसीए छायाए सूरिए अणुपरियट्टइ, तस्स णं मासस्स चरिमे दिवसे तिण्णि पयाइं अट्ठ अंगुलाइं पोरिसी भवइ १, ५। ता हेमंताणं दोच्चं मासं कइ णक्खत्ता णेंति ? चत्तारि णक्खत्ता णेंति, तं जहा–संठाणा, अद्दा, पुणव्वसू पुस्सो, संठाणा चोद्दसअहोरत्ते णेइ, अद्दा सत्त अहोरत्ते णेइ,

पुणव्वसू अट्ठ अहोरत्ते णेइ पुस्से एगं अहोरत्तं णेइ, तंसि च णं मासंसि चउवीसंगुलाए पोरिसीए छायाए सूरिए अणुपरियट्टइ, तस्स णं मासस्स चरिमे दिवसे लेहट्ठाणि चत्तारि पयाइं पोरिसी भवइ २, ६। ता हेमंताणं तइयं मासं कइणक्खत्ता णेंति? ता तिण्णि णक्खत्ता णेंति, तं जहा—पुस्से अस्सेसा महा, पुस्से चोद्दसअहोरत्ते णेइ, अस्सेसा पंचदस अहोरत्ते णेइ, महा एगे अहोरत्तं णेइ, तंसि च णं मासंसि वीसंगुलाए पोरिसीए छायाए सूरिए अणुपरियट्टइ, तस्स णं मासस्स चरिमे दिवसे तिण्णि पयाइं अट्ठंगुलाइं पोरिसी भवई ३,७। ता हेमंताणं चउत्थं मासं कइ णक्खत्ता णेंति? ता तिण्णि णक्खत्ता णेंति, तं जहा—महा पुव्वाफग्गुणी उत्तराफग्गुणी, महा चोद्दस अहोरत्ते णेइ, पुव्वाफग्गुणी पण्णरस अहोरत्ते णेइ, उत्तराफग्गुणी एगं अहोरत्तं णेइ, तंसि च णं मासंसि सोलसंगुलाए पोरिसीए छायाए सूरिए अणुपरियट्टइ, तस्स णं मासस्स चरिमे दिवसे तिण्णि पयाइं चत्तारि अंगुलाइं पोरिसी भवइ ४, ८। ता गिम्हाणं पढमं मासं कइ णक्खत्ता णेंति? ता तिण्णि णक्खत्ता णेंति, तं जहा—उत्तराफग्गुणी हत्थो चित्ता, उत्तराफग्गुणी चोद्दसअहोरत्ते हत्थो पण्णरस अहोरत्ते णेइ, चित्ता एगं अहोरत्तं णेइ, तंसि च णं मासंसि दुवालसंगुलाए पोरिसी छायाए सूरिए अणुपरियट्टइ, तस्स णं मासस्स चरिमे दिवसे लेहट्ठाइं य तिण्णि पयाइं पोरिसी भवइ १, ९। ता गिम्हाणं बितियं मासं कइ णक्खत्ता णेंति? ता तिण्णि णक्खत्ता णेंति, तं जहा—चित्ता साई विसाहा, चित्ता चोद्दस अहोरत्ते णेइ, साई पण्णरस अहोरत्ते णेइ, विसाहा एगं अहोरत्तं णेइ, तंसि च णं मासंसि अट्ठंगुलाए पोरिसीए छायाए सूरिए अणुपरियट्टइ तस्स णं मासस्स चरिमे दिवसे दो पयाइं अट्ठ अंगुलाइं पोरिसी भवइ २, १०। गिम्हाणं तइयं मासं कइ णक्खत्ता णेंति? ता चत्तारि णक्खत्ता णेंति, तं जहा—विसाहा अणुराहा जेट्ठा मूले य, विसाहा चोद्दसअहोरत्ते णेइ, अणुराहा सत्त (पनरस) अहोरत्ते णेइ, जेट्ठा

अट्ठ अहोरत्ते णेइ, मूलो एगं अहोरत्तं णेइ, तंसि च णं मासंसि चउरंगुलाए पोरिसीए छायाए सूरिए अणुपरियट्टइ, तस्स णं मासस्स चरिमे दिवसे दो पयाइं चत्तारि अंगुलाइं पोरिसी भवइ ३, ११ । ता गिम्हाणं चउत्थं मासं कइ णक्खत्ता णेंति ? ता तिरिण णक्खत्ता णेंति, तं जहा—मूलो पुव्वासाढा उत्तरासाढा, मूलो चोद्दस अहोरत्ते णेइ, पुव्वासाढा पराणरस अहोरत्ते णेइ, उत्तरासाढा एगं अहोरत्तं णेइ, (इयत्पर्यन्तं जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति-पाठः) जाव तंसि च णं मासंसि वट्टाए समचउरंससंठियाए णग्गोहपरिमंडलाए सकायमणुरंगिणीए छायाए सूरिए अणुपरियट्टइ तस्स णं मासस्स चरिमे दिवसे लेहट्ठाइं दोपयाइं पोरिसी भवइ ४, १२ ॥ सूत्रं ४३ ॥ दसमस्स पाहुडस्स दसमं पाहुडपाहुडं समत्तं ॥ १०—१० ॥

॥ अथ दशमप्राभृते एकादशं प्राभृतप्राभृतम् ॥

ता कहं ते चंदमग्गा आहितात्ति वएज्जा ? ता एएसि णं अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं अत्थि णक्खत्ता जे णं सया चंदस्स दाहिणेणं जोयं जोएंति १, अत्थि णक्खत्ता जे णं सया चंदस्स उत्तरेण जोयं जोएंति २, अत्थि णक्खत्ता जे णं सया चंदस्स दाहिणेण वि उत्तरेण वि पमद्दं पि जोयं जोएंति ३, अत्थि णक्खत्ता जे णं सया चंदस्स दाहिणेणंवि पमद्दं पि जोयं जोएंति ४, अत्थि णक्खत्ता जे णं चंदस्स सया पमद्दं जोयं जोएंति ५, १ । ता एएसि णं अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं कयरे णक्खत्ता जे णं सया चंदस्स दाहिणेण जोयं जोएंति ? तहेव जाव कयरे णक्खत्ता जे णं सया चंदस्स पमद्दं जोयं जोएंति ? ता एएसि णं अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं तत्थ जे णं णक्खत्ता सया चंदस्स दाहिणेणं जोयं जोएंति ते णं छ, तंजहा—संठाणा १, अद्दा २, पुस्सो ३, अस्सेसा ४, हत्थो ५, मूलो ६, तत्थ जे ते णक्खत्ता जे णं सया चंदस्स उत्तरेणं जोयं जोएंति, ते णं बारस,

तंजहा—अभिई १, सवणो २, धणिट्ठा ३, सयभिसया ४, पुव्वभद्दवया ५, उत्तरापोट्ठवया ६, रेवई ७, अस्सिणी ८, भरणी ९, पुव्वाफग्गुणी १०, उत्तराफग्गुणी ११, साई १२, तत्थ जे ते णक्खत्ता जे णं चंदस्स दाहिणेण वि उत्तरेण वि पमद्दं पि जोयं जोएंति ते णं सत्त, तंजहा—कत्तिया १, रोहिणी २, पुणव्वसू ३, महा ४, चित्ता ५, विसाहा ६, अणुराहा ७, तत्थ जे ते णक्खत्ता जे णं चंदस्स दाहिणेण वि पमद्दं पि जोयं जोएंति ताओ णं दो आसाढाओ सव्वबाहिरे मंडले जोयं जोएंसु वा, जोएंति वा, जोइस्संति वा तत्थ णं जे तं णक्खत्ते जे णं सया चंदस्स पमद्दं जोयं जोएइ सा णं एगा जेट्ठा ८, २ ॥ सूत्रं ४४ ॥ ता कइ णं ते चंदमंडला आहिएति वएज्जा ? ता पण्णरस चंदमंडला आहिएति वएज्जा १ । ता एएसि णं पण्णरसण्हं चंदमंडलाणं अत्थि चंदमंडला जे णं सया णक्खत्तेहिं अविरहिया १, अत्थि चंदमंडला जे णं सया णक्खत्तेहिं विरहिया २, अत्थि चंदमंडला जे णं रविससि णक्खत्ताणं सामण्णा भवंति ३, अत्थि चंदमंडला जे णं सया आइच्चेहिं विरहिया ४, १ । ता एएसि णं पण्णरसण्हं चंदमंडलाणं कयरे चंदमंडला जे णं सया णक्खत्तेहिं अविरहिया जाव कयरे चंदमंडला जे णं सया आइच्चेहिं विरहिया ? ता एएसि णं पण्णरसण्हं चंदमंडलाणं तत्थ जे ते चंदमंडला जे णं सया णक्खत्तेहि अविरहिया ते णं अट्ठ, तं जहा—पढमे चंदमंडले, तइए चंदमंडले, छट्ठे चंदमंडले, सत्तमे चंदमंडले, अट्ठमे चंदमंडले, दसमे चंदमंडले, एगारसे चंदमंडले, पण्णरसमे चंदमंडले १, तत्थ जे ते चंदमंडला जे णं सया णक्खत्तेहिं विरहिया ते णं सत्त, तंजहा—बीए चंदमंडले चउत्थे चंदमंडले पंचमे चंदमंडले नवमे चंदमंडले बारसमे चंदमंडले तेरसमे चंदमंडले चउद्दसमे चंदमंडले २, ७, तत्थ जे ते चंदमंडला जे णं ससिरविणक्खत्ताणं समाणा भवंति ते णं चत्तारि, तंजहा—पढमे चंदमंडले बीए चंदमंडले इक्कारसमे

चंदमंडले पराणारसमे चंदमंडले ३, तत्थ जे ते चंदमंडला जे णं सया आइच्चेहि विरहिया ते णं पंच, तं जहा—छट्ठे चंदमंडले सत्तमे चंदमंडले अट्ठमे चंदमंडले नवमे चंदमंडले दसमे चंदमंडले ४, २ ॥ सूत्रं ४५ ॥ दसमस्स एक्कारसमं पाहुडपाहुडं समत्तं ॥ १०–११ ॥

॥ अथ दशमप्राभृते द्वादशं प्राभृतप्राभृतम् ॥

ता कहं ते देवयाणं अज्झयणा आहियाति वएज्जा ? ता एएसि णं अट्ठावीसाए नक्खत्ताणं अभिई णक्खत्ते किं देवयाए पराणत्ते ? बंभ-देवयाए पराणत्ते १ । सवणे णक्खत्ते विराहुदेवयाए पराणत्ते २ । एवं जहा जंबूद्दीवपराणत्तीए जाव उत्तरासाढा णक्खत्ते विस्सदेवयाए पराणत्ते ॥ सूत्रं ४६ ॥ दसमस्स बारसमं पाहुडपाहुडं समत्तं ॥ १०–१२ ॥

॥ अथ दशमप्राभृते त्रयोदशं प्राभृतप्राभृतम् ॥

ता कहं ते मुहुत्ताणं नामधेज्जा आहियाति वएज्जा ? ता एगमेगस्स णं अहोरत्तस्स तीसं मुहुत्ता पराणत्ता, तंजहा—रुद्दे १, सेए २, मित्ते ३, वाऊ ४, सुपीए ५ तहेव अभिचंदे ६ । माहिंद ७ बलव ८ बंभो ९ बहुसच्चे १० चेव ईसाणे ११ ॥ १ ॥ तट्ठे १२ य भवियप्पा १३, वेसमणे १४ वारुणे य १५ आणंदे १६ । विजए १७ य वीससेणे १८, पयावई १९ चेव उवसमए य २० ॥ २ ॥ गंधव्व २१ अग्गिवेस्से २२, सयवसहे २३ आयवं २४ च अममे २५ य । अणवं २६ च भोम २७ रिसहे २८, सव्वट्ठे २९ रक्खसे ३० चेव ॥ ३ ॥ सूत्रं ४७ ॥ दसमस्स पाहुडस्स तेरसमं पाहुडपाहुडं समत्तं ॥ १०–१३ ॥

॥ अथ दशमप्राभृते चतुर्दशं प्राभृतप्राभृतम् ॥

ता कहं ते दिवसाणं नामधेज्जा आहियाति वएज्जा ? ता एगमेगस्स णक्खत्तस्स पराणरस २ दिवसा पराणत्ता, तंजहा—पडिवयादिवसे १, बितिया दिवसे २ जाव पराणरसी दिवसे १५, १ । ता एएसि णं पराण-रसराहं दिवसाणं पराणरसनामधेज्जा पराणत्ता, तं जहा—पुव्वंगे १ सिद्धमणो-रमे २ य, तत्तो मणोहरो ३ चेव । जसभद्दे ४ य जसोधर २५ सव्वकाम-समिद्धे ६ त्ति य ॥ १ ॥ इंदमुद्धाभिसित्ते, य सोमणस ८ धणंजए ९ य बोद्धव्वे । अत्थसिद्धे १० अभिजाते ११, अच्चासणे १२, य सतंजए १३ ॥ २ ॥ अग्गिवेस्से १४ उवसमे १५ दिवसाणं णामधेज्जाइं २ । ता कहंते राईओ आहितेति वएज्जा ? ता एगमेगस्स णं णक्खत्तस्स पराणरस राईओ पराणत्ताओ, तं जहा—पडिवया राई बितिया राई जाव पराणरसी राई ३ । ता एयासिणं पराणरसराहं राईणं पराणरसनामधेज्जा पराणत्ता, तं जहा—उत्तमा १, य सुणक्खत्ता २, एला एलावच्च ३ जसोधरा ४ । सोमणसा ५ चेव तहा, सिरिभूया ६ य बोद्धव्वा ॥ १ ॥ विजया, य वेजयंति ८, जयंति ९ अपराजिया १० य गच्छा ११ य । समाहारा १२ चेव तहा तेया १३ य तहा य अइतेया १४ ॥ २ ॥ देवाणंदा १५ निरई, रयणीणं, णाम धेज्जाइं ॥ सूत्रं ४८ ॥ दसमस्स पाहुडस्स चउद्दसमं पाहुडपाहुडं समत्तं ॥ १०–१४ ॥

॥ अथ दशमप्राभृते पञ्चदशं प्राभृतप्राभृतम् ॥

ता कहं ते तिहीओ आहितेति वएज्जा ? तत्थ खलु इमा दुविहाओ तिहाओ पराणत्ताओ, तं जहा—दिवसतिही य राईतिही य । ता कहंते दिवसतिही आहितेति वएज्जा ? ता एगमेगस्स णं पक्खस्स पराणरस २ दिवस तिही पराणत्ता, तं जहा—नंदा १ भद्दा २ जया ३ तुच्छा ४

पुराणा ५ पक्खस्स पंचमी ५ । पुणरवि नंदा ६ भद्दा ७ जया ८ तुच्छा ९ पुराणा १० पक्खस्स दसमी १० । पुणरवि नंदा ११ भद्दा १२ जया १३ तुच्छा १४ पुराणा १५ पक्खस्स पराणरसी । एवं ते तिगुणा तिहीओ सव्वेसिं दिवसाणं । ता कहंते राईतिही आहितेति वएज्जा ? एगमेगस्स णं पक्खस्स पराणरस पराणरस राईतिही पराणत्ता, तं जहा—उग्गवई १ भोगवई २ जसवई ३ सव्वट्ठसिद्धा ४ सुहाणामा ५, पुराणरवि—उग्गवई ६, भोगवई ७ जसवई ८ सव्वट्ठसिद्ध ९ सुहाणामा १० पुणरवि उग्गवई ११ भोगवई १२ जसवई १३ सव्वट्ठसिद्धा १४ सुहणामा १५, एते तिगुणा तिहीओ सव्वासिं राईणं ॥ सूत्रं ४९ ॥ दसमस्स पाहुडस्स पराणरसमं पाहुड-पाहुडं समत्तं ॥ १०–१५ ॥

॥ अथ दशमप्राभृते षोडशं प्राभृतप्राभृतम् ॥

ता कहंते गोत्ता आहितेति वएज्जा ? ता एएसि णं अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं अभिई णक्खत्ते किं गोत्ते पराणत्ते ? ता भोगलायणसगोत्ते पराणत्ते १ । सवणे णक्खत्ते संखायणसगोत्ते पराणत्ते २ । धणिट्ठाणक्खत्ते अग्ग-भाव (अग्गितावे)सगोत्ते ३ । सयभिसया णक्खत्ते कराण(उ,णो)लोयणसगोत्ते पराणते ४ । पुव्वापोट्ठवयाणक्खत्ते जोउकरिणायसगोत्ते पराणत्ते ५ । उत्तरा-पोट्ठवयाणक्खत्ते धणंजयसगोत्ते पराणत्ते ६ । रेवईणक्खत्ते पुस्सायणसगोत्ते पराणत्ते ७ । अस्सिणीणक्खत्ते अस्सायणसगोत्ते पराणत्ते ८ । भरणीणक्खत्ते भग्गवेसायण(स)सगोत्ते पराणत्ते ९ । कत्तियाणक्खत्ते अग्गिवेस्ससगोत्ते पराणत्ते १० । रोहिणीणक्खत्ते गोयमसगोत्ते पराणत्ते ११ । संठाणणक्खत्ते भारद्दायसगोत्ते पराणत्ते १२ । अद्दाणक्खत्ते लोहिच्चायणसगोत्ते पराणते १३ । पुणव्वसुणक्खत्ते वासिट्ठसगोत्ते पराणत्ते १४ । पुस्से णक्खत्ते उज्जायणसगोत्ते पराणत्ते १५ । अस्सेसाणक्खत्ते मंडव्वायणसगोत्ते

पराणत्ते १६ । मघाणक्खत्ते पिंगायणसगोत्ते पराणत्ते १७ । पुव्वाफग्गुणी-णक्खत्ते गोवल्लायणसगोत्ते पराणत्ते १८ । उत्तराफग्गुणीणक्खत्ते कासवगोत्ते पराणत्ते १६ । हत्थे णक्खत्ते कोसियगोत्ते पराणत्ते २० । चित्ताणक्खत्ते दब्भियायणसगोत्ते पराणत्ते २१ । साईणक्खत्ते भाग(चामर)च्छगोत्ते पराणत्ते २२ । विसाहाणक्खत्ते सुंगायणसगोत्ते पराणत्ते २३ । अणुराहाणक्खत्ते गोलव्वायणसगोत्ते पराणत्ते २४ । जेट्ठाणक्खत्ते तिगिच्छायणसगोत्ते पराणत्ते २५ । मूले णक्खत्ते कच्चायणसगोत्ते पराणत्ते २६ । पुव्वासाढाणक्खत्ते वज्झियायणसगोत्ते पराणत्ते २७ । उत्तरासाढाणक्खत्ते वग्घावच्चसगोत्ते पराणत्ते २८ ॥ सूत्रं ५० ॥ दसमस्स पाहुडस्स सोलसमं पाहुडपाहुडं समत्तं ॥ १०—१६ ॥

॥ अथ दशमप्राभृते सप्तदशं प्राभृतप्राभृतम् ॥

ता कहंते भोयणा आहितेति वएज्जा ? ता एएसि णं अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं कत्तियाहिं दहिणा भोच्चा कज्जं साहिंति १, रोहिणीहि वसभमसेण भोच्चा कज्जं साहिंति २, संठाणाहिं मिगमंसेण भोच्चा कज्जं साहिंति ३, अद्दाहिं णवणीएण भोच्चा कज्जं साहिंति ४, पुणव्वसुणा घएण भोच्चा कज्जं साहिंति ५, पुस्सेणं खीरेण भोच्चा कज्जं साहेंति ६, अस्सेसाए दीवगमंसेण भोच्चा कज्जं साहेंति ७, मघाहिं कसोतिं (कंसरिं) भोच्चा कज्जं साहिंति ८, पुव्वाहिं फग्गुणीहि मेढकमंसेण भोच्चा कज्जं साहेंति ९, उत्तराहिं फग्गुणीहिं णक्खीमंसेण भोच्चा कज्जं साहिंति १०, हत्थेण वत्थाणीए(णीप्पराणे)ण भोच्चा कज्जं साहेंति ११, चित्ताहिं मुग्गसूपेणं भोच्चा कज्जं साहिंति १२, साइणा फलाइं भोच्चा कज्जं साहेंति १३, विसाहाहिं आतिसियओ भोच्चा कज्जं साहेंति १४, अणुराहाहिं मिस्सा(मास)-कूरं भोच्चा कज्जं साहेंति १५, जेट्ठाहिं कोलट्ठिएणं भोच्चा कज्जं

पराणत्ते, तं जहा–नक्खत्ते १ चंदे २, उऊ ३ आइच्चे ४ अभिवड्ढिए ५ ॥ सूत्रं ५७ ॥ ता लक्खणसंवच्छरे पंचविहे पराणत्ते, तं जहा–णक्खत्ते १, चंदे २, उऊ ३, आइच्चे ४, अभिवड्ढिए ५, १ । ता णक्खत्ते संवच्छरे णं पंचविहे पराणत्ते, तं जहा–समगं णक्खत्ता जोयं जोएंति समगं उऊपरिणामंति । नच्चुराहें नाइसीए, वहुउदए होइ णक्खत्ते ॥ १ ॥ ससि समग पुराणमासिं, जोइंति विसमचारि णक्खत्ता । कडुओ वहुउदओ य, तमाहु संवच्छरं चंदं ॥ २ ॥ विसमं पवालिणो परिणामंति अणुऊसु दिंति पुप्फफलं । वासं न सम्म वासइ, तमाहु संवच्छरं कम्मं ॥ ३ ॥ पुढविदगाणं च रसं, पुप्फफलाणं च देइ आइच्चे । अप्पेणवि वासेणं, सम्मं निप्फज्जए सस्सं ॥ ४ ॥ आइच्चतेयतविया, खणलवदिवसा उऊ परिणामंति । पूरेइ निराणथलए, तमाहु अभिवड्ढियं जाण ॥ ५ ॥ २ । ता सणिच्छर-संवच्छरेणं अट्ठावीसइ विहे पराणत्ते, तं जहा–अभिई १ सवणे २ जाव उत्तरासाढा २८, ३ । जं वा सणिच्छरे महग्गहे तीसाए संवच्छरेहिं सव्वं, णक्खत्तमंडलं समाणेइ ४ ॥ सूत्रं ५८ ॥ दसमस्स पाहुडस्स वीसतिमं पाहुडपाहुडं समत्तं ॥ १०–२० ॥

॥ अथ दशमप्राभृते एकविंशतितमं प्रातभृप्राभृतम् ॥

ता कहंते जोइसस्स दारा आहितेति वएज्जा ? तत्थ खलु इमाओ पंच पडिवत्तीओ पराणत्ताओ, तं जहा–तत्थेगे एवमाहंसु--ता कत्तियाईणं सत्त णक्खत्ता पुव्वदारिया पराणत्ता एगे एवमाहंसु १, एगे पुण एवमाहंसु–ता महाईया सत्त णक्खत्ता पुव्वदारिया पराणत्ता, एगे एवमाहंसु २ एगे पुराण एव-माहंसु–ता धणिट्ठाईया सत्त णक्खत्ता पुव्वदारिया पराणत्ता, एगे एव-माहंसु ३, एगे पुण एवमाहंसु–अस्सिणियाईया सत्त णक्खत्ता पुव्वदारिया

पण्णत्ता, एगे एवमाहंसु ४, एगे पुण एवमाहंसु—ता भरणियाईया सत्त णक्खत्ता पुव्वदारिया पण्णत्ता एगे एवमाहंसु ५, १। तत्थ णं जे ते एवमाहंसु ता कत्तियाईया सत्त णक्खत्ता पुव्वदारिया पण्णत्ता ते एवमाहंसु, तं जहा—कत्तिया रोहिणी संठाणा अद्दा पुणव्वसु पुस्सो असिलेसा महाईया सत्त णक्खत्ता दाहिणदारिया पण्णत्ता, तं जहा—महा पुव्वाफग्गुणी उत्तराफग्गुणी हत्थो चित्ता साई विसाहा, अणुराहाईया, सत्त णक्खत्ता पच्छिमदारिया पण्णत्ता, तंजहा—अणुराहा जेट्ठा मूलो पुव्वासाढा उत्तरासाढा अभिई सवणो, धणिट्ठाईया सत्त णक्खत्ता उत्तरदारिया पण्णत्ता, तंजहा—धणिट्ठा सयभिसया पुव्वापोट्ठवया उत्तरापोट्ठवया रेवई अस्सिणी भरणी १, २। तत्थ णं जे ते एवमाहंसु—ता महाईया सत्त णक्खत्ता पुव्वदारिया पण्णत्ता, ते एवमाहंसु तं जहा—महा पुव्वाफग्गुणी उत्तराफग्गुणी हत्थो चित्ता साई विसाहा १, अणुराहाईया सत्त णक्खत्ता दाहिणदारिया पण्णत्ता, तं जहा—अणुराहा जेट्ठा मूले पुव्वासाढा उत्तरासाढा अभिई सवणो २, धणिट्ठाईया सत्त णक्खत्ता पच्छिमदारिया पण्णत्ता, तंजहा—धणिट्ठा सयभिसया पुव्वापोट्ठवया उत्तरापोट्ठवया रेवई अस्सिणी भरणी ३, कत्तियाईया सत्त णक्खत्ता उत्तरदारिया पण्णत्ता, तंजहा—कत्तिया रोहिणी संठाणा अद्दा पुणव्वसू पुस्सो अस्सेसा ४, २, ३। तत्थ णं जे ते एवमाहंसु—ता धणिट्ठाईया सत्त णक्खत्ता पुव्वदारिया पण्णत्ता, ते एवमाहंसु, तंजहा—धणिट्ठा सयभिसया पुव्वाभद्दवया उत्तराभद्दवया रेवई अस्सिणी भरणी १, कत्तियाईया सत्त णक्खत्ता दाहिणदारिया पण्णत्ता, तंजहा—कत्तिया रोहिणी संठाणा अद्दा पुणव्वसू पुस्सो अस्सेसा, २, महाईया सत्त णक्खत्ता पच्छिमदारिया पण्णत्ता, तंजहा—महा पुव्वाफग्गुणी उत्तराफग्गुणी हत्थो चित्ता साई विसाहा ३, अणुराहाईया सत्त णक्खत्ता उत्तरदारिया पण्णत्ता, तंजहा—अणुराहा जेट्ठा मूलो पुव्वासाढा उत्तरासाढा अभिई सवणो ४,३,४। तत्थ णं

साहिंति १६, मूलेणं मूलपरणो(साए)णं भोच्चा कज्जं साहेंति १७, पुव्वासाढाहिं आमलगसरीरं भोच्चा कज्जं साहिंति १८, उत्तरासाढाहिं बिल्लेहिं भोच्चा कज्जं साहिंति १९, अभिइणा पुप्फेहिं भोच्चा कज्जं साहिंति २०, सवणेणं खीरेणं भोच्चा कज्जं साहिंति २१, धणिट्ठाहिं जुसेण भोच्चा कज्जं साहेंति २२, सयभिसयाए तुवरीओ भोच्चा कज्जं साहिंति २३, पुव्वापोट्ठवयाहिं कारिल्लएहिं भोच्चा कज्जं साहेंति २४, उत्तरापोट्ठवयाहिं वराहमंसेण भोच्चा कज्जं साहेंति २५, रेवईहिं जलयरमंसेण भोच्चा कज्जं साहेंति २६, अस्सिणीहिं तित्तिरमंसेण अहवा वट्टगमंसेण भोच्चा कज्जं साहेंति २७, भरणीहिं तिलतंदुलगं भोच्चा कज्जं साहेंति २८ ॥ सूत्रं ५१ ॥ दसमस्स पाहुडस्स सत्तरसमं पाहुडपाहुडं समत्तं ॥ १०-१७ ॥

॥ अथ दशमप्राभृते अष्टादशं प्राभृतप्राभृतम् ॥

ता कहं ते चारा आहितेति वएज्जा ? तत्थ खलु इमे दुविहा चारा पणत्ता, तं जहा- आइच्च चारा य चंदचारा य १ । ता कहंते चंदचारा आहितेति वएज्जा ? ता पंच संवच्छरिए णं जुगे अभिई णक्खत्ते सत्तसट्ठिचारे चंदेण सद्धिं जोयं जोएइ १, सवणेणं णक्खत्ते सत्तट्ठि चारे चंदेण सद्धिं जोयं जोएइ २, एवं जाव उत्तरासाढा णक्खत्ते सत्तट्ठि चारे चंदेण सद्धिं जोयं जोएइ २ । ता कहं ते आइच्चचारा आहितेति वएज्जा ? ता पंच संवच्छरिएणं जुगे अभिईणक्खत्ते पंच चारे सूरेण सद्धिं जोयं जोएइ, एवं जाव उत्तरासाढा णक्खत्ते पंचचारे सूरेण सद्धिं जोयं जोएइ ॥ सूत्रं ५२ ॥ दसमस्स पाहुडस्स अट्ठारसमं पाहुडपाहुडं समत्तं ॥ १०-१८ ॥

—❀—

॥ अथ दशमप्राभृते एकोनविंशतितमं प्राभृतप्राभृतम् ॥

ता कहं ते मासा आहियाति वएज्जा ? ता एगमेगस्स णं संवच्छरस्स बारस मासा पराणत्ता १ । तेसिं च णं बारसराहं मासाणं दुविहा नामधेज्जा पराणत्ता, तं जहा–लोइया लोउत्तरिया य २ । तत्थ लोइया नामा-सावणे भद्दवए २, आसोए ३, जाव आसाढे १२, ३ । लोउत्तरिया णामा–"अभिणंदे १. सुपइट्ठे २ य, विजए ३ पीइवद्धणे ४ । सेज्जंसे ५ य सिवइ ६ यावइ, सिसिरे ७ वि य हेमवं ८ ॥ १ ॥ नवमे वसंतमासे ९, दसमे कुसुम संभवे १० एगारसमे णिदाहे ११, वणविरोही य बारसे १२॥ २ ॥ ४ ॥सूत्रं ५३ ॥ दसमस्स पाहुडस्स एगूणवीसतितमं पाहुडपाहुडं समत्तं ॥ १०–१९ ॥

॥ अथ दशमप्राभृते विंशतितमं प्राभृतप्राभृतम् ॥

ता कहं ते संवच्छरा आहितेति वएज्जा १ । ता पंच संवच्छरा आहिता. तं जहा–णक्खत्तसंवच्छरे १, जुगसंवच्छरे २, पमाणसंवच्छरे ३, लक्खणसंवच्छरे ४, सणिच्छरसंवच्छरे ५ ॥ सूत्रं ५४ ॥ ता णक्खत्त-संवच्छरे णं दुवालसविहे पराणत्ते, तं जहा–सावणे १ भद्दवए २ जाव आसाढे १२, १ । जं वा बहस्सई महग्गहे दुवालसहिं संवच्छरेहिं सव्वं णक्खत्तमंडलं समाणेइ २ ॥ सूत्रं ५५ ॥ ता जुगसंवत्सरेणं पंचविहे पराणत्ते, तं जहा–चंदे १ चंदे २ अभिवड्ढिए ३ चंदे ४ अभिवड्ढिए चेव ५, १ । ता पढमस्स णं चंदसंवच्छरस्स चउव्वीसं पव्वा पराणत्ता १, दोच्चस्स णं चंदसंवच्छरस्स चउवीसं पव्वा पराणत्ता २, तच्चस्स णं अभिवड्ढिय-संवच्छरस्स छव्वीसं पव्वा पराणत्ता ३, चउत्थस्स णं चंदसंवच्छरस्स चउवीसं पव्वा पराणत्ता ४, पंचमस्स णं अभिवड्ढियसंवच्छरस्स छव्वीसं पव्वा पराणत्ता ५, २ । एवामेव सपुव्वावरेणं पंचसंवच्छरिए जुगे एगे चउवीसे पव्वसए भवतीति मक्खायं ३ ॥ सूत्रं ५६ ॥ ता पमाणसंवच्छरे पंचविहे

जे ते एवमाहंसु–ता अस्सिणियाईया सत्त णक्खत्ता पुव्वदारिया पराणत्ता ते एवमाहंसु, तंजहा–अस्सिणी भरणी कत्तिया रोहिणी संठाणा अद्दा पुणव्वसू १, पुस्साईया सत्तणक्खत्ता दाहिणदारिया पराणत्ता, तंजहा–पुस्सो अस्सेसा महा पुव्वाफग्गुणी उत्तराफग्गुणी हत्थो चित्ता २, साइयाईया सत्त णक्खत्ता पच्छिमदारिया पराणत्ता, तंजहा–साई विसाहा अणुराहा जेट्ठा मूलो पुव्वासाढा उत्तरासाढा ३, अभिइआईया सत्त णक्खत्ता उत्तरदारिया पराणत्ता, तंजहा–अभिई सवणो धणिट्ठा सयभिसया पुव्वभद्दवया उत्तरभद्दवया रेवई ४, ४, ५। तत्थ णं जे ते एवमाहंसु–ता भरणियाईया सत्त णक्खत्ता पुव्वदारिया पराणत्ता, ते एवमाहंसु तंजहा–भरणी कत्तिया रोहिणी संठाणा अद्दा पुणव्वसू पुस्सो १, अस्सेसाईया सत्त णक्खत्ता दाहिणदारिया पराणत्ता, तंजहा–अस्सेसा महा पुव्वाफग्गुणी उत्तराफग्गुणी हत्थो चित्ता साई २, विसाहाईया सत्त णक्खत्ता पच्छिमदारिया पराणत्ता, तंजहा–विसाहा अणुराहा जेट्ठा मूलो पुव्वासाढा उत्तरासाढा अभिई ३, सवणाईया सत्तणक्खत्ता उत्तरदारिया पराणत्ता, तंजहा–सवणो धणिट्ठा सयभिसया पुव्वापोट्ठवया उत्तरापोट्ठवया रेवई अस्सिणी ४, ५, एते एवमाहंसु ६। वयं पुण एवं वयामो–ता अभिईयाईया सत्त णक्खत्ता पुव्वदारिया पराणत्ता, तजहा–अभिई सवणो धणिट्ठा सयभिसया पुव्वापोट्ठवया उत्तरापोट्ठवया रेवई १, अस्सिणियाईया सत्त णक्खत्ता दाहिणदारिया पराणत्ता, तंजहा–अस्सिणी भरणी कत्तिया रोहिणी संठाणा अद्दा पुणव्वसू २, पुस्साईया सत्त णक्खत्ता पच्छिमदारिया पराणत्ता, तंजहा–पुस्सो अस्सेसा महा पुव्वाफग्गुणी उत्तराफग्गुणी हत्थो चित्ता ३, साइयाईया सत्त णक्खत्ता उत्तरदारिया पराणत्ता, तंजहा–साई विसाहा अणुराहा जेट्ठा मूलो पुव्वासाढा उत्तरासाढा ४ ॥ सूत्रं ५१ ॥

दसमस्स पाहुडस्स एक्कवीसतितमं पाहुडपाहुडं समत्तं ॥ १०–२१ ॥

।। अथ दशमप्राभृते द्वाविंशतितमं प्राभृतप्राभृतम् ।।

ता कहं ते नक्खत्तविचए आहिएति वएज्जा ? ता अयगणं जंबुद्दीवे दीवे जाव परिक्खेवेणं पगणत्ते १। ता जंबुद्दीवे गं दीवे दो चंदा पभासेंसु वा, पभासेंति वा, पभासिस्संति वा २। दो सूरिया तविंसु वा तवेंति वा तविस्संति वा ३। छप्पगणे नक्खत्ता जोयं जोइंसु वा जोइंति वा जोइस्संति वा, तंजहा—दो अभिईं, दो सवणा दो धणिट्ठा, दो सयभिसया, दो पुव्वापोट्ठवया दो उत्तरापोट्ठवया, दो रेवई, दो अस्सिणी दो भरणी, दो कत्तिया, दो रोहिणीं, दो संठाणा, दो अद्दा, दो पुणव्वसू, दो पुस्सा, दो असिलेसा, दो पुव्वाफग्गुणी, दो उत्तराफग्गुणी, दो हत्था दो चित्ता, दो साई दो विसाहा, दो अणुराहा, दो जेट्ठा दो मूला, दो पुव्वासाढा दो उत्तरासाढा ४। ता एएसि गं छप्पगणाए नक्खत्ताणं अत्थि णक्खत्ता जे णं णव मुहुत्ते सत्तावीसं च सत्तट्ठिभागे मुहुत्तस्स चंदेण सद्धिं जोयं जोएंति ५। अत्थि नक्खत्ता जे णं पगणरस मुहुत्ते चंदेण सद्धिं जोयं जोएंति, अत्थि नक्खत्ता जे णं तीसमुहुत्तें चंदेण सद्धिं जोयं जोएंति, अत्थि णक्खत्ता जे णं पणयालीसं मुहुत्ते चंदेण सद्धिं जोयं जोएंति ६। ता एएसि णं छप्पगणाए णक्खत्ताणं कयरे णक्खत्ता जे णं णवमुहुत्ते सत्तावीसं च सत्तट्ठिभागे मुहुत्तस्स चंदेण सद्धिं जोयं जोएंति, कयरे णक्खत्ता जे णं पगणरसमुहुत्ते चंदेण सद्धिं जोयं जोएंति ?, कयरे णक्खत्ता जे णं तीसं मुहुत्ते चंदेण सद्धिं जोयं जोएंति ? कयरे णक्खत्ता जे णं पणयालीसं मुहुत्ते चंदेण सद्धिं जोयं जोएंति ? ता एएसि णं छप्पगणाए णक्खत्ता णं तत्थ जे ते णक्खत्ता जे णं णव मुहुत्ते सत्तावीसं च सत्तट्ठिभागे मुहुत्तस्स चंदेण सद्धिं जोयं जोएंति ते णं दो अभिई ७। तत्थ जे ते णक्खत्ता जे णं पगणरसमुहुत्ते चंदेण सद्धिं जोयं जोएंति ते णं बारस तंजहा—दो सयभिसया, दो भरणी, दो अद्दा, दो

अस्सेसा दो साई दो जेट्ठा ८। तत्थ जे णं तीसं मुहुत्ते चंदेण सद्धिं जोयं जोएंति ते णं तीसं, तंजहा–दो सवणा दो धणिट्ठा, दो पुव्वाभद्दवया, दो रेवई, दो अस्सिणी, दो कत्तिया दो संठाणा, दो पुस्सा, दो महा, दो पुव्वाफग्गुणी, दो हत्था, दो चित्ता, दो अणुराहा दो मूला दो पुव्वासाढा ९। तत्थ जे ते णक्खत्ता जेणं पणयालीसं मुहुत्ते चंदेण सद्धिं जोयं जोएंति ते णं बारस, तंजहा–दो उत्तरापोट्ठवया, दो रोहिणी, दो पुणव्वसू दो उत्तराफग्गुणी दो विसाहा, दो उत्तरासाढा १०। ता एएसि णं छप्पणाए णक्खत्ता णं अत्थि णक्खत्ता जे णं चत्तारि अहोरत्ते छच्च मुहुत्ते सूरिएण सद्धिं जोयं जोएंति ११। अत्थि णक्खत्ता जे णं छ अहोरत्ते एक्कवीसं च मुहुत्ते सूरिएण सद्धिं जोयं जोएंति १२। अत्थि णक्खत्ता जे णं तेरस अहोरत्ते दुवालस य मुहुत्ते सूरिएण सद्धिं जोयं जोएंति १३। अत्थि नक्खत्ता जे णं वीसं अहोरत्ते तिन्नि य मुहुत्ते सूरिएण सद्धिं जोयं जोएंति, ता एएसि णं छप्पणाए णक्खत्ताणं कयरे णक्खत्ता जे णं तं चेव उच्चारेयव्वं १४। ता एएसि णं छप्पणाए णक्खत्ता णं तत्थ जे ते णक्खत्ता जे णं चत्तारि अहोरत्ते छच्च मुहुत्ते सूरिएण सद्धिं जोयं जोएंति ते णं दो अभिई १५। तत्थ जे ते णक्खत्ता जे णं छ अहोरत्ते एक्कवीसं च मुहुत्ते सूरिएण सद्धिं जोयं जोएंति ते णं बारस तंजहा–दो सयभिसया दो भरणी, दो अद्दा, दो अस्सेसा, दो साई, दो जेट्ठा १६। तत्थ जे ते णक्खत्ता जे णं तेरस अहोरत्ते बारस य मुहुत्ते सूरिएण सद्धिं जोयं जोएंति ते णं तीसं, तंजहा–दो सवणा, जाव दो पुव्वासाढा १७। तत्थ जे ते णक्खत्ता जे णं वीसं अहोरत्ते तिण्णि य मुहुत्ते सूरिएण सद्धिं जोयं जोएंति ते णं बारस, तंजहा–दो उत्तरापोट्ठवया जाव दो उत्तरासाढा १८ ॥ सूत्रं ६० ॥ ता कहं ते सीमाविक्खंभे आहिएत्ति वएज्जा? ता एएसि णं छप्पणाए णक्खत्ताणं अत्थि णक्खत्ता जेसि णं छ सयातीसा सत्तट्ठि-

भागतीसइभागाणं सीमाविक्खंभो, अत्थि णक्खत्ता जेसि णं सहस्सं पंचोत्तरं सत्तट्ठिभागतीसइभागाणं सीमाविक्खंभो, अत्थि णक्खत्ता जेसि णं दो सहस्सा दसुत्तरा सत्तट्ठिभागतीसइ भागाणं सीमा विक्खंभो ? अत्थि णक्खत्ता जेसि णं तिसहस्सं पंचदसुत्तरं सत्तट्ठिभागतीसइभागाणं सीमा-विक्खंभो १ । ता एएसि णं छप्पराणाए णक्खत्ता णं कयरे णक्खत्ता जेसि णं छसयातीसा तं चेव उच्चारेयव्वं जाव ता एएसि णं छप्पराणाए णक्खत्ता णं कयरे णक्खत्ता जेसि णं तिसहस्सं पंचदसुत्तरं सत्तट्ठिभागतीसइभागाणं सीमाविक्खंभो ? ता एएसि णं छप्पराणाए णक्खत्ताणं तत्थ जे ते णक्खत्ता जेसि णं छ सया तीसा सत्तट्ठिभागतीसइभागाणं सीमाविक्खंभो ते णं दो अभिई २ । तत्थ जे ते णक्खत्ता जेसि णं सहस्सं पंचुत्तरं सत्तट्ठिभागतीसइ-भागाणं सीमा विक्खंभो ते णं बारस, तजहा—दो सयभिसया २, जाव दो जेट्ठा १२,३ । तत्थ जे ते णक्खत्ता जेसि णं दो सहस्सा दसुत्तरा सत्तट्ठिभागतीसइ-भागाणं सीमाविक्खंभो ते णं तीसं, तंजहा—दो सवणा २ जाव दो पुव्वासाढा ३०, ४ । तत्थ जे ते णक्खत्ता जेसि णं तिसहस्सं पंचदसुत्तरं सत्तट्ठिभाग-तीसइभागाणं सीमाविक्खंभो ते णं बारस, तंजहा—दो उत्तरापोट्ठवया २ जाव दो उत्तरासाढा ५ ॥ सूत्रं ६१ ॥ एएसि णं छप्पराणाए णक्खत्ता णं किं सया पाओ चंदेण सद्धिं जोयं जोएइ ? एएसि णं छप्पराणाए णक्खत्ता णं किं सया सायं चंदेण सद्धिं जोयं जोएइ ? एएसि णं छप्पराणाए णक्खत्ताणं किं सया दुहओ पविसिय २ चंदेण सद्धिं जोयं जोएइ ? ता एएसि णं छप्पराणाए णक्खत्ताणं न किंपि तं जं सया पाओ चंदेण सद्धिं जोयं जोएइ, नो सया सायं चंदेण सद्धिं जोयं जोएइ, नो सया दुहओ पविसिय २ चंदेण सद्धिं जोयं जोएइ, णणणत्थ दोहिं अभीईहिं १ । ता एएणं दो अभीई । पायंचिय २ चोत्तालीसं २ अमावासं जोएंति, नो चेव णं पुराण मासिणिं २ ॥ सूत्रं ६२ ॥ तत्थ खलु इमाओ बावट्ठि पुराणमासिणीओ,

बावट्ठिं अमावासाओ पराणत्ताओ १। ता एएसि णं पंचराहं संवच्छराणं पढमं पुराणमासिणिं चंदे कंसि देसंसि जोयं जोएइ ? ता जंसि णं देसंसि चंदे चरिमं बावट्ठिं पुराणमासिणिं जोएइ ताओ णं पुराणमासिणिट्ठाणाए मंडलं चउवीसेणं सएणं छेत्ता दुबत्तीसं भागे उवाइणावित्ता एत्थ णं चंदे पढमं पुराणमासिणिं जोएइ २। ता एएसि णं पंचराहं संवच्छराणं दोच्चं पुराणमासिणिं चंदे कंसि देसंसि जोयं जोएइ ? ता जंसि णं देसंसि चंदे पढमं पुराणमासिणिं जोएइ ताते णं पुराणमासिणिट्ठाणाए मंडलं चउव्वीसेणं सए णं छेत्ता, दुत्तीसं भागे उवाइणावित्ता, एत्थ णं से चंदे दोच्चं पुराणमासिणिं जोएइ ३। ता एएसि णं पंचराहं संवच्छराणं तच्चं पुराणमासिणिं चंदे कंसि देसंसि जोयं जोएइ ? ता जंसि णं देसंसि चंदे दोच्चं पुराणमासिणिं जोएइ ताते णं पुराणमासिणिट्ठाणाते मंडलं चउव्वीसेणं सएणं छेत्ता दुत्तीसं भागे उवाइणावित्ता, एत्थ णं से चंदे तच्चं पुराणमासिणि जोएइ ४। ता एएसि णं पंचराहं संवच्छराणं दुवालसमं पुराणमासिणि चंदे कंसि देसंसि जोएइ ? ता जंसि देसंसि चंदे तच्चं पुराणमासिणिं जोएइ ताते णं पुराणमासिणिट्ठाणाते मंडलं चउव्वीसेणं सएणं छेत्ता दोणिण अट्ठासीए भागसए उवाइणावित्ता एत्थ णं से चंदे दुवालसमं पुराणमासिणि जोएइ ५। एवं खलु एएणं उवाएणं ताते ताते पुराणमासिणिट्ठाणाते मंडलं चउव्वीसेणं सएणं छेत्ता दुवतीसं भागे उवाइणावित्ता तंसि तंसि देसंसि तं तं पुराणमासिणिं चंदे जोएइ ६। ता एएसि णं पंचराहं संवच्छराणं चरमं बावट्ठिं पुराणमासिणिं चंदे कंसि देसंसि जोएइ ?, ता जंबुद्दीवस्स णं दीवस्स पाईणपडीणाययाए उदीणदाहिणाययाए जीवाए मंडलं चउव्वीसेणं सएणं छेत्ता दाहिणिल्लंसि चउब्भागमंडलंसि सत्तावीसं चउब्भागे उवाइणावित्ता अट्ठावीसइ भागं वीसहा छेत्ता अट्ठारसभागे उवाइणावित्ता तिहिं भागेहिं दोहि य कलाहिं पच्चत्थिमिल्लं चउब्भागमंडलं असंपत्ते एत्थ णं चंदे चरिमं बावट्ठिं पुराणमासिणिं

जोएइ ७ ॥ सूत्रं ६३ ॥ ता एएसि णं पंचराहं संवच्छराणं पढमं पुराणमासिणिं सूरे कंसि देसंसि जोएइ ? ता जंसि णं देसंसि सूरिए चरिमं बावट्ठिं पुराणमासिणिं जोएति ताते पुराणमासिणिट्ठाणाते मंडलं चउव्वीसेणं सएणं छेत्ता चउणवइंभागे उवाइणावित्ता एत्थ णं से सूरिए पढमं पुराणमासिणिं जोएइ १ । ता एएसिं णं पंचराहं संवच्छराणं दोच्चं पुराणमासिणिं सूरिए कंसि देसंसि जोएइ ? ता जंसि णं देसंसि सूरिए पढमं पुराणमासिणिं जोएइ ताते पुराणमासिणिट्ठाणाते मंडलं चउव्वीसेणं सएणं छेत्ता चउणवइभागे उवाइणावित्ता एत्थ णं से सूरिए दोच्चं पुराणमासिणिं जोएइ २ । ता एएसिं णं पंचराहं संवच्छराणं तच्चं पुराणमासिणिं सूरिए कंसि देसंसि जोएइ ? ता जंसि णं देसंसि सूरिए दोच्चं पुराणमासिणिं जोएइ ताते पुराणमासिणिट्ठाणाते मंडलं चउव्वीसेणं सएणं छेत्ता चउणवइभागे उवाइणा वित्ता, एत्थ णं से सूरिए तच्चं पुराणमासिणिं जोएइ ३ । ता एएसि णं पंचराहं संवच्छराणं दुवालसं पुराणमासिणिं सूरिए कंसि देसंसि जोएइ ? ता जंसि णं देसंसि सूरिए तच्चं पुराणमासिणिं जोएइ ताते पुराणमासिणिट्ठाणाते मंडलं चउव्वीसेणं सएणं छेत्ता अट्ठछत्ताले भागसए उवाइणावित्ता, एत्थ णं से सूरिए दुवालसमं पुराणमासिणिं जोएइ ४ । एवं खलु एएणं उवाएणं ताते ताते पुराणमासिणिट्ठाणाते मंडलं चउव्वीसेणं सएणं छेत्ता चउणवइं चउणउतिं भागे उवाइणावित्ता तंसि तंसि णं देसंसि तं तं पुराणमासिणिं सूरिए जोएइ ५ । ता एएसिं णं पंचराहं संवच्छराणं चरिमं बावट्ठिं पुराणमासिणिं सूरिए कंसि देसंसि जोएइ ? ता जंबुद्दीवस्स णं दीवस्स पाईणपडीणाययाए उदीणदाहिणाययाए जीवाए मंडलं चउव्वीसेणं सएणं छेत्ता पुरत्थिमिल्लंसि चउब्भागमंडलंसि सत्तावीसं भागे उवाइणावित्ता अट्ठावीसइभागं वीसहा छेत्ता अट्ठारसं भागं उवाइणावित्ता तिहिं भागेहि दोहि य कलाहिं दाहिणिल्लं चउब्भागमंडलं असंपत्ते, एत्थ णं सूरिए चरिमं बावट्ठिं पुराणमासिणिं

जोएइ ६ ॥ सूत्रं ६४ ॥ ता एएसि णं पंचण्हं संवच्छराणं पढमं अमावासं चंदे कंसि देसंसि जोएइ ? ता जंसि णं देसंसि चंदे चरिमं बावट्ठिं अमावासं जोएइ ताते अमावासट्ठाणाते मंडलं चउव्वीसेणं सएणं छित्ता दुबत्तीसं भागे उवाइणावित्ता एत्थ णं से चंदे पढमं अमावासं जोएइ १। एवं जेणेव अभिलावेणं चंदस्स पुण्णमासिणीओ भणियाओ तेणेव अभिलावेणं अमावासाओ भाणियव्वाओ, तंजहा–बिइया तइया दुवालसमी २। एवं खलु एएणुवाएणं ताते ताते अमावासाठाणाते मंडलं चउव्वीसेणं सएणं छित्ता दुबत्तीसं भागे उवाइणावित्ता तंसि तंसि देसंसि तं तं अमावासं चंदे जोएइ ३। ता एएसि णं पंचण्हं संवच्छराणं चरमं बावट्ठिं अमावासं पुच्छा ? ता जंसि णं देसंसि चंदे चरिमं बावट्ठिं पुण्णमासिणिं जोएइ ताते २ पुण्णमासिणिट्ठाणाए मंडलं चउव्वीसेणं सएणं छित्ता सोलसभागं ओसक्कइत्ता एत्थ णं से चंदे चरिमं बावट्ठिं अमावासं जोएइ ४ ॥ सूत्रं ६५ ॥ ता एएसि णं पंचण्हं संवच्छराणं पढमं अमावासं सूरिए कंसि देसंसि जोएइ ? ता जंसि णं देसंसि सूरिए चरिमं बावट्ठिं अमावासं जोएइ ताते अमावासाठाणाते मंडलं चउव्वीसेणं सएणं छित्ता चउणउतिभागे उवाइणावित्ता एत्थ णं से सूरिए पढमं अमावासं जोएइ १। एवं जेणेव अभिलावेणं सूरियस्स पुण्णमासिणीओ भणिया तेणेव अभिलावेणं अमावासाओवि भाणियव्वाओ, तंजहा–बिइया तइया, दुवालसमी २। एवं खलु एएणं उवाएणं ताते २ अमावासाठाणाते मंडलं चउव्वीसेणं सएणं छित्ता चउणउति २ भागे उवाइणावित्ता तंसि २ देसंसि तं तं अमावासं सूरिए जोएइ ३। ता एएसि णं पंचण्हं संवच्छराणं चरिमं बावट्ठिं अमावासं सूरिए कंसि देसंसि जोएइ ? ता जंसि णं देसंसि सूरिए चरिमं बावट्ठिं पुण्णमासिणिं जोएइ ताते पुण्णमासिणिट्ठाणाते मंडलं चउव्वीसेणं सएणं छित्ता सत्तालीसं भागे उक्कोवइत्ता एत्थ णं से सूरिए चरिमं बावट्ठिं अमावासं

जोएइ ४ ॥ सूत्रं ६६ ॥ ता एएसि णं पंचरहं संवच्छराणं पढमं पुरणमासिणिं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएइ ? ता धणिट्ठाहिं, धणिट्ठाणं तिरिण मुहुत्ता एगूणवीसं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स, बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिहा छित्ता पराणट्ठी चुरिणयाभागा सेसा १ । तं समयं च णं सूरिए केणं णक्खत्तेणं जोएइ ? ता पुव्वाफगुणीहिं, ता पुव्वाफग्गुणीणं अट्ठावीसं मुहुत्ता अट्ठतीसं च बावट्ठीभागा मुहुत्तस्स, बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिहा छित्ता दुबत्तीसं चुरिणया भागा सेसा २ । ता एएसि णं पचरहं संवच्छराणं दोच्चं पुरणमासिणिं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएइ ? ता उत्तराहिं पोट्ठवयाहिं, उत्तराणं पोट्ठवयाणं सत्तावीसं मुहुत्ता, चोद्दस य बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स, बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिहा छित्ता चउसट्ठी चुरिणया भागा सेसा ३ । तं समयं च णं सूरे केणं णक्खत्तेणं जोएइ ? ता उत्तराहिं फग्गुणीहिं, उत्तराफग्गुणीणं सत्त मुहुत्ता तेत्तीसं च बावट्ठीभागा मुहुत्तस्स, बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिहा छित्ता एक्कतीसं चुरिणया भागा सेसा ४ । ता एएसि णं पंचरहं संवच्छराणं तच्चं पुरणमासिणिं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएइ ?, ता अस्सीणीहिं, अस्सीणीणं एक्कवीसं मुहुत्ता णव य बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स, बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिहा छित्ता तेवट्ठी चुरिणयाभागा सेसा ५ । तं समयं च णं सूरिए केण णक्खत्तेणं जोएइ ?, ता चित्ताहिं, चित्ताणं एक्को मुहुत्तो, अट्ठावीसं च बावट्ठीभागा मुहुत्तस्स, बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिहा छित्ता तीसं चुरिणया भागा सेसा ६ । ता एएसिं णं पंचरहं संवच्छराण दुवालसमं पुरणमासिणिं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएइ ?, ता उत्तरासाढाहिं, उत्तराणं च आसाढाणं छव्वीसं मुहुत्ता छव्वीसं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स, बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिहा छित्ता चउप्पराणं चुरिणया भागा सेसा ७ । तं समयं च णं सूरिया केणं णक्खत्तेणं जोएइ ?, ता पुणव्वसुणा, पुणव्वसुस्स सोलसमुहुत्ता, अट्ठय बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स, बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिहा छित्ता वीसं चुरिणया भागा सेसा ८ । ता एएसिं णं पंचरहं

संवच्छराणं चरमं बावट्ठिं पुराणमासिणिं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएइ ? ता उत्तराहिं आसाढाहिं, उत्तराणं आसाढाणं चरमसमए ९ । तं समयं च णं सूरिए केणं णक्खत्तेणं जोएइ ?, ता पुस्सेणं, पुस्सस्स एगूणवीसं मुहुत्ता, तेतालीसं च बावट्ठीभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिहा छित्ता तेत्तीसं चुण्णियाभागा सेसा १० ॥ सूत्रं ६७ ॥ ता एएसि णं पंचण्हं संवच्छराणं पढमं अमावासं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोइए ? ता अस्सेसाहिं, अस्सेसाणं एक्को मुहुत्तो चत्तालीसं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स, बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिहा छेत्ता छावट्ठी चुण्णियाभागा सेसा १ । तं समयं च णं सूरिए केणं णक्खत्तेणं जोएति ? ता अस्सेसाहिं चेव, अस्सेसाणं एक्को मुहुत्तो, चत्तालीसं च बावट्ठि-भागा मुहुत्तस्स, बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिहा छित्ता छावट्ठी चुण्णियाभागा सेसा २ । ता एएसिं णं पंचण्हं संवच्छराणं दोच्चं अमावासं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोइए ? ता उत्तराहिं फग्गुणीहिं, उत्तराणं फग्गुणीणं चत्तालीसं मुहुत्ता, पणतीसं बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स, बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिहा छित्ता पण्णट्ठी चुण्णियाभागा सेसा ३ । तं समयं च णं सूरिए केणं णक्खत्तेणं जोएइ ? ता उत्तराहिं फग्गुणीहिं, चेव उत्तराणं फग्गुणीणं तं चेव जाव पण्णट्ठी चुण्णियाभागा सेसा ४ । ता एएसि णं पचण्हं संवच्छराणं तच्चं अमावासं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएइ ? ता हत्थेहिं, हत्थाणं चत्तारि मुहुत्ता तीसं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स, बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिहा छित्ता बावट्ठी चुण्णिया भागा सेसा ५ । तं समयं च णं सूरिए केणं णक्खत्तेणं जोएइ ? ता हत्थेहिं चेव हत्थाणं जं चेव चंदस्स ६ । ता एएसिं णं पंचण्हं संवच्छराणं दुवालसमं अमावासं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएइ ? अद्दाहिं, अद्दाणं चत्तारि-मुहुत्ता, दस य बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स, बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिहा छित्ता चउपण्णं चुण्णिया भागा सेसा ७ । तं समयं च णं सूरिए केणं णक्खत्तेणं जोएइ ? ता अद्दाहिं चेव, जं चेव चंदस्स ८ । ता एएसिं णं पंचण्हं

संवच्छराणं चरिमं बावट्ठिं अमावासं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएइ? ता पुणव्वसुणा, पुणण्व्वसूस्स बावीसं मुहुत्ता छायालीसं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स सेसा ९। तं समयं च णं सूरिए केणं णक्खत्तेणं जोएइ? ता पुणव्वसुणा चेव पुणण्व्वसुस्स णं जहा चंदस्स १०॥ सूत्रं ६८॥
ता जे णं अज्जणक्खत्तेणं चंदे जोयं जोएइ, जंसि देसंसि से णं इमाणि अट्ठ एगूणवीसाणि मुहुत्तसयाइं, चउवीसं च बावट्ठिभागे मुहुत्तस्स, बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिहा छित्ता छावट्ठि च चुण्णिया भागे उवाइणावित्ता पुणरवि से चंदे अण्णेणं तारिसएणं चेव णक्खत्तेणं जोयं जोएइ अण्णंसि देसंसि १। ता जे णं अज्ज णक्खत्तेणं चंदे जोयं जोएइ जंसि देसंसि से णं इमाइं सोलसअट्ठतीसाइं मुहुत्तमयाइं अउणापण्णं च बावट्ठिभागे मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिहा छित्ता पणण्टिं चुण्णियाभागे उवाइणावित्ता पुणरवि से णं चंदे ते णं चेव णक्खत्तेणं जोयं जोएइ अण्णंसि देसंसि २। ता जे णं अज्जणक्खत्तेणं चंदे जोयं जोएइ जंसि देसंसि से णं इमाइं चउप्पण्णमुहुत्तसहस्साइं णव य मुहुत्तसयाइं उवाइणावित्ता पुणरवि से चंदे अण्णेणं तारिसएणं चेव णक्खत्तेणं जोयं जोएइ तंसि देसंसि ३। ता जे णं अज्ज णक्खत्तेणं चंदे जोयं जोएइ जंसि देसंसि से णं इमाइं एगं मुहुत्तसयसहस्सं अट्ठणउइं च मुहुत्तसयाइं उवाइणावित्ता पुणरवि से चंदे ते णं चेव णक्खत्तेणं जोयं जोएइ तंसि देसंसि ४। ता जे णं अज्जणक्खत्तेणं सूरिए जोयं जोएइ जंसि देसंसि से णं इमाइं तिण्णि छावट्ठाइं राइंदियसयाइं उवाइणावित्ता पुणरवि से सूरिए अण्णेणं तारिसएणं चेव णक्खत्तेणं जोयं जोएइ तंसि देसंसि ५। ता जे णं अज्ज नक्खत्तेणं सूरिए जोयं जोएइ जंसि देसंसि से णं इमाइं सत्त दुव्वीसाइं राइंदियसयाइं उवाइणावित्ता पुणरवि से सूरिए तेणं चेव णक्खत्तेणं जोयं जोएइ तंसि देसंसि ६। ता जे णं अज्ज णक्खत्तेणं सूरिए जोयं जोएइ जंसि देसंसि से णं इमाइं अट्ठारसतीसाइं राइंदियसयाइं

उवाइणावित्ता पुणरवि सूरिए अणणेणं तारिसएणं चेव णक्खत्तेणं जोयं जोएइ तंसि देसंसि ७। ता जे णं अज्ज णक्खत्तेणं सूरिए जोयं जोएइ जंसि देसंसि से णं इमाइं छत्तीसं सट्ठाइं राइंदियसयाइं उवाइणावित्ता पुणरवि से सूरिए तेणं णक्खत्तेणं जोयं जोएइ तंसि देसंसि ८॥ सूत्रं ६९॥ ता जया णं इमे चंदे गइसमावण्णए भवइ तया णं इयरेवि चंदे गइ समावण्णए भवइ १। जया णं इयरेवि चंदे गइसमावण्णए भवइ तया णं इमे वि चंदे गइ समावण्णए भवइ २। ता जया णं इमे सूरिए गइसमावण्णए भवइ तया णं इयरेवि सूरिए गइ समावण्णए भवइ जया णं इयरे सूरिए गइ समावण्णए भवइ तया णं इमेवि सूरिए गइ समावण्णए भवइ ३। एवं गहेवि, णक्खत्तेवि ४। ता जया णं इमे चंदे जुत्ते जोएणं भवइ तया णं इयरेवि चंदे जुत्ते जोएणं भवइ जया णं इयरे चंदे जुत्ते जोएणं भवइ तयाणं इमेवि चंदे जुत्ते जोएणं भवइ ५। एवं सूरेवि, गहेवि णक्खत्तेवि ६। सयावि णं चंदा जुत्ता जोएहिं, सयावि णं सूरिया जुत्ता जोएहिं, सयावि णं गहा जुत्ता जोएहिं, सयावि णं णक्खत्ता जुत्ता जोएहिं, दुहओ वि णं चंदा जुत्ता जोएहिं, दुहओ वि णं सुरा जुत्ता जोएहिं, दुहओ वि गहा जुत्ता जोएहिं, दुहओ वि णं णक्खत्ता जुत्ता जोएहिं ७। मंडलं सयसहस्सेणं अट्ठाणउयाए सएहिं छित्ता इच्चेस णक्खत्त खेत्तपरिभागे णक्खत्तविजए नामं पाहुडेत्ति आहिए त्तिबेमि॥ सूत्रं ७०॥ दसमस्स पाहुडस्स बावीसतिमं पाहुडपाहुडं समत्तं॥ दसमं पाहुडं समत्तं॥

॥ इति दशमप्राभृते द्वाविंशतितमं प्राभृतप्राभृतम्॥ १०-२२॥

॥ इति दशमं प्राभृतम्॥ १०॥

॥ अथ एकादशं प्राभृतम् ॥

ता कहं ते संवच्छराणामाई आहिएति वएज्जा? तत्थ खलु इमे पंच संवच्छरा पण्णत्ता, तंजहा—चंदे १, चदे २, अभिवड्ढिए ३, चंदे ४, अभिवड्ढिए ५, १। ता एएसि णं पंचराहं संवच्छराणं पढमस्स चंदस्स संवच्छरस्स के आई आहिएति वएज्जा? ता जे णं पंचमस्स अभिवड्ढीयसंवच्छरस्स पज्जवसाणं से णं पढमस्स चंदसंवच्छरस्स आई अणंतरपुरक्खडे समए २। ता से णं किं पज्जवसिए आहिएति वएज्जा? ता जे णं दोच्चस्स संवच्छरस्स आई से णं पढमस्स चंदसंवच्छरस्स पज्जवसाणे अणंतरपच्छाकडे समए ३। तं समयं च णं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोयं जोएइ? ता उत्तराहिं आसाढाहिं, उत्तराणं आसाढाणं छव्वीसं मुहुत्ता, छव्वीसं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिहा छित्ता चउप्पण्णं चुरिणया भागा सेसा ४। त समयं च णं सूरिए केणं णक्खत्तेणं जोयं जोएइ? ता पुणव्वसुणा, पुणव्वसुस्स सोलसमुहुत्ता, अट्ठ य बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स, बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिहा छित्ता वीसं चुरिणया भागा सेसा ५। ता एएसिं णं पंचराहं संवच्छराणं दोच्चस्स चंदसंवच्छरस्स के आई आहिएति वएज्जा? ता जे णं पढस्स चंदसंवच्छरस्स पज्जवसाणे से णं दोच्चस्स चंदसंवच्छरस्स आई अणंतरपुरक्खडे समए ६। ता से णं किं पज्जवसिए आहिएति वएज्जा? ता जे णं तच्चस्स अभिवड्ढिय-संवच्छरस्स आई से णं दोच्चस्स चंद संवच्छरस्स पज्जवसाणे अणंतरपच्छाकडे समए ७। तं समयं च णं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोयं जोएइ?, ता पुव्वाहिं आसाढाहि, पुव्वाणं आसाढाणं सत्तमुहुत्ता, तेवराण च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिहा छित्ता इगतालीं संचुरिणयाभागा सेसा ८। तं समयं च णं सूरिए केणं णक्खत्तेणं जोयं जोएइ?, ता पुणव्वसुणा, पुणव्वसुस्स णं बायालीसं मुहुत्ता,

पणतीसं च बावट्ठिभागामुहुत्तस्स, बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिहा छित्ता सत्तचुण्णियाभागा सेसा ९। ता एएसि णं पंचण्हं संवच्छराणं तच्चस्स अभिवड्ढियसंवच्छरस्स के आई आहिएति वएज्जा ?, ता जे णं दोच्चस्स चंदसंवच्छरस्स पज्जवसाणे सेणं तच्चस्स अभिवड्ढियसंवच्छरस्स आई अणंतरपुरक्खडे समए १०। ता से णं किं पज्जवसिए आहिएति वएज्जा ?, ता जे णं चउत्थस्स चंदसंवच्छरस्स आई सेणं तच्चस्स अभिवड्ढीय-संवच्छरस्स पज्जवसाणे अणंतरपच्छाकडे समए ११। तं समयं च णं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोयं जोएइ ?, ता उत्तराहि आसाढाहिं उत्तराणं आसाढाणं तेरस मुहुत्ता, तेरस य बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स, बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिहा छित्ता सत्तावीसं चुण्णिया भागा सेसा १२। तं समयं च णं सूरिए केणं णक्खत्तेणं जोयं जोएइ ?, ता पुणव्वसुणा, पुणव्वसुस्स दो मुहुत्ता, छप्पण्णं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स, बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिहा छित्ता सट्ठी चुण्णिया भागा सेसा १३। ता एएसि णं पंचण्हं संवच्छराणं चउत्थस्स चंद संवच्छरस्स के आई आहिएति वएज्जा ? ता जे णं तच्चस्स अभिवड्ढिय संवच्छरस्स पज्जवसाणे से णं चउत्थस्स चंदसंवच्छरस्स आई अणंतरपुरक्खडे समए १४। ता से णं किं पज्जवसिए आहिएति वएज्जा ? ता जे णं चरिमस्स अभिवड्ढियसंवच्छरस्स आई से णं चउत्थस्स चंदसंवच्छरस्स पज्जवसाणे अणंतरपच्छाकडे समए १५। तं समयं च णं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोयं जोएइ ?, ता उत्तराहिं, आसाढाहिं, उत्तराणं आसाढाण चत्तालीसं मुहुत्ता, चत्तालीसं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स, बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिहा छित्ता चउद्दस चुण्णियाभागा सेसा १६। तं समयं च णं सूरिए केणं णक्खत्तेणं जोयं जोएइ ? ता पुणव्वसुणा, पुणव्वसुस्स अउणातीसं मुहुत्ता, एक्कवीसं बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स, बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिहा छित्ता सीयालीसं चुण्णियाभागा सेसा १७। ता एएसि णं पंचण्हं संवच्छराणं पंचमस्स अभिवड्ढियसंवच्छरस्स के आई आहिएति वएज्जा ?, ता जे णं चउत्थस्स

चंदसंवच्छरस्स पज्जवसाणे से णं पंचमस्स अभिवड्ढियसंवच्छरस्स आई अणंतरपुरक्खडे समए १८ । ता से णं किं पज्जवसिए आहिएति वएज्जा ? ता जे णं पढमस्स-चंदसंवच्छरस्स आई से णं पंचमस्स अभिवड्ढियसंवच्छरस्स पज्जवसाणे अणंतरपच्छाकडे समए १९ । तं समयं च णं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोयं जोएइ ? ता उत्तराहिं आसाढाहिं, उत्तराणं आसाढाणं चरमसमए २० । तं समयं च णं सूरिए केणं णक्खत्तेणं जोयं जोएइ ?, ता पुस्सेणं पुस्सस्स णं एगूणवीसं मुहुत्ता तेयालीसं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स, बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिहा छित्ता तेत्तीसं चुण्णिया भागा सेसा २१ ॥ सूत्रं ७१ ॥ एक्कारसमं पाहुडं समत्तं ॥ ११ ॥

॥ अथ द्वादशं प्राभृतम् ॥

ता कइणं संवच्छरा आहितेति वएज्जा ? तत्थ खलु इमे पंच संवच्छरा पण्णत्ता, तंजहा—णक्खत्ते चंदे उडू आइच्चे अभिवड्ढिए १ । ता एएसि णं पंचण्हं संवच्छराणं पढमस्स णक्खत्तसंवच्छरस्स णक्खत्ते मासे तीसइ तीसइ मुहुत्तेणं अहोरत्तेणं गणिज्जमाणे केवइए राइं दियग्गेणं आहिएति वएज्जा ? ता सत्तावीसं राइंदियाइं एकवीसं च सत्तट्ठिभागा राइंदियस्स राइंदियग्गेणं आहिएति वएज्जा २ । ता से णं केवइए मुहुत्तग्गेणं आहिएति वएज्जा ? ता अट्ठसए एगूणवीसे मुहुत्ताणं, सत्तावीसं च सत्तट्ठिभागे मुहुत्तस्स मुहुत्तग्गेणं आहिएति वएज्जा ३ । ता एस णं अद्धा दुवालसक्खुत्तकडा णक्खत्ते संवच्छरे ता से णं केवइए राइंदियग्गेणं आहिएति वएज्जा ? ता तिण्णि सत्तावीसे राइंदियसते एक्कावन्नं च सत्तट्ठिभागे राइंदियस्स राइंदियग्गेणं आहिएति वएज्जा ४ । ता से णं केवइए मुहुत्तग्गेणं आहिएति वएज्जा ? ता णव मुहुत्तसहस्सा, अट्ठ य बत्तीसे मुहुत्तसए छप्पन्नं च सत्तट्ठिभागे मुहुत्तस्स मुहुत्तग्गेणं आहिएति वएज्जा ५ । ता एएसि णं पंचण्हं संवच्छराणं

दोच्चस्स चंदसंवच्छरस्स चंदे मासे तीसइ तीसइ मुहुत्तेणं अहोरत्तेणं गणिज्जमाणे केवइए राइंदियग्गेणं आहिएति वएज्जा ? ता एगूणतीसं राइंदियाइं, बत्तीसं बावट्ठिभागा राइंदियस्स राइंदियग्गेणं आहिएति वएज्जा ६ । ता से णं केवइए मुहुत्तग्गेणं आहिएति वएज्जा ? ता अट्ठपंचासीते मुहुत्तसते । तीसं च बावट्ठिभागे मुहुत्तस्स मुहुत्तग्गेणं आहिएति वएज्जा ७ । ता एस णं अद्धा दुवालसखुत्तकडा चंदे संवच्छरे, ता से णं केवइए राइंदियग्गेणं आहिएति वएज्जा ? ता तिण्णि चउप्पन्ने राइंदियसते दुवालस य बावट्ठिभागा राइंदियस्स राइंदियग्गेणं आहिएति वएज्जा ८ । ता से णं केवइए मुहुत्तग्गेणं आहिएति वएज्जा ? ता दस मुहुत्तसहस्साइं छच्च पणवीसे मुहुत्तसए पण्णासं च बावट्ठिभागे मुहुत्तस्स मुहुत्तग्गेणं आहिएति वएज्जा २, ९ । ता एएसि णं पंचण्हं संवच्छराणं तच्चस्स उउसंवच्छरस्स उउमासे तीस-तीसमुहुत्तेणं अहोरत्तेणं गणिज्जमाणे केवइए राइंदियग्गेणं आहिएति वएज्जा ? ता तीसं राइंदियाणं राइंदियग्गेणं आहिएति वएज्जा १० । ता से णं केवइए मुहुत्तग्गेणं आहिएति वएज्जा ? ता णव मुहुत्तसयाइं मुहुत्तग्गेणं आहिएति वएज्जा, ता एस अद्धा दुवालसखुत्तकडा उउसंवच्छरे ११ । ता से णं केवइए राइंदियग्गेणं आहिएति वएज्जा ? ता तिण्णि सट्ठाइं राइंदियसयाइं राइंदियग्गेणं आहिएति वएज्जा १२ । ता से णं केवइए मुहुत्तग्गेणं आहिएति वएज्जा ? दस मुहुत्तसहस्साइं अट्ठ य सयाइं मुहुत्तग्गेणं आहिएति वएज्जा १३ । ता एएसि णं पंचण्हं संवच्छराणं चउत्थस्स आदिच्चसंवच्छरस्स आइच्चे मासे तीसइमुहुत्तेणं अहोरत्तेणं गणिज्जमाणे केवइए राइंदियग्गेणं आहिएति वएज्जा ? ता तीसं राइंदियाइं अवड्ढभागं च राइंदियस्स राइंदियग्गेणं आहिएति वएज्जा १४ । ता से णं केवइए मुहुत्तग्गेणं आहिएति वएज्जा ? ता णव पण्णरस मुहुत्तसए मुहुत्तग्गेणं आहिएति वएज्जा १५ । ता एस णं अद्धा दुवालसखुत्तकडा आइच्चे संवच्छरे, ता

से णं केवइए राइंदियग्गेणं आहिएति वएज्जा ? ता तिन्नि छावट्ठे राइंदियसए राइंदियग्गेणं आहिएति वएज्जा १६। ता से णं केवइए मुहुत्तग्गेणं आहिएति वएज्जा ? ता दस मुहुत्तसहस्साइं णव य असीये मुहुत्तसये मुहुत्तग्गेणं आहिएति वएज्जा ४, १७। ता एएसि णं पंचरहं संवच्छराणं पंचमस्स अभिवड्ढियसंवच्छरस्स अभिवड्ढिए मासे तीसइमुहुत्तेणं अहोरत्तेणं गणिज्जमाणे केवइए राइंदियग्गेणं आहिएति वएज्जा ? ता एकतीसं राइंदियाइं, एगूणतीसं च मुहुत्ता, सत्तरस बावट्ठिभागे मुहुत्तस्स राइंदियग्गेणं आहिएति वएज्जा १८। ता से णं केवइए मुहुत्तग्गेणं आहिएति वएज्जा ? ता णं णव एगूणसट्ठे मुहुत्तसये, सत्तरस बावट्ठिभागे मुहुत्तस्स मुहुत्तग्गेणं आहिएति वएज्जा ११। ता एस णं अद्धा दुवालसखुत्तकडा अभिवड्ढिए संवच्छरे, ता से णं केवइए राइंदियग्गेणं आहिएति वएज्जा ? ता तिरिण तेसीते राइंदियसते, एकतीसं च मुहुत्ता अट्ठारस बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स राइंदियग्गेणं आहिएति वएज्जा, ता से णं केवइए मुहुत्तग्गेणं आहिएति वएज्जा ? ता एकारस मुहुत्तसहस्साइं पंच य एकारसमुहुत्तसते, अट्ठारस य बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स मुहुत्तग्गेणं आहिएति वएज्जा २० ॥सूत्रं ७२॥ ता केवइयं ते नो जुगे राइंदियग्गेणं आहिएति वएज्जा ? ता सत्तरस एकाणउते राइंदियसते एगूणवीसं च मुहुत्ता, सत्तावरणे च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स, बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिहा छेत्ता पणपरणं चुरिणया भागा राइंदियग्गेणं आहियाति वएज्जा १। ता से णं केवइए मुहुत्तग्गेणं आहिएति वएज्जा ? ता तेपरणं मुहुत्तसहस्साइं, सत्त य एगूणपन्ने मुहुत्तसये सत्तावरणं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स, बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिहा छेत्ता पणपरणं चुरिणया-भागा मुहुत्तग्गेणं आहियाति वएज्जा २। ता केवइए णं ते जुगप्पत्ते राइंदियग्गेणं आहिएति वएज्जा ? ता अट्ठतीसं राइंदियाइं दस य मुहुत्ता चत्तारि य बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिहा छेत्ता दुवालसचुरिणया

भागा राइंदियग्गेणं आहितेति वएज्जा ३ । ता से णं केवइए मुहुत्तग्गेणं आहिएति वएज्जा ? ता एक्कारस पराणासे मुहुत्तसये चत्तारि य बावट्ठिभागे मुहुत्तस्स, बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिहा छेत्ता दुवालसचुरिणयाभागा मुहुत्तग्गेणं आहिएति वएज्जा ४ । ता केवइए जुगे राइंदियग्गेणं आहिएति वएज्जा ? ता अट्ठारसतीसे राइंदियसते राइंदियग्गेणं आहितेति वदेज्जा ५ । ता से णं केवतिए मुहुत्तग्गेणं आहितेति वदेज्जा ? ता चउपराणं मुहुत्तसहस्साइं णव य मुहुत्तसयाइं मुहुत्तग्गेणं आहिएति वएज्जा ? ता से णं केवतिए बावट्ठिभागमुहुत्तग्गेणं आहितेति वदेज्जा ? ता चउत्तीसं सयसहस्सयाइं अट्ठतीसं च बावट्ठिभागमुहुत्तसये बावट्ठिभागमुहुत्तग्गेणं आहिएति वएज्जा ७ ॥ सूत्रं ७३ ॥ ता कया णं एए आइच्चचंदसंवच्छरा समादिया समपज्जवसिया आहियाति वएज्जा ? ता सट्ठी एए आइच्चमासा बावट्ठी एए चंदमासा, एस णं अद्धा छखुत्तकडा दुवालसभइया तीसं एए आइच्चसंवच्छरा, एकतीसं एए चंदसंवच्छरा तता णं एते आदिच्चचंदसंवच्छरा समादिया समपज्जवसिया आहितेति वएज्जा १ । ता कयाणं एए आइच्च उउचंदणक्खत्ता संवच्छरा समादिया समपज्जवसिया आहियाति वएज्जा ? ता सट्ठी एए आइच्चमासा, एगट्ठी एए उउमासा, बावट्ठि एए चंदमासा सत्तट्ठी एए नक्खत्तमासा एस णं अद्धा दुवालसखुत्तकडा दुवालसभइया सट्ठिं एए आइच्चा संवच्छरा, एगट्ठी एए उउसंवच्छरा, बावट्ठी एए चंदा संवच्छरा, सत्तट्ठी एए नक्खत्ता संवच्छरा, तया णं, एए आइच्च-उउ-चंद-नक्खत्ता संवच्छरा समादिया समपज्जवसिया आहियाति वएज्जा २ । ता कयाणं एए अभिवड्ढियआइच्च–उउ-चंद-णक्खत्ता संवच्छरा समादिया समपज्जवसिया आहियाति वएज्जा ? ता सत्तावराणं मासा सत्त य अहोरत्ता, एक्कारस य मुहुत्ता, तेवीसं बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स एए अभिवड्ढिता मासा सट्ठी एए आदिच्चमासा, एगट्ठी एए उड्ड मासा, बावट्ठी एए चंदमासा, सत्तट्ठी एए

नक्खत्तमासा, एस णं अद्धा छप्पराणसत्तखुत्तकडा दुवालसभइया सत्तसया चोयाला, एए णं अभिवड्डियसंवच्छरा, सत्तसया असीया, एए णं आइच्च-संवच्छरा, सत्त सया ते णउया एए णं उडूसंवच्छरा, अट्ठ सया छलुत्तरा, एए णं चंदा संवच्छरा, एगसत्तरी अट्ठसया, एए णं नक्खत्ता संवच्छरा, तया णं एए अभिवड्डिय–आइच्च-उउ-चंदनक्खत्ता संवच्छरा समादिया समपज्ज-वसिया आहियाति वएज्जा ३ । ता णयट्टयाए णं चंदे संवच्छरे तिरिण-चउप्पराणे राइंदियसये दुवालस य बावट्ठिभागे राइंदियस्स आहियाति वएज्जा, ता अहातच्चेणं चंदे संवच्छरे तिरिण चउप्पणाइं दियसयाइं पंच य मुहुत्ता, पराणासं च बावट्ठिभागे मुहुत्तस्स आहियाति वएज्जा ४ ॥सूत्रं७४॥ तत्थ खलु इमे छ उऊ पराणत्ता, तंजहा–पाउसे वरिसारत्ते सरए हेमंते वसंते गिम्हे १ । ता सव्वे वि णं एए चंदउऊदुवे २ मासा ति चउप्पराणेणं २ आदाणेणं गणिज्जमाणा साइरेगाइं एगूणसट्ठी २ राइंदियाइं राइंदियग्गेणं आहिएति वएज्जा २ । तत्थ खलु इमे छ ओमरत्ता पराणत्ता, तजहा–तइए पव्वे सत्तमे पव्वे एक्कारसमे पव्वे पराणरसमे पव्वे एगूणवीसइमे पव्वे तेवीसइमे पव्वे ३ । तत्थ खलु इमे छ अतिरत्ता पराणत्ता, तंजहा–चउत्थे पव्वे अट्ठमे पव्वे बारसमे पव्वे सोलसमे पव्वे वीसइमे पव्वे चउवीसइमे पव्वे ४ । गाहा–छच्चेव य अइरत्ता, आइच्चाउ हवंति माणाहि । छच्चेव ओमरत्ता, चंदाउ हवंति माणाहि ॥ १ ॥ सूत्रं ७५ ॥ तत्थ खलु इमाओ पंचवासिकीओ, पंचहेमंतीओ आउट्टीओ पराणत्ताओ १ । ता एएसिं णं पंचराहं संवच्छराणं पढमं वासिकिं आउट्टिं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएइ ? ता अभिइणा, अभिइस्स पढमसमएणं १ । तं समयं च णं सूरे केणं णक्खत्तेणं जोएइ ? ता पूसेणं, पूसस्स णं एगूणवीसं मुहुत्ता, तेत्तालीसं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स, बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिहा छित्ता तेत्तीसं चुरिणयाभागा सेसा २ । ता एएसि णं पंचराहं संवच्छराणं दोच्चं वासिकिं आउट्टिं चंदे केणं

णक्खत्तेणं जोएइ ? ता संठाणाहिं, संठाणाणं एक्कारसमुहुत्ता उत्तालीसं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स, बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता तेवराणं चुरिणाया भागा सेसा ३। तं समयं च णं सूरे केणं णक्खत्तेणं जोएइ ? ता पूसेणं, पूसस्स णं तं चेव जं पढमया २, ४। ता एएसिं णं पंचराहं संवच्छराणं तच्चं वासिकिं आउट्टिं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएइ ? ता विसाहाहिं, विसाहाणं तेरसमुहुत्ता, चउप्पराणं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स, बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता चत्तालीसं चुरिणाया भागा सेसा ५। तं समयं च णं सूरे केणं णक्खत्तेणं जोएइ ? ता पूसेणं, पूसस्स तं चेव ३, ६। ता एएसिं णं पंचराहं संवच्छराणं चउत्थि वासिकिं आउट्टिं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएइ ? ता रेवईहिं, रेवईणं पणवीसं मुहुत्ता, बत्तीसं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स, बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिहा छित्ता छव्वीसं चुरिणाप्राभागा सेसा ७। तं समयं च णं सूरे केणं णक्खत्तेणं जोएइ ? ता पूसेणं, पूसस्स तं चेव ४, ८। ता एएसिं णं पंचराहं संवच्छराणं पंचमं वासिकिं आउट्टिं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएइ ? ता पुव्वाफग्गुणीहिं, पुव्वाफग्गुणीणं बारस मुहुत्ता, सत्तालीसं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स, बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता तेरस चुरिणया भागा सेसा ९। तं समयं च णं सूरे केणं णक्खत्तेणं जोएइ ?, ता पूसेणं, पूसस्स तं चेव एगुणवीसा तेताली तेत्तीसा॥ सूत्रं ७६॥ ता एएसिं णं पंचराहं संवच्छराणं पढमं हेमंतिं आउट्टिं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएइ ? ता हत्थेणं, हत्थस्स णं पंचमुहुत्ता, पराणासं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स, बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिहा छेत्ता सट्ठीचुरिणाया भागा सेसा १। तं समयं च णं सूरिए केणं णक्खत्तेणं जोएइ ? ता उत्तराहिं आसाढाहिं, उत्तराणं आसाढाणं चरिमसमए २। ता एएसिं णं पंचराहं संवच्छराणं दोच्चं हेमंतिं आउट्टिं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएइ ?, ता सतभिसयाहिं, सयभिसयाणं दुन्नि मुहुत्ता, अट्ठावीसं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स, बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिहा छेत्ता छत्तालीसं

चुरिणया भागा सेसा ३ । तं समयं च णं सूरे केणं णक्खत्तेणं जोएइ ? ता उत्तराहिं आसाढाहिं उत्तराणं, आसाढाणं चरमसमए २, ४ । ता एएसि णं पंचराहं संवच्छराणं तच्चं हेमंति आउट्टिं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएइ ? ता पूसेण, पूसस्स एगूणवीसं मुहुत्ता तेतालीसं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स, बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिहा छेत्ता तेत्तीसं चुरिणयाभागा सेसा ५ । तं समयं च णं सूरे केणं णक्खत्तेणं जोएइ ? ता उत्तराहिं आसाढाहिं, उत्तराणं आसाढाणं चरिमसमए ३, ६ । ता एएसि णं पंचराहं संवच्छराणं चउत्थि हेमंतिं आउट्टिं चदे केणं णक्खत्तेण जोएइ ? ता मूलेणं, मूलस्स छ मुहुत्ता, अट्ठावन्नं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स, बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिहा छेत्ता वीसं चुरिणया भागा सेसा ७ । तं समयं च णं सूरे केणं णक्खत्तेणं जोएइ ? ता उत्तराहिं आसाढाहिं, उत्तराणं आसाढाणं चरिमसमए ४, ८ । ता एएसि णं पंचराहं संवच्छराणं पंचमं हेमंति आउट्टिं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएइ ? कत्तियाहिं, कत्तियाणं अट्ठारसमुहुत्ता, छत्तीसं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिहा छेत्ता छ चुरिणया भागा सेसा ९ । तं समयं च णं सूरिए केणं णक्खत्तेणं जोएइ ? ता उत्तराहिं आसाढाहिं, उत्तराणं आसाढाणं चरिमसमए १० ॥ सूत्रं ७७ ॥ तत्थ खलु इमे दसविहे जोए पराणत्ते, तंजहा—वसभाणुजोए १, वेणुयाणुजोए २, मंचे ३, मंचाइमंचे ४, छत्ते ५, छत्ताइच्छत्ते ६, जुयणद्धे, ७, घणसंमद्दे ८, पीणिए ९, मंडूयप्पुए णामं दसमे १०, १ । एएसि णं पंचराहं संवच्छराणं छत्ताइछत्तं जोगं चंदे कंसि देसंसि जोएइ ?, ता जंबुद्दीवस्स दीवस्स पाईणपडिणीणाययाए उदीणदाहिणाययाए जीवाए मंडलं चउव्वीसेणं सएणं छित्ता, दाहिणपुरत्थिमिल्लंसि चउब्भाग-मंडलंसि सत्तावीसं भागे उवाइणावित्ता अट्ठावीसइमं भागं वीसधा छेत्ता अट्ठारसभागे उवाइणावित्ता तीहिं भागेहि दोहि य कलाहिं दाहिणपुरत्थि-मिल्लं चउब्भागमंडलं असंपत्ते, एत्थ णं से चंदे छत्ताइछत्तं जोयं जोएइ,

तंजहा–उप्पिं चंदा मज्झे णक्खत्ते हेट्ठा आइच्चे २। तं समयं च णं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएइ ? ता चित्ताहिं चित्ताणं चरमसमये ॥ सूत्रं ७८ ॥ बारसमं पाहुडं समत्तं ॥

॥ इति द्वादशं प्राभृतम् ॥ १२ ॥

॥ अथ त्रयोदशं प्राभृतम् ॥

ता कहं ते चंदमसो वड्ढोवड्ढी आहिएति वएज्जा ? ता अट्ठपंचासीते मुहुत्तसते, तीसं च बावट्ठिभागामुहुत्तस्स जाव आहिएति वएज्जा १। ता दोसिणापक्खओ अंधकारपक्खमयमाणे चंदे चत्तारि बायाले मुहुत्तसते छत्तालीसं च बावट्ठिभागे मुहुत्तस्स, जाइं चंदे रज्जइ, तंजहा–पढमाए पढमं भागं, बिइयाए बिइयं भागं जाव पण्णरसीए पण्णरसमं भागं, चरिमसमए चंदे रत्ते भवइ अवसेसे समए चंदे रत्ते य विरत्ते य भवइ, इयण्णं अमावासा, एत्थ णं पढमे पव्वे अमावासे २। ता अंधयारपक्खाओ णं दोसिणापक्खं अयमाणे चंदे चत्तारि बायाले मुहुत्तसते छत्तालीसं च बावट्ठिभागामुहुत्तस्स जाइं चंदे विरज्जइ, तंजहा–पढमाए पढमं भागं, बिइयाए बिइयं भागं जाव पण्णरसीए पण्णरसमं भागं, चरिमे समए चंदे विरत्ते भवइ, अवसेसे समए चंदे रत्ते य विरत्ते य भवइ, इयण्णं पुण्णमासिणी, एत्थ णं दोच्चे पव्वे पुण्णमासिणी ३ ॥ सूत्रं ७९ ॥ तत्थ खलु इमाओ बावट्ठी पुण्णमासिणीओ बावट्ठी अमावासाओ पण्णत्ताओ १। बावट्ठी एए कसिणा रागा बावट्ठी एए कसिणा विरागा २। एए चउव्वीसे पव्वसए एए चउव्वीसे कसिणरागविरागसए ३। जावइयाणं पंचण्हं संवच्छराणं समया एगेणं चउवीसेणं समयसएणूणगा एवइया परित्ता असंखेज्जा देस राग विरागसया भवंतीति मक्खाया ४। ता अमावासाओ णं पुण्णमासिणी चत्तारिबायाले मुहुत्तसते छत्तालीसं बावट्ठिभागे मुहुत्तस्स आहिएति वएज्जा ५। ता पुण्णमासिणीओ

णं अमावासा चत्तारि बायाले मुहुत्तसये छत्तालीसं बावट्ठि भागे मुहुत्तस्स आहिएति वएज्जा ६ । ता अमावासातोणं अमावासा अट्ठयं चासीते मुहुत्तसते तीसं च बावट्ठिभागे मुहुत्तस्स आहितेति वदेज्जा ७ । ता पुण्णमासिणीओणं पुण्णमासिणी अट्ठ पंचासीते मुहुत्तसते तीसं बावट्ठिभागे मुहुत्तस्स आहिएति वएज्जा ८ । एस णं एवइए चंदे मासे, एस णं एवइए सगले जुगे १ ॥ सूत्रं ८० ॥ ता चंदेणं अद्धमासेणं चंदे कइ मंडलाइं चरइ? ता चोद्दस चउब्भागमंडलाइं चरइ एगं च चउव्वीससयभागं मंडलस्स १ । ता आइच्चेणं अद्धमासेणं चंदे कइ मंडलाइं चरइ? ता सोलस मंडलाइं चरइ, सोलस मंडलचारीतया अवराइं खलु दुवे अट्ठगाइं जाइं चंदे केणइ असामण्णगाइं सयमेव पविसित्ता २ चारं चरइ २ । कयराइं खलु दुवे अट्ठगाइं जाइं चंदे केणइ असामण्णगाइं सयमेव पविसित्ता २ चारं चरइ ?, इमाइं खलु ते दुवे अट्ठगाइं जाइं चंदे केणइ असामण्णगाइ सयमेव पविसित्ता २ चारं चरइ, तंजहा—निक्खममाणे चेव अमावासं तेणं पविसमाणे चेव पुण्णमासिं तेणं, एयाइं खलु दुवे अट्ठगाइं जाइं चंदे केणइ असामण्णगाइं सयमेव पविसित्ता २ चारं चरइ ३ । ता पढमायणगए चंदे दाहिणाए भागाए पविसमाणे सत्त अद्ध मंडलाइं जाइं चंदे दाहिणाए भागाए पविसमाणे चारं चरइ ४ । कयराइं खलु ताइं सत्त अद्धमंडलाइं जाइं चंदे दाहिणाए भागाए पविसमाणे चारं चरइ? इमाइं खलु ताइं सत्त अद्धमंडलाइं जाइं चंदे दाहिणाए भागाए पविसमाणे चारं चरइ, तंजहा—बितिए अद्धमंडले चउत्थे अद्ध मंडले २ छट्ठे अद्धमंडले ३ अट्ठमे अद्धमंडले ४, दसमे अद्धमंडले ५, बारसमे अद्ध मंडले ६, चउद्दसमे अद्धमंडले ७, ५ । एमाइं खलु ताइं सत्त अद्धमंडलाइं जाइं चंदे दाहिणाए भागाए पविसमाणे चारं चरइ ६ । ता पढमायणगए चंदे उत्तराए भागाए पविसमाणे छ अद्धमंडलाइं, तेरस य सत्तट्ठिभागाइं अद्धमंडलस्स

जाइं चंदे उत्तराए भागाए पविसमाणे चारं चरइ ७। कयराइं खलु ताइं छ अद्धमंडलाइं, तेरस य सत्तट्ठिभागाइं अद्धमंडलस्स जाइं चंदे उत्तराए भागाए पविसमाणे चारं चरइ? इमाइं खलु ताइं छ अद्धमंडलाइं, तेरस य सत्तट्ठिभागाइं अद्धमंडलस्स जाइं चंदे उत्तराए भागाए पविसमाणे चारं चरइ, तंजहा–तइए अद्धमंडले १, पंचमे अद्धमंडले २, सत्तमे अद्धमंडले ३, नवमे अद्धमंडले ४, एक्कारसमे अद्धमंडले ५, तेरसमे अद्धमंडले ६, पन्नरसमंडलस्स तेरस सत्तट्ठिभागाइं, एयाइं खलु ताइं छ अद्धमंडलाइं, तेरस य सत्तट्ठिभागाइं, अद्धमंडलस्स, जाइं चंदे उत्तराए भागाए पविसमाणे चारं चरइ, एयावया च पढमे चंदायणे समत्ते भवइ ८। ता णक्खत्ते अद्धमासे नो चंदे अद्धमासे, ता चंदे अद्धमासे णो णक्खत्ते अद्धमासे ९। ता नक्खत्ताओ अद्धमासाओ ते चंदे चंदेणं अद्धमासेणं किमधियं चरइ? ता एगं अद्धमंडलं चत्तारि य सत्तट्ठिभागाइं अद्धमंडलस्स, सत्तट्ठिभागं एकतीसाए छेत्ता णवभागाइं १०। ता दोच्चायणगए चंदे पुरत्थिमिल्लाए भागाए णिक्खममाणे सत्त चउप्पणणाइं जाइं चंदे परस्स चिण्णं पडिचरइ सत्त तेरसगाइं जाइं चंदे अप्पणा चिण्णं चरइ ११। ता दोच्चायणगए चंदे पच्चत्थिमाए भागाए निक्खममाणे छ चउप्पणणाइं जाइं चंदे परस्स चिण्णं पडिचरइ–छ तेरसगाइं चंदे अप्पणो चिण्णं पडिचरइ, अवरगाइं खलु दुवे तेरसगाइं जाइं चंदे केणइ असामण्णगाइं सयमेव पविसित्ता २ चारं चरइ १२। कयराइं खलु ताइं दुवे तेरसगाइं जाइं चंदे केणइ असामण्णगाइं सयमेव पविसित्ता २ चारं चरइ? इमाइं खलु ताइं दुवे तेरसगाइं जाइं चंदे केणइ असामण्णगाइं सयमेव पविसित्ता २ चारं चरइ तंजहा–सव्वब्भंतरे चेव मंडले, सव्वबाहिरे चेव मंडले १३। सव्व एयाणि खलु ताणि दुवे तेरसगाइं जाइं चंदे केणइ जाव चारं चरइ १४। एयावया दोच्चे चंदायणे समत्ते भवइ १५। ता णक्खत्ते मासे नो चंदे मासे, चंदे मासे

नो णक्खत्ते मासे १६। ता णक्खत्ताओ मासाओ चंदे चंदेणं मासेणं किमधियं चरइ? ता दोअद्धमंडलाइं चरइ, अट्ठ य सत्तट्ठिभागाइं अद्धमंडलस्स, सत्तट्ठिभागं च एक्कतीसहा छेत्ता अट्ठारसभागाइं १७। ता तच्चायणगए चंदे पच्चत्थिमाए भागाए पविसमाणे बाहिराणंतरस्स पच्चत्थिमिल्लस्स अद्धमंडलस्स ईगतालीसं सत्तट्ठिभागाइं जाइं चंदे अप्पणो परस्स य चिएणं पडियरइ, तेरससत्तट्ठि-भागाइं जाइं चंदे परस्स चिएणं पडिचरइ, तेरस सत्तट्ठिभागाइं जाइं चंदे अप्पणो परस्स य चिएणं पडिचरइ १८। एयावया च बाहिराणंतरे पच्चत्थि-मिल्ले अद्धमंडले समत्ते भवइ १६। ता तच्चायणगए चंदे पुरत्थिमाए भागाए पविसमाणे बाहिरतच्चस्स पुरत्थिमिल्लस्स अद्धमंडलस्स इगतालीसं सत्तट्ठिभागाइं जाइं चंदे अप्पणो परस्स चिएणं पडिचरइ, तेरस सत्तट्ठिभागाइं जाइं चंदे परस्स चिएणं पडिचरइ, तेरस सत्तट्ठिभागाइं जाइं चंदे अप्पणो परस्स य चिएणं पडिचरइ, एतावताव बाहिरे तच्चे पुरत्थिमिल्ले अद्ध-मंडले समत्ते भवइ २०। ता तच्चायणगए चंदे पच्चत्थिमाए भागाए पवि-समाणे बाहिर चउत्थस्स पच्चत्थिमिल्लस्स अद्धमंडलस्स अट्ठसत्तट्ठिभागाइं सत्तट्ठिभागं च एक्कतीसहा छेत्ता अट्ठारसभागाइं जाइं चंदे अप्पणो परस्स य चिएणं पडिचरइ २१। एतावता व बाहिरचउत्थ पच्चत्थिमिल्ले अद्धमंडले समत्ते भवइ २२। एवं खलु एवं चंदेणं मासेणं चंदे तेरस चउप्पएणगाइं दुवे तेरसगाइं जाइं चंदे परस्स चिएणं पडिचरइ, तेरस तेरसगाइं जाइं चंदे अप्पणो चिएणं पडिचरइ, दुवे ईगतालीसगाइं दुवे तेरसगाइं अट्ठ सत्तट्ठि-भागाइं, सत्तट्ठिभागं च एक्कतीसधा छेत्ता अट्ठारसभागाइं जाइं चंदे अप्पणो परस्स य चिएणं पडिचरइ, अवराइं खलु दुवे तेरसगाइं जाइं चंदे केणइ असामन्नगाइं सयमेव पविसित्ता २ चारं चरइ २३। इच्चेसा चंदमसो अभिगमणणिक्खमण—वुड्ढि-निवुड्ढि अणवट्ठि य संठाणा संठिईविउव्वण-गिड्ढिपत्ते रूवी 'चंदे देवे, चदे देवे' आहिएति वएज्जा २४॥ सूत्रं ८१॥

तेरसमं पाहुडं समत्तं ॥ १३ ॥

॥ अथ चतुर्दशं प्राभृतम् ॥

ता कया ते दोसिणाबहू आहिएति वएज्जा ? ता दोसिणापक्खे णं दोसिणा बहू आहिएति वएज्जा १ । ता कहं ते दोसिणापक्खे दोसिणा बहू आहिएति वएज्जा ? ता अंधयारपक्खाओ णं दोसिणा बहू आहिएति वएज्जा २ । ता कहं ते अंधयारपक्खाओ णं दोसिणापक्खे दोसिणा बहू आहिएति वएज्जा ? ता अंधयारपक्खाओ णं दोसिणापक्खं अयमाणे चंदे चत्तारि बायाले मुहुत्तसये, छत्तालीसं च बावट्ठिभागे मुहुत्तस्स जाइं चंदे विरज्जइ, तंजहा–पढमाए पढमं भागं, बितिआए बितियं भागं जाव पराणरसीए पराणरसं भागं, एवं खलु अंधयारपक्खाओ दोसिणापक्खे दोसिणा बहू आहिएति वएज्जा ३ । ता केवइया णं दोसिणापक्खे दोसिणा बहू आहिएति वदेज्जा ? ता परित्ता असंखेज्जा भागा ४ । ता कया ते अंधयारे बहू आहिएति वएज्जा ? ता अंधयारपक्खे णं अंधयारे बहू आहिएति वएज्जा ५ । ता कहं ते अंधयारपक्खे अंधयारे बहू आहिएति वएज्जा ? ता दोसिणा पक्खाओ अंधयारपक्खे अंधयार बहू आहिएति वएज्जा ६ । ता कहं ते दोसिणापक्खाओ अंधयारपक्खे अंधयारे बहू आहिएति वएजा ?, ता दोसिणापक्खाओ णं अंधयारपक्खं अयमाणे चंदे चत्तारि बायालाइं मुहुत्तसयाइं छायालीसं च बावट्ठिभागे मुहुत्तस्स, जाइं चंदे रज्जइ, तंजहा–पढमाए पढमं भागं, बितियाए बितियं भागं जाव पराणरसीए पराणरसमं भागं ७ । एवं खलु दोसिणापक्खाओ अंधयारपक्खे अंधयारे बहू आहिएति वएज्जा ८ । ता केवइए णं अंधयारपक्खे अंधयारे बहू आहिएति वएज्जा ? परित्ता असंखेज्जा भागा ९ ॥ सूत्रं ८२ ॥ चोद्दसमं पाहुडं समत्तं ॥ १४ ॥

—::—

।। अथ पञ्चदशं प्राभृतम् ।।

ता कहं ते सिग्घगई वत्थू आहितेति वएज्जा ?, ता एएसि णं चंदिम सूरिय गह गण णक्खत्त तारारूवाणं चंदेहिंतो सूरिया सिग्घगई, सूरिएहिंतो गहा सिग्घगई गहेहितो णक्खत्ता सिग्घगई, णक्खत्तेहितो तारा सिग्घगई १। सव्वप्पगई चंदा, सव्वसिग्घगई तारा २। ता एगमेगेणं मुहुत्तेणं चंदे केवइयाइं भागसयाइं गच्छइ ? ता जं जं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तस्स तस्स मंडलपरिक्खेवस्स सत्तरस अट्ठसट्ठिं भागसते गच्छइ, मंडलं सयसहस्सेणं अट्ठाणउइ सएहिं छेत्ता ३। ता एगमेगेणं मुहुत्तेणं सूरिए केवइयाइं भागसयाइं गच्छइ ? ता जं णं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तस्स तस्स मंडलपरिक्खेवस्स अट्ठारसतीसे भागासते गच्छइ मंडलं सयसहस्सेणं अट्ठाणउइसएहि छेत्ता ४। ता एगमेगेणं मुहुत्तेणं णक्खत्ते केवइयाइं भागसयाइं गच्छइ। ता जं जं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तस्स तस्स मंडलपरिक्खेवस्स अट्ठारस पणतीसे भागसये गच्छइ, मंडलं सयसहस्सेणं अट्ठाणउइ सएहिं छेत्ता ५ ।। सूत्रं ८३ ।। ता जया णं चंदे गइ समावण्णं सूरे गइ समावण्णे भवइ से णं गइ मायाए केवइयं विसेसेइ ? बावट्ठिभागे विसेसेइ १। ता जया णं चंदं गइ समावण्णं णक्खत्ते गइ समावण्णे भवइ से णं गइमायाए केवइयं विसेसेइ ? ता सत्तट्ठिं भागे विसेसेइ २। ता जया णं सूरं गइ समावण्णं णक्खत्ते गइसमावण्णे भवइ से णं गइमायाए केवइयं विसेसेइ ? ता पंचभागे विसेसेइ ३। ता जया णं चंदं गइसमावण्णं अभीईणक्खत्ते णं गइसमावण्णे पुरत्थिमाए भागाए समासाएइ पुरत्थिमाए भागाए समासाइत्ता णव मुहुत्ते सत्तावीसं च सत्तट्ठिभागे मुहुत्तस्स चंदेण सद्धिं जोयं जोएइ जोयं जोइत्ता जोयं अणुपरियट्टइ, जोयं अणुपरियट्टित्ता विप्पजहइ, विगय जोई यावि भवइ ४। ता जया णं चंदं गइसमावण्णं सवणे णक्खत्ते गइसमावण्णे पुरत्थिमाए भागाए समासाएइ २ तीसं मुहुत्ते चंदेण सद्धिं जोयं जोएइ जोयं

जोइत्ता अणुपरियट्टइ अणुपरियट्टित्ता विप्पजहइ विगयजोई यावि भवइ ५। एवं एएणं अभिलावेणं णेयव्वं पणरसमुहुत्ताइं, तीसतिमुहुत्ताइं, पणयालीसमुहुत्ताइं भाणियव्वाइं जाव उत्तरासाढा ५। ता जया णं चंदं गइ समावण्णं गहे गइसमावण्णे पुरत्थिमाए भागाए समासाएइ २ चंदेण सद्धिं जोयं जोएइ, जोइत्ता जोयं अणुपरियट्टइ, अणुपरियट्टित्ता विप्पजहइ, विगयजोई यावि भवइ ६। ता जया णं सूरियं गइसमावण्णं अभीईणक्खत्ते गइसमावण्णे पुरत्थिमाए भागाए समासाएइ, समासाइत्ता चत्तारि अहोरत्ते छच्च मुहुत्ते सूरेणं सद्धिं जोयं जोएइ जोयं जोइत्ता जोयं अणुपरियट्टइ, अणुपरियट्टित्ता विप्पजहइ विगय जोई यावि भवइ ७। एवं अहोरत्ता छ एक्कवीसं मुहुत्ता य, तेरस अहोरत्ता बारस मुहुत्ता य वीसं अहोरत्ता तिण्णि मुहुत्ता य सव्वे भाणियव्वा जाव जया णं सूरियं गइसमावण्णं उत्तरा साढाणक्खत्ते गइसमावण्णे पुरत्थिमाए भागाए समासाएइ समासाइत्ता वीसं अहोरत्ते तिण्णि य मुहुत्ते सूरिएण सद्धिं जोयं जोएइ जोइत्ता जोयं अणुपरियट्टइ, अणुपरियट्टित्ता विप्पजहइ विगयजोई यावि भवइ ८। ता जया णं सूरं गइसमावण्णं गहे गइसमावण्णे पुरत्थिमाए भागाए समासाएइ, समासाइत्ता सूरेणं सद्धिं जोयं जोएइ, जोयं जोइत्ता जोयं अणुपरियट्टइ, अणुपरियट्टित्ता विप्पजहइ विगयजोई यावि भवइ ९ ॥ सूत्रं ८४ ॥ ता णक्खत्तेणं मासेण चंदे कइ मंडलाइं चरइ ? ता तेरस मंडलाइं चरइ, तेरस य सत्तट्ठिभागे मंडलस्स १। ता णक्खत्तेणं मासेणं सूरिए कइ मंडलाइं चरइ ? ता तेरस मंडलाइं चरइ, चोयालीसं च सत्तट्ठिभागे मंडलस्स २। ता णक्खत्तेणं मासेणं णक्खत्ते कईमंडलाइं चरइ ? ता तेरस मंडलाइं चरइ, अद्ध सीतालीसं च सत्तट्ठि-भागे मंडलस्स ३। ता चंदेणं मासेणं चंदे कइ मंडलाइं चरइ ? ता चोद्दस चउभागाइं मंडलाइं चरइ एगं च चउव्वीससयभागं मंडलस्स ४। ता चंदेणं मासेणं सूरे कइ मंडलाइं चरइ ? ता पण्णरसचउभागूणाइं मंडलाइं चरइ, एगं

चउव्वीस सयभागं मंडलस्स ५। ता चंदेणं मासेणं णक्खत्ते कइ मंडलाइं चरइ ? ता पराणरस चउभागूणाइं मंडलाइं चरइ छच्च चउव्वीससयभागे मंडलस्स ६। ता उउणा मासेणं चंदे कइमंडलाइं चरइ ? ता चोद्दस मंडलाइं चरइ, तीसं च एगट्ठिभागे मंडलस्स ७। ता उउणा मासेणं सूरे कइ मंडलाइं चरइ ? ता पराणरस मंडलाइं चरइ ८। ता उउणा मासेणं णक्खत्ते कइ मंडलाइं चरइ ? ता पराणरसमंडलाइं चरइ, पंच य बावीससयभागे मंडलस्स ९। ता आइच्चेणं मासेणं चंदे कइ मंडलाइं चरइ ? ता चोद्दस मंडलाइं चरइ, एक्कारस पराणरसभागे मंडलस्स १०। ता आइच्चेणं मासेणं सूरे कइ मंडलाइं चरइ ? ता पराणरस चउभागाहियाइं मंडलाइं चरइ ११। ता आइच्चेणं मासेणं णक्खत्ते कइ मंडलाइं चरइ ? ता पराणरस चउब्भागाहियाइं मंडलाइं चरइ पंच तीसं चउवीससयभागाइं मंडलाइं चरइ १२। ता अभिवड्ढिएणं मासेणं चंदे कइ मंडलाइं चरइ ? ता पराणरस्स मंडलाइं तेसीतिं छलसीयसतभागे मंडलस्स १३। ता अभिवड्ढितेणं मासेणं सूरे कइ मंडलाइं चरइ ? ता सोलस मंडलाइं चरइ, तिहिं भागेहिं ऊणगाइं दोहिं अडयालेहि सएहिं मंडलं छित्ता १४। ता अभिवड्ढिएणं मासेणं णक्खत्ते कइ मंडलाइं चरइ ? ता सोलस मंडलाइं चरइ सीतालीसेहिं भागेहिं अहियाइं चोद्दसहिं अट्ठासीएहिं सएहिं मंडलं छेत्ता १५ ॥ सूत्रं ८५ ॥
ता एगमेगेणं अहोरत्तेणं चंदे कइ मंडलाइं चरइ ? ता एगं अद्धमंडलं चरइ, एकतीसाए भागेहिं ऊणं नवहिं पराणरसेहिं सएहिं अद्धमंडलं छेत्ता १। ता एगमेगेणं अहोरत्तेणं सूरिए कइ मंडलाइं चरइ ? ता एगं अद्धमंडलं चरइ २। ता एगमेगेणं अहोरत्तेणं णक्खत्ते कइ मंडलाइं चरइ ? ता एगं अद्धमंडलं चरइ दोहिं भागेहि अहियं सत्तहिं बत्तीसेहिं सएहिं अद्धमंडलं छेत्ता ३। ता एगमेगं मंडलं चंदे कइहिं अहोरत्तेहिं चरइ ? ता दोहिं अहो-रत्तेहिं चरइ एकतीसाए भागेहिं अहिएहिं चउहिं बायालेहिं सएहिं राइं-

दियं छेत्ता ४। ता एगमेगं मंडलं सूरे कइहिं अहोरत्तेहिं चरइ? ता दोहिं अहोरत्तेहिं चरइ ५। ता एगमेग मंडलं णक्खत्ते कइहिं अहोरत्तेहिं चरइ? ता दोहिं अहोरत्तेहिं चरइ दोहिं भागेहिं ऊणेहिं तिहिं सत्तसट्ठेहिं सएहिं राइंदियं छेत्ता ६। ता जुगेणं चंदे कइ मंडलाइं चरइ? ता अट्ठ चुलसीयाइं मंडलसयाइं चरइ ७। ता जुगेणं सूरे कइ मंडलाइं चरइ? ता णवपण्णरस मंडलसयाइं चरइ ८। ता जुगेणं णक्खत्ते कइ मंडलाइं चरइ? ता अट्ठारस पणतीसे दुभागमंडलसये चरइ ९। इच्चेसा मुहुत्तगई रिक्खाइ–मासरा-इंदिए-जुग-मंडल-पविभत्ती सिग्घगई वत्थु आहिएत्तिबेमि १०॥ सूत्रं ८६॥ पण्णरसमं पाहुडं समत्तं॥ १५॥

॥ अथ षोडशं प्राभृतम् ॥

ता कहं ते दोसिणालक्खणं आहितेति वएज्जा? ता चंद लेस्साइ य दोसिणाई य, दोसाणाई य चंद लेस्साई य के अट्ठे किं लक्खणे? ता एगट्ठे एगलक्खणे १। ता सूरियलेस्साइ य आयवेइ य २ सूरलेस्साई य के अट्ठे किं लक्खणे? ता एगट्ठे एगलक्खणे २। ता अंधयारेइ य छायाइ य छायाइ य अंधयारेइ य के अट्ठे किं लक्खणे? ता एगट्ठे एगलक्खणे ३॥ सूत्रं ८७॥ सोलसमं पाहुडं समत्तं॥ १६॥

॥ अथ सप्तदशं प्राभृतम् ॥

ता कहं ते चवणोववाया आहितेति वएज्जा? तत्थ खलु इमाओ पणवीसं पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ, तंजहा–तत्थेगे एवमाहंसु ता अणुसमयमेव चंदिम सूरिया अणणे चयंति अणणे उववज्जंति एगे एवमाहंसु १ एगे पुण एवमाहंसु ता अणुमुहुत्तमेव चंदिमसूरिया अणणे चयंति अणणे उववज्जंति एगे एवमाहंसु २, एवं जहेव हेट्ठा तहेव जाव ता एगे पुण एवमाहंसु–ता अणुओसप्पिणी उस्सप्पिणीमेव चंदिमसूरिया अणणे चयंति अणणे

उववज्जंति एगे एवमाहंसु २५, १। वयं पुण एवं वयामो—ता चंदिमसूरिया णं देवा महिड्ढीया महाजुईया महाबला महाजसा महासोक्खा महाणुभावा वरवत्थधरा वरमल्लधरा वरगंधधरा वराभरणधरा अव्वोच्छित्ति नयट्ठयाए काले अगणे चयंति अगणे उववज्जंति आहितेति वदेज्जा॥ सूत्रं ८८॥
सत्तरसमं पाहुडं समत्तं॥ १७॥

॥ अथाष्टादशं प्राभृतम्॥

ता कहं ते उच्चत्ते आहिएति वएज्जा? तत्थ खलु इमाओ पणवीसं पडिवत्तीओ पराणत्ताओ, तंजहा—तत्थ एगे एवमाहंसु ता एगं जोयणसहस्सं सूरे उड्ढं उच्चत्तेणं, दिवड्ढं चंदे एगे एवमाहंसु १, एगे पुण एवमाहंसु ता दो जोयणसहस्साइं सूरे उड्ढं उच्चत्तेणं, अड्ढाइज्जाइं चंदे, एगे एवमाहंसु २, एवं एएणं अभिलावेणं णेयव्वं ता तिन्नि जोयणसहस्साइं सूरे अद्धट्ठाइं चंदे ३, चत्तारि जोयणमहस्साइं सूरे अद्धपंचमाइं चंदे ४, पंच जोयणसहस्साइं सूरिए, अद्धछट्ठाइं चदे ५, एवं छ जोयणसहस्साइं सूरे अद्धसत्तमाइं चंदे ६, सत्त जोयणसहस्साइं सूरे अद्धट्ठमाइं चंदे ७, अट्ठ जोयणसहस्साइं सूरे अद्धनवमाइं चंदे ८, नव जोयणसहस्साइं सूरे अद्धदसमाइं चंदे ९, दस जोयणसहस्साइं सूरे अद्धएकारस चंदे १०, एकारस जोयणसहस्साइं सूरे अद्ध बारस चंदे ११, बारस सूरे अद्ध तेरस चंदे १२, तेरस सूरे अद्ध चोद्दस चंदे १३, चोद्दस सूरे अद्ध पराणरस चंदे १४, पराणरस सूरे अद्ध सोलस चंदे १५, सोलस सूरे अद्ध सत्तरस चंदे १६, सत्तरस सूरे अद्ध अट्ठारस चंदे १७, अट्ठारस सूरे अद्ध एगूणवीसं चंदे १८, एकोणवीसं सूरे अद्ध वीसं चंदे १९, वीसं सूरे अद्ध एकवीसं चंदे २०, एकवीसं सूरे अद्ध बावीसं चंदे २१, बावीसं सूरे अद्ध तेवीसं चंदे २२, तेवीसं सूरे अद्ध चउवीसं चंदे २३, चउवीसं सूरे अद्ध पणवीसं चंदे, एगे एव

माहंसु २४, एगे पुण एवमाहंसु पणवीसं जोयणसहस्साइं सूरे उड्ढं उच्चत्तेणं, अद्ध छव्वीसं चंदे, एगे एवमाहंसु २५, १। वयं पुण एवं वयामो–ता इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ सत्तणउइं जोयणसए उड्ढं उप्पतिता अबाहाए हेट्ठिल्ले ताराविमाणे चारं चरइ, अट्ठ-जोयणसते उड्ढं अबाहाए सूरविमाणे चारं चरइ, अट्ठअसीए जोयणसए उड्ढं उप्पतिता अबाहाए चंद विमाणे चारं चरति नव जोयणसताइं अबाहाए उवरिल्ले ताराविमाणे चारं चरइ २। हेट्ठिल्लाओ ताराविमाणाओ दस-जोयणाइं उड्ढं अबाहाए सूरविमाणे चारं चरइ, नउइं जोयणे उड्ढं उप्पतिता अबाहाए चंदविमाणे चारं चरइ, (एवं जहेव जीवाभिगमे तहेव नेयव्वं सव्वब्भंतरिल्लं चारं संठाणं पमाणं वहति सिग्घगती इड्ढी तारंतरं अग्गमहिसीओ ठिती अप्पा बहुं जाव ताराओ संखेज्जगुणाओ दसोत्तरं जोयणसयं उड्ढं उप्पतिता अबाहाए उवरिल्ले तारारूवे चारं चरइ ३। ता सूरियविमाणाओ असीइं जोयणाइं उड्ढं उप्पतिता अबाहाए चंदविमाणे चारं चरइ ४। जोयणसयं उड्ढं अबाहाए उवरिल्ले तारा रूवे चारं चरइ ता चंदविमाणाओ णं वीसं जोयणाइं उड्ढं उप्पतिता अबाहाए उवरिल्ले तारा रूवे चारं चरइ ५। एवामेव सपुव्वावरेणं दसुत्तरजोयणसयं बाहल्ले तिरियमसंखेज्जे जोइसविसए जोइसं चारं चरइ आहिएति वएज्जा ६ ॥ सूत्रं ८१ ॥ ता अत्थिणं चंदिमसूरिया णं देवाणं हिट्ठंपि तारारूवा अणुंपि तुल्लावि ? समंपि तारारूवा अणुंपि तुल्लावि ? उप्पिंपि तारारूवा अणुंपि तुल्लावि ? ता अत्थि १। ता कहं ते चंदिमसूरियाणं देवाणं हिट्ठंपि तारारूवा अणुंपि तुल्लावि समंपि तारारूवा अणुंपि तुल्लावि, उप्पिंपि तारारूवा अणुंपि तुल्लावि ? ता जहा जहाणं तेसिणं देवाणं ताव णियमबंभचेराइं उस्सियाइं भवंति तहा तहाणं तेसिं देवाणं एवं भवइ, तंजहा–अणुत्ते वा तुल्लत्ते वा २। ता एवं खलु चंदिमसूरियाणं देवाणं

हिट्ठंपि तारारूवा अणुंपि तुल्लावि तहेव जाव उप्पिंपि तारारूवा अणुंपि तुल्लावि ३ ॥ सूत्र ६० ॥ ता एगमेगस्स णं चंदस्स देवस्स केवइया गहा परिवारो पराणत्तो ? केवइया णक्खत्ता परिवारो पराणत्तो ? केवइया तारा परिवारो पराणत्तो ? एगमेगस्स णं चंदस्स देवस्स अट्ठासीई गहा परिवारो पराणत्तो, अट्ठावीसं णक्खत्ता परिवारो पराणत्तो, गाहा "छावट्ठि सहस्साइं णवचेव सयाइं, पंचुत्तराइं (पंचसयराइं) एगससी परिवारो, तारागणकोडि-कोडीणं ॥ १ ॥ परिवारो पराणत्तो ॥ सूत्रं ६१ ॥ ता मंदरस्स णं पव्व-यस्स केवइयं अबाहाए जोइसे चारं चरइ ? ता एक्कारस एक्कवीसाइं जोयण-सयाइं अबाहाए जोइसे चारं चरइ १ । ता लोयंताओ णं केवइयं अबाहाए जोइसे पराणत्ते ? ता एक्कारस एक्कादसाइं जोयणसयाइं—अबाहाए जोइसे पराणत्ते २ ॥ सूत्रं ६२ ॥ ता जंबुद्दीवेणं दीवे कयरे णक्खत्ते सव्वब्भंत-रिल्लं चारं चरंति ? कयरे णक्खत्ते सव्वबाहिरिल्लं चारं चरंति ? कयरे णक्खत्ते सव्वुवरिल्लं चारं चरंति ? कयरे णक्खत्ते हिट्ठिल्लं चारं चरति ? ता अभीई णक्खत्ते सव्वब्भिंतरिल्लं चारं चरइ, मूले णक्खत्ते सव्वबाहिरिल्लं चारं चरइ, साई णक्खत्ते सव्वुवरिल्लं चारं चरइ, भरणी णक्खत्ते सव्व-हेट्ठिल्लं चारं चरइ ॥ सूत्रं ६३ ॥ ता चंदविमाणेणं किं संठिए पराणत्ते ? ता अद्ध कविट्ठसंठाणसंठिए सव्वफालियामए अब्भुग्गयमूसिय-पहासिए विविहमणिरयण-भत्तिचित्ते वाउद्धुय विजयवेजयंती-पडाग-छत्ताइछत्तकलिए, तुंगे गगणतलमणुलिहंतसिहरे जालंतर-रयणपंजरमिलियव्व मणिकणग-थूभियागे वियसिय-सयपत्तपुंडरीय-तिलग-रयणद्धचंदचित्ते अंतो बहिं सराहे तवणिज्ज-वालुया-पत्थडे सुहफासे सस्सिरीयरूवे पासाईए दरिसणिज्जे अभिरूवे पडिरूवे, एवं सूरविमाणे, गहविमाणे, णक्खत्तविमाणे, तारा-विमाणे १ । ता चंदविमाणेणं केवइयं आयामविक्खंभेणं ? केवइयं परि-क्खेवेणं ? केवइयं बाहल्लेणं पराणत्ते ? ता छप्पराणं एगट्ठिभागे जोयणस्स

आयामविक्खंभेणं, तं तिगुणं सविसेसं परिरयेणं, अट्ठावीसं एगट्ठिभागे जोयणस्स बाहल्लेणं पण्णत्ते २। ता सूरियविमाणेणं केवइयं आयामवि-क्खंभेणं पुच्छा? ता अडयालीसं एगट्ठिभागे जोयणस्स आयामविक्खंभेणं, तं तिगुणं सविसेसं परिरएणं, चउव्वीसं एगट्ठिभागे जोयणस्स बाहल्लेणं पण्णत्ते ३। ता गहविमाणेणं केवइयं पुच्छा? ता अद्धजोयणं आयामवि-क्खंभेणं तं तिगुणं सविसेसं परिरएणं, कोसं बाहल्लेणं पण्णत्ते ४। ता णक्खत्तविमाणे णं केवइयं पुच्छा? ता कोसं आयामविक्खंभेणं, तं तिगुणं सविसेसं परिरएणं, अद्धकोसं बाहल्लेणं पण्णत्ते ५। ताराविमा-णेणं केवइयं पुच्छा? ता अद्धकोसं आयामविक्खंभेणं, तं तिगुणं सविसेसं परिरएणं पंच धणुसयाइं बाहल्लेणं पण्णत्ते ६। ता चंदविमाणे णं कइ देवसाहस्सीओ परिवहंति? सोलस देवसाहस्सीओ परिहंति, तंजहा—पुरत्थिमेणं सीहरूवधारीणं चत्तारि देवसाहस्सीओ परिवहंति, दाहिणेणं गयरूवधारीणं चत्तारि देवसाहस्सीओ परिवहंति, पच्चत्थिमेणं वसभरूवधा-रीणं चत्तारि देवसाहस्सीओ परीवहंति, उत्तरेणं तुरगरूवधारीणं चत्तारि देवसाहस्सीओ परिवहंति ७। एवं सूरविमाणंपि ८। ता गहविमाणेणं कइ देवसाहस्सीओ परिवहंति? ता अट्ठदेवसाहस्सीओ परिवहंति, तंजहा—पुरत्थिमेणं सिंहरूवधारीणं देवाणं दो देवसाहस्सीओ परिवहंति, एवं जाव उत्तरेणं तुरगरूवधारीणं देवाणं दो देवसाहस्सीओ परिवहंति ९। ता नक्खत्तविमाणेणं कइ देवसाहस्सीओ परिवहंति? ता चत्तारि देवसाहस्सीओ परिवहंति, तंजहा—पुरत्थिमेणं सीहरूवधारीणं देवाणं एका देव-साहस्सी परिवहइ, एवं जाव उत्तरेणं तुरगरूवधारीणं देवाणं एका देव-साहस्सी परिवहइ १०। ता ताराविमाणेणं कइ देवसाहस्सीओ परिवहंति? दो देवसाहस्सीओ परिवहंति, तंजहा—पुरत्थिमेणं सीहरूवधारीणं पंच [illegible] परिवहंति, एवं जाउत्तरेणं तुरगरूवधारीणं देवाणं पंच देवसया

परिवहंति ११ ॥ सू० १४ ॥ एएसिं णं चंदिम-सूरिय-गहगण-णक्खत्त-तारारूवाणं कयरे कयरेहिंतो सिग्घगई वा मंदगई वा ? ता चंदेहिंतो सूरा सिग्घगई सूरेहिंतो गहा सिग्घगई गहेहिंतो णक्खत्ता सिग्घगई, णक्खत्तेहिंतो तारा सिग्घगई, सव्वप्पगई चंदा, सव्वसिग्घगई तारा १ । ता एएसिं णं चंदिम-सूरिय-गहगण-णक्खत्ततारारूवाणं कयरे कयरेहिंतो अप्पिड्ढिया वा महिड्ढिया वा ? ताराहिंता णक्खत्ता महिड्ढिया णक्खत्तेहितो गहा महिड्ढिया, गहेहिंतो सूरिया महिड्ढिया, सूरिएहिंतो चंदा महिड्ढिया, सव्वप्पिड्ढिया तारा, सव्वमहिड्ढिया चंदा २ ॥ सू० १५ ॥ ता जंबुद्दीवेणं दीवे तारारूवस्स य एस णं केवइए अबाहाए अंतरे पराणत्ते ? दुविहे अंतरे पराणत्ते, तंजहा—वाघाइमे य, निव्वाघाइमे य १ । तत्थ णं जे से वाघाइमे से णं जहराणेणं दोरिण छावट्ठे जोयणसते उक्कोसेणं बारसजोयणसहस्साइं दोरिण बायाले जोयणसते तारारूवस्स य २ अबाहाए अंतरे पराणत्ते २ । तत्थ णं जे से णिव्वाघाइमे से जहराणेणं पंच धणुसयाइं, उक्कोसेणं अद्धजोयणं तारारूवस्स य २ अबाहाए अंतरे पराणत्ते ३ ॥ सू० १६ ॥ ता चंदस्स णं जोइसिंदस्स जोइसरराणो कइअग्गमहिसीओ पराणत्ताओ ? ता चत्तारि अग्गमहिसीओ, पराणत्ताओ, तंजहा—चंदप्पभा १, दोसिणाभा २, अच्चिमाली ३, पभंकरा ४,१ । तत्थ णं एगमेगाए देवीए चत्तारि २ देवीसाहस्सीओ परिवारो पराणत्तो २ । पभू णं ताओ एगमेगा देवी अराणाइं चत्तारि २ देवीसहस्साइं परिवारं विउव्वित्तए ३ । एवामेव सपुव्वावरेणं सोलस देवीसहस्साइं, सेत्तं तुडिए ४ । ता पभू णं चंदे जोइसिंदे जोइसराया चंदवडिंसए विमाणे सभाए सुहम्माए तुडिएणं सद्धिं दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरित्तए ? णो इणट्ठे संमट्ठे ५ । ता कहं ते णो पभू चंदे जोइसिंदे जोइसराया चंदवडिंसए विमाणे सभाए सुहम्माए तुडिएणं सद्धिं दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणं विहरित्तए ? ता चंदस्स णं जोइसिंदस्स जोइसरराणो चंदवडिंसए विमाणे

सभाए सुहम्माए माणव सु चेइयखंभेसु वयरामएसु गोलवट्टसमुग्गएसु बहवे जिणसकहा संणिक्खित्ता चिट्ठंति, ताम्रो णं चंदस्स जोइसिंदस्स जोइसररणो, अरणेसि च बहूणं जोइसियाणं देवाण य देवीण य अच्चणिज्जाश्रो वंदणिज्जाश्रो पूयणिज्जाश्रो सक्कारणिज्जाओ सम्माणणिज्जाओ कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासणिज्जाओ, एवं खलु णो पभू चंदे जोइसिदे जोइसराया चंदवडिसए विमाणे सभाए सुहम्माए तुडिएण सद्धिं दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरित्तए ६। पभू णं चंदे जोइसिदे जोइसराया चंदवडिसए विमाणे सभाए सुहम्माए चंदंसि सीहासणंसि चउहिं सामाणियसाहस्सीहिं, चउहिं अग्गमहिसीहिं सपरिवाराहिं तिहिं परिसाहि, सत्तहिं अणीयाहि सत्तहिं अणियाहिवइहि सोलसहिं आयरक्खदेवसाहस्सीहिं, अरणेहि य बहूहिं जोइसिहिं देवेहि देवीहि य सद्धिं संपरिवुडे महयाहय-णट्ट-गीय-वाइय-तंती-तल-ताल-तुडिय-घणमुइंग-पडुप्पवाइयरवेणं दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरित्तए केवलं परियारणिड्ढिए, णो चेव णं मेहुणवत्तियाए ७। ता सूरस्स णं जोइसिंदस्स जोइसररणो कइअग्गमहिसीओ पराणत्ताओ ? ता चत्तारि अग्गमहिसीओ पराणत्ताओ, तंजहा—सूरप्पभा १, आतवा २, अच्चिमाला ३, पभंकरा ४, सेसं जहा चंदस्स, णवरं सूरवडिसए विमाणे जाव णो चेव णं मेहुणवत्तियाए ८॥ सू० १७॥ ता जोइसियाणं देवाणं केवइयं कालं ठिई पराणत्ता ? जहरणेणं अट्ठभागपलिओवमं, उक्कोसेणं पलिओवमं, वाससयसहस्समब्भहियं १। ता जोइसिणीणं देवीणं केवइयं कालं ठिई पराणत्ता ? ता जहरणेणं अट्ठभागपलिओवमं, उक्कोसेणं अद्धपलिओवमं, पराणासाए वाससहस्सेहिं अब्भहियं २। ता चंदविमाणे णं देवाणं केवइयं कालं ठिई पराणत्ता ? जहरणेणं चउब्भागपलिओवमं, उक्कोसेणं पलिओवमं वास सयसहस्समब्भहियं ३। ता चंदविमाणे णं देवीणं केवइयं कालं ठिई पराणत्ता ? जहरणेणं चउब्भागपलिओवमं उक्कोसेणं अद्धपलि-

ओवमं. पराणासाए वाससहस्सेहिं अब्भहियं ४ । ता सूरविमाणे णं देवाणं केवइयं कालं ठिई पराणत्ता ? जहराणेणं चउब्भागपलिओवमं, उक्कोसेणं पलिओवमं वाससहस्समब्भहियं ५। ता सूरविमाणे णं देवीणं केवइयं कालं ठिई पराणत्ता ? जहराणेणं चउब्भागपलिओवमं, उक्कोसेणं अद्धपलिओवमं पचहिं वाससएहिं अब्भहियं ६ । ता गहविमाणे णं देवाणं केवइयं कालं ठिई पराणत्ता ? जहराणेणं चउब्भागपलिओवमं उक्कोसेणं पलिओवमं ७। ता गहविमाणे णं देवीणं केवइयं कालं ठिई पराणत्ता ? जहराणेणं चउब्भाग-पलिओवमं, उक्कोसेणं अद्धपलिओवमं ८ । ता णक्खत्तविमाणे णं देवाणं केवइयं कालं ठिई पराणत्ता ? जहराणेणं चउब्भागपलिओवमं, उक्कोसेणं अद्धपलिओवमं ९ । ता णक्खत्तविमाणे णं देवीणं केवइयं कालं ठिई पराणत्ता ? जहराणेणं अट्ठभागपलिओवमं उक्कोसेणं चउब्भागपलिओवमं १० । ता ताराविमाणे णं देवाणं पुच्छा, जहराणेणं अट्ठभागपलिओवमं, उक्कोसेणं चउब्भागपलिओवमं ११ । ता ताराविमाणे णं देवीणं पुच्छा, जहराणेणं अट्ठभागपलिओवमं उक्कोसेणं साइरेग अट्ठभागपलिओवमं १२ ॥ सू० ९८ ॥ ता एएसि णं चंदिम-सूरिय-गहगण-णक्खतताराख्वाणं कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? ता चंदा य सूरा य एते णं दो वि तुल्ला सव्वत्थोवा, णक्खत्ता संखिज्जगुणा गहा संखिज्जगुणा तारा संखिज्जगुणा ॥ सू० ९९ ॥ अट्ठारसमं पाहुडं समत्तं ।

॥ इति अष्टादशं प्राभृतम् ॥ १८ ॥

॥ अथ एकोनविंशतितमं प्राभृतम् ॥

ता कइ णं चंदमसूरिया सव्वलोयंसि ओभासंति उज्जोवेंति तवेंति पभासेंति आहिएति वएज्जा ? तत्थ खलु इमाओ दुवालसपडिवत्तीओ पराणत्ताओ, तत्थेगे एवमाहंसु—ता एगे चंदे एगे सूरे सव्वलोयंसि ओभासंति

१ उज्जोवेति २ तवेति ३, पभासति ४, एगे एवमाहंसु १, एगे पुण एवमाहंसु–ता तिरिण चंदा तिरिण सूरा सव्वलोयंसि ओभासेंति ४, एगे एवमाहंसु २। एगे पुण एवमाहंसु–ता आउट्टिं चंदा आउट्टिं सूरा सव्वलोयंसि ओभासेंति ४, एगे एवमाहंसु ३, एवं एएणं अभिलावेणं जातो तइए पाहुडे दुवालसपडिवत्तीओ ताओ चेव इहंपि णेयव्वाओ नवरं सत्त य दस य जाव य बावत्तरं चंदसहस्सं बावत्तरं सूरसहस्सं सव्वलोयं ओभासंति ४, एगे एवमाहंसु १। वयं पुण एवं वयामो–ता अयरणं जंबुद्दीवे दीवे जाव परिक्खेवेणं पराणत्ते ता जंबुद्दीवे णं दीवे दो चंदा पभासेंसु वा पभासेंति वा पभासिस्संति वा, जहा जीवाभिगमे जाव ताराओ २। ता जंबुद्दीवेणं दीवे लवणे नामं समुद्दे वट्टे वलयागारसंठिए सव्वओ समंता संपरिक्खित्ताणं चिट्ठइ ३। ता लवणे णं समुद्दे किं समचक्कवालसंठाणसंठिए विसमचक्कवालसंठिए ? ता लवणे णं समुद्दे समचक्कवालसंठिए नो विसमचक्कवालसंठिए ४। ता लवणे समुद्दे केवइयं चक्कवालविक्खंभेणं केवइयं परिक्खेवेणं आहिएति वएज्जा ? ता दो जोयणसयसहस्साइं चक्कवालविक्खंभेणं, पराणरस जोयणसयसहस्साइं एकासीइं च सहस्साइं सयं च उणयालं किंचिविसेसूणे परिक्खेवेणं आहिएति वएज्जा ५। ता लवणे णं समुद्दे केवइयं चंदा पभासिसु वा ३ एवं पुच्छा जाव केवइयाओ तारागणकोडिकोडीओ सोभं सोभिंसु वा ३ ? ता लवणे णं समुद्दे चत्तारि चंदा पभासिसु वा ३ जहा जीवाभिगमे जाव ताराओ ६। ता लवणसमुद्दं धायईसंडे णं दीवे वट्टे वलयागारसंठिए सव्वओ समंता संपरिक्खित्ता णं चिट्ठइ ७। ता धायइसंडे णं दीवे किं समचक्कवालसंठिए विसमचक्कवालसंठिए ? ता समचक्कवालसंठिए णो विसमचक्कवालसंठिए ८। ता धायईसंडे दीवे केवइयं चक्कवालविक्खंभेणं केवतियं परिक्खेवेणं आहितेति वदेज्जा ? एवं विक्खंभो परिक्खेवो जोइसं जहा जीवाभिगमे जाव

ताराओ ९ । ता धायइसंडं णं दीवं कालोए णामं समुद्दे वट्टे वलयागार-संठिए सव्वओ समंता संपरिक्खित्ता णं चिट्ठइ १० । ता कालोए णं समुद्दे किं समचक्कवालसंठिए विसमचक्कवालसंठिए ? समचक्कवालसंठिए णो विसम-चक्कवालसंठिए ११ । एवं विक्खंभो परिक्खेवो जोइसं च भाणियव्वं जाव ताराओ १२ । ता कालोयरणं समुद्दं पुक्खरवरे णं दिवे वट्टे वलयागार-संठिए सव्वओ समंता संपरिक्खित्ता णं चिट्ठइ १३ । ता पुक्खरवरे णं दीवे किं समचक्कवालसंठिए विसमचक्कवालसंठिए ? ता समचक्कवालसंठिए नो विसमचक्कवालसंठिए १४ । एवं विक्खंभो परिक्खेवो जोइसं जाव ताराओ १५। ता पुक्खरवरस्स णं दीवस्स चक्कवालविक्खंभस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थ णं माणुसुत्तरे णामं पव्वए वलयागारसंठिए, जे णं पुक्खरवरदीवं दुहा विभयमाणे विभयमाणे चिट्ठइ, तंजहा—अब्भितरपुक्खरद्धं च, बाहिरपुक्खरद्धं च १६ । ता अब्भितरपुक्खरद्धे णं किं समचक्कवालसंठिए विसमचक्कवाल-संठिए ? ता समचक्कवालसंठिए णो विसमचक्कवालसंठिए १७। एवं विक्खंभो, परिक्खेवो जोइसं, ताराओ जाव एगससीपरिवारो तारागणकोडिकोडीणं १८ । ता पुक्खरवरं णं दीवं पुक्खरोदे समुद्दे वट्टे वलयागारसंठिए जाव चिट्ठइ, एवं विक्खंभो, परिक्खेवो जोइसं च भाणियव्वं जहा जीवाभिगमे जाव सयंभूरमणे १९ ॥ सूत्रं १००-१०१ ॥ एकूणवीसतितमं पाहुडं समत्तं ॥१९॥

॥ अथ विंशतितमं प्राभृतम् ॥

ता कहं ते अणुभावे आहिएति वएज्जा ? तत्थ खलु इमाओ दो पडिवत्तीओ पराणत्ताओ, तंजहा—तत्थेगे एवमाहंसु—ता चंदिमसूरिया णं णो जीवा, अजीवा, णो घणा, झुसिरा, णो बादरबोंदिधरा, कलेवरा, नत्थि णं तेसि उट्ठाणेइ वा, कम्मेइ वा. बलेइ वा, वीरिए इ वा, पुरिसक्कारपरक्कमे इ वा, ते णो विज्जु लवंति, णो असणिं लवंति, णो थणियं लवंति, अहे य

णं बायरे वाउकाए संमुच्छइ २ त्विज्जंपि, लवंति, असणिंपि लवंति, थणियंपि लवंति, एगे एवमाहंसु १, एगे पुण एवमाहंसु–ता चंदिमसूरिया णं जीवा, णो अजीवा, घणा, नो झुसिरा, बायरबोंदिधरा, नो कलेवरा, अत्थि णं तेसिं उट्ठाणे इ वा, कम्मे इ वा, बले इ वा, वीरिए इ वा, पुरिसक्कारपरक्कमे इ वा, ते विज्जुंपि लवंति, असणिंपि लवंति, थणियंपि लवंति, एगे एवमाहंसु २, १। वयं पुण एवं वयामो–ता चंदिमसूरिया णं देवा महिड्ढिया महाजुइया महाबला महाजसा महासोक्खा महाणुभावा वरवत्थधरा वरगंधधरा वरमल्लधरा वराभरणधरा अव्वुच्छित्तिणयट्ठयाए अण्णे चयंति अण्णे उववज्जंति आहितेति वदेज्जा २ ॥ सूत्रं १०२ ॥ ता कहं ते राहुकम्मे आहिएति वएज्जा ? तत्थ खलु इमाओ दो पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ, तंजहा–तत्थेगे एवमाहंसु–ता अत्थि णं से राहुदेवे जे णं चंदं सूरं च गेण्हति एगे एवमाहंसु १, एगे पुण एवमाहंसु–ता णत्थि णं से राहुदेवे जे णं चंदं वा सूरं वा गेण्हति २, १। तत्थ जे ते एवमाहंसु–ता अत्थि णं से राहुदेवे जे णं चंदं वा सूरं वा गेण्हति ते णं एवमाहंसु–ता राहू णं देवे चंदं वा सूरं वा गेण्हमाणे बुद्धंतेणं गिण्हित्ता बुद्धंतेणं मुयइ १, मुद्धंतेणं गिण्हित्ता मुद्धंतेणं मुयइ २, मुद्धंतेणं गिण्हित्ता बुद्धंतेणं मुयइ ३, बुद्धंतेणं गिण्हित्ता मुद्धंतेणं मुयइ ४, वामभुयंतेणं गिण्हित्ता वामभुयंतेणं मुयइ ५, वामभुयंतेणं गिण्हता दाहिणभुयंतेणं मुयइ ६, दाहिणभुयंतेणं गिण्हित्ता वामभुयंतेणं मुयइ ७, दाहिणभुयंतेणं गिण्हता दाहिणभुयंतेणं मुयइ ८,१, २। तत्थ जे ते एवमाहंसु–ता नत्थि णं से राहुदेवे जे णं चंदं वा सूरं वा गेण्हति ते णं एवमाहंसु–तत्थ खलु इमे पण्णरस कसिणपोग्गला पण्णत्ता, तंजहा–सिंघाडए १, जडिलए २, खरए ३, खत्तए ४, अंजणे ५, खंजणे ६, सीयले ७, हिमसीयले ८, केलासे ९, अरुणाभे (प्पहे) १० पणिज्जए (पभंजणे) ११ भमुव (णभसू)रए

१२, कविलिए १३, पिंगलए १४, राहू १५, ३। ता जया णं एते पराणरस कसिणा-कसिणा पोग्गला सया चंदस्स वा सूरस्स वा लेसाणुबद्ध-चारिणो भवंति तया णं माणुसलोगे माणुसा एवं वदंति—एवं खलु राहू चंदं वा सूरं वा गेराहइ २, ४। ता जया णं एए पराणरस कसिणा २ पोग्गला णो सया चंदस्स वा सूरस्स वा लेसाणुबद्धचारिणो भवंति णो खलु तया माणुसलोगम्मि मणुस्सा एवं वयंति—एवं खलु राहू चंदं वा सूरं वा नो गेराहति, एते एवमाहंसु २, ५। वयं पुण एवं वयामो—ता राहू णं देवे महिड्ढीए जाव महासुक्खे वरवत्थधारी जाव वराभरणधारी ६। राहुस्स णं देवस्स णवनामधेज्जा पराणत्ता, तंजहा—सिंघाडए १, जडिलए २, खरए ३, खत्तए ४, दद्दरे (ढड्डरे) ५, मगरे ६, मच्छे ७, कच्छभे ८, कराहसप्पे ९, ७। ता राहुस्स णं देवस्स विमाणा पंचवराणा पराणत्ता, तंजहा—किराहा १, नीला २, लोहिया ३, हालिद्दा ४, सुक्किला ५, ८। अत्थि कालए राहुविमाणे खंजणवराणाभे पराणत्ते १, अत्थि नीलए राहुविमाणे अलाउयवराणाभे, पराणत्ते २, अत्थि लोहिए राहुविमाणे मंजिट्ठा वराणाभे पराणत्ते ३, अत्थि हालिद्दए राहुविमाणे हलिद्दावराणाभे पराणत्ते ४, अत्थि सुक्किलए राहुविमाणे भासरासिवराणाभे पराणत्ते ५, ९। ता जया णं राहुदेवे आगच्छमाणे वा, गच्छमाणे वा, विउव्वमाणे वा, परियारे-माणे वा चंदलेस्सं पुरत्थिमेणं आवरित्ता णं पच्चत्थिमे णं वीईवयइ, तया णं पुरत्थिमेणं चंदे उवदंसेइ पच्चत्थिमेणं राहू १, १०। जया णं राहू आगच्छमाणे वा जाव परियारेमाणे वा चंदस्स वा सूरस्स वा लेसं पच्चच्छिमेणं आवरित्ता पुरच्छिमे णं वीईवयइ तया णं पच्चत्थिमे णं चंदे उवदंसति पुरत्थिमे णं राहू २, ११। जया णं राहुदेवे आगच्छमाणे वा गच्छमाणे वा विउव्वमाणे वा परियारेमाणे वा चंदस्स वा सूरस्स वा लेस्सं दाहिणेणं आवरित्ता उत्तरे णं वीईवयइ तया णं दाहिणेणं चंदे वा सूरे

वा उवदंसेइ उत्तरेणं राहू २, १२। एवं एतेणं अभिलावेणं उत्तरेणं आवरित्ता दाहिणेणं वीईवयइ, उत्तरपुरत्थिमेणं आवरित्ता दाहिणपच्चत्थिमेणं वीईवयइ, दाहिणपच्चत्थिमेणं आवरित्ता उत्तरपुरत्थिमेणं वीईवयइ, दाहिणपुरत्थिमेणं आवरित्ता उत्तरपच्चत्थिमेणं वीईवयइ, उत्तरपच्चत्थिमेणं आवरित्ता दाहिणपुरत्थिमेणं वीईवयइ, उत्तरपुरत्थिमेणं आवरित्ता दाहिणपच्चत्थिमेणं वीईवयइ १३। ता जया णं राहुदेवे आगच्छमाणे वा गच्छमाणे वा विउव्वमाणे वा परियारेमाणे वा चंदस्स लेस्सं आवरेत्ता वीईवयइ तया णं मणुस्सलोए मणुस्सा वयंति राहुणा चंदे गहिए २, १४। ता जया णं राहुदेवे आगच्छमाणे वा गच्छमाणे वा विउव्वमाणे वा परियारेमाणे वा चंदस्स लेस्सं आवरित्ता पासेण वीईवयइ तया णं मणुस्सलोए मणुस्सा वयंति—एवं खलु चंदेण राहुस्स कुच्छी भिण्णा १५। ता जया णं राहूदेवे आगच्छमाणे वा गच्छमाणे वा विउव्वेमाणे वा परियारेमाणे वा चंदस्स लेस्सं आवरेत्ता पच्चोसक्कइ तया णं मणुस्सलोए मणुस्सा एवं वयंति—राहुणा चंदे वंते राहुणा २, १६। ता जया णं राहुदेवे आगच्छमाणे वा गच्छमाणे वा विउव्वमाणे वा परियारेमाणे वा चंदस्स लेस्सं आवरेत्ता मज्झं-मज्झेणं वीईवयइ तया णं मणुस्सलोयंसि मणुस्सा वयंति—राहुणा चंदे विइयरिए, २,१७। ता जया णं राहुदेवे आगच्छमाणे वा गच्छमाणे वा विउव्वमाणे वा परियारेमाणे वा चंदस्स लेस्सं आवरित्ता अहे सपक्खि सपडिदिसिं चिट्ठइ तया णं मणुस्सलोयंसि मणुस्सा वयंति—राहुणा चंदे घत्थे २, १८। कइविहे णं राहू पण्णत्ते ? दुविहे पण्णत्ते, तंजहा—धुवराहू य पव्वराहू य १९। तत्थ णं जे से धुवराहू से णं बहुलपक्खस्स पडिवए पण्णरसइ भागेणं पण्णरसइ भागं चंदलेस्सं आवरेमाणे आवरेमाणे चिट्ठइ, तंजहा—पढमाए पढमं भागं बितियाए बितियं भागं जाव पण्णरसीए पण्णरसमं भागं, चरमसमए चंदे रत्ते भवई, अवसेससमए चंदे रत्ते विरत्ते य

भवइ २० । तमेव सुक्कपक्खे उवदंसेमाणे उवदंसेमाणे चिट्ठइ, तंजहा—पढमाए पढमं भागं जाव पराणरसीए पराणरसमं भागं, चरिमे समए चंदे विरत्ते भवइ, अवसेससमए चंदे रत्ते य विरत्ते य भवइ २१ । तत्थ णं जे ते पव्व-राहू से जहराणेणं छराहं मासाणं, उक्कोसेणं बायालीसाए मासाणं चंदस्स, अडयालीसाए संवच्छराणं सूरस्स २२ ॥ सू० १०३ ॥ ता से केणट्ठेणं एवं वुच्चति, तंजहा—चंदे ससी २ (आहितेति वदेज्जा) ? ता (चंदस्स णं जोइसिंदस्स जोइसरराणो मियंके विमाणे कंता देवा, कंताओ देवीओ, कंताइं आसण-सयण-खंभभंडमत्तोवगरणाइं अप्पणावि) चंदे णं देवे जोइ-सिंदे जोइसराया सोम्मे कंते सुभगे पियदंसणे सुरूवे ता से एतेणट्ठेणं एवं वुच्चति—(एवं खलु) चंदे ससी चंदे ससी (आहिएति वएज्जा) १ । ता से केणट्ठेणं एवं वुच्चति-कहं ते सूरे आइच्चे २ (आहिएति वएज्जा) ? ता सूराईया णं समयाइ वा आवलियाइ वा आणापाणूइ वा थोवेइ वा जाव उस्सप्पिणी इ वा ओसप्पिणी इ वा से एएणं अट्ठेणं एवं वुच्चति-(एवं खलु) सूरे आइच्चे २ (आहिएति वएज्जा) २ ॥ सूत्रं १०४ ॥ ता चंदस्स णं जोइसिंदस्स जोइसरराणो कइ अग्गमहिसीओ पराणत्ताओ ? चत्तारि अग्गमहिसीओ पराणत्ताओ, तंजहा—चंदप्पभा १, दोसिणाभा २, अच्चिमाली ३, पभंकरा ४, १ । तत्थ णं एगमेगाए देवीए चत्तारि २ एवं चेव पुव्व-भणितं अट्ठारसमे पाहुडे तहा णायव्वं जाव मेहुणवत्तियं २ (जहा हेट्ठा तं चेव जाव णो चेव मेहुणवत्तियं) २ । एवं सूरस्स (वि णेयव्वं) ३ । ता चंदिमसूरिया णं जोइसिंदा जोइसरायाणो केरिसए कामभोगे पच्चणुब्भवमाणा विहरंति ? ता से जहा नामए केई पुरिसे पढमजोव्वणुट्ठाणबलसमत्थे पढमजोव्वणुट्ठाणबलसमत्थाए भारियाए सद्धिं अचिरवत्तविवाहे अत्थत्थी अत्थगवेसणयाए सोलसवासविप्पवसिए, ता से णं तओ लद्धट्ठे कयकज्जे अणहसमग्गे पुणरवि सयंगिहं हव्वमागए राहाए कयबलिकम्मे कयकोउय-

मंगलपायच्छित्ते सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवरपरिहिए अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरे मणुराणं थालीपागसुद्धं अट्ठारसवंजणाउलं भोयणं भुत्ते समाणे तंसि तारिसगंसी वासघरंसि अब्भिंतरतो सचित्तकम्मे बाहिरओ दूमियघट्ठमट्ठे विचित्त-उल्लोय-चिल्लियतले मणिरयणपणासियंधयारे बहुसमसुविभत्तभूमिभाए पंचवण्ण-सरससुरभिमुक्कपुप्फपुंजोवयारकलिते कालागुरुपवरकुंदुरुक्क-तुरुक्क-धूवमघमघंत-गंधुद्धुयाभिरामे सुगंधवरगंधिए गंधवट्टिभूए तंसि तारिसगंसि सयणिज्जंसि सालिंगणवट्टिए उभओबिब्बोयणे दुहओ उण्णए मज्झे णयगंभिरे पण्णत्तगंडबिब्बोयणसुरम्मे गंगापुलिणवालुउद्दालसालिसए उवचियखोमदुगूलपट्टपडिच्छायणे सुविरइयरयत्ताणे रत्तंसुयसंवुडे सुरम्मे आईणगरूय-बूरणवणीय-तूलफासे सुगंधवरकुसुमचुण्ण-सयणोवयारकलिए ता एतारिसयाए सिंगारागारचारुवेसाए संगयगयहसियभणियचिट्ठियसंलावविलास-णिउण-जुत्तोवयारकुसलाए जोव्वणविलासकलिताए अणुरत्ताए अविरत्ताए मणोणुकूलाए भारियाए सद्धिं एगंतरइपसत्ते अण्णत्थ कत्थइ मणं अकुव्वमाणे इट्ठे सद्दफरिसरसरूवगंधे पंचविहे माणुस्सए कामभोगे पच्चणुब्भवमाणे विहरिज्जा, ता से णं पुरिसे विउसमणकालसमयंसि केरिसयं सायासोक्खं पच्चणुब्भवमाणे विहरइ ? तं उरालं णं समणाउसो ! तस्स णं पुरिसस्स कामभोगेहिंतो वाणमंतराणं देवाणं एत्तो अणंतगुणविसिट्ठतराए चेव कामभोगा। वाणमंतराणं देवाणं कामभोगेहिंतो असुरिंदवज्जियाणं भवणवासीणं देवाणं एत्तो अणंतगुणविसिट्ठतरगा चेव कामभोगा। असुरिंदवज्जियाणं भवणवासिणं देवाणं कामभोगेहितो एत्तो अणंतगुणविसिट्ठतरा चेव असुरकुमाराणं इंदभूयाणं देवाणं कामभोगा। असुरकुमाराणं इंदभूयाणं देवाणं कामभोगेहिंतो अणंतगुणविसिट्ठतरा चेव गहगणणक्खत्ततारारूवाणं कामभोगा। गहगणणक्खत्ततारारूवाणं कामभोगेहिंतो अणंतगुणविसिट्ठतरा चेव चंदिमसूरियाणं देवाणं कामभोगा। ता

एरिसए णं चंदिमसूरिया जोइसिंदा जोइसरायाणो कामभोगे पच्चणुभवमाणा विहरंति ४ ॥ सूत्रं १०५ ॥ तत्थ खलु इमे अट्ठासीई महग्गहा पराणत्ता, तंजहा–इंगालए १, वियालए २, लोहियंतक्खे ३, सणिच्छरे ४, आहुणिए ५, पाहुणिए ६, कणे ७, कणए ८, कणकणए ९, कणवियाणए १०, कणगसंताणए ११, सोमे १२, सहिए १३, अस्सासणे १४, कज्जोवए १५, कव्व(त्थु)रए १६, अयकरए १७, दुंदुभए १८, संखे १९, संखणाभे २०, संखवराणाभे २१, कंसे २२, कंसणाभे २३, कंस-वराणाभे २४, णीले २५, णीलोभासे २६, रुप्पी २७, रुप्पोभासे २८, भासे २९, भासरासी ३०, तिले ३१, तिलपुप्फवराणे ३२, दगे ३३, दगवराणे ३४, काए ३५, वे(बं)(कागं)धे ३६, इंदग्गी ३७, धूमकेऊ ३८, हरी ३९, पिंगलए ४०, बुहे ४१, सुक्के ४२, बहस्फई ४३, राहू ४४, अगत्थी ४५, माणवए ४६, कामफासे ४७, धुरे ४८, पमुहे ४९, वियडे ५०, विसंधिकप्पे(ल्लए) ५१, पयल्ले ५२, जडियालए ५३, अरुणे ५४, अग्गिल्लए ५५, काले ५६, महाकाले ५७, सोत्थिए ५८, सोवत्थिए ५९, वद्धमाणगे ६०, पलंबे ६१, णिच्चालोए ६२, णिच्चुज्जोए ६३, सयंपभे ६४, ओभासे ६५, सेयंकरे ६६, खेमंकरे ६७, आभंकरे ६८, पभंकरे ६९, अरए ७०, विरए ७१, असोगे, वीयसोगे य ७२, विमले ७३, विवत्ते (वितते) ७४, विवत्थे ७५, विसाले ७६, साले ७७, सुव्वए ७८, अणियट्टी ७९, एगजडी ८०, दुजडी ८१, करे ८२, करिए ८३, राय ८४, अग्गले ८५, पुप्फे ८६, भावे ८७, केऊ ८८ ॥ सूत्रं १०६ ॥ संगहणी-इंगालए वियालए, लोहियंके सणिच्छरे चेव । आहुणिए पाहुणिए कणग–सनामावि पंचेव ॥ १ ॥ सोमे सहिए आसासणे य कज्जो-वए य कव्बरए । अयकरए दुंदुभए, संख–सनामावि तिन्नेव ॥ २ ॥ तिन्नेव कंसनामा, नीले रुप्पी य हुंति चत्तारि । भास तिल पुप्फवराणे दग-

वराणे कायंबंधे य ॥ ३ ॥ इंदग्गी धूमकेतू, हरि पिंगलए बुधे य सुक्के य। बहस्सइ राहु अगत्थी, माणवए कामफासे य ॥ ४ ॥ धुरए पमुहे वियडे, विसंधिकप्पे तहा पयल्ले य। जडियालए य अरुणे अग्गिल काले महा-काले ॥ ५ ॥ सोत्थिय सोवत्थिय वद्धमाणगे तहा पलंवे य। णिच्चालोए णिच्चुज्जोए, सयंपभे चेव ओभासे ॥ ६ ॥ सेयंकर खेमंकर, आभंकर पभंकरे य बोद्धव्वे। अरए विरए य तहा, असोग तह वीयसोगे य ॥ ७ ॥ विमले वितत विवत्थे, विसाल तह साल सुव्वए चेव। अणियट्टी एगजडी य होइ बियडी य बोद्धव्वे ॥ ८ ॥ कर करिए रायग्गल, बोद्धव्वे पुप्फभावे केऊ य। अट्ठासीइ गहा खलु, नेयव्वा अणुपुव्वीए ॥ ९ ॥ इय एस पागडत्था, अभव्वजणहियय-दुलभा इणमो। उक्कित्तिया भगवती जोइसरा-यस्स पणत्ती ॥ १ ॥ एस गहियावि संती, थद्धे गारवियमाणपडिणीए। अबहुस्सुए ण देया, तव्विवरीए भवे देया ॥ २ ॥ (सद्धा)धिइउट्ठाणुच्छाह-कम्मबलविरिय-पुरिसकारेहिं। जो सिक्खिओवि संतो, अभायणे पक्खि-विज्जाहि ॥ ३ ॥ सो पवयणकुलगण-संघबाहिरो णाणविणय-परिहीणो। अरहंत-थेरगणहरमेरं किर होइ वोलीणो ॥ ४ ॥ तम्हा धिइउट्ठाणुच्छाह-कम्मबलवीरियसिक्खियं नाणं। धारेयव्वं णियमा, ण य अविणएसु दायव्वं ॥ ५ ॥ वीरवरस्स भगवतो, जरमरण-किलेस-दोसरहियस्स। वंदामि विणय-पणतो सोक्खुप्पाए सया पाए ॥ ६ ॥ सूत्रं १०७॥ वीसइमं पाहुडं समत्तं ॥ चंदपन्नत्ती समत्ता ॥

॥ इति विंशतितमं प्राभृतम् ॥ २० ॥

॥ इति श्री चन्द्रप्रज्ञप्तिः समाप्ता ॥

[ग्रन्थाग्रं २२००]

॥

|| अर्हम् ||

|| श्रीमत्सूर्यप्रज्ञप्त्याख्यमुपाङ्गम् ||

|| अथ प्रथमप्राभृते प्रथमं प्राभृतप्राभृतम् ||

—*—

नमः श्रीवीतरागाय || नमो अरिहंताणं || ते णं काले णं ते णं समए णं मिथिला नाम नयरी होत्था रिद्धत्थिमिय-समिद्धा पमुइत जणजाणवया जाव पासादीया एक (४) १ | तीसे णं मिहिलाए नयरीए बहिया उत्तरपुरच्छिमे दिसिभाए एत्थ णं माणिभद्दे णामं चेइए होत्था वण्णओ २ | तीसे णं मिहिलाए जितसत्तू राया, धारिणी देवी, वण्णओ ३ | ते णं काले णं ते णं समए णं तमि माणिभद्दे चेइए सामी समोसढे ४ | परिसा निग्गता, धम्मो कहितो, पडिगया परिसा जाव राजा जामेव दिसिं पादुब्भूए तामेव दिसिं पडिगते ५ || सूत्रं १ || ते णं काले णं ते णं समए णं समणस्स भगवतो महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी इंदभूती णामे(मं) अणगारे गोतमे गोत्तेणं सत्तुस्सेहे समचउरंससंठाणसंठिए वज्जरिसहनाराय-संघयणे जाव एवं वयासी || सूत्रं २ || कइ मंडलाइ वच्चइ १ तिरिच्छा किं च गच्छइ २ | ओभासइ केवइयं ३ सेयाइ किं ते संठिई ४ || १ || कहिं पडिहया लेसा ५, कहिं ते ओयसंठिई ६ | के सूरियं वरयते ७, कहं ते उदयसंठिई ८ || २ || कह कट्ठा पोरिसीच्छाया ९, जोगे किं ते व आहिए १० | किं ते संवच्छरेणादी ११, कइ संवच्छराइ य १२ || ३ || कहं चंदमसो वुड्ढी १३, कया ते दोसिणा बहू १४ | के सिग्घगई वुत्ते १५, कहं दोसिणलक्खणं १६ ||४|| चयणोववाय १७, उच्चत्ते १८, सूरिया कइ आहिया १९ | अणुभावे के व संवुत्ते २०, एवमेयाइं वीसई ||५|| सू० ३ ||

वड्ढोवड्ढी मुहुत्ताण १ मद्धमंडलसंठिई २ । के ते चिन्नं परियरइ ३ अंतरं किं चरंति य ४ ॥ ६ ॥ उग्गाहइ केवइयं ५, केवतियं च विकंपइ ६ । मंडलाण य संठाणे ७, विक्खंभो ८, अट्ठ पाहुडा ॥ ७ ॥ सूत्रं ४ ॥ छप्पंच य सत्तेव य अट्ठ तिन्नि य हवंति पडिवत्ती । पढमस्स पाहुडस्स हवंति एयाउ पडिवत्ती ॥ ८ ॥ सूत्रं ५ ॥ पडिवत्तीओ उदए, तह अत्थमणेसु य । भियघाए कराणकला, मुहुत्ताण गतीति य ॥ ९ ॥ निक्खममाणे सिग्घगई पविसंते मंदगईइ य । चुलसीइसयं पुरिसाणं, तेसिं च पडिवत्तीओ ॥ १० ॥ उदयम्मि अट्ठ भणिया भेदग्घाए दुवे य पडिवत्ती । चत्तारि मुहुत्तगईए हुंति तइयंमि पडिवत्ती ॥ ११ ॥ सूत्रं ६ ॥ आवलिय १ मुहुत्तग्गे २, एवंभागा य ३ जोगस्सा ४ । कुलाइं ५ पुन्नमासी ६ य, सन्निवाए ७ य संठिई ८ ॥ १२ ॥ तार(य)ग्गं च ९ नेता य १०, चंदमग्गत्ति ११ यावरे । देवताण य अज्झयणे १२, मुहुत्ताणं नामया इय १३ ॥ १३ ॥ दिवसा राइ वुत्ता य १४, तिहि १५ गोत्ता १६ भोयणाणि १७ य । आइच्चचार १८ मासा १९ य, पंच संवच्छरा इय २० ॥ १४ ॥ जोइसस्स य दाराइं २१, नक्खत्तविजएऽविय २२ । दसमे पाहुडे एए, बावीसं पाहुडपाहुडा ॥ १५ ॥ ॥ सूत्रं ७ ॥ ता कहं ते वड्ढोवड्ढी मुहुत्ताणं आहितेति वदेज्जा ? ता अट्ठएकूणवीसे मुहुत्तसते सत्तावीसं च सत्तसट्ठिभागे मुहुत्तस्स आहितेति वदेज्जा ॥ सूत्रं ८ ॥ ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतरातो मंडलातो सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति सव्वबाहिरातो मंडलातो सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति, एस णं अद्धा केवतियं रातिंदियग्गेणं आहितेत्ति वदेज्जा ?, ता तिण्णि छावट्ठे रातिंदियसए रातिंदियग्गेणं आहितेति वदेज्जा ॥ सूत्रं ९ ॥ ता एताए अद्धाए सूरिए कति मंडलाइं चरति ?, ता चुलसीयं मंडलसतं चरति, बासीतिं, मंडलसतं दुक्खुत्तो चरति, तंजहा– णिक्खममाणे चेव पवेसमाणे चेव, दुवे य खलु मंडलाइं सइं चरति,

तंजहा–सव्वब्भंतरं चेव मंडलं सव्वबाहिरं चेव मंडलं ॥ सूत्रं १० ॥ जइ खलु तस्सेव आदिच्चस्स संवच्छरस्स सयं अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवति सइं अट्ठारसमुहुत्ता राती भवति सइं दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवति सइं दुवालसमुहुत्ता राती भवति १। पढमे छम्मासे अत्थि अट्ठारसमुहुत्ता राती भवति णत्थि अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे, अत्थि दुवालसमुहुत्ते दिवसे णत्थि दुवालसमुहुत्ता राती भवति २। दोच्चे छम्मासे अत्थि अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे, णत्थि अट्ठारसमुहुत्ता राती, अत्थि दुवालसमुहुत्ता राती णत्थि दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवति ३। पढमे छम्मासे दोच्चे छम्मासे वा णत्थि पराणरसमुहुत्ते दिवसे भवति, णत्थि पराणरसमुहुत्ता राती भवति ४। तत्थ णं कं हेतुं वदेज्जा ?, ता अयराणं जंबुद्दीवे २ सव्वदीवसमुद्दाणं सव्वब्भंतराए जाव परिक्खेवेणं पराणत्ते ५। ता जता णं सूरिए सव्वब्भंतरमंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति तदा णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवति जहरिणाया दुवालसमुहुत्ता राती भवति ६। से निक्खममाणे सूरिए नवं संवच्छरं अयमाणे पढमंसि अहोरत्तंसि अब्भिंतराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति ७। ता जया णं सूरिए अब्भिंतराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति तदा णं अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवति दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणे, दुवालसमुहुत्ता राती भवति दोहि एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अधिया ८। से णिक्खममाणे सूरिए दोच्चंसि अहोरत्तंसि अब्भंतरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति ९। ता जया णं सूरिए अब्भिंतरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति तदा णं अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवति चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणे दुवालसमुहुत्ता राती भवति चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिया १०। एवं खलु एएणं उवाएणं णिक्खममाणे सूरिए तदाणंतरा तयाणंतरं मंडलातो मंडलं संकममाणे २ दो दो एगट्ठीभागमुहुत्ते एगमेगे मंडले दिवसे खेत्तस्स णिवुड्ढेमाणे २ रतणिक्खेत्तस्स अभिवुड्ढेमाणे २ सव्वबाहिरमंडलं

उवसंकमित्ता चारं चरति ११ । ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतरातो मंडलाओ सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति तता णं सव्वब्भंतरमंडलं पणिधाय एगेणं तेसीतेणं राइंदियसतेणं तिण्णि छावट्ठे एगट्ठिभागमुहुत्तसते दिवसखेत्तस्स णिवुड्ढित्ता रतणिक्खेत्तस्स अभिवुड्ढित्ता चारं चरति, तदा णं उत्तमकट्ठपत्ता उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राती भवति, जहण्णए बारसमुहुत्ते दिवसे भवति, एस णं पढमे छम्मासे एस णं पढमस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे १२ । से पविसमाणे सूरिए दोच्चं छम्मासं अ(आ)यमाणे पढमंसि अहोरत्तंसि बाहिराणंतरं मंडलं उवसंकमेत्ता चारं चरति १३ । ता जया णं सूरिए बाहिराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति तदा णं अट्ठारसमुहुत्ता राती भवति दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहि ऊणा, दुवालस मुहुत्ते दिवसे भवति दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिए १४ । से पविसमाणे सूरिए दोच्चंसि अहोरत्तंसि बाहिरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति १५ । ता जया णं सूरिए बाहिरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति तदा णं अट्ठारसमुहुत्ता राती भवति चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणा, दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवति चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिए १६ । एवं खलु एतेणुवाएणं पविसमाणे सूरिए तदाणंतरातो मंडलातो तयाणंतरं मंडलं संकममाणे दो दो एगट्ठिभागमुहुत्ते एगमेगे मंडले रतणिखेत्तस्स णिवुड्ढेमाणे २ दिवसखेत्तस्स अभिवड्ढेमाणे २ सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति १७ । ता जया णं सूरिए सव्वबाहिराओ मंडलाओ सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति तदा णं सव्वबाहिरं मंडलं पणिधाय एगेणं तेसीएणं राइंदियसतेणं तिन्नि छावट्ठे एगट्ठिभागमुहुत्तसते रयणिखेत्तस्स निवुड्ढित्ता दिवसखेत्तस्स अभिवड्ढित्ता चारं चरति तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवति, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राती भवति १८ । एस णं दोच्चे छम्मासे एस णं दुच्चस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे, एस णं आदिच्चे संवच्छरे एस णं आदिच्चस्स संवच्छरस्स

पज्जवसाणे ११ । इति खलु तस्सेवं आदिच्चस्स संवच्छरस्स सइं अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवति, सइं अट्ठारसमुहुत्ता राती भवति २० । सइं दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवति सइं दुवालसमुहुत्ता राती भवति २१ । पढमे छम्मासे अत्थि अट्ठारसमुहुत्ता राइ णत्थि अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे २२ । अत्थि दुवालसमुहुत्ते दिवसे नत्थि दुवालसमुहुत्ता राई २३ । दोच्चे वा छम्मासे अत्थि अट्ठारस-मुहुत्ते दिवसे भवति णत्थि अट्ठारसमुहुत्ता राई २४ । अत्थि दुवालसमुहुत्ता राई नत्थि दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवति २५ । पढमे वा छम्मासे दोच्चे वा छम्मासे णत्थि पराणरसमुहुत्ते दिवसे भवति, णत्थि पराणरसमुहुत्ता राई भवति २६ । णणत्थ रातिदियाणं वड्ढोवड्ढीए मुहुत्ताण वा चयोवचएणं; णणत्थ वा अणुवायगईए, गाधाओ भाणितव्वाओ २७ ॥ सूत्रं ११ ॥ पढमस्स पाहुडस्स पढमं पाहुड पाहुडं ॥

॥ इति प्रथमप्राभृते प्रथमं प्राभृत-प्राभृतम् ॥ १-१ ॥

॥ अथ प्रथमप्राभृते द्वितीयं प्राभृतप्राभृतम् ॥

ता कहं ते अद्धमंडलसंठिती आहिताति वदेज्जा ?, तत्थ खलु इमे दुवे अद्धमंडलसंठिती पराणत्ता, तंजहा—दाहिणा चेव अद्धमंडलसंठिती उत्तरा चेव अद्धमंडलसंठिती २ । ता कहं ते दाहिणअद्धमंडलसंठिती आहिताति वदेज्जा ?, ता अयराणं जंबुद्दीवे दीवे सव्वदीवसमुद्दाणं जाव परिक्खेवेणं ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतरं दाहिणं अद्धमंडलसंठितिं उवसंकमित्ता चारं चरति तदा णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवति जहरिणाया दुवालसमुहुत्ता राती भवति २ । से णिक्खममाणे सूरिए णवं संवच्छरं अयमाणे पढमंसि अहोरत्तंसि दाहिणाए अंतराए भागाते तस्सादिपदेसाते अब्भिंतराणंतरं उत्तरं अद्धमंडलं संठितिं उवसंकमित्ता चारं चरति ३ । ता जता णं सूरिए अब्भिंतराणंतरं उत्तरं अद्धमंडलसंठितिं उवसंकमित्ता

चारं चरति तदा णं अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवति दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणे, दुवालसमुहुत्ता राती दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अधिया ४। से णिक्खममाणे सूरिए दोच्चंसि अहोरत्तंसि उत्तराए अंतराए भागाते तस्सादिपदेसाए अब्भिंतरं तच्चं दाहिणं अद्धमंडलं संठिति उवसंकमित्ता चारं चरति ५। ता जया णं सूरिए अब्भिंतरं तच्चं दाहिणं अद्धमंडलं संठिति उवसंकमित्ता चारं चरति तदा णं अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवति चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणे दुवालसमुहुत्ता राई भवति चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहि अधिया ६। एवं खलु एएणं उवाएणं णिक्खममाणे सूरिए तदणंतरातो तदाणंतरंसि तंसि २ देसंसि तं तं अद्धमंडलसंठिति संकममाणे २ दाहिणाए २ अंतराए भागाते तस्सादिपदेसाते, सव्वबाहिरं उत्तरं अद्धमंडलसंठिति उवसंकमित्ता चारं चरति ७। ता जया णं सूरिए सव्वबाहिरं उत्तरं अद्धमंडलसंठिति उवसंकमित्ता चारं चरति तदा णं उत्तमकट्ठपत्ता उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई भवति, जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवति ८। एस णं पढमे छम्मासे एस णं पढमछम्मासस्स पज्जवसाणे ९। से पविसमाणे सूरिए दोच्चं छम्मासं अयमाणे पढमंसि अहोरत्तंसि उत्तराते अंतरभागाते तस्सादिपदेसाते बाहिराणंतरं दाहिणं अद्धमंडलसंठिति उवसंकमित्ता चारं चरति १०। ता जया णं सूरिए बाहिराणंतरं दाहिणअद्धमंडलसंठिति उवसंकमित्ता चारं चरति तदा णं अट्ठारसमुहुत्ता राई भवति दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणा दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवति दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिए ११। से पविसमाणे सूरिए दोच्चंसि अहोरत्तंसि दाहिणाते अंतराए भागाते तस्सादिपदेसाए बाहिरंतरं तच्चं उत्तरं अद्धमंडलसंठिति उवसंकमित्ता चारं चरति १२। ता जया णं सूरिए बाहिरं तच्चं उत्तरं अद्धमंडलसंठिति उवसंकमित्ता चारं चरति तदा णं अट्ठारसमुहुत्ता राई भवति चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणा दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवति चउहि एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं

अधिये १३ । एवं खलु एतेणं उवाएणं पविसमाणे सूरिए तदाणंतराउ तदाणंतरं तंसि २ देसंसि तं तं अद्धमंडलसंठितिं संकममाणे २ उत्तराए अंतराभागाते तस्सादिपदेसाए सव्वब्भंतरं दाहिणं अद्धमंडलसंठिति उवसंकमित्ता चारं चरति १४ । ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतरं दाहिणं अद्धमंडलसंठितिं उवसंकमित्ता चारं चरति तदा णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहूत्ते दिवसे भवति, जहरिणया दुवालसमुहुत्ता राई भवति १५ । एस णं दोच्चे छम्मासे, एस णं दोच्चस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे, एस णं आदिच्चे संवच्छरे, एस णं आदिच्चसंवच्छरस्स पज्जवसाणे १६ ॥ सूत्रं १२ ॥ ता कहं ते उत्तरा अद्धमंडलसंठिती आहिताति वदेज्जा ?, ता अयं णं जंबुद्दीवे दीवे सव्वदीव जाव परिक्खेवेणं, ता जता णं सूरिए सव्वब्भंतरं उत्तरं अद्धमंडलसंठिति उवसंकमित्ता चारं चरति तदा णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवति जहरिणया दुवालसमुहुत्ता राई भवति जहा दाहिणा तहा चेव णवरं उत्तरट्ठिओ अब्भितराणंतरं दाहिणं उवसंकमइ, दाहिणातो अब्भितरं तच्चं उत्तरं उवसंक्रमति १ । एवं खलु एएणं उवाएणं जाव सव्वबाहिरं दाहिणं उवसंक्रमति २ । सव्वबाहिरातो बाहिराणंतरं उत्तरं उवसंकमति उत्तरातो बाहिरं तच्चं दाहिणं तच्चातो दाहिणातो संकममाणे २ जाव सव्वब्भंतरं उवसंकमति, तहेव ३ । एस णं दोच्चे छम्मासे एस णं दोच्चस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे, एस णं आदिच्चे संवच्छरे, एस णं आदिच्चस्स संवच्छरस्स पज्जवसाणे, गाहाओ ४ ॥ सूत्रं १३ ॥ पढमे बीयं पाहुडपाहुडं समत्तं ॥ १-२ ॥

—

॥ अथ प्रथमप्राभृते तृतीयं प्राभृतप्राभृतम् ॥

ता के ते चिन्नं पडिचरति आहितेति वदेज्जा ?, तत्थ खलु इमे दुवे सूरिया पराणत्ता, तंजहा—भारहे चेव सूरिए एरवए चेव सूरिए, ता एते णं दुवे सूरिया पत्तेयं २ तीसाए २ मुहुत्तेहिं एगमेगं अद्धमंडलं चरंति, सट्ठीए २ मुहुत्तेहिं एगमेगं मंडलं संघातंति १। ता णिक्खममाणे खलु एते दुवे सूरिया णो अराणमराणस्स चिराणं पडिचरंति, पविसमाणा खलु एते दुवे सूरिया अराणमराणस्स चिराणं पडिचरंति, तं सतमेगं चोतालं, तत्थ को हेऊ वदेज्जा ?, ता अयराणं जंबुद्दीवे २ जाव परिक्खेवेणं २। तत्थ णं अयं भारहए चेव सूरिए जंबुद्दीवस्स २ पाईणपडिणायत-उदीण-दाहिणायताए जीवाए मंडलं चउवीसएणं सतेणं छेत्ता दाहिणपुरत्थिमिल्लंसि चउभागमंडलंसि बाणउतिय-सूरियगताइं जाइं सूरिए अप्पणा चेव चिराणाइं पडिचरति ३। उत्तरपच्चत्थिमेल्लंसि चउभागमंडलंसि एकाणउतिं सूरिय-गताइं (सयंमताइं) जाइं सूरिए अप्पणा चेव चिराणाइं पडिचरति ४। तत्थ अयं भारहे सूरिए एरवतस्स सूरियस्स जंबुद्दीवस्स २ पाईणपडिणायताए उदीणदाहिणायताए जीवाए मंडलं चउवीसएणं सतेणं छेत्ता उत्तरपुरत्थि-मिल्लंसि चउभागमंडलंसि बाणउतिं सूरियमताइं जाव सूरिए परस्स चिराणाइं पडिचरति ५। दाहिणपच्चत्थिमेल्लंसि चउब्भागमंडलंसि एकूण-णउतिं सूरियगताइं जाइं सूरिए परस्स चेव चिराणाइं पडिचरति ६। तत्थ अयं एरवए सूरिए जंबुद्दीवस्स २ पाईणपडिणायताए उदीणदाहिणायताए जीवाए मंडलं चउवीसएणं सतेणं छेत्ता उत्तरपुरत्थिमिल्लंसि चउब्भाग-मंडलंसि बाणउतिं सूरियगयाइं जाव सूरिए अप्पणो चेव चिराणाइं पडियरति ७। दाहिणपुरत्थिमिल्लंसि चउभागमंडलंसि एकाणउतिं सूरिय-मताइं जाव सूरिए अप्पणा चेव चिराणाइं पडिचरति ८। तत्थ णं एयं एरवतिए सूरिए भारहस्स सूरियस्स जंबुद्दीवस्स पाईणपडिणायताए उदीण-

दाहिणायताए जीवाए मंडलं चउवीसएणं सतेणं छित्ता दाहिणपच्चत्थिमेल्लंसि चउभागमंडलंसि बाणउतिं सूरियगताइं जाइं सूरिए परस्स चिण्णाइं पडिचरति ९। उत्तरपुरत्थिमेल्लंसि चउभागमंडलंसि एक्काणउतिं सूरियगताइं जाइं सूरिए परस्स चेव चिण्णाइं पडिचरति १०। ता निक्खममाणा खलु एते दुवे सूरिया णो अण्णमण्णस्स चिण्णं पडिचरंति, पविसमाणा खलु एते दुवे सूरिया अण्णमण्णस्स चिण्णं पडिचरंति, तंजहा—सतमेगं चोतालं ११। गाहाओ १२ ॥ सूत्रं १४ ॥ पढमे तइयं पाहुडपाहुडं समत्तं ॥ १-३ ॥

॥ अथ प्रथमप्राभृते चतुर्थं प्राभृतप्राभृतम् ॥

ता केवइयं एए दुवे सूरिया अण्णमण्णस्स अंतरं कट्टु चारं चरंति आहिताति वदेज्जा ?, तत्थ खलु इमातो छ पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ, तत्थ एगे एवमाहंसु—ता एगं जोयणसहस्सं एगं च तेत्तीसं जोयणसतं अण्णमण्णस्स अंतरं कट्टु सूरिया चारं चरंति आहिताति वदेज्जा, एगे एवमाहंसु १, एगे पुण एवमाहंसु—ता एगं जोयणसहस्सं एगं चउतीसं जोयणसयं अन्नमन्नस्स अंतरं कट्टु सूरिया चारं चरंति आहियत्ति वइज्जा, एगे एवमाहंसु २, एगे पुण एवमाहंसु—ता एगं जोयणसहस्सं एगं च पणतीसं जोयणसयं अण्णमण्णस्स अंतरं कट्टु सूरिया चारं चरंति आहिताति वदेज्जा, एगे एवमाहंसु ३, एगे पुण एवं माहंसु-ता एगं समुद्दं अण्णमण्णस्स अंतरं कट्टु ४, एगे पुण एवमाहंसु—दो दीवे दो समुद्दे अण्णमण्णस्स अंतरं कट्टु सूरिया चारं चरंति आहियाति वदेज्जा, एगे एवमाहंसु ५, एगे पुण एवमाहंसु—तिण्णि दीवे तिण्णि समुद्दे अण्णमण्णस्स अंतरं कट्टु सूरिया चारं चरंति आहियाति वएज्जा, एगे एवमाहंसु ६, वयं पुण एवं वयामो, ता पंच पंच जोयणाइं पणतीसं च एगट्ठिभागे जोयणस्स एगमेगे मंडले

अणणमणस्स अंतरं अभिवड्ढेमाणा वा निवड्ढेमाणा वा सूरिया चारं चरंति आहियाति वदेज्जा १। तत्थ णं को हेऊ आहिताति वदेज्जा ?, ता अयण्णं जंबुद्दीवे २ जाव परिक्खेवेणं पण्णत्ते, ता जया णं एते दुवे सूरिया सव्वब्भंतरमंडलं उवसंकमित्ता चारं चरंति तदा णं णवणउतिजोयणसहस्साइं छच्चत्ताले जोयणसते अणणमणस्स अंतरं कट्टु चारं चरंति आहिताति वदेज्जा २। तता णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवति, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवति, ते निक्खममाणा सूरिया णवं संवच्छरं अयमाणा पढमंसि अहोरत्तंसि अब्भिंतराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरंति ३। ता जता णं एते दुवे सूरिया अब्भिंतराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरंति तदा णं नवनवतिं जोयणसहस्साइं छच्च पणताले जोयणसते पणतीसं च एगट्ठिभागे जोयणस्स अणणमणस्स अंतरं कट्टु चारं चरंति आहिताति वदेज्जा ४। तता णं अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवति दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणे दुवालसमुहुत्ता राती भवति दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अधिया ५। ते णिक्खममाणा सूरिया दोच्चंमि अहोरत्तंसि अब्भिंतरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरंति ता जता एते दुवे सूरिया अब्भिंतरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरंति तया णं नवनवइं जोयणसहस्साइं छच्चइक्कावण्णे जोयणसए नव य एगट्ठिभागे जोयणस्स अणणमणस्स अंतरं कट्टु चारं चरंति आहियत्ति वइज्जा, तदा णं अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणे दुवालसमुहुत्ता राई भवइ चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अधिया ६। एवं खलु एतेणुवाएणं णिक्खममाणा एते दुवे सूरिया ततोणंतरातो तदाणंतरं मंडलातो मंडलं संकममाणा २ पंच २ जोयणाइं पणतीसं च एगट्ठिभागे जोयणस्स एगमेगे मंडले अणणमणस्स अंतरं अभिवड्ढेमाणा २ सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति ७। ता जया णं एते दुवे सूरिया सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरंति तता णं

एगं जोयणसतमहस्सं छच्च सट्ठे जोयणसते अरणमरणस्स अंतरं कट्टु चारं चरति ८। तता णं उत्तमकट्ठपत्ता उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ, जहरणए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवति ९। एस णं पढमे छम्मासे एस णं पढमस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे १०। ते पविसमाणा सूरिया दोच्चं छम्मासं अयमाणा पढमंसि अहोरत्तंसि बाहिराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरंति ११। ता जया णं एते दुवे सूरिया बाहिराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरंति तदा णं एगं जोयणसयसहस्सं छच्च चउप्पणे जोयणसते छव्वीसं च एगट्ठिभागे जोयणस्स अरणमरणस्स अंतरं कट्टु चारं चरंति आहिताति वदेज्जा १२। तदा णं अट्ठारसमुहुत्ता राई भवई दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणा दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवति दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिए १३। ते पविसमाणा सूरिया दोच्चंसि अहोरत्तंसि बाहिरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरंति १४। ता जता णं एते दुवे सूरिया बाहिरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरंति तता णं एगं जोयणसयसहस्सं छच्च अडयाले जोयणसते बावरणं च एगट्ठिभागे जोयणस्स अरणमरणस्स अंतरं कट्टु चारं चरंति तता णं अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणा दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवति चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिए १५। एवं खलु एतेणुवाएणं पविसमाणा एते दुवे सूरिया ततोऽणंतराओ तदाणंतरं मंडलाओ मंडलं संकममाणा पंच २ जोयणाइं पणतीसे एगट्ठिभागे जोयणस्स एगमेगे मंडले अरणमरणस्संतरं णिवुड्ढेमाणा २ सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरंति १६। जया णं एते दुवे सूरिया सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरंति तता णं णवणउति जोयणसहस्साइं छच्च चत्ताले जोयणसते अरणमरणस्स अंतरं कट्टु चारं चरंति १७। तता णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवति, जहरिणया दुवालसमुहुत्ता राई भवति १८। एस णं दोच्चे छमासे एस णं दोच्चस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे

एस णं आइच्चे संवच्छरे, एस णं आइच्चसंवच्छरस्स पज्जवसाणे ११ ।
॥ सूत्रं १५ ॥ पढमे चउत्थं पाहुडपाहुडं समत्तं ॥ १-४ ॥

॥ अथ प्रथमप्राभृते पञ्चमं प्राभृतप्राभृतम् ॥

ता केवतियं ते दीवं समुद्दं वा ओगाहित्ता सूरिए चारं चरति, आहिताति वदेज्जा ?, तत्थ खलु इमाओ पंच पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ–एगे एवमाहंसु ता एगं जोयणसहस्सं एगं च तेत्तीसं जोयणसतं दीवं वा समुद्दं वा ओगाहित्ता सूरिए चारं चरति, एगे एवमाहंसु १, एगे पुण एवमाहंसु–ता एगं जोयणसहस्सं एगं चउत्तीसं जोयणसयं दीवं वा समुद्दं वा ओगाहित्ता सूरिए चारं चरति, एगे एवमाहंसु २, एगे पुण एवमाहंसु–ता एगं जोयणसहस्सं एगं च पणतीसं जोयणसतं दीवं वा समुद्दं वा ओगाहित्ता सूरिए चारं चरति, एगे एवमाहंसु ३, एगे पुण एवमाहंसु–ता अवड्ढं दीवं वा समुद्दं वा ओगाहित्ता सूरिए चारं चरति, एगे एवमाहंसु ४, एगे पुण एवामाहंसु–ता नो किंचि एगं जोयणसहस्सं एगं तेत्तीसं जोयणसतं दीवं वा समुद्दं वा ओगाहित्ता सूरिए चारं चरति ५, १ । तत्थ जे ते एवमाहंसु ता एगं जोयणसहस्सं एगं तेत्तीसं जोयणसतं दीवं वा समुद्दं वा उग्गाहित्ता सूरिए चारं चरति, ते एवमाहंसु, जता णं सूरिए सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति तया णं जंबुद्दीवं एगं जोयणसहस्सं एगं च तेत्तीसं जोयणसतं ओगाहित्ता सूरिए चारं चरति, तता णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवति जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवई, ता जया णं सूरिए सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं लवणसमुद्दं एगं जोयणसहस्सं एगं च तेत्तीसं जोयणसयं ओगाहित्ता चारं चरइ, तया णं लवणसमुद्दं एगं जोयणसहस्सं एगं च तेत्तीसं जोयणसयं ओगाहित्ता चारं चरइ, तया णं

उत्तमकट्ठपत्ता उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई भवति, जहरिणए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ २ । एवं चोत्तीसेऽवि जोयणसतं, एवं पणतीसं जोयणसतं, पणतीसेऽवि एवं चेव भाणियव्वं ३ । तत्थ जे ते एवमाहंसु ता अवड्ढं दीवं वा समुद्दं वा ओगाहित्ता सूरिए चारं चरति, ते एवमाहंसु—जता णं सूरिए सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति, तता णं अवड्ढं जंबुद्दीवं २ ओगाहित्ता चारं चरति, तता णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवति, जहरिणया दुवालसमुहुत्ता राई भवति, एवं सव्वबाहिरएवि, णवरं अवड्ढं लवणसमुद्दं, तता णं राइंदियं तहेव ४ । तत्थ जे ते एवमाहंसु—ता णो किञ्चि दीवं वा समुद्दं वा ओगाहित्ता सूरिए चारं चरति, ते एवमाहंसु—ता जता णं सूरिए सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति तता णं णो किंचि दीवं वा समुद्दं वा ओगाहित्ता सूरिए चारं चरति तता णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवति, तहेव एवं सव्वबाहिरए मंडले, णवरं णो किंचि लवणसमुद्दं ओगाहित्ता चारं चरति, रातिंदियं तहेव, एगे एवमाहंसु ५ ॥ सू० १६ ॥ वयं पुण एवं वदामो, ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति, तता णं जंबुद्दीवं असीतं जोयणसतं ओगाहित्ता चारं चरति, तदा णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवति, जहरिणया दुवालसमुहुत्ता राई भवति १ । एवं सव्वबाहिरेवि, णवरं लवणसमुद्दं तिरिण तीसे जोयणसते ओगाहित्ता चारं चरति, तता णं उत्तमकट्ठपत्ता उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ जहरणए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवति २ । गाथाओ भाणितव्वाओ ३ ॥ सूत्रं १७ ॥ पढमस्स पंचमं पाहुडपाहुडं ॥ १—५ ॥

॥ अथ प्रथमप्राभृते षष्ठं प्राभृतप्राभृतम् ॥

ता केवतियं ते एगमेगेणं रातिंदिएणं विकंपइत्ता २ सूरिए चारं चरति आहितेत्ति वदेज्जा ?, तत्थ खलु इमाओ सत्त पडिवत्तीओ पराणत्ताओ, तत्थेगे एवमाहंसु–ता दो जोयणाइं अद्धदुचत्तालीसं तेसीतसयभागे जोयणस्स एगमेगेणं रातिंदिएणं विकंपइत्ता २ सूरिए चारं चरति, एगे एवमाहंसु १, एगे पुण एवमाहंसु–ता अड्ढातिज्जाइं जोयणाइं एगमेगेणं राइंदिएणं विकंपइत्ता २ सूरिए चारं चरति, एगे एवमाहंसु २, एगे पुण एवमाहंसु ता तिभागूणाइं तिन्नि जोयणाइं एगमेगेणं राइंदिएणं विकंपइत्ता २ सूरिए चारं चरति, एगे एवमाहंसु ३, एगे पुण एवमाहंसु–ता तिरिण जोयणाइं अद्धसीतालीसं च तेसीतिसयभागे जोयणस्स एगमेगेणं राइंदिएणं विकंपइत्ता २ सूरिए चारं चरति, एगे एवमाहंसु ४, एगे पुण एवमाहंसु–ता अद्धुट्ठाइं जोयणाइं एगमेगेणं राइंदिएणं विकंपइत्ता २ सूरिए चारं चरति, एगे एवमाहंसु ५, एगे पुण एवमाहंसु, ता चउब्भागूणाइं चत्तारि जोयणाइं एगमेगेण राइंदिएणं विकंपइत्ता २ सूरिए चारं चरति एगे एवमाहंसु ६, एगे पुण एवमाहंसु–ता चत्तारि जोयणाइं अद्धबावरणं च तेसीतिसतभागे जोयणस्स एगमेगेणं राइंदिएणं विकंपइत्ता २ सूरिए चारं चरति एगे एवमाहंसु ७, १ । वयं पुण एवं वदामो ता दो जोयणाइं अडतालीसं च एगट्ठिभागे जोयणस्स एगमेगं मंडलं एगमेगेणं राइंदिएणं विकंपइत्ता २ सूरिए चारं चरति २ । तत्थ णं को हेतू इति वदेज्जा ?, ता अयरणं जंबुद्दीवे २ जाव परिक्खेवेणं पन्नत्ते ३ । ता जता णं सूरिए सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति तता णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवति, जहरिणया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ ४ । से णिक्खममाणे सूरिए णवं संवच्छरं अयमाणे पढमंसि अहोरत्तंसि अब्भितराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति ५ । ता जया णं सूरिए अब्भितराणंतरं मंडलं

उवसंकमित्ता चारं चरति तदा णं दो जोयणाइं अडयालीसं च एगट्ठिभागे जोयणस्स एगेणं राइंदिएणं विकंपइत्ता चारं चरति ६। तता णं अट्ठारस-मुहुत्ते दिवसे भवति दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणे दुवालसमुहुत्ता राई भवति दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिया ७। से णिक्खममाणे सूरिए दोच्चंसि अहोरत्तंसि अब्भितरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति ८। ता जया णं सूरिए अब्भितरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति तता णं पणतीसं च एगट्ठिभागे जोयणस्स दोहिं राइंदिएहिं विकंपइत्ता चारं चरति ९। तता णं अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवति चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणे दुवालसमुहुत्ता राई भवति चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अधिया १०। एवं खलु एतेणं उवाएणं खिक्खममाणे सूरिए तताणंतराओ तदाणंतरं मंडलातो मंडलं संकममाणे २ दो २ जोयणाइं अडतालीसं च एगट्ठिभागे जोयणस्स एगमेगं मंडलं एगमेगेणं राइंदिएणं विकंपमाणे २ सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति ११। ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतरातो मंडलातो सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति तता णं सव्वब्भंतरं मंडलं पणिहाय एगेणं तेसीतेणं राइंदियसतेणं पंचदसुत्तरजोयणसते विकंप-इत्ता चारं चरति १२। तता णं उत्तमकट्ठपत्ता उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवति १३। एस णं पढमे छम्मासे, एस णं पढमछम्मासस्स पज्जवसाणे १४। से य पविसमाणे सूरिए दोच्चं छम्मासं अयमाणे पढमंसि अहोरत्तंसि बाहिराणंतरं मंडलं उवसंक-मित्ता चारं चरति १५। ता जता णं सूरिए बाहिराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति तया णं दो दो जोयणाइं अडयालीसं च एगट्ठिभागे जोयणस्स एगेणं राइंदिएणं विकंपइत्ता चारं चरति १६। तता णं अट्ठारसमुहुत्ता राई भवति, दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणे दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवति दोहिं एगट्ठिभागेहिं मुहुत्तेहि अहिए १७। से पविसमाणे सूरिए दोच्चंसि अहो-

रत्तंसि बाहिरतच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति १८ । ता जया णं सूरिए बाहिरतच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति तया णं सूरिए बाहिरतच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति १९ । तया णं पंच जोयणाइं पणतीसं च एगट्ठिभागे जोयणस्स दोहिं राइंदिएहिं विकंपइत्ता चारं चरति, राइंदिए तहेव २० । एवं खलु एतेणुवाएणं पविसमाणे सूरिए ततोऽणंतरातो तयाणंतरं मंडलाओ मंडलं संकममाणे २ दो जोयणाइं अडयालीसं च एगट्ठिभागे जोयणस्स एगमेगेणं राइंदिएणं विकंपमाणे २ सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति २१ । ता जया णं सूरिए सव्वबाहिरातो मंडलातो सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति तता णं सव्वबाहिरं मंडलं पणिधाय एगेणं तेसीएणं राइंदियसतेणं पंचदसुत्तरे जोयणसते विकंपइत्ता चारं चरति २२ । तता णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवति, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ २३ । एस णं दोच्चे छम्मासे एस णं दोच्चस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे, एस णं आदिच्चे संवच्छरे एस णं आदिच्चस्स संवच्छरस्स पज्जवसाणे २४ ॥ सूत्रं १८ ॥ पढमे छट्ठं पाहुडपाहुडं ॥ १-६ ॥

॥ अथ प्रथमप्राभृते सप्तमं प्राभृतप्राभृतम् ॥

ता कहं ते मंडलसंठिती आहितातिवदेज्जा ?, तत्थ खलु इमातो अट्ठ पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ, तत्थेगे एवमाहंसु–ता सव्वावि मंडलवता समचउरंससंठाणसंठिता पण्णत्ता एगे एवमाहंसु १, एगे पुण एवमाहंसु, ता सव्वावि णं मंडलवता विसमचउरंससंठाणसंठिया पण्णत्ता एगे एवमाहंसु २, एगे पुण एवमाहंसु सव्वावि णं मंडलवया समचउकोणसंठिता पण्णत्ता एगे एवमाहंसु ३, एगे पुण एवमाहंसु सव्वावि मंडलवता विसमचउकोणसंठिया पण्णत्ता एगे एवमाहंसु ४, एगे पुण एवमाहंसु–ता सव्वावि मंडलवया समचक्कवालसंठिया पण्णत्ता एगे एवमाहंसु ५, एगे पुण एवमाहंसु–ता

सव्वावि मंडलवता तिसमचक्कवालसंठिया पराणत्ता, एगे एवमाहंसु ६, एगे पुण एवमाहंसु—ता सव्वावि मंडलवता चक्कद्धवालसंठिया पराणत्ता, एगे एवमाहंसु ७, एगे पुण एवमाहंसु—ता सव्वावि मंडलवता छत्तागारसंठिया पराणत्ता, एगे एवमाहंसु ८, १। तत्थ जे ते एवमाहंसु ता सव्वावि मंडलवता छत्ताकारसंठिता पराणत्ता एतेणं णएणं णायव्वं, णो चेव णं इतरेहिं २। पाहुडगाहाओ भाणियव्वाओ ३ ॥ सूत्रं ११ ॥ पढमस्स पाहुडस्स सत्तमं पाहुडपाहुडं समत्तं ॥ १-७ ॥

॥ अथ प्रथमप्राभृते अष्टमं प्राभृतप्राभृतम् ॥

ता सव्वावि णं मंडलवया केवतियं बाहल्लेणं केवतियं आयामविक्खंभेणं केवतियं परिक्खेवेणं आहिताति वदेज्जा ?, तत्थ खलु इमा तिरिण पडिवत्तीओ पराणत्ताओ, तत्थेगे एवमाहंसु—ता सव्वावि णं मंडलवता जोयणं बाहल्लेणं एगं जोयणसहस्सं एगं तेत्तीसं जोयणसतं आयामविक्खंभेणं तिरिण जोयणसहस्साइं तिरिण य नवणउए जोयणसते परिक्खेवेणं पराणत्ता, एगे एवमाहंसु १, एगे पुण एवमाहंसु—ता सव्वावि णं मंडलवता जोयणं बाहल्लेणं एगं जोयणसहस्सं एगं च चउत्तीसं जोयणसयं आयामविक्खंभेणं तिरिण जोयणसहस्साइं चत्तारि बिउत्तरे जोयणसते परिक्खेवेणं पराणत्ता, एगे एवमाहंसु २, एगे पुण एवमाहंसु—ता जोयणं बाहल्लेणं एगं जोयणसहस्सं एगं च पणतीसं जोयणसतं आयामविक्खंभेणं तिन्नि जोयणसहस्साइं चत्तारि पंचुत्तरे जोयणसते परिक्खेवेणं पराणत्ता, एगे एवमाहंसु ३, १। वयं पुण एवं वयामो—ता सव्वावि मंडलवता अडतालीसं एगट्ठिभागे जोयणस्स बाहल्लेणं अणियता आयामविक्खंभेणं परिक्खेवेणं आहिताति वदेज्जा २। तत्थ णं को हेऊत्ति वदेज्जा ?, ता अयराणं जंबुद्दीवे २ जाव परिक्खेवेणं ३। ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं

चरति तया णं सा मंडलवता अडतालीसं एगट्ठिभागे जोयणस्स बाहल्लेणं णवणउइजोयणसहस्साइं छच्च चत्ताले जोयणसते आयामविक्खंभेणं तिण्णि जोयणसतसहस्साइं पण्णरसजोयणसहस्साइं एगूणणउतिं जोयणाइं किंचि-विसेसाहिए परिक्खेवेणं ४। तता णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवति जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवति ५। से णिक्खममाणे सूरिए णवं संवच्छरं अयमाणे पढमंसि अहोरत्तंसि अब्भितराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति ६। ता जया णं सूरिए अब्भितराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति तदा णं सा मंडलवता अडयालीसं एगट्ठिभागे जोयणस्स बाहल्लेणं णवणवई जोयणसहस्साइं छच्च पणताले जोयणसते पणतीसं च एगट्ठिभागे जोयणस्स आयामविक्खंभेणं तिण्णि जोयणसत-सहस्साइं पन्नरसं च सहस्साइं एगं चउत्तरं जोयणसतं किंचिविसेसूणं परिक्खे-वेणं तदा णं दिवसरातिप्पमाणं तहेव ७। से णिक्खममाणे सूरिए दोच्चंसि अहोरत्तंसि अब्भितरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति ८। ता जया णं सूरिए अब्भितरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति तया णं सा मंडलवता अडतालीसं एगट्ठिभागे जोयणस्स बाहल्लेणं णवणवति-जोयणसहस्साइं छच्च एक्कावण्णे जोयणसते णव य एगट्ठिभागा जोयणस्स आयामविक्खंभेणं तिण्णि जोयणसयसहस्साइं पन्नरस य सहस्साइं एगं च पणवीसं जोयणसयं परिक्खेवेणं पण्णत्तं, तता णं दिवसराई तहेव ९। एवं खलु एतेणं उवाएणं निक्खममाणे सूरिए तताणंतरातो तदाणंतरं मंडलातो मंडलं उवसंकममाणे २ जोयणाइं पणतीसं च एगट्ठिभागे जोयणस्स एगमेगे मंडले विक्खंभवुड्ढि (बाहल्लेणं) अभिवड्ढेमाणे २ अट्ठारस २ जोयणाइं परिरयवुड्ढिं अभिवड्ढेमाणे २ सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति १०। ता जया णं सूरिए सव्वबाहिरमंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति तता णं सा मंडलवता अडतालीसं एगट्ठिभागा जोयणस्स बाहल्लेणं

एगं च जोयणसयसहस्सं छच्च सट्ठे जोयणसते आयामविक्खंभेणं तिन्नि जोयणसयसहस्साइं अट्ठारस सहस्साइं तिरिण य पराणरसुत्तरे जोयणसते परिक्खेवेणं, तदा णं उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई भवति जहराणए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवति ११। एस णं पढमे छम्मासे एस णं पढमस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे १२। से पविसमाणे सूरिए दोच्चं छम्मासं अयमाणे पढमंसि अहोरत्तंसि बाहिराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति १३। ता जया णं बाहिराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति, ता जया णं सूरिए बाहिराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति तता णं सा मंडलवता अडतालीसं एगट्ठिभागे जोयणस्स बाहल्लेणं एगं जोयणसयसहस्सं छच्च चउपराणे जोयणसते छव्वीसं च एगट्ठिभागे जोयणस्स आयामविक्खंभेणं तिन्नि जोयणसतसहस्साइं अट्ठारससहस्साइं दोरिण य सत्ताणउते जोयणसते परिक्खेवेणं पराणत्ता, तता णं राइंदियं तहेव १४। से पविसमाणे सूरिए दोच्चे अहोरत्तंसि बाहिरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति १५। ता जया णं सूरिए बाहिरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति, तता णं सा मंडलवता अडयालीसं एगट्ठिभागे जोयणस्स बाहल्लेणं एगं जोयणसतसहस्सं छच्च अडयाले जोयणसए बावराणं च एगट्ठिभागे जोयणस्स आयामविक्खंभेणं तिरिण जोयणसतसहस्साइं अट्ठारस सहस्साइं दोरिण अउयणातीसे जोयणसते परिक्खेवेणं पराणत्ता, दिवसराई तहेव १६। एवं खलु एतेणुवाएणं पविसमाणे सूरिए तताणंतरातो तदाणंतरं मंडलातो मंडलं संकममाणे २ पंच २ जोयणाइं पणतीसं च एगट्ठिभागे जोयणस्स एगमेगे मंडले विक्खंभवुड्ढि णिव्वेढेमाणे २ अट्ठारस जोयणाइं परिरयवुड्ढिं णिवुड्ढेमाणे २ सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति १७। ता जता णं सूरिए सव्वब्भतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति, तता णं सा मंडलवया अडयालीसं एगट्ठिभागे जोयणस्स बाहल्लेणं णवणउतिं जोयणसहस्साइं छच्च चत्ताले

जोयणसए आयामविक्खंभेणं तिरिण जोयणसयसहस्साइं पराणरस य सहस्साइं अउणाउतिं च जोयणाइं किंचिविसेसाहियाइं परिक्खेवेणं पराणत्ता १८ । तता णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवति, जहरिणया दुवालसमुहुत्ता राई भवति ११ । एस णं दोच्चस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे एस णं आदिच्चे संवच्छरे एस णं आदिच्चस्स संवच्छरस्स पज्जवसाणे २० । ता सव्वावि णं मंडलवता अडतालीसं एगट्ठिभागे जोयणस्स बाहल्लेणं, सव्वावि णं मंडलंतरिया दो जोयणाइं विक्खंभेणं, एस णं अद्धा तेसीयसतपडुप्पराणो पंचदसुत्तरे जोयणसते आहिताति वदेज्जा २१ । ता अब्भितरातो मंडलवताओ बाहिरं मंडलवतं बाहिराओ वा अब्भितरं मंडलवतं एस णं अद्धा केवतियं आहिताति वदेज्जा ?, ता पंचदसुत्तरजोयणसते आहिताति वदेज्जा २२ । अब्भितराते मंडलवताते बाहिरा मंडलवया बाहिराओ मंडलवतातो अब्भितरा मंडलवता एस णं अद्धा केवतियं आहिताति वदेज्जा ?, ता पंचदसुत्तरे जोयणसते अडतालीसं च एगट्ठिभागे जोयणस्स आहिताति वदेज्जा २३ । ता अब्भंतरातो मंडलवतातो बाहिरमंडलवता बाहिरातो मंडलवतातो अब्भंतरमंडलवता एस णं अद्धा केवतियं आहिताति वदेज्जा ?, ता पंचणवुत्तरे जोयणसते तेरस य एगट्ठिभागे जोयणस्स आहिताति वदेज्जा २४ । अब्भितराते मंडलवताए बाहिरा मंडलवया बाहिराते मंडलवताते अब्भंतरमंडलवया, एस णं अद्धा केवतियं आहिताति वदेज्जा ?, ता पंच दसुत्तरे जोयणसए आहियत्ति वदेज्जा २५ ॥ सूत्रं २० ॥ पढमे अट्ठमं पाहुडपाहुडं ॥ १-८ ॥ पढमं पाहुडं समत्तं ॥

॥ इति प्रथमं प्राभृतम् ॥ १ ॥

卐

॥ अथ द्वितीयप्राभृते प्रथमं प्राभृतप्राभृतम् ॥

ता कहं तेरिच्छगती आहिताति वदेज्जा ?, तत्थ खलु इमाओ अट्ठ पडिवत्तीओ पराणत्ताओ, तत्थेगे एवमाहंसु—ता पुरच्छिमातो लोअंतातो पादो मरीची आगासंसि उत्तिट्ठे ति से णं इमं लोयं तिरियं करेइ तिरियं करेत्ता पच्चत्थिमंसि लोगंतंसि सायंमि सूरिए आगासंसि विद्धंसति एगे एवमाहंसु १, एगे पुण एवमाहंसु—ता पुरच्छिमातो लोअंतातो पातो सूरिए आगसंसि उत्तिट्ठे ति, से णं इमं तिरियं लोयं तिरियं करेति करित्ता पच्चत्थिमंसि लोयंतंसि सूरिए आगासंसि विद्धंसति, एगे एवमाहंसु २, एगे पुण एवमाहंसु—ता पुरत्थिमाओ लोयंतातो पादो सूरिए आगासंसि उत्तिट्ठति, से इमं तिरियं लोयं तिरियं करेति करित्ता पच्चत्थिमंसि लोयंतंसि सायं सूरिए आगासं अणुपविसति २ अहे पडियागच्छंति, अधे पडियागच्छेत्ता पुणरवि अवरभूपुरत्थिमातो लोयंतातो पातो सूरिए आगासंसि उत्तिट्ठति, एगे एवमाहंसु ३, एगे पुण एवमाहंसु—ता पुरत्थिमाओ लोगंताओ पाओ सूरिए पुढविकायंसि(ओ) उत्तिट्ठति, से णं इमं तिरियं लोयं तिरियं करेति करेत्ता पच्चत्थिमिल्लंसि लोयंतंसि सायं सूरिए पुढविकायंसि विद्धंसइ, एगे एवमाहंसु ४, एगे पुण एवामाहंसु पुरत्थिमाओ लोयंताओ पाओ सूरिए पुढविकायंसि उतिट्ठइ से णं इमं तिरियं लोयं तिरियं करेइ करेत्ता पच्चत्थिमंसि लोयंतंसि सायं सूरिए पुढविकायं अणुपविसिइ अणुपविसत्ता अहे पडियागच्छइ २ पुणरवि अवरभूपुरत्थिमाओ लोगंताओ पाओ सूरिए पुढविकायंसि उत्तिट्ठइ, एगे एवमाहंसु ५, एगे पुण एवमाहंसु ता पुरत्थिमिल्लाओ लोगंताओ पाओ सूरिए आउकायंसि उत्तिट्ठई, से णं इमं तिरियं लोयं तिरियं करेइ करेत्ता पच्चत्थिमंसि लोयंतंसि सायं सूरिए आउकायंसि विद्धंसति, एगे एवमाहंसु ६, एगे पुण एवमाहंसु—ता पुरत्थिमातो लोगंतातो पाओ सूरिए आउकायंसि

उत्तिट्ठति, से णं इमं तिरियं लोयं तिरियं करेति २ त्ता पच्चत्थिमंसि लोयंतंसि सायं सूरिए आउकायं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता अहे पडियागच्छति २ त्ता पुणरवि अवरभूपुरत्थिमातो लोयंतातो पादो सूरिए आउकायंसि उत्तिट्ठति, एगे एवमाहंसु ७, एगे पुण एवमाहंसु—ता पुरत्थिमातो लोयंताओ बहूइं जोयणाइं बहूइं जोयणसताइं बहूइं जोयणसहस्साइं दूरं उड्ढं उप्पतित्ता एत्थ णं पातो सूरिए आगासंसि उत्तिट्ठति, से णं इमं दाहिणड्ढं लोयं तिरियं करेति करेत्ता उत्तरद्धलोयं तमेव रातो, से णं इमं उत्तरद्धलोयं तिरियं करेइ २ त्ता दाहिणद्धलोयं तमेव राओ, से णं इमाइं दाहिणुत्तरड्ढलोयाइं तिरियं करेइ करित्ता पुरत्थिमाओ लोयंतातो बहूइं जोयणाइं बहुयाइं जोयणसताइं बहूइं जोयणसहस्साइं दूरं उड्ढं उप्पतित्ता एत्थ णं पातो सूरिए आगासंसि उत्तिट्ठति एगे एवमाहंसु ८, १ । वयं पुण एवं वयामो, ता जंबुद्दीवस्स २ पाईणपडीणायत-ओदीणदाहिणायताए जीवाए मंडलं चउव्वीसेणं सतेणं छेत्ता दाहिणपुरच्छिमंसि उत्तरपच्चत्थिमंसि य चउभागमंडलंसि इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जातो भूमिभागातो अट्ठ जोयणसताइं उड्ढं उप्पतित्ता एत्थ णं पादो दुव सूरिया (आगासाओ) उत्तिट्ठंति, ते णं इमाइं दाहिणुत्तराइं जंबुद्दीवभागाइं तिरियं करेंति २ त्ता पुरत्थिमपच्चत्थिमाइं जंबुद्दीवभागाइं तामेव रातो, ते णं इमाइं पुरच्छिमपच्चत्थिमाइं जंबुद्दीवभागाइं तिरियं करेंति २ त्ता दाहिणुत्तराइं जंबुद्दीवभागाइं तामेव रातो, ते णं इमाइं दाहिणुत्तराइं पुरच्छिमपच्चत्थिमाणि य जंबुद्दीवभागाइं तिरियं करेंति २ त्ता जंबुद्दीवस्स २ पाईणपडियायत-ओदीणदाहिणाययाए जीवाए मंडलं चउव्वीसेणं सतेणं छेत्ता दाहिणपुरच्छिमिल्लंसि उत्तरपच्चत्थिमिल्लंसि य चउभागमंडलंसि इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जातो भूमिभागातो अट्ठ जोयणसयाइं उड्ढं उप्पइत्ता, एत्थ णं पादो दुवे सूरिया आगासंसि उत्तिट्ठंति २ ॥ सू० २१ ॥ बितीयस्स पढमं ॥ १ ॥

॥ अथ द्वितीयप्राभृते द्वितीयं प्राभृतप्राभृतम् ॥

ता कहं ते मंडलाओ मंडलं संकममाणे २ सूरिए चारं चरति आहिताति वदेज्जा ?, तत्थ खलु इमातो दुवे पडिवत्तीओ पराणत्ताओ, तत्थेगे एवमाहंसु ता मंडलातो मंडलं संकममाणे २ सूरिए भेयघाएणं संकामइ एगे एवमाहंसु, एगे पुण एवमाहंसु ता मंडलाओ मंडलं संकममाणे सूरिए कराणकलं णिव्वेढेति १ । तत्थ जे ते एवमाहंसु, ता मंडलातो मंडलं संकममाणे २ भेयघाएणं संकमइ तेसि णं अयं दोसे, ता जेणंतरेणं मंडलातो मंडलं संकममाणे २ सूरिए भेयघाएणं संकमति, एवतियं च णं अद्धं पुरतो न गच्छति, पुरतो अगच्छमाणे मंडलकालं परिहवेति, तेसि णं अयं दोसे २ । तत्थ जे ते एवमाहंसु, ता मंडलातो मंडलं संकममाणे सूरिए कराणकलं णिवेढेति, तेसि णं अयं विसेसे ता जेणंतरेणं मंडलातो मंडलं संकममाणे सूरिए कराणकलं णिव्वेढेति, एवतियं च णं अद्धं पुरतो गच्छति, पुरतो गच्छमाणे मंडलकालं ण परिहवेति, तेसि णं अयं विसेसे ३ । तत्थ जे ते एवमाहंसु— मंडलातो मंडलं संकममाणे सूरिए कराणकलं णिव्वेढेति, एतेणं णएणं णेतव्वं, णो चेव णं इतरेणं ४ ॥ सू० २२ ॥ बितियस्स पाहुडस्स बितीयं ॥२—२॥

॥ अथ द्वितीयप्राभृते तृतीयं प्राभृतप्राभृतम् ॥

ता केवतियं ते खेत्तं सूरिए एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छति आहितातिवदेज्जा ?, तत्थ खलु इमातो चत्तारि पडिवत्तीओ पराणत्ताओ, तत्थ एगे एवमाहंसु—ता छ छ जोयणसहस्साइं सूरिए एगमेगेणं मुहुत्तेण गच्छति, एगे एवमाहंसु १, एगे पुण एवमाहंसु—ता पंच पंच जोयणसहस्साइं सूरिए एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छति, एगे एवमाहंसु २, एगे पुण एवमाहंसु—ता चत्तारि २ जोयणसहस्साइं सूरिए एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छति, एगे एवमाहंसु ३, एगे पुण एवमाहंसु—ता

छवि पंचवि चत्तारिवि जोयणसहस्साइं सूरिए एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छति, एगे एवमाहंसु ४, १। तत्थ जे ते एवमाहंसु ता छ छ जोयणसहस्साइं सूरिए एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छति ते एवमाहंसु–जता णं सूरिए सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चरति तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसे अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवति, जहरिणाया दुवालसमुहुत्ता राई भवति, तेसिं च णं दिवसंसि एगं जोयणसतसहस्सं अट्ठ य जोयणसहस्साइं तावक्खेत्ते पराणत्ते, ता जया णं सूरिए सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति तया णं उत्तमकट्ठपत्ता उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई भवति, जहराणए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवति, तेसिं च णं दिवसंसि बावत्तरिं जोयणसहस्साइं तावक्खेत्ते पराणत्ते, तया णं छ छ जोयण-सहस्साइं सूरिए एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छति २। तत्थ जे ते एवमाहंसु ता पंच पंच जोयणसहस्साइं सूरिए एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छति, ते एवमाहंसु–ता जता णं सूरिए सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति, तहेव दिवसराइप्पमाणं तंसि च सूरिए णं तावखेत्तं नउइजोयणसहस्साइं, ता जया णं सूरिए सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति, तता णं तं चेव राइंदियप्पमाणं तंसि च णं दिवसंसि सट्ठि जोयणसहस्साइं तावक्खेत्ते पन्नत्ते, तता णं पंच पंच जोयण-सहस्साइं सूरिए एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छति ३। तत्थ जे ते एवमाहंसु, ता चत्तारि जोयणसहस्साइं सूरिए एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छति ते एवमाहंसु–ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति तता णं दिवसराई तहेव, तंसि च णं दिवसंसि बावत्तरिं जोयणसहस्साइं तावक्खेत्ते पराणत्ते, ता जया णं सूरिए सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति तता णं राइंदियं तथेव, तंसि च णं दिवसंसि अडयालीसं जोयणसहस्साइं तावक्खेत्ते पराणत्ते, तता णं चत्तारि २ जोयणसहस्साइं सूरिए एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छति ४। तत्थ जे ते एवमाहंसु छवि पंचवि चत्तारिवि जोयणसहस्साइं सूरिए एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छति ते एवमाहंसु–ता सूरिए णं उग्गमणमुहुत्तेणं सिय अत्थमण-

मुहुत्तंसि य सिग्घगती भवति, तता णं छ छ जोयणसहस्साइं एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छति, मज्झिमतावखेत्तं समासादेमाणे २ सूरिए मज्झिमगती भवति, तता णं पंच पंच जोयणसहस्साइं एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छति, मज्झिमं तावखेत्तं संपत्ते सूरिए मंदगती भवति, तता णं चत्तारि जोयणसहस्साइं एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छति ५। तत्थ को हेऊत्ति वदेज्जा ?, ता अयरणं जंबुद्दीवे २ जाव परिक्खेवेणं, ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति तता णं दिवसराई तहेव तंसि च णं दिवसंसि एक्काणउतिं जोयणसहस्साइं तावखेत्ते पराणत्ते, ता जया णं सूरिए सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति तता णं राइंदियं तहेव, तसिं च णं दिवसंसि एगट्ठिजोयणसहस्साइं तावक्खेत्ते पराणत्ते, तता णं छवि पंचवि चत्तारिवि जोयणसहस्साइं सूरिए एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छति, एगे एवमाहंसु ६। वयं पुण एवं वदामो ता सातिरेगाइं पंच २ जोयणसहस्साइं सूरिए एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छति ७। तत्थ को हेतूत्ति वदेज्जा ? ता अयरणं जंबुद्दीवे २ परिक्खेवेणं ता जता णं सूरिए सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति तता णं पंच २ जोयणसहस्साइं दोणिण य एकावराणे जोयणसए एगूणतीसं च सट्ठिभागे जोयणस्स एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छति ८। तता णं इधगतस्स मणुसस्स सीतालीसाए जोयणसहस्सेहिं दोहि य तेवट्ठेहिं जोयणसतेहिं एकवीसाए य सट्ठिभागेहिं जोयणस्स सूरिए चक्खुप्फासं हव्वमागच्छति, तया णं दिवसे राई तहेव ९। से णिक्खममाणे सूरिए णवं संवच्छरं अयमाणे पढमंसि अहोरत्तंसि अब्भितराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति, ता जया णं सूरिए अब्भितराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति, तता णं पंच २ जोयणसहस्साइं दोणिण य एकावराणे जोयणसते सीतालीसं च सट्ठिभागे जोयणस्स एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छति १०। तता णं इहगयस्स मणूसस्स सीतालीसाए जोयणसहस्सेहिं अउणा-

सीते य जोयणसतेहिं सत्तावरणाए सट्ठिभागेहिं जोयणस्स सट्ठिभागं च एगट्ठिहा छेत्ता अउणावीसाए चुणिणयाभागेहिं सूरिए चक्खुप्फासं हव्वमागच्छति, तता णं दिवसराई तहेव ११। से णिक्खममाणे सूरिए दोच्चंसि अहोरत्तंसि अब्भिंतरतच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति, ता जया णं सूरिए अब्भिंतरतच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति तता णं पंच २ जोयणसहस्साइं दोण्णि य बावण्णे जोयणसते पंच य सट्ठिभागे जोयणस्स एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छति १२। तता णं इहगतस्स मणूसस्स सीतालीसाए जोयणसहस्सेहिं छण्णउतीए य जोयणेहिं तेत्तीसाए य सट्ठिभागेहिं जोयणस्स सट्ठिभागं च एगट्ठिधा छेत्ता दोहिं चुण्णियाभागेहिं सूरिए चक्खुप्फासं हव्वमागच्छति, तता णं दिवसराई तहेव १३। एवं खलु एतेणं उवाएणं णिक्खममाणे सूरिए तताणंतराओ तदाणंतरं मंडलातो मंडलं संकममाणे २ अट्ठारस २ सट्ठिभागे जोयणस्स एगमेगे मंडले मुहुत्तगतिं अभिवुड्ढेमाणे २ चुलसीतिं २ सीताइ जोयणाइं पुरिसच्छायं णिवुड्ढेमाणे २ सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति १४। ता जया णं सूरिए सव्वबाहिरमंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति तता णं पंच २ जोयणसहस्साइं तिन्नि य पंचुत्तरे जोयणसते पण्णरस य सट्ठिभागे जोयणस्स एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छति १५। तता णं इहगतस्स मणूसस्स एकतीसाए जोयणेहिं अट्ठहिं एकतीसेहिं जोयणसतेहिं तीसाए य सट्ठिभागेहि जोयणस्स सूरिए चक्खुप्फासं हव्वमागच्छति तता णं उत्तमकट्ठपत्ता उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवति, एस णं पढमे छम्मासे, एस णं पढमस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे १६। से पविसमाणे सूरिए दोच्चं छम्मासं अयमाणे पढमंसि अहोरत्तंसि बाहिराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति ता जता णं सूरिए बाहिराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरित तता णं पंच २ जोयणसहस्साइं तिण्णि य चउरुत्तरे जोयणसते

सत्तावराणं च सट्ठिभाए जोयणस्स एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छति १७। तता णं इधगतस्स मणूसस्स एक्कतीसाए जोयणसहस्सेहिं नवहि य सोलेहिं जोयणसएहिं एगूणतालीसाए सट्ठिभागेहि जोयणस्स सट्ठिभागं च एगट्ठिहा छेत्ता सट्ठिए चुण्णियाभागे सूरिए चक्खुफासं हव्वमागच्छति, तता णं राइंदियं तहेव १८। से पविसमाणे सूरिए दोच्चंसि अहोरत्तंसि बाहिरं तच्चं मंडल उवसंकमित्ता चारं चरति १९। ता जया णं सूरिए बाहिरतच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति तता णं पंच २ जोयणसहस्साइं तिन्नि य चउत्तरे जोयणसते ऊतालीसं च सट्ठिभागे जोयणस्स एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छति २०। तता णं इहगतस्स मणूसस्स एगाधिगेहिं बत्तीसाए जोयणसहस्सेहिं एकावण्णाए य सट्ठिभागेहिं जोयणस्स सट्ठिभागं च एगट्ठिधा छेत्ता तेवीसाए चुण्णियाभागेहिं सूरिए चक्खुप्फासं हव्वमागच्छति, राइंदियं तहेव २१। एवं खलु एतेणुवाएणं पविसमाणे सूरिए ततार्णतरातो ततार्णतरं मंडलातो मंडलं संकममाणे २ अट्ठारस २ सट्ठिभागे जोयणस्स एगमेगे मंडले मुहुत्तगइं णिवुड्ढेमाणे २ सातिरेगाइं पंचासीति २ जोयणाइं पुरिसच्छायं अभिवुड्ढेमाणे २ सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति २२। ता जता णं सूरिए सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति तता णं पञ्च २ जोयणसहस्साइं दोण्णि य एकावण्णे जोयणसए अट्ठतीसं च सट्ठिभागे जोयणस्स एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छति तता णं इहगयस्स मणूसस्स सीतालीसाए जोयणसहस्सेहिं दोहि य दोवट्ठेहिं जोयणसतेहिं एक्कवीसाए य सट्ठिभागेहिं जोयणस्स सूरिए चक्खुप्फासं हव्वमागच्छति तता णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवति, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवति २३। एस णं दोच्चे छम्मासे, एस णं दोच्चस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे, एस णं आदिच्चे संवच्छरे, एस णं आदिच्चसंवच्छरस्स पज्जवसाणे २३॥ सूत्रं २३ ॥ २-३ ॥ बितियं पाहुडं समत्तं ॥

॥ इति द्वितीयं प्राभृतम् ॥ २ ॥

॥ अथ तृतीयं प्राभृतम् ॥

ता केवतियं खेत्तं चंदिमसूरिया ओभासंति उज्जोवेंति तवेंति पगासंति आहिताति वदेज्जा ?, तत्थ खलु इमाओ बारस पडिवत्तीओ पन्नत्ताओ, तत्थेगे एवमाहंसु, ता एगं दीवं एगं समुद्द चंदिमसूरिया ओभासेंति उज्जोवेंति तवेंति पगासेंति, एगे एवमाहंसु एगे १, पुण एवमाहंसु—ता तिण्णि दीवे तिण्णि समुद्दे चंदिमसूरिया ओभासंति ४, एगे एवमाहंसु २, एगे पुण एवमाहंसु—ता अद्धचउत्थे(आउट्ठे) दीवसमुद्दे चंदिमसूरिया ओभासंति उज्जोवेंति तवेंति पगासिंति, एगे एवमाहंसु ३, एगे पुण एवमाहंसु ता सत्त दीवे सत्त समुद्दे चंदिमसूरिया ओभासिंति ४ एगे एवमाहंसु ४, एगे पुण एवमाहंसु ता दस दीवे दस समुद्दे चंदिमसूरिया ओभासंति ४, एगे एवमाहंसु ५, एगे पुण एवमाहंसु, ता बारस दीवे बारस समुद्दे चंदिमसूरिया ओभासंति ४, एगे एवमाहंसु ६, एगे पुण एवमाहंसु, बायालीसं दीवे बायालीसं समुद्दे चंदिमसूरिया ओभासंति एक(४), एगे एवमाहंसु ७, एगे पुण एवमाहंसु बावत्तरिं दीवे बावत्तरिं समुद्दे चंदिमसूरिया ओभासंति, एक(४), एगे एवमाहंसु ८, एगे पुण एवमाहंसु ता बातालीसं दीवसतं बायालं समुद्दसतं चंदिमसूरिया ओभासंति ४ एगे एवमाहंसु ९, एगे पुण एवमाहंसु, ता बावत्तरिं समुद्दसतं चंदिमसूरिया ओभासंति एक(४) एगे एवमाहंसु १०, एगे पुण एवमाहंसु ता बायालीसं दीवसहस्सं बायालं समुद्दसहस्सं चंदिमसूरिया ओभासंति, एक(४), एगे एवमाहंसु ११, एगे पुण एवमाहंसु ता बावत्तरं दीवसहस्सं बावत्तरं समुद्दसहस्सं चंदिमसूरिया ओभासंति एक(४) एगे एवमाहंसु १२, १। वयं पुण एवं वदामो—अयण्णं जंबुद्दीवे सव्वद्दीवसमुद्दाणं जाव परिक्खेवेणं पण्णत्ते, से णं एगाए जगतीए सव्वतो समंता संपरिक्खत्ते, सा णं जगती तहेव जहा जंबुद्दीवपन्नत्तीए जाव एवामेव सपुव्वावरेणं जंबुद्दीवे २ चोद्दस सलिलासयसहस्सा छप्पन्नं च सलिलासहस्सा भवंतीति

मक्खाता, जंबुद्दीवे णं दीवे पंचचक्कभागसंठिता आहितातित्ति वदेज्जा २। ता कहं जंबुद्दीवे २ पंचचक्कभागसंठिते आहितातित्ति वदेज्जा ?, ता जता णं एते दुवे सूरिया सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति तदा णं जंबुद्दीवस्स २ तिरिण पंचचउक्कभागे ओभासंति उज्जोवेंति तवंति पभासंति, तंजहा–एगेवि एगं दिवड्ढं पंचचक्कभागं ओभासेति राक(४) एगेवि एवं दिवड्ढं पंचचक्कभागं ओभासेति राक(४) तता णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवति, जहरिणया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ ३। ता जता णं एते दुवे सूरिया सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति तदा णं जंबुद्दीवस्स २ दोरिण चक्कभागे ओभासंति उज्जोवेंति तवंति पगासंति, ता एगेवि एगं पंचचक्कवालभागं ओभासति उज्जोवेइ तवेइ पभासइ, एगेवि एक्कं पंचचक्कवालभागं ओभासइ राक(४), तता णं उत्तमकट्ठपत्ता उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ जहराणए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवति ४ ॥ सूत्रं २४ ॥ ततियं पाहुडं समत्तं ॥ ३ ॥

॥ अथ चतुर्थं प्राभृतम् ॥

ता कहं ते सेआते संठिईया आहितातित्ति वदेज्जा ?, तत्थ खलु इमा दुविहा संठिती पराणत्ता, तंजहा–चंदिमसूरियसंठिती य १ तावक्खेत्तसंठिती य २, १। ता कहं ते चंदिमसूरियासंठिती आहितातित्ति वदेज्जा ?, तत्थ खलु इमातो सोलस पडिवत्तीओ पराणत्ताओ, तत्थेगे एवमाहंसु–ता समचउरंससंठिता चंदिमसूरियासंठिती एगे एवमाहंसु १, एगे पुण एवमाहंसु, ता विसमचउरंससंठिता चंदिमसूरियसंठिती पराणत्ता, २, एवं समचउक्कोणसंठिता ३, ता विसमचउकोणसंठिया ४ समचक्कवालसंठिता ५ विसमचक्कवालसंठिता ६ चक्कद्धचक्कवालसंठिता पराणत्ता एगे एवमाहंसु ७, एगे पुण एवमाहंसु ता छत्तागारसंठिता चंदिमसूरियसंठिता पराणत्ता ८ गेहसंठिता ९ गेहावणसंठिता १०

पासादसंठिता ११ गोपुरसंठिया १२ पेच्छाघरसंठिता १३ वलभीसंठिता १४ हम्मियतलसंठिता १५ वालग्गपोतियासंठिता चंदिमसूरियसंठिती पराणत्ता १६,२। तत्थ जे ते एवमाहंसु ता समचउरंससंठिता चंदिमसूरियसंठिती पराणत्ता, एतेणं णएणं णेतव्वं णो चेव णं इतरेहिं ३। कहं ते तावक्खेत्त-संठिती आहितातिं वदेज्जा, तत्थ खलु इमाओ सोलस पडिवत्तीओ, पन्नत्ताओ, तत्थ णं एगे एवमाहंसु ता गेहसंठिता तावखित्तसंठिती पराणत्ता, एवं जाव वालग्गपोतियासंठिता तावक्खेत्तसंठिती ४। एगे एवमाहंसु ता जस्संठिते जंबुद्दीवे तस्संठिते तावक्खेत्तसंठिती पराणत्ता एगे एवमाहंसु १, एगे पुण एवमाहंसु ता जस्संठिते भारहे वासे तस्संठिती पराणत्ता १०, एवं उज्जाणसंठिया निज्जाणसंठिता एगतो णिसधसंठिता, दुहतो णिसहसंठिता सेयणगसंठिता एगे एवमाहंसु, एगे पुण एवमाहंसु, ता सेणगपट्ठसंठिता तावखेत्तसंठिती पराणत्ता, एगे एवमाहंसु ५। वयं पुण एवं वदामो, ता उद्धीमुह-कलंबुआ-पुप्फसंठिता तावक्खेत्तसंठिती पराणत्ता, अंतो संकुडा बाहिं वित्थडा अंतो वट्टा बाहिं पिधुला अंतो अंकमुहसंठिता बाहि सत्थिमुहसंठिता उभतो पासेणं तीसे दुवे बाहाओ अवट्ठिताओ भवंति पणतालीसं २ जोयणसहस्साइं आयामेणं ६। तीसे दुवे बाहाओ अणवट्ठिताओ भवंति, तंजहा—सव्वब्भं-तरिया चेव बाहा सव्वबाहिरिया चेव बाहा ७। तत्थ को हेतूत्ति वदेज्जा ?, ता अयराणं जंबुद्दीवे २ जाव परिक्खेवेणं ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति तता णं उद्धीमुहकलंबुआपुप्फसंठिता ताव-खेत्तसंठिती आहितातिं वदेज्जा अंतो संकुडा बाहिं वित्थडा अंतो वट्टा बाहिं पिधुला अंतो अंकमुहसंठिता बाहिं सत्थिमुहसंठिआ ८। दुहतो पासेणं तीसे तथेव जाव सव्वबाहिरिया चेव बाहा, तीसे णं सव्वब्भंतरिया बाहा मंदरपव्वयंतेणं णव जोयणसहस्साइं चत्तारि य छलसीते जोयणसते णव य दसभागे जोयणस्स परिक्खेवेणं आहितातिं वदेज्जा ९। ता से णं परिक्खेव-

विसेसे कतो आहितातिं वदेज्जा ?, ता जे णं मंदरस्स पव्वयस्स परिक्खेवे तं परिक्खेवं तिहिं गुणित्ता दसहिं छित्ता दसहिं भागे हीरमाणे एस णं परिक्खेववि‌सेसे आहिताति वदेज्जा १०। तीसे णं सव्वबाहिरिया बाहा लवणसमुद्दंतेणं चउणउतिं जोयणसहस्साइं अट्ठ य अट्ठसट्ठे जोयणसते चत्तारि य दसभागे जोयणस्स परिक्खेवेणं आहिताति वदेज्जा ११। ता से णं परिक्खेवविसेसे कतो आहिताति वदेज्जा ?, ता जे णं जंबुद्दीवस्स २ परिक्खेवे तं परिक्खेवं तिहिं गुणित्ता दसहिं छेत्ता दसहिं भागे हीरमाणे एस णं परिक्खेवविसेसे आहिताति वदेज्जा १२। तीसे णं तावक्खेत्ते केवतियं आयामेणं आहिताति-वदेज्जा ?, ता अट्ठत्तरिं जोयणसहस्साइं तिण्णि य तेत्तीसे जोयणसते जोयणतिभागे च आयामेणं आहितेति वदेज्जा १३। तया णं किंसंठिया अंधगारसंठिई आहितेति वदेज्जा ?, उद्धीमुहकलंबुआपुप्फसंठिता तहेव जाव वाहिरिया चेव बाहा, तीसे णं सव्वब्भंतरिया बाहा मंदरपव्वतंतेणं छज्जोयणसहस्साइं तिण्णि य चउवीसे जोयणसते छच्च दसभागे जोयणस्स परिक्खेवेणं आहितेति वदेज्जा १४। तीसे णं परिक्खेवविसेसे कतो आहितेति वदेज्जा ?, ता जे णं मंदरस्स पव्वयस्स परिक्खेवेणं तं परिक्खेवं दोहिं गुणेत्ता सेसं तहेव, तीसे णं सव्वबाहिरिया बाहा लवणसमुद्दंतेणं तेवट्ठि-जायणसहस्साइं दोण्णि य पणयाले जोयणसते छच्च दसभागे जोयणस्स परिक्खेवेणं आहितेति वदेज्जा १५। ता से णं परिक्खेवविसेसे कत्तो आहितेति वदेज्जा ?, ता जे णं जंबुद्दीवस्स २ परिक्खेवे तं परिक्खेवं दोहिं गुणित्ता दसहि छेत्ता दसहिं भागे हीरमाणे एस णं परिक्खेवविसेसे आहितेति वदेज्जा १६। ता से णं अंधकारे केवतियं आयामेणं आहितेति वदेज्जा ?, ता अट्ठत्तरिं जोयणसहस्साइं तिण्णि य तेतीसे जोयणसते जोयणतिभागं च आयामेणं आहितेति वदेज्जा, तता णं उत्तमकट्ठपत्ते अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवति, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ १७। ता जया णं सूरिए

सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति तता णं किंसंठिती तावखेत्त-संठिती आहितातिं वदेज्जा ?, ता उद्धामुहकलंबुयापुप्फसंठिती तावक्खेत्त-संठिती आहितातिं वदेज्जा १८। एवं जं अब्भितरमंडले अंधकारसंठितीए पमाणं तं बाहिरमंडले तावक्खेत्तसंठितीए जं तहि तावखेत्तसंठितीए तं बाहिर-मंडले अंधकारसंठितीए भाणियव्वं, जाव तता णं उत्तमकट्ठपत्ता उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई भवति, जहरणए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवति १९। ता जंबुद्दीवे २ सूरिया केवतियं(खेत्तं) उड्ढं तवंति केवतियं खेत्तं अहे तवंति केवतियं खेत्तं तिरियं तवंति ?, ता जंबुद्दीवे णं दीवे सूरिया एगं जोयणसतं उड्ढं तवंति अट्ठारस जोयणसताइं अधे पतवंति सीतालीसं जोयणसहस्साइं दुन्नि य तेवट्ठे जोयणसते एक्कवीसं च सट्ठिभागे जोयणस्स तिरियं तवंति २०॥ सूत्रं २५॥ चउत्थं पाहुडं समत्तं॥ ४॥

॥ अथ पञ्चमं प्राभृतम् ॥

ता कस्सि णं सूरियस्स लेस्सा पडिहतातिं वदेज्जा ?, तत्थ खलु इमाओ वीसं पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ, तत्थेगे एवमाहंसु ता मंदरंसि णं पव्वतंसि सूरियस्स लेस्सा पडिहता आहितातिं वदेज्जा, एगे एवमाहंसु १, एगे पुण एवमाहंसु ता मेरुंसि णं पव्वतंसि सूरियस्स लेस्सा पडिहता आहितातिं वदेज्जा, एगे एवमाहंसु २, एवं एतेणं अभिलावेणं भाणियव्वं, ता मणोरमंसि णं पव्वयंसि, ता सुदंसणंसि णं पव्वयंसि, ता सयंपभंसि णं पव्वतंसि ता गिरिरायंसि णं पव्वतंसि ता रतणुच्चयंसि णं पव्वतंसि ता सिलुच्चयंसि णं पव्वयंसि ता लोअमज्झंसि णं पव्वतंसि ता लोयणाभिंसि णं पव्वतंसि ता अच्छंसि णं पव्वतंसि ता सूरियावत्तंसि णं पव्वतंसि सूरियावरणंसि णं पव्वतंसि ता उत्तमंसि णं पव्वयंसि ता दिसादिस्सि णं पव्वतंसि ता अवतंसंसि णं पव्वतंसि ता धरणिखीलंसि णं पव्वयंसि ता

-धरणिसिंगंसि णं पव्वयंसि ता पव्वतिंदंसि णं पव्वतंसि ता पव्वयरायंसि णं पव्वयंसि सूरियस्स लेसा पडिहता आहिताति वदेज्जा, एगे एवमाहंसु १। वयं पुण एवं वदामो–ता मंदरेवि पवुच्चति जाव पव्वयरायावि वुच्चति २। ता जे णं पुग्गला सूरियस्स लेसं फुसंति ते णं पुग्गला सूरियस्स लेसं पडिहणंति, अदिट्ठावि णं पोग्गला सूरियस्स लेस्सं पडिहणंति, चरिमलेसंतरगतावि णं पोग्गला सूरियस्स लेस्सं पडिहणंति ३॥ सूत्रं २६॥ सूरियपरणत्तीए भगवतीए पंचमं पाहुडं समत्तं॥ ५॥

॥ अथ षष्ठं प्राभृतम् ॥

ता कहं ते ओयसंठिती आहिताति वदेज्जा ?, तत्थ खलु इमाओ पणवीसं पडिवत्तीओ पराणत्ताओ, तत्थेगे एवमाहंसु ता अणुसमयमेव सूरियस्स ओया अराणा उप्पज्जे, अराणा अवेति, एगे एवमाहंसु १, एगे पुण एवमाहंसु ता अणुमुहुत्तमेव सूरियस्स ओया अराणा उप्पज्जति अराणा अवेति २, एतेणं अभिलावेणं णेतव्वा, ता अणुराइंदियमेव ता अणुपक्खमेव ता अणुमासमेव ता अणुउडुमेव ता अणुअयणमेव ता अणुसंवच्छरमेव ता अणुजुगमेव, ता अणुवाससयमेव ता अणुवाससहस्समेव ता अणुवाससयसहस्समेव, ता अणुपुव्वमेव ता अणुपुव्वसयमेव ता अणुपुव्वसहस्समेव ता अणुपुव्वसतसहस्समेव, ता अणुपलितोवममेव ता अणुपलितोवमसतमेव ता अणुपलितोवमसहस्समेव ता अणुपलितोवमसयसहस्समेव, ता अणुसागरोवममेव, ता अणुसागरोवमसतमेव ता अणुसागरोवमसहस्समेव ता अणुसागरोवमसयसहस्समेव एगे एवमाहंसु, ता अणुउस्सप्पिणिओसप्पिणिमेव सूरियस्स ओया अराणा उप्पज्जति अराणा अवेति, एगे एवमाहंसु १। वयं पुण एवं वदामो ता तीसं २ मुहुत्ते सूरियस्स ओया अवट्ठिता भवति, तेण परं सूरियस्स ओया अणवट्ठित्ता भवति,

छम्मासे सूरिए ओयं णिवुड्ढेति छम्मासे सूरिए ओयं अभिवड्ढेति, णिक्खमं-
ममाणे सूरिए देसं णिवुड्ढेति पविसमाणे सूरिए देसं अभिवुड्ढेइ २। तत्थ
को हेतूति वदेज्जा ?, ता अयण्णं जंबुद्दीवे २ सव्वदीवसमुद्द जाव परिक्खे-
वेणं, ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति तता
णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवति, जहण्णिया दुवालस-
मुहुत्ता राई भवति ३। से णिक्खममाणे सूरिए णवं संवच्छरं अयमाणे
पढमंसि अहोरत्तंसि अब्भिंतराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति, ता
जया णं सूरिए अब्भिंतराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति तता णं
एगेणं राइंदिएणं एगं भागं ओयाए दिवसखित्तस्स णिवुड्ढित्ता रतणिवखेत्तस्स
अभिवड्ढित्ता चारं चरति, मंडलं अट्ठारसहिं तीसेहिं सतेहिं छित्ता, तता णं
अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवति दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणे दुवालसमुहुत्ता
राई भवति दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिया ४। से णिक्खममाणे सूरिए
दोच्चंसि अहोरत्तंसि अब्भिंतरतच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति, ता
जया णं सूरिए अब्भिंतरतच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति तता णं
दोहिं राइंदिएहिं दो भागे ओयाए दिवसखेत्तस्स णिवुड्ढित्ता रयणिखित्तस्स
अभिवड्ढेत्ता चारं चरति, मंडलं अट्ठारसतीसेहिं सएहि छेत्ता, तता णं
अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवति चउहि एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणे दुवालसमुहुत्ता
राई भवति चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिया ५। एवं खलु एतेणुवाएणं
निक्खममाणे सूरिए तयाणंतराओ तदाणंतरं मंडलातो मंडलं संकममाणे
२ एगमेगे मंडले एगमेगेणं राइंदिएणं एगमेगं २ भागं ओयाए दिवस-
खेत्तस्स णिवुड्ढेमाणे २ रयणिखेत्तस्स अभिवड्ढेमाणे २ सव्वबाहिरं मंडलं
उवसंकमित्ता चारं चरति, ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतरातो मंडलातो
सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति तता णं सव्वब्भंतरं मंडलं
पणिधाय एगेणं तेसीतेणं राइंदियसतेणं एगं (सगं) तेसीतं भागसतं ओयाए

दिवसखेत्तस्स णिव्वुड्ढेत्ता रयणिखेत्तस्स अभिवुड्ढेत्ता चारं चरति मंडलं अट्ठारसहिं तीसेहिं सयेहिं छेत्ता, तता णं उत्तमकट्ठपत्ता उक्कोसिया अट्ठारस-मुहुत्ता राई भवति जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवति ६। एस णं पढमछम्मासे, एस णं पढमस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे ७। से पविसमाणे सूरिए दोच्चं छम्मासं अयमाणे पढमंसि अहोरत्तंसि बाहिराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति, ता जया णं सूरिए बाहिराणंतरं मंडलं उवसंक-मित्ता चारं चरति तता णं एगेणं राइंदिएणं एगं भागं ओयाए रतणिक्खे-त्तस्स णिव्वुड्ढेत्ता दिवसखेत्तस्स अभिवड्ढेत्ता चारं चरति, मंडलं अट्ठारसहिं तीसेहिं सयेहिं छेत्ता, तता णं अट्ठारसमुहुत्ता राई भवति दोहिं एगट्ठिभाग-मुहुत्तेहिं ऊणा दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवति दोहि एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अधिए ८। से पविसमाणे सूरिए दोच्चंसि अहोरत्तंसि बाहिरं तच्चं मंडलं उवसंक-मित्ता चारं चरति, ता जया णं सूरिए बाहिरतच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति तता णं दोहिं राइंदिएहिं दो भाए ओयाए रयणिखेत्तस्स णिव्वुड्ढेत्ता दिवसखेत्तस्स अभिवुड्ढेत्ता चारं चरति, मंडलं अट्ठारसहिं तीसेहि सयेहिं छेत्ता, तया णं अट्ठारसमुहुत्ता राई भवति चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणा दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवति चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अधिए ९। एवं खलु एतेणुवाएणं पविसमाणे सूरिए तताणंतराते तदाणंतरं मंडलाते मंडलं संकममाणे २ एगमेगे मंडले एगमेगेणं राइंदिएणं एगमेगेणं भागं ओयाए रयणिखेत्तस्स णिव्वुड्ढेमाणे २ दिवसखेत्तस्स अभिवड्ढेमाणे २ सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति, ता जया णं सूरिए सव्वबाहिराते मंडलाते सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति तता णं सव्वबाहिरं मंडलं पणिधाय एगेणं तेसीतेणं राइंदियसएणं एगं तेसीतं भागसतं ओयाए रयणिखित्तस्स णिवुड्ढेत्ता दिवसखेत्तस्स अभिवड्ढेत्ता चारं चरति, मंडलं अट्ठारसतीसेहिं सएहि छेत्ता, तता णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते

दिवसे भवति, जहरिणया दुवालसमुहुत्ता राई भवति १० । एस णं दोच्चे छम्मासे एस णं दोच्चस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे, एस णं आदिच्चे संवच्छरे, एस णं आदिच्चस्स संवच्छरस्स पज्जवसाणे ११ ॥ सूत्रं २७ ॥ छट्ठं पाहुडं समत्तं ॥ ६ ॥

॥ अथ सप्तमं प्राभृतम् ॥

ता के ते सूरियं वरंति आहिताति वदेज्जा ?, तत्थ खलु इमाओ वीसं पडिवत्तीओ पराणत्ताओ, तत्थेगे एवमाहंसु–ता मंदरे णं पव्वते सूरियं वरयति आहितेति वदेज्जा, एगे एवमाहंसु १, एगे पुण एवमाहंसु ता मेरू णं पव्वते सूरियं वरति आहितेति वदेज्जा, एवं एएणं अभिलावेणं गोतव्वं जाव पव्वतराये णं पव्वते सूरियं वरयति आहितेति वदेज्जा, तं एगे एवमाहंसु १ । वयं पुण एवं वदामो–ता मंदरेवि पवुच्चति तहेव जाव पव्वतराएवि पवुच्चति २ । ता जे णं पोग्गला सूरियस्स लेसं फुसंति ते पोग्गला सूरियं वरयंति, आदिट्ठावि णं पोग्गला सूरियं वरयंति, चरमलेसंतरगतावि णं पोग्गला सूरियं वरयंति ३ ॥ सूत्रं २८ ॥ सत्तमं पाहुडं समत्तं ॥७॥

॥ अथ अष्टमं प्राभृतम् ॥

ता कहं ते उदयसंठिती आहितेति वदेज्जा ?, तत्थ खलु इमाओ तिरिण पडिवत्तीओ पराणत्ताओ, तत्थेगे एवमाहंसु, ता जया णं जंबुद्दीवे २ दाहिणड्ढे अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवति तता णं उत्तरड्ढे वि अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवति, जया णं उत्तरड्ढे अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवति तया णं दाहिणड्ढे ऽवि अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवति, जदा णं जंबुद्दीवे २ दाहिणड्ढे सत्तरसमुहुत्ते दिवसे भवति तया णं उत्तरड्ढे वि सत्तरसमुहुत्ते दिवसे भवति, जया णं उत्तरड्ढे सत्तरसमुहुत्ते दिवसे भवति तदा णं दाहिणड्ढे वि सत्तरसमुहुत्ते दिवसे भवति, एवं परिहावेतव्वं, सोलसमुहुत्ते दिवसे पराणरसमुहुत्ते

दिवसे चउदसमुहुत्ते दिवसे तेरसमुहुत्ते दिवसे जाव ता जया णं जंबुद्दीवे २ दाहिणड्ढे बारसमुहुत्ते दिवसे तया णं उत्तरद्धेवि बारसमुहुत्ते दिवसे भवति, जता णं उत्तरद्धे बारसमुहुत्ते दिवसे भवति तता णं दाहिणद्धेवि बारसमुहुत्ते दिवसे भवति, तता णं दाहिणद्धे बारसमुहुत्ते दिवसे भवति तता णं जंबुद्दीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स पुरच्छिमपच्चत्थिमेणं सता पण्णरसमुहुत्ते दिवसे भवति सदा पण्णरसमुहुत्ता राई भवति, अवट्ठिता णं तत्थ राइंदिया पण्णत्ता समणाउसो !, एगे एवमाहंसु १, एगे पुण एवमाहंसु—जता णं जंबुद्दीवे २ दाहिणद्धे अट्ठारसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवति तया णं उत्तरद्धेवि अट्ठारसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ, जया णं उत्तरद्धे अट्ठारसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ तता णं दाहिणड्ढेवि अट्ठारसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ एवं परिहावेतव्वं, सत्तरसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवति, सोलसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवति, पण्णरसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवति, चोद्दसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवति, तेरसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवति, जया णं जंबुद्दीवे २ दाहिणद्धे बारसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवति तदा णं उत्तरद्धेवि बारसमुहुत्ताणंतरे दिवसे, जता णं उत्तरद्धे बारसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ तया णं दाहिणद्धेवि बारसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवति तदा णं जंबुद्दीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमपच्चत्थिमे णं णो सदा पण्णरसमुहुत्ते दिवसे भवति णो सदा पण्णरसमुहुत्ता राई भवति, अणवट्ठिता णं तत्थ राइंदिया पण्णत्ता, समणाउसो !, एगे एवमाहंसु २, एगे पुण एवमाहंसु—ता जया णं जंबुद्दीवे २ दाहिणड्ढे अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवति तदा णं उत्तरद्धे दुवालसमुहुत्ता राई भवति, जया णं उत्तरड्ढे अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवति तदा णं दाहिणड्ढे बारसमुहुत्ता राई भवइ, जया णं दाहिणड्ढे अट्ठारसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवति तदा णं उत्तरद्धे बारसमुहुत्ता राई भवइ, जता णं उत्तरद्धे अट्ठारसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवति तदा णं दाहिणद्धे बारसमुहुत्ता राई भवति, एवं णेतव्वं सगलेहि य

अणंतरेहि य एक्केक्के दो दो आलावका, सव्वहिं दुवालसमुहुत्ता राई भवति, जाव ता जता णं जंबुद्दीवे २ दाहिणद्धे बारसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवति तदा णं उत्तरद्धे दुवालसमुहुत्ता राई भवति, जया णं उत्तरद्धे दुवालसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवति तदा णं दाहिणद्धे दुवालसमुहुत्ता राई भवति, तता णं जंबुद्दीवे २ मन्दरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमपच्चत्थिमे णं णेवत्थि पराणरसमुहुत्ते दिवसे भवति णेवत्थि पराणरसमुहुत्ता राई भवति, वोच्छिराणा णं तत्थ राइंदिया पराणत्ता, समणाउसो! एगे एवमाहंसु ३, १। वयं पुण एवं वदामो, ता जंबुद्दीवे २ सूरिया उदीणपाईणमुग्गच्छंति पाईणदाहिणमागच्छंति, पाईणदाहिणमुग्गच्छंति दाणिपडीणमागच्छंति दाहिणपडीणमुग्गच्छंति पडीणउदीणमागच्छंति पडीणउदीणमुग्गच्छंति उदीणपाईणमागच्छंति २। ता जता णं जंबुद्दीवे २ दाहिणद्धे दिवसे भवति तदा णं उत्तरद्धे दिवसे भवति, जदा णं उत्तरद्धे दिवसे भवति तदा णं जंबुद्दीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स पुरच्छिमपच्चच्छिमे णं राई भवति ३। ता जया णं जंबुद्दीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमे णं दिवसे भवति तदा णं पच्चच्छिमेणवि दिवसे भवति, जया णं पच्चत्थिमे णं दिवसे भवति तदा णं जंबुद्दीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरदाहिणे णं राई भवति ४। ता जया णं दाहिणद्धेवि उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवति तया णं उत्तरद्धे उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवति, जदा उत्तरद्धे उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवति तदा णं जंबुद्दीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमे णं जहरिणया दुवालसमुहुत्ता राई भवति ५। ता जया णं जंबुद्दीवे २ मंदरस्स पव्वतस्स पुरच्छिमे णं उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवति तता णं पच्चत्थिमेणवि उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवति ६। जता णं पच्चत्थिमे णं उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवति तता णं जंबुद्दीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरदाहिणे णं जहरिणया दुवालसमुहुत्ता राई भवति, एवं एएणं गमेणं णेतव्वं

७। अट्ठारसमुहुत्ताणंतरे दिवसे सातिरेगदुवालसमुहुत्ता राई भवति, सत्तरस-मुहुत्ते दिवसे तेरसमुहुत्ता राई, सत्तरसमुहुत्ताणंतरे दिवसे सातिरेगतेरस-मुहुत्ता राई, सोलसमुहुत्ते दिवसे चोद्दसमुहुत्ता राई, सोलसमुहुत्ताणंतरे दिवसे सातिरेगचोद्दसमुहुत्ता राई, पराणरसमुहुत्ते दिवसे पराणरसमुहुत्ता राई, पराणरसमुहुत्ताणंतरे दिवसे सातिरेगपराणरसमुहुत्ता राई भवइ, चउद्दसमुहुत्ते दिवसे सोलसमुहुत्ता राई, चोद्दसमुहुत्ताणंतरे दिवसे सातिरेगसोलसमुहुत्ता राई, तेरसमुहुत्ते दिवसे सत्तरसमुहुत्ता राई, तेरसमुहुत्ताणंतरे दिवसे सातिरेगसत्तरसमुहुत्ता राई, जहराणए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवति उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई भवई, एवं भणितव्वं ८। ता जया णं जंबुद्दीवे २ दाहिणद्धे वासाणं पढमे समए पडिवज्जति तता णं उत्तरद्धेवि वासाणं पढमे समए पडिवज्जति ९। जता णं उत्तरद्धे वासाणं पढमे समए पडिवज्जति तता णं जंबुद्दीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स पुरच्छिम-पच्चत्थिमे णं अणंतरपुरक्खडकालसमयंसि वासाणं पढमे समए पडिवज्जइ १०। ता जया णं जंबुद्दीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स पुरच्छिमे णं वासाणं पढमे समए पडिवज्जइ तता णं पच्चत्थिमेणवि वासाणं पढमे समए पडिवज्जइ ११। जया णं पच्चत्थिमे णं वासाणं पढमे समए पडिवज्जइ तता णं जंबु-द्दीवे २ मंदरदाहिणे णं अणंतरपच्छाकयकालसमयंसि वासाणं पढमे समए पडिवराणे भवति १२। जहा समओ एवं आवलिया आणापाणू थोवे लवे मुहुत्ते अहोरत्ते पक्खे मासे उऊ, एवं दस आलावगा जहा वासाणं एवं हेमंताणं गिम्हाणं च भाणितव्वा १३। ता जता णं जंबुद्दीवे २ दाहिणद्धे पढमे अयणे पडिवज्जति तदा णं उत्तरद्धेवि पढमे अयणे पडि-वज्जइ १४। जता णं उत्तरद्धे पढमे अयणे पडिवज्जति तदा णं दाहिणद्धेवि पढमे अयणे पडिवज्जइ १५। जता णं उत्तरद्धे पढमे अयणे पडिवज्जति तता णं जंबुद्दीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमपच्चत्थिमे णं अणंतर-

पुरक्खडकालसमयंसि पढमे अयणे पडिवज्जति १६ । ता जया णं जंबुद्दीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमे णं पढमे अयणे पडिवज्जति तता णं पच्चत्थिमेणवि पढमे अयणे पडिवज्जइ १७। जया णं पच्चत्थिमे णं पढमे अयणे पडिवज्जइ तदा णं जंबुद्दीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरदाहिणे णं अणंतरपच्छाकडकालसमयंसि पढमे अयणे पडिवण्णे भवति १८। जहा अयणे तहा संवच्छरे जुगे वाससते, एवं वाससहस्से वाससयसहस्से पुव्वंगे पुव्वे एवं जाव सीसपहेलिया पलितोवमे सागरोवमे १९ । ता जया णं जंबुद्दीवे २ दाहिणड्ढे उस्सप्पिणी पडिवज्जति तता णं उत्तरद्धेवि उस्सप्पिणी पडिवज्जति २० । जता णं उत्तरद्धे उस्सप्पिणी पडिवज्जति तता णं जंबुद्दीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमपच्चत्थिमे णं णेवत्थि ओसप्पिणी णेव अत्थि उस्सप्पिणी अवट्ठिते णं तत्थ काले पण्णत्ते समणाउसो !, एवं उस्सप्पिणीवि २१ । ता जया णं लवणे समुद्दे दाहिणद्धे दिवसे भवति तता णं लवणसमुद्दे उत्तरद्धे दिवसे भवति २२ । जता णं उत्तरद्धे दिवसे भवति तता णं लवणसमुद्दे पुरच्छिमपच्चत्थिमे णं राई भवति २३ । जहा जंबुद्दीवे २ तहेव जाव उस्सप्पिणी २४ । तहा धायइसंडे णं दीवे सूरिया ओदीणपाइणमुग्गच्छंति तहेव २५ । ता जता णं धायइसंडे दीवे दाहिणद्धे दिवसे भवति तता णं उत्तरद्धेवि दिवसे भवति २६ । जता णं उत्तरद्धे दिवसे भवति तता णं धायइसंडे दीवे मंदराणं पव्वताणं पुरत्थिमपच्चत्थिमेणं राई भवति २७ । एवं जंबुद्दीवे २ जहा तहेव जाव उस्सप्पिणी २८ । कालोए णं जहा लवणे समुद्दे तहेव २९ । ता अब्भंतरपुक्खरद्धे णं सूरिया उदीणपाईणमुग्गच्छंति तहेव ३० । ता जया णं अब्भंतरपुक्खरद्धे णं दाहिणद्धे दिवसे भवति तदा णं उत्तरद्धेवि दिवसे भवति ३१ । जता णं उत्तरद्धेवि दिवसे भवति तता णं अब्भिंतरपुक्खरद्धे मंदराणं पव्वताणं पुरत्थिमपच्चत्थिमे णं राई भवति सेसं जहा जंबुद्दीवे तहेव जाव उस्सप्पिणीओसप्पिणीओ ३२ ॥ सूत्रं २९ ॥ अट्ठमं पाहुडं समत्तं ॥ ८ ॥

॥ अथ नवमं प्राभृतम् ॥

ता कतिकट्ठं ते सूरिए पोरिसीच्छायं णिव्वत्तेति आहितेति वदेज्जा ?, तत्थ खलु इमाओ तिण्णि पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ, तत्थेगे एवमाहंसु—जे णं पोग्गला सूरियस्स लेसं फुसंति ते णं पोग्गला संतप्पंति, ते णं पोग्गला संतप्पमाणा तदणंतराइं बाहिराइं पोग्गलाइं संतावेंतीति एस णं से समिते तावक्खेत्ते एगे एवमाहंसु १। एगे पुण एवमाहंसु—ता जे णं पोग्गला सूरियस्स लेसं फुसंति ते णं पोग्गला नो संतप्पंति, ते णं पोग्गला असंतप्पमाणा तदणंतराइं बाहिराइं पोग्गलाइं णो संतावेंतीति एस णं से समिते तावक्खेत्ते एगे एवमाहंसु २, एगे पुण एवमाहंसु ता जे णं पोग्गला सूरियस्स लेसं फुसंति ते णं पोग्गला अत्थेगतिया णो संतप्पंति अत्थेगतिया संतप्पंति, तत्थ अत्थेगइआ संतप्पमाणा तदणंतराइं बाहिराइं पोग्गलाइं अत्थेगतियाइं संतावेंति अत्थेगतियाइं णो संतावेंति, एस णं से समिते तावक्खेत्ते, एगे एवमाहंसु ३, १। वयं पुण एवं वदामो, ता जाओ इमाओ चंदिमसूरियाणं देवाणं विमाणेहिंतो लेसाओ बहित्ता उच्छूढा अभिणिसट्ठाओ पतावेंति, एतासि णं लेसाणं अंतरेसु अण्णतरीओ छिण्णलेसाओ संमुच्छंति, तते णं ताओ छिण्णलेस्साओ संमुच्छियाओ समाणीओ तदणंतराइं बाहिराइं पोग्गलाइं संतावेंतीति एस णं से समिते तावक्खेत्ते २ ॥ सूत्रं ३० ॥

ता कतिकट्ठे ते सूरिए पोरिसीच्छायं णिव्वत्तेति आहितेति वदेज्जा ?, तत्थ खलु इमाओ पणवीसं पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ, तत्थेगे एवमाहंसु ता अणुसमयमेव सूरिए पोरिसिच्छायं णिव्वत्तेइ आहितेति वदेज्जा, एगे एवमाहंसु १, एगे पुण एवमाहंसु ता अणुमुहुत्तमेव सूरिए पोरिसिच्छायं णिव्वत्तेति आहितेति वदेज्जा, एतेणं अभिलावेणं णेतव्वं, ता जाओ चेव ओयसंठितीए पणुवीसं पडिवत्तीओ ताओ चेव णेतव्वाओ, जाव अणुउस्सप्पिणीमेव सूरिए

पोरिसीए च्छायं णिव्वत्तेत्ति आहितात्ति वदेज्जा, एगे एवमाहंसु २५, १ । वयं पुण एवं वदामो–ता सूरियस्स णं उच्चत्तं च लेसं च पडुच्च छाउद्दे से उच्चत्तं च छायं च पडुच्च लेसुद्दे से लेसं च छायं च पडुच्च उच्चत्तोद्दे से २ । तत्थ खलु इमाओ दुवे पडिवत्तीओ पराणत्ताओ, तत्थेगे एवमाहंसु–ता अत्थि णं से दिवसे जंसि णं दिवसंसि सूरिए चउपोरिसीच्छायं निव्वत्तेइ, अत्थि णं से दिवसे जंसि णं दिवसंसि सूरिए दुपोरिसीच्छायं णिव्वत्तेति एगे एवमाहंसु १, एगे पुण एवमाहंसु ता अत्थि णं से दिवसे जंसि णं दिवसंसि सूरिए दुपोरिसीच्छायं णिव्वत्तेति अत्थि णं से दिवसे जंसि दिवसंसि सूरिए नो किंचि पोरिसिच्छायं णिव्वत्तेति २, २ । तत्थ जे ते एवमाहंसु ता अत्थि णं से दिवसे जंसि णं दिवसंसि सूरिए चउपोरिसियं छायं णिव्वत्तेति, अत्थि णं से दिवसे जंसि णं दिवसंसि सूरिए दोपोरिसियं छायं निव्वत्तेइ ते एवमाहंसु ३ । ता जता णं सूरिए सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति तता णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसिए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवति, जहरिणया दुवालसमुहुत्ता राई भवति, तेसिं च णं दिवसंसि सूरिए चउपोरिसीयं छायं निव्वत्तेति, ता उग्गमणमुहुत्तंसि य अत्थमणमुहुत्तंसि य लेसं अभिवड्ढेमाणे नो चेव णं णिव्वुड्ढेमाणे ४ । ता जता णं सूरिए सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति तता णं उत्तमकट्ठपत्ता उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई भवति, जहराणए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवति, तंसि च णं दिवसंसि सूरिए दुपोरिसियं छायं निव्वत्तेइ, तंजहा–उग्गमणमुहुत्तंसि य अत्थमणमुहुत्तंसि य, लेसं अभिवड्ढेमाणे नो चेव णं निवुड्ढेमाणे ५ । तत्थ णं जे ते एवमाहंसु ता अत्थि णं से दिवसे जंसि णं दिवसंसि सूरिए दुपोरिसियं छायं णिव्वत्तेइ अत्थि णं से दिवसे जंसि णं दिवसंसि सूरिए णो किंचि पोरिसियं छायं णिव्वत्तेति ते एवमाहंसु ६ । ता जता णं सूरिए सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति तता णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसिए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे

भवति जहरिणाया दुवालसमुहुत्ता राई भवति, तंसि च णं दिवसंसि सूरिए दुपोरिसियं छायं णिव्वत्तेति, तंजहा—उग्गमणमुहुत्तंसि अत्थमणमुहुत्तंसि य लेसं अभिवड्ढेमाणे णो चेव णं णिव्वुड्ढेमाणे ७। ता जया णं सूरिए सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति तता णं उत्तमकट्ठपत्ता उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई भवति, जहराणए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवति तंसि च णं दिवसंसि सूरिए णो किंचि पोरिसियं छायं णिव्वत्तेति, तंजहा—उग्गमणमुहुत्तंसि य अत्थमणमुहुत्तंसि य, नो चेव णं लेसं अभिवुड्ढेमाणे वा निवुड्ढेमाणे वा ८। ता कइकट्ठं ते सूरिए पोरिसीच्छायं निव्वत्तेइ आहियत्ति वइज्जा ?, तत्थ इमाओ छराणउइ पडिवत्तीओ पराणत्ताओ, तत्थेगे एवमाहंसु, अत्थि णं ते से देसे जंसि णं देसंसि सूरिए एगपोरिसीयं छायं निव्वत्तेइ एगे एवमाहंसु, एगे पुण एवमाहंसु, ता अत्थि णं से देसे जंसि देसंसि सूरिए दुपोरिसियं छायं निव्वत्तेति, एवं एतेणं अभिलावेणं णेतव्वं, जाव छराणउतिं पोरिसियं छायं णिव्वत्तेति ९६, १। तत्थ जे ते एवमाहंसु ता अत्थि णं से देसे जंसि णं देसंसि सूरिए एगपोरिसियं छायं णिव्वत्तेति ते एवमाहंसु ता सूरियस्स णं सव्वहेट्ठिमातो सूरप्पडिहितो बहित्ता अभिणिसट्ठाहिं लेसाहिं ताडिज्जमाणीहिं इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ जावतियं सूरिए उड्ढं उच्चत्तेणं एवतियाए एगाए अद्धाए एगेणं छायाणुमाणप्पमाणेणं उमाए तत्थ से सूरिए एगपोरिसीयं छायं णिव्वत्तेति १०। तत्थ जे ते एवमाहंसु, ता अत्थि णं से देसे जंसि णं देसंसि सूरिए दुपोरिसिं छायं णिव्वत्तेति, ते एवमाहंसु—ता सूरियस्स णं सव्वहेट्ठिमातो सूरियपडिधीतो बहित्ता अभिणिसट्ठाहिं लेसाहिं ताडिज्जमाणीहिं इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जातो भूमिभागातो जावतियं सूरिए उड्ढं उच्चत्तेणं एवतियाहिं दोहिं अद्धाहिं दोहिं छायाणुमाणप्पमाणेहिं उमाए एत्थ णं से सूरिए दुपोरिसियं छायं णिव्वत्तेति ११। एवं णेयव्वं जाव

तत्थ जे ते एवमाहंसु ता अत्थि णं से देसे जंसि णं देसंसि सूरिए छराणउतिं पोरिसियं छायं णिव्वत्तेति ते एवमाहंसु–ता सूरियस्स णं सव्वहिट्ठिमातो सूरप्पडिधीओ बहित्ता अभिणिसट्टाहिं लेसाहिं ताडिज्जमाणीहिं इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जातो भूमिभागातो जावतियं सूरिए उड्ढं उच्चत्तेणं एवतियाहिं छराणवतीए छायाणुमाणप्पमाणेहिं उमाए एत्थ णं से सूरिए छराणउतिं पोरिसियं छायं णिव्वत्तेति एगे एवमाहंसु १२ । वयं पुण एवं वदामो, सातिरेगअउणट्ठिपोरिसीणं सूरिए पोरिसीच्छायं णिव्वत्तेति १३। अवड्ढपोरिसी णं छाया दिवसस्स किं गते वा सेसे वा ? ता तिभागे गते वा सेसे वा १४। ता पोरिसी णं छाया दिवसस्स कि गते वा सेसे वा ?, ता चउब्भागे गते वा सेसे वा १५ । ता दिवड्ढपोरिसी णं छाया दिवसस्स किं गते वा सेसे वा ?, ता पंचमभागे गते वा सेसे वा १६ । एवं अद्धपोरिसिं छोढुं पुच्छा दिवसभागं छोढुं वाकरणं जाव ता अद्धअउणासट्ठि-पोरिसीछायादिवसस्स किं गते वा सेसे वा ?, ता एगूण-वीससतभागे गते वा सेसे वा १७। ता अउणसट्ठिपोरिसी णं छाया दिवसस्स किं गते वा सेसे वा बावीसहस्सभागे गते वा सेसे वा १८। ता सातिरेग-अउणसट्ठिपोरिसी णं छाया दिवसस्स किं गते वा सेसे वा ?, ता णत्थि किंचि गते वा सेसे वा १९ । तत्थ खलु इमा पणवीसनिविट्ठा छाया पराणत्ता, तंजहा–खंभछाया रज्जुछाया पागारछाया पासायछाया उवग्ग(तर) छाया उच्चत्तछाया अणुलोमछाया पडिलोमछाया आरुभिता उवहिता समा पडिहता खीलच्छाया पक्खच्छाया पुरतोउदया पुरिमकंठभाउवगता पच्छिम-कंठभाउवगता छायाणुवादिणी किट्ठाणुवादिणाछाया छायछाया छाया-विकंप्पो वेहासछाया कडछाया गोलछाया पीट्ठओदग्गा २०। तत्थ णं गोलच्छाया अट्ठविहा पराणत्ता, तंजहा–गोलच्छाया अवड्ढगोलच्छाया गोल(गाढल)गोलछाया अवड्ढगोल(गाढल)गोलछाया गोलावलिच्छाया

अवड्ढगोलावलिच्छाया गोलपुंजच्छाया अवड्ढगोलपुंजच्छाया २१ ॥सूत्रं २१॥ गावमं पाहुडं समत्तं ॥ ९ ॥

॥ अथ दशमप्राभृते प्रथमं प्राभृतप्राभृतम् ॥

ता जोगेति वत्थुस्स आवलिगाणिवाते आहितेति वदेज्जा, ता कहं ते जोगेति वत्थुस्स आवलियाणिवाते आहितेति वदेज्जा ?, तत्थ खलु इमाओ पंच पडिवत्तीओ पन्नत्ताओ, तत्थेगे एवमाहंसु ता सव्वेवि णं णक्खत्ता कत्तियादिया भरणिपज्जवसाणा एगे एवमाहंसु १, एगे पुण एवमाहंसु, ता सव्वेवि णं णक्खत्ता महादीया अस्सेसपज्जवसाणा पराणत्ता, एगे एवमाहंसु २ । एगे पुण एवमाहंसु, ता सव्वेवि णं णक्खत्ता धणिट्ठादीया सवणपज्जवसाणा पराणत्ता, एगे एवमाहंसु ३, एगे पुण एवमाहंसु—ता सव्वेवि णं णक्खत्ता अस्सिणीआदीया रेवतिपज्जवसाणा पराणत्ता, एगे एवमाहंसु ४, एगे पुण एवमाहंसु—सव्वेवि णं णक्खत्ता भरणीआदिया अस्सिणीपज्जवसाणा एगे एवमाहंसु ५, १ । वयं पुण एवं वदामो, सव्वेवि णं णक्खत्ता अभिईआदीया उत्तरासाढापज्जवसाणा पराणत्ता, तंजहा—अभिई सवणो जाव उत्तरासाढा २ ॥ सूत्रं ३२ ॥ दसमस्स पढमं पाहुडपाहुडं समत्तं ॥१०—१॥

॥ अथ दशमप्राभृते द्वितीयं प्राभृतप्राभृतम् ॥

ता कहं ते मुहुत्ता य आहितेति वदेज्जा ?, ता एतेसि णं अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं अत्थि णक्खत्ते जेणं णव मुहुत्ते सत्तावीसं च सत्तट्ठिभागे मुहुत्तस्स चंदेणं सद्धिं जोयं जोएंति, अत्थि णक्खत्ता जे णं पराणरस-मुहुत्ते चंदेणं सद्धिं जोयं जोएंति अत्थि णक्खत्ता जे णं तीसं मुहुत्ते चंदेणं सद्धिं जोयं जोएंति, अत्थि णक्खत्ता जे णं पणतालीसे मुहुत्ते चंदेणं सद्धिं जोएंति १ । ता एएसि णं अट्ठावीसाए नक्खत्ताणं कयरे नक्खत्ते जे णं नवमुहुत्ते सत्तावीसं च सत्तट्ठिभाए मुहुत्तस्स चंदेणं सद्धिं जोएंति ?, कयरे

नक्खत्ता जे णं पराणरसमुहुत्ते चंदेणं सद्धिं जोगं जोएंति ? कतरे नक्खत्ता जे णं तीसं मुहुत्ते चंदेण सद्धिं जोगं जोइंति ?, कतरे नक्खत्ता जे णं पणयालीसं मुहुत्ते चंदेण सद्धिं जोयं जोइंति ?, ता एएसि णं अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं तत्थ जे ते णक्खत्ते जे णं णव मुहुत्ते सत्तावीसं च सत्तट्ठिभागे मुहुत्तस्स चंदेण सद्धिं जोयं जोएंति से णं एगे अभीयी २ । तत्थ जे ते णक्खत्ता जे णं पराणरसमुहुत्ते चंदेण सद्धिं जोयं जोएंति ते णं छ, तंजहा—सतभिसया भरणी अद्दा अस्सेसा सांति जेट्ठा ३ । तत्थ जे ते णक्खत्ता जे णं तीसं मुहुत्तं चंदेण सद्धिं जोयं जोयंति ते पराणरस, तंजहा—सवणो धणिट्ठा पुव्वा भद्दवता रेवति अस्सिणी कत्तिया मग्गसिर पुस्सो महा पुव्वाफग्गुणी हत्थो चित्ता अणुराहा मूलो पुव्वआसाढा ४ । तत्थ जे ते णक्खत्ता जे णं पणतालीसं मुहुत्ते चंदेण सद्धिं जोगं जोएंति ते णं छ, तंजहा—उत्तराभद्दपदा रोहिणी पुणव्वसू उत्तराफग्गुणी विसाहा उत्तरासाढा ५ ॥ सूत्रं ३३ ॥ ता एतेसि णं अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं अत्थि णक्खत्ते जे णं चत्तारि अहोरत्ते छच्च मुहुत्ते सूरेण सद्धिं जोयं जोएंति, अत्थि णक्खत्ता जे णं छ अहोरत्ते एक्कवीसं च मुहुत्ते सूरेण सद्धिं जोयं जोएंति, अत्थि णक्खत्ता जे णं तेरस अहोरत्ते बारस य मुहुत्ते सूरेण सद्धिं जोय जोयंति, अत्थि णक्खत्ता जे णं वीसं अहोरत्ते तिरिण य मुहुत्ते सूरेण सद्धिं जोयं जोएंति १ । ता एतेसि णं अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं कतरे णक्खत्ते जं चत्तारि अहोरत्ते छच्च मुहुत्ते सूरेण सद्धिं जोयं जोएंति ? कतरे णक्खत्ते जे णं छ अहोरत्ते एक्कवीसमुहुत्ते सूरेणं सद्धिं जोयं जोएंति ?, कतरे णक्खत्ता जे णं तेरस अहोरत्ते बारस मुहुत्ते सूरेण सद्धिं जोयं जोएंति ? कतरे णक्खत्ता जे णं वीसं अहोरत्ते सूरेण सद्धिं जोयं जोएंति ? ता एतेसि णं अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं तत्थ जे से णक्खत्ते जे णं चत्तारि अहोरत्ते छच्च मुहुत्ते सूरेण सद्धिं जोयं जोएंति से णं अभीयी २ ।

तत्थ जे ते णक्खत्ता जे णं छ अहोरत्ते एक्कवीसं च मुहुत्ते सूरिएण सद्धिं जोयं जोएंति ते णं छ, तंजहा–सतभिसया भरणी अद्दा अस्सेसा साती जेट्ठा ३। तत्थ जे ते तेरस अहोरत्ते दुवालस य मुहुत्ते सूरेण सद्धिं जोयं जोएंति ते णं पण्णरस, तंजहा–सवणो धणिट्ठा पुव्वाभद्दवता रेवती अस्सिणी कत्तिया मग्गसिरं पूस्सो महा पुव्वाफग्गुणी हत्थो चित्ता अणुराधा मूलो पुव्वाआसाढा ४। तत्थ जे ते णक्खत्ता जे णं वीसं अहोरत्ते तिण्णि य मुहुत्ते सूरेण सद्धिं जोयं जोएंति ते णं छ, तंजहा–उत्तराभद्दवता रोहिणी पुणव्वसू उत्तराफग्गुणी विसाहा उत्तरासाढा ५ ॥ सूत्रं ३४ ॥ दसमस्स बितीयमिति ॥ १०-२ ॥

॥ अथ दशमप्राभृते तृतीयं प्राभृतप्राभृतम् ॥

ता कहं ते एवंभागा आहितातिं वदेज्जा ?, ता एतेसि णं अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं अत्थि णक्खत्ता पुव्वंभागा समक्खेत्ता तीसइमुहुत्ता पण्णत्ता, अत्थि णक्खत्ता पच्छंभागा समक्खेत्ता तीसइमुहुत्ता पण्णत्ता, अत्थि णक्खत्ता णत्तंभागा अवड्ढखेत्ता पण्णरसमुहुत्ता पण्णत्ता, अत्थि णक्खत्ता उभयंभागा दिवड्ढखेत्ता पणतालीसं मुहुत्ता पण्णत्ता १। ता एएसि णं अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं कतरे णक्खत्ता पुव्वंभागा समक्खेत्ता तीसतिमुहुत्ता पण्णत्ता ? कतरे णक्खत्ता पच्छंभागा समक्खेत्ता तीसइमुहुत्ता पण्णत्ता ? कतरे णक्खत्ता णत्तंभागा अवड्ढखेत्ता पण्णरसमुहुत्ता पण्णत्ता ? कतरे नक्खत्ता उभयंभागा दिवड्ढखेत्ता पणतालीसतिमुहुत्ता पण्णत्ता ?, ता एतेसि णं अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं तत्थ जे ते णक्खत्ता पुव्वंभागा समक्खेत्ता तीसतिमुहुत्ता पण्णत्ता, ते णं छ, तंजहा–पुव्वापोट्ठवता कत्तिया मघा पुव्वाफग्गुणी मूलो पुव्वासाढा २। तत्थ जे णक्खत्ता पच्छंभागा समक्खेत्ता तीसतिमुहुत्ता पण्णत्ता, ते णं दस, तंजहा–अभिई सवणो धणिट्ठा रेवती

अस्सिणी मिगसिरं पूसो हत्थो चित्ता अणुराधा ३। तत्थ जे ते णक्खत्ता णत्तंभागा अद्धक्खेत्ता पण्णरसमुहुत्ता पण्णत्ता, ते णं छ, तंजहा–सयभिसया भरणी अद्दा अस्सेसा साती जेट्ठा ४। तत्थ जे ते णक्खत्ता उभयंभागा दिवड्ढखेत्ता पणतालीसं मुहुत्ता पण्णत्ता, ते णं छ, तंजहा–उत्तरापोट्ठवता रोहिणी पुणव्वसू उत्तराफग्गुणी विसाहा उत्तरासाढा ५ ॥ सूत्रं ३५ ॥ दसमस्स ततियं पाहुडपाहुडं समत्तं ॥ १०–३ ॥

॥ अथ दशमप्राभृते चतुर्थं प्राभृतप्राभृतम् ॥

ता कहं ते जोगस्स आदी आहिताति वदेज्जा ?, ता अभियीसवणा खलु दुवे णक्खत्ता पच्छाभागा समखित्ता सातिरेग-ऊतालीसतिमुहुत्ता तप्पढमयाए सायं चंदेण सद्धिं जोयं जोएंति, ततो पच्छा अवरं सातिरेयं दिवसं, एवं खलु अभिईसवणा दुवे णक्खत्ता एगराइं एगं च सातिरेगं दिवसं चंदेण सद्धिं जोगं जोएंति, जोयं जोएत्ता जोयं अणुपरियट्टंति जोयं अणुपरियट्टित्ता सायं चंदं धणिट्ठाणं समप्पंति १। ता धणिट्ठा खलु णक्खत्ते पच्छंभागे समक्खेत्ते तीसतिमुहुत्ते तप्पढमयाए सायं चंदेण सद्धिं जोगं जोएति, चंदेण सद्धिं जोगं जोएत्ता ततो पच्छाराइं अवरं च दिवसं एवं खलु धणिट्ठाणक्खत्ते एगं च राइं एगं च दिवसं चंदेण सद्धिं जोयं जोएति जोएत्ता जोयं अणुपरियट्टिति जोयं अणुपरियट्टित्ता सायं चंदं सतभिसयाणं समप्पेति २। ता सयभिसया खलु णक्खत्ते णत्तंभागे अवड्ढखेत्ते पण्णरसमुहुत्ते पढमताए सायं चंदेण सद्धिं जोएति णो लभति अवरं दिवसं, एवं खलु सयभिसया णक्खत्ते एगं च राइं चंदेण सद्धिं जोयं जोएति, जोयं जोएत्ता जोयं अणुपरियट्टति, जोयं अणुपरियट्टित्ता तो चंदं पुव्वाणं पोट्ठवताणं समप्पेति ३। ता पुव्वापोट्ठवता खलु नक्खत्ते पुव्वंभागे समक्खेत्ते तीसतिमुहुत्ते तप्पढमताए पातो चंदेणं सद्धिं जोयं जोएति, ततो

पच्छा अवरराइं, एवं खलु पुव्वापोट्ठवता णक्खत्ते एगं च दिवसं एगं च राइं चंदेणं सद्धिं जोयं जोएति २ त्ता जोयं अणुपरियट्टति २ पातो चंदं उत्तरा-पोट्ठवताणं समप्पेति ४ । ता उत्तरपोट्ठवता खलु नक्खत्ते उभयंभागे दिवड्ढ-खेत्ते पणतालीसमुहुत्ते तप्पढमयाए पातो चंदेण सद्धिं जोयं जोएति अवरं च रातिं ततो पच्छा अवरं दिवसं, एवं खलु उत्तरापोट्ठवताणक्खत्ते दो दिवसे एगं च राइं चंदेण सद्धिं जोयं जोएति जोइत्ता जोयं अणुपरियट्टति त्ता सायं चंदं रेवतीणं समप्पेति ५ । ता रेवती खलु णक्खत्ते पच्छंभागे समक्खेत्ते तीसतिमुहुत्ते तप्पढमताए सागं चंदेणं सद्धिं जोयं जोएति, ततो पच्छा अवरं दिवसं, एवं खलु रेवतीणक्खत्ते एगं राइं एगं च दिवसं चंदेण सद्धिं जोयं जोएति २ त्ता जोयं अणुपरियट्टति २ त्ता सागं चंदं अस्सिणीणं समप्पेति ६ । ता अस्सिणी खलु णक्खत्ते पच्छिमभागे समखेत्ते तीसतिमुहुत्ते तप्पढमताए सागं चंदेण सद्धिं जोयं जोएति, ततो पच्छा अवरं दिवसं, एवं खलु अस्सिणीणक्खत्ते एगं च राइं एगं च दिवसं चंदेण सद्धिं जोयं जोएति २ त्ता जोगं अणुपरियट्टइ २ त्ता सागं चंदं भरणीणं समप्पेति ७ । ता भरणी खलु णक्खत्ते णत्तंभागे अवड्ढखेत्ते पणणारसमुहुत्ते तप्पढमताए सागं चंदेण सद्धिं जोयं जोएति, णो लभति अवरं दिवसं, एवं खलु भरणी-णक्खत्ते एगं राइं चंदेणं सद्धिं जोयं जोएति २ त्ता जोयं अणुपरियट्टति २ त्ता पादो चंदं कत्तियाणं समप्पेति ८ । ता कत्तिया खलु णक्खत्ते पुव्वंभागे समक्खित्ते तीसइमुहुत्ते तप्पढमताए सागं चंदेणं सद्धिं जोगं जोएति ततो पच्छा राइं, एवं खलु कत्तिया नक्खत्ते एगं दिवसं एगं च राइं चंदेण सद्धिं जोयं जोएति २ त्ता जोयं अणुपरियट्टइ २ त्ता पादो चंदं रोहिणीणं समप्पेति ९ । रोहिणी जहा उत्तरभद्दवता, मगसिरं जहा धणिट्ठा, अद्दा जहा सतभिसया, पुणव्वसु जहा उत्तराभद्दवता, पुस्सो जहा धणिट्ठा, असलेसा जहा सतभिसया, मघा जहा पुव्वाफग्गुणी, पुव्वाफग्गुणी जहा

पुव्वाभद्दवया, उत्तराफग्गुणी जहा उत्तरभद्दवता, हत्थो चित्ता य जहा धणिट्ठा, साती जहा सतभिसया विसाहा जहा उत्तरभद्दवदा अणुराहा जहा धणिट्ठा, जिट्ठा जहा सयभिसया, मूलो जहा पुव्वभद्दवया पुव्वासाढा(मूला पुव्वासाढा य) जहा पुव्वभद्दपदा, उत्तरासाढा जहा उत्तरभद्दवता १० ॥ सूत्रं ३६ ॥ दसमस्स चउत्थं पाहुडपाहुडं समत्तं ॥ १०–४ ॥

॥ अथ दशमप्राभृते पञ्चमं प्राभृतप्राभृतम् ॥

ता कहं ते कुला आहितातिं वदेज्जा ?, तत्थ खलु इमे बारस कुला बारस उवकुला चत्तारि कुलोवकुला १ । बारस कुला, तंजहा–धणिट्ठाकुलं उत्तराभद्द(पोट्ठ)वताकुलं अस्सिणीकुलं कत्तियाकुलं संठाणाकुलं पुस्साकुलं महाकुलं उत्तराफग्गुणीकुलं चित्ताकुलं विसाहाकुलं मूलाकुलं उत्तरासाढाकुलं २। बारस उवकुला, तंजहा–सवणो उवकुलं पुव्वपोट्ठवताउवकुलं रेवतीउवकुलं भरणीउवकुलं पुणव्वसुउवकुलं अस्सेसाउवकुलं पुव्वाफग्गुणीउवकुलं हत्थोउवकुलं सातीउवकुलं जेट्ठाउवकुलं पुव्वासाढाउवकुलं ३ । चत्तारि कुलोवकुला, तंजहा–अभीयीकुलोवकुलं सतभिसयाकुलोवकुलं अद्दाकुलोवकुलं अणुराधाकुलोवकुलं ४ ॥ सूत्रं ३७ ॥ दसमस्स पाहुडस्स पंचमं पाहुडपाहुडं समत्तं ॥ १०–५ ॥

॥ अथ दशमप्राभृते षष्ठं प्राभृतप्राभृतम् ॥

ता कहं ते पुण्णिमासिणी आहितेति वदेज्जा ?, तत्थ खलु इमाओ बारस पुण्णिमासिणीओ बारस अमावासाओ पण्णत्ताओ, तंजहा–साविट्ठी, पोट्ठवती आसोया कत्तिया मग्गसिरी पोसी माही फग्गुणी चेती विसाही जेट्ठामूली आसाढी १ । ता साविट्ठिण्णं पुण्णमासिं कति णक्खत्ता जोएंति ?, ता तिण्णि णक्खत्ता जोइंति, तंजहा–अभिई सवणो धणिट्ठा २ । ता पुट्ठवतीण्णं पुण्णिमं कति णक्खत्ता जोएंति ?, ता तिन्नि नक्खत्ता जोयंति,

तंजहा–सतिभिसया पुव्वासाढवती उत्तरापुट्ठवता ३। ता आसोदिराणं पुरिणमं कति णक्खत्ता जोएंति ?, ता दोरिण णक्खत्ता जोएंति ?, तंजहा–रेवती य अस्सिणी य ४। कत्तियराणं पुरिणमं कति णक्खत्ता जोएंति ?, ता दोरिण णक्खत्ता जोएंति, तंजहा–भरणी कत्तिया य ५। ता मागसिरीपुन्निमं कति णक्खत्ता जोएंति ?, ता दोरिण णक्खत्ता जोएंति तंजहा–रोहिणी मग्गसिरो य ६। ता पोसिराणं पुरिणमं कति णक्खत्ता जोएंति ?, ता तिरिण णक्खत्ता जोएंति, तंजहा–अद्दा पुणव्वसू पुस्सो ७। ता माहिराणं पुरिणमं कति णक्खत्ता जोएंति ?, ता दोरिण नक्खत्ता जोयंति, तंजहा–अस्सेसा महा य ८। ता फग्गुणीराणं पुरिणमं कति णक्खत्ता जोएंति ?, ता दुन्नि नक्खत्ता जोएंति, तंजहा–पुव्वाफग्गुणी उत्तरा-फग्गुणी य ९। ता चित्तिराणं पुरिणमं कति णक्खत्ता जोएंति ?, ता दोरिण नक्खत्ता जोएंति, तंजहा–हत्थो चित्ता य १०। ता विसाहिराणं पुरिणमं कति णक्खत्ता जोएंति ?, दोरिण णक्खत्ता जोएंति, तंजहा–साती विसाहा य ११। ता जेट्ठामूलिराणं पुरिणमासिराणं कति णक्खत्ता जोएंति ?, ता तिन्नि णक्खत्ता जोयंति, तंजहा–अणुराहा जेट्ठा मूलो १२। आसा-ढिराणं पुरिणमं कति णक्खत्ता जोएंति ?, ता दो णक्खत्ता जोएंति, तंजहा–पुव्वासाढा उत्तरासाढा १३ ॥ सूत्रं ३८ ॥ ता साविट्ठिराणं पुरिणमासिं णं किं कुलं जोएति उवकुलं जोएति, कुलोवकुलं जोएति ?, ता कुलं वा जोएति उवकुलं वा जोएति कुलोवकुलं वा जोएति, कुलं जोएमाणे धणिट्ठाणक्खत्ते जोएति उवकुलं जोएमाणे सवणे णक्खत्ते जोएति, कुलोवकुलं जोएमाणे अभिईणक्खत्ते जोएति, साविट्ठिं पुरिणमं कुलं वा जोएति, उवकुलं वा जोएति कुलोवकुलं वा जोएति, कुलेण वा उवकुलेण वा कुलोवकुलेण वा जुत्ता साविट्ठी पुरिणमा जुत्तातिवत्तव्वं सिया १। ता पोट्ठवतिराणं पुरिणमं किं कुलं जोएति उवकुलं जोएति कुलोवकुलं वा जोएति ?, ता कुलं वा जोएति उवकुलं

वा जोएति कुलोवकुलं वा जोएति, कुलं जोएमाणे उत्तरापोट्ठवया णक्खत्ते जोएति, उवकुलं जोएमाणे पुव्वापुट्ठवता णक्खत्ते जोएति, कुलोवकुलं जोएमाणे सतभिसया णक्खत्ते जोएति, पोट्ठवतिरणं पुराणमासिं णं कुलं वा जोएति उवकुलं वा जोएति कुलोवकुलं वा जोएति, कुलेण वा जुत्ता ३ पुट्ठवता पुरिणमा जुत्ताति वत्तव्वं सिया २। ता आसोइं णं पुरिण-मासिणिं किं कुलं जोएति उवकुलं जोएति कुलोवकुलं जोएति, णो लभति कुलोवकुलं, कुलं जोएमाणे अस्सिणीणक्खत्ते जोएति, उवकुलं जोएमाणे रेवतीणक्खत्ते जोएति, आसोइं णं पुरिणमं च कुलं वा जोएति उवकुलं वा जोएति, कुलेण वा जुत्ता उवकुलेण वा जुत्ता अस्सोदिणी पुरिणमा जुत्तति वत्तव्वं सिया ३। एवं णेतव्वाओ जाव आसाढीपुन्निमा जुत्तति वत्तव्वं सिया ४। पोसं पुरिणमं जेट्ठामूलं पुरिणमं च कुलोवकुलंपि जोएति, अवसेसासु णत्थि कुलोवकुलं ५। ता साविट्ठिं णं अमावासं कति णक्खत्ता जोएंति ? दुन्नि नक्खत्ता जोएंति, तंजहा–अस्सेसा य महा य ६। एवं एतेणं अभि-लावेणं णेतव्वं, पोट्ठवतं दो णक्खत्ता जोएंति, तंजहा–पुव्वाफग्गुणी उत्तरा-फग्गुणी, अस्सोइं हत्थो चित्ता य, कत्तियं साती विसाहा य, मग्गसिरं अणु-राधा जेट्ठामूलो, पोसिं पुव्वासाढा उत्तरासाढा, माहिं अभीयी सवणो धणिट्ठा, फग्गुणीं सतभिसया पुव्वपोट्ठवता उत्तरापोट्ठवता, चेत्तिं रेवती अस्सिणी, विसाहिं भरणी कत्तिया य, जेट्ठामूलं रोहिणी मगसिरं च ७। ता आसाढिं णं अमावासिं कति णक्खत्ता जोएंति ?, ता तिरिण णक्खत्ता जोएंति, तंजहा–अद्दा पुणव्वसू पुस्सो ८। ता साविट्ठिं णं अमावासं किं कुलं वा जोएति उवकुलं वा जोएति कुलोवकुलं वा जोएइ ?, कुलं वा जोएइ उवकुलं वा जोएइ नो लब्भइ कुलोवकुलं, कुलं जोएमाणे महाणक्खत्ते जोएति, उवकुलं वा जोएमाणे असिलेसा जोएइ, कुलेण वा जुत्ता उवकुलेण वा जुत्ता साविट्ठी अमावासा जुत्ताति वत्तव्वं सिया, एवं

णेतव्वं ९ । णवरं मग्गसिराए माहीए फग्गुणीए आसाढीए य अमावासाए कुलोवकुलंपि जोएंति, सेसेसु णत्थि १० ॥ सू० ३९ ॥ दसमस्स पाहुडस्स छट्ठं पाहुडपाहुडं समत्तं ॥ १०-६ ॥

॥ अथ दशमप्राभृते सप्तमं प्राभृतप्राभृतम् ॥

ता कहं ते सण्णिवाते आहितेति वदेज्जा ?, ता जया णं साविट्ठी-पुण्णिमा भवति तता णं माही अमावासा भवति, जया णं माही पुण्णिमा भवति तता णं साविट्ठी अमावासा भवति १ । जता णं पुट्ठवती पुण्णिमा भवति तता णं फग्गुणी अमावासा भवति, जया णं फग्गुणी पुण्णिमा भवति तता णं पुट्ठवती अमावासा भवति २ । जया णं आसोई पुण्णिमा भवति तता णं चेत्ती अमावासा भवति, जया णं चित्ती पुण्णिमा भवति तया णं आसोई अमावासा भवति ३ । जया णं कत्तियी पुण्णिमा भवति तता णं वेसाही अमावासा भवति, जता णं वेसाही पुण्णिमा भवति तता णं कत्तिया अमावासा भवति ४ । जया णं मग्गसिरी पुण्णिमा भवति तता णं जेट्ठामूले अमावासा भवति, जता णं जेट्ठामूले पुण्णिमा भवति तता णं मग्गसिरी अमावासा भवति ५ । जता णं पोसी पुण्णिमा भवति तता णं आसाढी अमावासा भवति, जता णं आसाढी पुण्णिमा भवति तता णं पोसी अमावासा भवति ६ ॥ सूत्रं ४० ॥ दसमस्स पाहुडस्स सत्तमं पाहुडपाहुडं समत्तं ॥ १०-७ ॥

॥ अथ दशमप्राभृते अष्टमं प्राभृतप्राभृतम् ॥

ता कहं ते नक्खत्तसंठिती आहितेति वदेज्जा ?, ता एएसि णं अट्ठा-वीसाए णक्खत्ताणं अभीयी णं णक्खत्ते किं संठिते पण्णत्ते ?, गोयमा ! गोसीसावलिसंठिते पण्णत्ते १ । सवणे णक्खत्ते किंसंठिते पण्णत्ते ?, काहारसंठिते पण्णत्ते २ । धणिट्ठाणक्खत्ते किंसंठिते पण्णत्ते ?, सउणिपली-

णगसंठिते पराणत्ते ३ । सयभिसयाणक्खत्ते किंसंठिते पराणत्ते ?, पुप्फोवयार-संठिते पराणत्ते ४ । पुव्वापोट्ठवताणक्खत्ते किंसंठिते पराणत्ते ?, अवड्ढवाविसंठिते पराणत्ते ५ । एवं उत्तरावि ६ । रेवतीणक्खत्ते किंसंठिते पराणत्ते ?, णावा-संठिते पराणत्ते ६ । अस्सिणीणक्खत्ते किंसंठिते पराणत्ते ?, आसक्खंधसंठिते पराणत्ते ७ । भरणीणक्खत्ते किंसंठिते पराणत्ते ?, भगसंठिए पराणत्ते ८ । कत्तियाणक्खत्ते किंसंठिते पराणत्ते ?, छुरघरगसंठिते पराणत्ते ९ । रोहिणी-णक्खत्ते ? किसंठिते पराणत्ते ?, सगडुद्धिसंठिते पराणत्ते १० । मिगसिरा-णक्खत्ते किंसंठिते पराणत्ते ?, मगसीसावलिसंठिते पराणत्ते ११ । अद्दा-णक्खत्ते किंसंठिते पराणत्ते ?, रुधिरबिंदुसंठिए पराणत्ते १२ । पुणव्वसू णक्खत्ते किंसंठिते पराणत्ते ?, तुलासंठिए पराणत्ते १३ । पुप्फे णक्खत्ते किंसंठिते पराणत्ते ?, वद्धमाणसंठिए पराणत्ते १४ । अस्सेसाणक्खत्ते किंसंठिए पराणत्ते ?, पडागसंठिए पराणत्ते १५ । महाणक्खत्ते किंसंठिए पराणत्ते ?, पागारसंठिते पराणत्ते १६ । पुव्वाफग्गुणीणक्खत्ते किंसंठिए पराणत्ते, अद्ध-पलियंकसंठिते पराणत्ते १७ । एवं उत्तरावि १८ । हत्थे णक्खत्ते किंसंठिते पराणत्ते ?, हत्थसंठिते पराणत्ते १९ । ता चित्ताणक्खत्ते किंसंठिते पराणत्ते ?, मुहफुल्लसंठिते पराणत्ते २० । सातीणक्खत्ते किंसंठिते पराणत्ते ?, खीलग-संठिते पन्नत्ते २१ । विसाहाणक्खत्ते किंसंठिए पराणत्ते ?, दामणिसंठिते पराणत्ते २२ । अणुराधाणक्खत्ते किंसंठिते पराणत्ते ?, एगावलिसंठिते पराणत्ते २३ । जेट्ठानक्खत्ते किंसंठिते पराणत्ते ?, गयदंतसंठिते पराणत्ते २४ । मूले णक्खत्ते किंसंठिते पराणत्ते ?, विच्छुयलंगोलसंठिते पराणत्ते २५ । पुव्वासाढाणक्खते किंसंठिए पराणते ?, गयविक्कमसंठिते पराणत्ते २६ । उत्तरासाढाणक्खत्ते किंसंठिए पराणत्ते ?, सीहनिसाइयसंठिते पराणत्ते २७ ॥ सूत्रं ४१ ॥ दसमस्स अट्ठमं पाहुडपाहुडं समत्तं ॥ १०-८ ॥

॥ अथ दशमप्राभृते नवमं प्राभृतप्राभृतम् ॥

ता कहं ते तारग्गे आहितेति वदेज्जा ?, ता एतेसि णं अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं अभीईणक्खत्ते कतितारे पराणत्ते ?, तितारे पराणत्ते १। सवणेणक्खत्ते कतितारे पराणत्ते ?, तितारे पराणत्ते २। धनिट्ठाणक्खत्ते कतितारे पराणत्ते ?, पणतारे पराणत्ते ३। सतभिसयाणक्खत्ते कतितारे पराणत्ते ?, सततारे पराणत्ते ४। पुव्वापोट्ठवता कतितारे पराणत्ते ?, दुतारे पराणत्ते ५। एवं उत्तरावि ६। रेवतीणक्खत्ते कतितारे पराणत्ते ?, बत्तीसतितारे पराणत्ते ७। अस्सिणीणक्खत्ते कतितारे पराणत्ते ?, तितारे पराणत्ते ८। एवं सव्वे पुच्छिज्जंति, भरणी तितारे पराणत्ते ९। कत्तिया छतारे पराणत्ते १०। रोहिणी पंचतारे पराणत्ते ११। सवणे तितारे पराणत्ते १२। अद्दा एगतारे पराणत्ते १३। पुणव्वसू पंचतारे पराणत्ते १४। पुस्से णक्खत्ते तितारे पराणत्ते १५। अस्सेसा छत्तारे पन्नत्ते १६। महा सत्ततारे पराणत्ते १७। पुव्वाफग्गुणी दुतारे पन्नत्ते १८। एवं उत्तरावि १९। हत्थे पंचतारे पराणत्ते २०। चित्ता एकतारे पराणत्ते २१। साती एकतारे पराणत्ते २२। विसाहा पंचतारे पराणत्ते २३। अणुराहा पंचतारे पराणत्ते २४। जेट्ठा तितारे पराणत्ते २५। मूले एगतारे पराणत्ते २६। पुव्वासाढा चउत्तारे पराणत्ते २७। उतरासाढाणक्खत्ते चउतारे पराणत्ते २८ ॥ सूत्रं ४२ ॥ दसमस्स पाहुडस्स नवमं पाहुडपाहुडं समत्तं ॥ १०-९ ॥

॥ अथ दशमप्राभृते दशमं प्राभृतप्राभृतम् ॥

ता कहं ते णेता आहितेति वदेज्जा ?, ता वासाणं पढमं मासं कति णक्खत्ता णेंति ?, ता चत्तारि णक्खत्ता णेंति, तंजहा—उत्तरासाढा अभिई सवणो धणिट्ठा, उत्तरासाढा चोद्दस अहोरत्ते णेति, अभिई सत्त अहोरत्ते णेति, सवणो अट्ठ अहोरत्ते णेति धणिट्ठा एगं अहोरत्तं नेइ, तंसि णं मासंसि चउरंगुलपोरिसीए छायाए सूरिए अणुपरियट्टति, तस्स णं मासस्स चरिमे दिवसे दो पादाइं चत्तारि य अंगुलाणि पोरिसी भवति १। ता

वासाणं दोच्चं मासं कति णक्खत्ता णेंति ?, ता चत्तारि णक्खत्ता णेंति, तंजहा–धणिट्ठा सतभिसया पुव्वपुट्ठवता उतरपोट्ठवया, धणिट्ठा चोद्दस अहोरत्ते णेति, सयभिसया सत्त अहोरत्ते णेति, पुव्वाभद्दवया अट्ठ अहोरत्ते णेइ, उत्तरापोट्ठवता एगं अहोरत्तं णेति, तंसि णं मासंसि अट्ठंगुलपोरिसीए छायाए सूरिए अणुपरियट्टति, तस्स णं मासस्स चरिमे दिवसे दो पादाइं अट्ठ अंगुलाइं पोरिसी भवति २। ता वासाणं ततियं मासं कति णक्खत्ता णेंति ?, ता तिण्णि णक्खत्ता णेति, तंजहा–उत्तरपोट्ठवता रेवती अस्सिणी, उत्तरापोट्ठवता चोद्दस अहोरत्ते णेति, रेवती पण्णरस अहोरत्ते णेति, अस्सिणी एगं अहोरत्तं णेइ, तंसिं च णं मासंसि दुवालसंगुलाए पोरिसीए छायाए सूरिए अणुपरियट्टति, तस्स णं मासस्स चरिमदिवसे लेहत्थाइं तिण्णि पदाइं पोरिसी भवति ३। ता वासाणं चउत्थं मासं कति णक्खत्ता णेंति ?, ता तिन्नि नक्खत्ता णेंति, तंजहा–अस्सिणी भरणी कत्तिया, अस्सिणी चउद्दस अहोरत्ते णेइ, भरणी पन्नरस अहोरत्ते णेइ, कत्तिया एगं अहोरत्तं णेइ, तंसिं च णं मासंसि सोलसंगुला पोरिसी छायाए सूरिए अणुपरियट्टइ, तस्स णं मासस्स चरिमे दिवसे तिन्नि पयाइं चत्तारि अंगुलाइं पोरिसी भवइ ४। ता हेमंताणं पढमं मासं कइ णक्खत्ता णेंति ?, ता तिण्णि णक्खत्ता णेंति, तंजहा–कत्तिया रोहिणी संठाणा, कत्तिया चोद्दस अहोरत्ते णेति, रोहिणी पन्नरस अहोरत्ते णेति, संठाणा एगं अहोरत्तं णेति, तंसि च णं मासंसि वीसंगुलपोरिसीए छायाए सूरिए अणुपरियट्टति, तस्स णं मासस्स चरिमे दिवसे तिण्णि पदाइं अट्ठ अंगुलाइं पोरिसी भवति ५। ता हेमंताणं दोच्चं मासं कति णक्खत्ता णेंति ?, चत्तारि णक्खत्ता णेंति, तंजहा–संठाणा अद्दा पुणव्वसू पुस्सो, संठाणा चोद्दस अहोरत्ते णेति, अद्दा सत्त अहोरत्ते णेति, पुणव्वसू अट्ठ अहोरत्ते णेति, पुस्से एगं अहोरत्तं णेति, तंसि च णं मासंसि चउवीसंगुलपोरिसीए छायाए सूरिए अणुपरियट्टति, तस्स णं

मासस्स चरिमे दिवसे लेहट्ठाणि चत्तारि पदाइं पोरिसी भवति ६। ता हेमंताणं ततियं मासं कति णक्खत्ता णेंति ?, ता तिण्णि णक्खत्ता णेंति, तंजहा-पुस्से अस्सेसा महा, पुस्से चोद्दस अहोरत्ते णेति, अस्सेसा पंचदस अहोरत्ते णेति, महा एगं अहोरत्तं णेति, तंसि च णं मासंसि वीसंगुलाए पोरिसीए छायाए सूरिए अणुपरियट्टति, तस्स णं मासस्स चरिमे दिवसे तिण्णि पदाइं अट्ठंगुलाइं पोरिसी भवति ७। ता हेमंताणं चउत्थं मासं कति णक्खत्ता णेंति ?, ता तिण्णि नक्खत्ता णेंति, तंजहा-महा पुव्वफग्गुणी उत्तराफग्गुणी, महा चोद्दस अहोरत्ते णेति, पुव्वाफग्गुणी पनरस अहोरत्ते णेति, उत्तराफग्गुणी एगं अहोरत्तं णेति, तंसि च णं मासंसि सोलस अंगुलाइं पोरिसीए छायाए सूरिए अणुपरियट्टति, तस्स णं मासस्स चरिमे दिवसे तिण्णि पदाइं चत्तारि अंगुलाइं पोरिसी भवति ८। ता गिम्हाणं पढमं मासं कति णक्खत्ता णेंति ?, ता तिन्नि णक्खत्ता णेंति, तंजहा-उत्तराफग्गुणी हत्थो चित्ता, उत्तराफग्गुणी चोद्दस अहोरत्ते णेति, हत्थो पण्णरस अहोरत्ते णेति, चित्ता एगं अहोरत्तं णेइ, तंसि च णं मासंसि दुवालअंगुलपोरिसीए छायाए सूरिए अणुपरियट्टति, तस्स णं मासस्स चरिमे दिवसे लेहट्ठाइ य तिण्णि पदाइं पोरिसी भवति ९। ता गिम्हाणं बितियं मासं कति णक्खत्ता णेंति ?, ता तिण्णि णक्खत्ता णेंति, तंजहा-चित्ता साई विसाहा, चित्ता चोद्दस अहोरत्ते णेति, साती पण्णरस अहोरत्ते णेति, विसाहा एगं अहोरत्तं णेति, तंसि च णं मासंसि अट्ठंगुलाए पोरिसीए छायाए सूरिए अणुपरियट्टति, तस्स णं मासस्स चरिमे दिवसे दो पदाइं अट्ठ अंगुलाइं पोरिसी भवति १०। गिम्हाणं ततियं मासं कति णक्खत्ता णेंति ?, ता ति णक्खत्ता णेंति, तंजहा-विसाहा अणुराधा जेट्ठामूलो, विसाहा चोद्दस अहोरत्ते णेंति, अणुराधा अट्ठ (सत्त) (पण्णरस), जेट्ठामूलं एगं अहोरत्तं णेति, तंसि च णं मासंसि चउरंगुलपोरिसीए छायाए सूरिए

अणुपरियट्टति, तस्स णं मासस्स चरिमे दिवसे दो पादाणि य चत्तारि अंगुलाणि पोरिसी भवति ११। ता गिम्हाणं चउत्थं मासं कति णक्खत्ता णेंति ?, ता तिणिण णक्खत्ता णेंति, तंजहा–मूलो पुव्वासाढा उत्तरासाढा, मूलो चोद्दस अहोरत्ते णेति, पुव्वासाढा पण्णरस अहोरत्ते णेति, उत्तरासाढा एगं अहोरत्तं णेइ, तंसि च णं मासंसि वट्टाए समचउरंससंठिताए णग्गोधपरिमंडलाए सकायमणुरंगिणीए छायाए सूरिए अणुपरियट्टति, तस्स णं मासस्स चरिमे दिवसे लेहट्ठाइं दो पदाइं पोरिसीए भवति १२॥ सूत्रं ४३॥ दसमस्स पाहुडस्स दसमं पाहुडपाहुडं समत्तं ॥ १०–१०॥

॥ अथ दशमप्राभृते एकादशमं प्राभृतप्राभृतम् ॥

ता कहं ते चंदमग्गा आहितेति वदेज्जा ?, ता एएसि णं अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं अत्थि णक्खत्ता जे णं सता चंदस्स दाहिणेणं जोअं जोएंति, अत्थि णक्खत्ता जे णं सता चंदस्स उत्तरेणं जोयं जोयंति, अत्थि णक्खत्ता जे णं चंदस्स दाहिणेणवि उत्तरेणवि पमद्दंपि जोयं जोएंति, अत्थि णक्खत्ता जे णं चंदस्स दाहिणेणवि पमद्दंपि जोयं जोएंति, अत्थि णक्खत्ता जे णं चंदस्स सदा पमद्दं जोअं जोएंति १। ता एएसि णं अट्ठावीसाए नक्खत्ताणं कतरे नक्खत्ता जे णं सता चंदस्स दाहिणेणं जोयं जोएंति ?तहेव जाव कतरे नक्खत्ता जे णं सदा चंदस्स पमद्दं जोयं जोएंति ?, ता एतेसि णं अट्ठावीसाए नक्खत्ताणं तत्थ जे णं नक्खत्ता सया चंदस्स दाहिणेण जोयं जोएंति ते णं छ, तंजहा–संठाणा अद्दा पुस्सो अस्सेसा हत्थो मूलो २। तत्थ जे ते णक्खत्ता जे णं सदा चंदस्स उत्तरेणं जोयं जोएंति, ते णं बारस, तंजहा–अभिई सवणो धणिट्ठा सतभिसया पुव्वभद्दवया उत्तरापोट्ठवता रेवती अस्सिणी भरणी पुव्वाफग्गुणी उत्तराफग्गुणी साती १२, ३। तत्थ जे ते णक्खत्ता जे णं चंदस्स दाहिणेणवि उत्तरेणवि पमद्दंपि जोयं जोएंति ते णं

सत्त, तंजहा—कत्तिया रोहिणी पुणव्वसू महा चित्ता विसाहा अणुराहा ४। तत्थ जे ते नक्खत्ता जे णं चंदस्स दाहिणेणवि पमद्दंपि जोयं जोएंति ताओ णं दो आसाढाओ सव्वबाहिरे मंडले जोयं जोएंसु वा जोएंति वा जोएस्संति वा ५। तत्थ जे ते णक्खत्ते जे णं सदा चंदस्स पमद्दं जोयं जोएंति, सा णं एगा जेट्ठा ६ ॥ सूत्रं ४४॥ ता कति ते चंदमंडला पण्णत्ता ?, ता पण्णरस चंदमंडला पण्णत्ता १। ता एएसि णं पण्णरसण्हं चंदमंडलाणं अत्थि चंदमंडला जे णं सया णक्खत्तेहिं अविरहिया, अत्थि चंदमंडला जे णं सया णक्खत्तेहिं विरहिया, अत्थि चंदमंडला जे णं रविससिणक्खत्ताणं सामण्णा भवंति, अत्थि चंदमंडला जे णं सया आदिच्चेहिं विरहिया २। ता एतेसि णं पण्णरसण्हं चंदमंडलाणं कयरे चंदमंडला जे णं सता णक्खत्तेहि अविरहिया, जाव कयरे चंदमंडला जे णं सदा आदिच्चविरहिता ?, ता एतेसि णं पण्णरसण्हं चंदमंडलाणं तत्थजे ते चंदमंडला जे णं सदा णक्खत्तेहिं अविरहिता ते णं अट्ठ, तंजहा—पढमे चंदमंडले ततिए चंदमंडले छट्ठे चंदमंडले सत्तमे चंदमंडले अट्ठमे चंदमंडले दसमे चंदमंडले एकादसे चंदमंडले पण्णरसमे चंदमंडले ३। तत्थ जे ते चंदमंडला जे णं सदा णक्खत्तेहिं विरहिया ते णं सत्त, तंजहा—बितिए चंदमंडले चउत्थे चंदमंडले पंचमे चंदमंडले नवमे चंदमंडले बारसमे चंदमंडले तेरसमे चंदमंडले चउद्दसमे चंदमंडले ४। तत्थ जे ते चंदमंडले जे णं ससिरविनक्खत्ताणं समाणा भवंति, ते णं चत्तारि, तंजहा—पढमे चंदमंडले बीए चंदमंडले इक्कारसमे चंदमंडले पन्नरसमे चंदमंडले ५। तत्थ जे ते चंदमंडला जे णं सदा आदिच्चविरहिता ते णं पंच, तंजहा— छट्ठे चंदमंडले सत्तमे चंदमंडले अट्ठमे चंदमंडले नवमे चंदमंडले दसमे चंदमंडले ६ ॥ सूत्रं ४५ ॥ दसमस्स एक्कारसमं पाहुडपाहुडं समत्तं ॥ १०—११ ॥

—::—

॥ अथ दशमप्राभृते द्वादशं प्राभृतप्राभृतम् ॥

ता कहं ते देवताणं अज्झयणा आहिताति वदेज्जा ?, ता एएणं अट्ठावीसाए नक्खत्ताणं अभिई णक्खत्ते किंदेवताए पराणत्ते ?, बंभदेवयाए पराणत्ते १। सवणे णक्खत्ते किंदेवयाए पन्नत्ते ?, ता विराहुदेवयाए पराणत्ते २। धणिट्ठाणक्खत्ते किंदेवताए पराणत्ते ?, ता वसुदेवयाए पराणत्ते ३। सयभिसयानक्खत्ते किंदेवयाए पराणत्ते ?, ता वरुणदेवयाए पराणत्ते ४। पुव्वपोट्ठवया नक्खत्ते किंदेवताए पराणत्ते ? ता अजदेवयाए पराणत्ते ५। उत्तरापोट्ठवयानक्खत्ते किंदेवयाए पराणत्ते ?, ता अहिवड्ढिदेवताए पराणत्ते ६। एवं सव्वेवि पुच्छिज्जंति, रेवती पुस्सदेवता, अस्सिणी अस्सदेवता, भरणी जमदेवता, कत्तिया अग्गिदेवता, रोहिणी पयावइदेवया, संट्ठाणा सोमदेवयाए, अद्दा रुद्ददेवयाए, पुणव्वसू अदितिदेवयाए, पुस्सो वहस्सइदेवयाए, अस्सेसा सप्पदेवयाए, महा पितिदेवताए, पुव्वाफग्गुणी भगदेवयाए, उत्तराफग्गुणी अज्जमदेवताए, हत्थे सवियादेवताए चित्ता तट्ठदेवताए साती वायुदेवताए विसाहा इंदग्गीदेवयाए अणुराहा मित्तदेवताए जेट्ठा इंददेवताए, मूले णिरितिदेवताए, पुव्वासाढा आउदेवताए, उत्तरासाढा विस्सदेवयाए पराणत्ते ७॥ सूत्रं ४६ ॥ दसमस्स बारसमं पाहुडपाहुडं समत्तं ॥ १०-१२ ॥

॥ अथ दशमप्राभृते त्रयोदशं प्राभृतप्राभृतम् ॥

ता कहं ते मुहुत्ताणं नामधेजा आहिताति वदेज्जा ?, ता एगमेगस्स णं अहोरत्तस्स तीसं मुहुत्ता पराणत्ता, तंजहा—"रोद्दे सेते मित्ते, वायु सुगीए (पी) त अभिचंदे। महिंद बलवं बंभो, बहुसच्चे चेव ईसाणे ॥ १ ॥ तट्ठे य भावियप्पा वेसमणे वरुणे य आणंदे। विजए य वीससेणे पायावच्चे चेव उवसमे य ॥ २ ॥ गंधव्व अग्गिवेसे सयरिसहे आयवं च अममे य। अणवं

च भोम रिसहे सव्वट्ठे रक्खसे चेव ॥ ३ ॥ सूत्रं ४७ ॥ दसमस्स पाहुडस्स तेरसमं पाहुडपाहुडं समत्तं ॥ १०–१३ ॥

॥ अथ दशमप्राभृते चतुर्दशं प्राभृतप्राभृतम् ॥

ता कहं ते दिवसा आहियत्ति वइज्जा ?, ता एगमेगस्स णं पक्खस्स पनरस पनरस दिवसा पराणत्ता, तंजहा–पडिवादिवसे बितियदिवसे जाव पराणरसे दिवसे १ । ता एतेसि णं पराणरसराहं दिवसाणं पन्नरस नामधेज्जा पराणत्ता, तंजहा–पुव्वंगे सिद्धमणोरमे य तत्तो मणोहरो चेव । जसभद्दे य जसोधर सव्वकामसमिद्धेति य ॥ १ ॥ इंदे मुद्धाभिसित्ते य सोमणस धणंजए य बोद्धव्वे । अत्थसिद्धे अभिजाते अच्चासणे य सतंजए ॥ २ ॥ अग्गिवेसे उवसमे दिवसाणं नामधेज्जाइं २ । ता कहं ते रातीओ आहितातिं वदेज्जा ?, ता एगमेगस्स णं पक्खस्स पराणरस राईओ पराणत्ताओ, तंजहा–पडिवाराई बिदियाराई जाव पराणरसा राई ३ । ता एतासि णं पराणरसराहं राईणं पराणरस नामधेज्जा पराणत्ता, तंजहा–उत्तमा य सुणक्खत्ता, एलावच्चा जसोधरा । सोमणसा चेव तधा सिरिसंभूता य बोद्धव्वा ॥ १ ॥ विजया य वेजयंती जयंति अपराजिया य गच्छा य । समाहारा चेव तधा तेया य तहा य अतितेया ॥ १ ॥ देवाणंदा निरती रयणीणं णामधेज्जाइं ४ ॥ सूत्रं ४८ ॥ दसमस्स पाहुडस्स चउद्दसमं पाहुडपाहुडं समत्तं ॥ १०–१४ ॥

॥ अथ दशमप्राभृते पञ्चदशं प्राभृतप्राभृतम् ॥

ता कहं ते तिही आहितेति वदेज्जा ?, तत्थ खलु इमा दुविहा तिही पराणत्ता, तंजहा–दिवसतिही राईतिही य १ । ता कहं ते दिवसतिही आहितेति वदेज्जा ?, ता एगमेगस्स णं पक्खस्स पराणरस २ दिवसतिही पराणत्ता, तंजहा–णंदे भद्दे जए तुच्छे पुराणे पक्खस्स पंचमी पुणरवि णंदे

भद्दे जए तुच्छे पुराणो पक्खस्स दसमी पुणरवि णंदे भद्दे जये तुच्छे पुराणो पक्खस्स पराणरस, एवं ते तिगुणा तिहीओ सव्वेसिं दिवसाणं २। कहं ते राईतिथी आहितेति वदेज्जा ?, एगमेगस्स णं पक्खस्स पराणरस रातितिधी पराणत्ता, तंजहा–उग्गवती भोगवती जसवती सव्वसिद्धा सुहणामा पुणरवि उग्गवती भोगवती जसवती सव्वसिद्धा सुहणामा पुणरवि उग्गवती भोगवती जसवती सव्वसिद्धा सुहणामा, एते तिगुणा तिहीओ सव्वासिं रातीणं ३ ॥ सू० ४१ ॥ दसमस्स पाहुडस्स पराणरसमं पाहुडपाहुडं समत्तं ॥१०-१५॥

॥ अथ दशमप्राभृते षोडशं प्राभृतप्राभृतम् ॥

ता कहं ते गोत्ता आहिताति वदेज्जा ?, ता एतेसि णं अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं अभियी णक्खत्ते किंगोत्ते पराणत्ते ?, ता मोग्गल्लायणसगोत्ते पराणत्ते १। सवणे णक्खत्ते किंगोत्ते पराणत्ते ?, संखायणसगोत्ते पराणत्ते २। धणिट्ठाणक्खत्ते किंगोत्ते पराणत्ते ?, अग्गितावसगोत्ते पराणत्ते ३। सतभिसयाणक्खत्ते किंगोत्ते पराणत्ते ?, कराणलो(कल्लो)यणसगोत्ते पराणत्ते ४। पुव्वापोट्ठवताणक्खत्ते किंगोत्ते पराणत्ते ?, जोउकरिणायसगोत्ते पराणत्ते ५। उत्तरापोट्ठवताणक्खत्ते किंगोत्ते पराणत्ते ?, धणंजयसगोत्ते पराणत्ते ६। रेवतीणक्खत्ते किंगोत्ते पराणत्ते ? पुस्सायणसगोत्ते पराणत्ते ७। अस्सिणीनक्खत्ते किंगोत्ते पराणत्ते ?, अस्सायणसगोत्ते पराणत्ते ८। भरणीणक्खत्ते किंगोत्ते पराणत्ते ?, भग्गवेससगोत्ते पराणत्ते ९। कत्तियाणक्खत्ते किंगोत्ते पराणत्ते ?, अग्गिवेससगोत्ते पराणत्ते १०। रोहिणीणक्खत्ते किंगोत्ते पराणत्ते ?, गोतमगोत्ते पराणत्ते ११। संठाणाणक्खत्ते किंगोत्ते पराणत्ते ?, भारद्दायसगोत्ते पराणत्ते १२। अद्दाणक्खत्ते किंगोत्ते पराणत्ते ?, लोहिच्चायणसगोत्ते पराणत्ते १३। पुणव्वसूणक्खत्ते किंगोत्ते पराणत्ते ?, वासिट्ठसगोत्ते पराणत्ते १४। पुस्से णक्खत्ते किंगोत्ते पराणत्ते ?, उज्जायणसगोत्ते

पराणत्ते १५ । अस्सेमाणक्खत्ते किंगोत्ते पराणत्ते ?, मंडव्वायणसगोत्ते पराणत्ते १६ । महाणक्खत्ते किंगोत्ते पराणत्ते ?, पिंगायणसगोत्ते पराणत्ते १७ । पुव्वाफग्गुणीणक्खत्ते किंगोत्ते पराणत्ते ?, गोवल्लायणसगोत्ते पराणत्ते १८ । उत्तराफग्गुणीणक्खत्ते किंगोत्ते पराणत्ते ?, कासवगोत्ते पराणत्ते १९ । हत्थेणक्खत्ते किंगोत्ते पराणत्ते ?, कोसियगोत्ते पराणत्ते २० । चित्ताणक्खत्ते किंगोत्ते पराणत्ते ? दभियाणस्सगोत्ते पराणत्ते २१ । साईणक्खत्ते किंगोत्ते पराणत्ते ?, चाम(भाग)रछगोत्ते पराणत्ते २२ । विसाहाणक्खत्ते किंगोत्ते पराणत्ते ?, सुंगायणसगोत्ते पराणत्ते २३ । अणुराधाणक्खत्ते किंगोत्ते पराणत्ते ?, गोलव्वायणसगोत्ते पराणत्ते २४ । जेट्ठानक्खत्ते किंगोत्ते पराणत्ते ?, तिगिच्छायणसगोत्ते पराणत्ते २५ । मूलेणक्खत्ते किंगोत्ते पराणत्ते ?, कच्चायणसगोत्ते पराणत्ते २६ । पुव्वासाढानक्खत्ते किंगोत्ते पराणत्ते ?, वज्झियायणसगोत्ते पराणत्ते २७ । उत्तरासाढाणक्खत्ते किंगोत्ते पराणत्ते ?, वग्घावच्चसगोत्ते पराणत्ते २८ ॥ सूत्रं ५० ॥ दसमस्स पाहुडस्स सोलसमं पाहुडपाहुडं समत्तं ॥ १०–१६ ॥

॥ अथ दशमप्राभृते सप्तदशं प्राभृतप्राभृतम् ॥

ता कहं ते भोयणा आहितातिं वदेज्जा ?, ता एएसि णं अट्ठावीसाए णं णक्खत्ताणं कत्तियाहिं दधिणा भोच्चा कज्जं साधिंति, रोहिणीहिं वसभमंसं भोच्चा कज्जं साधेंति, संठाणाहिं मिगमंसं भोच्चा कज्जं साधिंति, अद्दाहिं णवणीतेण भोच्चा कज्जं साधेंति, पुणव्वसुणाऽथ घतेण भोच्चा कज्जं साधेंति, पुस्सेणं खीरेण भोच्चा कज्जं साधेंति, अस्सेसाए दीवगमंसं भोच्चा कज्जं साधेंति, महाहिं कसोतिं(कसरिं) भोच्चा कज्जं साधेंति, पुव्वाहिं फग्गुणीहिं मेढकमंसं भोच्चा कज्जं साधेंति, उत्तराहिं फग्गुणीहिं णक्खी(भी)मंसं भोच्चा कज्जं साधेंति, हत्थेण वत्थाणीएण(यन्नं) भोच्चा कज्जं साधेंति, चित्ताहिं मुग्गसूवेणं भोच्चा कज्जं

साधेंति, सादिणा फलाइं भोच्चा कज्जं साधेंति, विसाहाहिं आसित्ति(त्तिस)-याओ भोच्चा कज्जं साधेंति, अणुराहाहिं मिस्सकूरं भोच्चा कज्जं साधेंति, जेट्ठाहिं लट्ठिएणं भोच्चा कज्जं साधेंति, मूलेणं मूलापन्नेणं भोच्चा कज्जं साधेंति, पुव्वाहिं आसाढाहिं आमलग(मालव)सरीरे भोच्चा कज्जं साधेंति, उत्तराहिं आसाढाहिं बलेहिं भोच्चा कज्जं साधेंति, अभीयिणा पुप्फेहिं भोच्चा कज्जं साधेंति, सवणेणं खीरेणं भोच्चा कज्जं साधेंति, धणिट्ठाहिं जूसेण भोच्चा कज्जं साधेंति, सयभिसयाए तुवरीओ भोच्चा कज्जं साधेंति, पुव्वाहिं पुट्ठवयाहिं कारिल्लएहिं भुच्चा कज्जं साधेंति, उत्तराहिं पुट्ठवताहिं वराहमंसं भोच्चा कज्जं साधेंति, रेवतीहिं जलयरमंसं भोच्चा कज्जं साधेंति, अस्सिणीहिं तित्तिरमंसं भोच्चा कज्जं साधेंति वट्टकमंसं वा, भरणीहिं तलं तंदुलकं भोच्चा कज्जं साधेंति ॥ सूत्रं ५१ ॥ दसमस्स पाहुडस्स सत्तरसमं पाहुडपाहुडं समत्तं ॥ १०-१७ ॥

॥ अथ दशमप्राभृते अष्टादशं प्राभृतप्राभृतम् ॥

ता कहं ते चारा आहितााति वदेज्जा ?, तत्थ खलु इमा दुविहा चारा पराणत्ता, तंजहा—आदिच्चचारा य चन्दचारा य १। ता कहं ते चंदचारा आहितेति वदेज्जा ?, ता पंचसंवच्छरिएणं जुगे, अभीइणक्खत्ते सत्तसट्ठिचारे चंदेण सद्धिं जोयं जोएति, सवणे णं णक्खत्ते सत्तट्ठि चारे चंदेण सद्धिं जोयं जोएति, एवं जाव उत्तरासाढाणक्खत्ते सत्तट्ठिचारे चंदेणं सद्धिं जोयं जोएति २। ता कहं ते आइच्चचारा आहितेति वदेज्जा ?, ता पंचसंवच्छरिए णं जुगे, अभीयीणक्खत्ते पंचचारे सूरेण सद्धिं जोयं जोएति, एवं जाव उत्तरासाढा-णक्खत्ते पंचचारे सूरेण सद्धिं जोयं जोएति ३ ॥ सूत्रं ५२ ॥ दसमस्स पाहुडस्स अट्ठारसमं पाहुडपाहुडं समत्तं ॥ १०–१८ ॥

——

॥ अथ दशमप्राभृते एकोनविंशतितमं प्राभृतप्राभृतम् ॥

ता कहं ते मासा आहिताति वदेज्जा ?, ता एगमेगस्स णं संवच्छरस्स बारस मासा पराणत्ता, तेसिं च दुविहा नामधेज्जा पराणत्ता, तंजहा—लोइया लोउत्तरिया य १ । तत्थ लोइया णामा सावणे भद्दवते आसोए जाव आसाढे, लोउत्तरिया णामा—अभिणंदे सुपइट्ठे य, विजये पीतिवद्धणे । सेज्जंसे य सिवे यावि, सिसिरेवि य हेमवं ॥ १ ॥ नवमे वसंतमासे, दसमे कुसुमसंभवे । एकादसमे णिदाहो, वणविरोही य बारसे ॥ २ ॥ २ ॥ सूत्रं ५३॥ दसमस्स पाहुडस्स एगूणवीशतितमं पाहुडपाहुडं समत्तं ॥ १०—११ ॥

॥ अथ दशमप्राभृते विंशतितमं प्राभृतप्राभृतम् ॥

ता कति णं भंते ! संवच्छरे आहिताति वदेज्जा ?, ता पंच संवच्छरा आहितेति वदेज्जा, तंजहा—णक्खत्तसंवच्छरे जुगसंवच्छरे पमाणसंवच्छरे लक्खणसंवच्छरे सणिच्छरसंवच्छरे ॥ सूत्रं ५४ ॥ ता णक्खत्तसंवच्छरे णं दुवालसविहे पराणत्ते, सावणे भद्दवए जाव आसाढे, जं वा बहस्सती-महग्गहे दुवालसहिं संवच्छरेहिं सव्वं णक्खत्तमंडलं समाणेति ॥ सूत्रं ५५ ॥ ता जुगसंवच्छरे णं पंचविहे पराणत्ते, तंजहा—चंदे चंदे अभिवड्ढिए चंदे अभिवड्ढिए चेव १ । ता पढमस्स णं चंदस्स संवच्छरस्स चउवीसं पव्वा पराणत्ता, दोच्चस्स णं चंदसंवच्छरस्स चउवीसं पव्वा पराणत्ता, तच्चस्स णं अभिवड्ढितसंवच्छरस्स छव्वीसं पव्वा पराणत्ता, चउत्थस्स णं चंदसंवच्छरस्स चउवीसं पव्वा पराणत्ता, पंचमस्स णं अभिवड्ढियसंवच्छरस्स छव्वीसं पव्वा पराणत्ता, एवामेव सपुव्वावरेणं पंचसंवच्छरिए जुगे एगे चउवीसे पव्वसते भवतीति मक्खातं ॥ सूत्रं ५६ ॥ ता पमाणसंवच्छरे पंचविहे पराणत्ते, तंजहा—नक्खत्ते चंदे उडू आइच्चे अभिवड्ढिए ॥ सूत्रं ५७ ॥ ता लक्खणसंवच्छरे पंचविहे पराणत्ते, तंजहा—नक्खत्ते चंदे उडू, आइच्चे

अभिवुड्डिए १। ता णक्खत्ते णं संवच्छरे णं पंचविहे पगणत्ते, तंजहा— समगं णक्खत्ता जोयं जोएंति, समगं उदू परिणमंति। नच्चुराहं नाइसीए बहुउदए होइ नक्खत्ते ॥ १ ॥ ससि समग पुन्निमासिं जोइंता विसमचारि-नक्खत्ता। कडुओ बहुउदवओ य तमाहु संवच्छरं चंदं ॥ २ ॥ विसमं पवालिणो परिणमंति अणुऊसु दिंति पुप्फफलं। वासं न सम्म वासइ तमाहु संवच्छरं कम्मं ॥ ३ ॥ पुढविदगाणं च रसं पुप्फफलाणं च देइ आइच्चे। अप्पेणवि वासेणं संमं निप्फज्जए सस्सं ॥ ४ ॥ आइच्चतेय-तविया खणलवदिवसा उऊ परिणमन्ति। पूरेति निणाय(णण)थलये तमाहु अभिवड्ढितं जाण ॥ ५ ॥ २। ता सणिच्छरसंवच्छरे णं अट्ठावीसतिविहे पगणत्ते, तंजहा—अभियी सवणे जाव उत्तरासाढा, जं वा सणिच्छरे महग्गहे तीसाए संवच्छरेहिं सव्वं णक्खत्तमंडलं समाणेति ३ ॥ सूत्रं ५८ ॥ दसमस्स पाहुडस्स वीसतिमं पाहुडपाहुडं समत्तं ॥ १०–२० ॥

॥ अथ दशमप्राभृते एकविंशतितमं प्राभृतप्राभृतम् ॥

ता कहं ते जोतिसस्स दारा आहिताति वदेज्जा ?, तत्थ खलु इमाओ पंच पडिवत्तीओ पगणत्ताओ, तत्थेगे एवमाहंसु—ता कत्तियादी णं सत्त नक्खत्ता पुव्वदारिया पगणत्ता, एगे एवमाहंसु १, एगे पुण एवमाहंसु—ता महादीया सत्त णक्खत्ता पुव्वदारिया पगणत्ता, एगे एवमाहंसु २, एगे पुण एवमाहंसु—ता अणुराहाइया सत्तणक्खत्ता पुव्वदारिआ पगणत्ता, एगे एवमाहंसु ३, एगे पुण एवमाहंसु—ता धणिट्ठादीया सत्त णक्खत्ता पुव्वदारिआ पगणत्ता, एगे एवमाहंसु ४, एगे पुण एवमाहंसु—अस्सिणीयादीया णं सत्त णक्खत्ता पुव्वदारिया पगणत्ता, एगे एवमाहंसु ५, एगे पुण एवमाहंसु—ता भरणीया-दीआ णं सत्त णक्खत्ता पुव्वदारिआ पगणत्ता १। तत्थ जे ते एवमाहंसु ता कत्तियादी णं सत्त णक्खत्ता पुव्वदारिया पगणत्ता, ते एवमाहंसु, तंजहा—

कत्तिया रोहिणी संठाणा अद्दा पुणव्वसू पुस्सो असिलेसा, सत्त णक्खत्ता दाहिणदारिया पण्णत्ता, तंजहा—महा पुव्वफग्गुणी उत्तराफग्गुणी हत्थो चित्ता साई विसाहा, अणुराधादीया सत्त णक्खत्ता पच्छिमदारिया पण्णत्ता, तंजहा—अणुराधा जेट्ठा मूलो पुव्वासाढा उत्तरासाढा अभियी सवणो, धणिट्ठादीया सत्त णक्खत्ता उत्तरदारिया पण्णत्ता, तंजहा—धणिट्ठा सतभिसया पुव्वापोट्ठवता उत्तरापोट्ठवता रेवती अस्सिणी भरणी २। तत्थ जे ते एवमाहंसु ता महादीया सत्त णक्खत्ता पुव्वदारिया पण्णत्ता, ते एवमाहंसु तंजहा—महा पुव्वाफग्गुणी उत्तराफग्गुणी हत्थो चित्ता साती विसाहा, अणुराधादीया सत्त णक्खत्ता दाहिणदारिया पण्णत्ता, तंजहा—अणुराधा जेट्ठा मूले पुव्वासाढा उत्तरासाढा अभियी सवणे, धणिट्ठादीया सत्त णक्खत्ता पच्छिमदारिया पण्णत्ता, तंजहा—धणिट्ठा सतभिसया पुव्वापोट्ठवता उत्तरापोट्ठवता रेवती अस्सिणी भरणी, कत्तियादीया सत्त णक्खत्ता उत्तरदारिया पण्णत्ता, तंजहा—कत्तिया रोहिणी संठाणा अद्दा पुणव्वसू पुस्सो अस्सेसा ३। तत्थ णं जे ते एवमाहंसु, ता धणिट्ठादीया सत्त णक्खत्ता पुव्वदारिया पण्णत्ता, ते एवमाहंसु, तंजहा—धणिट्ठा सत्तभिसया पुव्वाभद्दवया उत्तराभद्दवता रेवती अस्सिणी भरणी, कत्तियादीया सत्त णक्खत्ता दाहिणदारिया पण्णत्ता, तंजहा—कत्तिया रोहिणी संठाणा अद्दा पुणव्वसू पुस्सो अस्सेसा, महादीया सत्त णक्खत्ता पच्छिमदारिया पण्णत्ता, तंजहा—महा पुव्वाफग्गुणी उत्तराफग्गुणी हत्थो चित्ता साती विसाहा, अणुराधादीया सत्त णक्खत्ता उत्तरदारिया पण्णत्ता, तंजहा—अणुराधा जेट्ठा मूलो पुव्वासाढा उत्तरासाढा अभीयी सवणो ४। तत्थ जे ते एवमाहंसु, ता अस्सिणीआदीया सत्त णक्खत्ता पुव्वदारिया पण्णत्ता, एते एवमाहंसु, तंजहा—अस्सिणी भरणी कत्तिया रोहिणी संठाणा अद्दा पुणव्वसू, पुस्सादिया सत्त णक्खत्ता दाहिणदारिया पण्णत्ता, तंजहा—पुस्सा अस्सेसा महा

पुव्वाफग्गुणी उत्तराफग्गुणी हत्थो चित्ता, सादीयादीया सत्त णक्खत्ता पच्छिमदारिया पणत्ता तंजहा–साती विसाहा अणुराहा जेट्ठा मूलो पुव्वासाढा उत्तरासाढा, अभीयीआदि सत्त णक्खत्ता उत्तरदारिया पणत्ता, तंजहा–अभिई सवणो धणिट्ठा सतभिसया पुव्वभद्दवया उत्तरभद्दवया रेवती ५। तत्थ जे ते एवमाहंसु ता भरणिआदीया सत्त णक्खत्ता पुव्वदारिया पणत्ता ते एवमाहंसु, तंजहा–भरणी कत्तिया रोहिणी संठाणा अद्दा पुणव्वसू पुस्सो, अस्सेसादीया सत्त णक्खत्ता दाहिणदारिया पणत्ता, तंजहा–अस्सेसा महा पुव्वाफग्गुणी उत्तराफग्गुणी हत्थो चित्ता साई, विसाहादीया सत्त णक्खत्ता पच्छिमदारिया पणत्ता, तंजहा–विसाहा अणुराहा जेट्ठा मूलो पुव्वासाढा उत्तरासाढा अभिई, सवणादीया सत्त णक्खत्ता उत्तरदारिया पणत्ता, तंजहा–सवणो धणिट्ठा सतभिसया पुव्वापोट्ठवया उत्तरपोट्ठवया रेवती अस्सिणी, एते एवमाहंसु ६। वयं पुण एवं वदामो–ता अभिईयादि सत्त णक्खत्ता पुव्वदारिया पणत्ता, तंजहा–अभियी सवणो धणिट्ठा सतभिसया पुव्वापोट्ठवता उत्तरापोट्ठवया रेवती, अस्सिणीआदीया सत्त णक्खत्ता दाहिणदारिया पणत्ता, तंजहा–अस्सिणी भरणी कत्तिया रोहिणी संठाणा अद्दा पुणव्वसू, पुस्सादीया सत्त णक्खत्ता पच्छिमदारिया पणत्ता, तंजहा– पुस्सो अस्सेसा महा पुव्वाफग्गुणी उत्तरफग्गुणी हत्थो चित्ता, सातिआदीया सत्त णक्खत्ता उत्तरदारिया पणत्ता, तंजहा–साती विसाहा अणुराहा जेट्ठा मूले पुव्वसाढा उत्तरासाढा ७ ॥ सूत्रं ५१ ॥ दसमस्स पाहुडस्स एक्कवीसतितमं पाहुडपाहुडं समत्तं ॥ १०–२१ ॥

卐卐
卐

॥ अथ दशमप्राभृते द्वाविंशतितमं प्राभृतप्राभृतम् ॥

ता कहं ते णक्खत्तविजये आहितेति वदेज्जा ?, ता अयरणं जंबुद्दीवे २ जाव परिक्खेवेणं १। ता जंबुद्दीवे णं दीवे दो चंदा पभासेंसु वा पभासेंति वा पभासिस्संति वा दो सूरिया तविंसु वा तवेंति वा तविस्संति वा २। छप्पराणं णक्खत्ता जोयं जोएंसु वा ३, तंजहा–दो अभीयी दो सवणा दो धणिट्ठा दो सतभिसया दो पुव्वापोट्ठवता दो उत्तरापोट्ठवता दो रेवती दो अस्सिणी दो भरणी दो कत्तिया दो रोहिणी दो संठाणा दो अद्दा दो पुणव्वसू दो पुस्सा दो अस्सेसाओ दो महा दो पुव्वाफग्गुणी दो उत्तराफग्गुणी दो हत्था दो चित्ता दो साई दो विसाहा दो अणुराधा दो जेट्ठा दो मूला दो पुव्वासाढा दो उत्तरासाढा ३। ता एएसि णं छप्पराणाए नक्खत्ताणं अत्थि णक्खत्ता जे णं णव मुहुत्ते सत्तावीसं च सत्तट्ठिभागे मुहुत्तस्स चंदेण सद्धिं जोयं जोएंति, अत्थि नक्खत्ता जे णं पराणरस मुहुत्ते चंदेण सद्धिं जोयं जोएंति, अत्थि णक्खत्ता जे णं तीसमुहुत्ते चंदेण सद्धिं जोयं जोएंति, अत्थि णक्खत्ता जे णं पणयालीसं मुहुत्ते चंदेण सद्धिं जोयं जोएंति ४। ता एतेसि णं छप्पराणाए णक्खत्ताणं कतरे णक्खत्ते जे णं णवमुहुत्ते सत्तावीसं च सत्तसट्ठिभागे मुहुत्तस्स चंदेण सद्धिं जोयं जोएंति, कतरे णक्खत्ता जे णं पन्नरसमुहुत्ते चंदेण सद्धिं जोयं जोएंति, कतरे णक्खत्ता जे णं तीसं मुहुत्ते चंदेणं सद्धिं जोयं जोएंति, कतरे णक्खत्ता जे णं पणतालीसं मुहुत्ते चंदेण सद्धिं जोयं जोएंति ? ता एतेसि णं छप्पराणाए णक्खत्ताणं तत्थ जे ते णक्खत्ता जे णं णव मुहुत्ते सत्तावीसं च सत्तट्ठिभागे मुहुत्तस्स चंदेण सद्धिं जोयं जोएंति ते णं दो अभीयी, तत्थ जे ते णक्खत्ता जे णं पराणरस मुहुत्ते चंदेण सद्धिं जोयं जोएंति ते णं बारस, तंजहा–दो सतभिसया दो भरणी दो अद्दा दो अस्सेसा दो साती दो जेट्ठा, तत्थ जे णं तीसं मुहुत्ते चंदेण सद्धिं जोयं जोएंति ते णं तीसं, तंजहा–दो सवणा

दो धणिट्ठा दो पुव्वाभद्दवता दो रेवती दो अस्सिणी दो कत्तिया दो संठाणा दो पुस्सा दो महा दो पुव्वफग्गुणी दो हत्था दो चित्ता दो अणुराधा दो मूला दो पुव्वासाढा, तत्थ जे ते णक्खत्ता जे णं पणतालीसं मुहुत्ते चंदेण सद्धिं जोएंति ते णं बारस, तंजहा–दो उत्तरापोट्ठवता दो रोहिणी दो पुणव्वसू दो उत्तराफग्गुणी दो विसाहा दो उत्तरासाढा ५। ता एएसि णं छप्पणाए णक्खत्ताणं अत्थि णक्खत्ते जे णं चत्तारि अहोरत्ते छच्च मुहुत्ते सूरिएण सद्धिं जोयं जोएंति, अत्थि णक्खत्ता जे णं छ अहोरत्ते एक्कवीसं च मुहुत्ते सूरेण सद्धिं जोयं जोएंति, अत्थि णक्खत्ता जे णं तेरस अहोरत्ते बारस मुहुत्ते सूरेण सद्धिं जोयं जोएंति अत्थि णक्खत्ता जे णं वीसं अहोरत्ते तिन्नि य मुहुत्ते सूरेण सद्धिं जोयं जोएंति ६। एएसि णं छप्पणाए णक्खत्ताणं कयरे णक्खत्ता जे णं तं चेव उच्चारेयव्वं, ता एतेसि णं छप्पणाए णक्खत्ताणं तत्थ जे ते णक्खत्ता जे णं चत्तारि अहोरत्ते छच्च मुहुत्ते सूरेण सद्धिं जोयं जोएंति, ते णं दो अभीयी, तत्थ जे ते णक्खत्ता जे णं छ अहोरत्ते एक्कवीसं च मुहुत्ते सूरेण सद्धिं जोयं जोएंति, ते णं बारस, तंजहा–दो सतभिसया दो भरणी दो अद्दा दो अस्सेसा दो साती (दो विसाहा) दो जेट्ठा, तत्थ जे ते णक्खत्ता जे णं तेरस अहोरत्ते बारस मुहुत्ते सूरेण सद्धिं जोयं जोएति, ते णं तीसं, तंजहा–दो सवणा जाव दो पुव्वासाढा, तत्थ जे ते णक्खत्ता जे णं वीसं अहोरत्ते तिण्णि य मुहुत्ते सूरेण सद्धिं जोयं जोएंति, ते णं बारस, तंजहा–दो उत्तरापोट्ठवता जाव उत्तरासाढा ७ ॥ सूत्र ६० ॥ ता कहं ते सीमाविक्खंभे आहितेति वदेज्जा ?, ता एतेसि णं छप्पणाए णक्खत्ताणं अत्थि णक्खत्ता जेसि णं छसया तीसा सत्तट्ठिभागतीसतिभागाणं सीमाविक्खंभो, अत्थि णक्खत्ता जेसि णं सहस्सं पंचोत्तरं सत्तसट्ठिभागतीसतिभागाणं सीमाविक्खंभो, अत्थि णक्खत्ता जेसि णं दो सहस्सा दसुत्तरा सत्तट्ठिभागतीसतिभागाणं सीमाविक्खंभो, अत्थि

णक्खत्ता जेसि णं तिसहस्सं पंचदसुत्तरं सत्तसट्ठिभागतीसतीभागाणं सीमाविक्खंभो १ । ता एतेसि णं छप्पराणाए णक्खत्ताणं कतरे णक्खत्ता जेसि णं छसया तीसा तं चेव उच्चारेतव्वं, ता एएसि णं छप्पराणाए णक्खत्ताणं कयरे णक्खत्ता जेसि णं तिसहस्सं पंचदसुत्तरं सत्तसट्ठिभागतीसइभागाणं सीमाविक्खंभो ?, ता एतेसि णं छप्पराणाए णक्खत्ता णं तत्थ जे ते णक्खत्ता जेसि णं छ सता तीसा सत्तट्ठिभागतीसतिभागेणं सीमाविक्खंभो ते णं दो अभीयी, तत्थ जे ते णक्खत्ता जेसि णं सहस्सं पंचुत्तरं सत्तसट्ठिभागतीसतिभागाणं सीमाविक्खंभो ते णं बारस, तंजहा—दो सतभिसया जाव दो जेट्ठा, तत्थ जे ते णक्खत्ता जेसि णं दो सहस्सा दसुत्तरा सत्तट्ठिभागतीसतिभागाणं सीमाविक्खंभो ते णं तीसं, तंजहा—दो सवणा जाव दो पुव्वासाढा, तत्थ जे ते णक्खत्ता जेसि णं तिरिण सहस्सा पराणरसुत्तरा सत्तट्ठिभागतीसतिभागाणं सीमाविक्खंभो ते णं बारस, तंजहा—दो उत्तरापोट्ठवता जाव उत्तरासाढा वा २ ॥ सूत्रं ६१ ॥ एतेसि णं छप्पराणाए णक्खत्ताणं किं सता पादो चंदेण सद्धिं जोएंति ? ता एतेसि णं छप्पराणाए णक्खत्ताणं किं सया सायं चंदेण सद्धिं जोयं जोएंति ?, एतेसि णं छप्पराणाए णक्खत्ताणं कि सया दुहा पविसिय २ चंदेण सद्धिं जोयं जोएंति ?, ता एएसि णं छप्पराणाए णक्खत्ताणं न किंपि तं जं सया पादो चंदेण सद्धिं जोयं जोएंति, नो सया सागं चंदेण सद्धिं जोयं जोएंति, नो सया दुहओ पविसित्ता २ चंदेण सद्धिं जोयं जोएंति, णराणत्थ दोहिं अभीयीहिं, ता एतेणं दो अभीयी पायंचिय २ चोत्तालीसं २ अमावासं जोएंति, णो चेव णं पुरिणमासिणिं ॥ सूत्रं ६२ ॥ तत्थ खलु इमाओ बावट्ठिं पुरिणमासिणीओ बावट्ठिं अमावासाओ पराणत्ताओ १ । ता एएसि णं पंचराहं संवच्छराणं पढमं पुरिणमासिणिं चंदे किंसि देसंसि जोएइ ?, जंसि णं देसंसि चंदे चरिमं बावट्ठिं पुरिणमासिणिं जोएति ताए तेणं पुरिणमासिणिट्ठाणातो मंडलं चउव्वीसेणं सतेणं छेत्ता

बत्तीसं भागे उवातिणाविता एत्थ णं से चंदे पढमं पुण्णिमासिणिं जोएति २। ता एएसि णं पंचण्हं संवच्छराणं दोच्चं पुण्णिमासिणिं चंदे कंसि देसंसि जोएति ? ता जंसि णं देसंसि चंदे पढमं पुण्णिमासिणिं जोएति, ताए तेणं पुण्णिमासिणिट्ठाणातो मंडलं चउव्वीसेणं सतेणं छेत्ता बत्तीसं भागे उवाइणा-वेत्ता, एत्थ णं से चंदे दोच्चं पुण्णिमासिणिं जोएति ३। ता एएसि णं पंचण्हं संवच्छराणं तच्चं पुण्णिमासिणिं चंदे कंसि देसंसि जोएति ?, ता जंसि णं देसंसि चंदे दोच्चं पुण्णिमासिणिं जोएति, ताते पुण्णि-मासिणीठाणातो मंडलं चउव्वीसेणं सतेणं छेत्ता बत्तीसं भागे उवाइणावेत्ता, एत्थ णं तच्चं चंदे पुण्णिमासिणिं जोएति ४। ता एतेसिणं पचण्हं संवच्छराणं दुवालसमं पुण्णिमासिणिं चंदे कंसि देसंसि जोएंति ?, ता जंसि णं देसंसि चंदे तच्चं पुण्णिमासिणिं जोएति, ताते पुण्णिमासिणिट्ठाणाते मंडलं चउव्वीसेणं सतेणं छेत्ता दोण्णि अट्ठासीते भागसते उवायिणावेत्ता एत्थ णं से चंदे दुवालसमं पुण्णिमासिणिं जोएति ५। एवं खलु एतेणुवाएणं ताते २ पुण्णिमासिणिट्ठाणाते मंडलं चउव्वीसेणं सतेणं छेत्ता बत्तीसंभागे उवातिणावेत्ता तंसि २ देसंसि तं तं पुण्णिमासिणिं चंदे जोएति ६। ता एतेसि णं पंचण्हं संवच्छराणं चरमं बावट्ठि पुण्णिमासिणिं चदे कंसि देसंसि जोएंति ?, ता जंबुद्दीवस्स णं २ पाईणपडिणायताए उदीणदाहिणायताए जीवाए मंडलं चउव्वीसेणं सतेणं छेत्ता दाहिणिल्लंसि चउब्भागमंडलंसि सत्तावीसं भागे उवायणावेत्ता अट्ठावीसतिभागे वीसहा छेत्ता अट्ठारसभागे उवातिणावेत्ता तिहिं भागेहिं दोहि य कलाहि पच्चत्थिमिल्लं चउब्भागमंडलं असंपत्ते एत्थ णं चंदे चरिमं बावट्ठि पुण्णिमासिणि जोएति ७॥ सूत्रं ६३॥ ता एएसि णं पंचण्हं संवच्छराणं पढमं पुण्णिमासिणिं सूरे कंसि देसंसि जोएति ?, ता जंसि णं देसंसि सूरे चरिमं बावट्ठिं पुण्णिमासिणिं जोएति ताते पुण्णिमासिणिट्ठाणातो मंडलं चउव्वीसेणं सतेणं छेत्ता चउणवतिं

भागे उवातिणावेत्ता एत्थ णं से सूरिए पढमं पुरिणमासिणिं जोएइ १। ता एएसि णं पंचरहं संवच्छराणं दोच्चं पुरिणमासिणिं सूरे कंसि देसंसि जोएति ?, ता जंसि णं देसंसि सूरे पढमं पुरिणमासिणिं जोएइ ताए पुरिणमासिणीठाणाओ मंडलं चउवीसं सएणं छेत्ता दो चउणवइभागे उवाइणावित्ता एत्थ णं से सूरे दोच्चं पुराणमासिणिं जोएइ २। ता एएसि णं पंचरहं संवच्छराणं तच्चं पुरिणमासिणिं सूरे कंसि देसंसि जोएइ ?, ता जंसि णं देसंसि सूरे दोच्चं पुरिणमासिणिं जोएति ताते पुरिणमासिणिट्ठाणाते मंडलं चउव्वीसं सतेणं छेत्ता चउणउतिभागे उवातिणावेत्ता एत्थ णं से सूरे तच्चं पुरिणमासिणिं जोएति ३। ता एतेसि णं पंचरहं संवच्छराणं दुवालसं पुरिणमासिणिं सूरे कंसि देसंसि जोएति ? ताते पुरिणमासिणिट्ठाणाते मंडलं चउव्वीसेणं सतेणं छेत्ता अट्ठछत्ताले भागसते उवाइणावेत्ता, एत्थ णं से सूरे दुवालसमं पुरिणमासिणिं जोएति ४। एवं खलु एतेणुवाएणं ताते २ पुरिणमासिणिट्ठाणाते मंडलं चउवीसेणं सतेण छेत्ता चउणउतिं २ भागे उवातिणावेत्ता तंसि णं २ देसंसि तं तं पुरिणमासिणिं सूरे जोएति ५। ता एतेसि णं पंचरहं संवच्छराणं चरिमं बावट्ठिं पुरिणमासिणिं सूरे कंसि देसंसि जोएति ?, ता जंबुद्दीवस्स णं पाईणपडिणायताए उदीणदाहिणायताए जीवाए मंडलं चउव्वीसेणं सएणं छेत्ता पुरच्छिमिल्लंसि चउभागमंडलंसि सत्तावीसं भागे उवातिणावेत्ता अट्ठावीसतिभागं वीसधा छेत्ता अट्ठारसभागे उवादिणावेत्ता तिहिं भागेहिं दोहि य कलाहिं दाहिणिल्लं चउभागमंडलं असंपत्ते एत्थ णं सूरे चरिमं बावट्ठिं पुरिणामं जोएति ६॥ सूत्रं ६४॥ ता एएसि णं पंचरहं संवच्छराणं पढमं अमावासं चंदे कंसि देसंसि जोएति ?, ता जंसि णं देसंसि चंदे चरिमं बावट्ठिं अमावासं जोएति ताते अमावासट्ठाणातो मंडलं चउव्वीसेणं सतेणं छेत्ता बत्तीसं भागे उवादिणावेत्ता एत्थ णं से चंदे पढमं अमावासं जोएति १। एवं जेणेव

अभिलावेणं चंदस्स पुण्णिमासिणीओ भणिताओ, तेणेव अभिलावेणं अमावासाओ भणितव्वाओ बीइया ततिया दुवालसमी २। एवं खलु एतेणुवाएणं ताते २ अमावासाठाणाते मंडलं चउव्वीसेणं सतेणं छेत्ता दुवीसं २ भागे उवादिणावेत्ता तंसि २ देसंसि तं तं अमावासं चंदेण जोएति ३। ता एतेसि णं पंचण्हं संवच्छराणं चरमं बावट्ठिं अमावासं चंदे कंसि देसंसि जोएति ?, ता जंसि णं देसंसि चंदे चरिमं बावट्ठिं पुण्णिमासिणिं जोएति, ताते पुण्णिमासिणिट्ठाणाए मंडलं चउव्वीसेणं सतेणं छेत्ता सोलसभागे ओसक्कावइत्ता एत्थ णं से चंदे चरिमं बावट्ठिं अमावासं जोएति ४ ॥ सूत्रं ६५ ॥ ता एतेसि णं पंचण्हं संवच्छराणं पढमं अमावासं सूरे कंसि देसंसि जोएति ?, ता जंसि णं देसंसि सूरे चरिमं बावट्ठिं अमावासं जोएति ता ते अमावासट्ठाणाते मंडलं चउव्वीसेणं सतेणं छेत्ता चउणउति-भागे उवायिणावेत्ता एत्थ णं से सूरे पढमं अमावासं जोएति १। एवं जेणेव अभिलावेणं सूरियस्स पुण्णिमासिणीओ तेणेव अमावासाओवि, तंजहा–बिदिया तइया दुवालसमी २। एवं खलु एतेणुवाएणं ताते अमा-वासट्ठाणाते मंडलं चउव्वीसेणं सतेणं छेत्ता चउणउतिं २ भागे उवायिणा-वेत्ता ता तंसि २ देसंसि तं तं अमावासं सूरिए जोएति ३। ता एतेसि णं पंचण्हं संवच्छराणं चरिमं बावट्ठिं अमावासं सूरे कंसि देसंसि जोएइ ? ता जंसि णं देसंसि सूरे चरिमं बावट्ठिं अमावासं जोएति ताते पुण्णिमा-सिणिट्ठाणाते मंडलं चउव्वीसेणं सतेणं छेत्ता सत्तालीसं भागे ओसक्का-(उक्को)वइत्ता एत्थ णं से सूरे चरिमं बावट्ठिं अमावासं जोएति ४ ॥ सूत्रं ६६ ॥ ता एएसि णं पंचण्ह संवच्छराणं पढमं पुण्णमासिणिं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएंति ?, ता धणिट्ठाहिं, धणिट्ठाणं तिण्णि मुहुत्ता एकूण-वीसं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता पण्णट्ठि चुण्णियाभागा सेसा १। तं समयं च णं सूरिए केणं णक्खत्तेणं जोएति ?,

ता पुव्वाफग्गुणीहिं, पुव्वाफग्गुणीणं अट्ठावीसं मुहुत्ता अट्ठतीसं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता बत्तीसं चुण्णिया भागा सेसा २ । ता एएसि णं पंचण्हं संवच्छराणं दोच्चं पुण्णमासिणिं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएति ?, ता उत्तराहिं पोट्ठवताहि, उत्तराणं पोट्ठवताणं सत्तावीसं मुहुत्ता चोद्दस य बावट्ठिभागे मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता बावट्ठिचुण्णिया भागा सेसा ३ । तं समयं च णं सूरे केणं णक्खत्तेणं जोएत्ति ?, ता उत्तराहिं फग्गुणीहिं, उत्तराफग्गुणीणं सत्त मुहुत्ता तेत्तीसं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता एक्कवीसं चुण्णिया भागा सेसा ४ । ता एतेसि णं पंचण्हं संवच्छराणं तच्चं पुण्णिमासिणीं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएति ?, ता अस्सिणीहिं, अस्सिणीणं एक्कवीसं मुहुत्ता णव य एगट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता तेवट्ठिं चुण्णिया भागा सेसा ५ । तं समयं च णं सूरे केण णक्खत्तेणं जोएति ?, ता चित्ताहिं, चित्ताणं एक्को मुहुत्तो अट्ठावीसं च बावट्ठि भागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता तीसं चुण्णिया भागा सेसा ६ । ता एतेसि णं पंचण्हं संवच्छराणं दुवालसमं पुण्णिमासिणिं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएति ?, ता उत्तराहिं आसाढाहिं, उत्तराणं च आसाढाणं छव्वीसं मुहुत्ता छव्वीसं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठि भागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता चउपण्णं चुण्णिया भागा सेसा ७ । तं समयं च णं सूरे केणं णक्खत्तेणं जोएति ?, ता पुणव्वसुणा, पुणव्वसुस्स सोलस मुहुत्ता अट्ठ य बावट्ठि भागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता वीसं चुण्णिया भागा सेसा ८ । ता एतेसि णं पंचण्हं संवच्छराणं चरमं बावट्ठिं पुण्णिमासिणिं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएति ?, उत्तराहि आसाढाहिं उत्तराणं आसाढाणं चरमसमए १ । तं समयं च णं सूरे केणं णक्खत्तेणं जोएति ?, ता पुस्सेणं, पुस्सस्स एकूणवीसं मुहुत्ता तेतालीसं च बावट्ठि भागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता

तेत्तीसं चुणियाया भागा सेसा १० ॥ सूत्रं ६७ ॥ एतेसि णं पंचण्हं संवच्छराणं पढमं अमावासं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएति ?, ता अस्सेसाहिं, अस्सेसाणं एक्के मुहुत्ते चत्तालीसं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता बावट्ठिं चुणियाया भागा सेसा १ । तं समयं च णं सूरे केणं णक्खत्तेणं जोएति ?, ता अस्सेसाहिं चेव, अस्सेसाणं एक्को मुहुत्तो चत्तालीसं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं सत्तट्ठिधा छेत्ता बावट्ठिं चुणियाया भागा सेसा २ । ता एएसि णं पंचण्हं संवच्छराणं दोच्चं अमावासं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएति ?, ता उत्तराहिं फग्गुणीहिं, उत्तराणं फग्गुणीणं चत्तालीसं मुहुत्ता पणतीसं बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता पण्णट्ठिं चुणियाया भागा सेसा ३ । तं समयं च णं सूरे केणं णक्खत्तेणं जोएति ?, ता उत्तराहिं चेव फग्गुणीहिं, उत्तराणं फग्गुणीणं जहेव चंदस्स ४ । ता एतेसि णं पंचण्हं संवच्छराणं तच्चं अमावासं चंदे केणं नक्खत्तेणं जोएति ?, ता हत्थेणं, हत्थस्स चत्तारि मुहुत्ता तीसं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता बावट्ठिं चुणियाया भागा सेसा ५ । तं समयं च णं सूरे केणं णक्खत्तेणं जोएति ?, ता हत्थेणं चेव हत्थस्स जहा चंदस्स ६ । ता एएसि णं पंचण्हं संवच्छराणं दुवालसमं अमावासं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएति ?, अद्दाहिं, अद्दाणं चत्तारि मुहुत्ता दस य बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता चउपण्णं चुणियाया भागा सेसा ७ । तं समयं च णं सूरे केणं नक्खत्तेणं जोएति ?, ता अद्दाहिं चेव, अद्दाणं जहा चंदस्स ८ । ता एएसि णं पंचण्हं संवच्छ-राणं चरिमं बावट्ठिं अमावासं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएति ?, ता पुणव्व-सुणा, पुणव्वसुस्स बावीसं मुहुत्ता बायालीसं च बासट्ठिभागा मुहुत्तस्स सेसा ९ । तं समयं च णं सूरे केणं णक्खत्तेणं जोएति ?, ता पुणव्वसुणा चेव पुणव्वसुस्स णं जहा चंदस्स १० ॥ सूत्रं ६८ ॥ ता जेणं अज्ज णक्खत्तेणं

चंदे जोयं जोएति जंसि देसंसि से णं इमाणि अट्ठ एकूणवीसाणि मुहुत्त-सताइं चउवीसं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता बावट्ठिं चुण्णियाभागे उवायिणावेत्ता पुणरवि से चंदे अरणेणं सरिसएणं चेव णक्खत्तेणं जोयं जोएति अएणंसि देसंसि २। ता जेणं अज्ज णक्खत्तेणं चंदे जोयं जोएति जंसि देसंसि से णं इमाइं सोलस अट्ठतीसं मुहुत्तसताइं अउणापएणं च बावट्ठिभागे मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता पएणट्ठिं चुण्णियाभागे उवायिणावेत्ता पुणरवि से णं चंदे तेणं चेव णक्खत्तेणं जोयं जोएति अएणंसि देसंसि २। ता जेणं अज्जणक्खत्तेणं चंदे जोयं जोएति जंसि देसंसि से णं इमाइं चउप्पएणमुहुत्तसहस्साइं णव य मुहुत्तसताइं उवादिणावित्ता पुणरवि से चंदे अरणेणं तारिसएणं नक्खत्तेणं जोयं जोएति तंसि देसंसि ३। ता जेणं अज्जणक्खत्तेणं चंदे जोयं जोएति जंसि २ देसंसि से णं इमं एगं लक्खं नव य सहस्से अट्ठ य मुहुत्तसए (एगं मुहुत्तसयसहस्सं अट्ठाणउतिं च मुहुत्तसताइं) उवायिणावित्ता पुणरवि से चंदे तेण चेव णक्खत्तेणं जोयं जोएइ तंसि देसंसि ४। ता जेणं अज्जणक्खत्तेणं सूरे जोयं जोएति जंसि देसंसि से णं इमाइं तिण्णि छावट्ठाइं राइंदियसताइं उवादिणावेत्ता पुणरवि से सूरिए अरणेणं तारिसएणं चेव नक्खत्तेण जोयं जोएति तंसि देसंसि ५। ता जेणं अज्जनक्खत्तेणं सूरे जोयं जोएति तंसि देसंसि से णं इमाइं सत्तदुवीसं राइंदियसताइं उवाइणावेत्ता पुणरवि से सूरे अरणेणं चेव तासिएणं (तेणं चेव) नक्खत्तेणं जोयं जोएति तंसि देसंसि ६। ता जेणं अज्जणक्खत्तेणं सूरे जोयं जोएति जंसि देसंसि से णं इमाइं अट्ठारस वीसाइं राइंदियसताइं उवादिणावेत्ता पुणरवि सूरे अरणेणं चेव णक्खत्तेणं जोयं जोएति तंसि देसंसि ७। ता जेणं अज्जणक्खत्तेणं सूरे जोयं जोएति जंसि देसंसि तेण इमाइं छत्तीसं सट्ठाइं राइंदियसयाइं उवाइणा-वित्ता पुणरवि से सूरे तेणं चेव णक्खत्तेणं जोयं जोएति तंसि देसंसि

८ ॥ सूत्रं ६९ ॥ ता जया णं इमे चंदे गतिसमावरणए भवति तता णं इतरेवि चंदे गतिसमावरणए भवति १ । जता णं इतरे चंदे गतिसमावरणए भवति तता णं इमेवि चदे गतिसमावरणए भवति २ । ता जया णं इमे सूरिए गइसमावरणे भवति तया णं इतरेवि सूरिए गइसमावरणे भवति ३ । जता णं इतरे सूरिए गतिसमावरणे भवति तया णं इमेवि सूरिए गइसमावरणे भवति ४ । एवं गहेवि णक्खत्तेवि ५ । ता जया णं इमे चंदे जुत्ते जोगेणं भवति तता णं इतरेवि चंदे जुत्ते जोगेणं भवति ६ । जया णं इयरे चंदे जुत्ते जोगेणं भवइ तता णं इमेवि चंदे जुत्ते जोगेणं भवति ७ । एवं सूरेवि गहेवि णक्खत्तेवि ८ । सतावि णं चंदा जुत्ता जोएहिं सतावि णं सूरा जुत्ता जोगेहिं सयावि णं गहा जुत्ता जोगेहिं सयावि णं नक्खत्ता जुत्ता जोगेहिं ९ । दुहतोवि णं चंदा जुत्ता जोगेहि दुहतोवि णं सूरा जुत्ता जोगेहिं दुहतोवि णं गहा जुत्ता जोगेहिं दुहतोवि णं णक्खत्ता जुत्ता जोगेहि १० । मंडलं सतसहस्सेणं अट्ठाणउतीए सतेहिं छेत्ता इच्चेस णक्खत्ते खेत्तपरिभागे णक्खत्तविजए पाहुडेति आहितेत्तिबेमि ११ ॥सूत्रं ७०॥ दसमस्स पाहुडस्स बावीसतिमं पाहुडपाहुडं समत्तं ॥ दसमं च पाहुडं समत्तं ॥

॥ इति दशमप्राभृते द्वाविंशतितमं प्राभृतप्राभृतम् ॥ १०-२२ ॥

॥ इति दशमं प्राभृतम् ॥ १० ॥

॥ अथ संवत्सरनामादिनामकं एकादशं प्राभृतम् ॥

ता कहं ते संवच्छराणादी आहितेति वदेज्जा ?, तत्थ खलु इमे पंच संवच्छरे पराणत्ते, तंजहा—चंदे २ अभिवड्ढिते चंदे अभिवड्ढिते १ । ता एतेसि णं पंचराहं संवच्छराणं पढमस्स चंदस्स संवच्छरस्स के आदी आहितेति वदेज्जा ?, ता जे णं पंचमस्स अभिवड्ढितसंवच्छरस्स पज्जवसाणे से णं पढमस्स चंदस्स संवच्छरस्स आदी अणंतरपुरक्खडे समए २ । ता से णं

किंपज्जवसिते आहितेति वदेज्जा ?, ता जे णं दोच्चस्स चंदसंवच्छरस्स आदी से णं पढमस्स चंदसंवच्छरस पज्जवसाणे अणंतरपच्छाकडे समये ३। तं समयं च णं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएति ?, ता उत्तराहिं आसाढाहिं, उत्तराणं आसाढाणं छदुवीसं मुहुत्ता छदुवीसं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छित्ता चउप्पणणं चुण्णियाभागा सेसा ४। तं समयं सूरे केणं णक्खत्तेणं जोएति ?, ता पुणव्वसुणा, पुणव्वसुस्स सोलस मुहुत्ता अट्ठ य बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिहा छेत्ता वीसं चुण्णियाभागा सेसा ५। ता एएसि णं पंचण्हं संवच्छराणं दोच्चस्स चंदसंवच्छरस्स के आदी आहितेति वदेज्जा ?, ता जे णं पढमस्स चंदसंवच्छरस्स पज्जवसाणे से णं दोच्चस्स णं चंदसंवच्छरस्स आदी अणंतरपुरक्खडे समये ६। ता से णं किंपज्जवसिते आहितेति वदेज्जा ?, ता जे णं तच्चस्स अभिवड्ढियसंवच्छरस्स आदी से ण दोच्चस्स चंदसंवच्छरस्स पज्जवसाणे अणंतरपच्छाकडे समये ७। तं समयं च णं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएति ?, ता पुव्वाहिं आसाढाहिं, पुव्वाणं आसाढाणं सत्त मुहुत्ता तेवण्णं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता इगतालीसं चुण्णियाभागा सेसा ८। तं समयं च णं सूरे केणं णक्खत्तेणं जोएति ?, ता पुणव्वसुणा, पुणव्वसुस्स णं बायालीसं मुहुत्ता पणतीसं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता सत्त चुण्णिया भागा सेसा ९। ता एतेसि णं पंचण्हं संवच्छराणं तच्चस्स अभिवड्ढितसंवच्छरस्स के आदी आहिताति वदेज्जा ?, ता जे णं दोच्चस्स चंदसंवच्छरस्स पज्जवसाणे से णं तच्चस्स अभिवड्ढितसंवच्छरस्स आदी अणंतरपुरक्खडे समए १०। ता से णं किंपज्जवसिते आहितेति वदेज्जा ?, ता जे णं चउत्थस्स चंदसंवच्छरस्स आदी से णं तच्चस्स अभिवड्ढितसंवच्छरस्स पज्जवसाणे अणंतरपच्छाकडे समए ११। तं समयं च णं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएति ?, ता उत्तराहि आसाढाहिं, उत्तराणं आसा-

ढाणं तेरस मुहुत्ता तेरस य बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता सत्तावीसं चुणिणया भागा सेसा १२। तं समयं च णं सूरे केणं णक्खत्तेणं जोएति ?, ता पुणव्वसुणा, पुणव्वसुस्स दो मुहुत्ता छप्पएणं बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता सट्ठी चुणिणया भागा सेसा १३। ता एएसि णं पंचराहं संवच्छराणं चउत्थस्स चंदसंवच्छरस्स के आदी आहितेति वदेज्जा ?, ता जे णं तच्चस्स अभिवड्ढितसंवच्छरस्स पज्जवसाणे से णं चउत्थस्स चंदसंवच्छरस्स आदी अणंतरपुरक्खडे समये १४। ता से णं किंपज्जवसिते आहितेति वदेज्जा ?, ता जे णं चरिमस्स अभिवड्ढियसंवच्छरस्स आदी से णं चउत्थस्स चंदसंवच्छरस्स पज्जवसाणे अणंतरपच्छाकडे समये १५। तं समयं च णं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएति ?, ता उत्तराहिं आसाढाहिं, उत्तराणं आसाढाणं चत्तालीसं मुहुत्ता चत्तालीसं च बासट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता चउसट्ठी चुणिणयाभागा सेसा १६। तं समयं च णं सूरे केणं णक्खत्तेणं जोएति ?, ता पुणव्वसुणा, पुणव्वसुस्स अउणतीसं मुहुत्ता एक्कवीसं बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता सीतालीस चुणिणयाभागा सेसा १७। ता एतेसि णं पंचराहं संवच्छराणं पंचमस्स अभिवड्ढितसंवच्छरस्स के आदी आहिताति वदेज्जा ?, ता जे णं चउत्थस्स चंदसंवच्छरस्स पज्जवसाणे से णं पंचमस्स अभिवड्ढितसंवच्छरस्स आदी अणंतरपुक्खडे समये १८। ता से णं किंपज्जवसिते आहितेति वदेज्जा ?, ता जे णं पढमस्स चंदसंवच्छरस्स आदी से णं पंचमस्स अभिवड्ढितसंवच्छरस्स पज्जवसाणे अणंतरपच्छाकडे समये १९। तं समयं च णं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएति ?, ता उत्तराहिं आसाढाहिं, उत्तराणं आसाढाणं चरमसमये, तं समयं च णं सूरे केणं णक्खत्तेणं जोएति ?, ता पुस्सेणं, पुस्सस्स णं एक्कवीसं मुहुत्ता तेतालीसं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता तेत्तीसं चुणिणया भागा सेसा २० ॥ सूत्रं ७१ ॥ एक्कारसमं पाहुडं समत्तं ॥

॥ इति एकादशं प्राभृतम् ॥ ११ ॥

।। अथ संवत्सरभेदाख्यं द्वादशं प्राभृतम् ।।

ता कति णं संवच्छरा आहिताति वदेज्जा ?, तत्थ खलु इमे पंच संवच्छरा पराणत्ता, तंजहा—णक्खत्ते चंदे उडू आदिच्चे अभिवड्ढिते १। ता एतेसि णं पंचराहं संवच्छराणं पढमस्स नक्खत्तसंवच्छरस्स णक्खत्तमासे तीसतिमुहुत्तेणं २ अहोरत्तेणं मिज्जमाणे केवतिए राइंदियग्गेणं आहितेति वदेज्जा ?, ता सत्तावीसं राइंदिदाइं एकवीसं च सत्तट्ठिभागा राइंदियस्स राइंदियग्गेणं आहितेति वदेज्जा २। ता से णं केवतिए मुहुत्तग्गेणं आहितेति वदेज्जा ?, ता अट्ठसए एकूणवीसे मुहुत्ताणं सत्तावीसं च सत्तट्ठिभागे मुहुत्तस्स मुहुत्तग्गेणं आहितेति वदेज्जा ३। ता एएसि णं अद्धा दुवालसक्खुत्तकडा णक्खत्ते संवच्छरे, ता से णं केवतिए राइंदियग्गेणं आहितेति वदेज्जा ?, ता तिरिण सत्तावीसे राइंदियसते एकावन्नं च सत्तट्ठिभागे राइंदियस्स राइंदियग्गेणं आहितेति वदेज्जा ४। ता से णं केवतिए मुहुत्तग्गेणं आहितेति वदेज्जा ?, ता णव मुहुत्तसहस्सा अट्ठ य बत्तीसे मुहुत्तसए छप्पन्नं च सत्तट्ठिभागे मुहुत्तस्स मुहुत्तग्गेण आहितेति वदेज्जा ५। ता एएसि णं पंचराहं संवच्छराणं दोच्चस्स चंदसंवच्छरस्स चंदे मासे तीसतिमुहुत्तेणं २ अहोरत्तेणं गणिज्जमाणे केवतिए राइंदियग्गेणं आहितेति वदेज्जा ?, ता एगूणतीसं राइंदियाइं बत्तीसं बावट्ठिभागा राइंदियस्स राइंदियग्गेणं आहितेति वदेज्जा ६। ता से णं केवतिए मुहुत्तग्गेणं आहितेति वदेज्जा ?, ता अट्ठपंचासते मुहुत्ते तेत्तीसं च छावट्ठिभागे मुहुत्तग्गेणं आहितेति वदेज्जा ७। ता एस णं अद्धा दुवालसखुत्तकडा चंदे संवच्छरे, ता से णं केवतिए राइंदियग्गेणं आहितेति वदेज्जा ?, ता तिन्नि चउप्पन्ने राइंदियसते दुवालस य बावट्ठिभागा राइंदियग्गेणं आहितेति वदेज्जा ८। तीसे णं केवतिए मुहुत्तग्गेणं आहितेति वदेज्जा ? ता दस मुहुत्तसहस्साइं छच्च पणुवीसे

मुहुत्तसए पराणासं च बावट्ठिभागे मुहुत्तेणं आहितेति वदेज्जा ६। ता एएसि णं पंचराहं संवच्छराणं तच्चस्स उडुसंवच्छरस्स उडुमासे तीसतीमुहुत्तेणं गणिज्जमाणे केवतिए राइंदियग्गेणं आहियाति वदेज्जा ?, ता तीसं राइंदियाणं राइंदियग्गेणं आहितेति वदेज्जा १०। ता से णं केवतिए मुहुत्तग्गेणं आहितेति वदेज्जा ?, ता णव मुहुत्तसताइं मुहुत्तग्गेणं आहितेति वदेज्जा ११। ता एस णं अद्धा दुवालसखुत्तकडा उडू संवच्छरे, ता से णं केवतिए राइंदियग्गेणं आहितेति वदेज्जा ?, ता तिरिण सट्ठे राइंदियसते राइंदियग्गेणं आहितेति वदेज्जा १२। ता से णं केवतिए मुहुत्तग्गेणं आहिएति वदेज्जा ? ता दस मुहुत्तसहस्साइं अट्ठ य सयाइं मुहुत्तग्गेणं आहितेति वदेज्जा १३। ता एएसि णं पंचराहं संवच्छराणं चउत्थस्स आदिच्चसंवच्छरस्स आइच्चे मासे तीसतिमुहुत्तेणं अहोरत्तेणं गणिज्जमाणे केवइए राइंदियग्गेणं आहितेति वदेजा ?, ता तीसं राइंदियाइं अवद्धभागं च राइंदियस्स राइंदियग्गेणं आहितेति वदेज्जा १४। ता से णं केवतिए मुहुत्तग्गेणं आहितेति वदेज्जा ?, ता णव पराणरस मुहुत्तसए मुहुत्तग्गेणं आहितेति वदेज्जा १५। ता एस णं अद्धा दुवालसखुत्तकडा आदिच्चे संवच्छरे, ता से णं केवतिए राइंदियग्गेणं आहितेति वदेज्जा ?, ता तिन्नि छावट्ठे राइंदियसए राइंदियग्गेणं आहियत्ति वइज्जा १६। ता से णं कवतिए मुहुत्तग्गेणं आहियत्ति वइज्जा ?, ता दस मुहुत्तस्स सहस्साइं णव असीते मुहुत्तसते मुहुत्तग्गेणं आहितेति वदेज्जा १७। ता एएसि णं पंचराहं संवच्छराणं पंचमस्स अभिवड्ढियसंवच्छरस्स अभिवड्ढिते मासे तीसतिमुहुत्तेणं अहोरत्तेणं गणिज्जमाणे केवतिए राइंदियग्गेणं आहितेति वदेज्जा ?, ता एकतीस राइंदियाइं एगूणतीसं च मुहुत्ता सत्तरस बावट्ठिभागे मुहुत्तस्स राइंदियग्गेणं आहितेति वदेज्जा १८। ता से णं केवतिए मुहुत्तग्गेणं आहितेति वदेज्जा ?, ता णव एगूणसट्ठे मुहुत्तसते सत्तरस बावट्ठिभागे मुहुत्तस्स मुहुत्तग्गेणं आहितेति वदेज्जा

१९ । ता एस णं अद्धा दुवालसखुत्तकडा अभिवड्ढितसंवच्छरे २० । ता से णं केवतिए राइंदियग्गेणं आहितेति वदेज्जा ?, तिरिण तेसीते राइंदियसते एक्कवीसं च मुहुत्ता अट्ठारस बावट्ठिभागे मुहुत्तस्स राइंदियग्गेणं आहितेति वदेज्जा २१ । ता से णं केवतिए मुहुत्तग्गेणं आहितेति वदेज्जा ?; ता एकारस मुहुत्तसहस्साइं पंच य एकारस मुहुत्तसते अट्ठारस बावट्ठिभागे मुहुत्तस्स मुहुत्तग्गेणं आहितेति वदेज्जा २२ ॥ सूत्रं ७२ ॥ ता केवतियं ते नोजुगे राइंदियग्गेणं आहितेति वदेज्जा ?, ता सत्तरस एकाणउते राइंदियसते एगूणवीसं च मुहुत्तं च सत्तावरणे बावट्ठिभागे मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता पणपरणं चुरिणयाभागे राइंदियग्गेणं आहितेति वदेज्जा १ । ता से णं केवतिए मुहुत्तग्गेणं आहितेति वदेज्जा ?, ता तेपरण मुहुत्तसहस्साइं सत्त य उणापन्ने मुहुत्तसते सत्तावरणं बावट्ठिभागे मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता पणपरणं चुरिणया भागा मुहुत्तग्गेणं आहितेति वदेज्जा २ । ता केवतिए णं ते जुगप्पत्ते राइंदियग्गेणं आहितेति वदेज्जा ?, ता अट्ठतीसं राइंदियाइं दस य मुहुत्ता चत्तारि य बावट्ठिभागे मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता दुवालस चुरिणया भागे राइंदियग्गेणं आहिताति वदेज्जा ३। ता से णं केवतिए मुहुत्तग्गेणं आहितेति वदेज्जा ?, ता एकारस परणासे मुहुत्तसए चत्तारि य बावट्ठिभागे बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिहा छेत्ता दुवालस चुरिणया भागे मुहुत्तग्गेणं आहितेति वदेज्जा ४। ता केवतियं जुगे राइंदियग्गेणं आहितेति वदेज्जा ? ता अट्ठारसतीसे राइंदियसते राइंदियग्गेणं आहियाति वदेज्जा ५ । ता से णं केवतिए मुहुत्तग्गेणं आहियाति वदेज्जा ?, ता चउप्पणं मुहुत्तसहस्साइं णव य मुहुत्तसताइं मुहुत्तग्गेणं आहितेति वदेज्जा ६ । ता से णं केवतिए बावट्ठिभागमुहुत्तग्गेणं आहितेति वदेज्जा ?, ता चोत्तीसं सतसहस्साइं अट्ठतीसं च बावट्ठिभागमुहुत्तसते बावट्ठिभागमुहुत्तग्गेणं आहितेति वदेज्जा ७ ॥ सूत्रं ७३ ॥ ता

कता णं एते आदिच्चचंदसंवच्छरा समादीया समपज्जवसिया आहितेति वदेज्जा ?, ता सट्ठिं एए आदिच्चमासा बावट्ठिं एतेए चंदमासा, एस णं अद्धा छखुत्तकडा दुवालसभयिता तीसं एते आदिच्चसंवच्छरा एक्कतीसं एते चंदसंवच्छरा, तता णं एते आदिच्चचंदसंवच्छरा समादीया समपज्जवसिया आहितातिं वदेज्जा १। ता कता णं एते आदिच्चउडुचंदणक्खत्ता संवच्छरा समादीयां समपज्जवसिया आहितेति वदेज्जा ?, ता सट्ठिं एते आदिच्चा मासा एगट्ठिं एते उडुमासा बावट्ठिं एते चंदमासा सत्तट्ठिं एते नक्खत्ता मासा एस णं अद्धा दुवालस खुत्तकडा दुवालसभयिता सट्ठिं एते आदिच्चा संवच्छरा एगट्ठिं एते उडुसंवच्छरा बावट्ठि एते चंदा संवच्छरा सत्तट्ठि एते नक्खत्ता संवच्छरा, तता णं एते आदिच्चउडुचंदणक्खत्ता संवच्छरा समादीया समपज्जवसिया आहितेति वदेज्जा २। ता कता णं एते अभिवड्ढिआदिच्चउडु-चंदणक्खत्ता संवच्छरा समादीया समपज्जवसिता आहितेति वदेज्जा ?, ता सत्तावण्णं मांसा सत्त य अहोरत्ता एक्कारस य मुहुत्ता तेवीसं बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स एते अभिवड्ढिता मासा सट्ठिं एते आदिच्च मासा एगट्ठि एते उडूमासा बावट्ठी एते चंदमासा सत्तट्ठी एते नक्खत्तमासा, एस णं अद्धा छप्पण्णसत्तखुत्तकडा दुवालसभयिता सत्त सता चोत्ताला एते णं अभिवड्ढिता संवच्छरा, सत्त सता असीता एते णं आदिच्चा संवच्छरा, सत्त सता तेणउता एते णं उडूसंवच्छरा, अट्ठसत्ता छलुत्तरा एते णं चंदा संवच्छरा, एकसत्तरी अट्ठ सया एए णं नक्खत्ता संवच्छरा, तता णं एते अभिवड्ढितआदिच्चउडुचंद-नक्खत्ता संवच्छरा समादीया समपज्जवसिया आहितेति वदेज्जा ३। ता णयट्ठताए णं चंदे संवच्छरे तिण्णि चउप्पण्णे राइंदियसते दुवालस य बावट्ठिभागे राइंदियस्स आहितेति वदेज्जा ४। ता अहातच्चेणं चंदे संवच्छरे तिण्णि चउप्पण्णे राइंदियसते पंच य मुहुत्ते पण्णासं च बावट्ठिभागे मुहुत्तस्स आहितेति वदेज्जा ५ ॥ सूत्रं ७४ ॥ तत्थ खलु इमे छ उडू पण्णत्ता, तंजहा—

पाउसे वरिसारत्ते सरते हेमंते वसंते गिम्हे १। ता सव्वेवि णं एते चंदउडू दुवे २ मासाति चउप्पराणेणं २ आदाणेणं गणिज्जमाणा सातिरेगाइं एगूणसट्ठि २ राइंदियाइं राइंदियग्गेणं आहितेति वदेज्जा २। तत्थ खलु इमे छ ओमरत्ता पराणत्ता, तंजहा-ततिए पव्वे सत्तमे पव्वे एकारसमे पव्वे पन्नरसमे पव्वे एगूणवीसतिमे पव्वे तेवीसतिमे पव्वे ३। तत्थ खलु इमे छ अतिरत्ता पराणत्ता, तंजहा–चउत्थे पव्वे अट्ठमे पव्वे बारसमे पव्वे सोलसमे पव्वे वीसतिमे पव्वे चउवीसतिमे पव्वे ४। छच्चेव य अइरत्ता आइचाओ हवंति माणाइ। छच्चेव ओमरत्ता चंदाहि हवंति माणाहि ॥ १ ॥ सूत्रं ७५ ॥ तत्थ खलु इमाओ पंच वासिकीओ पंच हमंतीओ आउट्टिओ पणात्ताओ १। ता एएसि णं पंचराहं संवच्छराणं पढमं वासिकिं आउट्टिं चंदे केणं नक्खत्तेणं जोएति ?, ता अभीयिणा, अभीयिस्स पढमसमएणं २। तं समयं च णं सूरे केणं णक्खत्तेणं जोएति ?, ता पूसेणं, पूसस्स एगूणवीसं मुहुत्ता तेत्तालीसं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता तेत्तीसं चुरिणया भागा सेसा ३। ता एएसि णं पंचराहं संवच्छराणं दोच्चं वासिकिं आउट्टिं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएति ? ता संठाणाहिं संठाणाणं एकारस मुहुत्ते ऊतालीसं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता तेपराणं चुरिणया भागा सेसा ४। तं समयं सूरे केणं णक्खत्तेणं जोएति? ता पूसेणं, पूसस्स णं तं चेव जं पढमाए ५। एतेसि णं पंचराहं संवच्छराणं तच्चं वासिकिं आउट्टिं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएइ ?, ता विसाहाहिं, विसाहाणं तेरस मुहुत्ता चउप्पराणं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता चत्तालीसं चुरिणया भागा सेसा ६। तं समयं च णं सूरे केणं णक्खत्तेणं जोएति ?, ता पूसेणं, पूसस्स तं चेव ७। ता एतेसि णं पंचराहं संवच्छराणं चउत्थं वासिक्कं आउट्टिं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएति ?, ता रेवतीहिं, रवेतीणं पणवीसं मुहुत्ता बत्तीसं च

बासट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठि भागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता छत्तीसं चुरिणया भागा सेसा ८। तं समयं च णं सूरे केणं णक्खत्तेणं जोएति ?, ता पूसेणं, पूसस्स तं चेव ९। ता एएसि णं पंचराहं संवच्छराणं पंचमं वासिकिं आउट्टिं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएति ?, ता पुव्वाहिं फग्गुणीहिं, पुव्वाफग्गुणीणं बारस मुहुत्ता सत्तालीसं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता तेरस चुरिणया भागा सेसा १०। तं समयं च णं सूरे केणं णक्खत्तेणं जोएति ?, ता पूसेणं, पूसस्स तं चेव ११॥ सूत्रं ७६ ॥ ता एएसि णं पंचराहं संवच्छराणं पढमं हेमंतिं आउट्टिं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएति ?, ता हत्थेणं, हत्थस्स णं पंच मुहुत्ता पराणासं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता सट्ठि चुरिणया भागा सेसा १। तं समयं च णं सूरे केणं णक्खत्तेणं जोएति ?, उत्तराहिं आसाढाहिं, उत्तराणं आसाढाणं चरिमसमए २। ता एएसि णं पंचराहं संवच्छराणं दोच्चं हेमंतिं आउट्टिं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएति ?, ता सतभिसयाहिं, सतभिसयाणं दुन्नि मुहुत्ता अट्ठावीसं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता छत्तालीसं चुरिणया भागा सेसा ३। तं समयं च णं सूरे केणं णक्खत्तेणं जोएति ?, ता उत्तराहिं आसाढाहिं, उत्तराणं आसाढाणं चरिम समए ४। तेसि णं पंचराहं संवच्छराणं तच्चं हेमंतिं आउट्टिं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएति ?, ता पूसेणं, पूसस्स एकूणवीसं मुहुत्ता तेतालीसं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता तेत्तीसं चुरिणया भागा सेसा ५। तं समयं च णं सूरे केणं णक्खत्तेणं जोएति ?, ता उत्तराहिं आसाढाहिं, उत्तराणं आसाढाणं चरिमसमए ६। ता एतेसि णं पंचराहं संवच्छराणं चउत्थिं हेमंतिं आउट्टिं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएति ?, ता मूलेणं, मूलस्स छ मुहुत्ता अट्ठावन्नं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता वीसं चुरिणया भागा सेसा ७। तं समयं च णं सूरे

केणं णक्खत्तेणं जोएति ?, ता उत्तराहिं आसाढाहिं, उत्तराणं आसाढाणं चरिमसमए ८ । ता एतेसि णं पंचराहं संवच्छराणं पंचमं हेमंति आउट्टिं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएति ?, कत्तियाहिं, कत्तियाणं अट्ठारस मुहुत्ता छत्तीसं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता छ चुरिणया भागा सेसा ९ । तं समयं च णं सूरे केणं णक्खत्तेणं जोएति ?, ता उत्तराहिं आसाढाहिं, उत्तराणं आसाढाणं चरिमसमए १० ॥ सूत्रं ७७ ॥ तत्थ खलु इमे दसविधे जोए पराणत्ते, तंजहा—वसभाणुजोए वेणुयाणुजोते मंचे मंचाइमंचे छत्ते छत्तातिच्छत्ते जुअणद्धे घणसंमद्दे पीणिते मंडकप्पुते णामं दसमे १ । एतसि णं पंचराहं संवच्छराणं छत्तातिच्छत्तं जोयं चंदे कंसि देसंसि जोएति ?, ता जंबुद्दीवस्स २ पाईणपडिणी आयताए उदीणदाहिणायताए जीवाए मंडलं चउव्वीसेणं सतेणं छित्ता दाहिणपुरच्छिमिल्लंसि चउभागमंडलंसि सत्तावीसं भागे उवादिणावेत्ता अट्ठावीसतिभागं वीसधा छेत्ता अट्ठारसभागे उवादिणावेत्ता तिहिं भागेहिं दोहिं कलाहिं दाहिणपुरच्छिमिल्लं चउब्भाग मंडलं असंपत्ते एत्थ णं से चंदे छत्तातिच्छत्तं जोयं जोएति, उप्पिं चंदो मज्झे णक्खत्ते हेट्ठा आदिच्चे २ । तं समयं च णं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएति ?, ता चित्ताहिं चरमसमए ३ ॥ सूत्रं ७८ ॥ बारसमं पाहुडं समत्तं ॥

॥ इति द्वादशं प्राभृतम् ॥ १२ ॥

॥ अथ चन्द्रमसो वृद्ध्यपवृद्धिनामकं त्रयोदशं प्राभृतम् ॥

ता कहं ते चंदमसो वड्ढोवड्ढी आहितेति वदेज्जा ?, ता अट्ठ पंचासीते मुहुत्तसते तीसं च बावट्ठिभागे मुहुत्तस्स १ । ता दोसिणापक्खाओ अंधगार-पक्खमयमाणे चंदे चत्तारि बायालसते छत्तालीसं च बावट्ठिभागे मुहुत्तस्स जाइं चंदे रज्जति, तंजहा—पढमाए पढमं भागं बितियाए बितियं भागं जाव पराणरसीए पराणरसमं भागं, चरिमसमए चंदे रत्ते भवति, अवसेसे समए चंदे

रत्ते य विरत्ते य भवति, इयराणं अमावासा, एत्थ णं पढमे पव्वे अमावासे, ता अंधारपक्खो २। ता णं दोसिणापक्खं अयमाणे चंदे चत्तारि बाताले मुहुत्तसते छातालीसं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स जाइं चंदे विरज्जति, तंजहा—पढमाए पढमं भागं बितियाए बितियं भागं जाव पण्णरसीए पण्णरसमं भागं चरिमे समये चंदे विरत्ते भवति, अवसेससमए चंदे रत्ते य विरत्ते य भवति, इयराणं पुण्णिमासिणी, एत्थ णं दोच्चे पव्वे पुण्णिमासिणी ३ ॥ सूत्रं ७९ ॥ तत्थ खलु इमाओ बावट्ठिं पुण्णिमासिणीओ बावट्ठिं अमावासाओ पण्णत्ताओ १। बावट्ठिं एते कसिणा रागा बावट्ठिं एते कसिणा विरागा २। एते चउव्वीसे पव्वसते एते चउव्वीसे कसिणरागविरागसते ३। जावतियाणं पंचण्हं संवच्छराणं समया एगेणं चउव्वीसेणं समयसतेणूणका एवतिया परित्ता असंखेज्जा देसरागविरागसता भवंतीतिमक्खाता ४। अमावासातो णं पुण्णिमासिणी चत्तारि बाताले मुहुत्तसते छत्तालीसं बावट्ठिभागे मुहुत्तस्स आहितेति वदेज्जा ५। ता पुण्णिमासिणीतो णं अमावासा चत्तारि बायाले मुहुत्तसते छत्तालीसं बावट्ठिभागे मुहुत्तस्स आहितेति वदेज्जा ६। ता अमावासातो णं अमावासा अट्ठपंचासीते मुहुत्तसते तीसं च बावट्ठिभागे मुहुत्तस्स आहितेति वदेज्जा ७। ता पुण्णिमासिणीतो णं पुण्णिमासीणी अट्ठपंचासीते मुहुत्तसते तीसं बावट्ठिभागे मुहुत्तस्स आहितेति वदेज्जा ८। एस णं एवतिए चंदे मासे एस णं एवतिए सगले जुगे ९ ॥ सूत्रं ८० ॥ ता चंदेणं अद्धमासेणं चंदे कति मंडलाइं चरति ?, ता चोद्दस चउब्भागमंडलाइं चरति एगं च चउवीससतभागं मंडलस्स १। ता आइच्चेणं अद्धमासेणं चंदे कति मंडलाइं चरति ?, ता सोलस मंडलाइं चरति सोलसमंडलचारी तदा अवराइं खलु दुवे अट्ठकाइं जाइं चंदे केणइ असामण्णकाइं सयमेव पविट्ठित्ता २ चारं चरति २। कतराइं खलु दुवे अट्ठकाइं जाइं चंदे केणइ असामण्णकाइं सयमेव पविट्ठित्ता २ चारं चरति ?, इमाइं खलु ते

बे अट्ठगाइं जाइं चंदे केणइ असामरणगाइं सयमेव पविट्ठित्ता २ चारं चरति, तंजहा–निक्खममाणे चेव अमावासंतेणं पविसमाणे चेव पुण्णिमासिंतेणं, एताइं खलु दुवे अट्ठगाइं जाइं चंदे केणइ असामरणगाइं सयमेव पविट्ठित्ता २ चारं चरइ ३ । ता पढमायणगते चंदे दाहिणाते भागाते पविसमाणे सत्त अद्ध-मंडलाइं जाइं चंदे दाहिणाते भागाए पविसमाणे चारं चरति ४ । कतराइं खलु ताइं सत्त अद्धमंडलाइं जाइं चंदे दाहिणाते भागाते पविसमाणे चारं चरति ?, इमाइं खलु ताइं सत्त अद्धमंडलाइं जाइं चंदे दाहिणाते भागाते पविसमाणे चारं चरति, तंजहा–बिदिए अद्धमंडले चउत्थे अद्धमंडले छट्ठे अद्धमंडले अट्ठमे अद्धमंडले दसमे अद्धमंडले बारसमे अद्धमंडले चउदसमे अद्धमंडले एताइं खलु ताइं सत्त अद्धमंडलाइं जाइं चंदे दाहिणाते भागाते पविसमाणे चारं चरति ५ । ता पढमायणगते चंदे उत्तराते भागाते पविसमाणे छ अद्धमंडलाइं तेरस य सत्तट्ठिभागाइं अद्धमंडलस्स जाइं चंदे उत्तराते भागाए पविसमाणे चारं चरति ६ । कतराइं खलु ताइं छ अद्धमंडलाइं तेरस य सत्तट्ठिभागाइं अद्धमंडलस्स जाइं चंदे उत्तराते भागाते पविसमाणे चारं चरति ?, इमाइं खलु ताइं छ अद्धमंडलाइं तेरस य सत्तट्ठिभागाइं अद्धमंडलस्स जाइं चंदे उत्तराए भागाते पविसमाणे चारं चरति, तंजहा–तईए अद्धमंडले पंचमे अद्धमंडले सत्तमे अद्धमंडले नवमे अद्धमंडले एकारसमे अद्धमंडले तेरसमे अद्धमंडले पन्नरसमंडलस्स तेरस सत्तट्ठिभागाइं, एताइं खलु ताइं छ अद्धमंडलाइं तेरस य सत्तट्ठिभागाइं अद्धमंडलस्स जाइं चंदे उत्तराते भागाते पविसमाणे चारं चरति, एतावया च पढमे चंदायणे समत्ते भवति ७ । ता णक्खत्ते अद्धमासे नो चंदे अद्धमासे चंदे अद्धमासे नो णक्खत्ते अद्धमासे ८ । ता नक्खत्ताओ अद्धमासातो ते चंदे चंदेणं अद्धमासेणं किमधियं चरति ?, ता एगं अद्धमंडलं चरति चत्तारि य सत्तट्ठिभागाइं अद्ध-मंडलस्स सत्तट्ठिभागं एकतीसाए छेत्ता णव भागाइं, ता दोच्चायणगते चंदे

पुरच्छिमाते भागाते णिक्खममाणे सत्त चउप्पण्णाइं जाइं चंदे परस्स चिन्नं पडिचरति सत्त तेरसकाइं जाइं चंदे अप्पणा चिण्णं चरति ६। ता दोच्चायणगते चंदे पच्चत्थिमाए भागाए निक्खममाणे छ चउप्पण्णाइं जाइं चंदे परस्स चिण्णं पडिचरति छ तेरसगाइं चंदे अप्पणो चिण्णं पडिचरति, अवरगाइं खलु दुवे तेरसगाइं जाइं चंदे केणइ असमन्नगाइं सयमेव पविट्ठित्ता २ चारं चरति १०। कतराइं खलु ताइं दुवे तेरसगाइं जाइं चंदे केणइ असामण्णगाइं सयमेव पविट्ठित्ता २ चारं चरति ?, इमाइं खलु ताइं दुवे तेरसगाइं जाइं चंदो केणइ असामण्णगाइं सयमेव पविट्ठित्ता २ चारं चरति सव्वब्भंतरे चेव मंडले सव्वबाहिरे चेव मंडले, एयाणि खलु ताणि दुवे तेरसगाइं जाइं चंदे केणइ जाव चारं चरइ, एतावता दोच्चे चंदायणे समत्ते भवति ११। ता णक्खत्ते मासे नो चंदे मासे चंदे मासे णो णक्खत्ते मासे १२। ता णक्खत्ताते मासाए चंदेणं मासेणं किमधियं चरति ?, ता दो अद्धमंडलाइं चरति अट्ठ य सत्तट्ठिभागाइं अद्धमंडलस्स सत्तट्ठिभागं च एकतीसधा छेत्ता अट्ठारस भागाइं, ता तच्चायणगते चंदे पच्चत्थिमाते भागाए पविसमाणे बाहिराणंतरस्स पच्चत्थिमिल्लस्स अद्धमंडलस्स ईतालीसं सत्तट्ठिभागाइं जाइं चंदे अप्पणो परस्स य चिण्णं पडिचरति, तेरस सत्तट्ठिभागाइं जाइं चंदे परस्स चिण्णं पडिचरति, तेरस सत्तट्ठिभागाइं चंदे अप्पणो परस्स चिण्णं पडिचरति, एतावयाव बाहिराणंतरे पच्चत्थिमिल्ले अद्धमंडले समत्ते भवति १३। तच्चायणगते चंदे पुरच्छिमाए भागाए पविसमाणे बाहिरतच्चस्स पुरच्छिमिल्लस्स अद्धमंडलस्स ईतालीसं सत्तट्ठिभागाइं जाइं चंदे अप्पणो परस्स चिण्णं पडियरति, तेरस सत्तट्ठिभागाइं जाइं चंदे परस्स चिण्णं पडिचरति, तेरस सत्तट्ठिभागाइं जाइं चंदे अप्पणो परस्स य चिण्णं पडियरति, एतावताव बाहिरतच्चे पुरच्छिमिल्ले अद्धमंडले समत्ते भवति १४। ता तच्चायणगते चंदे पच्चत्थिमाते भागाते पविसमाणे बाहिरचउत्थस्स पच्चत्थिमिल्लस्स अद्ध-

मंडलस्स अद्धसत्तट्ठिभागाइं सत्तट्ठिभागं च एकतीसधा छेत्ता अट्ठारस भागाइं जाइं चंदे अप्पणो परस्स य चिराणं पडियरति, एतावताव बाहिरचउत्थपच्चत्थिमिल्ले अद्धमंडले समत्ते भवइ १५। एवं खलु चंदेणं मासेणं चंदे तेरस चउप्पराणगाइं दुवे तेरसगाइं जाइ चंदे परस्स चिराणं पडिचरति, तेरस २ गाइं जाइं चंदे अप्पणो चिराणाइं पडियरति, दुवे ईतालीसगाइं दुवे तेरसगाइं अट्ठ सत्तट्ठिभागाइं सत्तट्ठिभागं च एकतीसधा छेत्ता अट्ठारसभागाइं जाइं चंदे अप्पणो परस्स य चिराणं पडिचरति, अवराइं खलु दुवे तेरसगाइं जाइं चंदे केणइ असामन्नगाइं सयमेव पविट्ठित्ता २ चारं चरति १६। इच्चेसो चंदमासोऽभिगमण-णिक्खमण-वुड्ढिणिवुड्ढि-अणवट्ठित-संठाणसंठिती-विउव्वणगिड्ढिपत्ते रूवी चंदे देवे २ आहितेति वदेज्जा १७॥सूत्रं ८१॥ तेरसमं पाहुडं समत्तं॥

॥ इति त्रयोदशं प्राभृतम् ॥ १३ ॥

॥ अथ ज्योत्स्नाप्रमाणाख्यं चतुर्दशं प्राभृतम् ॥

ता कता ते दोसिणा बहू आहितेति वदेज्जा ?, ता दोसिणापक्खे णं दोसिणा बहू आहितेति वदेज्जा १। ता कहं ते दोसिणापक्खे दोसिणा बहू आहितेति वदेज्जा ?, ता अंधकारपक्खओ णं दोसिणा बहू आहियाति वदेज्जा २। ता कहं ते अंधकारपक्खातो दोसिणापक्खे दोसिणा बहू आहिताति वदेज्जा ?, ता अंधकारपक्खातो णं दोसिणापक्खं अयमाणे चंदे चत्तारि बायाले मुहुत्तसते छत्तालीसं च बावट्ठिभागे मुहुत्तस्स जाइं चंदे विरज्जति, तंजहा–पढमाए पढमं भागं बिदियाए बिदियं भागं जाव पराणरसीए पराणरसं भागं, एवं खलु अंधकारपक्खातो दोसिणापक्खे दोसिणा बहू आहिताति वदेज्जा ३। ता केवतिया णं दोसिणापक्खे दोसिणा बहू आहिताति वदेज्जा ?, ता परित्ता असंखेज्जा भागा ४। ता कता ते अंधकारे बहू आहितेति वदेज्जा ?, ता अंधयारपक्खे णं बहू अंधकारे आहिताति

वदेज्जा ५ । ता कहं ते अंधकारपक्खे अंधकारे बहू आहिताति वदेज्जा ?, ता दोसिणापक्खातो अंधकारपक्खे अंधकारे बहू आहितेति वदेज्जा ६ । ता कहं ते दोसिणापक्खातो अंधकारपक्खे अंधकारे बहू आहिताति वदेज्जा ?, ता दोसिणापक्खातो णं अंधकारपक्खं अयमाणे चंदे चत्तारि बाताले मुहुत्त-सते छायालीसं च बावट्ठिभागे मुहुत्तस्स जाइं चंदे रज्जति, तंजहा–पढमाए पढमं भागं बिदियाए बिदियं भागं जाव पराणरसीए पराणरसमं भागं, एवं खलु दोसिणापक्खातो अंधकारपक्खे अंधकारे बहू आहिताति वदेज्जा ७ । ता केवतिएणं अंधकारपक्खे अंधकारे बहू आहियाति वदेज्जा ?, परित्ता असंखेज्जा भागा ८ ॥ सूत्रं ८२ ॥ चोद्दसमं पाहुडं समत्तं ॥

॥ अथ शीघ्रगतिनिर्णयाख्यं पञ्चदशं प्राभृतम् ॥

ता कहं ते सिग्घगती वत्थू आहितेति वदेज्जा ?, ता एतेसि णं चंदिम-सूरिय-गहगण-नक्खत्ततारारूवाणं चंदेहिंतो सूरे सिग्घगती सूरेहिंतो गहा सिग्घगती गहेहिंतो णक्खत्ता सिग्घगती णक्खत्तेहिंतो तारा सिग्घगती, सव्वप्पगती चंदा सव्वसिग्घगती तारा १ । ता एगमेगेणं मुहुत्तेणं चंदे केवतियाइं भागसताइं गच्छति ?, ता जं जं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति तस्स २ मंडलपरिक्खेवस्स सत्तरस अडसट्ठिं भागसते गच्छति, मंडलं सतसहस्सेणं अट्ठाणउतीसतेहिं छेत्ता २ । ता एगमेगेणं मुहुत्तेणं सूरिए केवतियाइं भागसयाइं गच्छति ?, ता जं जं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति तस्स २ मंडलपरिक्खेवस्स अट्ठारस तीसे भागसते गच्छति, मंडलं सतसह-स्सेणं अट्ठाणउतीसतेहि छेत्ता ३ । ता एगमेगेणं मुहुत्तेणं णक्खत्ते केवतियाइं भागसताइं गच्छति ?, ता जं जं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति तस्स २ मंडलस्स परिक्खेवस्स अट्ठारस पणतीसे भागसते गच्छति, मंडलं सतसहस्सेणं अट्ठाणउतीससतेहिं छेत्ता ४ ॥ सूत्रं ८३ ॥ ता जया णं

चंदं गतिसमावरागं सूरे गतिसमावरागे भवति १। से गं गतिमाताए केवतियं विसेसेति ?, बावट्ठिभागे विसेसेति २। ता जया गं चंदं गतिसमावरागं गक्खत्ते गतिसमावरागे भवइ से गं गतिमाताए केवतियं विसेसेइ ?, ता सत्तट्ठिं भागे विसेसेति ३। ता जता गं सूरं गतिसमावरागं गक्खत्ते गतिसमावरागे भवति से गं गतिमाताए केवतियं विसेसेति ?, ता पंच भागे विसेसेति ४। ता जता गं चंदं गतिसमावरागं अभीयीगक्खत्ते गं गतिसमावरागे पुरच्छिमाते भागाते समासादेति, पुरच्छिमाते भागाते समासादित्ता गव मुहुत्ते सत्तावीसं च सत्तट्ठिभागे मुहुत्तस्स चंदेग सद्धिं जोएति, जोअं जोएत्ता जोयं अगुपरियट्टति, जोअं २ त्ता विप्पजहाति विगतजोई यावि भवति ५। ता जता गं चंदं गतिसमावरागं सवगे गक्खत्ते गतिसमावरागे पुरच्छिमाति भागादे समासादेति, पुरच्छिमाते भागाते समासादेत्ता तीसं मुहुत्ते चंदेग सद्धिं जोअं जोएति २ जोयं अगुपरियट्टति २ त्ता विप्पजहति विगतजोई यावि भवइ, एवं एएगं अभिलावेगं गोतव्वं ६। परागरसमुहुत्ताइं तिसतिमुहुत्ताइं पगायालीसमुहुत्ताइं भागितव्वाइं जाव उत्तरासाढा ७। ता जता गं चंदं गतिसमावरागं गहे गतिसमावरागे पुरच्छिमाते भागाते समासादेति २ त्ता चंदेगं सद्धिं जोगं जुंजति २ त्ता जोगं अगुपरियट्टति २ त्ता विप्पजहति विगतजोई यावि भवति ८। ता जया गं सूरं गतिसमावरागं अभीयीगक्खत्ते गतिसमावरागे पुरच्छिमाते भागाते समासादेति, २ त्ता चत्तारि अहोरत्ते छच्च मुहुत्ते सूरेगं सद्धिं जोयं जोएति २ जोयं अगुपरियट्टति २ त्ता विप्पजहति विगतजोगी यावि भवति ९। एवं छ अहोरत्ता एक्कवीसं मुहुत्ता य तेरस अहोरत्ता बारस मुहुत्ता य वीसं अहोरत्ता तिरिग मुहुत्ता य सव्वे भगितव्वा जाव जता गं सूरं गतिसमावरागं उत्तरासाढागक्खत्ते गतिसमावरागे पुरच्छिमाते भागाते समासादेति, २ त्ता वीसं अहोरत्ते तिरिग य मुहुत्ते सूरेग सद्धिं जोयं जोएति

२ त्ता जोयं अणुपरियट्टति २ त्ता विजेति विजहति विप्पजहति विगतजोगी यावि भवति १० । ता जता णं सूरं गतिसमावरणं गहे गतिसमावरणे पुरच्छिमाते भागाते समासादेति, २ त्ता सूरेण सद्धिं जोयं जुंजति २ त्ता जोयं अणुपरियट्टति २ त्ता जाव विप्पजहति विगतजोगी यावि भवति ११ ॥ सूत्रं ८४ ॥ ता णक्खत्तेणं मासेणं चंदे कति मंडलाइं चरति ?, ता तेरस मंडलाइं चरति, तेरस य सत्तट्ठिभागे मंडलस्स १ । ता णक्खत्तेणं मासेणं सूरे कति मंडलाइं चरति ?, तेरस मंडलाइं चरति, चोत्तालीसं च सत्तट्ठिभागे मंडलस्स २ । ता णक्खत्तेणं मासेणं णक्खत्ते कति मंडलाइं चरति ?, ता तेरस मंडलाइं चरति अद्धसीतालीसं च सत्तट्ठिभागे मंडलस्स ३ । ता चंदेणं मासेणं चंदे कति मंडलाइं चरति, चोद्दस चउभागाइं मंडलाइं चरति एगं च चउवीससतं भागं मंडलस्स ४ । ता चंदेणं मासेणं सूरे कति मंडलाइं चरति ?, ता पराणरस चउभागूणाइं मंडलाइं चरति, एगं च चउवीससयभागं मंडलस्स ५ । ता चंदेणं मासेणं णक्खत्ते कति मंडलाइं चरति ?, ता पराणरस चउभागूणाइं मंडलाइं चरति छच्च चउवीससतभागे मंडलस्स ६ । ता उडुणा मासेणं चंदे कति मंडलाइं चरति ?, ता चोद्दस मंडलाइं चरति तीसं च एगट्ठिभागे मंडलस्स ७ । ता उडुणा मासेणं सूरे कति मंडलाइं चरति ?, ता पराणरस मंडलाइं चरति ८ । ता उडुणा मासेणं णक्खते कति मंडलाइं चरति ?, ता पराणरस मंडलाइं चरति पंच य बावीससतभागे मंडलस्स ९ । ता आदिच्चेणं मासेणं चंदे कति मंडलाइं चरति ?, ता चोद्दस मंडलाइं चरति, एकारस भागे मंडलस्स १० । ता आदिच्चेणं मासेणं सूरे चंदे कति मंडलाइं चरति ?, ता पराणरस चउभागाहिगाइं मंडलाइं चरति ११ । ता आदिच्चेणं मासेणं णक्खत्ते कति मंडलाइं चरति ?, ता पराणरस चउभागाहिगाइं मंडलाइं चरति पंचतीसं च चउवीससतभागमंडलाइं चरति १२ । ता अभिवड्ढिएणं मासेणं चंदे कति मंडलाइं चरति ?, ता पराणरस मंडलाइं

तेसीतिं छलसीयसतभागे मंडलस्स १३। ता अभिवड्ढितेणं मासेणं सूरे कति मंडलाइं चरति ?, ता सोलस मंडलाइं चरति तिहिं भागेहिं ऊणगाइं दोहिं अडयालेहिं सएहिं मंडलं छित्ता १४। अभिवड्ढितेणं मासेणं नक्खत्ते कति मंडलाइं चरति ?, ता सोलस मंडलाइं चरति सीतालीसएहिं भागेहिं अहियाइं चोद्दसहिं अट्ठासीएहिं मंडलं छेत्ता १५ ॥ सूत्रं ८५ ॥ ता एगमेगेणं अहोरत्तेणं चंदे कति मंडलाइं चरति ?, ता एगं अद्धमंडलं चरति एकतीसाए भागेहि ऊणं णवहिं पण्णरसेहिं सएहि अद्धमंडलं छेत्ता १। ता एगमेगेणं अहोरत्तेणं सूरिए कति मंडलाइं चरति ?, ता एगं अद्ध-मंडलं चरति २। ता एगमेगेणं अहोरत्तेणं णक्खत्ते कति मंडलाइं चरति ?, ता एगं अद्धमंडलं चरति दोहिं भागेहि अधियं सत्तहि बत्तीसेहिं सएहिं अद्ध-मंडलं छेत्ता ३। ता एगमेगं मंडलं चंदे कतिहिं अहोरत्तेहिं चरति ?, ता दोहिं अहोरत्तेहिं चरति एकतीसाए भागेहिं अधितेहिं चउहिं चोतालेहिं सतेहिं राइंदिएहिं छेत्ता ४। ता एगमेगं मंडलं सूरे कतिहि अहोरत्तेहिं चरति ?, ता दोहिं अहोरत्तेहिं चरति ५। ता एगमेगं मंडलं णक्खत्ते कतिहि अहोर-त्तेहिं चरति ?, ता दोहिं अहोरत्तेहिं चरति दोहिं भागेहिं ऊणेहिं तिहिं सत्तसट्ठेहिं सतेहिं राइंदिएहिं छेत्ता ६। ता जुगेणं चंदे कति मंडलाइं चरति ?, ता अट्ठ चुलसीते मंडलसते चरति ७। ता जुगेणं सूरे कति मंडलाइं चरति ?, ता णवपण्णरमंडलसते चरति ८। ता जुगेणं णक्खत्ते कति मंडलाइं चरति ?, ता अट्ठारस पणतीसे दुभागमंडलसते चरति ९। इच्चेसा मुहुत्तगती रिक्खाति-मास-राइंदिय-जुगमंडलपविभत्ती सिग्घगती वत्थु आहित्तेत्ति बेमि १० ॥ सूत्रं ८६ ॥ पन्नरसमं पाहुडं समत्तं ॥

॥ इति पञ्चदशं प्राभृतम् ॥ १५ ॥

—卐—

॥ अथ ज्योत्स्नालक्षणाख्यं षोडशं प्राभृतम् ॥

ता कहं ते दोसिणालक्खणे आहितेति वदेज्जा ?, ता चंदलेसादी य दोसिणादी य १ । दोसिणाई य चंदलेसादी य के अट्ठे किंलक्खणे ?, ता एकट्ठे एगलक्खणे २ । ता सूरलेस्सादी य आयवेइ य आतवेति य सूरलेस्सादी य के अट्ठे किंलक्खणे ?, ता एगट्ठे एगलक्खणे ३ । ता अंधकारेति य छायाइ य छायाति य अंधकारेति य के अट्ठे किंलक्खणे ?, ता एगट्ठे एगलक्खणे ४ ॥ सूत्रं ८७ ॥ सोलसमं पाहुडं समत्तं ॥ १६ ॥

॥ अथ च्यवनोपपाताख्यं सप्तदशं प्राभृतम् ॥

ता कहं ते चयणोववाता आहितेति वदेज्जा ?, तत्थ खलु इमाओ पणवीसं पडिवत्तीओ पराणत्ताओ, तत्थ एगे एवमाहंसु ता अणुसमयमेव चंदिमसूरिया अराणे चयंति अराणे उववज्जंति एगे एवमाहंसु १, एगे पुण एवमाहंसु ता अणुमुहुत्तमेव चंदिमसूरिया अराणे चयंति अराणे उववज्जंति २ एवं जहेव हेट्ठा तहेव जाव ता एगे पुण एवमाहंसु ता अणुओसप्पिणी उस्सप्पिणीमेव चंदिमसूरिया अराणे चयंति अराणे उववज्जंति एगे एवमाहंसु १ । वयं पुण एवं वदामो–ता चंदिमसूरियाणं देवा महिड्डीआ महाजुतीया महाबला महाजसा महासोक्खा महाणुभावा वरवत्थधरा वरमल्लधरा वरगन्धधरा वराभरणधरा अव्वोच्छित्तिणयट्ठताए काले अराणे चयंति अराणे उववज्जंति चयणोववाता आहितेति वदेज्जा २ ॥ सूत्रं ८८ ॥ सत्तरसमं पाहुडं समत्तं ॥ १७ ॥

॥ अथ चन्द्रसूर्याद्युच्चत्वाख्यं अष्टादशं प्राभृतम् ॥

ता कहं ते उच्चत्ते आहितेति वदेज्जा ?, तत्थ खलु इमाओ पणवीसं पडिवत्तीओ, तत्थेगे एवमाहंसु–ता एगं जोयणसहस्सं सूरे उड्ढं उच्चत्तेणं दिवड्ढं चंदे एगे एवमाहंसु १ एगे पुण एमाहंसु ता दो जोयणसहस्साइं सूरे उड्ढं उच्चत्तेणं अड्ढातिज्जाइं चंदे एगे एवमाहंसु २ एगे पुण एवमाहंसु–ता

तिन्नि जोयणसहस्साइं सूरे उड्ढं उच्चत्तेणं अद्धुट्ठाइं चंदे एगे एवमाहंसु ३ एगे पुण एवमाहंसु ता चत्तारि जोयणसहस्साइं सूरे उड्ढं उच्चत्तेणं अद्धपंचमाइं चंदे एगे एवमाहंसु ४ एगे पुण एवमाहंसु ता पंच जोयणसहस्साइं सूरे उड्ढं उच्चत्तेणं अद्धछट्ठाइं चंदे एगे एवमाहंसु ५ एगे पुण एवमाहंसु ता छ जोयणसहस्साइं सूरे उड्ढं उच्चत्तेणं अद्धसत्तमाइं चंदे एगे एवमाहंसु ६ एगे पुण एवमाहंसु ता सत्त जोयणसहस्साइं सूरे उड्ढं उच्चत्तेणं अद्धट्ठमाइं चंदे एगे एवमाहंसु ७ एगे पुण एवमाहंसु ता अट्ठ जोयणसहस्साइं सूरे उड्ढं उच्चत्तेणं अद्धनवमाइं चंदे एगे एवमाहंसु ८ एगे पुण एवमाहंसु ता नव जोयणसहस्साइं सूरे उड्ढं उच्चत्तेणं अद्धदसमाइं चंदे एगे एवमाहंसु ९ एगे पुण एवमाहंसु ता दस जोयणसहस्साइं सूरे उड्ढं उच्चत्तेणं अद्धएकारस चंदे एगे एवमाहंसु १० एगे पुण एवमाहंसु एकारस जोयणसहस्साइं सूरे उड्ढं उच्चत्तेणं अद्धबारस चंदे ११ एतेणं अभिलावेणं णेतव्वं, बारस सूरे अद्धतेरस चंदे १२ तेरस सूरे अद्धचोद्दस चंदे १३ चोद्दस सूरे अद्धपणरस चंदे १४ पणरस सूरे अद्धसोलस चंदे १५ सोलस सूरे अद्धसत्तरस चंदे १६ सत्तरस सूरे अद्धअट्ठारस चंदे १७ अट्ठारस सूरे अद्धएकूणवीसं चंदे १८ एकोणवीसं सूरे अद्धवीसं चंदे १९ वीसं सूरे अद्धएकवीसं चंदे २० एकवीसं सूरे अद्धबावीसं चंदे २१ बावीसं सूरे अद्धतेवीसं चंदे २२ तेवीसं सूरे अद्धचउवीसं चंदे २३ चउवीसं सूरे अद्धपणवीसं चंदे २४ एगे एवमाहंसु एगे पुण एवमाहंसु पणवीसं जोयणसहस्साइं सूरे उड्ढं उच्चत्तेणं अद्धछव्वीसं चंदे एगे एवमाहंसु २५, १। वयं पुण एवं वदामो—ता इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ सत्तणउइजोयणसए उड्ढं उप्पतित्ता हेट्ठिल्ले ताराविमाणे चारं चरति अट्ठजोयणसते उड्ढं उप्पतित्ता सूरविमाणे चारं चरति अट्ठअसीए जोयणसए उड्ढं उप्पइत्ता चंदविमाणे चारं चरति णव जोयणसताइं उड्ढं उप्पतित्ता उवरिं ताराविमाणे चारं

चरति, हेट्ठिल्लातो तारविमाणातो दसजोयणाइं उड्ढं उप्पतित्ता सूरविमाणा चारं चरंति नउतिं जोयणाइं उड्ढं उप्पतित्ता चंदविमाणा चारं चरंति दसोत्तरं जोयणसतं उड्ढं उप्पतित्ता उवरिल्ले तारारूवे चारं चरति, सूरविमाणातो असीतिं जोयणाइं उड्ढं उप्पतित्ता चंदविमाणे चारं चरति जोयणसतं उड्ढं उप्पतित्ता उवरिल्ले तारारूवे चारं चरति, ता चंदविमाणातो णं वीसं जोयणाइं उड्ढं उप्पतित्ता उवरिल्लते तारारूवे चारं चरति, एवामेव सपुव्वावरेणं दसुत्तरजोयणसतं बाहल्ले तिरियमसंखेज्जे जोतिसविसए जोतिसं चारं चरति आहितेति वदेज्जा २ ॥सूत्रं ८९॥ ता अत्थि णं चंदिमसूरियाणं देवाणं हिट्ठंपि तारारूवा अणुंपि तुल्लावि समंपि तारारूवा अणुंपि तुल्लावि उप्पिंपि तारारूवा अणुंपि तुल्लावि ?, ता अत्थि १। ता कहं ते चंदिमसूरियाणं देवाणं हिट्ठंपि तारारूवा अणुंपि तुल्लावि समंपि तारारूवा अणुंपि तुल्लावि उप्पिंपि तारारूवा अणुंपि तुल्लावि ?, ता जहा जहा णं तेसि णं देवाणं तवणियमबंभचेराइं उस्सिताइं भवंति तहा तहा णं तेसिं देवाणं एवं भवति, तंजहा—अणुत्ते वा तुल्लत्ते वा २। ता एवं खलु चंदिमसूरियाणं देवाणं हिट्ठंपि तारारूवा अणुंपि तुल्लावि तहेव जाव उप्पिंपि तारारूवा अणुंपि तुल्लावि ३॥ सूत्रं ९० ॥ ता एगमेगस्स णं चंदस्स देवस्स केवतिया गहा परिवारो पण्णत्तो ?, केवतिया णक्खत्ता परिवारो पण्णत्तो ? केवतिया तारा परिवारो पण्णत्तो ?, ता एगमेगस्स णं चंदस्स देवस्स अट्ठासीतिगहा परिवारो पण्णत्तो, अट्ठावीसं णक्खत्ता परिवारो पण्णत्तो, छावट्ठिसहस्साइं णव चेव सताइं पंचुत्तराइं (पंचमयराइं) । एगससीपरिवारो तारागणकोडिकोडीणं ॥ १ ॥ परिवारो पण्णत्तो ॥ सूत्रं ९१ ॥ ता मंदरस्स णं पव्वतस्स केवतियं अबाधाए जोइसे चारं चरति ?, ता एक्कारस एक्कवीसे जोयणसते अबाधाए जोइसे चारं चरति १। ता लोअंतातो णं केवतियं अबाधाए जोतिसे पण्णत्ते ?, ता एक्कारस एक्कारे

जोयणसते अबाधाए जोइसे पराणत्ते २ ॥ सूत्रं १२ ॥ ता जंबुद्दीवे णं दीवे कतरे णक्खत्ते सव्वब्भंतरिल्लं चारं चरति कतरे णक्खत्ते सव्वबाहिरिल्लं चारं चरति कयरे णक्खत्ते सव्ववरिल्लं चारं चरति कयरे णक्खत्ते सव्वहिट्ठिलं चारं चरइ ?, अभीयी णक्खत्ते सव्वब्भितरिल्लं चारं चरति, मूले णक्खत्ते सव्वबाहिरिल्लं चारं चरति, साती णक्खत्ते सव्वुवरिल्लं चारं चरति, भरणी णक्खत्ते सव्वहेट्ठिल्लं चारं चरति ॥ सूत्रं १३ ॥ ता चंदविमाणेणं किंसंठिते पराणत्ते ?, ता अद्धकविट्ठग-संठाणसंठिते सव्वफालियामए अब्भुग्गय-मूसितपहसिते विविधमणि-रयणभत्तिचित्ते जाव पडिरूवे एवं सूरविमाणे गहविमाणे णक्खत्तविमाणे ताराविमाणे १। ता चंदविमाणे णं केवतियं आयामविक्खंभेणं केवतियं परिक्खेवेणं केवतियं बाहल्लेणं पराणत्ते ?, ता छप्पराणं एगट्ठिभागे जोयणस्स आयामविक्खंभेणं तं तिगुणं सविसेसं परि-रयेणं अट्ठावीसं एगट्ठिभागे जोयणस्स बाहल्लेणं पराणत्ते २। ता सूरविमाणे णं केवतियं आयामविक्खंभेणं पुच्छा, ता अडयालीसं एगट्ठिभागे जोयणस्स आयामविक्खंभेणं तं तिगुणं सविसेसं परिरएणं चउव्वीसं एगट्ठिभागे जोय-णस्स बाहल्लेणं पराणत्ते ३। ता गहविमाणे णं पुच्छा, ता अद्धजोयणं आयामविक्खंभेणं तं तिगुणियं सविसेसं परिरएणं कोसं बाहल्लेणं पराणत्ते ४। ता णक्खत्तविमाणे णं केवतियं पुच्छा, ता कोसं आयामविक्खंभेणं तं तिगुणं सविसेसं परिरएणं अद्धकोसं बाहल्लेणं पराणत्ते ५। ता ताराविमाणे णं केवतियं पुच्छा, ता अद्धकोसं आयामविक्खंभेणं तं तिगुणं सविसेसं परिरएणं पंचधणुसयाइं बाहल्लेणं पराणत्ते ६। ता चंदविमाणे णं कति देवसाहस्सीओ परिवहंति ?, सोलस देवसाहस्सीओ परिवहंति, तंजहा—पुरच्छिमे णं सीहरूवधारीणं चत्तारि देवसाहस्सीओ परिवहंति, दाहिणे णं गयरूवधारीणं चत्तारि देवसाहस्सीओ परिवहंति, पच्चत्थिमे णं वसभरूवधारीणं चत्तारि देवसाहस्सीओ परिवहंति, उत्तरे णं तुरगरूवधारीणं चत्तारि देवसाह-

स्सोओ परिवहंति ७ । एवं सूरविमाणंपि ८ । ता गहविमाणे णं कति देव-साहस्सीओ परिवहंति ?, ता अट्ठ देवसाहस्सीओ परिवहंति, तंजहा—पुरच्छिमेणं सिंहरूवधारीणं देवाणं दो देवसाहस्सीओ परिवहंति, एवं जाव उत्तरेणं तुरगरूवधारीणं ९ । ता नक्खत्तविमाणे णं कति देवसाहस्सीओ परिवहंति ?, ता चत्तारि देवसाहस्सीओ परिवहंति, तंजहा—पुरच्छिमे णं सीहरूवधारीणं देवाणं एक्का देवसाहस्सी परिवहति एवं जाव उत्तरे णं तुरगरूवधारीणं देवाणं १० । ता ताराविमाणे णं कति देवसाहस्सीओ परिवहंति ?, ता दो देवसाहस्सीओ परिवहंति तंजहा—पुरच्छिमेणं सीहरूवधारीणं देवाणं पंच देवसता परिवहंति, एवं जावुत्तरे णं तुरगरूवधारीणं ११ ॥ सूत्रं ९४ ॥ एतेसि णं चंदिम-सूरिय-गह-णक्खत्त-तारारूवाणं कयरे२हिंतो सिग्घगती वा मंदगती वा ?, ता चंदेहिंतो सूरा सिग्घगती सूरेहिंतो गहा सिग्घगती गहेहिंतो णक्खत्ता सिग्घगती णक्खत्तेहिंतो तारा सिग्घगती, सव्वप्पगती चंदा सव्वसिग्घगती तारा १ । ता एएसि णं चंदिम सूरिय-गहगण-णक्खत्ततारारूवाणं कयरे २ हिंतो अप्पिड्ढिया वा महिड्ढिया वा ?, ताराहिंतो महिड्ढिया णक्खत्ता णक्खत्तेहिंतो गहा महिड्ढिया गहेहिंतो सूरा महिड्ढिया सूरेहिंतो चंदा महिड्ढिया, सव्वप्पड्ढिया तारा सव्वमहिड्ढिया चंदा २ ॥सूत्रं ९५॥ ता जंबुद्दीवे णं दीवे तारारूवस्स य २ एस णं केवतिए अबाधाए अंतरे पण्णत्ते ?, दुविहे अंतरे पण्णत्ते, तंजहा—वाघातिमे य णिव्वाघातिमे य १ । तत्थ णं जे से वाघातिमे से णं जहण्णेणं दोण्णि छावट्ठे जोयणसते उक्कोसेणं बारस जोयणसहस्साइं दोण्णि बाताले जोयणसते तारारूवस्स २ य अबाधाए अंतरे पण्णत्ते २ । तत्थ जे से निव्वाघातिमे से जहण्णेणं पंच धणुसताइं उक्कोसेणं अद्धजोयणं तारारूवस्स य २ अबाधाए अंतरे पण्णत्ते ३ ॥ सूत्रं ९६ ॥ ता चंदस्स णं जोतिसिंदस्स जोतिसरण्णो कति अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ ?, ता चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तंजहा—चंदप्पभा दोसिणाभा

अच्चिमाली पभंकरा १। तत्थ णं एगमेगाए देवीए चत्तारि देवीसाहस्सी परियारो पराणत्तो २ । पभू णं तातो एगमेगा देवी अराणाइं चत्तारि २ देवीसहस्साइं परिवारं विउव्वित्तए ?, एवामेव सपुव्वावरेणं सोलस देवी-सहस्सा, सेत्तं तुडिए ३ । ता पभू णं चंदे जोतिसिंदे जोतिसराया चंदवडिंसए विमाणे सभाए सुधम्माए तुडिएणं सद्धिं दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरित्तए ?, णो इणट्ठे समट्ठे ४ । ता कहं ते णो पभू जोतिसिंदे जोतिसराया चंदवडिंसए विमाणे सभाए सुधम्माए तुडिएणं सद्धिं दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरित्तए ?, ता चंदस्स णं जोतिसिंदस्स जोतिसरराणो चंदवडिंसए विमाणे सभाए सुधम्माए माणवएसु चेतियखंभेसु वइरामएसु गोलवट्टसमुग्गएसु बहवे जिणसकधाओ संणिक्खित्ताओ चिट्ठंति, ताओ णं चंदस्स जोतिसिंदस्स जोइसरराणो अराणेसिं च बहूणं जोतिसियाणं देवाण य देवीण य अच्चणिज्जाओ वंदणिज्जाओ पूयणिज्जाओ सक्कारणिज्जाओ सम्माणणिज्जाओ कल्लाणं मंगलं देवयं चेतियं पज्जुवासणिज्जाओ एवं खलु णो पभू चंदे जोतिसिंदे जोतिसराया चंदवडिंसए विमाणे सभाए सुहम्माए तुडिएणं सद्धिं दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरित्तए ५ । पभू णं चंदे जोतिसिंदे जोतिसराया चंदवडिंसए विमाणे सभाए सुधम्माए चंदंसि सीहासणंसि चउहिं सामाणियसाहस्सीहिं चउहिं अग्गमहिसीहिं सपरिवाराहिं तिहिं परिसाहिं सत्तहिं अणिएहिं सत्तहिं अणियाहिवतीहिं सोलसहिं आयरक्खदेवसाहस्सीहिं अराणेहिं य बहूहिं जोतिसिएहिं देवेहिं देवीहि य सद्धिं संपरिवुडे महताहत-णट्ट--गीय--वाइय--तंती--तल--ताल--तुडिय--घणमुइंगपडुप्पवाइतरवेणं दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरित्तए केवलं परियारणिड्ढीए णो चेव णं मेहुण-वत्तियाए ६ । ता सूरस्स णं जोइसिंदस्स जोतिसरराणो कति अग्गमहिसीओ पराणत्ताओ ?, ता चत्तारि अग्गमहिसीओ पराणत्ताओ, तंजहा–सूरप्पभा आतवा अच्चिमाला पभंकरा ७। सेसं जहा चंदस्स, णवरं सूरवडेंसए विमाणे

जाव णो चेव णं मेहुणवत्तियताए ८ ॥ सूत्रं ९७ ॥ जोतिसियाणं देवाणं केवइयं कालं ठिती पराणत्ता ?, जहराणेणं अडभागपलितोवमं उक्कोसेणं पलितोवमं वाससतसहस्समब्भहियं १। ता जोतिसिणीणं देवीणं केवतियं कालं ठिती पराणत्ता ?, ता जहन्नेणं अट्ठभागपलितोवमं उक्कोसेणं अद्धपलिओवमं पन्नासाए वाससहस्सेहिं अब्भहियं २। चंदविमाणे णं देवाणं केवतियं कालं ठिती पराणत्ता ?, जहन्नेणं चउब्भागपलितोवमं उक्कोसेणं पलितोवमं वाससयसहस्समब्भहियं ३। ता चंदविमाणे णं देवीणं केवतियं कालं ठिती पराणत्ता ?, जहराणेणं चउब्भागपलितोवमं उक्कोसेणं अद्धपलितोवमं पराणासाए वाससहस्सेहि अब्भहियं ४। सूरविमाणे णं देवाणं केवतियं कालं ठिती पराणत्ता ?, जहराणेणं चउब्भागपलितोवमं उक्कोसेणं पलिओवमं वाससहस्समब्भहियं ५। ता सूरविमाणे णं देवाणं केवतियं कालं ठिती पराणत्ता ?, जहराणेणं चउब्भागपलितोवमं उक्कोसेणं अद्धपलितोवमं पंचहिं वाससएहिं अब्भहियं ६। ता गहविमाणे णं देवाणं केवतियं कालं ठिती पराणत्ता ?, जहराणेणं चउब्भागपलितोवमं उक्कोसेणं पलितोवमं ७। ता गहविमाणे णं देवीणं केवतियं कालं ठिती पराणत्ता ?, जहराणेणं चउब्भागपलितोवमं उक्कोसेणं अद्धपलितोवमं ८। ता णक्खत्तविमाणे णं देवाणं केवतियं कालं ठिती पराणत्ता ?, जहराणेणं चउब्भागपलितोवमं उक्कोसेणं अद्धपलिओवमं ९। ता णक्खत्तविमाणे णं देवाणं केवइयं कालं ठिती पराणत्ता ?, जहराणेणं अट्ठभागपलितोवमं उक्कोसेणं चउब्भागपलितोवमं १०। ता ताराविमाणे णं देवाणं पुच्छा, जहराणेणं अट्ठभागपलितोवमं उक्कोसेणं चउब्भागपलितोवमं ११। ता ताराविमाणे णं देवीणं पुच्छा, ता जहराणेणं अट्ठभागपलितोवमं उक्कोसेणं साइरेगअट्ठभागपलिओवमं १२ ॥ सूत्रं ९८ ॥ ता एएसि णं चंदिम-सूरिय-गह-णक्खत्ततारारूवाणं कतरे २ हिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ?,

ता चंदा य सूरा य एते णं दोवि तुल्ला सव्वत्थोवा णक्खत्ता संखिज्जगुणा गहा संखिज्जगुणा तारा संखिज्जगुणा ॥ सूत्रं ९९ ॥ अट्ठारसं पाहुडं समत्तं ॥

॥ इति अष्टादशं प्राभृतम् ॥ १८ ॥

॥ अथ चन्द्रसूर्यपरिमाणाख्यं एकोनविंशतितमं प्राभृतम् ॥

ता कति णं चंदिमसूरिया सव्वलोयं ओभासंति उज्जोएंति तवेंति पभासेंति आहितेति वदेज्जा ?, तत्थ खलु इमाओ दुवालस पडिवत्तीओ पराणत्ताओ, तत्थेगे एवमाहंसु ता एगे चंदे एगे सूरे सव्वलोयं ओभासति उज्जोएति तवेति पभासति, एगे एवमाहंसु १, एगे पुण एवमाहंसु ता तिरिण चंदा तिरिण सूरा सव्वलोयं ओभासेंति ४ एगे एवमाहंसु २, एगे पुण एवमाहंसु ता आउट्टिं चंदा आउट्टिं सूरा सव्वलोयं ओभासेंति उज्जोवेंति तवेंति पगासिंति एगे एवमाहंसु ३, एगे पुण एवमाहंसु एतेणं अभिलावेणं णेतव्वं सत्त चंदा सत्त सूरा ४, दस चंदा दस सूरा ५, बारस चंदा २,६ बातालीसं चंदा २, ७ बावत्तरिं चंदा २, ८ बातालीसं चंदसतं २, ९ बावत्तरं चंदसयं बावत्तरिं सूरसयं १०, बायालीयं चंदसहस्सं बातालीसं सूरसहस्सं ११, बावत्तरं चंदसहस्सं बावत्तरं सूरसहस्सं सव्वलोयं ओभासंति उज्जोवेंति तवेंति पगासंति, एगे एवमाहंसु १२, १। वयं पुण एवं वदामो—ता अयराणं जंबुद्दीवे २ जाव परिक्खेवेणं, ता जंबुद्दीवे २ केवतिया चंदा पभासिंसु वा पभासिंति वा पभासिस्संति वा ?, केवतिया सूरा तविंसु वा तवेंति वा तविस्संति वा ?, केवतिया णक्खत्ता जोअं जोइंसु वा जोएंति वा जोइस्संति वा ?, केवतिया गहा चारं चरिंसु वा चरंति वा चरिस्संति वा ?, केवतिया तारागणकोडिकोडीओ सोभं सोभेंसु वा सोभंति वा सोभिस्संति वा ?, ता जंबुद्दीवे २ दो चंदा पभासेंसु वा ३ दो सूरिया तवइंसु वा ३, छप्पराणं णक्खत्ता जोयं जोएंसु वा ३ छावत्तरि गहसतं चारं चरिंसु वा ३ एगं सयसहस्सं तेत्तीसं च

सहस्सा णव सया पराणासा तारागणकोडिकोडीणं सोभं सोभेंसु वा ३,२ । "दो चंदा दो सूरा णक्खत्ता खलु हवंति छप्पराणा । छावत्तरं गहसतं जंबुद्दीवे विचारीणं ॥ १ ॥ एगं च सयसहस्सं तित्तीसं खलु भवे सहस्साइं । णव य सता पराणासा तारागण कोडिकोडीणं ॥ २ ॥" ३ । ता जंबुद्दीवं णं दीवं लवणे नामं समुद्दे वट्टे वलयाकारसंठाणसंठिते सव्वतो समंता संपरिक्खित्ता णं चिट्ठति ४ । ता लवणे णं समुद्दे किं समचक्कवालसंठिते विसमचक्कवालसंठिते ?, ता लवणसमुद्दे समचक्कवालसंठिते नो विसमचक्कवाल-संठिते ५ । ता लवणसमुद्दे केवइयं चक्कवालविक्खंभेणं केवतियं परिक्खेवेणं आहितेति वदेज्जा ?, ता दो जोयणसतसहस्साइं चक्कवालविक्खंभेणं पराणरस जोयणसतसहस्साइं एकासीयं च सहस्साइं सतं च ऊतालं किंचिविसेसूणं परिक्खेवेणं आहितेति वदेज्जा ६ । ता लवणसमुद्दे केवतियं चंदा पभासेंसु वा ३ ?, एवं पुच्छा जाव केवतियाउ तारागणकोडिकोडीओ सोभिंसु वा ३ ?, ता लवणे णं समुद्दे चत्तारि चंदा पभासेंसु वा ३ चत्तारि सूरिया तवइंसु वा ३ बारस णक्खत्तसतं जोयं जोएंसु वा ३ तिरिण बावराणा महग्गहसता चारं चरिंसु वा ३ दो सतसहस्सा सत्तट्ठिं च सहस्सा णव य सता तारागणकोडीणं सोभिंसु वा ३,७ । पराणरस सतसहस्सा एकासीतं सतं च ऊतालं । किंचिविसेसेणूणो लवणोदधिणो परिक्खेवो ॥ १ ॥ चत्तारि चेव चंदा चत्तारि य सूरिया लवणतोये । बारस णक्खत्तसयं गहाण तिराणेव बावराणा ॥ १ ॥ दोच्चेव सतसहस्सा सत्तट्ठिं खलु भवे सहस्साइं । णव य सता लवणजले तारागणकोडिकोडीणं ॥ २ ॥ ८ । ता लवणसमुद्दं धातईसंडे णामं दीवे वट्टे वलयाकारसंठिते तहेव जाव णो विसमचक्क-वालसंठिते ९ । धातईसंडे णं दीवे केवतियं चक्कवालविक्खंभेणं केवतियं परिक्खेवेणं आहितेति वदेज्जा ?, ता चत्तारि जोयणसतसहस्साइं चक्कवाल-विक्खंभेणं ईतालीसं जोयणसतहस्साइं दस य सहस्साइं णव य एकट्ठे

जोयणसते किंचिविसेसूणे परिक्खेवेणं आहितेति वदेज्जा १० । धातईसंडे दीवे केवतिया चंदा पभासेंसु वा ३ पुच्छा, तहेव धातईसंडे णं दीवे बारस चंदा पभासेंसु वा ३, बारस सूरिया तवेंसु वा ३, तिरिण छत्तीसा णक्खत्तसता जोअं जोएंसु वा ३, एगं छप्पराणं महग्गहसहस्सं चारं चरिंसु वा ३,११ । अट्ठेव सतसहस्सा तिरिण सहस्साइं सत्त य सयाइं । एगससीपरिवारो तारागणकोडिकोडीओ ॥ १ ॥ सोभं सोभेंसु वा ३,१२ । धातईसंडपरिरओ ईताल दसुत्तरा सतसहस्सा । णव य सता एगट्ठा किंचिविसेसेण परिहीणा ॥ १ ॥ चउवीसं ससिरविणो णक्खत्तसता य तिरिण छत्तीसा । एगं च गहसहस्सं छप्पराणं धातईसंडे ॥ २ ॥ अट्ठेव सतसहस्सा तिरिण सहस्साइं सत्त य सताइं । धायइसंडे दीवे तारागणकोडिकोडीणं ॥ ३ ॥ १३ । ता धायईसंडं णं दीवं कालोयणे णामं समुद्दे वट्टे वलयाकारसंठाणसंठिते जाव णो विसमचक्कवालसंठाणसंठिते १४ । ता कालोयणे णं समुद्दे केवतियं चक्कवालविक्खंभेणं केवतियं परिक्खेवेणं आहितेति वदेज्जा ?, ता कालोयणे णं समुद्दे अट्ठ जोयणसतसहस्साइं चक्कवालविक्खंभेणं पन्नत्ते एकाणउतिं जोयणसयसहस्साइं सत्तरिं च सहस्साइं छच्च पंचुत्तरे जोयणसते किंचिविसेसाधिए परिक्खेवेणं आहितेति वदेज्जा १५ । ता कालोयणे णं समुद्दे केवतिया चंदा पभासेंसु वा ३ पुच्छा, ता कालोयणे समुद्दे बातालीसं चंदा पभासेंसु वा ३ बायालीसं सूरिया तवेंसु वा ३, एक्कारस बावत्तरा णक्खत्तसता जोयं जोइंसु वा ३, तिन्नि सहस्सा छच्च छन्नउया महग्गहसया चारं चरिंसु वा ३, अट्ठावीसं च सहस्साइं बारस सयसहस्साइं नव य सयाइं पराणासा तारागणकोडिकोडीओ सोभं सोभेंसु वा सोहंति वा सोभिस्संति वा १६ । "एकाणउई सतराइं सयसहस्साइं परिरतो तस्स । अहियाइं छच्च पंचुत्तराइं कालोदधिवरस्स ॥ १ ॥ बातालीसं चंदा बातालीसं च दिणकरा दित्ता । कालोदधिंमि एते चरंति संबद्धलेसागा ॥ २ ॥ णक्खत्तसहस्सं एगमेव छाव-

त्तरं च सतमणाणं । छच्च सया छरणउया महग्गहा तिरिण य सहस्सा ॥ ३ ॥ अट्ठावीसं कालोदहिंमि बारस य सहस्साइं । णव य सया परणासा तारागणकोडिकोडीणं ॥ ४ ॥" १७ । ता कालोयं णं समुद्दं पुक्खरवरे णामं दीवे वट्टे वलयाकारसंठाणसंठिते सव्वतो समंता संपरिक्खित्ताणं चिट्ठति १८ । ता पुक्खरवरे णं दीवे किं समचक्कवालसंठिए विसमचक्कवालसंठिए ?, ता समचक्कवालसंठिए नो विसमचक्कवालसंठिए १९ । ता पुक्खरवरे णं दीवे केवइयं समचक्कवालविक्खंभेणं ?, केवइअं परिक्खेवेणं ?, ता सोलस जोयणसयसहस्साइं चक्कवालविक्खंभेणं एगा जोयणकोडी बाणउतिं च सतसहस्साइं अउणावन्नं च सहस्साइं अट्ठचउणउते जोअणसते परिक्खेवेणं आहितेति वदेज्जा २० । ता पुक्खरवरे णं दीवे केवतिया चंदा पभासेंसु वा ३ पुच्छा, तधेव ता चोतालचंदसदं पभासेंसु वा ३, चोत्तालं सूरियाणं सतं तवइंसु वा ३, चत्तारि सहस्साइं बत्तीसं च नक्खत्ता जोअं जोएंसु वा ३, बारस सहस्साइं छच्च बावत्तरा महग्गहसता चारं चरिंसु वा ३, छरणउतिसयसहस्साइं चोयालीसं सहस्साइं चत्तारि य सयाइं तारागणकोडिकोडीणं सोभं सोभेंसु वा ३, २१ । कोडी बाणउती खलु अउणाणउतिं भवे सहस्साइं । अट्ठसता चउणउता य परिरओ पोक्खरवरस्स ॥ १ ॥ चोत्तालं चंदसतं चत्तालं चेव सूरियाण सतं । पोक्खरवरदीवम्मि च चरंति एते पभासंता ॥ २ ॥ चत्तारि सहस्साइं छत्तीसं चेव हुंति णक्खत्ता । छच्च सता बावत्तर महग्गहा बारह सहस्सा ॥ ३ ॥ छगणउति सयसहस्सा चोत्तालीसं खलु भवे सहस्साइं । चत्तारि य सता खलु तारागणकोडिकोडीणं ॥ ४ ॥ २२ । ता पुक्खरवरस्स णं दीवस्स बहुमज्झदेसभाए माणुसुत्तरे णामं पव्वए पराणत्ते, वट्टे वलयाकारसंठाणसंठिते जे णं पुक्खरवरं दीवं दुधा विभयमाणे २ चिट्ठति, तंजहा–अब्भितरपुक्खरद्धं च बाहिरपुक्खरद्धं च २३ । ता अब्भितरपुक्खरद्धे णं किं समचक्कवालसंठिए विसमचक्कवालसंठिए ?, ता समचक्कवालसंठिए णो

विसमचक्कवालसंठिते २४ । ता अब्भिंतरपुक्खरद्धे णं केवतियं चक्कवाल-विक्खंभेणं केवतियं परिक्खेवेणं आहितेति वदेज्जा ?, ता अट्ठ जोयणसत-सहस्साइं चक्कवालविक्खंभेणं एक्का जोयणकोडी बायालीसं च सयसहस्साइं तीसं च सहस्साइं दो अउणापराणे जोयणसते परिक्खेवेणं आहितेति वदेज्जा २५ । ता अब्भिंतरपुक्खरद्धे णं केवतिया चंदा पभासेंसु वा ३ ? केवतिया सूरा तविंसु ३ ? पुच्छा, बावत्तरि चंदा पभासिंसु वा ३, बावत्तरि सूरिया तवइंसु वा ३, दोण्णि सोला णक्खत्तसहस्सा जोअं जोएंसु वा ३, छ महग्गहसहस्सा तिन्नि य बत्तीसा चारं चरेंसु वा ३, अडतालीसंसतसहस्सा बावीसं च सहस्सा दोण्णि य सता तारागणकोडिकोडीणं सोभं सोभिंसु वा ३, २६ । ता समयक्खेत्ते णं केवतियं आयामविक्खंभेणं केवइयं परिक्खे-वेणं आहितेति वदेज्जा ?, ता पणतालीसं जोयणसतसहस्साइं आयामविक्खं-भेणं एक्का जोयणकोडी बायालीसं च सतसहस्साइं २७ । दोण्णि य अउणा-पराणे जोयणसते परिक्खेवेणं आहितेति वदेज्जा २८ । ता समयक्खेत्ते णं केवतिया चंदा पभासेंसु वा ३ पुच्छा तधेव, ता बत्तीसं चंदसतं पभासेंसु वा ३, बत्तीसं सूरियाण सतं तवइंसु वा ३, तिण्णि सहस्सा छच्च छण्णउता णक्खत्तसता जोयं जोएंसु वा ३, एक्कारस सहस्सा छच्च सोलस महग्गहसता चारं चरिंसु वा ३, अट्ठासीतिं सतसहस्साइं चत्तालीसं च सहस्सा सत्त य सया तारागणकोडीकोडीणं सोभं सोभिंसु वा ३, २९ । अट्ठेव सतसहस्सा अब्भिंतरपुक्खरस्स विक्खंभो । पणतालसयसहस्सा माणुसखेत्तस्स विक्खंभो ॥ १ ॥ कोडी बातालीसं सहस्स दुसया य अउणपण्णासा । माणुसखेत्तपरिरओ एमेव य पुक्खरद्धस्स ॥ २ ॥ बावत्तरिं च चंदा बावत्तरिमेव दिणकरा दित्ता । पुक्खरवरदीवड्ढे चरंति एते पभासेंता ॥ ३ ॥ तिण्णि सता छत्तीसा छच्च सहस्सा महग्गहाणं तु । णक्खत्ताणं तु भवे सोलाइं दुवे सहस्साइं । ॥ ४ ॥ अडयालसयसहस्सा बावीसं खलु भवे सहस्साइं । दो त सय पुक्खरद्धे

तारागणकोडिकोडीणं ॥ ५ ॥ बत्तीसं चंदसतं बत्तीसं चेव सूरियाण सतं । सयलं माणुसलोअं चरंति एते पभासेंता ॥ ६ ॥ एक्कारस य सहस्सा छप्पिय सोला महग्गहाणं तु । छच्च सता छण्णउया णक्खत्ता तिण्णि य सहस्सा ॥ ७ ॥ अट्ठासीइ चत्ताइं सतसहस्साइं मणुयलोगंमि । सत्त य सता अणूणा तारागणकोडिकोडीणं ॥ ८ ॥ एसो तारापिंडो सव्वसमासेण मणुयलोयंमि । बहिता पुण ताराओ जिणेहिं भणिया असंखेज्जा ॥ ९ ॥ एवतियं तारग्गं जं भणियं माणुसंमि लोगंमि । चारं कलंबुयापुप्फसंठितं जोतिसं चरति ॥ १० ॥ रविससिगहणक्खत्ता एवतिया आहिता मणुयलोए । जेसिं णामागोत्तं न पागता पण्णवेहंति ॥ ११ ॥ छावट्ठिं पिडगाइं चंदादिच्चाण मणुलोयंमि । दो चंदा दो सूरा य हुंति एक्केक्कए पिडए ॥ १२ ॥ छावट्ठि पिडगाइं णक्खत्ताणं तु मणुयलोयंमि । छप्पण्णं णक्खत्ता हुंति एक्केक्कए पिडए ॥ १३ ॥ छावट्ठि पिडगाइं महागहाणं तु मणुयलोयंमि । छावत्तरं गहसतं होइ एक्केक्कए पिडए ॥ १४ ॥ चत्तारि य पंतीओ चंदाइच्चाण मणुयलोयम्मि । छावट्ठिं २ च होइ एक्किकिया पन्ती ॥ १५ ॥ छप्पन्नं पंतीओ णक्खत्ताणं तु मणुयलोयंमि । छावट्ठि २ हवंति एक्केक्किया पंती ॥ १६ ॥ छावत्तरं गहाणं पंतिसयं हवति मणुयलोयंमि । छावट्ठिं २ हवइ य एक्केकिया पंती ॥ १७ ॥ ते मेरुमणुचरंता पदाहिणावत्तमंडला सव्वे । अणवट्ठियजोगेहिं चंदा सूरा गहगणा य ॥ १८ ॥ णक्खत्ततारगाणं अवट्ठिता मंडला मुणेयव्वा । तेऽविय पदाहिणावत्तमेव मेरुं अणुचरंति ॥ १९ ॥ रयणिकरदिणकराणं उद्धं च अहे व संकमो नत्थि । मंडलसंकमणं पुण सब्भंतरबाहिरं तिरिए ॥ २० ॥ रयणिकरदिणकराणं णक्खत्ताणं महग्गहाणं च । चारविसेसेण भवे सुहदुक्खविधी मणुस्साणं ॥ २१ ॥ तेसिं पविसंताणं तावक्खेत्तं तु वड्ढते णिययं । तेणेव कमेण पुणो परिहायति निक्खमंताणं ॥ २२ ॥ तेसिं कलंबुयापुप्फसंठिता हुंति तावखेत्तपहा । अंतो य संकुडा बाहि वित्थडा चंदसूराणं ॥२३॥

केणं वड्ढति चंदो ? परिहाणी केण हुंति चंदस्स ? । कालो वा जोराहो वा केणऽणुभावेण चंदस्स ? ॥ २४ ॥ किराहं राहुविमाणं णिच्चं चंदेण होइ अविरहितं । चतुरंगुलमसंपत्तं हिच्चा चंदस्स तं चरति ॥ २५ ॥ बावट्ठि २ दिवसे २ तु सुक्कपक्खस्स । जं परिवड्ढति चंदो खवेइ तं चेव कालेणं ॥ २६ ॥ पराणरसइभागेण य चंदं पराणरसमेव तं वरति । पराण-रसतिभागेण य पुणोवि तं चेव वक्कमति ॥ २७॥ एवं वड्ढति चंदो परिहाणी एव होइ चंदस्स। कालो वा जुराहो वा एवऽणुभावेण चंदस्स ॥ २८ ॥ अंतो मणुस्सखेत्ते हवंति चारोवगा तु उववराणा । पंचविहा जोतिसिया चंदा सूरा गहगणा य ॥ २९ ॥ तेण परं जे सेसा चंदादिच्चगहतारणक्खत्ता । णत्थि गती णवि चारो अवट्ठिता ते मुणेयव्वा ॥ ३० ॥ एवं जंबुद्दीवे दुगुणा लवणे चउग्गुणा हुंति। लावणगा य तिगणिता ससिसूरा धायइसंडे ॥ ३१ ॥ दो चंदा इह दीवे चत्तारि य सायरे लवणतोए । धायइसंडे दीवे बारस चंदा य सूरा य ॥ ३२ ॥ धातइसंडप्पभितिसु उद्दिट्ठा तिगुणिता भवे चंदा । आदिल्लचंदसहिता अणंतराणंतरे खेत्ते ॥ ३३ ॥ रिक्खग्गहतारग्गं दीवसमुद्दे जहिच्छसी णाउं । तस्ससीहिं तग्गुणितं रिक्खग्गहतारगग्गं तु ॥ ३४ ॥ बहिता तु माणुसनगस्स चंदसूराणऽवट्ठिता जोराहा । चंदा अभीयीजुत्ता सूरा पुण हुंति पुस्सेहिं ॥ ३५ ॥ चंदातो सूरस्स य सूरा चंदस्स अंतरं होइ। पराणाससहस्साइं तु जोयणाणं अणूणाइं ॥ ३६ ॥ सूरस्स य २ ससिणो २ य अंतरं होइ । बाहिं तु माणुसनगस्स जोयणाणं सतसहस्सं ॥ ३७ ॥ सूरंतरिया चदा चंदंतरिया य दिणयरा दित्ता । चित्तंतरलेसागा सुहलेसा मंदलेसा य ॥ ३८ ॥ अट्ठासीतिं च गहा अट्ठावीसं च हुंति नक्खत्ता । एगससीपरिवारो एत्तो ताराण वोच्छामि ॥ ३९ ॥ छावट्ठिसहस्साइं णव चेव सताइं पंचसतराइं । एगससीपरिवारो तारागणकोडिकोडीणं ॥ ४० ॥ ३० । अंतो मणुस्सखेत्ते जे चंदिमसूरिया गहगणणक्खत्ततारारूवा ते णं देवा किं

उड्ढोववरागगा कप्पोववरागगा विमाणोववरागगा चारोववरागगा चारट्ठितीया गतिरतिया गतिसमावरागगा ?, ता ते गं देवा णो उड्ढोववरागगा नो कप्पोववरागगा विमाणोववरागगा चारोववरागगा नो चारठितीया गइरइया गतिसमावरागगा उड्ढामुह-कलंबुअ-पुप्फसंठाणसंठितेहिं जोअणसाहस्सिएहि तावक्खेत्तेहिं साहस्सिएहिं बाहिराहि य वेउव्वियाहिं परिसाहिं महताहत-णट्टगीय-वाइय-तंती-तल-ताल-तुडिय-घणमुइंग-पडुप्पवाइयरवेणं महता उक्कट्ठि-सीहणादबोलकलकलरवेणं अच्छं पव्वतरायं पदाहिणावत्तमंडलचारं मेरुं अणुपरियट्टंति ३१। ता तेसि णं देवाणं जाधे इंदे चयति से कयमिदाणि पकरेंति ?, ता चत्तारि पंच सामाणियदेवा तं ठाणं उवसंपज्जित्ताणं विहरंति जाव अराणो इत्थ इंदे उववरागो भवति ३२। ता इंदठाणे णं केवइएणं कालेणं विरहियं पन्नत्तं ?, ता जहरागेणं इक्कं समयं उक्कोसेणं छम्मासे ३३। ता बहिता णं माणुस्सखेत्तस्स जे चंदिमसूरियगह जाव तारारूवा ते णं देवा किं उड्ढोववरागगा कप्पोववरागगा विमाणोववरागगा चारट्ठितीया गतिरतीया गतिसमावरागगा ?, ता ते णं देवा णो उड्ढोववरागगा नो कप्पोववरागगा विमाणोववरागगा णो चारोववरागगा चारठितीया नो गइरइया णो गतिसमा-वरागगा पक्किट्टगसंठाणसंठितेहिं जोयणसयसाहस्सिएहिं तावक्खेत्तेहिं सयसाह-स्सियाहिं बाहिराहिं वेउव्वियाहिं परिसाहिं महताहतनट्टगीयवाइय जाव रवेणं दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरति, सुहलेसा मंदलेसा मंदायवलेसा चित्तंतर-लेसा अरणोरणसमोगाढाहिं लेसाहिं कूडा इव ठाणठिता ते पदेसे सव्वतो समंता ओभासंति उज्जोवेंति तवेंति पभासेंति ३४। ता तेसि णं देवाणं जाहे इंदे चयति से कहमिदाणि पकरेंति ?, ता जाव चत्तारि पंच सामाणियदेवा तं ठाणं तहेव जाव छम्मासे ३५ ॥ सूत्रं १०० ॥ ता पुक्खरवरं णं दीवं पुक्खरोदे णामं समुद्दे वट्टे वलयाकारसंठाणसंठिते सव्व जाव चिट्ठति १। ता पुक्खरोदे णं समुद्दे किं समचक्कवालसंठिते जाव णो विसमचक्कवालसंठिते २। ता

पुक्खरोदे णं समुद्दे केवतियं चक्कवालविक्खंभेणं केवइयं परिक्खेवेणं आहितेति वदेज्जा ?, ता संखेज्जाइं जोयणसहस्साइं आयामविक्खंभेणं संखेज्जाइं जोयणसहस्साइं परिक्खेवेणं आहितेति वदेज्जा ३। ता पुक्खरवरोदे णं समुद्दे केवतिया चंदा पभासेंसु वा ३ पुच्छा तहेव, तहेव ता पुक्खरोदे णं समुद्दे संखेज्जा चंदा पभासेंसु वा ३ जाव संखेज्जाओ तारागणकोडाकोडीओ सोभं सोभेंसु वा ३, ४। एतेणं अभिलावेणं वरुणवरे दीवे वरुणोदे समुद्दे ४ खीरवरे दीवे खीरवरे समुद्दे ५ घतवरे दीवे घतोदे समुद्दे ६ खोतवरे दीवे खोतोदे समुद्दे ७ णंदिस्सरवरे दीवे णंदिस्सरवरे समुद्दे ८ अरुणोदे दीव अरुणोदे समुद्दे ६ अरुणवरे दीवे अरुणवरे समुद्दे १० अरुणवरोभासे दीवे अरुणवरोभासे समुद्दे ११ कुंडले दीवे कुंडलोदे समुद्दे १२ कुंडलवरे दीवे कुंडलवरोदे समुद्दे १३ कुंडलवरोभासे दीवे कुंडलवरोभासे समुद्दे १४ सव्वेसिं विक्खंभपरिक्खेवो जोतिसाइं पुक्खरोदसागरसरिसाइं ५। ता कुंडलवरोभासणं समुद्दं रुयए दीवे वट्टे वलयाकारसंठाणसंठिए २ सव्वतो जाव चिट्ठति ६। ता रुयए णं दीवे किं समचक्कवाल जाव णो विसमचक्कवालसंठिते, ता रुयए णं दीवे केवइयं समचक्कवालविक्खंभेणं केवतियं परिक्खेवेणं आहितेति वदेज्जा ?, ता असंखेज्जाइ जोयणसहस्साइं चक्कवालविक्खंभेण असंखेज्जाइं जोयणसहस्साइं परिक्खेवेणं आहितेति वदेज्जा ७। ता रुयगे णं दीवे केवतिया चंदा पभासेंसु वा ३ पुच्छा, ता रुयगे णं दीवे असंखेज्जा चंदा पभासेंसु वा ३ जाव असंखेज्जाओ तारागणकोडिकोडीओ सोभं सोभेंसु वा ३, ८। एवं रुयगे समुद्दे रुयगवरे दीवे रुयगवरोदे समुद्दे रुयगवरोभासे दीवे रुयगवरोभासे समुद्दे ६। एवं तिपडोयारा णातव्वा जाव सूरे दीवे सूरोदे समुद्दे सूरवरे दीवे सूरवरे समुद्दे सूरवरोभासे दीवे सूरवरोभासे समुद्दे, सव्वेसिं विक्खंभपरिक्खेवजोतिसाइं रुयगवरदीवसरिसाइं १०। ता सूरवरोभासोदणं समुद्दं देवे णामं दीवे वट्टे वलयाकारसंठाणसंठिते

सव्वतो समंता संपरिक्खित्ताणं चिट्ठति जाव णो विसमचक्कवालसंठिते ११ । ता देवे णं दीवे केवतियं चक्कवालविक्खंभेणं केवतियं परिक्खेवेणं आहितेति वदेज्जा ?, असंखेज्जाइं जोयणसहस्साइं चक्कवालविक्खंभेणं असंखेज्जाइं जोयणसहस्साइं परिक्खेवेणं आहितेति वदेज्जा १२ । ता देवे णं दीवे केवतिया चंदा पभासेंसु वा ३ पुच्छा तधेव, ता देवे णं दीवे असंखेज्जा चंदा पभासेंसु वा ३ जाव असंखेज्जाओ तारागणकोडिकोडीओ सोभेंसु वा ३, १३ । एवं देवोदे समुद्दे णागे दीवे णागोदे समुद्दे जक्खे दीवे जक्खोदे समुद्दे भूते दीवे भूतोदे समुद्दे सयंभुरमणे दीवे सयंभुरमणे समुद्दे सव्वे देवदीवसरिसा १४ ॥ सू० १०१ ॥ एकूणवीसतिमं पाहुडं समत्तं ॥

॥ इति एकोनविंशतितमं प्राभृतम् ॥ १९ ॥

॥ अथ चन्द्राद्यनुभावाख्यं विंशतितमं प्राभृतम् ॥

ता कहं ते अणुभावे आहितेति वदेज्जा ?, तत्थ खलु इमाओ दो पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ, तत्थेगे एवमाहंसु ता चंदिमसूरिया णं णो जीवा अजीवा णो घणा झुसिरा णो बादरबोंदिधरा कलेवरा नत्थि णं तेसिं उट्ठाणेति वा कम्मेति वा बलेति वा विरिएति वा पुरिसकारपरक्कमेति वा, ते णो विज्जू लवंति णो असणि लवंति णो थणितं लवंति, अहे य णं बादरे वाउकाए संमुच्छति अहे य णं बादरे वाउकाए संमुच्छित्ता विज्जुंपि लवंति असणिंपि लवंति थणितंपि लवंति एगे एवमाहंसु, ?, एगे पुण एवमाहंसु, ता चंदिमसूरियाणं जीवा णो अजीवा घणा णो झुसिरा बादरबुंदिधरा नो कलेवरा अत्थि णं तेसिं उट्ठाणेति वा कम्मेति वा बलेति वा विरिएति वा पुरिसकार परक्कमेति वा ते विज्जुंपि लवंति ३, एगे एवमाहंसु १ । वयं पुण एवं वदामो—ता चंदिमसूरिया णं देवा णं महिड्ढिया महज्जुइया महब्बला महाजसा महसक्खा (महासोक्खा) महाणुभागा वरवत्थधरा वरमल्लधरा वराभरणधारी अवोच्छित्तिणयट्ठताए अन्ने चयंति अराणे उववज्जंति २ ॥सूत्रं १०२॥

ता कहं ते राहुकम्मे आहितेति वदेज्जा ?, तत्थ खलु इमाओ दो पडिवत्तीओ पराणत्ताओ, तत्थेगे एवमाहंसु, अत्थि णं से राहू देवे जे णं चंदं वा सूरं वा गिराहति, एगे एवमाहंसु १, एगे पुण एवमाहंसु नत्थि णं से राहू देवे जेणं चंदं वा सूरं वा गिराहइ २, १। तत्थ जे ते एवमाहंसु ता अत्थि णं से राहू देवे जे णं चंदं वा सूरं वा गिराहति से एवमाहंसु–ता राहू णं देवे चंदं वा सूरं वा गेराहमाणे बुद्धंतेणं गिरिहत्ता बुद्धंतेणं मुयति बुद्धंतेणं गिरिहत्ता मुद्धंतेणं मुयइ मुद्धंतेणं गिरिहत्ता मुद्धंतेणं मुयति, वामभुयंतेणं गिरिहत्ता वामभुयंतेणं मुयति वामभुयंतेणं गिरिहत्ता दाहिणभुयंतेणं मुयति दाहिणभुयंतेणं गिरिहत्ता वामभुयंतेणं मुयति दाहिणभुयंतेणं गिरिहत्ता दाहिणभुयंतेणं मुयति २। तत्थ जे ते एवमाहंसु ता नत्थि णं से राहू देवे जे णं चंदं वा सूरं वा गेराहति ते एवमाहंसु–तत्थ णं इमे पराणरसकसिण-पोग्गला पराणत्ता, तंजहा–सिघाणए जडिलए खरए खतए अंजणे खंजणे सीतले हिमसीयले केलासे अरुणाभे परिज्जए णभसूरए कविलिए पिंगलए राहू, ता जया णं एते पराणरस कसिणा २ पोग्गला सदा चंदस्स वा सूरस्स वा लेसाणुबद्धचारिणो भवंति तता णं माणुसलोयंसि माणुसा एवं वदंति– एवं खलु राहू चंदं वा सूरं वा गेराहति, एवं २, ता जता णं एते पराणरस कसिणा २ पोग्गला णो सदा चंदस्स वा सूरस्स वा लेसाणुबद्धचारिणो भवंति णो खलु तदा माणुसलोयम्मि मणुस्सा एवं वदंति–एवं खलु राहू चंदं सूरं वा गेराहति, एते एवमाहंसु ३। वयं पुण एवं वदामो–ता राहू णं देवे महिड्ढीए महज्जुइए महबले महायसे महासोक्खे महाणुभावे वरवत्थ-धरे वरमल्लधरे वराभरणधारी ४। राहुस्स णं देवस्स णव णामधेज्जा पराणत्ता, तंजहा–सिंघाडए जडिलए खरए खेत्तए ढड्डरे (दद्दुरे) मगरे मच्छे कच्छभे कराणसप्पे ५। ता राहुस्स णं देवस्स विमाणा पंचवराणा पराणत्ता, तंजहा–किराहा नीला लोहिता हालिद्दा सुक्किल्ला ६। अत्थि कालए राहुविमाणे

खंजणवरणाभे अत्थि नीलए राहुविमाणे लाउयवरणाभे पराणत्ते, अत्थि लोहिए राहुविमाणे मंजिट्ठावरणाभे पराणत्ते, अत्थि हालिद्दए राहुविमाणे हलिद्दावरणाभे पराणत्ते, अत्थि सुक्किलए राहुविमाणे भासरासिवरणाभे पराणत्ते ७। ता जया णं राहुदेवे आगच्छमाणे वा गच्छमाणे वा विउव्वेमाणे वा परियारेमाणे वा चंदस्स वा सूरस्स वा लेस्सं पुरच्छिमेणं आवरित्ता पच्चत्थिमेणं वीतीवतति, तया णं पुरच्छिमेणं चंदे सूरे वा उवदंसेति पच्चत्थिमेणं राहू, जदा णं राहुदेवे आगच्छमाणे वा गच्छमाणे वा विउव्वमाणे वा परियारेमाणे वा चंदस्स वा सूरस्स वा लेसं दाहिणेणं आवरित्ता उत्तरेणं वीतीवतति, तदा णं दाहिणेणं चंदे वा सूरे वा उवदंसेति उत्तरेणं राहू ८। एतेणं अभिलावेणं पच्चत्थिमेणं आवरित्ता पुरच्छिमेणं वीतीवतति उत्तरेणं आवरित्ता दाहिणेणं वीतिवतति ९। जया णं राहू देवे आगच्छमाणे वा गच्छमाणे वा विउव्वमाणे वा परियारेमाणे वा चंदस्स वा सूरस्स वा लेसं दाहिणपुरच्छिमेणं आवरित्ता उत्तरपच्चत्थिमेणं वीईवयइ तया णं दाहिणपुरच्छिमेणं चंदे वा सूरे वा उवदंसेइ उत्तरपच्चत्थिमेणं राहू, जया णं राहू देवे आगच्छमाणे वा गच्छमाणे वा विउव्वमाणे वा परियारेमाणे वा चंदस्स वा सूरस्स वा लेसं दाहिणपच्चत्थिमेणं आवरित्ता उत्तर पुरच्छिमेणं वीतीवतति तदा णं दाहिणपच्चत्थिमेणं चंदे वा सूरे वा उवदंसेति उत्तरपुरच्छिमेणं राहू १०। एतेणं अभिलावेणं उत्तरपच्चत्थिमेणं आवरेत्ता दाहिणपुरच्छिमेणं वीतीवतति, उत्तरपुरच्छिमेणं आवरेत्ता दाहिणपच्चत्थिमेणं वीतीवयइ ११। ता जता णं राहू देवे आगच्छमाणे वा गच्छमाणे वा विउव्वमाणे वा परियारेमाणे वा चंदस्स वा सूरस्स वा लेसं आवरेत्ता वीतीवतति तदा णं मणुस्सलोए मणुस्सा वदंति–राहुणा चंदे सूरे वा गहिते १२। ता जया णं राहू देवे आगच्छमाणे वा गच्छमाणे वा विउव्वमाणे वा परियारेमाणे वा चंदस्स वा सूरस्स वा लेसं आवरेत्ता पासेणं वीतीवतति तता

णं मणुस्सलोअंमि मणुस्सा वदंति—चंदेण वा सूरेण वा राहुस्स कुच्छी भिराणा १३। ता जता णं राहू देवे आगच्छमाणे वा गच्छमाणे वा विउव्वमाणे वा परियारेमाणे वा चंदस्स वा सूरस्स वा लेसं आवरेत्ता पच्चोसक्कति तता णं मणुस्सलोए मणुस्सा एवं वदंति—राहुणा चंदे वा सूरे वा वंते राहुणा २, १४। ता जता णं राहू देवे आगच्छमाणे वा गच्छमाणे वा विउव्वमाणे वा परियारेमाणे वा चंदस्स वा सूरस्स वा लेसं आवरेत्ता मज्झं मज्झेणं वीतिवतति तता णं मणुस्सलोयंसि मणुस्सा वदंति—राहुणा चंदे वा सूरे वा विइयरिए राहुणा २, १५। ता जता णं राहू देवे आगच्छमाणे वा गच्छमाणे वा विउव्वमाणे वा परियारेमाणे वा चदस्स वा सूरस्स वा लेसं आवरेत्ता णं अधे सपक्खिं सपडिदिसिं चिट्ठति तता णं मणुस्सलोअंसि मणुस्सा वदंति—राहुणा चंदे वा सूरे वा घत्थे राहुणा २, १६। कतिविधे णं राहू पराणत्ते ?, दुविहे पराणत्ते, तंजहा—ता धुवराहू य पव्वराहू य १७। तत्थ णं जे से धुवराहू से णं बहुल-पक्खस्स पाडिवए पराणरसइभागेणं भागं चंदस्स लेसं आवरेमाणे २ चिट्ठति, तंजहा—पढमाए पढमं भागं जाव पन्नरसमं भागं, चरमे समए चंदे रत्ते भवति अवसेसे समए चंदे रत्ते य विरत्ते य भवइ, तमेव सुक्कपक्खे उवदंसेमाणे २ चिट्ठति, तंजहा—पढमाए पढमं भागं जाव चंदे विरत्ते य भवइ, अवसेसे समए चंदे रत्ते विरत्ते य भवति १८। तत्थ णं जे ते पव्वराहू से जहरायोणं छराहं मासाणं, उक्कोसेणं बायालीसाए मासाणं चंदस्स अडतालीसाए संवच्छराणं सूरस्स १९ ॥ सूत्रं १०३ ॥ ता कहं ते चंदे ससी आहितेति वदेज्जा ?, ता चंदस्स णं जोतिसिंदस्स जोतिसरराणो मियंके विमाणे कंता देवा कंताओ देवीओ कंताइं आसण-सयण-खंभ-भंडमत्तोवगरणाइं अप्पणावि णं चंदे देवे जोतिसिंदे जोतिसराया सोमे कंते सुभे पियदंसणे सुरूवे ता एवं खलु चंदे ससी चंदे ससी आहितेति वदेज्जा १। ता कहं ते सूरिए आदिच्चे सूरे २

आहितेति वदेज्जा ?, ता सूरादीया समयाति वा आवलियाति वा आणापाणूति वा थोवेति वा जाव उस्सप्पिणिओसप्पिणीति वा, एवं खलु सूरे आदिच्चे २ आहितेति वदेज्जा २ ॥सूत्रं १०४॥ ता चंदस्स णं जोतिसिंदस्स जोतिसरण्णो कति अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ ?, ता चंदस्स णं जोतिसिंदस्स चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तंजहा–चंदप्पभा दोसिणाभा अच्चिमाली पभंकरा १। जहा हेट्ठा तं चेव जाव णो चेव णं मेहुणवत्तियं, एवं सूरस्सवि णेतव्वं २। ता चंदिमसूरिया जोतिसिंदा जोतिसरायाणो केरिसे कामभोगे पच्चणुभवमाणा विहरंति ?, ता से जहा णामते केई पुरिसे पढम-जोव्वणुट्ठाण-बलसमत्थे पढमजोव्वणुट्ठाण-बलसमत्थाए भारियाए सद्धिं अचिरवत्तवीवाहे अत्थत्थी अत्थगवेसणताए सोलसवासविप्पवसिते से णं ततो लद्धट्ठे कतकज्जे अणहसमग्गे पुणरवि णियगघरं हव्वमागते ण्हाते कतबलिकम्मे कयकोउय-मंगलपायच्छित्ते सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवरपरिहिते अप्पमहग्घाभरणा-लंकियसरीरे मणुण्णं थालीपाकसुद्धं अट्ठारसवंजणाउलं भोयणं भुत्ते समाणे तंसि तारिसगंसि वासघरंसि अंतो सचित्तकम्मे बाहिरतो दूमितघट्ठमट्ठे विचित्त-उल्लोअ-चिल्लियतले बहुसम-सुविभत्तभूमिभाए मणिरयण-पणासितंधयारे काला-गुरु-पवरकुंदुरुक्क-तुरुक्क-धूव-मघमघेंत-गंधुद्धुयाभिरामे सुगंधवरगंधिए गंधवट्टि-भूते तंसि तारिसगंसि सयणिज्जंसि दुहतो उण्णते मज्झे णतगंभीरे उभओ सालिंगणवट्टिए उभओ विब्बोयणे (पण्णत्तगंडविब्बोयणे) सुरम्मे गंगापुलिण-वालुया--उद्दालसालिसए सुविरइयरयत्ताणे ओयविय-खोमिय--खोमदुगूल-पट्टपडिच्छायणे रत्तंसुयसंवुडे सुरम्मे आईणग-रूत-बूर-णवणीत--तूलफासे सुगंधवर-कुसुमचुण्ण-सयणोवयारकलिते ताए तारिसाए भारियाए सद्धिं सिंगारागारचारुवेसाए संगत--हसित--भणित-चिट्ठित-संलाव-विलास-णिउण-जुत्तोवयारकुसलाए अणुरत्ताविरत्ताए मणोणुकूलाए एगंतरतिपसत्ते अण्णत्थ कच्छई मणं अकुव्वमाणे इट्ठे सद्दफरिसरसरूवगंधे पंचविधे माणुस्सए

कामभोगे पच्चणुभवमाणे विहरिज्जा ३ । ता से णं पुरिसे विउसमणकालसमयंसि केरिसए सातासोक्खं पच्चणुभवमाणे विहरति ?, उरालं समणाउसो !, ता तस्स णं पुरिमस्स कामभोगेहिंतो एत्तो अणंतगुणविसिट्ठतरा चेव वाणमंतराणं देवाणं कामभोगा ४ । वाणमंतराणं देवाणं कामभोगेहिंतो अणंतगुणविसिट्ठतरा चेव असुरिंदवज्जियाणं भवणवासीणं देवाणं कामभोगा ५ । असुरिंदवज्जियाणं देवाणं कामभोगेहितो एत्तो अणंतगुणविसिट्ठतरा चेव असुरकुमाराणं इंदभूयाणं देवाणं कामभोगा ६ । असुरकुमाराणं देवाणं कामभोगेहिंतो अणंतगुणविसिट्ठतरा चेव गहणक्खत्ततारारूवाणं कामभोगा ७। गहगणणक्खत्ततारारूवाणं कामभोगेहिंतो अणंतगुणविसिट्ठतरा चेव चंदिमसूरियाणं देवाणं कामभोगा ८ । ता एरिसए णं चंदिमसूरिया जोइसिंदा जोइसरायाणो कामभोगे पच्चणुभवमाणा विहरंति ९ ।। सूत्रं १०५ ।। तत्थ खलु इमे अट्ठासीती महग्गहा पराणत्ता, तंजहा— इंगालए वियालए लोहितंके सणिच्छरे आहुणिए पाहुणिए कणो कणए कणकणए कणवितारणए १० कणगसंताणे सोमे सहिते अस्सासणो कज्जोवए कव्वरए अयकरए दुदुंभए संखे संखणाभे २० संखवरणाभे कंसे कंसणाभे कंसवरणाभे णीले णीलोभासे रुप्पे रुप्पोभासे भासे भासरासी ३० तिले तिलपुप्फवणो दगे दगवरणे काये वंधे इंदग्गी धूमकेतू हरी पिंगलए ४० बुधे सुक्के बहस्सती राहू अगत्थी माणवए कामफासे धुरे पमुहे वियडे ५० विसंधिकप्पेलए पइल्ले जडियालए अरुणे अग्गिलए काले महाकाले सोत्थिए सोवत्थिए वद्धमाणगे ६० पलंबे णिच्चालोए णिच्चुज्जोते सयंपभे ओभासे सेयंकरे खेमंकरे आभंकरे पभंकरे अरए ७० विरए असोगे, वीतसोगे य विमले, वित्ते वित्थे विसाले साले सुव्वते अणियट्टी एगजडी ८० दुजडी कर करिए रायऽग्गले पुप्फकेतू भाव केतू १ । संगहणी—इंगालए वियालए लोहितंके सणिच्छरे चेव । आहुणिए पाहुणिए कणकसणामावि पंचेव ।।१।।

सोमे सहिते अस्सासणे य कज्जोवए य कव्वरए। अयकरए दुंदुभए संखसणामावि तिरणेव ॥ २ ॥ तिन्नेव कंसणामा णीले रुप्पी य हुँति चत्तारि । भास तिल पुप्फवरणे दगवरणे काय वधे य ॥ ३ ॥ इंदग्गि धूमकेतू हरि पिंगलए बुधे य सुक्के य। वहसति राहु अगत्थी माणवए कामफासे य ॥ ४ ॥ धुरए पमुहे वियडे विसंधिकप्पे तहा पयल्ले य। जडियालए य अरुणे अग्गिल काले महाकाले ॥ ५ ॥ सोत्थिये सोवत्थिये वद्धमाणग तधा पलंबे य। णिच्चालोए णिच्चुज्जोए सयंपभे चेव ओभासे ॥ ६ ॥ सेयंकर खेमंकर आभंकर पभंकरे य बोद्धव्वे। अरए विरए य तहा असोग तह वीतसोगे य ॥ ७ ॥ विमले वितत विवत्थे विसाल तह साल सुव्वते चेव । अणियट्टी एगजडी य होइ बिजडी य बोद्धव्वो ॥ ८ ॥ कर करिए रायऽग्गल बोद्धव्वे पुप्फ भाव केतू य। अट्ठासीति गहा खलु णेयव्वा आणुपुव्वीए ॥ ९ ॥ २ ॥ सूत्रं १०६ ॥ इति एस पाहुडत्था अभव्वजण-हियय-दुल्लहा इणमो। उक्कित्तिता भगवती जोतिसरायस्स पराणत्ती ॥ १ ॥ एस गहितावि संता थद्धे गारविय माणिपडिणीए। अबहुस्सुए ण देया तव्विवरीते भवे देया ॥ २ ॥ सद्धाधिति-उट्ठाणुच्छाह-कम्म-बल-विरियपुरिसकारेहिं । जो सिक्खिओवि संतो अभायणे पक्खिवे(रिकह)ज्जाहि ॥३॥ सो पवयण-कुल-गण-संघबाहिरो णाण-विणयपरिहीणो। अरहंत-थेर-गणहरमेरं किर होति वोलीणो ॥ ४ ॥ तम्हा धिति उट्ठाणुच्छाह-कम्मबल-विरियसिक्खिअं णाणं। धारेयव्वं णियमा ण य अविणएसु दायव्वं ॥ ५ ॥ वीरवरस्स भगवतो जरमरणकिलेस-दोसरहियस्स। वंदामि विणयपणतो सोक्खुप्पाए सया पाए ॥ ६ ॥ सूत्रं १०७॥

॥ इति विंशतितमं प्राभृतम् ॥ २० ॥

॥ इति श्रीसूर्यप्रज्ञप्तिसूत्रम् ॥

॥ इति षष्ठमुपाङ्गं समाप्तम् ॥

॥ ग्रन्थाग्रं २२०० ॥

॥ अर्हम् ॥

पञ्चमगणधरश्रीमत्सुधर्मस्वामिप्रणीतं

॥ श्री निरयावलिकासूत्रम् ॥

—:❀:—

॥ अथ निरयावलिकाख्यः प्रथमो वर्गः ॥

ॐ नमः श्रुतदेवतायै ॥ ते णं काले णं ते णं समए णं रायगिहे नामं नयरे होत्था, रिद्ध १। उत्तरपुरिच्छिमे दिसीभाए गुणसिलए नामं चेइए होत्था, वन्नउ २। असोगवरपायवे तस्स णं हेट्ठा खंधासन्ने, एत्थ णं महं एगे पुढविसिलापट्टए पण्णत्ते, विक्खंभायामसुप्पमाणे आईणग-रूय-बूर-नवणीय-तूलफासे, पासाईए जाव पडिरूवे ३ ॥ सू० १ ॥ ते णं काले णं ते णं समए णं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतेवासी अज्जसुहम्मे नामं अणगारे जातिसंपन्ने जहा केसि जाव पंचहिं अणगारसएहिं सद्धिं संपरिवुडे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे जेणेव रायगिहे नगरे जाव अहापडिरूवं उग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं जाव विहरति १। परिसा निग्गया, धम्मो कहिओ, परिसा पडिगया २ ॥ सू० २ ॥ ते णं काले णं ते णं समए णं अज्जसुहम्मस्स अणगारस्स अंतेवासी जंबू णामं अणगारे समचउरंससंठाणसंठिए जाव संखित्तविउलतेयलेस्से अज्जसुहम्मस्स अणगारस्स अदूरसामंते उड्ढंजाणू जाव विहरति ॥ सू० ३ ॥

तए णं से भगवं जंबू जातसड्ढे जाव पज्जुवासमाणे एवं वयासि—उवंगाणं भंते ! समणे णं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ? एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया जाव संपत्तेणं एवं उवंगाणं पंच वग्गा पन्नता, तंजहा—निरयावलियाओ १ कप्पवडिंसियाओ २ पुप्फियाओ ३ पुप्फचूलियाओ ४ वण्हिदसाओ ५

॥ सू० ४ ॥ जइ णं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं उवंगाणं पंच वग्गा पन्नत्ता, तंजहा–निरयावलियाओ जाव वण्हिदसाओ, पढमस्स णं भंते वग्गस्स उवंगाणं निरयावलियाणं समणेणं भगवया जाव संपत्तेणं कइ अज्झयणा पन्नत्ता ? एवं खलु जंबू ! समणेणं जाव संपत्तेणं उवंगाणं पढमस्स वग्गस्स निरयावलियाणं दस अज्झयणा पन्नत्ता, तंजहा–काले १ सुकाले २ महाकाले ३ कण्हे ४ सुकण्हे ५ तहा महाकण्हे ६ वीरकण्हे ७ य बोद्धव्वे रामकण्हे ८ तहेव य पिउसेणकण्हे ९ नवमे दसमे महासेणकण्हे १० उ ॥ सू० ५ ॥ जइ णं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं उवंगाणं पढमस्स वग्गस्स निरयावलियाणं दस अज्झयणा पन्नत्ता, पढमस्स णं भंते ! अज्झयणस्स निरयावलियाणं समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पन्नत्ते ? एवं खलु जंबू ! ते णं काले णं ते णं समए णं इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे चंपा नामं नयरी होत्था, रिद्ध, पुन्नभद्दे चेइए, तत्थ णं चंपाए नयरीए सेणियस्स रन्नो पुत्ते चेल्लणाए देवीअत्तए कूणिए नामं राया होत्था, महता, तस्स णं कूणियस्स रन्नो पउमावई नामं देवी होत्था, सोमाल जाव विहरइ ॥सू० ६॥ तत्थ णं चंपाए नयरीए सेणियस्स रन्नो भज्जा कूणियस्स रन्नो चुल्लमाउया काली नामं देवी होत्था, सोमाल जाव सुरूवा १ । तीसे णं कालीए देवीए पुत्ते काले नामं कुमारे होत्था, सोमाल जाव सुरूवे २ ॥ सू० ७ ॥ तते णं से काले कुमारे अन्नया कयाइ तिहिं दंतीसहस्सेहि तिहिं रहसहस्सेहिं तिहिं आससहस्सेहि तिहिं मणुयकोडीहि गरुलवूहे १ । एक्कारसमेणं खंडेणं कूणिएणं रन्ना सद्धिं रहमुसलं संगामं ओयाए २ ॥ सू० ८ ॥ तते णं तीसे कालीए देवीए अन्नदा कदाइ कुडुंबजागरियं जागरमाणीए अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था–एवं खलु ममं पुत्ते कालकुमारे तिहिं दंतिसहस्सेहिं जाव ओयाए । से मन्ने किं जतिस्सति ? नो जतिस्सति ? जीविस्सइ ? नो जीविस्सति ? पराजिणिस्सइ ? णो पराजिणिस्सइ ? काले णं कुमारे णं

अहं जीवमाणं पासिज्जा ? ओहयमणसंकप्पा जाव झियाइ ॥ सू० ६ ॥
ते णं काले णं ते णं समए णं समणे भगवं महावीरे समोसरिते परिसा निग्गया १ । तते णं तीसे कालीए देवीए इमीसे कहाए लद्धट्ठाए समाणीए अयमेतारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था—एवं खलु समणे भगवं महावीरे पुव्वाणुपुव्विं जाव इहमागते जाव विहरति, तं महाफलं खलु तहारूवाणं जाव विउलस्स अट्ठस्स गहणताए, तं गच्छामि णं समणं जाव पज्जुवासामि २ । इमं च णं एयारूवं वागरणं पुच्छिस्सामि त्तिकट्टु एवं संपेहेइ संपेहित्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति २ त्ता एवं वदासि खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! धम्मियं जावप्पवरं जुत्तमेव उवट्ठवेह, उवट्ठवित्ता जाव पच्चप्पिणंति ३ । तते णं सा काली देवी राहाया कयबलिकम्मा जाव अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरा बहूहिं खुज्जाहिं जाव महत्तरगविंदपरिक्खित्ता अंतेउराओ निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव धम्मिए जाणप्पवरे तेणेव उवागच्छइ २ धम्मियं जाणप्पवरं दुरुहति २ नियगपरियालसंपरिवुडा चंपं नयरीं मज्झं मज्झेणं निग्गच्छति २ जेणेव पुन्नभद्दे चेइए तेणेव उवागच्छइ २ छत्तादीए जाव धम्मियं जाणप्पवरं ठवेति २ धम्मियाओ जाणप्पवराओ पच्चोरुहति २ बहुहिं जाव खुज्जाहि विंदपरिक्खित्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छति २ समणं भगवं महावीरं तिखुत्तो वंदति ठिया चेव सपरिवारा सुस्सूसमाणा नमंसमाणा अभिमुहा विणएणं पंजलिउडा पज्जुवासति ॥ सू० १० ॥ तते णं समणे भगवं जाव कालीए देवीए तीसे य महतिमहालियाए धम्मकहा भाणियव्वा जाव समणोवासए वा समणोवासिया वा विहरमाणा आणाए आराहए भवति ॥ सू० ११ ॥ तते णं सा काली देवी समणस्स भगवओ अंतियं धम्मं सोच्चा निसम्म जाव हियया समणं भगवं तिखुत्तो जाव एवं वदासि-एवं खलु भंते ! मम पुत्ते काले कुमारे तिहिं दंतिसहस्सेहिं जाव रहमुसलसंगामं ओयाते, से णं भंते ! किं जइस्सति ?

नो जइस्सति ? जाव काले णं कुमारे अहं जीवमाणं पासिज्जा ? कालीति समणे भगवं कालिं देविं एवं वयासी–एवं खलु काली ! तव पुत्ते काले कुमारे तिहिं दंतिसहस्सेहिं जाव कूणिएणं रन्ना सद्धिं रहमुसलं संगामं संगामेमाणे हयमहिय-पवरवीरघातित-निवडित-चिंधज्झयपडागे निरालोयातो दिसातो करेमाणे चेडगस्स रन्नो सपक्खं सपडिदिसिं रहेणं पडिरहं हव्व-मागते १ । तते णं से चेडए राया कालं कुमारं एज्जमाणं पासति, कालं एज्जमाणं पासित्ता आसुरुत्ते जाव मिसिमिसेमाणे धणुं परामुसति २ उसुं परामुसइ २ वइसाहं ठाणं ठाति २ आययकण्णायतं उसुं करेति २ कालं कुमारं एगाहच्चं कूडाहच्चं जीवियाओ ववरोवेति २ । तं कालगते णं काली ! काले कुमारे नो चेव णं तुमं कालं कुमारं जीवमाणं पासिहिसि ३ ॥ सू० १२ ॥ तते णं सा काली देवी समणस्स भगवओ अंतियं एयमट्ठं सोचा निसम्म महया पुत्तसोएणं अप्फुन्ना समाणी परसुनियत्ताविव चंपगलता धस त्ति धरणीतलंसि सव्वंगेहिं संनिवडिया १ । तते णं सा काली देवी मुहुत्तंतरेणं आसत्था समाणी उट्ठाए उट्ठेति उट्ठित्ता समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ २ एवं वयासी–एवमेयं भंते ! तहमेयं भंते ! अवितहमेयं भंते ! असंदिद्धमेयं भंते ! सच्चेणं एसमट्ठे से जहेतं तुब्भे वदह त्तिकट्टु समणं भगवं वंदइ नमंसइ २, तमेव धम्मियं जाणप्पवरं दुरुहति २ जामेव दिसं पाउब्भूया तामेव दिसं पडिगता ॥ सू० १३ ॥

भंते त्ति भगवं गोयमे जाव वंदति नमंसति २ एवं वयासी–कालेणं भंते ! कुमारे तिहिं दंतिसहस्सेहिं जाव रहमुसलं संगामं संगामेमाणे चेडएणं रन्ना एगाहच्चं कूडाहच्चं जीवियाओ ववरोविते समाणे कालमासे कालं किच्चा कहिं गते ? कहिं उववन्ने ? गोयमाति ! समणे भगवं महावीरे गोयमं एवं वदासि–एवं खलु गोयमा ! काले कुमारे तिहिं दंतिसहस्सेहिं जाव जीवियाओ ववरोविते समाणे कालमासे कालं किच्चा चउत्थीए

पंकप्पभाए पुढवीए हेमाभे नरगे दससागरोवमठिइएसु नेरइएसु नेरयत्ताए उववन्ने ॥ सू० १४ ॥ काले णं भंते ! कुमारे केरिसएहिं आरंभेहिं केरिसएहिं समारंभेहिं केरिसएहिं आरंभसमारंभेहिं केरिसएहि भोगेहिं केरिसएहि संभोगेहिं केरिसएहिं भोगसंभोगेहिं केरिसेण वा असुभकडकम्म-पब्भारेणं कालमासे कालं किच्चा चउत्थीए पंकप्पभाए पुढवीए जाव नेरइय-त्ताए उववन्ने ? एवं खलु गोयमा ! ते णं कालेणं ते णं समएणं रायगिहे नामं नयरे होत्था, रिद्धत्थिमियसमिद्धा १ । तत्थ णं रायगिहे नयरे सेणिए नामं राया होत्था, महया २ । तस्स णं सेणियस्स रन्नो नंदा नामं देवी होत्था, सोमाला जाव विहरति ३ । तस्स णं सेणियस्स रन्नो नंदाए देवीए अत्तए अभए नामं कुमारे होत्था, सोमाले जाव सुरूवे साम दंडे जहा चित्तो जाव रज्जधुराए चिंतए यावि होत्था ४ । तस्स णं सेणियस्स रन्नो चेल्लणा नामं देवी होत्था, सोमाले जाव विहरइ ५ ॥ सू० १५ ॥ तते णं सा चिल्लणा देवी अन्नया कयाइं तंसि तारिसयंसि वासघरंसि जाव सीहं सुमिणे पासित्ता णं पडिबुद्धा, जहा पभावती, जाव सुमिणपाढगा पडि-विसज्जिता, जाव चिल्लणा से वयणं पडिच्छित्ता जेणेव सए भवणे तेणेव अणुपविट्ठा ॥ सूत्रं १६ ॥

तते णं तीसे चेल्लणाए देवीए अन्नया कयाइं तिण्हं मासाणं बहुपडि-पुण्णाणं अयमेयारूवे दोहले पाउब्भूए—धन्नाओ णं ताओ अम्मयाओ जाव जम्मजीवियफले जाओ णं सेणियस्स रन्नो उदरवलीमंसेहि सोल्लेहि य तलिएहि य भज्जितेहि य सुरं च जाव पसन्नं च आसाएमाणीओ जाव परिभाएमाणीओ दोहलं पविणेंति १ । तते णं सा चेल्लणा देवी तंसि दोहलंसि अविणिज्जमाणंसि सुक्का भुक्खा निम्मंसा ओलुग्गा ओलुग्गसरीरा नित्तेया दीणविमणवयणा पंडुइतमुही ओमंथियनयणवयणकमला जहोचियं पुप्फवत्थगंधमल्लालंकारं अपरिभुंजमाणी करतलमलियव्व कमलमाला

ओहतमणसंकप्पा जाव झियायंति २ ॥ सू० १७ ॥ तते णं तीसे चेल्लणाए देवीए अंगपडियारियातो चेल्लणं देविं सुक्कं भुक्खं जाव झियायमाणीं पासंति, पासित्ता जेणेव सेणिए राया तेणेव उवागच्छंति, २ करतलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलि कट्टु सेणियं रायं एवं वयासी–एवं खलु सामी ! चेल्लणा देवी न याणामो केणइ कारणेणं सुक्का भुक्खा जाव झियायति ॥ सू० १८ ॥ तते णं से सेणिए राया तासि अंगपडियारियाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म तहेव संभंते समाणे जेणेव चेल्लणा देवी तेणेव उवागच्छइ २ चिल्लणं देविं सुक्कं भुक्खं जाव झियायमाणिं पासित्ता एवं वयासी–किन्नं तुमं देवाणुप्पिए ! सुक्का भुक्खा जाव झियायसि ? तते णं सा चेल्लणा देवी सेणियस्स रण्णो एयमट्ठं णो आढाति णो परिजाणाति तुसिणीया संचिट्ठति १ । तते णं से सेणिए राया चिल्लणं देविं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वयासी–किं णं अहं देवाणुप्पिए ! एयमट्ठस्स नो अरिहे सवणयाए जं णं तुमं एयमट्ठं रहस्सीकरेसि ? तते णं सा चेल्लणा देवी सेणिएणं रन्ना दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्ता समाणी सेणियं रायं एवं वयासी–णत्थि णं सामी ! से केति अट्ठे जस्स णं तुब्भे अणरिहा सवणयाए, नो चेव णं इमस्स अट्ठस्स सवणयाए, एवं खलु सामी ! ममं तस्स ओरालस्स जाव महासुमिणस्स तिण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं अयमेयारूवे दोहले पाउब्भूए धन्नातो णं तातो अम्मयाओ जाओ णं तुब्भं उदरवलिमंसेहिं सोलएहि य जाव दोहलं विणेंति २ । तते णं अहं सामी ! तंसि दोहलंसि अविणिज्जमाणी सुक्का भुक्खा जाव झियायामि ३ ॥ सू० १९ ॥ तते णं से सेणिए राया चेल्लणं देविं एवं वदासि–मा णं तुमे देवाणुप्पिए ! ओहयमणसंकप्पा जाव झियायहि, अहं णं तहा जत्तिहामि जहा णं तव दोहलस्स संपत्ती भविस्सतीतिकट्टु चिल्लणं देविं ताहिं इट्ठाहिं कंताहिं पियाहिं मणुन्नाहिं मणामाहिं ओरालाहिं कल्लाणाहिं सिवाहिं धन्नाहिं मंगल्लाहिं मियमधुर-

सस्सिरीयाहिं वग्गूहिं समासासेति, चिल्लणाए देवीए अंतियातो पडिनिक्खमति २ जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव सीहासणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सीहासणवरंसि पुरत्थाभिमुहे निसीयति, तस्स दोहलस्स संपत्तिनिमित्तं बहूहिं आएहिं उवाएहि य उप्पत्तियाए य वेणइयाए य कम्मियाहि य पारिणामियाहि य परिणामेमाणे २ तस्स दोहलस्स आयं वा उवायं वा ठिइं वा अविंदमाणे ओहयमणसंकप्पे जाव झियायति ॥सू० २०॥ इमं च णं अभए कुमारे ण्हाए जाव सरीरे, सयाओ गिहाओ पडिनिक्खमति २ जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव सेणिए राया तेणेव उवागच्छति, सेणियं रायं ओहयमणसंकप्पं जाव झियायमाणं पासति २ एवं वदासी—अन्नया णं तातो ! तुब्भे ममं पासित्ता हट्ठ जाव हियया भवह, किन्नं तातो ! अज्ज तुब्भे ओहयमण संकप्पे जाव झियायह ? तं जइ णं अहं तातो ! एयमट्ठस्स अरिहे सवणयाए तो णं तुब्भे मम एयमट्ठं जहाभूतमवितहं असंदिद्धं परिकहेह, जा णं अहं तस्स अट्ठस्स अंतगमणं करेमि १। तते णं से सेणिए राया अभयं कुमारं एवं वदासि—णत्थि णं पुत्ता ! से केइ अट्ठे जस्स णं तुम्म अणरिहे सवणयाए, एवं खलु पुत्ता ! तव चुल्लमाउयाए चेल्लणाए देवीए तस्स ओरालस्स जाव महासुमिणस्स तिण्हं मासाणं बहुपडिपुन्नाणं जाव जाओ णं मम उदरवलीमंसेहिं सोल्लेहि य जाव दोहलं विणेंति २। तते णं सा चिल्लणा देवी तंसि दोहलंसि अविणिज्जमाणंसि सुक्का जाव झियाति ३। तते णं अहं पुत्ता ! तस्स दोहलस्स संपत्तिनिमित्तं बहूहिं आएहि य जाव ठितिं वा अविंदमाणे ओहयमणसंकप्पे जाव झियामि ४ ॥ सू० २१ ॥ तए णं से अभए कुमारे सेणियं रायं एवं वदासि—मा णं ताते ! तुब्भे ओहयमणसंकप्पे जाव झियाह, अहं णं तह जत्तिहामि, जहा णं मम चुल्लमाउयाए चिल्लणाए देवीए तस्स दोहलस्स संपत्ती भविस्सतीतिकट्टु सेणियं रायं ताहिं इट्ठाहिं जाव वग्गूहिं समासासेति २ जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ २ अब्भितरए

रहस्सितए ठाणिज्जे पुरिसे सद्दावेति २ एवं वयासी—गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! सूणातो अल्लं मंसं रुहिरं बत्थिपुडगं च गिराहह १ । तते णं ते ठाणिज्जा पुरिसा अभएणं कुमारेणं एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठा करतल जाव पडिसुणेत्ता अभयस्स कुमारस्स अंतियाओ पडिनिक्खमंति २ जेणेव सूणा तेणेव उवागच्छंति २ अल्लं मंसं रुहिरं बत्थिपुडगं च गिराहंति २ जेणेव अभए कुमारे तेणेव उवागच्छंति २ करतल जाव तं अल्लं मंसं रुहिरं बत्थिपुडगं च उवणेंति २ ॥ सू० २२ ॥ तते णं से अभए कुमारे तं अल्लं मंसं रुहिरं कप्पणिकप्पियं (अप्पकप्पियं) करेति २ जेणेव सेणिए राया तेणेव उवागच्छंति २ सेणियं रायं रहस्सिगयं सयणिज्जंसि उत्ताणयं निवज्जावेति २ सेणियस्स उदरवलीसु तं अल्लं मंसं रुहिरं विरवेति २ बत्थिपुडएणं वेढेति २ सवंतीकरणेणं करेति २ चेल्लणं देविं उप्पि पासादे अवलोयणवरगयं ठवावेति २ चेल्लणाए देवीए अहे सपक्खं सपडिदिसिं सेणियं रायं सयणिज्जंसि उत्ताणगं निवज्जावेति २ सेणियस्स रन्नो उदरवलिमंसाइं कप्पणिकप्पियाइं करेति २ से य भायणंसि पक्खिवति १ । तते णं से सेणिए राया अलियमुच्छियं करेति २ मुहुत्तंतरेणं अन्नमन्नेणं सद्धिं संलवमाणे चिट्ठति २ । तते णं से अभयकुमारे सेणियस्स रन्नो उदरवलिमंसाइं गिराहेति २ जेणेव चिल्लणा देवी तेणेव उवागच्छइ २ चेल्लणाए देवीए उवणेति ३ । तते णं सा चिल्लणा सेणियस्स रन्नो तेहिं उदरवलिमंसेहिं सोल्लेहिं जाव दोहलं विणेति ४ । तते णं सा चिल्लणा देवी संपुराणदोहला एवं संमाणियदोहला विच्छिन्नदोहला तं गब्भं सुहंसुहेणं परिवहति ५ । तते णं तीसे चेल्लणाए देवीए अन्नया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि अयमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था—जइ ताव इमेणं दारएणं गब्भगएणं चेव पिउणो उदरवलिमंसाणि खाइयाणि तं सेयं खलु मए एयं गब्भं साडित्तए वा पाडित्तए वा गालित्तए वा विद्धंसित्तए वा एवं संपेहेति २ तं

गब्भं बहूहिं गब्भसाडणेहि य गब्भपाडणेहि य गब्भगालणेहि य गब्भविद्धंसणेहि य इच्छति साडित्तए वा पाडित्तए वा गालित्तए वा विद्धंसित्तए वा, नो चेव णं से गब्भे सडति वा पडति वा गलति वा विद्धंसति वा ६। तते णं सा चिल्लणा देवी तं गब्भं जाहे नो संचाएति बहूहिं गब्भसाडएहि य जाव गब्भविद्धंसणेहि य साडित्तए वा जाव विद्धंसित्तए वा, ताहे संता तंता परितंता निव्विन्ना समाणा अकामिया अवसवसा अट्टवसट्टदुहट्टा तं गब्भं परिवहति ७ ॥ सू० २४ ॥

तते णं सा चिल्लणा देवी नवराहं मासाणं बहुपडिपुरणाणं जाव सोमालं सुरूवं दारयं पयाया १। तते णं तीसे चेल्लणाए देवीए इमे एतारूवे जाव समुप्पज्जित्था—जइ ताव इमेणं दारएणं गब्भगएणं चेव पिउणो उदरवलिमंसाइं खाइयाइं, तं न नज्जइ णं एस दारए संवड्ढमाणे अम्हं कुलस्स अंतकरे भविस्सति, तं सेयं खलु अम्हं एयं दारगं एगंते उक्कुरुडियाए उज्झावित्तए एवं संपेहेति २ दासचेडिं सद्दावेति २ एवं वयासी—गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिए एयं दारगं एगंते उक्कुरुडियाए उज्झाहि २। तते णं सा दासचेडी चेल्लणाए देवीए एवं वुत्ता समाणी करतल जाव कट्टु चिल्लणाए देवीए एतमट्ठं विणएणं पडिसुणेति २ तं दारगं करतलपुडेणं गिराहति २ जेणेव असोगवणिया तेणेव उवागच्छति २ तं दारगं एगंते उक्कुरुडियाए उज्झाति ३। तते णं तेणं दारएणं एगंते उक्कुरुडियाए उज्झितेणं समाणेणं सा असोगवणिया उज्जोविता यावि होत्था ४ ॥ सू० २५ ॥ तते णं से सेणिए राया इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे जेणेव असोगवणिया तेणेव उवागच्छति २ तं दारगं एगंते उक्कुरुडियाए उज्झियं पासेति २ आसुरुत्ते जाव मिसिमिसेमाणे तं दारगं करतलपुडेणं गिराहति २ जेणेव चिल्लणा देवी तेणेव उवागच्छति २ चेल्लणं देविं उच्चावयाहिं आओसणाहिं आओसति २ उच्चावयाहिं निब्भच्छणाहिं निब्भच्छेति २ एवं उद्धंसणाहिं उद्धंसेति २ एवं

वयासी–किस्स णं तुमं मम पुत्तं एगंते उक्कुरुडियाए उज्झावेसि त्तिकट्टु चेल्लणं देविं उच्चावयसवहसावितं करेति २ एवं वयासी–तुमं णं देवाणुप्पिए ! एयं दारगं अणुपुव्वेणं सारक्खमाणी संगोवमाणी संवड्ढेहि १। तते णं सा चेल्लणा देवी सेणिएणं रन्ना एवं वुत्ता समाणी लज्जिया विलिया विड्डा करतलपरिग्गहियं सेणियस्स रन्नो विणएणं एयमट्ठं पडिसुणेति २ तं दारगं अणुपुव्वेणं सारक्खमाणी संगोवेमाणी संवड्ढेति ५ ॥ सू० २६ ॥ तते णं तस्स दारगस्स एगंते उक्कुरुडियाए उज्झिज्जमाणस्स अग्गंगुलियाए कुक्कुड-पिच्छएणं दूमिया यावि होत्था, अभिक्खणं अभिक्खणं पूयं च सोणियं च अभिनिस्सवेति १। तते णं से दारए वेदणाभिभूए समाणे महता महता सद्देणं आरसति २। तते णं सेणिए राया तस्स दारगस्स आरसितसद्दं सोच्चा निसम्म जेणेव से दारए तेणेव उवागच्छति २ तं दारगं करतलपुडेणं गिण्हइ २ तं अग्गंगुलियं आसयंसि पक्खिवति २ पूइं च सोणियं च आस-एणं आमुसति ३। तते णं से दारए निव्वुए निव्वेदणे तुसिणीए संचिट्ठइ, जाहे वि य णं से दारए वेदणाए अभिभूते समाणे महता महता सद्देणं आरसति ताहे वि य णं सेणिए राया जेणेव से दारए तेणेव उवागच्छति २ तं दारगं करतलपुडेणं गिण्हति तं चेव जाव निव्वेयणे तुसिणीए संचि-ट्ठइ ४ ॥ सू० २७ ॥ तते णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो ततिए दिवसे चंदसूरदंसणियं करेति जाव संपत्ते बारसाहे दिवसे अयमेयारूवं गुणनिप्फन्नं नामधिज्जं करेति, जहा णं अम्हं इमस्स दारगस्स एगंते उक्कुरुडियाए उज्झिज्ज-माणस्स अंगुलिया कुक्कडपिच्छएणं दूमिया, त होउ णं अम्हं इमस्स दारगस्स नामधेज्जं कूणिए १। तते णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो नामधिज्जं करेंति कूणिय त्ति २। तते णं तस्स कूणियस्स आणुपुव्वेणं ठितिवडियं च जहा मेहस्स जाव उप्पिं पासायवरगए विहरति ३। अट्ठओ दाओ ४ ॥सू० २८॥

तते णं तस्स कूणियस्स कुमारस्स अन्नदा पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि

जाव समुपज्जित्था—एवं खलु अहं सेणियस्स रन्नो वाघाएणं नो संचाएमि सयमेव रज्जसिरिं करेमाणे पालेमाणे विहरित्तए, तं सेयं मम खलु सेणियं रायं नियलबंधणं करेत्ता अप्पाणं महता महता रायाभिसेएणं अभिसिंचावित्तए त्तिकट्टु एवं संपेहेति २ सेणियस्स रन्नो अंतराणि य छिद्दाणि य विरहाणि य पडिजागरमाणे विहरति १। तते णं से कूणिए कुमारे सेणियस्स रन्नो अंतरं वा जाव मम्मं वा अलभमाणे अन्नदा कयाइ कालादीए दस कुमारे नियघरे सद्दावेति २ एवं वदासि—एवं खलु देवाणुप्पिया! अम्हे सेणियस्स रन्नो वाघाएणं नो संचाएमो सयमेव रज्जसिरि करेमाणा पालेमाणा विहरित्तए, तं सेयं देवाणुप्पिया! अम्हं सेणियं रायं नियलबंधणं करेत्ता रज्जं च रट्ठं च बलं च वाहणं च कोसं च कोट्ठागारं च जणवयं च एक्कारसभाए विरिंचित्ता सयमेव रज्जसिरिं करेमाणाणं पालेमाणाणं विहरित्तए २। तते णं ते कालादीया दस कुमारा कूणियस्स कुमारस्स एयमट्ठं विणएणं पडिसुणेंति ३। तते णं से कूणिए कुमारे अन्नदा कदाइ सेणियस्स रन्नो अंतरं जाणति २ सेणियं रायं नियलबंधणं करेति २ अप्पाणं महता महता रायाभिसेएणं अभिसिंचावेति ४। तते णं से कूणिए कुमारे राजा जाते महता० ५ ॥ सूत्रं २१ ॥ तते णं से कूणिए राया अन्नदा कदाइ ण्हाए जाव सव्वालंकारविभूसिए चेल्लणाए देवीए पायवंदए हव्वमागच्छति १। तते णं से कूणिए राया चेल्लणं देविं ओहयमणसंकप्पं जाव झियायमाणिं पासति २ चेल्लणाए देवीए पायग्गहणं करेति २ चेल्लणं देविं एवं वदासि—किं णं अम्मो! तुम्हं न तुट्ठी वा न उसए वा न हरिसे वा नाणंदे वा? जं णं अहं सयमेव रज्जसिरिं जाव विहरामि २। तते णं सा चेल्लणा देवी कूणियं रायं एवं वयासि—कहण्णं पुत्ता! ममं तुट्ठी वा उस्सए वा हरिसे वा आणंदे वा भविस्सति? जं नं तुमं सेणियं रायं पियं देवयं गुरुजणगं अच्चंतनेहाणुरागरत्तं नियलबंधणं करित्ता

अप्पाणं महता रायाभिसेएणं अभिसिंचावेसि ३ । तते णं से कूणिए राया चिल्लणं देविं एवं वदासि–घातेउकामे णं अम्मो ! मम सेणिए राया, एवं मारेतुं बंधितुं निच्छुभिउकामए णं अम्मो ! ममं सेणिए राया, तं कहन्नं अम्मो ! ममं सेणिए राया अच्चंतनेहाणुरागरत्ते ? तते णं सा चेल्लणा देवी कूणियं कुमारं एवं वदासि–एवं खलु पुत्ता ! तुमंसि ममं गब्भे आभूते समाणे तिराहं मासाणं बहुपडिपुन्नाणं ममं अयमेयारूवे दोहले पाउब्भूते–धन्नातो णं तातो अम्मयातो जाव अंगपडिचारियाओ निरवसेसं भाणियव्वं जाव जाहे वि य णं तुमं वेयणाए अभिभूते महता जाव तुसिणीए संचिट्ठसि, एवं खलु तव पुत्ता ! सेणिए राया अच्चंतनेहाणुरागरत्ते ४ । तते णं से कूणिए राया चेल्लणाए देवीए अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म चिल्लणं देविं एवं वदासि– दुट्ठु णं अम्मो ! मए कयं सेणियं रायं पियं देवयं गुरुजणगं अच्चंतनेहाणुरागरत्तं नियलबंधणं करंतेणं, तं गच्छामि णं सेणियस्स रन्नो सयमेव नियलानि छिंदामि त्तिकट्टु परसुहत्थगते जेणेव चारगसाला तेणेव पहारित्थ गमणाए ५ । तते णं सेणिए राया कूणियं कुमारं परसुहत्थगयं एज्जमाणं पासति २ एवं वयासि–एस णं कूणिए कुमारे अपत्थियपत्थिए जाव सिरिहिरिपरिवज्जिए परसुहत्थगए इह हव्वमागच्छति, तं न नज्जइ णं ममं केणइ कुमारेणं मारिस्सतीतिकट्टु भीए जाव संजायभए तालपुडगं विसं आसगंसि पक्खिवइ ६ । तते णं से सेणिए राया तालपुडगविसं आसगंसि पक्खित्ते समाणे मुहुत्तंतरेणं परिणाममाणंसि निप्पाणे निच्चिट्ठे जीवविप्पजढे ओइन्ने ७ ॥ सू० ३० ॥ तते णं से कूणिए कुमारे जेणेव चारगसाला तेणेव उवागए २ सेणियं रायं निप्पाणं निच्चिट्ठं जीवविप्पजढं ओइन्नं पासति २ महता पितिसोएणं अप्फुणे समाणे परसुनियत्ते विव चंपगवरपादवे धस त्ति धरणीतलंसि सव्वंगेहिं संनिवडिए १ । तते णं से कूणिए कुमारे मुहुत्तंतरेणं आसत्थे समाणे रोयमाणे, कंदमाणे, सोयमाणे, विलव-

माणे एवं वदासि–अहो णं मए अधन्नेणं अपुन्नेणं अकयपुन्नेणं दुट्ठुकयं सेणियं रायं पियं देवयं गुरुजणगं अच्चंतनेहाणुरागरत्तं नियलबंधणं करंतेणं मम मूलागं चेव णं सेणिए राया कालगते त्ति कट्टु ईसरतलवर जाव संधिवालसद्धिं संपरिवुडे रोयमाणे ४ महया इड्ढिसक्कारसमुदएणं सेणियस्स रन्नो नीहरणं करेति, बहूइं लोइयाइं मयकिच्चाइं करेति २। तते णं से कूणिए कुमारे एतेणं महया मणोमाणसिएणं दुक्खेणं अभिभूते समाणे अन्नदा कदाइ अंतेउरपरियालसंपरिवुडे सभंडमत्तोवकरणमाताए रायगिहातो पडिनिक्खमति २ जेणेव चंपा नगरी तेणेव उवागच्छइ, तत्थ वि णं विपुलभोगसमितिसमन्नागए, कालेणं अप्पसोए जाव यावि होत्था ३ ॥ सू० ३१ ॥ तते णं से कूणिए राया अन्नया कयाइ कालादीए दस कुमारे सद्दावेति २ रज्जं च जाव जणवयं च एक्कारसभाए विरिंचति २ सयमेव रज्जसिरिं करेमाणे पालेमाणे विहरति ॥ सू० ३२ ॥

तत्थ णं चंपाए नगरीए सेणियस्स रन्नो पुत्ते चेल्लणाए देवीए अत्तए कूणियस्स रन्नो सहोयरे कणीयसे भाया वेहल्ले नामं कुमारे होत्था सोमाले जाव सुरूवे १। तते णं तस्स वेहल्लस्स कुमारस्स सेणिएणं रन्ना जीवंतएणं चेव सेयणए गंधहत्थी अट्ठारसवंके हारे पुव्वदिन्ने २। तए णं से वेहल्ले कुमारे सेयणएणं गंधहत्थिणा अंतेउरपरियालसंपरिवुडे चंपं नगरिं मज्झं मज्झेणं निग्गच्छइ २ अभिक्खणं २ गंगं महानइं मज्जणयं ओयरइ ३। तते णं सेयणए गंधहत्थी देवीओ सोंडाए गिण्हति २ अप्पेगइयाओ पुट्ठे ठवेति, अप्पेगइयाओ खंधे ठवेति, एवं अप्पेगइयाओ कुंभे ठवेति, अप्पेगइयाओ सीसे ठवेति, अप्पेगइयाओ दंतमुसले ठवेति, अप्पेगइयाओ सोंडाए गहाय उड्ढं वेहासं उव्विहइ, अप्पेगइयाओ सोंडागयाओ अंदोलावेति, अप्पेगइयाओ दंतंतरेसु नीणेति, अप्पेगइयाओ सीभरेण(असीतरणे) ण्हाणेति, अप्पेगइयाओ अणेगेहिं कीलावणेहिं कीलावेति ४ ॥ सू० ३३ ॥ तते णं चंपाए

नयरीए सिंघाडग-तिगचउक्क-चच्चरमहापहपहेसु बहुजणो अन्नमन्नस्स एवमाइ-क्खइ जाव परूवेति–एवं खलु देवाणुप्पिया ! वेहल्ले कुमारे सेयणएणं गंध-हत्थिणा अंतेउरं तं चेव जाव णेगेहि कीलावणएहिं कीलावेति, तं एस णं वेहल्ले कुमारे रज्जसिरिफलं पच्चणुब्भवमाणे विहरति, नो कूणिए राया ॥ सू० ३४ ॥ तते णं तीसे पउमावईए देवीए इमीसे कहाए लद्धट्ठाए समाणीते अयमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था, एवं खलु वेहल्ले कुमारे सेयणएणं गंधहत्थिणा जाव अणेगेहिं कीलावणएहिं कीलावेति, तं एस णं वेहल्ले कुमारे रज्जसिरिफलं पच्चणुब्भवमाणे विहरति, नो कोणिए राया, तं किं अम्हं रज्जेण वा जाव जणवएण वा जइ णं अम्हं सेयणगे गंधहत्थी नत्थि ? तं सेयं खलु ममं कूणियं रायं एयमट्ठं विन्नवित्तए त्तिकट्टु एवं संपेहेति २ जेणेव कूणिए राया तेणेव उवागच्छति २ करतल जाव एवं वयासि–एवं खलु सामी ! वेहल्ले कुमारे सेयणएण गंधहत्थिणा जाव अणेगेहिं कीलावणाहिं कीलावेति, तं किराहं सामी ! अम्हं रज्जेण वा जाव जणवएण वा जति णं अम्हं सेयणए गंधहत्थी नत्थि ? तए णं से कूणिए राया पउमावईए देवीए एयमट्ठं नो आढाति नो परिजाणाति तुसिणीए संचिट्ठति १। तते णं सा पउमावई देवी अभिक्खणं २ कूणियं रायं एयमट्ठं विन्नवेइ २ ॥ सू० ३५ ॥ तते णं से कूणिए राया पउमावईए देवीए अभिक्खणं २ एयमट्ठं विन्नविज्जमाणे अन्नया कयाइ वेहल्लं कुमारं सद्दावेति २ सेयणगं गंधहत्थिं अट्ठारसवंकं च हारं जायति १। तते णं से वेहल्ले कुमारे कूणियं रायं एवं वयासि–एवं खलु सामी ! सेणिएणं रन्ना जीवंतेणं चेव सेयणए गंधहत्थी अट्ठारसवंके य हारे दिन्ने, तं जइ णं सामी ! तुब्भे ममं रज्जस्स य (जणवयस्स य) अद्धं दलह तो णं अहं तुब्भं सेयणयं गंधहत्थिं अट्ठारसवंकं च हारं दलयामि २। तते णं से कूणिए राया वेहल्लस्स कुमारस्स एयमट्ठं नो आढाति नो परिजाणइ अभिक्खणं २ सेयणगं गंधहत्थिं अट्ठारसवंकं च हारं जायति

२ ॥ सू० ३६ ॥ तए णं तस्स वेहल्लस्स कुमारस्स कूणिएणं रन्ना अभिक्खणं २ सेयणगं गंधहत्थिं अट्ठारसवंकं च हारं एवं अक्खिविउकामेणं गिरिहउकामेणं उद्दालेउकामेणं ममं कूणिए राया सेयणगं गंधहत्थिं अट्ठारसवंकं च हारं तं जाव न उद्दालेइ ताव ममं कूणिए राया सेयणगं गंधहत्थिं अट्ठारसवंकं च हारं गहाय अंतेउरपरियालसंपरिवुडस्स सभंडमत्तोवकरणमाताए चंपातो नयरीतो पडिनिक्खमित्ता वेसालीए नयरीए अज्जगं चेडयं रायं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, एवं संपेहेति २ कूणियस्स रन्नो अंतराणि जाव पडिजागरमाणे २ विहरति १ । तते णं से वेहल्ले कुमारे अन्नदा कदाइ कूणियस्स रन्नो अंतरं जाणाति २ सेयणगं गंधहत्थिं अट्ठारसवंकं च हारं गहाय अंतेउरपरियालसंपरिवुडे सभंडमत्तोवकरणमायाए चंपाओ नयरीतो पडिनिक्खमति २ जेणेव वेसाली नगरी तेणेव उवागच्छति, वेसालीए नगरीए अज्जगं चेडयं उवसंपज्जित्ता णं विहरति २ ॥ सू० ३७ ॥ तते णं से कूणिए राया इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे एवं खलु वेहल्ले कुमारे ममं असंविदितेणं सेयणगं गंधहत्थिं अट्ठारसवंकं च हारं गहाय अंतेउरपरियालसपरिवुडे जाव अज्जयं चेडयं रायं उवसंपज्जित्ता णं विहरति, तं सेयं खलु ममं सेयणगं गंधहत्थिं अट्ठारसवंकं च हारं दूतं पेसित्तए, एवं संपेहेति २ दूतं सद्दावेति २ एवं वयासि–गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिया ! वेसालिं नगरिं, तत्थ णं तुमं ममं अज्जं चेडगं रायं करतल जाव वद्धावेत्ता एवं वयासि–एवं खलु सामी ! कूणिए राया विन्नवेति, एस णं वेहल्ले कुमारे कूणियस्स रन्नो असंविदितेणं सेयणगं गंधहत्थिं अट्ठारसवंकं च हारं गहाय हव्वमागते, तए णं तुब्भे सामी ! कूणियं रायं अणुगिराहमाणा सेअणगं गंधहत्थिं अट्ठारसवंकं च हारं कूणियस्स रन्नो पच्चप्पिणह, वेहल्लं कुमारं च पेसेह १ । तते णं से दूए कूणिए राए एवं वुत्ते समाणे करतल जाव पडिसुणित्ता जेणेव सते गिहे

तेणेव उवागच्छति २ जहा चित्तो जाव वद्धावित्ता एवं वयासि—एवं खलु सामी ! कूणिए राया विन्नवेइ—एस णं वेहल्ले कुमारे तहेव भाणियव्वं जाव वेहल्लं कुमारं पेसेह २ ॥ सू० ३८ ॥ तते णं से चेडए राया तं दूयं एवं वयासि—जह चेव णं देवाणुप्पिया ! कूणिए राया सेणियस्स रन्नो पुत्ते चेल्लणाए देवीए अत्तए ममं नत्तुए तहेव णं वेहल्ले वि कुमारे सेणियस्स रन्नो पुत्ते चेल्लणाए देवीए अत्तए मम नत्तुए, सेणिएणं रन्ना जीवंतेणं चेव वेहल्लस्स कुमारस्स सेयणगे गंधहत्थी अट्ठारसवंके हारे पुव्वविदिन्ने, तं जइ णं कूणिए राया वेहल्लस्स रज्जस्स य जणवयस्स य अद्धं दलयति तो णं सेयणगं गंधहत्थिं अट्ठारसवंकं च हारं कूणियस्स रन्नो पच्चप्पिणामि, वेहल्लं च कुमारं पेसेमि। तं दूयं सक्कारेति संमाणेति पडिविसज्जेति ॥ सू० ३९ ॥ तते णं से दूते चेडएणं रन्ना पडिविसज्जिए समाणे जेणेव चाउग्घंटे आसरहे तेणेव उवागच्छइ २ चाउग्घंटं आसरहं दुरुहति २ वेसालिं नगरिं मज्झं मज्झेणं निग्गच्छइ २ सुभेहिं वसहीहिं पायरासेहिं जाव वद्धावित्ता एवं वदासि—एवं खलु सामी ! चेडए राया आणवेति—जह चेव णं कूणिए राया सेणियस्स रन्नो पुत्ते चेल्लणाए देवीए अत्तए मम नत्तुए तं चेव भाणियव्वं जाव वेहल्लं च कुमारं पेसेमि, तं न देति णं सामी ! चेडए राया सेयणगं गंधहत्थिं अट्ठारसवंकं हारं च, वेहल्लं च नो पेसेति ॥ सू० ४० ॥ तते णं से कूणिए राया दुच्चं पि दूयं सद्दावित्ता एवं वयासी—गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिया ! वेसालिं नगरिं, तत्थ णं तुमं मम अज्जगं चेडगं रायं जाव एवं वयासि—एवं खलु सामी ! कूणिए राया विन्नवेइ—जाणि काणि रयणाणि समुप्पज्जंति सव्वाणि ताणि रायकुलगामीणि, सेणियस्स रन्नो रज्जसिरिं करेमाणस्स पालेमाणस्स दुवे रयणा समुप्पन्ना, तं जहा—सेयणए गंधहत्थी, अट्ठारसवंके हारे, तन्नं तुब्भे सामी ! रायकुलपरंपरागयं ठिइयं अलोवेमाणा सेयणगं गंधहत्थिं अट्ठारसवंकं च हारं

कूणियस्स रन्नो पच्चप्पिणाह वेहल्लं कुमारं च पेसेह १। तते णं से दूते कूणियस्स रन्नो तहेव जाव वद्धावित्ता एवं वयासि–एवं खलु सामी! कूणिए राया विन्नवेइ–जाणि काणि त्ति जाव वेहल्लं कुमारं पेसेह २। तते णं से चेडए राया तं दूयं एवं वयासि–जह चेव णं देवाणुप्पिया! कूणिए राया सेणियस्स रन्नो पुत्ते चिल्लणाए देवीए अत्तए जहा पढमं जाव वेहल्लं च कुमारं पेसेमि, तं दूतं सक्कारेति संमाणेति पडिविसज्जेति ३ ॥ सू० ४१ ॥ तते णं से दूते जाव कूणियस्स रन्नो वद्धावित्ता एवं वयासि–चेडए राया आणवेति–जह चेव णं देवाणुप्पिया! कूणिए राया सेणियस्स रन्नो पुत्ते चिल्लणाए देवीए अत्तए जाव वेहल्लं कुमारं पेसेमि, तं न देति णं सामी! चेडए राया सेयणगं गंधहत्थिं अट्ठारसवंकं च हारं, वेहल्लं कुमारं नो पेसेति ॥ सू० ४२ ॥ तते णं से कूणिए राया तस्स दूयस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म आसुरुत्ते जाव मिसिमिसेमाणे तच्चं दूतं सद्दावेति २ एवं वयासि–गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिया! वेसालीए नयरीए चेडगस्स रन्नो वामेणं पादेणं पायपीढं अक्कमाहि अक्कमित्ता कुंतग्गेणं लेहं पणावेहि २ आसुरुत्ते जाव मिसिमिसेमाणे तिवलियं भिउडिं निडाले साहट्टु चेडगं रायं एवं वयासि–हं भो चेडगराया! अपत्थियपत्थिया! दुरंत जाव परिवज्जित्ता एस णं कूणिए राया आणवेइ–पच्चप्पिणाहि णं कूणियस्स रन्नो सेयणगं अट्ठारसवंकं च हारं वेहल्लं च कुमारं पेसेहि, अहव जुद्धसज्जो चिट्ठाहि, एस णं कूणिए राया सबले सवाहणे सखंधावारे णं जुद्धसज्जे इह हव्वमागच्छति १। तते णं से दूते करतल तहेव जाव जेणेव चेडए राया तेणेव उवागच्छति २ करतल जाव वद्धावित्ता एवं वयासि–एस णं सामी! ममं विणयपडिवत्ती, इयाणिं कूणियस्स रन्नो आणत्ति चेडगस्स रन्नो वामेणं पाएणं पादपीढं अक्कमति २ आसुरुत्ते कुंतग्गेण लेहं पणावेति तं चेव सबलखंधावारे णं इह हव्वमागच्छति २। तते णं से

चेडए राया तस्स दूयस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म आसुरुत्ते जाव साहट्टु एवं वयासि—न अप्पिणामि णं कूणियस्स रन्नो सेयणगं गंधहत्थिं अट्ठारसवंकं हारं, वेहल्लं च कुमारं नो पेसेमि, एस णं जुद्धसज्जे चिट्ठामि ३। तं दूयं असक्कारियं असंमाणितं अवद्दारेणं निच्छुहावेइ ४ ॥ सू० ४३ ॥

तते णं से कूणिए राया तस्स दूतस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म आसुरुत्ते कालादीए दस कुमारे सद्दावेइ २ एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! वेहल्ले कुमारे ममं असंविदितेणं सेयणगं गंधहत्थिं अट्ठारसवंकं अंतेउरं सभंडं च गहाय चंपातो निक्खमति २ वेसालिं अज्जगं जाव उवसंपज्जित्ताणं विहरति १। तते णं मए सेयणगस्स गंधहत्थिस्स अट्ठारसवंकअट्ठाए दूया पेसिया, ते य चेडएण रएणा इमेणं कारणेणं पडिसेहित्ता अदुत्तरं च णं ममं तच्चे दूते असक्कारिते अवद्दारेणं निच्छुहावेति तं सेयं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं चेडगस्स रन्नो जुत्तं गिरिहत्तए २। तए णं कालाईया दस कुमारा कूणियस्स रन्नो एयमट्ठं विणएणं पडिसुणेंति ३। तते णं से कूणिए राया कालादीते दस कुमारे एवं वयासि—गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! सएसु सएसु रज्जेसु पत्तेयं पत्तेयं राहाया जाव पायच्छित्ता हत्थिखंधवरगया पत्तेयं पत्तेयं तिहिं दंतिसहस्सेहिं एवं तिहिं रहसहस्सेहिं तिहिं आससहस्सेहिं तिहिं मणुस्सकोडीहिं सद्धिं संपरिवुडा सव्विड्ढीए जाव रवेणं सतेहिं २ तो नगरेहिंतो पडिनिक्खमह २ ममं अंतियं पाउब्भवह ४। तते णं ते कालाईया दस कुमारा कोणियस्स रन्नो एयमट्ठं सोच्चा सएसु सएसु रज्जेसु पत्तेयं २ राहाया जाव तिहिं मणुस्सकोडीहि सद्धिं संपरिवुडा सव्विड्ढीए जाव रवेणं सएहिं २ तो नगरेहिंतो पडिनिक्खमंति २ जेणेव अंगा जणवए जेणेव चंपा नगरी जेणेव कूणिए राया तेणेव उवागता करतल जाव वद्धावेंति ५ ॥ सू० ४४ ॥ तते णं से कूणिए राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति २ एवं वयासि—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! आभिसेक्कं हत्थिरयणं पडिकप्पेह,

हयगयरहचातुरंगिणि सेणं संनाहेह, ममं एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह, जाव पच्चप्पिणंति १। ततं णं से कूणिए राया जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छइ जाव पडिनिग्गच्छित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जाव नरवई दुरूढे २। तते णं से कूणिए राया तिहिं दंतिसहस्सेहिं जाव रवेणं चंपं नगरिं मज्झं मज्झेणं निग्गच्छति २ जेणेव कालादीया दस कुमारा तेणेव उवागच्छइ २ कालाइएहिं दसहिं कुमारेहिं सद्धिं एगतो मेलायंति ३ ॥ सू० ४५ ॥ तते णं से कूणिए राया तेत्तीसाए दंतिसहस्सेहिं तेत्तीसाए आससहस्सेहिं तेत्तीसाए रहसहस्सेहिं तेत्तीसाए मणुस्सकोडीहिं सद्धिं संपरिवुडे सव्विड्ढीए जाव रवेणं सुभेहिं वसहीपायरासेहिं नातिविगिट्ठेहिं अंतरावासेहिं वसमाणे २ अंगजणवयस्स मज्झं मज्झेणं जेणेव विदेहे जणवते जेणेव वेसाली नगरी तेणेव पहारित्थगमणाते ॥ सू० ४६ ॥ तते णं से चेडए राया इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे नवमलई नवलेच्छई कासीकोसलका अट्ठारस वि गणरायाणो सद्दावेति २ एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया! वेहल्ले कुमारे कूणियस्स रन्नो असंविदितेणं सेयणगं अट्ठारसवंकं च हारं गहाय इहं हव्वमागते, तते णं कूणिएणं सेयणगस्स अट्ठारसवंकस्स य अट्ठाए तओ दूया पेसिया, ते य मए इमेणं कारणेणं पडिसेहिया १। तते णं से कूणिए ममं एयमट्ठं अपडिसुणमाणे चाउरंगिणीए सेणाए सद्धिं संपरिवुडे जुज्झसज्जे इहं हव्वमागच्छति, तं किन्तु देवाणुप्पिया! सेयणगंधहत्थि अट्ठारसवंकं च कूणियस्स रन्नो पच्चप्पिणामो? वेहल्लं कुमारं पेसेमो? उदाहु जुज्झित्था? तते णं नवमलई नवलेच्छती कासीकोसलगा अट्ठारस वि गणरायाणो चेडगं रायं एवं वदासि—न एयं सामी! जुत्तं वा पत्तं वा रायसरिसं वा जन्नं सेयणगंधहत्थि अट्ठारसवंकं कूणियस्स रन्नो पच्चप्पिणिज्जति, वेहल्ले य कुमारे सरणागते पेसिज्जति, तं जइ णं कूणिए राया चाउरंगिणीए सेणाए सद्धिं संपरिवुडे जुज्झसज्जे इहं हव्वमागच्छति,

तते णं अम्हे कूणिएणं रन्ना सद्धिं जुज्झामो २। तते णं से चेडए राया ते नवमल्लई नवलेच्छई कासीकोसलगा अट्ठारस वि गणरायाणो एवं वदासी–जइ णं देवाणुप्पिया ! तुब्भे कूणिएणं रन्ना सद्धिं जुज्झह, तं गच्छह णं देवाणुप्पिया ! सतेसु २ रज्जेसु ण्हाया जहा कालादीया जाव जएणं विजएणं वद्धावेंति ३। तते णं से चेडए राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति सद्दावित्ता एवं वयासि–आभिसेक्कं जहा कूणिए जाव दुरूढे ४। तते णं से चेडए राया तिहिं दंतिसहस्सेहिं जहा कूणिए जाव वेसालिं नगरिं मज्झं मज्झेणं निगच्छति २ जेणेव ते नवमल्लई नवलेच्छती कासीकोसलगा अट्ठारस वि गणरायाणो तेणेव उवागच्छति ५ ॥ सू० ४७ ॥ तते णं से चेडए राया सत्तावन्नाए दंतिसहस्सेहिं सत्तावन्नाए आससहस्सेहिं सत्तावन्नाए रहसहस्सेहिं सत्तावन्नाए मणुस्सकोडीएहिं सद्धिं संपरिवुडे सव्विड्ढीए जाव रवेणं सुभेहिं वसहीहिं पातरासेहिं नातिविगिट्ठेहिं अंतरेहिं वसमाणे २ विदेहं जणवयं मज्झं मज्झेणं जेणेव देसपंते तेणेव उवागच्छति २ खंधावारनिवेसणं करेति २ कूणियं रायं पडिवालेमाणे जुज्झसज्जे चिट्ठइ ॥ सू० ४८ ॥ तते णं से कूणिए राया सव्विड्ढीए जाव रवेणं जेणेव देसपंते तेणेव उवागच्छति चेडयस्स रन्नो जोयणंतरियं खंधावारनिवेसं करेति १। तते णं से दोन्नि वि रायाणो रणभूमिं सज्जावेंति २ रणभूमिं जयंति २। तते णं से कूणिए तेत्तीसाए दंतिसहस्सेहिं जाव तेत्तीसाए मणुस्सकोडीहिं गरुलवूहं रएइ, रइत्ता गरुलवूहेणं रहमुसलं संगामं उवायाते ३। तते णं से चेडए राया सत्तावन्नाए दंतिसहस्सेहिं जाव सत्तावन्नाए मणुस्सकोडीहिं सगडवूहं रएइ, रइत्ता सगडवूहेणं रहमुसलं संगामं उवायाते ४ ॥ सू० ४९ ॥ तते णं ते दोण्ह वि राईणं अणीया सन्नद्ध जाव गहियाउहपहरणा मंगतितेहिं फलतेहिं निक्कट्ठाहिं असीहिं अंसागएहिं तोणेहिं सजीवेहिं धणूहिं समुक्खित्तेहिं सरेहिं समुल्लालिताहिं डावाहिं ओसारियाहिं उरूघंटाहिं छिप्पत्त-

रेणं वज्जमाणेणं महया उक्किट्ठ-सोहनायबोल-कलकलरवेणं समुद्दरवभूयं पिव करेमाणा सव्विड्ढीए जाव रवेणं हयगया हयगएहिं गयगया गयगतेहिं रहगया रहगतेहिं पायत्तिया पायत्तिएहिं अन्नमन्नेहिं सद्धिं संपलग्गा यावि होत्था १ । तते णं ते दोराह वि रायाणं अणीया णियग-सामीसासणाणुरत्ता महता जणक्खयं जणवहं जणप्पमद्दं जणसंवट्टकप्पं नच्चंतकबंधवारभीमं रुहिरकद्दमं करेमाणा अन्नमन्नेणं सद्धिं जुज्झंति २ । तते णं से काले कुमारे तिहिं दंतिसहस्सेहिं जाव मणूसकोडीहिं गरुलवूहेणं एक्कारसमेणं खंधेणं कूणिएणं रराणा सद्धिं रहमुसलं संगामं संगामेमाणे हयमहित जहा भगवता कालीए देवीए परिकहियं जाव जीवियाओ ववरोवेति ३ ॥ सू० ५० ॥

तं एवं खलु गोयमा ! काले कुमारे एरिसएहिं आरंभेहिं जाव एरिसएणं असुभकडकम्मपब्भारेणं कालमासे कालं किच्चा चउत्थीए पंकप्पभाए पुढवीए हेमाभे नरए नेरइयत्ताए उववन्ने ॥ सू० ५१ ॥ काले णं भंते ! कुमारे चउत्थीए पुढवीए अणंतरं उवट्टित्ता कहिं गच्छहिति ? कहिं उववज्जिहिति ? गोयमा ! महाविदेहे वासे जाइं कुलाइं भवंति अड्ढाइं जहा दढप्पइन्नो जाव सिज्झिहिति बुज्झिहिति जाव अंतं काहिंति ॥ सूत्रं ५२ ॥ तं एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया जाव संपत्तेणं निरयावलियाणं पढमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते ॥ सूत्रं ५३ ॥

॥ पढमं अज्झयणं समत्तं ॥ १ ॥

जइ णं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं निरयावलियाणं पढमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते, दोच्चस्स णं भंते अज्झयणस्स निरयावलियाणं समणेणं भगवया जाव संपत्तेणं के अट्ठे पन्नत्ते ? एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं चंपा नामं नगरी होत्था, पुन्नभद्दे चेइए, कोणिए राया, पउमावई देवी १ । तत्थ णं चंपाए नयरीए सेणियस्स रन्नो भज्जा कोणियस्स रन्नो चुल्लमाउया सुकाली नामं देवी होत्था, सुकुमाला २ ।

तीसे णं सुकालीए देवीए पुत्ते सुकाले नामं कुमारे होत्था, सुकुमाले ३। तते णं से सुकाले कुमारे अन्नया कयाति तिहिं दंतिसहस्सेहिं जहा कालो कुमारो निरवसेसं तं चेव जाव महाविदेहे वासे अंतं काहिति ४॥ सू० ५४॥ ॥ २॥ एवं सेसा वि अट्ठ अज्झयणा नेयव्वा पढमसरिसा, णवरं मायातो सरिसणामाओ ॥ १०॥ निरयावलियातो समत्तातो। निक्खेवो सव्वेसिं भाणियव्वो तहा ॥ सू० ५५॥

॥ पढमो वग्गो समत्तो ॥ १॥

॥ अथ कल्पावतंसिकानामको द्वितीयो वर्गः ॥

जति णं भंते! समणेणं भगवया जाव संपत्तेणं उवंगाणं पढमस्स वग्गस्स निरयावलियाण अयमट्ठे पन्नत्ते, दोच्चस्स णं भंते! वग्गस्स कप्पवडिंसियाणं समणेणं जाव संपत्तेणं कइ अज्झयणा पन्नत्ता? एवं खलु जंबू! समणेणं भगवया जाव संपत्तेणं कप्पवडिंसियाणं दस अज्झयणा पन्नत्ता, तंजहा—पउमे १ महापउमे २ भद्दे ३ सुभद्दे ४ पउमभद्दे ५ पउमसेणे ६ पउमगुम्मे ७ नलिणिगुम्मे ८ आणंदे ९ नंदणे १०॥ सूत्रं ५६॥ जइ णं भंते! समणेणं जाव संपत्तेणं कप्पवडिंसियाणं दस अज्झयणा पन्नत्ता, पढमस्स णं भंते! अज्झयणस्स कप्पवडिंसियाणं समणेणं भगवया जाव के अट्ठे पन्नत्ते? एवं खलु जंबू! तेणं कालेणं तेणं समएणं चंपा नामं नयरी होत्था, पुन्नभद्दे चेइए, कूणिए राया, पउमावई देवी १। तत्थ णं चंपाए नयरीए सेणियस्स रन्नो भज्जा कूणियस्स रन्नो चुल्लमाउया काली नामं देवी होत्था, सुकुमाला २। तीसे णं कालीए देवीए पुत्ते काले नामं कुमारे होत्था, सुकुमाले ३। तस्स णं कालस्स कुमारस्स पउमावई नामं देवी होत्था, सोमाला जाव विहरति ४। तते णं सा पउमावई देवी अन्नया कयाई तंसि तारिसगंसि वासघरंसि अब्भितरतो सचित्तकम्मे जाव सीहं सुमिणे पासित्ता णं पडिबुद्धा, एवं जम्मणं जहा महाबलस्स, जाव नामधिज्जं, जम्हा णं अम्हं इमे दारए कालस्स

कुमारस्स पुत्ते पउमावईए देवीए अत्तए तं होउ णं अम्हं इमस्स दारगस्स नामधिज्जं पउमे पउमे ५। सेसं जहा महब्बलस्स अट्ठओ दातो जाव उप्पि पासायवरगते विहरति ६ ॥ सू० ५७ ॥ सामी समोसरिए परिसा निग्गया कूणिते निग्गते १। पउमे वि जहा महब्बले निग्गते तहेव अम्मापिति आपुच्छणा जाव पव्वइए अणगारे जाए जाव गुत्तबंभयारी २। तते णं से पउमे अणगारे समणस्स भगवओ महावीरस्स तहारूवाणं थेराणं अंतिए सामाइयमादियाइं एकारस अंगाइं अहिज्जइ, अहिज्जित्ता बहूहि चउत्थछट्ठट्ठम जाव विहरति ३। तते णं से पउमे अणगारे तेणं ओरालेणं जहा मेहो तहेव धम्मजागरिया चिता एवं जहेव मेहो तहेव समणं भगवं आपुच्छित्ता विउले जाव पाओवगते समाणे तहारूवाणं थेराणं अंतिए सामाइयमाइयाइं एकारस अंगाइं, बहुपडिपुराणाइं पंच वासाइं सामन्नपरियाए, मासियाए संलेहणाए सट्ठि भत्ताइं आणुपुव्वीए कालगते, थेरा ओत्तिन्ना भगवं गोयमं पुच्छइ, सामी कहेइ जाव सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदित्ता आलोइयपडिक्कंते उड्ढं चंदिमसोहम्मे कप्पे देवत्ताए उववन्ने दो सागराइं ॥ सूत्रं ५८ ॥ से णं भंते ! पउमे देवे तातो देवलोगातो आउक्खएणं पुच्छा, गोयमा ! महाविदेहे वासे जहा दढपइन्नो जाव अंतं काहिति १। तं एवं खलु जंबू ! समणे णं जाव संपत्तेणं कप्पवडिंसियाणं पढमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते त्ति बेमि २ ॥ सूत्रं ५९ ॥ इति प्रथमध्ययनम् ॥ २–१ ॥

जइ णं भंते ! समणेणं भगवया जाव संपत्तेणं कप्पवडिंसियाणं पढमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते, दोच्चस्स णं भंते ! अज्झयणस्स के अट्ठे पराणत्ते ? एवं खलु जंबू तेणं कालेणं २ चंपा नाम नगरी होत्था, पुन्नभद्दे चेइए, कूणिए राया, पउमावई देवी १। तत्थ णं चंपाए नयरीए सेणियस्स रन्नो भज्जा कोणियस्स रन्नो चुल्लमाउया सुकाली नामं देवी

होत्था २ । तीसे णं सुकालीए पुत्ते सुकाले नामं कुमारे ३ । तस्स णं सुकालस्स कुमारस्स महापउमा नामं देवी होत्था, सुकुमाला ४ । तते णं सा महापउमा देवी अन्नदा कयाइं तंसि तारिसगंसि एवं तहेव महापउमे नामं दारते, जाव सिज्झिहिति, नवरं ईसाणे कप्पे उववाओ उक्कोसट्ठिईओ ५ । तं एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया जाव संपत्तेणं कप्पवडिंसियाणं दोच्चस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पराणत्ते त्ति बेमि ६ ॥ सूत्रं ६० ॥ इति द्वितीय मध्ययनम् ॥ २-२ ॥ एवं सेसावि अट्ठ अज्झयणा नेयव्वा १ । मातातो सरिसनामाओ २ । कालादीणं दसराहं पुत्ता आणुपुव्वीए- दोराहं च पंच चत्तारि, तिराहं तिराहं च होंति तिन्नेव । दोराहं च दोरिण वासा, सेणियनत्तूण परियातो ॥ १ ॥ उववातो आणुपुव्वीते, पढमो सोहम्मे, बितितो ईसाणे, तितितो सणंकुमारे, चउत्थो माहिंदे, पंचमओ बंभलोए, छट्ठो लंतए सत्तमओ महासुक्के, अट्ठमओ सहस्सारे, नवमओ पाणते, दसमओ अच्चुए । सव्वत्थ उक्कोसठिई भाणियव्वा, महाविदेहे सिद्धे ३ ॥ सूत्रं ६१ ॥ १० ॥ कप्पवडिंसियाओ समत्ताओ । बितितो वग्गो दस अज्झयणा ॥

॥ बीओ वग्गो समत्तो ॥ २ ॥

॥ अथ पुष्पिकानामकस्तृतीयो वर्गः ॥

जति णं भंते ! समणेणं भगवया जाव संपत्तेणं उवंगाणं दोच्चस्स कप्पवडिंसियाणं अयमट्ठे पन्नत्ते, तच्चस्स णं भंते वग्गस्स उवंगाणं पुप्फियाणं के अट्ठे पराणत्ते ? एवं खलु जंबू ! समणेणं जाव संपत्तेणं उवंगाणं तच्चस्स वग्गस्स पुप्फियाणं दस अज्झयणा पन्नत्ता, तंजहा—"चंदे १ सूरे २ सुक्के ३ बहुपुत्तिय ४ पुन्नमाणिभद्दे ५-६ य । दत्ते ७ सिवे ८ वलेया ९ अणाढिए १० चेव बोधव्वे ॥ १ ॥" ॥ सूत्रं ६२ ॥ जइ णं भंते समणेणं जाव संपत्तेणं पुप्फियाणं दस अज्झयणा पन्नत्ता, पढमस्स णं भंते ! अज्झ-

यणस्स पुप्फियाणं समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पन्नत्ते ? एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं २ रायगिहे नामं नगरे गुणसिलए चेइए, सेणिए राया, तेणं कालेणं २ सामी समोसढे, परिसा निग्गया १ । तेणं कालेणं २ चंदे जोइसिंदे जोइसराया चंदवडिंसए विमाणे सभाए सुहम्माए चंदंसि सीहासणंसि चउहिं सामाणियसाहस्सीहि जाव विहरति २ । इमं च णं केवलकप्पं जंबुद्दीवे दीवं विउलेणं ओहिणा आभोएमाणे २ पासति, पासित्ता समणं भगवं महावीरं जहा सूरियाभे आभिओगं देवं सद्दावित्ता जाव सुरिंदाभिगमणजोगं करेत्ता तमाणत्तियं पच्चप्पिणंति ३ । सूसरा घंटा, जाव विउव्वणा, नवरं (जाणविमाणं) जोयणसहस्सविच्छिन्नं अद्धतेवट्ठि-जोयणसमूसियं महिंदज्झतो पणुवीसं जोयणमूसितो सेसं जहा सूरियाभस्स जाव आगतो नट्टविही तहेव पडिगतो ४ ॥ सूत्रं ६३ ॥ भंते त्ति भगवं गोयमे समणं भगवं भंते पुच्छा कूडागारसालासरीरं अणुपविट्ठा पुव्वभवो, एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं २ सावत्थी नाम नयरी होत्था, कोट्ठए चेइए, तत्थ णं सावत्थीए नयरीए अंगती नामं गाहावती होत्था, अड्ढे जाव अपरिभूते १ । तते णं से अंगती गाहावती सावत्थीए नयरीए बहूणं नगरनिगम-सेट्ठिसत्थ-वाहाणं जहा आणंदो २ ॥ सूत्रं ६४ ॥ तेणं कालेणं २ पासे णं अरहा पुरिसादाणीए आदिकरे जहा महावीरो नवुस्सेहे सोलसेहिं समणसाहस्सीहिं अट्ठतीसा जाव कोट्ठते समोसढे, परिसा निग्गया १ । तते णं से अंगती गाहावती इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे हट्ठे जहा कत्तिओ सेट्ठी तहा निग्गच्छति जाव पज्जुवासति, धम्मं सोच्चा निसम्म जं नवरं देवाणुप्पिया ! जेट्ठपुत्तं कुडुंबे ठावेमि २ । तते णं अहं देवाणुप्पियाणं जाव पव्वयामि, जहा गंगदत्तो तहा पव्वतिते जाव गुत्त-बंभयारी ३ ॥ सूत्रं ६५ ॥ तते णं से अंगती अणगारे पासस्स अरहतो तहारूवाणं थेराणं अंतिए सामाइयमाइयाइं एकारस अंगाइं अहिज्जति २

बहूहिं चउत्थ जाव भावेमाणे बहूइं वासाइं सामन्नपरियागं पाउणति २ अद्धमासियाए संलेहणाए तीसं भत्ताइं अणसणाए छेदित्ता विराहियसामन्ने कालमासे कालं किच्चा चंदवडिंसए विमाणे उववाते सभाते देवसयणिज्जंसि देवदूसंतरिए चंदे जोइसिंदत्ताए उववन्ने १। तते णं से चंदे जोइसिंदे जोइसिराया अहुणोववन्ने समाणे पंचविहाए पज्जत्तीए पज्जत्तीभावं गच्छइ, तंजहा–आहारपज्जत्तीए, सरीरपज्जत्तीए, इंदियपज्जत्तीए, सासोसासपज्जत्तीए भासा(मण)पज्जत्तीए २ ॥ सूत्रं ६६ ॥ चंदस्स णं भंते ! जोइसिंदस्स जोइसरन्नो केवइयं कालं ठिती पन्नत्ता ? गोयमा ! पलिओवमं वाससय-सहस्समब्भहियं १। एवं खलु गोयमा ! चंदस्स जाव जोतिसरन्नो सा दिव्वा देविड्ढी २। चंदे णं भंते ! जोइसिंदे जोइसिराया ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं चइत्ता कहिं गच्छिहिति २ ? गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्जिहिति ३। एवं खलु जंबू समणेणं निक्खेवओ ४॥ सूत्रं ६७ ॥ १ ॥

जइ णं भंते ! समणेणं भगवया जाव पुप्फियाणं पढमस्स अज्झय-णस्स जाव अयमट्ठे पन्नते, दोच्चस्स णं भंते ! अज्झयणस्स पुप्फियाणं समणेणं भगवता जाव संपत्तेणं के अट्ठे पन्नत्ते ? एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं २ रायगिहे नामं, गुणसिलए चेइए, सेणिए राया, समोसरणं, जहा चंदो तहा सूरोऽवि आगओ जाव नट्टविहिं उवदंसित्ता पडिगतो १। पुव्वभवपुच्छा, सावत्थी नगरी, सुपतिट्ठे नामं गाहावई होत्था, अड्ढे, जहेव अंगती जाव विहरति, पासो समोसढो, जहा अंगती तहेव पव्वइए २। तहेव विराहियसामन्ने जाव महाविदेहे वासे सिज्झिहिति जाव अंतं काहिति, खलु जंबू ! समणेणं निक्खेवओ ३॥ सूत्रं ६८ ॥ २ ॥

जइ णं भंते ! समणेणं भगवता जाव संपत्तेणं उक्खेवतो भाणियव्वो, रायगिहे नगरे, गुणसिलए चेइए, सेणिए राया, सामी समोसढे, परिसा निग्गया १। तेणं कालेणं २ सुक्के महग्गहे सुक्कवडिंसए विमाणे सुक्कंसि

सीहासणंसि चउहिं सामाणियसाहस्सीहिं जहेव चंदो तहेव आगओ, नट्टविहिं उवदंसित्ता पडिगतो, भंते त्ति कूडागारसाला २ । पुव्वभवपुच्छा एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं २ वाणारसी नामं नयरी होत्था ३ । तत्थ णं वाणारसीए नयरीए सोमिले नामं माहणे परिवसति, अड्ढे जाव अपरिभूते रिउव्वेय जाव सुपरिनिट्ठिते ४ । पासे अरहा पुरिसादाणीए समोसढे परिसा पज्जुवासति ५ । तए णं तस्स सोमिलस्स माहणस्स इमीसे कहाए लद्धट्ठस्स समाणस्स इमे एतारूवे अज्झत्थिए—एवं पासे अरहा पुरिसादाणीए पुव्वाणुपुव्विं जाव अंबसालवणे विहरति ६ । तं गच्छामि णं पासस्स अरहतो अंतिए पाउब्भवामि ७ । इमाइं च णं एयारूवाइं अट्ठाइं हेऊइं जहा पण्णत्तीए ८ । सोमिलो निग्गतो खंडियविहूणो जाव एवं वयासि—जत्ता ते भंते ! जवणिज्जं च ते ! पुच्छा सरिसवया मासा कुलत्था एगे भवं जाव संबुद्धे सावगधम्मं पडिवज्जित्ता पडिगते ९ ॥ सू० ६९ ॥ तते णं पासे णं अरहा अणया कदायि वाणारसीओ नगरीओ अंबसाल-वणातो चेइयाओ पडिनिक्खमति २ बहिया जणवयविहारं विहरति १ । तते णं से सोमिले माहणे अणदा कदायि असाहुदंसणेण य अपज्जुवासणताए य मिच्छत्तपज्जवेहिं परिवड्ढमाणेहिं २ सम्मत्तपज्जवेहि परिहायमाणेहिं मिच्छत्तं च पडिवन्ने २ ॥ सू० ७० ॥ तते णं तस्स सोमिलस्स माहणस्स अणदा कदायि पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि कुडुंबजागरियं जागरमाणस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था—एवं खलु अहं वाणारसीए नयरीए सोमिले नामं माहणे अच्चंतमाहणकुलप्पसूए १ । तते णं मए वयाइं चिण्णाइं वेदा य अहीया दारा आहूया पुत्ता जणिता इड्ढीओ संमा-णीओ पसुवधा कया जन्ना जेट्ठा दक्खिणा दिन्ना अतिही पूजिता अग्गीहूया जूया निक्खित्ता, तं सेयं खलु ममं इदाणिं कल्लं जाव जलंते वाणारसीए नयरीए बहिया बहवे अंबारामा रोवावित्तए, एवं माउलिंगा बिला कविट्ठा

चिंचा पुप्फारामा रोवाविस्तए, एवं संपहेति संपेहित्ता कल्लं जाव जलंते वाणारसीए नयरीए बहिया अंबारामे य जाव पुप्फारामे य रोवावेति २। तते णं बहवे अंबारामा य जाव पुप्फारामा य अणुपुव्वेणं सारक्खिज्जमाणा संगोविज्जमाणा संवड्डिज्जमाणा आरामा जाता किराहा किराहाभासा जाव रम्मा महामेहनिकुरंबभूता पत्तिया पुप्फिया फलिया हरियगरेरिज्जमाणासिरिया अतीव २ उवसोभेमाणा २ चिट्ठंति ३ ॥ सू० ७१ ॥ तते णं तस्स सोमिलस्स माहणस्स अराणदा कदाथि पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि कुटुंवजागरियं जागरमाणस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था–एवं खलु अहं वाणारसीए णयरीए सोमिले नामं माहणे अच्चंतमाहणकुलप्पसूते, तते णं मए वयाइं चिराणाइं जाव जूवा णिक्खित्ता, तते णं मए वाणारसीए नयरीए बहिया वहवे अंबारामा जाव पुप्फारामा य रोवाविया, तं सेयं खलु ममं इदाणिं कल्लं जाव जलंते सुबहुं लोहकडाहकडुच्छुयं तंबियं तावसभंडं घडावित्ता विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं मित्तनाइनियगसंबंधि परियणं पि य आमंतित्ता तं मित्तनाइनियगसंबंधिपरियणं पि य विउलेणं असण जाव सम्माणित्ता तस्सेव मित्त जाव जेट्ठपुत्तं कुडुंबे ठवेत्ता तं मित्तनाइ जाव आपुच्छित्ता सुबहुं लोहकडाहकडुच्छुयं तंबियतावसभंडगं गहाय जे इमे गंगाकूला वाणपत्था तावसा भवंति, तंजहा–होत्तिया पोत्तिया कोत्तिया जंनती सड्ढती घालती हुंबउट्ठा दंतुक्खलिया उम्मज्जगा संमज्जगा निमज्जगा संपक्खालगा दक्खिणकूला उत्तरकूला संखधमा कूलधमा मियलुद्धया हत्थितावमा उद्दंडा दिसापोक्खिणो वक्कवासिणो बिलवासिणो जलवासिणो रुक्खमूलिया अंबुभक्खिणो वायुभक्खिणो सेवालभक्खिणो मूलाहारा कंदाहारा तयाहरा पत्ताहारा पुप्फाहारा फलाहारा बीयाहारा परिसडियकंदमूलतयपत्तपुप्फफलाहारा जलाभिसेयकढिणगायभूता आयावणाहिं पंचग्गीतावेहिं इंगालसोल्लियं कंदुसोल्लियं पिव अप्पाणं करेमाणा

विहरंति १। तत्थ णं जे ते दिसापोक्खिया तावसा तेसिं अंतिए दिसा-पोक्खियत्ताए पव्वइत्तए पव्वयितेवि य णं समाणे इमं एयारूवं अभिग्गहं अभिगिन्हिस्सामि—कप्पति मे जावज्जीवाए छट्ठं छट्ठेणं अणिक्खित्तेणं दिसाचक्कवालेणं तवोकम्मेणं उड्ढं बाहातो पगिज्झिय २ सूराभिमुहस्स आतावणभूमीए आतवेमाणस्स विहरित्तए त्ति कट्टु एवं संपेहेइ २ कल्लं जाव जलंते सुबहुं लोह जाव दिसापोक्खियतावसत्ताए पव्वइए २ वि य णं समाणे इमं एयारूवं अभिग्गहं जाव अभिगिन्हित्ता पढमं छट्ठक्खमणं उवसंपज्जित्ता णं विहरति २ ॥ सू० ७२ ॥ तते णं सोमिले माहणे रिसी पढमछट्ठक्खमण-पारणंसि आयावणभूमीए पच्चोरुहति २ वागलवत्थनियत्थे जेणेव सए उडए तेणेव उवागच्छति २ कि(क)ढिणसंकाइयं गेण्हति २ पुरच्छिमं दिसिं पुक्खेति, पुरच्छिमाए दिसाए सोमे महाराया पत्थाणे पत्थियं अभिरक्खउ सोमिलमाहणरिसिं अभिरक्खित्ता २ जाणि य तत्थ कंदाणि य मूलाणि य तयाणि य पत्ताणि य पुप्फाणि य फलाणि य बीयाणि य हरियाणि ताणि अणुजाणउ त्ति कट्टु पुरच्छिमं दिसं पसरति २ जाणि य तत्थ कंदाणि य जाव हरियाणि य ताइं गेण्हति किढिणसंकाइयं भरेति २ दब्भे य कुसे य पत्तामोडं च समिहा कट्ठाणि य गेण्हति २ जेणेव सए उडए तेणेव उवागच्छति २ किढिणसंकाइयगं ठवेति २ वेदिं वड्ढेति २ उवलेवणसंमज्जणं करेति २ दब्भकलसहत्थगते जेणेव गंगा महानदी तेणेव उवागच्छति २ गंगं महानदीं ओगाहति २ जलमज्जणं करेति २ जलकिड्डं करेति २ जलाभिसेयं करेति २ आयंते चोक्खे परमसुइभूए देवपिउकयकज्जे दब्भकलसहत्थगते गंगातो महानदीओ पच्चुत्तरति जेणेव सते उडए तेणेव उवागच्छति २ दब्भे य कुसे य वालुयाए य वेदिं रएति २ सरयं करेति २ अरणिं करेति २ सरएणं अरणिं महेति २ अग्गिं पाडेति २ अग्गिं संधु-क्केति २ समिहा कट्ठाणि पक्खिवति २ अग्गिं उज्जालेति २ अग्गिस्स

दाहिणे पासे सत्तंगाइं समादहे, तंजहा—"सकथं वकलं ठाणं सिज्भं भंडं कमंडलुं । दंडदारुं तहप्पाणं अह ताइं समादहे ॥" मधुणाय घएण य तंदुलेहि य अग्गि हुणइ, चरुं साधेति २ बलि वइस्सदेवं करेति २ अतिहिपूयं करेति २ तओ पच्छा अप्पणा आहारं आहारेति ॥ सू० ७३ ॥ तते णं सोमिले माहणरिसी दोच्चं छट्ठक्खमणपारणगंसि तं चेव सव्वं भाणियव्वं जाव आहारं आहरेति, नवरं इमं नाणत्तं—दाहिणाए दिसाए जमे महाराया पत्थाणे पत्थियं अभिरक्खउ सोमिलं माहणरिसिं जाणि य तत्थ कंदाणि य जाव अणुजाणाउ त्ति कट्टु दाहिणं दिसिं पसरति १ । एवं पच्चत्थिमे णं वरुणे महाराया जाव पच्चत्थिमं दिसिं पसरति २ । उत्तरे णं वेसमणे महाराया जाव उत्तरं दिसिं पसरति ३ । पुव्वदिसागमेणं चत्तारि वि दिसाओ भाणियव्वाओ जाव आहारं आहारेति ४ ॥ सू० ७४ ॥ तते णं तस्स सोमिलमाहणरिसिस्स अणणया कयायि पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि अणिच्च जागरियं जागरमाणस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पजित्था—एवं खलु अहं वाणारसीए नगरीए सोमिले नामं माहणरिसी अच्चंतमाहणकुलप्पसूए, तते णं मए वयाइं चिणणाइं जाव जूवा निक्खित्ता १ । तते णं मम वाणारसीए जाव पुप्फारामा य जाव रोविता २ । तते णं मए सुबहुलोह जाव घडावित्ता जाव जेट्ठपुत्तं ठावित्ता जाव जेट्ठपुत्तं आपुच्छित्ता सुबहुलोह जाव गहाय मुंडे जाव पव्वइए वि य णं समाणे छट्ठंछट्ठेणं जाव विहरति ३ । तं सेयं खलु ममं इयाणिं कल्लं पादु जाव जलंते बहवे तावसे दिट्ठा भट्ठे य पुव्वसंगतिए य परियायसंगतिए य आपुच्छित्ता आसमसंसियाणि य बहूइं सत्तसयाइं अणुमाणइत्ता वागलवत्थनियत्थस्स कढिणसंकाइयगहितसभंडोवकरणस्स कट्ठमुद्दाए मुहं बंधित्ता उत्तरदिसाए उत्तराभिमुहस्स महपत्थाणं पत्थावेइत्तए एवं संपेहेति २ कल्लं जाव जलंते बहवे तावसे य दिट्ठा भट्ठे य पुव्वसंगतिते य तं चेव जाव कट्ठमुद्दाए मुहं बंधति बंधित्ता अयमेतारूवं अभि-

ग्गहं अभिगिरहति जत्थेव णं अम्हं जलंसि वा एवं थलंसि वा दुग्गंसि वा निन्नंसि वा पव्वतंसि वा विसमंसि वा गड्डाए वा दरीए वा पक्खलिज्ज वा पवडिज्ज वा नो खलु मे कप्पति पच्चुट्ठित्तए त्ति कट्टु अयमेयारूवं अभिग्गहं अभिगिरहति, उत्तराए दिसाए उत्तराभिमुहपत्थाणं (महपत्थाणं) पत्थिए से सोमिले माहणरिसी पुव्वावररहकालसमयंसि जेणेव असोगवरपायवे तेणेव उवागते, असोगवरपायवस्स अहे कढिणसंकाइयं ठवेति २ वेदिं वड्ढेइ २ उवलेवणसंमज्जणं करेति २ दब्भकलसहत्थगते जेणेव गंगा महानई जहा सिवो जाव गंगातो महानईओ पच्चुत्तरइ, जेणेव असोगवरपायवे तेणेव उवागच्छति २ दब्भेहि य कुसेहि य वालुयाए वेदिं रतेति, रतित्ता सरगं करेति २ जाव बलिं वइस्सदेवं करेति २ कट्ठमुद्दाए मुहं बंधति तुसिणीए संचिट्ठति ४ ॥ सू० ७५ ॥ तते णं तस्स सोमिलमाहणरिसिस्स पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि एगे देवे अंतियं पाउब्भूते १। तते णं से देवे सोमिलं माहणं एवं वयासि—हं भो सोमिलमाहणा! पव्वइया दुपव्वइतं ते २। तते णं से सोमिले तस्स देवस्स दोच्चं पि तच्चं पि एयमट्ठं नो आढाति नो परिजाणइ जाव तुसिणीए संचिट्ठति ३। तते णं से देवे सोमिलेणं माहणरिसिणा अणाढाइज्जमाणे जामेव दिसिं पाउब्भूते तामेव जाव पडिगते ४ ॥ सू० ७६ ॥ तते णं से सोमिले कल्लं जाव जलंते वागलवत्थनियत्थे कढिणसंकाइयं गहियग्गिहोत्तभंडोवकरणे कट्ठमुद्दाए मुहं बंधति २ उत्तराभिमुहे संपत्थिते १। तते णं से सोमिले बितियदिवसम्मि पुव्वावररहकालसमयंसि जेणेव सत्तिवन्नो अहे कढिणसंकाइयं ठवेति २ वेतिं वड्ढेति २ जहा असोगवरपायवे जाव अग्गिं हुणति, कट्ठमुद्दाए मुहं बंधति, तुसिणीए संचिट्ठति २। तते णं तस्स सोमिलस्स पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि एगे देवे अंतियं पाउब्भूए ३। तते णं से देवे अंतलिक्खपडिवन्ने जहा असोगवरपायवे जाव पडिगते ४ ॥ सू० ७७ ॥ तते णं से सोमिले कल्लं

जाव जलंते वागलवत्थनियत्थे कढिणसंकाइयं गेराहति २ कट्ठमुद्दाए मुहं बंधति २ उत्तरदिसाए उत्तराभिमुहे संपत्थिते १। तते णं से सोमिले ततियदिवसम्मि पुव्वावरराहकालसमयंसि जेणेव असोगवरपायवे तेणेव उवागच्छति २ असोगवरपायवस्स अहे कढिणसंकाइयं ठवेति, वेति वड्ढेति जाव गंगं महानइं पच्चुत्तरति २ जेणेव असोगवरपायवे तेणेव उवागच्छति २ वेतिं रएति कट्ठमुद्दाए मुहं बंधति २ तुसिणीए संचिट्ठति २। तते णं तस्स सोमिलस्स पुव्वरत्तावरत्तकाले एगे देवे अंतियं पाउब्भूए तं चेव भणति जाव पडिगते ३ ॥ सू० ७८ ॥ तते णं से सोमिले जाव जलंते वागलवत्थनियत्थे कढिणसंकाइयं जाव कट्ठमुद्दाए मुहं बंधति २ उत्तराए दिसाए उत्तराए संपत्थिए १। तते णं से सोमिले चउत्थदिवसपुव्वावरराहकालसमयंसि जेणेव वडपायवे तेणेव उवागते वडपायवस्स अहे किढिणं संठवेति २ वेइं वड्ढेति उवलेवणसंमज्जणं करेति जाव कट्ठमुद्दाए मुहं बंधति, तुसिणीए संचिट्ठति २। तते णं तस्स सोमिलस्स पुव्वरत्तावरत्तकाले एगे देवे अंतियं पाउब्भूए तं चेव भणति जाव पडिगते ३ ॥ सू० ७९ ॥ तते णं से सोमिले जाव जलंते वागलवत्थनियत्थे किढिणसंकायियं जाव कट्ठमुद्दाए मुहं बंधति, उत्तराए उत्तराभिमुहे संपत्थिते १। तते णं से सोमिले पंचमदिवसम्मि पुव्वावरराहकालसमयंसि जेणेव उंबरपायवे उंबरपायवस्स अहे किढिणसंकाइयं ठवेति, वेइं वड्ढेति जाव कट्ठमुद्दाए मुहं बंधति जाव तुसिणीए संचिट्ठति २। तते णं तस्स सोमिलमाहणस्स पुव्वरत्तावरत्तकाले एगे देवे जाव एव वयासि—हं भो सोमिला! पव्वइया दुप्पव्वइयं ते पढमं भणति तहेव तुसिणीए संचिट्ठति ३। देवो दोच्चं पि तच्चं पि वदति सोमिला! पव्वइया दुप्पव्वइयं ते ४। तए णं से सोमिले तेणं देवेणं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्ते समाणे तं देवं एवं वयासि—कहराणं देवाणुप्पिया! मम दुप्पव्वइतं?। तते णं से देवे सोमिलं माहणं एवं वयासि—एवं खलु देवाणुप्पिया! तुमं पासस्स अरहओ पुरिसादा-

णियस्स अंतियं पंचाणुव्वए सत्त सिक्खावए दुवालसविहे सावगधम्मे पडिवन्ने. तए णं तव अणणदा कदाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंत्ति कुडुंबजागरियं जाव पुव्वचिंतितं देवो उच्चारेति जाव जेणेव असोगवरपायवे तेणेव उवागच्छति २ कढिणसंकाइयं जाव तुसिणीए संचिट्ठसि ५। ततेणं पुव्वरत्तावरत्तकाले तव अंतियं पाउब्भवामि हं भो सोमिला! पव्वइया दुप्पव्वतियं ते तह चेव देवो नियवयणं भणाति जाव पंचमदिवसम्मि पुव्वावररहकालसमयंसि जेणेव उंबरवरपायवे तेणेव उवागते किढिणसंकाइयं ठवेति वेदिं वड्ढति उवलेवणं संमज्जणं करेति २ कट्ठमुद्दाए मुहं बंधति, बंधित्ता तुसणीए संचिट्ठसि, तं एवं खलु देवाणुप्पिया! तव दुप्पव्वयितं ६। तते णं से सोमिले तं देवं वयासि–कहणं देवाणुप्पिया! मम सुप्पव्वइतं? तते णं से देवे सोमिलं एवं वयासि–जइ णं तुमं देवाणुप्पिया! इयाणि पुव्वपडिवणाइं पंच अणुव्वयाइं सयमेव उवसंपज्जित्ता णं विहरसि, तो णं तुज्झ इदाणिं सुपव्वइयं भविज्जा ७। तते णं से देवे सोमिलं वंदति नमंसति २ जामेव दिसिं पाउब्भूते जाव पडिगते ८ ॥ सू० ८० ॥ तते णं सोमिले माहणरिसी तेणं देवेणं एवं वुत्ते समाणे पुव्वपडिवन्नाइं पंच अणुव्वयाइं सयमेव उवसंपज्जित्ता णं विहरति १। तते णं से सोमिले बहूहिं चउत्थछट्ठट्ठम जाव मासद्धमासखमणेहिं विचित्तेहिं तवोवहाणेहिं अप्पाणं भावेमाणे बहूइं वासाइं समणोवासगपरियागं पाउणति २ अद्धमासियाए संलेहणाए अत्ताणं भूसेति २ तीसं भत्ताइं अणसणाए छेदेति २ त्ता तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कंते विराहियसम्मत्ते कालमासे कालं किच्चा सुक्कवडिंसए विमाणे उववातसभाए देवसयणिज्जंसि जाव तोगाहणाए सुक्कमहग्गहत्ताए उववन्ने २। तते णं से सुक्के महग्गहे अहुणोववन्ने समाणे जाव भासामणपज्जत्तीए ३ ॥ सू० ८१ ॥ एवं खलु गोयमा! सुक्केणं महग्गहेणं सा दिव्वा जाव अभिसमन्नागए एगं पलिओवमठिती १। सुक्के णं भंते! महग्गहे ततो देवलोगाओ आउक्खए कहिं गच्छिहिति?

गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिति २। एवं खलु जंबू ! समणेणं निक्खेवओ ३ ॥ सू० ८२ ॥ ३ ॥ जइ णं भंते उक्खेवओ एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं २ रायगिहे नामं नगरे, गुणसिलए चेइए, सेणिए राया, सामी समोसढे, परिसा निग्गया ॥ सू० ८३ ॥ तेण कालेणं २ बहुपुत्तिया देवी सोहम्मे कप्पे बहुपुत्तिए विमाणे सभाए सुहम्माए बहुपुत्तियंसि सीहासणंसि चउहिं सामाणियसाहस्सीहि चउहि महत्तरियाहिं जहा सूरियाभे भुंजमाणी विहरइ, इमं च णं केवलकप्पं जंबुद्दीवं दीवं विउलेणं ओहिणा आभोएमाणी २ पासति २ समणं भगवं महावीरं जहा सूरियाभो जाव णमंसित्ता सीहासणवरंसि पुरच्छाभिमुहा सन्निसन्ना १ । आभियोगा जहा सूरियाभस्स, सूसरा घंटा, आभिओगियं देवं सद्दावेइ, जाणविमाणं जोयणसहस्सवि-च्छिण्णं, जाणविमाणवण्णओ, जाव उत्तरिल्लेणं निज्जाणमग्गेणं जोयण-साहस्सिएहिं विग्गहेहिं आगता जहा सूरियाभे, धम्मकहा सम्मत्ता २ । तते णं सा बहुपुत्तिया देवी दाहिणं भुयं पसारेइ देवकुमाराणं अट्ठसयं, देवकुमारि-याण य वामाओ भुयाओ १०८, तयाणंतरं च णं बहवे दारगा य दारि-याओ य डिंभिए य डिंभियाओ य विउव्वइ, नट्टविहिं जहा सूरियाभो उवदंसित्ता पडिगते ३ ॥ सू० ८४ ॥ भंते त्ति भयवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसति कूडागारसाला बहुपुत्तियाए णं भंते ! देवीए सा दिव्वा देविड्ढी पुच्छा जाव अभिसमण्णागता १ । एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं २ वाणारसी नामं नगरी, अंबसालवणे चेइए २ । तत्थ णं वाणारसीए नगरीए भद्दे नामं सत्थवाहे होत्था, अड्ढे जाव अपरिभूते ३ । तस्स णं भद्दस्स य सुभद्दा नामं भारिया सुकुमाला वंझा अवियाउरी जाणुकोप्परमाता यावि होत्था ४ ॥ सू० ८५ ॥ तते णं तीसे सुभद्दाए सत्थवाहीए अन्नया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकाले कुडुंबजागरियं इमेयारूवे जाव संकप्पे समुप्पज्जित्था—एवं खलु अहं भद्देणं सत्थवाहेणं सद्धिं विउलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणी विहरामि,

नो चेव णं अहं दारगं वा दारियं वा पयामि, तं धन्नाओ णं ताओ अम्मगाओ जाव सुलद्धे णं तासिं अम्मगाणं मणुयजम्मजीवितफले, जासिं मन्ने नियकुच्छिसंभूयगाइं थणदुद्धलुद्धगाइं महुरसमुल्लावगाणि मम्मणप्पजंपिताणि थणमूलकक्खदेसभागं अभिसरमाणगाणि पराहयंति, पुणो य कोमल-कमलोवमेहिं हत्थेहिं गिरिहऊणं उच्छंगनिवेसियाणि, देंति समुल्लावए सुमहुरे पुणो पुणो मंजुलप्पभणिए अहं णं अधराणा अपुराणा अकयपुराणा एत्तो एगमवि न पत्ता ओहयमणसंकप्पा जाव झियाइ ॥ सू० ८६ ॥ तेणं कालेणं २ सुव्वताओ णं अज्जातो इरियासमितातो भासासमितातो एसणासमितातो आयाणभंडमत्तनिक्खेवणासमितातो उच्चारपासवणखेलजल्लसिंघाणपारिट्ठावणासमियातो मणगुत्तीओ वयगुत्तीओ कायगुत्तीओ गुत्तिंदियाओ गुत्तबंभयारिणीओ बहुस्सुयाओ बहुपरियारातो पुव्वाणुपुव्विं चरमाणीओ गामाणुगामं दूइज्जमाणीओ जेणेव वाणारसी नगरी तेणेव उवागयातो, उवागच्छित्ता अहापडिरूवं उग्गहं २ संजमेणं तवसा विहरति १। तते णं तासिं सुव्वयाणं अज्जाणं एगे संचाडए वाणारसी नगरीए उच्चनीयमज्झिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए अडमाणे भद्दस्स सत्थवाहस्स गिहं अणुपविट्ठे २। तते णं सुभद्दा सत्थवाहीतातो अज्जातो एज्जमाणीओ पासति २ हट्ठतुट्ठा खिप्पामेव आसणाओ अब्भुट्ठेति २ सत्तट्ठपयाइं अणुगच्छइ २ वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता विउलेणं असणपाणखाइमसाइमेणं पडिलाभित्ता एवं वयासि—एवं खलु अहं अज्जाओ ! भद्देणं सत्थवाहेणं सद्धिं विउलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणी विहरामि, नो चेव णं अहं दारगं वा दारियं वा पयामि, तं धन्नाओ णं ताओ अम्मगाओ जाव एत्तो एगमवि न पत्ता, तं तुब्भे अज्जाओ ! बहुणायातो बहुपढियातो बहूणि गामागरनगर जाव सण्णिवेसाइं आहिंडह, बहूणं राईसरतलवर जाव सत्थवाहप्पभितीणं गिहाइं अणुपविसह, अत्थि से केति कहिं चि विज्जापओए वा मंतप्पओए वा वमणं वा

विरेयणं वा बत्थिकम्मं वा ओसहे वा भेसज्जे वा उवलद्धे जेणं अहं दारगं वा दारियं वा पयाएज्जा ? तते णं ताओ अज्जाओ सुभद्दं सत्थवाहिं एवं वयासी–अम्हे णं देवाणुप्पिए ! समणीओ निग्गंथीओ इरियासमियाओ जाव गुत्तबंभचारीओ, नो खलु कप्पति अम्हं एयमट्ठं कराणेहि विणिसामित्तए, किमंग पुण उद्दिसित्तए वा समायरित्तए वा अम्हे णं देवाणुप्पिए ! णवरं तव विचित्तं केवलिपरणत्तं धम्मं परिकहेमो ३ । तते णं सुभद्दा सत्थवाही तासिं अज्जाणं अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठा तातो अज्जातो तिखुत्तो वंदति नमंसति एवं वदासी–सद्दहामि णं अज्जाओ ! निग्गंथं पावयणं पत्तियामि रोएमि णं अज्जाओ निग्गंथीओ ! एवमेयं तहमेयं अवितहमेयं जाव सावगधम्मं पडिवज्जित्तए ४ । अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं करेह ५ । तते णं सा सुभद्दा सत्थवाही तासिं अज्जाणं अंतिए जाव पडिवज्जति २ तातो अज्जातो वंदइ नमंसइ पडिविसज्जति ६ । तते णं सुभद्दा सत्थवाही समणोवासिया जाया जाव विहरति ७ ॥ सू० ८७ ॥ तते णं तीसे सुभद्दाए समणोवासियाए अरणदा कदायि पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि कुटुंबजागरियं जाव अयमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था–एवं खलु अहं भद्देणं सत्थवाहेणं सद्धिं विउलाइं भोगभोगाइं जाव विहरामि, नो चेव णं अहं दारगं वा २, तं सेयं खलु ममं कल्लं पाउप्पभाए जाव जलंते भद्दस्स आपुच्छित्ता सुव्वयाणं अज्जाणं अंतिए अज्जा भवित्ता अगाराओ जाव पव्वइत्तए, एवं संपेहेति २ त्ता कल्ले जेणेव भद्दे सत्थवाहे तेणेव उवागते, करतल जाव एवं वयासी–एवं खलु अहं देवाणुप्पिया ! तुब्भेहि सद्धिं बहूइं विउलाइं भोग जाव विहरामि, नो चेव णं दारगं वा दारियं वा पयामि, तं इच्छामि णं देवाणुप्पिया ! तुब्भेहि अणुराणाया समाणी सुव्वयाणं अज्जाणं जाव पव्वइत्तए १ । तते णं से भद्दे सत्थवाहे सुभद्दं सत्थवाहीं एवं वदासी–मा णं तुमं देवाणुप्पिया ! इदाणिं मुंडा जाव पव्वयाहि, भुंजाहि ताव देवा-

णुप्पिए ! मए सद्धिं विउलाइं भोगभोगाइं ततो पच्छा भुत्तभोई सुव्वयाणं अज्जाणं जाव पव्वयाहि २। तते णं सुभद्दा सत्थवाही भद्दस्स सत्थवाहस्स एयमट्ठं नो आढाति नो परिजाणाति दुच्चं पि तच्चं पि भद्दा सत्थवाहं एवं वदासी—इच्छामि णं देवाणुप्पिया ! तुब्भेहिं अब्भणुरणाया समाणी जाव पव्वइत्तए ३। तते णं से भद्दे सत्थवाहे जाहे नो संचाएति बहूहिं आघवणाहि य एवं पन्नवणाहि य सरणवणाहि य विरणवणाहि य आघवित्तए वा जाव विराणवित्तए वा ताहे अकामते चेव सुभद्दाए निक्खमणं अणुमरिणत्था ४॥ सू० ८८॥ तते णं से भद्दे सत्थवाहे विउलं असणं ४ उवक्खडावेति, मित्तनाति जाव ततो पच्छा भोयणवेलाए जाव मित्तनाति जाव सक्कारेति सम्माणेति, सुभद्दं सत्थवाहीं राहायं जाव पायच्छित्तं सव्वा-लंकारविभूसियं पुरिससहस्सवाहिणिं सीयं दुरुहेति १। ततो सा सुभद्दा सत्थवाही मित्तनाइ जाव संबंधिसंपरिवुडा सव्विड्ढीए जाव रवेणं वाणारसी-नगरीए मज्झं मज्झेणं जेणेव सुव्वयाणं अज्जाणं उवस्सए तेणेव उवागच्छति २ पुरिससहस्सवाहिणिं सीयं ठवेति, सुभद्दं सत्थवाहिं सीयातो पच्चोरुहेति २। तते णं भद्दे सत्थवाहे सुभद्दं सत्थवाहिं पुरतो काउं जेणेव सुव्वया अज्जा तेणेव उवागच्छति २ सुव्वयाओ अज्जाओ वंदति नमंसति २ एवं वदासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! सुभद्दा सत्थवाही ममं भारिया इट्ठा कंता जाव मा णं वातिता पित्तिया सिंभिया सन्निवातिया विविहा रोयातंका फुसंतु, एस णं देवाणुप्पिया ! संसारभउव्विग्गा भीया जम्मणमरणाणं, देवाणु-प्पियाणं अंतिए मुंडा भवित्ता जाव पव्वयाति तं एयं अहं देवाणुप्पियाणं सीसिणिभिक्खं दलयामि, पडिच्छंतु णं देवाणुप्पिया ! सीसिणीभिक्खं ३। अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं करेह ४। तते णं सा सुभद्दा सत्थवाही सुव्वयाहिं अज्जाहिं एवं वुत्ता समाणी हट्ठतुट्ठा जाव सयमेव आभरणमल्ला-लंकारं ओमुयइ २ सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करेति २ जेणेव सुव्वयातो

अज्जाओ तेणेव उवागच्छति २ सुव्वयाओ अज्जाओ तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणेणं वंदइ नमंसइ २ एवं वदासी—आलित्ते णं भंते ! जहा देवाणंदा तहा पव्वइता जाव अज्जा जाया जाव गुत्तबंभयारिणी ५ ॥ सू० ८१ ॥ तते णं सा सुभद्दा अज्जा अन्नदा कदायि बहुजणस्स चेडरूवे संमुच्छित्ता जाव अज्झोववण्णा अब्भंगणं च उव्वट्टणं च फासुयपाणं च अलत्तगं च कंकणाणि य अंजणं च वण्णगं च चुण्णगं च खेल्लगाणि य खज्जल्लगाणि य खीरं च पुप्फाणि य गवेसति, गवेसित्ता बहुजणस्स दारए वा दारिया वा कुमारे य कुमारियाते य डिंभए य डिंभियाओ य अप्पेगतियाओ अब्भंगेति, अप्पेगइ-याओ उव्वट्टेति, एवं अप्पेगइयाओ फासुयपाणएणं ण्हावेति, अप्पेगइयाओ पाए रयति, अप्पेगइयाओ उट्ठे रयति, अप्पेगइयाओ अच्छीणि अंजेति, अप्पेगइयाओ उसुए करेति, अप्पेगइयाओ तिलए करेति अप्पेगइयाओ दिगिदलए करेति अप्पेगइयाओ पंतियाओ करेति अप्पेगइयाओ छिज्जाइं करेति अप्पेगइया वन्नएणं समालभइ अप्पेगइयाओ चुन्नएणं समालभइ अप्पेगइ-याओ खेल्लणगाइं दलयति अप्पेगइयाओ खज्जुल्लगाइं दलयति अप्पेगइयाओ खीरभोयणं भुंजावेति अप्पेगइयाओ पुप्फाइं ओमुयइ अप्पेगइयाओ पादेसु ठवेति अप्पेगइयाओ जंघासु करेइ एवं ऊरूसु उच्छंगे कडीए पिट्ठे उरसि खंधे सीसे अ करतलपुडेणं गहाय हलउलेमाणी २ आगयमाणी २ (अगीयमाणी २) परिहायमाणी २ (परिगीयमाणी २) पुत्तपिवासं च धूयपिवासं च नत्तुयपिवासं च नत्तिपिवासं च पच्चणुब्भवमाणी विहरति ॥ सू० १० ॥ तते णं तातो सुव्वयातो अज्जाओ सुभद्दं अज्जं एवं वयासी—अम्हे णं देवाणुप्पिए ! समणीओ निग्गंथीओ इरियासमियातो जाव गुत्तबंभचारिणीओ नो खलु अम्हं कप्पति जातककम्मं करित्तए, तुमं च णं देवाणुप्पिया ! बहुजणस्स चेडरूवेसु मुच्छिया जाव अज्झोववण्णा अब्भंगणं जाव नत्तिपिवासं वा पच्चणुब्भवमाणी विहरसि, तं णं तुमं देवा-

गुष्पिया एयस्स ठाणस्स आलोएहि जाव पच्छित्तं पडिवज्जाहि १ । तते णं सा सुभद्दा अज्जा सुव्वयाणं अज्जाणं एयमट्ठं नो आढाति नो परिजाणति, अणाढायमाणी अपरिजाणमाणी विहरति २ । तते णं तातो समणीओ निग्गंथीओ सुभद्दं अज्जं हीलेंति निंदंति खिंसंति गरहंति अभिक्खणं २ एयमट्ठं निवारेंति ३ ॥ सू० ११ ॥ तते णं तीसे सुभद्दाए अज्जाए समणीहिं निग्गंथीहि हीलिज्जमाणीए जाव अभिक्खणं २ एयमट्ठं निवारिज्जमाणीए अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था—जया णं अहं अगारवासं वसामि तया णं अहं अप्पवसा, जप्पभिइं च णं अहं मुंडा भवित्ता आगाराओ अणगारियं पव्वइत्ता तप्पभिइं च णं अहं परवसा, पुव्वि च समणीओ निग्गंथीओ आढेंति परिजाणेंति, इयाणि नो आढाइंति नो परिजाणंति, तं सेयं खलु मे कल्लं जाव जलंते सुव्वयाणं अज्जाणं अंतियाओ पडिनिक्खमित्ता पाडियक्कं उवस्सयं उवसंपज्जित्ता णं विहरित्तए, एवं संपेहेति २ कल्लं जाव जलंते सुव्वयाणं अज्जाणं अंतियातो पडिनिक्खमेति २ पाडियक्कं उवस्सयं उवसंपज्जित्ता णं विहरति १ । तते णं सा सुभद्दा अज्जा अज्जाहिं अणोहट्टिया अणिवारिता सच्छंदमती बहुजणस्स चेडरूवेसु मुच्छित्ता जाव अब्भंगणं च जाव नत्तिपिवासं च पच्चणुब्भवमाणी विहरति २ ॥ सू० १२ ॥ तते णं सा सुभद्दा अज्जा पासत्था पासत्थविहारी एवं ओसन्ना ओसन्नविहारा कुसीला कुसीलविहारी संसत्ता संसत्तविहारी अहाच्छंदा अहाच्छंदविहारी बहूइं वासाइं सामन्नपरियागं पाउणति २ अद्धमासियाए संलेहणाए अत्ताणं तीसं भत्ताइं २ अणसणे छेदित्ता २ तस्स ठाणस्स अणालोइयप्पडिक्कंता कालमासे कालं किच्चा सोहम्मे कप्पे बहुपुत्तियाविमाणे उववायसभाए देवसयणिज्जंसि देवदूसंतरिया अंगुलस्स असंखेज्जभागमेत्ताए ओगाहणाए बहुपुत्तियदेवित्ताए उववन्ना १ । तेणं सा बहुपुत्तिया देवी अहुणोववन्नमित्ता समाणी पंचविहाए पज्जत्तीए जाव भासामणपज्जत्तीए २ । एवं खलु गोयमा ! बहुपुत्तियाए

देवीए सा दिव्वा देविड्ढी जाव अभिसमरणागता ३ ॥ सू० १३ ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ बहुपुत्तिया देवी २ ? गोयमा ! बहुपुत्तिया णं देवी णं जाहे जाहे सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो उवत्थाणियणं करेइ ताहे २ बहवे दारए य दारियाए य डिंभए य डिंभियातो य विउव्वइ २ जेणेव सक्के देविंदे देवराया तेणेव उवागच्छति २ सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो दिव्वं देविड्ढिं दिव्वं देवज्जुइं दिव्वं देवाणुभागं उवदंसेति, से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चति बहुपुत्तिया देवी २ ॥ सू० १४ ॥ बहुपुत्तियाणं भंते ! देवीणं केवइयं कालं ठिति पण्णत्ता ? गोयमा ! चत्तारि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥ सू० १५ ॥ बहुपुत्तिया णं भंते ! देवी तातो देवलोगाओ आउक्खएणं ठितिक्खएणं भवक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता कहि गच्छिहिति ? कहिं उववज्जिहिति ? गोयमा ! इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे विज्झगिरिपायमूले विभेलसंनिवेसे माहणकुलंसि दारियत्ताए पच्चायाहिति १ । तते णं तीसे दारियाए अम्मापियरो एक्कारसमे दिवसे वितिक्कंते जाव बारसेहिं दिवसेहिं वितिक्कंतेहिं अयमेयारूवं नामधिज्जं करेंति—होऊणं अम्हं इमीसे दारियाए नामधिज्जं सोमा २ । तते णं सोमा उम्मुक्कबालभावा विण्णतपरिणयमेत्ता जोव्वणगमणुपत्ता रूवेण य जोव्वणेण य लावण्णेण य उक्किट्ठा उक्किट्ठसरीरा जाव भविस्सति ३ ॥ सू० १६ ॥ तते णं तं सोमं दारियं अम्मापियरो उम्मुक्कबालभावं विण्णयपरिणयमित्तं जोव्वणगमणुप्पत्तं पडिकुविएणं सुक्केणं पडिरूवएणं नियगस्स भायणिज्जस्स रट्ठकूडयस्स भारियत्ताए दलयिस्सति १ । सा णं तस्स भारिया भविस्सति इट्ठा कंता जाव भंडकरंडगसमाणा तिल्लकेला इव सुसंगोविआ चेलपेडा इव सुसंपरिहिता रयणकरंगतो विव सुसारक्खिया सुसंगोविता माणंसीयं जाव विविहा रोयातंका फुसंतु २ ॥ सू० १७ ॥ तते णं सा सोमा माहणी रट्ठकूडेणं सद्धिं विउलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणी संवच्छरे २ जुयलगं पयायमाणी

सोलसेहिं संवच्छरेहिं बत्तीसं दारगरूवे पयाति १ । तते णं सा सोमा माहणी तेहिं बहूहिं दारिगेहि य दारियाहि य कुमारएहि य कुमारियाहि य डिंभएहि य डिंभियाहि य अप्पेगइएहि उत्ताणसेज्जएहि य अप्पेगइएहि य थणियाएहि य अप्पेगइएहिं पीहगपाएहिं अप्पेगइएहिं परंगणएहिं अप्पेगइएहिं परक्कममाणेहिं अप्पेगइएहिं पक्खोलणएहिं अप्पेगइएहिं थणं मग्गमाणेहि अप्पेगइएहि खीरं मग्गमाणेहिं अप्पेगइएहिं खिल्लणयं मग्गमाणेहि अप्पेगइएहिं खज्जगं मग्गमाणेहिं अप्पेगइएहिं कूरं मग्गमाणेहि पाणियं मग्गमाणेहि हसमाणेहिं रूसमाणेहिं अक्कोसमाणेहिं अक्कुस्समाणेहि हणमाणेहिं हम्ममाणेहिं विप्पलायमाणेहिं अणुगम्ममाणेहिं रोवमाणेहिं कंदमाणेहि विलवमाणेहि कूवमाणेहिं उक्कूवमाणेहिं निद्दायमाणेहिं पलवमाणेहिं दहमाणेहिं(दवमाणेहि, हममाणेहिं, हदमाणेहिं) वममाणेहिं छेरमाणेहि सुत्त(मुत)माणेहिं मुत्तपुरीसवमियसुलित्तोवलित्ता मइलवसणपुव्वड(दुब्बला) जाव अइसुबीभच्छा परमदुग्गंधा नो संचाएइ रट्ठकूडे णं सद्धिं विउलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणी विहरित्तए २ । तते णं से सोमाए माहणीए अण्णया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि कुडुंबजागरियं जागरमाणीए अयमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था—एवं खलु अहं इमेहिं बहूहिं दारगेहिं य जाव डिंभियाहि य अप्पेगइएहि उत्ताणसेज्जएहि य जाव अप्पेगइएहिं सुत्तमाणेहिं दुज्जाएहिं दुज्जम्मएहि हयविप्पहयभग्गेहिं एगप्पहारपडिएहिं जेणं मुत्तपुरीसवमियसुलित्तोवलित्ता जाव परमदुब्भिगंधा नो संचाएमि रट्ठकूडेण सद्धिं जाव भुंजमाणी विहरित्तए ३ । तं धन्नाओ णं ताओ अम्मयाओ जाव जीवियफले जाओ णं वंझाओ अवियाउरीओ जाणुकोप्परमायाओ सुरभिसुगंधगंधियाओ विउलाइं माणुस्सगाइ भोगभोगाइं भुंजमाणीओ विहरंति, अहं णं अधन्ना अपुण्णा अकयपुण्णा नो संचाएमि रट्ठकूडेण सद्धिं विउलाइं जाव विहरित्तए ४ ॥ सू० १८ ॥ तेणं कालेणं २ सुव्वयाओ नाम अज्जाओ इरिया-

समियाओ जाव बहुपरिवाराओ पुव्वाणुपुव्विं जेणेव विभेले संनिवेसे अहापडिरूवं ओग्गहं जाव विहरति १। तते णं तासिं सुव्वयाणं अज्जाणं एगे संघाडए विभेले सन्निवेसे उच्चनीय जाव अडमाणे रट्ठकूडस्स गिहं अणुपविट्ठे २। तते णं सा सोमा माहणी ताओ अज्जाओ एज्जमाणीओ पासति २ हट्ठतुट्ठा खिप्पामेव आसणाओ अब्भुट्ठेति २ सत्तट्ठपयाइं अणुगच्छति २ वंदइ, नमंसइ, विउलेणं असण ४ पडिलाभित्ता एवं वयासी–एवं खलु अहं अज्जाओ रट्ठकूडेणं सद्धिं विउलाइं जाव संवच्छरे २ जुगलं पयामि, सोलसहिं संवच्छरेहिं बत्तीसं दारगरूवे पयाया, तते णं अहं तेहिं बहूहिं दारएहि य जाव डिंभियाहि य अप्पेगतिएहिं उत्ताणसिज्जएहि जाव सुत्तमाणेहिं दुज्जातेहिं जाव नो संचाएमि विहरत्तए, तमिच्छामि णं अज्जाओ तुम्हं अंतिए धम्मं निसामित्तए ३। तते णं तातो अज्जातो सोमाते माहणीए विचित्तं जाव केवलीपरणत्तं धम्मं परिकहेति ४। तते णं सा सोमा माहणी तासिं अज्जाणं अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठ जाव हियया तातो अज्जाओ वंदइ नमंसइ २ त्ता एवं वयासी–सद्दहामि णं अज्जाओ! निग्गंथं पावयणं जाव अब्भुट्ठेमि णं अज्जातो निग्गंथं पावयणं एवमेयं अज्जातो जाव से जहेयं तुब्भे वयह जं नवरं अज्जातो! रट्ठकूडं आपुच्छामि ५। तते णं अहं देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडा जाव पव्वयामि ६। अहासुहं देवाणुप्पिए! मा पडिबंधं करेह ७। तते णं सा सोमा माहणी तातो अज्जातो वंदइ नमंसइ २ त्ता पडिविसज्जेति ८॥ सू० ११॥

तते णं सा सोमा माहणी जेणेव रट्ठकूडे तेणेव उवागता करतल एवं वयासी–एवं खलु मए देवाणुप्पिया! अज्जाणं अंतिए धम्मे निसंते से वि य णं धम्मे इच्छिते जाव अभिरुचिते, तते णं अहं देवाणुप्पिया! तुब्भेहिं अब्भणुन्नाया सुव्वयाणं अज्जाणं जाव पव्वइत्तए १। तते णं से रट्ठकूडे सोमं माहणिं एवं वयासी–मा णं तुमं देवाणुप्पिए! इदाणिं मुंडा

भवित्ता जाव पव्वयाहि, भुंजाहि ताव देवाणुप्पिए ! मए सद्धिं विउलाइं भोगभोगाइं, ततो पच्छा भुत्तभोई सुव्वयाणं अज्जाणं अंतिए मुंडा जाव पव्वयाहि २ । तते णं सा सोमा माहणी रट्ठकूडस्स एयमट्ठं पडिसुणेति ३ । तते णं सा सोमा माहणी एहाया जाव सरीरा चेडियाचक्कवालपरिकिण्णा साओ गिहाओ पडिनिक्खमति २ विभेलं संनिवेसं मज्झं मज्झेणं जेणेव सुव्वयाणं अज्जाणं उवस्सए तेणेव उवागच्छति २ सुव्वयाओ अज्जाओ वंदइ नमंसइ पज्जुवासइ ४ । तते णं ताओ सुव्वयाओ अज्जाओ सोमाए माहणीए विचित्तं केवलिपण्णत्तं धम्मं परिकहेंति जहा जीवा बज्झंति ५ । तते णं सा सोमा माहणी सुव्वयाणं अज्जाणं अंतिए जाव दुवालसविहं सावगधम्मं पडिवज्जइ २ सुव्वयाओ अज्जाओ वंदइ नमंसइ २ त्ता जामेव दिसिं पाउब्भूआ तामेव दिसं पडिगता ६ । तते णं सा सोमा माहणी समणोवासिया जाया अभिगत जाव अप्पाणं भावेमाणी विहरति ७ ॥ सू० १०० ॥ तते णं ताओ सुव्वयाओ अज्जाओ अण्णदा कदाइ विभेलाओ संनिवेसाओ पडिनिक्खमंति २ बहिया जणवयविहारं विहरंति १ । तते णं ताओ सुव्वयाओ अज्जाओ अण्णदा कदायि पुव्वाणुपुव्विं जाव विभेलसंनिवेसं विहरंति २ । तते णं सा सोमा माहणी इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणी हट्ठा एहाया तहेव निग्गया जाव वंदइ नमंसइ २ धम्मं सोच्चा जाव नवरं रट्ठकूडं आपुच्छामि, तते णं पव्वयामि ३ । अहासुहं देवाणुप्पिए ! मा पडिबंधं करेह ४ । तते णं सा सोमा माहणी सुव्वयं अज्जं वंदइ नमंसइ २ सुव्वयाणं अंतियाओ पडिनिक्खमइ २ जेणेव सए गिहे जेणेव रट्ठकूडे तेणेव उवागच्छति २ करतल तहेव आपुच्छइ जाव पव्वइत्तए ५ । अहासुहं देवाणुप्पिए ! मा पडिबंधं करेह ६ । तते णं रट्ठकूडे विउलं असणं तहेव जाव पुव्वभवे सुभद्दा जाव अज्जा जाता, इरियासमिता जाव गुत्तबंभयारीणी ७ ॥ सू० १०१ ॥ तते णं सा सोमा

अज्जा सुव्वयाणं अज्जाणं अंतिए सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ २ बहूहिं छट्ठट्ठमदसमदुवालस जाव भावेमाणी बहुइं वासाइं सामराणपरियागं पाउणति २ मासियाए संलेहणाए सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदित्ता आलोइयपडिक्कंता समाहिपत्ता कालमासे कालं किच्चा सक्कस्स देविंदस्स देवरणो सामाणियदेवत्ताए उववज्जिहिति, तत्थ णं अत्थेगइयाणं देवाणं दोसागरोवमाइं ठिई पराणत्ता, तत्थ णं सोमस्स वि देवस्स दोसागरोवमाइं ठिई पराणत्ता ॥ सू० १०२ ॥ से णं भंते सोमे देवे ततो देवलोगाओ आउक्खएणं जाव चयं चइत्ता कहिं गच्छिहिति ? कहिं उववज्जिहिति ? गोयमा ! महाविदेहे वासे जाव अंतं काहिति १ । एवं खलु जंबू ! समणेणं जाव संपत्तेणं अयमट्ठे पराणत्ते २ ॥ सू० १०३ ॥ ४ ॥ जइ णं भंते ! समणेणं भगवया उक्खेवओ एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं २ रायगिहे नामं नगरे, गुणसिलए चेइए, सेणिए राया, सामी समोसरिते, परिसा निग्गया, तेणं कालेणं २ पुराणभद्दे देवे सोहम्मे कप्पे पुराणभद्दे विमाणे सभाए सुहम्माए पुराणभद्दंसि सीहासणंसि चउहिं सामाणियसाहस्सीहिं जहा सूरियाभो जाव बत्तीसतिविहं नट्टविहिं उवदंसित्ता जामेव दिसिं पाउब्भूते तामेव दिसिं पडिगते कूडागारसाला पुव्वभवपुच्छा ॥ सूत्रं १०४ ॥ एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं २ इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे मणिवइया नामं नगरी होत्था रिद्ध, चंदो, ताराइणे चेइए, तत्थ णं मणिवइयाए नगरीए पुराणभद्दे नामं गाहावई परिवसति अड्ढे ॥ सूत्रं १०५ ॥ तेणं कालेणं २ थेरा भगवंतो जातिसंपराणा जाव जीवियासमरणभयविप्पमुक्का बहुस्सुया बहुपरिवारा पुव्वाणुपुव्वि जाव समोसढा, परिसा निग्गया १ । तते णं से पुराणभद्दे गाहावई इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे हट्ठ जाव पराणत्तीए गंगदत्ते तहेव निग्गच्छइ जाव निक्खंतो जाव गुत्तबंभचारी २ ॥ सूत्रं १०६ ॥ तते णं से पुराणभद्दे अणगारे भगवंताणं अंतिए सामाइयमादियाइं एक्कारस

अंगाइं अहिज्जइ २ बहूहिं चउत्थछट्ठट्ठम जाव भावित्ता बहूइं वासाइं सामरणपरियागं पाउणति २ मासियाए संलेहणाए सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदित्ता आलोइयपडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा सोहम्मे कप्पे पुराणभद्दे विमाणे उववातसभाते देवसयणिज्जंसि जाव भासामणपज्जत्तीए १। एवं खलु गोयमा! पुण्णभद्देणं देवेणं सा दिव्वा देविड्ढी जाव अभिसमरणागता २॥ सू० १०७॥ पुराणभद्दस्स णं भंते! देवस्स केवइयं कालं ठिई पराणत्ता? गोयमा! दोसागरोवमाइं ठिई पराणत्ता॥ सूत्रं १०८॥ पुराणभद्दे णं भंते! देवे तातो देवलोगातो जाव कहिं गच्छिहिति? कहिं उववज्जिहिति? गोयमा! महाविदेहे वासे सिज्झिहिति जाव अंतं काहिति १। एवं खलु जंबू! समणेणं भगवता जाव संपत्तेणं निक्खेवओ २॥ सूत्रं१०९॥५॥ जइ णं भंते! समणेणं भगवया जाव संपत्तेणं उक्खेवओ, एवं खलु जंबू! तेणं कालेणं २ रायगिहे नगरे, गुणसिलए चेइए, सेणिए राया, सामी समोसरिते १। तेणं कालेणं २ माणिभद्दे देवे सभाए सुहम्माए माणिभद्दंसि सीहासणंसि चउहिं सामाणियसाहस्सीहिं जहा पुराणभद्दो तहेव आगमणं २। नट्टविही, पुव्वभवपुच्छा, मणिवई नगरी, माणिभद्दे गाहावई थेराणं अंतिए पव्वज्जा, एक्कारस अंगाइं अहिज्जति, बहूइं वासाइं परियातो मासिया संलेहणा सट्ठिं भत्ताइं माणिभद्दे विमाणे उववातो, दोसागरोवमाइं ठिई, महाविदेहे वासे सिज्झिहिति ३। एवं खलु जंबू! निक्खेवओ ४॥ सू० ११०॥ ६॥ एवं दत्ते ७ सिवे ८ बले ९ अणाढिते १० सव्वे जहा पुराणभद्दे देवे १। सव्वेसिं दोसागरोवमाइं ठिती २। विमाणा देवसरिसनामा ३। पुव्वभवे दत्ते चंदणाणामए, सिवे मिहिलाए, बलो हत्थिणपुरे नगरे, अणाढिते काकंदिते, चेइयाइं जहा संगहणीए ४॥सू०१११॥

॥ ततिओ वग्गो सम्मत्तो ॥ ३ ॥

।। अथ पुष्पचूलकानामकश्चतुर्थो वर्गः ।।

जइ णं भंते ! समणेणं भगवता उक्खेवओ जाव दस अज्झयणा पण्णत्ता १। तं जहा--सिरि १ हिरि २ धिति ३ कित्ति(त्ती)ओ ४ बुद्धि(द्धी) ५ लच्छी ६ य होइ बोधव्वा। इलादेवी ७ सुरादेवी ८ रसदेवी ९ गंधदेवी १० य ॥१॥ २। जइ णं भंते ! समणेणं भगवया जाव संपत्तेणं उवंगाणं चउत्थस्स वग्गस्स पुप्फचूलाणं दस अज्झयणा पण्णत्ता, पढमस्स णं भंते ! उक्खेवओ ३। एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं २ रायगिहे नगरे गुणसिलए चेइए सेणिए राया सामी समोसढे, परिसा निग्गया ४ ॥ सू० ११२ ॥ तेणं कालेणं २ सिरिदेवी सोहम्मे कप्पे सिरिवडिंसए विमाणे सभाए सुहम्माए सिरिंसि सीहासणंसि चउहिं सामाणियसाहस्सेहिं चउहिं महत्तरियाहिं सपरिवाराहिं जहा बहुपुत्तिया जाव नट्टविहिं उवदंसित्ता पडिगता १। नवरं दारियाओ नत्थि २। पुव्वभवपुच्छा ३ ॥ सू० ११३ ॥ एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं २ रायगिहे नगरे गुणसिलए चेइए जियसत्तू राया १। तत्थ णं रायगिहे नयरे सुदंसणे नामं गाहावई परिवसति, अड्ढे २। तस्स णं सुदंसणस्स गाहावइस्स पिया नामं भारिया होत्था सोमाला ३। तस्स णं सुदंसणस्स गाहावइस्स धूया पियाए गाहावतिणीए अत्तिया भूया नामं दारिया होत्था वुड्ढा वुड्ढकुमारी जुण्णा जुण्णकुमारी पडितपुतत्थणी वरपरिवज्जिया (गपक्खेज्जिया) यावि होत्था ४ ॥ सू० ११४ ॥ तेणं कालेणं २ पासे अरहा पुरिसादाणीए जाव नवरयणीए, वण्णओ सो चेव, समोसरणं, परिसा निग्गया १। तते णं सा भूया दारिया इमीसे कहाए लद्धट्ठासमाणी हट्ठतुट्ठा जेणेव अम्मापियरो तेणेव उवागच्छति २ एवं वदासी--एवं खलु अम्मताओ ! पासे अरहा पुरिसादाणीए पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे जाव देवगणपरिवुडे विहरति, तं इच्छामो णं अम्मयाओ ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाया समाणी पासस्स अरहओ पुरिसा-

दाणीयस्स पायवंदियागमित्तए २ । अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं करेह ३ । तते णं सा भूया दारिया राहाया जाव सरीरा चेडीचक्कवालपरिकिराणा साओ गिहाओ पडिनिक्खमति २ जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छति २ धम्मियं जाणप्पवरं दुरूढा ४ । तते णं सा भूया दारिया नियपरिवारपरिवुडा रायगिहं नगरं मज्झं मज्झेणं निग्गच्छति २ जेणेव गुणसिलए चेइए तेणेव उवागच्छति २ छत्तादीए तित्थकरातिसए पासति २ धम्मियाओ जाणप्पवराओ पच्चोरुभित्ता चेडीचक्कवालपरिकिराणा जेणेव पासे अरहा पुरिसादाणीए तेणेव उवागच्छति २ तिक्खुत्तो जाव पज्जुवासति ५ । तते णं पासे अरहा पुरिसादाणीए भूयाए दारियाए तीसे महइ० धम्मकहाए धम्मं सोच्चा णिसम्म हट्ठतुट्ठा वंदति २ एवं वदासी—सद्दहामि णं भंते निग्गंथं पावयणं जाव अब्भुट्ठेमि णं भंते निग्गंथं पावयणं से जहेव तुब्भे वदह जं नवरं देवाणुप्पिय ! अम्मापियरो आपुच्छामि ६ । तते णं अहं जाव पव्वइत्तए ७ । अहासुहं देवाणुप्पिया ! ८ ॥ सू० ११५ ॥

तते णं सा भूया दारिया तमेव धम्मियं जाणप्पवरं जाव दुरुहति २ जेणेव रायगिहे नगरे तेणेव उवागता, रायगिहं नगरं मज्झं मज्झेणं जेणेव सए गिहे तेणेव उवागता, रहाओ पच्चोरुहित्ता जेणेव अम्मापितरो तेणेव उवागता, करतल जहा जमाली आपुच्छति १ । अहासुहं देवाणुप्पिए ! तते णं से सुदंसणे गाहावई विउलं असणं ४ उवक्खडावेति २ मित्तनाति आमंतेति २ जाव जिमिय भुत्तुत्तरकाले सूईभूते निक्खमण(उवक्खण)माणित्ता कोडुंबिय पुरिसे सद्दावेति २ एवं वदासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! भूयादारियाए पुरिससहस्सवाहिणीयं सीयं उवट्ठवेह २ जाव पच्चप्पिणह २ । तते णं ते जाव पच्चप्पिणंति । तते णं से सुदंसणे गाहावई भुयं दारियं राहायं जाव विभूसियसरीरं पुरिससहस्सवाहिणिं सीयं दुरूहति २ मित्त-नातिनियगसंबंधिपरिजणेणं जाव रवेणं रायगिहं नगरं मज्झं मज्झेणं

जेणेव गुणसिलए चेइए तेणेव उवागते, छत्ताईए तित्थयरातिसए पासति २ सीयं ठवेति २ भूयं दारियं सीयाओ पच्चोरुतेति ३। तते णं तं भूयं दारियं अम्मापियरो पुरतो काउं जेणेव पासे अरहा पुरिसादाणीए तेणेव उवागते, तिखुत्तो वंदति नमंसति २ एवं वदासी—एवं खलु देवाणुप्पिया! भूया दारिया अम्हं एगा धूया इट्ठा, एस णं देवाणुप्पिया! संसारभउव्विग्गा भीया जाव देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडा जाव पव्वयाति २ तं एयं णं देवाणुप्पिया! सिस्सिणिभिक्खं दलयति, पडिच्छंतु णं देवाणुप्पिया! सिस्सिणीभिक्खं ४। अहासुहं देवाणुप्पिए! मा पडिबंधं करेह ५। तते णं सा भूता दारिया पासेणं अरहापुरिसादाणीएणं एवं वुत्तासमाणी हट्ठा उत्तरपुरच्छिमं सयमेव आभरणमल्लालंकारं उम्मुयइ, जहा देवाणंदा पुप्फचूलाणं अंतिए जाव गुत्तबंभयारिणी ६ ॥ सू० ११६ ॥ तते णं सा भूता अज्जा अणणदा कदाइ सरीरपाओ(बाउ)सिया णं जाया यावि होत्था, अभिक्खणं २ हत्थे धोवति, पादे धोवति एवं सीसं धोवति, मुहं धोवति, थणगंतराइं धोवति, कक्खंतराइं धोवति, गुज्भंतराइं धोवति, जत्थ जत्थ वि य णं ठाणं वा सिज्जं वा निसिहियं वा चेतेति तत्थ तत्थ वि य णं पुव्वामेव पाणएणं अब्भुक्खेति। ततो पच्छा ठाणं वा सिज्जं वा निसीहियं वा चेतेति २ ॥ सू० ११७ ॥ तते णं तातो पुप्फचूलातो अज्जातो भूयं अज्जं एवं वदासी—अम्हे णं देवाणुप्पिए समणीओ निग्गंथीओ इरियासमियाओ जाव गुत्तबंभचारिणीओ, नो खलु कप्पति अम्हं सरीरपाओसियाणं होत्तए, तुमं च णं देवाणुप्पिए! सरीरपाओसीया अभिक्खणं २ हत्थे धोवसि जाव निसीहियं चेतेहि, तं णं तुमं देवाणुप्पिए एयस्स ठाणस्स आलोएहि त्ति, सेसं जहा सुभद्दाए जाव पाडियक्कं उवस्सयं उवसंपज्जित्ता णं विहरति १। तते णं सा भूता अज्जा अणोहट्टिया अणिवारिया सच्छंदमई अभिक्खणं २ हत्थे धोवति जाव निसीहियं चेतेति

२ ॥सू०११८॥ तते णं सा भूया अज्जा बहूहिं चउत्थछट्ठ जाव बहूइं वासाइं सामरणपरियागं पाउणित्ता तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कंता कालमासे कालं किच्चा सोहम्मे कप्पे सिरिवडिंसए विमाणे उववायसभाए देवसयणिज्जंसि जाव तोगाहणाए सिरिदेवित्ताए उववरणा पंचविहाए पज्जत्तीए भासामणपज्जत्तीए पज्जत्ता ॥ सू० ११९ ॥ एवं खलु गोयमा ! सिरीए देवीए एसा दिव्वा देविड्ढी लद्धा पत्ता, ठिई एगं पलिओवमं १। सिरीणं भंते देवी जाव कहिं गच्छिहिति ? महाविदेहे वासे सिज्भिहिति २। एवं खलु जंबू ! निखेवओ ३ ॥ सू० १२० ॥ एवं सेसाण वि नवराहं भाणियव्वं, सरिसनामा विमाणा सोहम्मे कप्पे पुव्वभवे नगरचेइयपियमादीणं, अप्पणो य नामादी जहा संगहणीए, सव्वा पासस्स अंतिए निक्खंता १। तातो पुप्फचूलाणं सिस्सिणीयातो सरीरपाओसियाओ सव्वाओ अणंतरं चयं चइत्ता महाविदेहे वासे सिज्भिहिति २ ॥ सूत्रं १२१ ॥

॥ चउत्थवग्गो समत्तो ॥ ४ ॥

॥ अथ वह्निदशानामकः पञ्चमो वर्गः ॥

जइ णं भंते ! उक्खेवओ, उवंगाणं चउत्थस्स वग्गस्स पुप्फचूलाणं अयमट्ठे पराणत्ते, पंचमस्स णं भंते ! वग्गस्स उवंगाणं वह्निदसाणं समणेणं भगवया जाव संपत्तेणं के अट्ठे पराणत्ते ? एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव दुवालस अज्भयणा पराणत्ता, तं जहा—निसढे १ माअनि २ वह ३ वहे ४ पगता ५ जुत्ती ६ दसरहे ७ दढरहे ८ य। महाधणू ९ सत्तधणू १० दसधणू ११ नामे सयधणू १२ य ॥ १ ॥ सूत्रं १२२ ॥ जइ णं भंते ! समणेणं जाव दुवालस अज्भयणा पराणत्ता, पढमस्स णं भंते ! उक्खेवओ १। एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं २ बारवई नामं नगरी होत्था दुवालसजोयणायामा जाव पच्चक्खं देवलोयभूया पासादीया दरिस-

णिज्जा अभिरूवा पडिरूवा २ ॥ सूत्रं १२३ ॥ तीसे णं बारवईए नगरीए बहिया उत्तरपुरच्छिमे दिसीभाए एत्थ णं रेवए नामं पव्वए होत्था, तुंगे गगणतलमणुलिहंतसिहरे नाणाविहरुक्खगुच्छगुम्म-लतावल्लीपरिगताभिरामे हंसमियमयूर-कोंचसारसकाग-मयणसालाकोइलकुलोववेते तडकडगवियरउ-ज्झरपवालसिहरपउरे अच्छरगणदेवसंघ-विज्जाहरमिहुणसंनिचिन्ने निच्चत्थणए दसारवरवीरपुरिस-तेलोक्कबलवगाणं सोमे सुभए पियदंसणे सुरूवे पासादीए जाव पडिरूवे १ । तस्स णं रेवयगस्स पव्वयस्स अदूरसामंते एत्थ णं नंदणवणे नामं उज्जाणे होत्था, सव्वोउयपुप्फ जाव दरिसणिज्जे २ । तत्थ णं नंदणवणे उज्जाणे सुरप्पियस्स जक्खस्स जक्खायतणे होत्था चिराईए जाव बहुजणो आगम्म अच्चेति सुरप्पियं जक्खाययणं ३ । से णं सुरप्पिए जक्खाययणे एगेणं महता वणसंडेणं सव्वओ समंता संपरिक्खित्ते जहा पुण्णभद्दे जाव सिलावट्टते ४ । तत्थ णं बारवईए नयरीए कण्हे नामं वासुदेवे राया होत्था जाव पसासेमाणे विहरति ५ ॥ सूत्रं १२४ ॥ से णं तत्थ समुद्दविजयपामोक्खाणं दसण्हं दसाराणं, बलदेवपामोक्खाणं पंचण्हं महा-वीराणं, उग्गसेणपामोक्खाणं सोलसण्हं राईसाहस्सीणं, पज्जुण्णपामो-क्खाणं अद्धुट्ठाणं कुमारकोडीणं, संबपामोक्खाणं सट्ठीए दुद्दंतसाहस्सीणं, वीरसेणपामोक्खाणं एक्कवीसाए वीरसाहस्सीणं, रुप्पिणिपामोक्खाणं सोल-सण्हं देवीसाहस्सीणं, अणंगसेणापामोक्खाणं अणेगाणं गणियासाहस्सीणं, अण्णेसिं च बहूणं राईसर जाव सत्थवाहप्पभिईणं वेयड्ढगिरिसागरमेरागस्स दाहिणड्ढभरहस्स आहेवच्चं जाव विहरति ॥ सूत्रं १२५ ॥ तत्थ णं बारवईए नयरीए बलदेवे नामं राया होत्था, महया जाव रज्जं पसासेमाणे विहरति १ । तस्स णं बलदेवस्स रण्णो रेवई नामं देवी होत्था सोमाला जाव विहरति २ । तते णं सा रेवती देवी अण्णदा कदाइ तंसि तारिसगंसि सयणिज्जंसि जाव सीहं सुमिणे पासित्ता णं पडिबुद्धा, एवं

सुमिणादंसणपरिकहणं, कलातो जहा महाबलस्स, नवरं पन्नासतो दातो पराणासरायकराणगाणं एगदिवसेणं पाणिगहणं नवरं निसढे नामं जाव उप्पिं पासादं विहरति ३ ॥ सू० १२६ ॥ तेणं कालेणं २ अरहा अरिट्ठनेमी आदिकरे दसधणूइं वराणतो जाव समोसरिते, परिसा निग्गया १ । तते णं से कराहे वासुदेवे इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे हट्ठतुट्ठे (हट्ठतोएतो) य कुडुंबियपुरिसे सद्दावेति २ एवं वदासी—खिप्पामेव देवाणुप्पिया ! सभाए सुहम्माए सामुदाणियं भेरिं तालेहि २ । तते णं से कुडुंबियपुरिसे जाव पडिसुणित्ता जेणेव सभाए सुहम्माए सामुदाणिया भेरी तेणेव उवागच्छति २ तं सामुदाणियं भेरिं महता २ सद्देणं तालेति ३ । तते णं तीसे सामुदाणियाए भेरीए महता २ सद्देण तालियाए समाणीए समुद्दविजयपामोक्खा दस दसारा देवीओ उण भाणियव्वाओ जाव अणंगसेणापामोक्खा अणेगा गणिया सहस्सा अन्ने य बहवे राईसर जाव सत्थवाहप्पभितितो राहाया जाव पायच्छित्ता सव्वालंकारविभूसिया जहाविभवइड्डिसकारसमुदएणं अप्पेगइया हयगया जाव पुरिसवग्गुरापरिक्खित्ता जेणेव कराहे वासुदेवे तेणेव उवागच्छंति २ करतल जाव कराहं वासुदेवं जएणं विजएणं वद्धावेंति ४ ॥ सू० १२७ ॥ तते णं से कराहे वासुदेवे कोडुंबियपुरिसे एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! आभिसेक्कहत्थिं कप्पेह हयगयरहपवर जाव पच्चप्पिणंति १ । तते णं से कराहे वासुदेवे मज्जणघरे जाव दुरूढे अट्ठट्ठमंगलगा जहा कूणिए सेयवरचामरेहिं उद्धव्वमाणेहिं २ समुद्दविजय पामोक्खेहिं दसहिं दसारेहिं जाव सत्थवाहप्पभितीहिं सद्धिं संपरिवुडे सव्विड्ढीए जाव रवेणं बारवइं नगरिं मज्झं मज्झेणं सेसं जहा कूणिओ जाव पज्जुवासइ २ । तते णं तस्स निसढस्स कुमारस्स उप्पिं पासायवरगयस्स तं महता जणसद्दं च जहा जमाली जाव धम्मं सोच्चा निसम्म वंदइ नमंसइ २ एवं वदासी—सद्दहामि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं जहा चित्तो जाव सावग-

धम्मं पडिवज्जति २ पडिगते ३ ॥ सू० १२८ ॥ तेणं कालेणं २ अरहा अरिट्ठनेमिस्स अंतेवासी वरदत्ते नामं अणगारे उराले जाव विहरति १ । तते णं से वरदत्ते अणगारे निसढं कुमारं पासति २ जातसड्ढे जाव पज्जुवासमाणे एवं वयासी—अहो णं भंते ! निसढे कुमारे इट्ठे इट्ठरूवे कंते कंतरूवे एवं पिए मणुन्नए मणामे मणामरूवे सोमे सोमरूवे पियदंसणे सुरूवे २ । निसढे णं भंते ! कुमारे णं अयमेयारूवे माणुयइड्ढी किणा लद्धा ? किणा पत्ता ? पुच्छा जहा सूरियाभस्स, एवं खलु वरदत्ता ! तेणं कालेणं २ इहेव जंबुद्दीवे २ भारहे वासे रोहीडए नामं नगरे होत्था, रिद्ध, मेहवन्ने उज्जाणे मणिदत्तस्स जक्खस्स जक्खाययणे ३ । तत्थ णं रोहीडए नगरे महब्बले नामं राया, पउमावई नामं देवी, अन्नया कदाइ तंसि तारिसगंसि सयणिज्जंसि सीहं सुमिणे, एवं जम्मणं भाणियव्वं जहा महब्बलस्स, नवरं वीरंगतो नामं बत्तीसतो दातो बत्तीसाए रायवरकन्नगाणं पाणिं जाव ओगिज्जमाणे २ पाउसवरिसारत्त-सरयहेमंतगिम्हवसंते छप्पि उऊ जहाविभवे समाणे काले गालेमाणे इट्ठे सद्दे जाव विहरति ४ ॥ सू० १२९ ॥ तेणं कालेणं २ सिद्धत्था नाम आयरिया जातिसंपन्ना जहा केसी, नवरं बहुस्सुया बहुपरिवारा जेणेव रोहीडए नगरे जेणेव मेहवन्ने उज्जाणे जेणेव मणिदत्तस्स जक्खस्स जक्खाययणे तेणेव उवागते, अहापडिरूवं जाव विहरति, परिसा निग्गया १ । तते णं तस्स वीरंगतस्स कुमारस्स उप्पि पासायवरगतस्स तं महता जणसद्दं च जहा जमाली निग्गतो धम्मं सोच्चा जं नवरं देवाणुप्पिया ! अम्मापियरो आपुच्छामि जहा जमाली तहेव निक्खंतो जाव अणगारे जाते जाव गुत्तबंभयारी २ ॥ सू० १३० ॥ तते णं से वीरंगते अणगारे सिद्धत्थाणं आयरियाणं अंतिए सामाइयमादियाइं जाव एकारस अंगाइं अहिज्जति २ बहूइं जाव चउत्थ जाव अप्पाणं भावेमाणे बहुपडिपुण्णाइं पणयालीसवासाइं सामन्नपरियायं पाउणित्ता दोमासियाए संलेहणाए

अत्ताणं भूसित्ता सवीसं भत्तसयं अणसणाए छेदित्ता आलोइयपडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा बंभलोए कप्पे मणोरमे विमाणे देवत्ताए उववन्ने ३। तत्थ णं अत्थेगइयाणं देवाणं दससागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता ४। तत्थ णं वीरंगयस्स देवस्स दससागरोवमाइं ठिई पराणत्ता ५ ॥ सू० १३१ ॥ से णं वीरंगते देवे तातो देवलोगाओ आउक्खएणं जाव अणंतरं चयं चइत्ता इहेव बारवईए नयरीए बलदेवस्स रन्नो रेवईए देवीए कुच्छिसि पुत्तत्ताए उववन्ने १। तते णं सा रेवती देवी तंसि तारिसगंसि सयणिज्जंसि सुमिणदंसणं जाव उप्पिं पासायवरगते विहरति २। तं एवं खलु वरदत्ता! निसढेणं कुमारेणं अयमेयारूवे ओराले मणुयइड्ढी लद्धा ३ ॥ सू० १३२ ॥ पभू णं भंते! निसढे कुमारे देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडे जाव पव्वइत्तए? हंता पभू! से एवं भंते! से एवं भंते! इइ वरदत्ते अणगारे जाव अप्पाणं भावेमाणे विहरति ॥ सू० १३३ ॥ तते णं अरहा अरिट्ठनेमी अणणदा कदाइ बारवतीओ नगरीओ जाव बहिया जणवयविहारं विहरति, निसढे कुमारे समणोवासए जाए अभिगतजीवाजीवे जाव विहरति १। तते णं से निसढे कुमारे अणणया कयाइ जेणेव पोसहसाला तेणेव उवागच्छति २ जाव दब्भसंथारोवगते विहरति २। तते णं तस्स निसढस्स कुमारस्स पुव्वरत्तावरत्त-कालसमयंसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था—धन्ना णं ते गामागर जाव संनिवेसा जत्थ णं अरहा अरिट्ठनेमी विहरति, धन्ना णं ते राईसर जाव सत्थवाहप्पभितिओ जे णं अरिट्ठनेमीं वंदंति नमंसंति जाव पज्जुवासंति, जति णं अरहा अरिट्ठनेमी पुव्वाणुपुव्विं नंदणवणे विहरेज्जा तेणं अहं अरहं अरिट्ठनेमिं वंदिज्जा जाव पज्जुवासिज्जा ३ ॥ सू० १३४ ॥ तते णं अरहा अरिट्ठनेमी निसढस्स कुमारस्स अयमेयारूवं अज्झत्थियं जाव वियाणित्ता अट्ठारसहिं समणसहस्सेहिं जाव

नंदणवणे उज्जाणे विहरति परिसा निग्गया १ । तते णं निसढे कुमारे इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे हट्ठतुट्ठे चाउग्घंटेणं आसरहेणं निग्गते, जहा जमाली, जाव अम्मापियरो आपुच्छित्ता पव्वयिते, अणगारे जाते जाव गुत्तबंभयारी २ ॥ सू० १३५ ॥ तते णं से निसढे अणगारे अरहतो अरिट्ठनेमिस्स तहारुवाणं थेराणं अंतिए सामाइयमाइयाइं एक्कारसअंगाइं अहिज्जति २ बहूइं चउत्थछट्ठ जाव विचित्तेहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणे बहुपडिपुराणाइं नव वासाइं सामरणपरियागं पाउणति बायालीसं भत्ताइं अणसणाए छेदेति, आलोइयपडिक्कंते समाहिपत्ते आणुपुव्वीए कालगते ॥ सू० १३६ ॥ तते णं से वरदत्ते अणगारे निसढं अणगारं कालगतं जाणित्ता जेणेव अरहा अरिट्ठनेमी तेणेव उवागच्छति २ जाव एवं वयासी– एवं खलु देवाणुप्पियाणं अंतेवासी निसढे नामं अणगारे पगतिभद्दए जाव विणीए से णं भंते ! निसढे अणगारे कालमासे कालं किच्चा कहिं गते ? कहि उववरणे ? वरदत्तादि ! अरहा अरिट्ठनेमी वरदत्तं अणगारं एवं वयासी– एवं खलु वरदत्ता ! ममं अंतेवासी निसढे नामं अणगारे पगइभद्दे जाव विणीए ममं तहारुवाणं थेराणं अंतिए सामाइयमाइयाइं एक्कारसअंगाइं अहिज्जित्ता बहुपडिपुराणाइं नव वासाइं सामरणपरियागं पाउणित्ता बायालीसं भत्ताइं अणसणाए छेदेत्ता आलोइयपडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा उड्ढं चंदिमसूरियगहनक्खत्ततारारुवाणं सोहम्मीसाण जाव अच्चुते तिरिण य अट्ठारसुत्तरे गेविज्जविमाणे वाससते वीतीवतित्ता सव्वट्ठसिद्ध-विमाणे देवत्ताए उववरणे १ । तत्थ णं देवाणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिई परणत्ता २ ॥ सू० १३७ ॥ से णं भंते ! निसढे देवे तातो देवलोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता कहिं गच्छिहिति ? कहिं उववज्जिहिति ? वरदत्ता ! इहेव जंबुद्दीवे २ महाविदेह वासे उन्ना(त्ता)ते नगरे विसुद्धपिइवंसे रायकुले पुत्तत्ताए पच्चायाहिति १ । तते णं से उम्मुक्क-

बालभावे विरणायपरिणायमित्ते जोव्वणगमणुप्पत्ते तहारूवाणं थेराणं अंतिए केवलबोहिं बुज्झित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वज्जिहिति २ । से णं तत्थ अणगारे भविस्सति ३ । इरियासमिते जाव गुत्तबंभयारी ४ । से णं तत्थ बहूहिं चउत्थछट्ठट्ठमदसमदुवालसेहिं मासद्धमासखमणेहिं विचित्तेहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणे बहूइं वासाइं सामण्णपरियागं पाउणिस्सति २ मासियाए संलेहणाए अत्ताणं भूसिहिति २ सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदिहिति ५ । जस्सट्ठाए कीरति णग्गभावे मुंडभावे अराहाणए जाव अदंतवणए अच्छत्तए अणोवाहणाए फलहसेज्जा कट्ठसेज्जा केसलोए बंभचेरवासे परघरपवेसे पिंडवाउलद्धावलद्धे उच्चावया य गामकंटया अहियासिज्जति, तमट्ठं आराहेहिति, आराहित्ता चरिमेहिं उस्सासनिस्सासेहिं सिज्झिहिति बुज्झिहिति जाव सव्वदुक्खाणं अंतं काहिति ६ ॥ सू० १३८ ॥ एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव निक्खेवओ १ । एवं सेसा वि एकारस अज्झयणा नेयव्वा संगहणी अणुसारेण अहीणमइरित्त एकारससु वि २ ॥ सू० १३९ ॥

॥ पंचमो वग्गो समत्तो ॥ ५ ॥

निरयावलियासुयखंधो समत्तो । समत्ताणि उवंगाणि । निरयावलिया उवंगे णं एगो सुयखंधो पंच वग्गा पंचसु दिवसेसु उद्दिस्संति, तत्थ चउसु वग्गेसु दस दस उद्देसगा, पंचमवग्गे बारस उद्देसगा । निरयावलियासुयखंधो समत्तो । निरयावलियासुत्तं समत्तं ॥ ग्रंथाग्रं ११०० ॥

॥ इति श्री निरयावलिकासूत्रम् ॥

श्री हर्ष-पुष्पामृत जैन ग्रन्थमाला

ग्रथांक	ग्रन्थनुं नाम	मूल्य रु० पैसे
१	दीक्षानुं सुन्दर स्वरूप	१–५०
२	विधियुक्त पौषधविधि	१–३५
३	स्वाध्याय सुधारस (नूतन सज्झायो)	०–५०
४	स्तवनामृत संग्रह	१–५०
५	जिनेन्द्र भक्ति भावना (चोथी आवृत्ति)	१–२५
६	चतुर्विंशतिजिन चैत्यवंदनादि	०–५०
७	नवस्मरणादि स्तोत्र संग्रह	१–५०
८	जयविजय कथानकम्	
९	श्री लेखामृत संग्रह भा० १ लो	
१०	सद्गुरुवंदन चैत्यवंदन सामायिक विधि	
११	चौद नियम धारवानी बुक (त्रीजी आवृत्ति)	०–२०
१२	लेखामृत संग्रह भा० २ जो	१–००
१३	अमृत बिन्दु	
१४	जिनेन्द्र भक्ति सुधा (आवृत्ति चोथी)	४–००
१५	सोम भीम कथा तथा तपोमूर्ति पू० आ० श्री विजय-कर्पूरसूरिजी म० नुं जीवन चरित्र	०–५०
१६	संक्षिप्त श्राद्धधर्म प्रथम भाग	२–५०
१७	स्नात्रपूजा अर्थ साथे स्तवनादि	०–६०
१८	श्री लेखामृत सग्रह भाग. ३	०–५०
१९	होलिका व्याख्यान (त्रीजी आवृत्ति)	०–२०
२०	मंगल कलश कथा	०–३०
२१	प्रभु महावीर देव (त्रीजी आवृत्ति)	०–२५
२२	नित्यबोध	०–२०
२३	बे प्रतिक्रमण सूत्र (बीजी आवृत्ति)	
२४	श्री विविध पूजामृत संग्रह	छपाय छे
२५	महात्मा मत्स्योदर	०–३०
२६	श्री लेखामृत सग्रह भा. ४	०–७५
२७	,, ,, भा. ५	०–७५
२८	,, ,, भा. ६	०–७५
२९	श्री अमृत गहुंली संग्रह	०–७५
३०	श्री जिनेन्द्र पूजा संग्रह	१–००
३१	श्री जिनेन्द्र पूजा पीयूष (बीजी आवृत्ति)	०–५०
३२	तिथिचर्चामां सत्यनुं स्पष्टीकरण	०–५०

ग्रंथांक	ग्रंथनु नाम	मूल्य रु० पैसे
३३	सामायिक चैत्यवंदनादि सूत्रो (त्रीजी आवृत्ति)	०-२०
३४	महासती सुलसा	०-५०
३५	शास्त्रदर्पण [पर्व आराधना अंगे प्रमाणो]	०-४०
३६	अक्षय तृतीया [सचित्र]	०-३५
३७	कार्तिक पूर्णिमा महिमा	०-२५
३८	छन्दोमृतरसः	०-३०
३९	समेतसिखर तीर्थवंदना	०-१९
४०	नारकी चित्रावली (त्रीजी आवृत्ति)	१२-००
४१	शत्रुञ्जय-तीर्थवंदना (बीजी आवृत्ति)	०-२०
४२	भक्तामर सौरभ (महिमा कथाओ)	१-२५
४३	नारकी चित्रावली (हिन्दी)	६-००
४४	मनोहर स्वाध्याय सौरभ (उत्तराध्ययन मूल)	१-७५
४५	महामन्त्र प्रभाव	०-८०
४६	श्री नमस्कार पद स्तवना	०-२०
४७	वार्ता विहार	१-००
४८	सत्कर्म चित्रावली (बीजी आवृत्ति)	८-००
४९	कल्पसुत्र पूजा व्याख्यान (सचित्र)	छपाय छे
५०	पू० बापजी म० नो खुलासो	०-२०
५१	कुलभूषण (सचित्र कथा)	२-००
५२	लक्ष्मी सरस्वती संवाद	०-५०
५३	श्री आचारांग मूल	१०-००
५४	सुनदा रूपसेन	०-५०
५५	पारसमणि-(वार्तासंग्रह)	१-२५
५६	जन्म पत्रिका रजीस्टर (३०० कुण्डली माटे)	४-००
५७	धनञ्जय नाममाला	१-७५
५८	जिनेन्द्र संगीतमाला	३-५०
५९	अनेकार्थ संग्रह सटीक भाग १ लो	१०-००
६०	जय शंखेश्वरनाथ	१-००
६१	चैत्री पूर्णिमानो महिमा	०-५०
६२	उपासक दशा सटीक	५-००
६३	अंतकृत दशा अनुत्तरोपातक दशा सटीक	४-००
६४	नवस्मरण अने गौतमस्वामी रास (प्रत)	२-००
६५	श्री सूत्रकृतांग सूत्र मूल	१२-५०
६६	श्री स्थानांग सूत्र मूल	२५-००
६७	श्री समवायांग सूत्र	१५-००

ग्रंथांक	ग्रंथनुं नाम		मूल्य रु० पैसे
६८	श्री आगम सुधा सिन्धु	भा. १	६०–००
६९	,,	भा. २	६५–००
७०	,,	भा ३	६५–००
७१	,,	भा. ४	७०–००
७२	,,	भा. ५	६५–००
७३	,,	भा. ६	४५–००
७४	,,	भा. ७	७५–००
७५	,,	भा. ८	२५–००
७६	,,	भा. ९	
७७	,,	भा. १०	
७८	,,	भा. ११	४०–००
७९	,,	भा. १२	३५–००
८०	,,	भा. १३	३५–००
८१	,,	भा. १४	२५–००
८२	सिद्धिप्रबंध		२–००
८३	भक्तिरस प्याला		०–७५
८४	देव वंदन माला		३–००
	पातञ्जलयोगदर्शन (पू० यशो वि० म० टीका)		छपाय छे
	योग विंशिका सटीक		,,
	श्री आचारांग सटीक		,,